उभय प्रबोधक रामायण

उभय प्रबोधक रामायण

(महात्मा बनादास विरचित)

सपादक
डॉ० भगवती प्रसाद सिंह
आचार्य तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गाधी मार्ग, इलाहाबाद-१

प्रस्तावना

रामचरित अति प्राचीन काल से हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रधान प्रेरणास्रोत रहा है। इस आख्यान की उत्पत्ति अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशीय महात्मा-राजाओं के कुल में हुई थी।[1] किन्तु उसे प्रबन्ध रूप में सर्वप्रथम संग्रथित करने का श्रेय आदिकवि महर्षि वाल्मीकि को प्राप्त हुआ।[2] उनके द्वारा विरचित 'रामायण' परवर्ती रामचरित कारों का मुख्य उपजीव्य ग्रन्थ बन गया। इस महान् गाथा-काव्य में दशरथ पुत्र राम का जैसा उदात्त, उद्बोधक, हृदयाकर्षक तथा लोकोद्धारक स्वरूप प्रस्तुत किया गया, वह समय की गति के साथ उत्तरोत्तर निखरता ही गया। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि राजनीतिक परिवर्तन, सामाजिक विकास, धार्मिक आस्थाओं तथा आध्यात्मिक आदर्शों में समय-समय पर सघटित होने वाले महान् परिवर्तनों के बीच लोक मानस में प्रतिष्ठित 'राम' अडिग रहा, उनकी आशा-आकांक्षाओं के अनुरूप साँचों में ढलता रहा, उनके सुख-दुःख में हँसता-रोता रहा, संकट में वामन और सम्पन्नता में विराट् रूप धारण करता रहा, उनकी नस-नस में रमा रहा और उन्हें अपनी विविध रसमयी लीलाओं के गानध्यान में रमाता रहा। क्षण मात्र के लिए भी उनसे अलग नहीं हुआ, उनका साथ नहीं छोड़ा। मूलभूमि से रोजी रोटी की तलाश या धर्म-प्रचार के लिए बाहर जाते हुए सुदामा की भाँति वे रामकथा के तदुंल काँख में छिपाये इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, वर्मा, हिन्दचीन, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा, फिजी, मारिशस, ट्रिनिडाड, सुरीनाम जहाँ भी गये, साथ लेते गये—जीवन-लीला के लिए रगमच तैयार होते ही उनकी अनस्य रामलीला लोकमच पर उतर आयी। लीला से ही सतुष्ट न रहकर उन्होंने धाम भी बना लिया—'जहाँ राम वहीं अयोध्या'[3] की उक्ति सार्थक कर दी। परिस्थितियों ने उनके शरीर का धर्म बदल दिया किन्तु उनका आत्मधर्मी राम अविचल रहा जिसने प्रवासी भारतीयों को वृहत्तर भारत का निर्माता बना दिया।

देशकाल के साथ रामकथा का स्वरूप और शिल्पविधान भी बदला—इस विशाल देश की अनगिनत भाषाओं, उनके युगानुरूप परिवर्तित स्वरूपों—संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश तथा देश-भाषा—में रामकथा का स्रोत अविरल गति के प्रवहमान रहा। साहित्य की ऐसी कौन विधा थी

---

१. इक्ष्वाकूणा इद तेषा राज्ञा वशे महात्मनाम्।
महदुत्पन्नमाख्यान रामायणमिति श्रुतम्॥—वा० रा० १/५/३

२. आदिकाव्यमिद चार्ष पुरा वाल्मीकिना कृतम्।—वा० रा० ७/१२८/१०५

३ थाईलैण्ड म सम्राट रामाधिपति ने १३५० ई० म 'अयोध्या' नामक नगर की स्थापना की थी। वहाँ के इतिहास म १४वी स १८वी शती तक का समय 'अयोध्या काल' के नाम से अभिहित किया जाता है। अयोध्या थाईलैण्ड का एक प्रान्त है और उसके वर्तमान सम्राट् राम नवम् हैं।

जिसने उस कालजयी महापुरुष की आरती नहीं उतारी। आदिकवि के राम का दशरथ-पुत्र तथा मनुष्य होने पर गर्व था 'आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजं'[1] उनकी घोषणा थी। किन्तु उनके अप्रतिम कर्मयोगी तथा धर्मसंस्थापक रूप पर मुग्ध भक्तों ने उन्हें विष्णु, महाविष्णु से ऊपर उठाकर परात्पर ब्रह्म के दर्जे तक पहुँचा दिया, उनकी जीवनगाथा विश्वनियन्ता की अवतारलीला हो गई, उनकी स्तुतियों ने स्तोत्रों का बाना धारण कर लिया, उनकी चरितगंगा समर्पित भक्तों की साधना, भावना तथा अभिव्यक्ति-क्षमता के अनुसार शत-शत धाराओं में बह चली और उसका एक-एक शब्द भवातप से दग्ध, जनम के दुःखी और करम के मारे असंख्य लोगों का त्राता बन गया। 'रामायण' रचना राष्ट्र-हितचिंतक समर्थ कवि की कसौटी बन गई। वाल्मीकि के आदर्श पर संस्कृत में कितने 'रामायणों' की सृष्टि हुई, उसका लेखा प्रस्तुत करना संभव नहीं। किन्तु कालप्रवाह में विलीन होने से बचे हुए[2] संस्कृत के कुछ विशिष्ट रामकथा-प्रबन्धों की नामावली इस प्रकार है—

१. योगवासिष्ठरामायण
२. भुशुण्डिरामायण
३. अध्यात्मरामायण
४. अद्भुतरामायण
५. आनन्दरामायण
६. तत्वसंग्रहरामायण
७. काल-निर्णय-रामायण
८. महारामायण
९. मंत्ररामायण
१०. अमररामायण

संस्कृत की परवर्ती प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं ने रामचरित-सम्बन्धी काव्य रचना का क्रम जारी रखा—पउमचरिउ (प्राकृत-विमलसूरि), पउमचरिउ (अपभ्रंश-स्वयंभूदेव), तिसठिमहापुरिस गुणालङ्कार (प्राकृत-पुष्पदत्त) आदि रामकाव्यों से यह पता चलता है कि जैन तथा बौद्ध आचार्यों ने रामकथा के प्रति प्रगाढ़ जनासक्ति का समुचित लाभ उठाने के लिए अवतारवाद में आस्था न रखते हुए भी अपने सिद्धान्तानुसार उसे कुछ हेर-फेर के साथ प्रस्तुत किया। कारण कि उसकी अवहेलना करने से उन्हें लोकधारा से कट जाने का भय था।

मध्यकाल में देशभाषाओं के विकास के साथ परंपरागत 'रामायण' की टूटती हुई कड़ी मूलस्रोत से पुनः जुड़ गई। वैष्णव-भक्ति-आन्दोलन ने इसके विकास में अपूर्व सहयोग दिया, या यों कहिये कि वैष्णव-भक्ति-आन्दोलन के पुरस्कर्ता महापुरुषों ने राष्ट्रीय मानस को उद्बुद्ध करने के लिए रामचरित को मुख्य माध्यम बनाया।

भारतीय-धर्मसाधना के इतिहास-लेखकों के लिए यह एक अनबूझ पहेली है कि साधना के

---

१. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड ११७/११

२. चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥
—रामायणमहात्म्य

हिन्दी की 'रामायण' परम्परा—

हिन्दी मे रामचरित पर आधारित खड तथा मुक्तक काव्य-रचना का आरम्भ यद्यपि १४वीं शती से ही हो गया था, किन्तु प्रबन्ध शैली मे रामचरित का सर्वप्रथम निरूपण विष्णुदास कृत 'रामायण कथा' में ही मिलता है। यह वाल्मीकि रामायण का हिन्दी रूपान्तर और केवल धर्मदृष्टि से लिखा गया असाम्प्रदायिक प्रबन्ध काव्य है। इसके पश्चात् स्वामी रामानन्द द्वारा प्रवर्तित रामावत सम्प्रदाय की जो लहर उत्तरी भारत म फैली उससे सारा रामकाव्य, चाहे वह निर्गुण हो या सगुण, ऐश्वर्यपरक हो या माधुर्य भावापन्न, वैष्णवभक्ति के रग म सराबोर हो गया। इस धारा का परमोज्ज्वल प्रकाश गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व म दृष्टिगोचर हुआ। उनका 'रामचरितमानस' वाल्मीकिरामायण के पश्चात् रामायण-परम्परा के सर्वोत्कृष्ट अवदान रूप मे समादृत हुआ। इतना ही नहीं अपने लोकोत्तर कृतित्व के बल पर 'राम' तथा 'हनुमान' की भाँति तुलसी भी उत्तरी भारत के रामभक्तों द्वारा रामभक्ति-साधना के अनिवार्य तत्त्व मान लिए गये। जिस प्रकार 'खुदा', पैगम्बर मुहम्मद तथा कुरान तीनो म ईमान लाये बिना कोई व्यक्ति 'मुसलमान' की सज्ञा नहीं प्राप्त कर सकता उसी प्रकार 'राम' और उनके दूत 'हनुमान' के साथ 'रामचरितमानस' मे आस्थावान हुए बिना कोई साधक रामभक्त कहे जाने का अधिकारी नही माना जाता।

तुलसी की अलौकिक काव्य-प्रतिभा, समन्वयवादी-विचारधारा, अपूर्व सवेदनशीलता, गूढ दार्शनिक तत्त्वो को सरल भाषा मे प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता, चरितनायक मे अगाधनिष्ठा, तथा भारतीय-जनमानस का पहचानने और प्रभावित करने की अलौकिक शक्ति का सबल पाकर 'रामचरितमानस' हिन्दी भाषी क्षेत्र की सीमा पारकर देश-विदेश के रामोपासकों के गले का हार हो गया। इतर प्रदेशो के निवासी, जो भाषा-व्यवधान के कारण मूल रूप मे उसका रसास्वादन नही कर सकते थे, उनके लिए तद्देशीय भाषाओं के प्रतिभासम्पन्न कवियों ने उसके गद्य-पद्यबद्ध रूपान्तर सुलभ कराए। महाराष्ट्र के जन जसवत ने तो काशी आकर 'मानस' के रचयिता का, शिष्यत्व ही ग्रहण कर लिया। किन्तु मानस की इस कल्पनातीत सफलता ने रामचरित काव्य के प्रकृत विकास का, कुछ दिनों के लिए ही सही, मार्ग अवरुद्ध कर दिया। उसकी गरिमा से अभिभूत कवि-समुदाय किंकर्तव्यविमूढ, हतप्रभ तथा हीनभाव-ग्रस्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप शताब्दियों तक किसी उत्कृष्ट रामचरितकाव्य के दर्शन न हो सके यद्यपि 'रामायण' परम्परा के प्रबन्धो की रचना का क्रम अबाध रूप से गतिशील रहा—

१. रामचरित (मधुर अली) १५५८ ई०
२. अवध विलास रामायण (लालदास) १६४३ ई०
३. सीतायन (रामप्रियाशरण) १७०३ ई०
४. रामायण (क्षामदास) १७०४ ई०
५. जोगरामायण (जागराम) १७०८ ई०
६. रामायण (भगवत सिंह) १७३० ई०
७. रामविलास रामायण (शम्भुनाथ बन्दीजन) १७४१ ई०
८. रामचरितवृत्त प्रकाश (क्षेमकरण मिश्र) १७७१ ई०
९. रामरसायन (पद्माकर) अठारहवीं शती
१०. वाल्मीकि रामायण भाषा (गणेश) १८०३ ई०

११. बालकाण्ड रामायण (देवीदास) १८०८ ई०
१२. रामायण (सीताराम) १८३० ई०
१३. अध्यात्मरामायण (नवलसिंह) १८३१ ई०
१४. रूपक रामायण (नवल सिंह) १८३१ ई०
१५. आल्हाद रामायण (नवल सिंह) १८३१ ई०
१६. वाल्मीकिरामायण भाषा (गिरधरदास) १८३३ ई०
१७. अद्भुतरामायण भाषा १८३८ ई०
१८. रामायण (समरदास) १८४३ ई०
१९. अध्यात्मरामायण (किशोरदास) १८४३ ई०
२० वाल्मीकिरामायण भाषा (छत्रधारी) १८५७ ई०
२१. रामायण (ईश्वरी प्रसाद) १८५८ ई०
२२. रामायण (गोमती प्रसाद) १८५८ ई०
२३. महारामायण (भगवानदास खत्री) १८७८ ई०
२४. सुसिद्धान्तोत्तम (रूद्र प्रतापसिंह) १८२० ई०
२५ रामनिवास रामायण १९३३ वि०
२६. रामरसायन (रसिक विहारी) सं० १९३९ वि०
२७. अद्भुत रामायण (लालमणि) १९वीं शती
२८. अमर रामायण (रसिक अली) १९वीं शती
२९. प्रश्न रामायण (अज्ञात) १९वीं शती
३०. जानकी-विजय-रामायण (तुलसीदास-?) १९वीं शती
३१. गोन रामायण (महावीरदास) १९वीं शती
३२. छप्पय रामायण (रामचरनदास) १९वीं शती
३३. कुण्डलिया रामायण (तुलसीदास-?) १९वीं शती
३४. जोगरामायण (जोगराम) १९वीं शती
३५. दोहावली रामायण (पं० रागुलामद्विवेदी) १९वीं शती
३६. माधव मधुर रामायण (माधव कस्यक) १९वीं शती
३७. रामरहस्य रामायण (पूय पूरनचन्द)
३८. वाल्मीकिरामायण (महेशदत्त) १९वीं शती
३९. रामायण कवित्त (शंकर त्रिपाठी) १९वीं शती
४०. सातों काण्ड रामायण (समर सिंह) १९वीं शती
४१. विचित्र रामायण (अज्ञात) १९वीं शती
४२. रामायण बारहखड़ी (अज्ञात) १९वीं शती
४३. रामायण (विश्वनाथ सिंह) १९वीं शती
४४. रामायण (वैदेहीशरण) १९वीं शती
४५. अनुराग विवर्धक रामायण (बनादास) सं० १९५४

तुलसी के समकालीन तथा परवर्ती रामायणों की उपर्युक्त सूची से कई तथ्य प्रकाश में

आये हैं। प्रथम यह कि रामचरित का विविध छन्दों मे निरूपित करने की एक परम्परा-सी चल पड़ी थी, जिसका बहुत-कुछ दिशा-निर्देश गोस्वामीजी स्वयं कर गये थे। दूसरे यह कि राम के ऐश्वर्यपरक चरित की अपेक्षा उनकी शृंगारी लीलाओं को अभिव्यक्त करने की ओर संतों तथा कवियों की रुचि अधिक उन्मुख हो गई थी। इसका प्रधान कारण तत्कालीन रामभक्तों में रसिक-साधना का व्यापक प्रसार था। इसके साथ ही एक अन्य तत्व, जो धीरे-धीरे रामभक्ति काव्य म प्रभावी हो रहा था, वह था रामचरित की निर्गुणपरक व्याख्या और निर्गुण राम की ओर उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ जनाकर्षण। कबीर न निर्गुण राम की प्रतिष्ठा जिस दार्शनिक आधार पर बीज रूप मे की थी, तुलसी साहब ने घट रामायण लिखकर उसे व्यवस्थित रूप द दिया था। इससे निगुण तथा सगुण दोनो परम्पराओ के राम-भक्तों के बीच की खाईं पाटन मे बहुत सहायता मिली।

रामभक्ति धारा के इस अप्रत्याशित मोड़ ने तुलसीपथ से कुछ हटकर रामचरित का एक नए ढग से तथा नई शैली मे प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। इससे इन्कार नही किया जा सकता कि अपनी तरह के अद्वितीय समन्वयवादी होते हुए भी तुलसीदास संतो के निर्गुण 'राम' स समझौता नहीं कर सके थे। उनके ज्ञान मार्ग को 'अगम' 'कृपान की धारा', तथा कंटकाकीर्ण कहकर वे भक्ति स हेय ही मानते रहे। परवर्ती पीढ़ी के सगुण रामभक्तों न गोस्वामीजी की इस मान्यता को समग्ररूपेण स्वीकार नहीं किया। उनके अनन्य भक्त और प्रशंसक होते हुए भी संतमत से प्रभावित सगुण रामोपासकों के एक वर्ग ने न तो राम की अवतार लीला को साध्य माना और न उनके नित्य कैंकर्य-प्राप्ति को साधना का लक्ष्य ही ठहराया। इन्होंने अद्वैतवादियों के आदर्श पर सगुण-रामभक्तों के लिए भी राम के ब्रह्म रूप मे लीन होने अथवा 'सोऽहं-स्थिति' की प्राप्ति को ही काम्य बताया। दृष्टिकोण म इस प्रकार का परिवर्तन सहसा नहीं संघटित हुआ। इसकी अपनी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है।

कबीर ने 'दसरथ सुत तिहुँलोक बखाना। राम नाम की मरमै आना॥' का उद्घोष करते हुए भी राम की भक्तवत्सलता, करुणाशीलता आदि गुणों का बखान स्वरचित साखी, सबदी और रमैनी मे किया था। उतने से ही सन्तुष्ट न रहकर उन्होंने राम के प्रति दास्य, वात्सल्य तथा माधुर्य भावपरक उद्गार भी व्यक्त किये थे। मध्यकालीन निर्गुणमार्गी संतो ने कबीर द्वारा वर्णित राम की इन स्वभावगत विशेषताओ का व्यापक रूप से गुणगान ही नहीं किया, उनकी अवतारलीला के प्रसंग भी उदाहरणों के रूप मे उद्धृत किये। उत्तरकालीन संत रामचरणदास, जगजीवन साहब, पलटूदास, दूलनदास, शिवनारायण आदि की रचनाओं मे राम के साथ सीता तथा हनुमान का भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया है। इसलिए हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल मे निर्गुण तथा सगुणमार्गी भक्त एक-दूसरे के बहुत निकट आ गये। तुलसीकालीन परस्पर आलोचनाजनित कटुता समाप्तप्राय हो गई।

इस दिशा मे कट्टर एकेश्वरवादी सूफी प्रेमाख्यानकारों ने, जिनका मुख्य कार्यक्षेत्र राम की जन्मभूमि का पार्श्ववर्ती प्रदेश था—प्रशंसनीय पहल की थी। मलिक मुहम्मद जायसी ने तो 'पद्मावत' मे लगभग पूरी रामकथा ही उदाहरणस्वरूप उद्धृत कर दी थी। उनकी साधना-पद्धति, दार्शनिक विचारधारा, भाषा तथा रचनाशिल्प-विशेषकर दोहा-चौपाई-बद्ध प्रबन्ध शैली तो उत्तरकालीन रामकथाकारों के लिए भी आदर्श बन गई थी। तुलसी ने केवल उसके बाह्य ढाँचे को अपनाया, किंतु रसिक रामभक्तों ने प्रवृत्तिसाम्य के नाते माधुर्यासक्ति से मिलता-जुलता उनका प्रेमपथ और समकालीन सूफियों की रेखता-शैली भी अपना ली थी। कहने का तात्पर्य यह कि १९वीं शती के आते-

आने रामभक्ति-साधना के क्षेत्र मे एक प्रकार से इतिहास की पुनरावृत्ति हो गई थी—निर्गुण-सगुण दोनों शाखाओ के प्रवर्तक स्वामी रामानन्द का समन्वयवादी आदर्श पुनः प्रतिष्ठित हो गया था।

महात्मा बनादास का आविर्भाव ऐसे ही समय मे हुआ। वे अवध प्रदेश के निवासी थे और अयोध्या ही उनकी मुख्य साधनास्थली थी। उन दिनो रामोपासना के साथ ही अवध निर्गुण तथा सूफी सनो का भी मुख्य कार्यक्षेत्र बन गया था। बनादास ने भक्तिधारा की कालक्रमागत सारी विशिष्टताएँ रिक्थरूप मे प्राप्त की थी। कठोर तपश्चर्या द्वारा उन्होंने अपने जीवन क्रम मे इनका साक्षात् अनुभव प्राप्त किया था। निर्गुण ब्रह्म का ज्ञाननेत्रों से तथा सगुण ब्रह्म का चर्मचक्षुओं से। उक्त साधना-पद्धतियो सारे तत्वों को आत्मसात् कर अत मे वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि निर्गुण-सगुण का भेद मनमुखी अज्ञानियो का प्रमादमात्र है—

कोऊ तौ निर्गुण को करै खंडन आप उपासक भे मनमानी।
सर्गुन को कोऊ खडि भली बिधि बैठि कहावत हैं तेई ज्ञानी।
भूलि गये दोउ माँगि से खाइ भली बिधि वस्तु नहि पहिचानी।
दासबना दोउ रूप को बोध सो है हमरे घर को हम जानी।

भगवान के मात्र निर्गुण अथवा मात्र सगुण स्वरूप की उपासना को वे एकागी अथवा खड दृष्टि प्रेरित-साधना मानते थे जो अखंडब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कराने में नितान्त अक्षम हैं। उनके विचार से पूर्ण ब्रह्मानुभव अथवा पूर्णानन्द प्राप्ति के लिए पूर्ण अथवा अभेद दृष्टि अनिवार्य है—

पूरन दृष्टि अहै जेहि की सोइ पूर अनंद भलीबिधि पावै।
खडित जासु निगाह अहै न अखडित कौनहु भाँति लखावै।।

इस निष्कर्ष पर वे दीर्घकालीन रामनाम-साधना के पश्चात् पहुँचे थे—

प्रथम नाम जपि राम लहि, अद्भुत सगुन सरूप।
बनादास पीछे मिलत, निर्गुन ब्रह्म अनूप।।

सगुण भक्ति साधना के क्रम मे उन्होंने नवधा तथा प्रेमा के अनंतर पराभक्ति को आयत्त किया था। इसके अनन्तर निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति उन्होने अन्तर्मुखी योगसाधना द्वारा ज्ञान की नौ दशाओ तथा निर्गुण भक्ति की दस भूमिकाओं के क्रम को पारकर परमतत्त्व का साक्षात्कार किया था। इस प्रक्रिया से उपलब्ध तत्वज्ञान को ही वे साधना की चरम उपलब्धि मानते थे, जहाँ पहुँचकर सारे दार्शनिक मतवाद स्वतः समाप्त हो जाते है—

यह सगुन निर्गुन ध्यान मिश्रित बोध जेहि आवै हिये।
स्रुति विहित साधन साधि सम्यक जगत जीवनफल लिये।
निर्पक्ष वाद-विवाद तजि सब शाति ते जन ह्वै रहै।
सुख-दुख हानि औ लाभ सम, मुख चहै जो जैसी कहै।।

(उ० प्र० रा० पृ० १८)

यह एक विचित्र संयोग है कि सगुण रामोपासक होते हुए भी आराध्य के 'दशरथ राज-

किशोर' संज्ञक स्थूल रूप की अपेक्षा उनके सर्वान्तर्यामी सूक्ष्म रूप को अधिक महत्त्व देने वाले बनादास को राम भक्ति की दीक्षा तथा रामकाव्यरचना की प्रेरणा देने वाले उनके 'स्वप्नगुरु' गोस्वामी तुलसीदास ही थे—

'मिले है स्वप्न माहिं कृपाकरि दीने बर,
बढो अनुराग पुनि सुने सुभबानी है।
बनादास गुरू भाव माने है गोसाईं विषे,
ताते मति मेरी विन दाम ही बिकानी है।।

अपनी सारी काव्यशक्ति को ये रामनाम तथा गुरु-चरणो का ही प्रसाद मानते थे—

पढ्यो न पुरान वेद काव्य शास्त्र ग्रथ एक,
नाम के प्रभाव रामचरित मे अबादी है।
मान औ बडाई मतवाद द्रव्य हेत पढै,
कीरति की चाह ताकी सम्यक् बरबादी है।।
मानुप तन लाभ रामभक्ति बात साची यह,
सुकृत को सीव सोई सुरपुर नामजादी है।
अतस् को भाव उरबासी रघुनाथ जाने,
काव्य बनादास की गोसाईं की प्रसादी है।।

त्रिताप-पीडित मानवता के उद्धार के लिए उन्होंने गुरुकृपा से प्राप्त रचनाशक्ति को रामयशगान मे प्रवृत्त करना ही श्रेयस्कर समझा—

आयो विकराल काल कलि काल कारो मुख,
सारो सुख सोखि लिए जीव दुख दरे है।
तिहूँ ताप तपत लपत लोभ लालच मे,
काम क्रोध प्रबल न धीर कोऊ धरे है।।
अति बिपरीत ज्ञान ध्यान न समाधि बनै,
इन्द्री-मन अजित फजीहति मे परे है।
बनादास हमरे बिचार यही सार आयो,
परम चतुर रामजस गान करे हैं।।
(उ० प्र० रा०, पृ० १८८)

अपने साधनाजन्य अनुभव के आधार पर उन्होने राम तत्त्व के सगुण तथा निर्गुण दोनों पक्षों के निरूपण के लिए 'राम यण' तथा ब्रह्मायण शीर्षक से दो पृथक् शैली के प्रबन्ध काव्यों की रचना की। साधना की आरम्भिक स्थिति मे उनके इष्टदेव 'सगुण राम थे'—अत' पहले 'अनुराग विवर्धन रामायण' लिखा गया। उसके बाद वे निर्गुण साधना म लग गये। तब उनके ध्येय हुए निर्गुण निराकार-ब्रह्म-राम। इस भावना की सिद्धि के पश्चात् उन्होंने 'ब्रह्मायन' की रचना की—

पहले रामायन भयो, जो है उपासना ग्रथ।
पीछे ब्रह्मायन भयो, जो है ज्ञान को पथ।।

इनमें प्रथम चरितात्मक प्रबन्ध है द्वितीय भक्तिपरक प्रबन्ध। पहले में उन्होंने सात खंड रखे और दूसरे में निर्गुण भक्ति की सात भूमिकाओं अथवा सोपानों को सप्त प्रबन्ध की संज्ञा दी। प्रथम को उन्होंने उपासना-ग्रन्थ कहा और दूसरे को ज्ञान पंथ का प्रतिपादक बनाया।

रचनाकाल तथा लेखन स्थान

उभयप्रबोधक रामायण की रचना मार्गशीर्ष शुक्ल ५, सं० १९३१ को राम विवाह के दिन हुई। इसका निर्देश करते हुए बनादास लिखते हैं—

हिम रितु अगहन मास सित पचमी है,
रामजूको ब्याह दिन जगत विदित है।
सम्वत सहस नवसत को प्रमान जानौ,
तापै एकतिस पुनि बरष लिखित है ।।
बनादास रघुनाथ चरित प्रकास कियो,
बुद्धि तौ मलीन पुनि लागो अति चित है।
'उभय प्रबोधक रामायन' है नाम जाको,
सात खड सात छद सारो जगहित है ।।[1]

इसका रचना स्थल अयोध्या स्थित महात्माजी का आश्रम 'भवहरण कुंज' है—

नाम भवहरनकुज अवधपुर मध्य सोहाए।
तेहि आसन आसीन चरित रघुपति को गाये ।।[2]

नामकरण तथा रचना का उद्देश्य

इस प्रकार ब्रह्म के दोनो स्वरूपो का व्यावहारिक धरातल पर सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद अपने पुञ्जीभूत अनुभव की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने 'उभय प्रबोधक रामायण' की रचना की। इस महान दायित्व के निर्वाह मे उन्हे इष्टदेव की अहैतुकी कृपा का ही भरोसा था—

उभय ब्रह्म को रूप अगम सत सिंधु समाना।
तासु निरूपण करब कठिन सब कोऊ जाना ।।
सीलधाम श्रीराम जानि जन करहिं सहाई।
सगुन रूप हित कथन लेहिं गहि बाँह उठाई ।।
अगुन अमित उतकिष्ट है कहब कठिन समुझब कठिन।
कह बनादास नहिं आन गति पार करिहि को राम बिन ।।

प्रतीत होता है कि 'उभय प्रबोधक' नाम रखने की प्रेरणा भी उन्हें अपने काव्यगुरु की की अमर कृति 'रामचरितमानस' से ही मिली थी। बालकाण्ड के नामवंदना-प्रकरण की अधोंकित पंक्ति मे इस शब्द का स्पष्ट उल्लेख है—

---

१. उभय प्रबोधक रामायण, अयोध्याखंड, पृ० ६६
२. वही, पृ० ६७

उभय प्रबोधक रामायण (अयोध्या खड) के मूल हस्तलेख का एक पृष्ठ

अजो॰
॥१२०॥

महात्मा वनादास की हस्तलिपि से लिखित उभय प्रबोधक रामायण (अयोध्या खड) के पत्र सं० १२० का चित्र

अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

उभय प्रबोधक नाम के गंभीर तथा व्यापक अर्थ एवं प्रभाव की ओर वे लक्ष्य करते हुए कहते हैं—

ज्ञानीजन-भूषन हरन सब दूषन प्रताप-ससि-पूषन करत निसकाम है।
राम मे रमावत बढावत बिराग ज्ञान ध्यान सरसावत औ देत अभिराम है ॥
साति उर आवत लगावत न नेह कहूँ जगत नसावत विवेक सुठिधाम है ।
बुद्धि बल हीन औ मलीन बनादास बदै उभय प्रबोधक रमायन सो नाम है ॥

उभय प्रबोधक रामायण मे राम के सगुण तथा निर्गुण रूप के समन्वय का असिधारव्रत उन्होंने बडी कुशलता से निभाया है । ग्रन्थ के आरम्भ मे ही उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप सम्पूर्ण रामकथा की प्रतीकात्मक व्याख्या आध्यात्मिक रूपक योजना के माध्यम से प्रस्तुत कर दी है—

रावण पक्ष—भय लकागढ अगम मोह दसकधर बीरा ।
कुभकर्न है क्रोध सहज ही दहै सरीरा ॥
मेघनाद है काम महोदर पुनि हकारा ।
लोभ जानु अतिकाय अकपन मान विचारा ॥
अनी आदि आश्चर्य है, मो मात्सर्यहिं मानिए ।
कह बनादास बहु वासना, तृस्ना कटकहिं जानिए ॥'[1]
अछय राग अति अबल द्वेष मकराक्षहि जानो ।
विधि प्रहस्त को कहो निषेधहि दुर्मुख मानो ॥
विद्धत्सिवा कपट दभ कहिए सुरघाती ।
त्रिशिरा प्रबल पखड क्पट है मनुज अराती ॥
आशा सिन्धु अपार है, चहुँ दिसि ते घेरे सदा ।
कह बनादास को पार लह, राम लोन करिए अदा ॥[2]

राम पक्ष—इहाँ ग्यान कपिराज रीछ कहिए बिग्याना ।
धीरज अगद अचल विरति अतिसय हनुमाना ॥
पनस-नील-नल-द्विविद-केसरी सुठि भट भारी ।
कुमुद मयन्द सुमन लहै सपन्यो नहिं हारी ॥
दधि मुख नौ भक्ती सुवन अतिप्रताप बल भूरि है ।
कह बनादास समय नही देत मोह बल तूरि है ॥'[3]

युद्धोपकरण (आध्यात्मिक तथा लौकिक)
भक्ती को बल अचल क्वच सो धारण कीजै ।
गुरुकृपा है टोप सीस पर सो धरि लीजै ॥

---

१ उ० प्र० रामायण, पृ० १७ (५२)
२. वही, पृ० १७ (५३)
३. वही, पृ० १७ (८४-५७)

सुचि विचार को दड नियम-यम-संयम बाना।
तप चोखी तरवारि भरोसा चर्म प्रमाना॥
श्रद्धा अरु उत्साह पुनि, हिम्मति अभग तुरंग है।
कह बनादास स्यदन सुकृत, होन योग नहि भग है॥'[1]
हरदम सुमिरन नाम सारथी परम सयाना।
मत्री पुनि सतसग मैन बहु वेद विधाना॥
सर्वभाँति सतोष सेत ताको दिढ़ करिए।
परमबोध रिपु-वंधु छत्र अविचल सिर धरिए॥
प्रबल अनल वैवल्य की, लक फूकि करिए कटा।
कह बनादास नैना मजग कबहुँ न पग पीछे हटा॥[2]

परिणाम—सहजस्वरूप, मोक्ष अथवा अवध (धाम) की प्राप्ति

काटि रिपुन को सीस सिया-सातिहि उर लावै।
अविचल वृत्ति विमान तहाँ सादर बैठावै॥
मन मुनि को करि सुखी भर्म महिभार उतारै।
नाना सकट सहै देव आतमहि उबारै॥
सहज सरूप सो अवध है तहाँ पलटि कारज सरै।
नहि बनादास जन्मै मरै अविचल राज सदा करै॥'[3]

राममक्ति-साधना का आदर्श—

जो ठाटै यह ठाट उपासक राम सो सच्चा।
नतरु वेप करि लिए पेट के कारन कच्चा॥
करम वचन मन चलै यही मग में मरि जावै।
तो भी नहि सदेह अंत मे हरिपुर पावै॥
रामकृपा सिधि होइ जो, जीवनमुक्त कहाइहै।
कह बनादास यहि तन सुखी बहुरि न यहि जग आइहै॥[4]

राम के ऐतिहासिक चरित की आध्यात्मिक व्याख्या के सूत्र बनादास को 'स्वप्न गुरु' तुलसी की कृतियो मे मिले थे। सीताहरण से लेकर रावण वध और सीता की पुनः प्राप्ति का वृत्त इस दृष्टि से विशेष महत्त्व का रहा है। अज्ञान के कारण मोहासक्त जीव की नित्यस्वभावभूताशक्ति शाति का हरण होता है। वैराग्य वृत्ति के माध्यम से उसका संधान और पुनः प्राप्ति ही जीव अथवा साधक का परम पुरुषार्थ है। रावण के द्वारा अपहृता सीता को हनुमान के माध्यम से खोज और रावण का

---

१. वही, पृ० १७
२. उभय प्रबोधक रामायण पृ० १८ (५६)
३. वही, पृ० १८ (५७)
४. उ० प्र० रामायण, पृ० १८ (५८)

वध करके सीता को पुनः प्राप्त करने की कथा इसी आध्यात्मिक सदर्भ द्वारा व्याख्यायित हुई है। तुलसी की 'मोह दसमौलि तद्भ्रातअहंकार' तथा 'प्रबल वैराग्य दारुण प्रभंजन तनय' जैसी पंक्तियाँ इसकी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है।

रामकथा की इस आध्यात्मिक व्याख्या से उभयप्रबोधक की वस्तु योजना मे कवि के दो उद्देश्य स्पष्टया लक्षित किये जा सकते हैं—

१ रामचरित के पक्ष मे घोर अत्याचारी रावण का लोकनायक राम के हाथों वध दिखला कर विश्व मे शाति तथा सुव्यवस्था की स्थापना।

२. साधन के पक्ष मे कठोर तपस्या के द्वारा उपार्जित वैराग्य भक्ति, ज्ञान आदि सद्-वृत्तियो के सहयोग से आत्मोत्थान मे बाधक आसुरी वृत्तियों—हीन मनोविकारो का नाश और अततः आत्मज्ञान, शाति तथा जीवन्मुक्ति की प्राप्ति।

उभयप्रबोधक रामायण की कथावस्तु को सात खडो मे विभाजित करते हुए प्रबन्धकार ने उनके नामकरण तक मे उपर्युक्त लक्ष्य को बराबर ध्यान मे रखा है। यह खडो के वर्ण्य विषय के निम्नाकित विवरण से स्पष्ट हो जायेगा।

आरम्भ मे मूलखड है, जिसके अन्तर्गत ग्रथ मे दी गयी समस्त रामकथा सक्षेप मे कही गयी है। इसके पश्चात् प्रबन्धकाव्य के वास्तविक वर्ण्यविषय का श्रीगणेश होता है। नीचे उपर्युक्त दोनो दृष्टियों से उसके सात खडो मे प्रतिपादित तथ्यो की मीमासा की जाती है—

१. नामखंड

(क) बनादास की साधना का मूलाधार रामनाम-जप था। उसी के द्वारा उन्होने राम के सगुण तथा निर्गुण स्वरूप का बोध प्राप्त किया था। ग्रथ का उभयप्रबोधक नाम भी रामनाम की इसी विशेषता के कारण रखा गया है। अतएव रचयिता ने आरम्भ मे नाम-महिमा निरूपण के व्याज से अपनी अगाध रामनामनिष्ठा व्यक्त करने के साथ ही असीम अनुग्रह के लिए आराध्य के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन का भी अवसर निकाल लिया है।

(ख) साधना की दृष्टि से नामजप ही उसका प्रथम सोपान है।

२ गुरुखंड

(क) रामकाव्य रचना की प्रेरणा बनादास को गोस्वामी तुलसीदास से मिली थी। उन्होने स्वप्न मे दर्शन तथा वरदान देकर इन्हे प्रोत्साहित किया था। बाल्यावस्था से ही इन्होंने तुलसी-साहित्य का गहन अनुशीलन किया था। इससे इनके हृदय मे तुलसी के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो गयी थी और वह इस सीमा तक पहुँच गयी थी कि—

"जो अवतार न होत गोसाईं को
को जग जानतो राम वेचारे।"

लिखकर उन्होंने तुलसीदास को लोकोद्धारक राम का भी उद्धारक घोषित कर दिया।

(ख) साधना की प्रारम्भिक स्थिति मे गुरु-शरणागति एक अनिवार्य भूमिका है।

३. अयोध्या खंड

(क) इस खंड मे रामजन्म से लेकर राज्याभिषेक की तैयारी तक की वे समस्त घटनाएँ सन्निविष्ट हैं, जो राम के जीवन के पूर्वपक्ष में अयोध्यावास के समय घटीं।

(ख) साधना की दृष्टि से यह स्वधर्मपालन अथवा कर्मयोग का काल है। बनादास भक्ति-साधना की प्रारम्भिक स्थिति मे विहित कर्म एवं वर्णाश्रम धर्म का पालन आवश्यक मानते हैं।[1]

४. विपिन खंड

(क) इस प्रकरण मे राम के चौदह वर्षीय प्रवासी-जीवन का चित्रण है। राम की अवतार-लीला का चरमोत्कर्ष तथा लक्ष्यसिद्धि जिन परिस्थितियों मे हुई, उनका इस खंड में सांगोपांग चित्रण अत्यन्त रोचक शैली मे किया गया है। अतएव यह चरितनायक के पुरुषार्थपूर्ण-जीवन का कर्त्तव्यप्रधान पक्ष माना जा सकता है।

(ख) स्वरूपज्ञान प्राप्ति अथवा आत्मोद्धार के हेतु बनादास रामभक्त के लिए चौदह वर्ष की कठोर तप-साधना अनिवार्य मानते हैं।

उन्होंने स्वयं आत्मज्ञान की प्राप्ति इसी पद्धति से की थी——

चौदह वर्ष को राम गये बन भूप तजे तन जान जहाना।
औध निवासी सहे सब सकट कै तप औ ब्रत सयम नाना॥
लक्ष्मण औ सिय संग दिये भए भस्म धरै महँ भर्त सुजाना।
दासवना सनवध जो राम से तौ किन लीजिए पथ पुराना॥

बरष चारि दस राम रटु, पन्द्रह लागत राम।
वनादास वादे वहैं, लहै महासुख धाम॥

प्रकारान्तर से इसे भक्तिमार्ग की साधना की पूर्णावस्था कह सकते हैं।

५. विहार खंड

(क) इस खंड मे राम के उत्तरचरित का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत राज्यारोहण के बाद भरत के साथ उनकी लङ्का, किष्किंधा, मिथिला तथा काशी यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त चारों भाइयों के पुत्रों की उत्पत्ति, रामराज्य की व्यवस्था एवं रामाश्वमेध की कथा भी इसमें संक्षेप मे दे दी गयी है।

(ख) साधना पक्ष मे यह खंड स्वरूप-प्राप्ति के पश्चात् तत्त्वचर्चा अथवा परामर्श-चिंतन की स्थिति का द्योतक है। इसकी पुष्टि राम के उन प्रवचनों से होती है, जो उन्होंने विभीषण, सुग्रीव और काशिराज की जिज्ञासा-निवृत्ति के लिए दिये हैं।

---

[1] स० वि०, पृ० ४१

६. ज्ञान खड

(क) इस खड मे राम ने हनुमान का ज्ञान, शत्रुघ्न का विज्ञान, लक्ष्मण को कैवल्य तथा भरत को रामभक्ति का उपदेश दिया है।

(ख) साधना की दृष्टि से उपासना के बाद ज्ञान की दशा आती है। विज्ञान और कैवल्य उसी के परवर्ती सोपान है। महात्मा बनादास सगुण भक्ति साधना के द्वारा प्राप्त पराभक्ति को निर्गुण साधना के कैवल्य पद से अभिन्न मानते हैं। ज्ञानखड मे इस तथ्य का निदर्शन करते हुए उन्होंने राम के द्वारा भरत को पराभक्ति का स्वरूप समझाए जाने की योजना की है। इस माध्यम से कवि ने ज्ञान-भक्ति तथा निर्गुण-सगुण की एकता विषयक अपनी साधनापुष्ट मान्यता प्रतिपादित की है।

७. शांति खड

(क) इसके अन्तर्गत राम के मुख से भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तथा हनुमान को शांति का उपदेश दिये जाने का वर्णन है। शांति के वास्तविक स्वरूप की व्याख्या करते हुए उसे सभी साधनो की सिद्धावस्था मानते हुए मुक्ति से भी अधिक महत्त्वपूर्ण एव सर्वात्मनाकाम्य बताया गया है।

(ख) साधना की दृष्टि से शांति अथवा 'परमविश्राम' की प्राप्ति ही भक्त का परम लक्ष्य होता है। यही जीवन्मुक्तावस्था है, जिसमे साधक शरीर धारण करते हुए भी सर्वथा असग एव असपृक्त भाव से कालक्षेप करता हुआ अहर्निश अखड ब्रह्मानन्द मे लीन रहता है।

बनादास ने इन सारी स्थितियों का प्रत्यक्षानुभव अपने जागतिक जीवन मे किया था। उभयप्रबोधक रामायण के आरम्भ मे किये गये सकल्प की पूर्ति चरितनायक की कृपा से किस प्रकार हुई, इसका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं—

मांगे प्रथमहिं ग्रथ मे, दोऊ रूप को लाह।
सुनवाई अतिसय किये, सो मुख कहिए काह ॥
सो मुख कहिए काह, मोहिं गहि बाँह उबारे।
सकल अग से हीन, कीन निज ओर कृपारे ॥
अब कुछ इच्छा ना रही, बनादास गै दाह।
मांगे प्रथमहिं ग्रथ मे, दोऊ रूप को लाह ॥

इस प्रकार बनादास ने साधनाजन्य अनुभव तथा प्रौढ प्रबन्ध-कल्पना के द्वारा निर्गुण और सगुण दोनो धाराओं की उपासनागत एकता को रामकथा के माध्यम से समान आधारभूमि पर प्रतिष्ठित करने का अप्रतिम प्रयोग किया है। इसके पूर्व हाथरसवाले तुलसीसाहब ने 'घट रामायण' मे रामकथा की निर्गुण मतानुकूल व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया था, किंतु वह एकागी था। इसलिए न तो सगुण रामोपासकों मे समादृत हो सका न निर्गुणमार्गी सतो द्वारा ही। सतुलित दृष्टि से राम के सगुण-चरित के वैशिष्ट्य प्रतिपादन के साथ रामतत्त्व के साधनात्मक महत्त्व के निदर्शन मे 'उभयप्रबोधक रामायण' पूरी रामायण परम्परा मे अन्यतम है।

कथात्मक वैशिष्ट्य

महात्मा बनादास के आविर्भाव (१९वीं शती) के पूर्व विरचित रामायणो की जो सूची पीछे दी गयी है, उससे स्पष्ट है कि रामकथा के विभिन्न रूपों को लेकर भारत की प्राचीन तथा मध्यकालीन

प्रादेशिक भाषाओं मे प्रचुर साहित्य-रचना हो चुकी थी। किंतु इन भाषाओं का ज्ञान न होने से उनकी जानकारी हिन्दी के राम-साहित्य और उसमे भी विशेषकर रामचरितमानस तक ही सीमित रही है। अपनी रचनाओं मे उन्होने इस तथ्य का अनेक स्थलो पर उल्लेख किया है। उनकी भाषा पर तुलसी-साहित्य और विशेषकर मानस का इतना गहरा प्रभाव है कि उसके अनेक प्रसगों के भाव ही नही, उक्तियों तक के छायानुवाद और कहीं-कहीं पूरे वाक्यांश ज्यो-के-त्यो आ गये हैं। इससे स्पष्ट है कि रामकथा के लिए बनादास को मुख्य रूप से 'रामचरितमानस' पर ही निर्भर रहना पड़ा था। किंतु उनकी अन्तश्चेतना, अंधानुसरण की विरोधी थी। अतः अध्यात्मयोजना की भाँति प्रसंग कल्पना मे भी मानस के ढर्रे से हटकर उन्होने अनेक स्थलो पर नये कथाप्रसगो की उद्भावना करके मौलिक दृष्टि का परिचय दिया है। प्रचलित रामकथा मे उन्होने जो परिवर्तन तथा परिवर्धन किये हैं, वे समकालीन जीवन के निकट होने के साथ ही सत परम्परानुमोदित हैं। इनकी योजना मे उनका लक्ष्य रामचरित को प्रासगिकता, पूर्णता, उज्ज्वलता तथा स्वाभाविकता प्रदान करना रहा है। ऐसे कुछ प्रसग नीचे दिये जाते है—

१. सीता का जन्म और बाल विनोद
२. राम की जलक्रीडा, अयोध्या की गलियो मे सखाओं के साथ खेलना तथा मृगया विहार।
३. विवाह के अवसर पर मिथिला की स्त्रियों से हास-परिहास।
४. सखाओ तथा सीता का सखियों के साथ राम का वसत एव फागलीला और सीता के साथ हिंडोललीला।
५. राम की रासलीला।
६. मिथिला मे राम की पहुनाई।

इनके अतिरिक्त बनादास ने कुछ ऐसी भी कथाएँ रामचरित मे जोड़ी हैं, जिनका उल्लेख प्रचलित रामायण मे नही मिलता—

१. राम का स्वेच्छा से वनगमन।
२. राम की राज्यग्रहण से विरक्ति।
३. राज्याभिषेक के बाद भरत के साथ राम की लङ्का, किष्किन्धा, मिथिला तथा लक्ष्मण के साथ काशी यात्रा[1]

---

१. राम के उत्तरचरित से सम्बद्ध उनकी पुनर्लङ्कायात्रा का वर्णन नृसिंह पुराण (अध्याय २७) मे मिलता है। इस यात्रा मे उनके द्वारा लङ्का मे पुण्यारण्य की स्थापना हुई थी। स्कदपुराण (नागर खड, अध्याय १०१), लक्ष्मण के परमधाम गमन के अनतर सुग्रीव को लेकर राम के लङ्का जाने, वहाँ विभीषण को देवपूजा का आदेश देने मे तथा विभीषण के अनुरोध पर सेतु नष्ट करने का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त पद्मपुराण (सृष्टिखड, अध्याय ३५) में भी सीता के भूमि प्रवेश के पश्चात् अयोध्या राज्य का भार लक्ष्मण को सौंपकर भरत के साथ पुष्पक पर चढ़कर पश्चिम मे भरत तथा लक्ष्मण के पुत्रों से मिलकर राम के सुग्रीव के साथ लङ्का जाने का विवरण मिलता है। महात्मा बनादास की पहुँच इन पुराणों तक नहीं थी, प्रतीत होता है, यह प्रसंग उन्होंने सत्सग-क्रम मे सुना था। उसे ही अपनी कल्पना से समृद्ध कर कुछ परिवर्तित रूप मे प्रस्तुत कर दिया। यह घटनाओ के क्रम-नियोजन-पद्धति से स्पष्ट हो जाता है।

इससे स्पष्ट है कि बनादास ने रामकथा के परपरागत रूप की रक्षा करते हुए जो परिवर्तन किये हैं, उनका उद्देश्य कथानक मे सजीवता तथा स्वाभाविकता लाना रहा है। 'रामचरितमानस' के कतिपय प्रसगो के त्याग तथा आवश्यक परिशोधन मे भी उनका यही दृष्टिकोण रहा है, किन्तु इस क्षेत्र मे उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान नये प्रसगो की उद्भावना तथा निर्गुण-सगुण रामभक्तो की परस्पर विरोधी विचारधाराओ मे सामजस्य की स्थापना रहा है। उनकी अमर कृतियाँ—उभय प्रबोधक रामायण तथा 'ब्रह्मायण' प्रकाशनस्तम्भ की भाँति शताब्दियो तक साधको तथा भक्तो का दिशा-निर्देश करती रहगी।

रसिक रामभक्तो की भावना का सत्कार करते हुए उन्होने राम की विहार लीलाओ को भी अपनी चरित योजना मे समुचित स्थान दिया, सख्यभावोपासको की तुष्टि के लिये भाइया तथा सखाओ के साथ उनकी बालक्रीडा तथा पर्यटन का वर्णन किया और सूफी साधको की शैली म विरह-जन्य व्याकुलता के मनोरम चित्र प्रस्तुत किये। रामकथा के ढाँचे म इन सारे तत्त्वो का समावेश करते हुए भी *उन्होने मर्यादा की सीमा वहा पार नही होने दी, सब कुछ सयत,* परम्परानुमोदित और सुरुचिपूर्ण बनाये रखा। भावप्रवाह मे कभी बहे नही, न तर्कातिरेक से कथा की वास्तविकता म सदेह और नीरसता आने दी। विचार स्वातत्र्य की रक्षाका आग्रह इस हद तक रहा कि गोस्वामी तुलसीदास का 'स्वप्नगुरु' मानते और 'रामचरिमानस का वेदो की भाँति पूज्य स्वीकार करते हुए भी उन्होने 'सगुणोपासन मोक्ष न लेही' से सहमत न होकर मोक्ष अथवा सायुज्यमुक्ति को ही अपनी साधना का लक्ष्य ठहराया—

मोहिं सतगुरु उपदेस राम भजि राम सो होनै।
राम भजनफल सोइ जीव जीत्वहि खोवै॥
जपि उल्टा हरिनाम भयो मुनि ब्रह्म समाना।
महूँ जपा हरिनाम राम सो सब बिधि जाना॥
याहू पै सका करे ताको नहि परवाह है।
बनादास निर्भय सदा भाषत ज्ञान अथाह है॥

किसी प्रकार का बधन स्वीकार न करने वाली *उनकी फक्कड प्रकृति का अनुमान* इसी से लगाया जा सकता है।

आलोच्य ग्रथ की इतनी विवेचना के पश्चात् यह कहने पर कौन विश्वास करेगा कि उसके रचयिता का अक्षर ज्ञान *ककहरा तक ही सीमित था, यहाँ तक कि उसे मात्राओं की भी पूरी जानकारी* नही थी। इस अभाव की पूर्ति उसने कठोर साधना द्वारा का। 'अक्षरज्ञान की प्राप्ति उसे इसी से हुई। *इसलिये 'कवित-दोष गुन' के पारखी विद्वानो की कसोटी पर 'उभयप्रबोधक रामायण' खरा न उतरे* तो कोई आश्चर्य नही। परन्तु 'भावभेद' और 'रसभेद' के मर्मज्ञ सुहृदयो का इससे अपार आत्मतोष तथा दिशानिर्देश प्राप्त होगा ऐसा इसमे सदेह नही।

इस ग्रथ का प्रथम सस्करण रचयिता के जीवनकाल मे ही १८८२ ई० म नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ था। उसके संस्थापक मुशी नवलकिशोर बनादासजी के कृपापात्र थे। उन्होन इनकी सारी कृतियो को प्रकाश मे लाने का सकल्प किया था, किंतु दैवयोग से उभयप्रबोधक रामायण के प्रकाशन-वर्ष मे ही उनका देहावसान हो गया। महात्माजी भी उसी के आसपास साकेतवासी हो

गये। उनके दिवंगत होते ही अयोध्यास्थित 'भवहरण कुंज' आश्रम की व्यवस्था अस्तव्यस्त हो गयी। नवलकिशोर प्रेस के नये अधिकारियों की भी दृष्टि बदल गयी। अतः शेष समस्त ग्रंथ हस्तलेख रूप में पड़े रह गये। उभयप्रबोधक रामायण भी कुछ ही दिनों में अप्राप्य हो गयी।

मेरे लिये यह परम संतोष का विषय है कि लोकभारती प्रकाशन के स्वत्वाधिकारी बन्धुद्वय श्रीरमेशचन्द्र तथा श्रीदिनेशचन्द्र ने गगनचुम्बी प्रकाशनव्यय की वर्तमान स्थिति में इस बृहत्काय ग्रंथको प्रकाश में लाने का सत्साहस किया। इसके लिये हम उनके आभारी हैं। ग्रंथ की साजसज्जा में उनके परम्परागत संस्कार प्रतिबिम्बित हैं। स्थान तथा समय के व्यवधान से प्रूफ संशोधन की यथोचित व्यवस्था न हो पायी, इसका हमें खेद है। आशा है उदार पाठक परिस्थितिजन्य विवशता क्षम्य मानकर अपने जाग्रत विवेक से भ्रांतियों का संशोधन कर लेंगे।

रामकाज में सहृदयों के इस कृपापूर्ण सहयोग के लिये

(वसंतपचमी) सं० २०३६ — विनयावनत

साकेत, बेतियाहाता — भगवतीप्रसाद सिंह

गोरखपुर।

उभय प्रबोधक रामायण की विषयानुक्रमणिका

चतुर्थ—विपिन खंड

महात्मा बनादास

महात्मा बनादास : जीवन परिचय[1]

उत्तर मध्यकालीन राम भक्तो मे काव्यरचना के परिमाण तथा गुण—दोनो दृष्टियों से बनादास का विशिष्ट स्थान है। तुलसीपथ का अनुसरण करते हुए भी समकालीन परिस्थितियों के अनुसार उन्होंने विषय, शैली तथा सिद्धान्तों मे सशोधन कर रामकाव्य मे स्वतन्त्र चेतना के विकास का परिचय दिया है।

इनका जन्म अयोध्या के निकट गोंडा जिले के अशोकपुर नामक गाँव के एक क्षत्रिय परिवार मे पौष शुक्ल ४, स० १८७८ को हुआ था। बाल्यावस्था मे ही इन्होंने पुनर्जन्म न लेने का निश्चय कर लिया था—

बाढी श्रद्धा हिए बालपन ते अति भारी।
यहितन नाधौ जक्त फिरौ नहिं अवकी पारी॥
विघन विपति जो परै सहौं सो सुठि हरषाई।
याही दिढ सकल्प जाहिते फिरि नहिं आई॥

दीक्षा

पुत्र की आध्यात्मिक प्रवृत्ति को देखकर पिता गुरुदत्तसिंह ने उसे अपने कुलगुरु तथा सिद्ध शैव योगी महात्मा लक्ष्मणवन से दीक्षा दिला दी। उस समय ये बिल्कुल अबोध थे—

गुरु करने को मोहिं न ज्ञाना। देखि महातम पितु अनुमाना॥
तिनके सरन दिए करवाई। यतनी धर्म बुद्धि तब आई॥
वृद्ध प्रतिष्ठित सिद्ध मुनि, निधि जोग अरु ग्यान।
सभु उपासक सुठि सबल, मोहिं कह्यो सिव ध्यान॥

उसी अवस्था मे इन्होने गुरु के निर्देशानुसार शिवपूजा, रामचरितमानस का पाठ और गीता के अनुसार योगाभ्यास करना आरम्भ कर दिया। पिता को आशका हुई कि कहीं ये घर-बार छोडकर विरक्त न हो जाएँ। अतः लौकिक जीवन मे रुचि उत्पन्न करने के लिए उन्होंने इनका विवाह कर दिया। इसके बावजूद इनकी अध्यात्म-साधना का प्रवाह पूर्ववत् गतिशील रहा।

सेना में नौकरी

घर की आर्थिक अच्छी स्थिति न होने से इन्होंने भिनगा राज्य (बहराइच) की सेना मे नौकरी कर ली और लगभग सात वर्ष तक वहाँ रहे। इस सैनिक जीवन की छाप इनके व्यक्तित्व पर अन्त बनी रही। गृहत्याग के पश्चात् अखण्ड अवधवास करते हुए भी ये अपने को इष्टदेव का सिपाही ही मानते थे—

---

१. विशेष अध्ययन के लिए द्रष्टव्य—महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य—(डा० भगवती प्रसाद सिंह)

हम तो है रघुवीर सिपाही ।
निसि दिन रामनाम रटिवे को और हुकुम हमरे सिर नाहीं ।।
काया मुलुक जगीर मिली है सुवस बसावन मो मोहि चाही ।।
विरति चर्म असि ग्यान अनूपम सुमति सनाह न पटतर जाही ।।
'दासबना' प्रभु विरद भरोसे बसत सदा सरयूतट माहीं ।।

जिस समय ये भिनगा में नौकरी कर रहे थे, इनके चचेरे भाई मोतीसिंह के उद्योग से घर की स्थिति सुधर गयी। उन्होंने बलरामपुर राज्य में बहुत से गाँव लेकर खेती की उत्तम व्यवस्था कर ली। उनके अनुरोध से 'बनासिंह' नौकरी छोड़कर घर चले आये। विरक्ति के पूर्व अपने कुटुम्ब की सम्पन्नावस्था की ओर संकेत करते हुए वे एक स्थान पर कहते हैं—

बनादास राज बादसाही छोड़ि साधू भये,
रक्त को बढावनो विरक्त को न काम है।

पुत्र शोक

घर रहते अधिक दिन नहीं बीते थे कि १२ वर्ष की आयु में इनका एकमात्र पुत्र दिवंगत हो गया। बनादास के जीवन में इस घटना ने युगान्तर उपस्थित कर दिया। सामान्य लोगों की भाँति इसे दैवी कोप मानने के बदले इन्होंने आराध्य की असीम कृपा का फल माना। इन्हें संसार की असारता का बोध हो गया अतः पुत्र के शव के साथ ही अयोध्या चले गये—

यह जग काँचो काँच सम, साँचो है हरिनाम ।।
बनादास यह समुझि कै, कीन्ह्यों अवध पयान ।।

अयोध्या आगमन

जिस दिन ये अयोध्या पहुँचे कार्तिक पूर्णिमा (सं० १९०८) का महापर्व था। इस समय इनकी आयु ३० वर्ष की थी—

सुदी कातिक पूर्णिमा, महापरब जग जाति ।
तब आयो प्रभु धाम में, सन सवत सोइ मानि ।।
तीस बरस को है बयस जुगल मास दिन तीन ।
एक भरोसो राम को, और आस भइ छीन ।।

पुत्रशोक ने सांसारिक जीवन में इनकी आसक्ति समाप्त कर दी। मानसिक वृत्तियाँ शिथिल हो गयीं और शरीर क्षीण होने लगा। कृपासिन्धु ने सांसारिक बन्धन की प्रबलतम कड़ी को तोड़कर इनके आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर दिया। 'उभय प्रबोधक रामायण' में इस स्थिति की ओर लक्ष्य करते हुए ये लिखते हैं—

कृपापात्र को रुज मिलै निर्धनता अपमान ।
कुल कुटुम्ब को नास भै अति करुना भगवान ।।
अति करुना भगवान बंस को छेदन कीना ।
ममता रही न कहूँ सिथिल मन तन सुठि खीना ।।
बनादास पीछे दिये, दिढता आतम ग्यान ।
कृपापात्र को रुज मिलै निर्धनता अपमान ।।

अयोध्या मे ये पहले कुछ दिनों तक स्वर्गद्वार पर रहे। वर्षा ऋतु मे वह स्थान पानी से भर गया तब इन्हें कही अन्यत्र कुटी बनाने का चिन्ता हुई। सर्वथा निराश्रय होने से उस स्थिति मे इन्होंने सहायता के लिये प्रभु का स्मरण किया—

राम मोहि आसन भूमि बताओ, दूजो कौन जाहि गोहरावौ ।।
कोउ कहै मेरो मन्दिर छोडो, कोउ चहै टहल करावौ।
कोउ कहै कछु देहु रहौ तब, का दै कै समुझावौ ।।
कोउ खातिर करि कै लै आवत, तहँ मेरे मनहि न भावौ।
जब गृह रह्यौ गृथ नहिं बांध्यौं, अब तब दास कहावौ ।।
यासे कहौं कुटी मेरो छावौ, दरवि न दै बनवावौ।

अन्त मे वह स्थान छोडकर इन्होंने रामघाट पर रहने का निश्चय किया। वहां एक अशोक वृक्ष के नीचे धूना लगाकर ये निश्चिन्त भाव से भजन करने लगे—

आसन है सतोष तख्तपर रामघाट के नाके है।
आप से आवै ताको पावै करत कभी नहि फाके है ।।
अब तौ बादसाह लघु लागै युगल माधुरी झांके हैं।
बनादास सियराम भरोसे अवधपुरी के बाके हैं ।।

तीर्थाटन

इस प्रकार आकाशवृत्ति से कुछ समय तक अयोध्यावास करने के अनन्तर इनकी इच्छा देशाटन करने की हुई। अपनी तीर्थयात्रा की रूपरेखा इन्होंने स्वतत्र रूप से निर्धारित की, जो इस प्रकार थी—

कासी से उठावै रामनाम लवलावै,
प्रागराज मे अन्हावै चित्रकूट महँ आवई।
नीमसार धावै हिय अति हरसावै,
छेत्र सूकर नहावै मनोरामापर जावई ।।
मिथिला को पाय नहिं आनन्द समाय,
बक्सर बारानसी पुर कोसल चलावई।
बदै 'बनादास' परिक्रमा को सरूप यह,
रीझे सियाराम मुख मांगै सोई पावई ।।

सद्गुरु प्राप्ति

पर्यटन समाप्त होने पर अयोध्या आकर ये अपन रामघाटवाले पुरान आसन पर पुन रहने लगे। परमहस सियावल्लभ शरण से, जिन्हें इन्होंने सद्गुरु माना है, इनकी भेंट इसी स्थान पर हुई। उनसे इन्होंने भक्ति, ज्ञान और योगमार्ग का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया। उन्हीं की प्रेरणा से ये 'अजगर-वृत्ति' धारण कर कठोर साधनामे प्रवृत्त हुए। इनकी प्रतिज्ञा थी—

देहौं देखाय महातम नामको तौ जन रामको हौ सुचि सांचौ।
आस औ वासना के वस ह्वै जग मे नट माफिक नाच न नाच्यौ ।।
दास बना कलिकाल करान मे, ना तौ अहै सब साधुता कांचो।
है दसरथ्थ के लाल ही को बल बिस्नु, बिरचि महेस न जांच्यौ ।।

नाम साधना

इस नाम साधना में इनके आदर्श भरत थे। बनादासजी का विश्वास था कि जिस प्रकार राम-वनवास के समय नंदिग्राम में तपोमय जीवन व्यतीत करके भरत ने अपने आराध्य 'राम' का साक्षात्कार-लाभ किया था उसी भाव को धारण कर तपश्चर्या करने से आज भी राम का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त किया जा सकता है—

चौदह वर्ष अखड धरै व्रत जैसे किये प्रभु लछमन सीता।
जैसे किये बनि औध में भर्त तबै सनवध है साँचु पुनीता॥
भाव वात्सल्य कहे न बनै कछु देखु विचारि महीपति बीता।
'दास बना' प्रभु अतर्यामी देखावन को जग स्वाग अमीता॥

इस चतुर्दशवर्षीय साधनाका स्वरूप स्पष्ट करते हुए वे एक स्थान पर लिखते हैं—

चौदह बरस एक लक्त। नहिं पास कोउ अनुरक्त॥
नहिं आखि दिन मे लागि। यहि भाँति आलस भागि॥
मकरी कैसा तार, आठ पहर चौंसठि घरी।
लगा रहै निसि बार, बनादास सो भजन है॥

नाम स्मरण करते-करते परम विरहासक्ति जाग्रत हो गयी। इसी को इन्होंने 'प्रियतम' की प्राप्ति का मुख्य साधन माना है—

नाम अखण्डित धार रटु, सब्द न बाहेर जाय।
बनादास कछु काल मे, देइहि बिरह जगाय॥
बिरह बान लाग्यो नहीं, भयो न पिय को संग।
बनादास कैसे चढ़ै, निज सरूप का रंग॥

मिलन के पहले की इस 'पूर्वतद्रूपावस्था का' निरूपण उनकी निम्नांकित पंक्तियों में बड़े ही मार्मिक रूप में मिलता है—

जिगर से जख्म भारी है। दसा विरही की न्यारी है॥
खरे नैना उदासे है। लेत गहरी उसासे हैं॥
अधर सूखे बदन जरदी। रंगे अंग रंग ज्यों हरदी॥
न आवै नींद दिन राती। स्वास ही स्वास है आती॥
दिना दिन हाय होती है। 'बना' मरना निसोती है॥
भले अन्दर जलाया है। वाह्य सों रंग छाया है॥
नहीं मन बुद्धि में आवै। वचन कैसे बखानैगा॥
करें अनुमान बहुतेरे। गया सो स्वाद जानैगा॥

साक्षात्कार

इस साधना के समाप्त होने पर अततः इन्हें आराध्य ने दर्शन देकर कृतार्थ किया। 'आत्म-बोध' में इस घटना का स्पष्ट विवरण देते हुए ये कहते हैं—

करुनामय रघुवसमनि, सहि न सके यह पीर।
हृदय कमल विगसित भयो, प्रगटे सिय रघुवीर॥

अरुन चरन पकज बरन, कल कोमल नवनोत ।
सूरति मे आयो जबै, नास भई भव भीन ।।

इनको निम्नाकित पक्तियाँ भी इसी ओर सकेत करती जान पड़ती हैं—

जुग-जुग विरद विराजत नूतन श्रुति पुरान मुनि गावै ।
अधम उधारन पतितन तारन असरन सरन बतावै ।।
मो भरि नैनन आजु बिलोकै पाये निज मन माना ।
'बनादास' प्रभु कृत त्रिमि गोवै ताते प्रगट वखाना ।।
महल तिमँजिला अति सुखदाई मुक्ति तख्त तहँ राजै ।
उपमा हेरे मिल न कतहूँ कवि कोविद मति लाजै ।।
राम कृपा ते करि बहु साधन सिद्धि अवस्था पाई ।
कोटिन मद्ध कोऊ सत जन जहाँ बिराजे जाई ।।
मुक्ति तख्त पर साति विछौना ज्ञान नीद मे मावै ।
बनादास विग्यान उमामें दुतिया कतहुँ न जोवै ।।

हम तो आतम राम है सुद्ध सच्चिदानन्द ।
सेये सीताराम के छूटि गयो भव फन्द ।।
सेवत सेवत सेव्य के सेवकता मिटि जाय ।
बनादास तब रीझि कै स्वामी उर लपटाय ।।

आश्रम स्थापना

इसके पश्चात् ये रामघाट से वर्तमान तुलसी उद्यान की पश्चिमी सीमा से सलग्न एक मुराव की बाड़ी मे आकर रहने लगे । वहाँ कभी-कभी मौज मे आकर गाया करते थे—

मूली के खेत मे तख्त पडा है ऊपर कुरिया छाई है ।
बनादास तापै सुख सोवै, जानै लोग मुराई है ।।

बनादास को यह स्थान पसन्द आ गया, अत वही एक किनारे इन्होने अपनी एक छोटी-सी फूस की कुटी बना ली और भजन करते हुए कालयापन करने लगे । मुराव ने इनके सद्भाव तथा सिद्धियों से प्रभावित होकर उस भूमि को इन्हे ही सौंप दिया । बनादास ने कुटी को आश्रमका रूप देकर उसका नाम 'भवहरण कुज' रखा । इसके बाद क्षेत्र सन्यास लेकर अपना शेष जीवन यही बिताया । इस स्थान के महात्म्य के सम्बन्ध म इनकी धारणा बहुत ऊँची थी—

कुज-भव-हरण अवध मधि उत्तम अवसि मुकाम ।
को महिमा ताकी कहै राम जानकी धाम ।।
राम जानकी धाम, काम - धुक मोहि कल्पतरु ।
बनादास मम हेतु और सारो जग थल मरु ।।
पाये सव मन कामना, एक भरोसे नाम ।
कुज-भव-हरण अवध मधि, उत्तम अवसि मुकाम ।।

इनके हाथ के लगाये अशोक, बेल और सिहोर के वृक्ष, रामकूप, राम जानकी मन्दिर तथा कुटी अब तक इस आश्रम मे वर्तमान हैं ।

ब्रह्मायन परमात्मबोध, ब्रह्मायन पराभक्ति परतु, शुद्ध बोध वेदान्त-ब्रह्मायन सार, रकारादि सहस्त्रनाम, मकारादि सहस्रनाम, बजरंग विजय, उभय प्रबोधक रामायण, विस्मरण सम्हार, सार शब्दावली, नामपरत्तुसंग्रह, नाम परतु, बीजक, मुक्त मुक्तावली, गुरु महात्म्य, संत सुमिरनी, समस्यावली, समस्या-विनोद, झूलनपचीसी, शिव सुमिरनी, हनुमंत विजय, रोग पराजय, गजेन्द्र पचदशी, प्रह्लाद पंचदशी, द्रौपदी पचदशी, दाम ढुलाई, अर्जपत्री, मोक्ष मजरी, सगुन बोधक, बीजक राम गायत्री। इनमें अन्तिम दो को छोड़कर शेष सभी प्राप्त हो गये हैं। उभय प्रबोधक रामायण नवल किशोर प्रेस लखनऊ से १८८२ ई० मे प्रकाशित हुआ था, किंतु अब वह अप्राप्त है। विस्मरणमहार १८५८ मे गुरुमहात्म्य १८७१ तथा आत्मबोध १८७७ में छपा है। ये उपलब्ध हैं, अन्य सभी रचनाएँ अभी केवल हस्तलेखों के रूप मे हैं। 'बनादास ग्रथावली' के दो भागों में इनके प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है।

साहित्यिक महत्त्व

गोस्वामी तुलसीदास के बाद रचना शैलियो की विविधता, प्रबन्ध पटुता और काव्य सौष्ठव की दृष्टि से बनादास रामभक्ति शाखा के सर्वोत्कृष्ट कवि ठहरते हैं। इनकी कृतियों की विशेषता है भक्ति की निर्गुण तथा सगुण दोनों धाराओं का अपूर्व समन्वय एव सामजस्य स्थापन। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की उक्त दोनो प्रवृत्तियो का प्रतिनिधित्व बनादास साहित्य की एक ऐसी विलक्षणता है जो अन्य किसी भक्त कवि का रचना मे प्राप्त नही होती। निर्गुण तथा सगुण दोनो धाराओ के सम्यक् ज्ञाता एव निरूपक के रूप मे उनकी रचनाएँ अनन्त काल तक साहित्यिकों तथा तत्त्वज्ञान स्पृही सतों को आकृष्ट करती रहेगी।

महात्मा बनादास और युगचेतना

महात्मा बनादास मूलतः भक्त थे। लोक जीवन से विरक्त होकर ही उन्होंने रामभक्तिपथ का अनुसरण किया था। इनका सारा साहित्य अध्यात्म-साधना के विविध तत्त्वों के निरूपण एवं विवेचन से ओत प्रोत है। विषयी प्रवृत्ति के लोगो को उन्होंने उसका सर्वथा अनधिकारी बताया है—

हित मुमुच्छु के अति सुखद, मुक्तन हू आनन्द।
विषयिन को अधिकार नहिं, बूझत नहिं मतिमंद॥

किन्तु इसका यह अर्थ नही कि वे लोक संग्रह से सर्वथा उदासीन थे। प्रत्युत उनके विशाल ह्रदय मे आर्तजनों के प्रति अगाध सवेदना थी। परस्पर विरोधी मनोविकारों तथा दुष्प्रवृत्तियों से जनमानस को निरन्तर संत्रस्त देखकर उनका हृदय तिलमिला उठता था। कालचक्र में पिसती हुई मानवता का उन्होंने बड़ा ही मार्मिक चित्र खीचा है—

दाता - मंगता रैयत - राजा। राति - दिवस औ काज - अकाजा॥
रूप - कुरूप ऊँच अरु नीचा। कंचन - काँच सुखाना - सीचा॥
सीता - उस्न पुनि छुधा - पिपासा। वंस बहुत, काहू को नासा॥
लोभ - मोह अरु काम औ क्रोधा। दूवर-मोट अवल कोऊ जोधा॥
यहि विधि चक्की कोटिन चलै। जुग पट भीतर सब जग दलै॥
दया न लागी दुष्ट के, कुवाँ मिलाई भंग।
मर्म न कोउ कह काहु सन, सबको मन बदरंग॥

युगप्रभाव को इस अनिवार्य आपत्ति से त्राण का एक मात्र मार्ग, उनकी दृष्टि मे हरि-

शरणागति है। 'कौल' का आश्रय ग्रहण करने वाले दाने ही कालचक्र से त्राण पा सकते हैं, यह उनका निश्चित मत है—

कलि कुचाल चक्की चलै, दरे जात सब लोग।
बनादास हरि की कृपा, बचे कौल संयोग॥

अन्य मनोविकारों की अपेक्षा समसामयिक लोकजीवन को भ्रष्ट करने मे लोभ के प्रतिनिधि 'पैसा' को ये सर्वप्रमुख मानते थे। हमारा राष्ट्रीय चरित्र लोभवृत्ति की प्रेरणा मे दिनोदिन कितना गिरता जा रहा है, यह सर्वविदित है। आज शायद ही कोई ऐसा मनुष्य मिले, जो किसी दाम पर बिकने को तैयार न हो, सबका अपना मूल्य है किसी का कम, किसी का अधिक। गरीब निरंतर और गरीब होते जा रहे हैं तथा धनी उत्तरोत्तर अधिक धनी। किन्तु ध्यान से इन दोनो वर्गों के जीवन का निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि कोई भी सुखी नही है। सभी एक अज्ञात ज्वाला मे भस्म हो रहे हैं।

परेशान पैसा लिये, पैसा हित हैरान।
बनादास पैसा किये, व्याकुल सकल जहान॥

अध्यात्म साधना मे भी यही सबसे बडा अन्तराय है—

पैसा मन भैंसा करै, लादन नही अघाय।
सुमिरन ध्यान समाधिमे, वृत्ति नाहिं ठहराय॥

दुनियादार राजनीतिज्ञो और व्यापारियो को कौन कहे पैसे की माया ने धर्म के तथाकथित ठेकेदारो तक को अपने चगुल मे बाँध रखा है। आये दिन हम देखते हैं कि बेचारे गरीब किसान मजदूर भूखों मर रहे हैं किन्तु उन्ही के द्वारा पूजा रूप म चढाये गये धन से मठाधीश गुलछर्रे उडा रहे है। धर्म के नाम पर यह प्रवचनापूर्ण व्यवहार आस्तिकता की जडो को खोखला कर रहा है--

दुनिया अन्न बिना मरि जावै धनी भए मठधारी।
खाहिं पेटभर करै न कष्टा सोवै टाँग पसारी॥
जे गरीब ते अन्न के दुखिया रामनाम अवराधै।
कोइ-कोइ बचे भोर नखत से जासु भार हरि काधै॥

इस प्रकार के गुप्त पापियो को वे प्रत्यक्ष पापियो की अपेक्षा समाज के लिए अधिक घातक समझते थे—

डौल बनाये हस को, कौल से चूका जाय।
बनादास बगुले भला, परगट मछरी खाय॥

बनादासजी की धारणा थी कि समाज के सभी वर्गों म व्याप्त यह चारित्रिक पतन केवल अन्न प्रवृत्तियो के परिष्कार से ही रोका जा सकता है और उसका एकमात्र उपाय है रामनाम जप और राम भक्ति। यह सभी वर्गों तथा स्थितियो के लिए सर्वथा ग्राह्य, सुलभ एव सरलतम साधन है—

काम क्रोध मद लोभ अरु, मोह मिटावन हेत।
नाम सरिस औषधि नहीं, भजु हरदम करि चेत॥
राग दोष ते रहित निति, निर्भै औ नि.सग।
निर आसा सन्देह बिन, सकल वासना भग॥
जब आवै ऐसो भगति, तबै सकल मल जाय।
लहै आतमारूप निज, आवागमन नसाय॥

यही महात्मा बनादास का स्वानुभूत, शास्त्रसम्मत तथा लोकमंगल विधायक साधन पथ है। उनकी घोषणा है—

लिखी सिखी नाही लिखी, निज अनुभव दृग देखि।
श्रुति पुराण सम्मत सदा, जनिहैं संत विसेषि॥
कहता हौ कहि जात हौ, सुनि लीजो सब कोय।
राम भजे भल होइगो, ना तरु भला न होय॥
जियत न सुमिरे रामसिय, मरे न सरजू तीर।
बनादास हमरे मते नाहक धरे सरीर॥

अथ उभय-प्रबोधक रामायण

प्रथम–मूलखण्ड

छप्पय

वन्दौ गुरुपदकज चरन रघुपति जलजाता।
उभय—प्रबोधकमूल बदत भवसूल नसाता।।
रामायण सतकोटि पार कहि काहुँ न पाये।
मानस चचल अतिहि जानि प्रभु चरित रमाये।।
प्रथमै सक्षेपै कहत, पुनि आगे विस्तार है।
कह बनादास हरि जस बिसद, गाय सहज भव पार है।।१।।

दडक

दुष्ट दसमौलि किय विकल ससार अति धेनु द्विज द्रोह सुर-साधु भीता।
धर्म निर्मूल चहुँ चर्ण प्रतिकूल खल मोद सर्वाङ्ग करि सकल रीता।।
पापमय मेदिनी त्रसित निसि दिन अतिहि परम सोकाकुला रहित धीरा।
धेनु तन धारि गै सिद्ध सुर मुनि जहाँ अति ससकित वदति सकल पीरा।।
श्रवण सुनि गिरा आरत गमन सद्य करि सहित महि चतुर्मुख धाम आये।
बन्दि चतुराननहिं यथाविधि देवगण धरणि ब्याकुल कथा निज सुनाये।।
ताहि परतोषि ब्रह्मा विविध भाँति ते करत अनुमान प्रभु कहाँ पावै।
कोउ वैकुण्ठ गोलोक कोउ क्षीरनिधि भाव निज निज सकल सुर बतावै।।
सम्भु त्यहि समय विचारि उर कहत भे ब्रह्म ब्यापक सकल लोक माही।
प्रीति परतीति जस जाहि त्यहि तस प्रगट काल तिहुँ निगम आगम कहाही।।
अचर चर रूप हरि सुनत बिधि हर्षि हिय सिवहि परसंसि सुठि प्रेम पागे।
बनादास दृग नीर पुलकाग कर जोरि वर विविध विधि विनय तब करन लागे।।२।।

जयति सच्चिदानन्द ब्यापक सकल अकल निरुपाधि सर्व्वाभिरामं।
जगत आधार कर्त्तार तारण तरन सरन सुर सिद्धि कल्याण धामं।।
अमित उत्पात धरणी विकल देवगण साधु मुनि त्रसित गो द्विज दुखारी।
त्राहि आरतहरन परन तिहुँ काल प्रभु अमित वपु धारि युगयुग उधारी।।
धर्म्म निर्म्मूल सुठि सूलप्रद काल कटु दनुज दारुण दुसह दुख दाता।
पाहि पद कमल अति सबल करुणायतन निरा अवलम्ब जग जनक माता।।
बुद्धिबलहीन मनखीन करुना भवन दवन दुख दुसह सुठि दीनबन्धो।
निगम आगम अगम सदा गुन गाय तव नेति भापत परम कृपासिन्धो।।

सुद्ध निरवघ्य चैतन्यघन बोघमय विस्व विग्रह विरुज विरद भारी।
आदि-मधि-अंत गत संतप्रिय सर्व्वदा नाम भवभीत अत्यन्त हारी ॥
अकल अविछिन्न अद्भुत अनामय अनघ द्वन्द्वगत भेद उत्कृष्ट लीला।
वृहद् नुठि सूक्ष्म अव्यक्त आनन्दघन दनुज वन घूमध्वज मनन सीला ॥
पतित पावन परम धाम कैवल्यप्रद स्यामघन दीप्ति क्षीराब्धि वासी।
चतुर्भुज काम-सतकोटि सोभा लजित अजित पायोज पद ज्ञान रासी ॥
इन्दिरा-रमन दुख समन जन अभयप्रद नुभग सर्व्वाङ्ग लावन्य घामं।
अक्ष अरविंद भ्रू वंक कुण्डल श्रवन अलक वर मुकुट सिर जलद स्यामं ॥
पीन आजानु भुज चक्रघर गदाघर सुभग पायोज जलदाम नामं।
सरद आनन तिलक भाल भ्राजत सुभग सन्तजन प्रानधन परम लाभं ।
अघर वरदसन अरुनार मुस्कान मृदु नासिका चारु सुकतुंड लाजै।
वृहद उर जज्ञ-उपवीत भृगु चर्न नुचि रेख श्रीवत्स मनिमाल भ्राजै ॥
चिवुक उर ग्रीव हरि कन्ध सुकपोल सुचि वरन मरकत क्रांति अति विसेषा।
सिंहकटि रटत कल किंकिनी मुखर वर थकित शारद वरत रूप लेषा ॥
उदर त्रिवली मनोहर कहे कवन कवि पीत द्युति तड़ित घनस्याम जैसे।
सुभग कैयूर कंकन करज मुद्रिका मधुर रव पगन नूपुर कि तैसे ॥
संभु सनकादि योगीन्द्र मुनि ध्यानरत कृपा परसाद कोउ काल पावै।
सेष श्रुति संत महिमा वदत सर्वदा दीन ग्राहक प्रकृति देव गावै ॥
विस्व बैकुण्ठ नायक पराक्रम प्रवल अवल प्रिय परम अत्यन्त भीता।
पाहि मां नाथ सरनागतं त्राहि हरि अखिल अति त्रसित खल वसि अनीता ॥

गिरा गम्भीर भै गगन ताही समै त्यागि संका घरहु धीर सारे।
तुम्हहि लगि घरव अवतार नर अवघपुर अवसि करि होइ दसरत्थवारे ॥
भालु मर्कट देह धारि सुरसकल मिलि रहहु भूतल कटक जोरि रूरी।
सद्य ही काल सव साल हरि जगत की करौं सर्वाङ्ग सुर आस पूरी ॥
सुनत बानी गगन मगन ब्रह्मा अतिहि सिद्ध सुर धरा विश्राम पाये।
वनादास ताही समय गवन निज निज भवन वचन उर राखि मन ताहि लाये ॥२॥

मास मधु नौमि सित भौमवासर सुभग मघ्य दिन राम अवतार लीन्हा।
सहित अंशन अवघ कहै आनन्द किमि नृपति द्विज वोलि बहुदान दीन्हा ॥
वजत नीसान घन गान मंगल करैं भामिनी भाँति वहु मोद पाये।
नगर नर नारि अवकाति ते अति अधिक लाय चित चोपि सम्पति लुटाये ॥
कौसिला प्रेमवन गोद पय प्यावती गाइ सोहिल मगन दिवस राती।
करत शृङ्गार नखसिख सुभग पालने देति पौढ़ाय रह सुरति माती ॥
वन्धु चहुँ लगे विचरन अजिर भाँति बहु कहत सोभा कवन पार पाये।
पीत अंगुली सुभग चौतनी चारु सिर सेष सारद निगम नेति गावे ॥

दसन दुइ दुइ विसद बघनहाँ सोह सुठि अक्ष अरविन्द भ्रू बङ्कनीकी।
जलज कर पायँ लघु केस गभुवार वर अंग प्रति काम छवि कोटि फीकी ॥
भाल सुविसाल किये तिलक जननी रुचिर नासिका हरन मन अधर राते।
नीलजलजात मरकत वरन कांति तन स्यामघन जाहि लखि सकुचि जाते ॥
किंकिनी मुखर कटि श्रवन सुख देत सुठि मधुर धुनि पगन नूपुर अनूपा।
सभु रस जानि मनकादि सुक निरत जेहि कवन कवि वरनि मो सकै रूपा ॥
स्याम अरु गवर जोरी जुगल तोरि तृन निरखती मातु अति भूरि भागी।
भूप लै गोद दुलरावते भाँति वहु कहत उपमा कविहि सकुच लागी ॥
महा दारिद्र जिमि ढेर पारस लहै कल्पतरु कामधुक जननिकाये।
तदपि नहिं तुलत महिपाल आनन्द उर भानु नहिं कहा निसि दिवस जाये ॥
चन्द के कला से बढत चहुँ बन्धु नित खेल खेलत विपुल नृपति लीला।
थकित पुर नारि नर वन्धु चहुँ चकित लखि वदत सव परसपर रूपसीला ॥
पाय अवसर भूप किये चूडाकरन श्रवन छेदन महा मोद भारी।
द्विजन धन दान याचक अयाची किये देत आसीस वर कुवर चारी ॥
श्रवन मोती झलक खलक सोभा मनहुँ खींचि सर्वाङ्ग तामे वसाई।
चतुरमुख चारि वारै न को प्रानधन श्रमिन सारद सिव न पार पाई ॥
भये सुठि प्रौढ विद्या पढत गुरु भवन कहत मुनि जासु श्रुति स्वास चारी।
वनादास भे कुसल सवहि सुभग वन्धु चहुँ तीर धनु सवन लघुकरन धारी ॥४॥

वाग ते सरजू तट गलिन वीथिन बने वन्धु चहुँ सुभग चित चोरि लेवैं।
पायं जूती जरी भरी मनिकनी धनि कसे पट-पीत छवि तून देवैं ॥
छोट पग पानि छोटी कछोटी कसे छोट धनुतीर रघुवीर सोभा।
कोटि कन्दर्प प्रति अंग पर वारिये कौन नरनारि अस लखि न लोभा ॥
कुसल है केलि भे वेगि भाइन सहित अस्व असवार ह्वै विपिन जाही।
संग सेवक सखा हर्षयुत सकल मिलि ललकि ललकि मृगया कराही ॥
मारि मृग अमित पावन परम धाम दै आय आगे धरे सहित प्रीती।
भूप लखि चरित अति मुदित रहु मनहिमन पालते राम सव भाँति नीती ॥
गाधिसुत भीत आये अवध समय लखि कठिन करि राम नृप ऋषिहि दीन्हा।
पाय प्रभु वन्धुयुत हर्ष हिय अमित अति सद्य मुनिनाथ तव गवन कीन्हा ॥
आय आश्रमहि दिये विविध विद्या विसद औषधी अस्त्रगति जासु न्यारी।
वनादास मख राखि क्षय सकल राक्षस किये जनकपुर गमन मुनि वधू तारी ॥
आय मिथिलानगर नृपति सनमान किये सुभग आसन दिये तहँ विराजे।
रूप के रासि दोउ वन्धु उपमा कहाँ अग प्रतिकोटि कन्दर्प लाजे ॥
भये कृतकृत्य पुर नारि नर निरखि कै कहै कवि कौन सुठि नेह न्यारी।
वाटिका-मध्य मैथिली रघुपति मिलन सखिन अवलोकि कै निज विसारी ॥

आप लै सुमन मुनि हर्षि पूजा करो कहे रघुबीर चारित्र सारे।
दिये आसिप परम हर्षयुत गाधिसुत राम अभिलास पूरन तुम्हारे॥
आय मुनि सतानन्द लै गये अवनि मख सुभग आसन दिये जनकभूपा।
मानि कृतकृत्य निमिराज निज भाँति बहु निरखि रघुवंशमनि सुभग रूपा॥
वैठि मुनि निकट रघुवर हरषि वन्धुयुत भाव निजनिज सवे प्रभु निहारे।
वनादास उड्डुगन विषै मनहुँ रजनीस जुग सुभग सर्वाङ्ग दसरत्थवारे॥५॥

वान रावन गर्वहि गये जेहि देखिकै भंजि कोदंड शिव रामराया।
अमित भूपावली मानमर्दन किये भुवनदस-चारि जय अवसि छाया॥
जनक संसै दली सिया परिताप हरि गगन सुर सुमन झरि जै पुकारे।
महा आनन्द मिथिला उमगि समय तेहि साधु मुनि सिद्ध सब भे सुखारे॥
धनुप हर भंग सुनि क्रुद्ध भृगुवंशमनि समय तेहि आय उत्पात कीन्हा।
भापि बहु विनय गत मान ह्वै गवन वन रमापति धनुप रघुवरहि दीन्हा॥
गान औ तान नीसान वहुदान पुर नारिनर सकल मंगल सजावा।
विरचि वीतान वहुभाँति विधि मनहरन जनकी युतविनय दसरथ बुलावा॥
साजि वारात गुरु ज्ञातियुत सुवन दोउ अवधपति राम व्याहन सिधाये।
परम आनन्द पुर जनक को पार लहि सारदा सहस नहिं सकत गाये॥
सियारामहि वरी वन्धु ब्याहे सकल दान सनमान को पार पावै।
वजत नभ दुन्दुभी देव वरपे सुमन अप्सरा ब्याह वर गीत गावै॥
नृपति विदेह कृतकृत्य परिजन सहित जोरि अंजलि विविध विनय भाखी।
अवधपति तुष्ट किये परसपर भाववस हृदय नहिं कछुक अभिलाप राखी॥
दान दै द्विजन याचकन सनमान करि पूजि मुनि साधु नृप गवन कीन्हा।
अवध आनन्द आनन्द याते अवधि भूप गृह आय वहु वित्त दीन्हा॥
वन्धुयुत ब्याहि रघुवीर आये भवन हर्ष-निर्भर सकल मातु जोहै।
वनादास पुरजन प्रजा सर्व आनन्दमय भवन भूपति कुंवर कुंवरि सोहैं॥६॥

इति श्रीमद्रामचरित्रेकलिमलमथने भवदापन्नै तापविभंजनो
नाम उभयप्रबोधकरामायणे मूल प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥

राम अभिपेक हित नृपति मङ्गल सजे केकयी कुमति रसभंग सोई।
दुखित पुर नारिनर गारि मुख जहाँ तहं ताहि अति देवमाया विगोई॥
सियायुत लपन रघुनाथ वन गमन किय नृपतिवस प्रीति करि सचिव साथा।
स्यन्दनारुढ़ चले मानि पितु वचन वर आय तटगंग रघुवंसनाथा॥

सखा सनमानि निसि तहाँ विश्राम करि उतरि सुरसरी पुनि प्राग आये।
वेनि मज्जन किये सियायुत बन्धु प्रभु आय मुनि आश्रमहि माथ नाये।।
हर्ष ऋषिगात आसीस दै भाँति बहु अमित अति प्रीति उर राम लावा।
गई मनिफनि लहे होत आनन्द ज्यों मनहुँ पारस जनम रंक पावा।।

जोग जप जग व्रत भजन वैराग्य तप सकल साधन भये सिद्धि आजू।
स्वर्ग अपवर्ग चौदह भुवन प्राप्त सुख राम तुम रहित सबविधि अकाजू।।
तहाँ निसिवास करि प्रात गवने हरषि मगनिवासी भये भूरि भागी।
रामसियलषन सोभा निरखि अंग प्रति रहे सब जहाँ तहँ प्रेमपागी।।

बनादास नरनारि भे परम पावन सकल बाल औ वृद्ध कैवल्य जोगू।
सुकृत केहि काल के प्रगट सर्वाङ्ग भे एक ही बार भव नास रोगू।।७।।

छप्पय

जटाजूट सिरसुमन तून कटि मुनि पट बाँधे।
भुज प्रलम्ब उर बृहद् बान कर धनु बर काधे।।
कमलनयन भू बंक भाल सुचि तिलक सोहाई।
मरकत द्युति मुखचन्द बिन्दु श्रम अति छवि छाई।।

सिंह ठवनि पद पद्म से स्याम गौर जोड़ी सुभग।
कह बनादास तेहि मध्य सिय सुठि सुकुमार न जोगमग।।८।।

देखि लोग अति चकित छकित ह्वै जात सुभाये।
राम कंज पद रेख जानकी चलत बचाये।।
लषन दक्ष मग देत सिया रघुबर पद रेखा।
निरखि गमन मग करत लहत अचरज जिन देखा।।

बाल्मीकि के आश्रमहि आये श्री रघुवंसमनि।
कह बनादास मुनि लाय उर रामहिं माने भागि घनि।।९।।

चित्रकूट पुनि चले आय पैसनी समीपा।
देव रचे प्रनसाल रमे तहं रघुकुल दीपा।।
जनु विराग अरु ज्ञान भक्ति तप कारन आये।
कैधों रति औ काम सहित मधु लघु उपमाये।।

चित्रकूट के विहग मृग बेलि विटप कृतकृत भये।
कोलभिल्ल सुकृती परम रामदरस भव रुज गये।।१०।।

आये अवध सुमन्त्र नृपति तृन से तन त्यागे।
भरत बोलि मुनिराय क्रिया पितु करि अनुरागे।।

पुरजन जननी ज्ञाति गुरु सब विधि उपदेसा।
राज करहु सब भाँति प्रजाजन मिटै कलेसा॥
भरत न कीन्हें कान कछु चित्रकूट वेगहि चले।
कह बनादास प्रभु दरस विनु जीवन से मरना भले॥११॥

प्रथमहि तमसा वास दूसरे गोमति तीरा।
तीजे सई समीप चौथ गंगा शुचि नीरा॥
सहित समाज अन्हाइ कीन्ह केवट पहुनाई।
राम सखा तेहि जानि भरत अति भाव बढ़ाई॥
तेहि निसि तहँ विश्राम करि प्रातकाल केवट सहित।
कह बनादास सुरसरि उतरि चले रामपद रमित चित॥१२॥

झलका पंकज पायंत्राण बिन गमन कठिन मग।
सिरछाया नहिं करत भरत सम अवर कवन जग॥
आये तीरथराज त्रिवेनी मंजन कीन्हा।
भरद्वाज पद बंदि चरन रज हित करि लीन्हा॥
मुनि पहुनाई कीन्ह पुनि, विविध समय दायक विभव।
कह बनादास प्रातहि चले, राम कमल पद नेह नव॥१३॥

रामनाम प्रतिस्वास विरह सह कृत उच्चारन।
चले जात मन मगन ध्यान मुनि बधू उधारन॥
कालिन्दी तट वास बीच पुनि कीन्ह निवासा।
चित्रकूट गिरि निरखि मनहुँ पूजी सब आसा॥
जाय रामपद बंदि कै, लकुट तुल्य रहे भूमि परि।
कह बनादास अति प्रेमयुत, धाय नाथ लिये अंक भरि॥१४॥

गुरु जननी पुर लोग आगमन सुनत सिधाये।
सीलसिंधु रघुनाथ सबहि भेंटे सति भाये॥
आगे करि मुनि नाथ सकल जननी पुर लोगा।
लाये आश्रम वेगि हर्ष विस्मय बस लोगा॥
पुनि आये मिथिला नृपति, जथाजोग व्यवहार सब।
कह बनादास वासर कछुक, वास किये तहं लोग तब॥१५॥

बहु प्रकार समुझाय भरत करुनानिधि फेरे।
सीस पावरी राखि चले आनन्द घनेरे॥

आय अवधपुर मध्य कीन्ह सबकेर सम्हारा।
गुरुजन जननी ज्ञाति प्रजा द्विज सकल प्रकारा।
नन्दिग्राम प्रनकुटी करि, मुनि अखडव्रत आचरत।
कह वनादास केहि पटतरी कोउ न सदृस त्रिभुवन भरत ॥१६॥

चित्रकूट बसि राम किये नानाविधि लीला।
बासवसुत्त यक नयन सदा रघुपति नयसीला॥
आये जह मुनि अत्रि सिया अनसुइया बन्दे।
रामधाम छवि देखि अधिक मुनिराय अनन्दे॥
वहुरि गमन करि कृपानिधि, वधि विराध सुभगति दई।
देह दहे सरभग पुनि, सक्ल मुनिन सो रति नई॥१७॥

राम आगमन सुन्यो सुतक्षीण अति अनुरागा।
करत मनोरथ चल्यो दिसा विदिसा न विभागा॥
कहुँ नृत्यत कहुँ गान करत गति बरनि न जाई।
जुगल नयन जलधार अतिहि बानी थकि आई॥
बैठ्यो मग मह अचल ह्वै, मनहुँ पनसफल निर्भरा।
कह बनादास हरि प्रकट उर, प्रेम परसि पुनि कर धरा॥१८॥

नहिं जागत कोउ भाँति जतन रघुवीर विचारा।
कला कुसल सब माँहि कनौडो प्रीति निनारा॥
हृदय चतुरभुज भयो चकित ह्वै नैन उघारे।
खडे रामसियलखन कमल पद पै सिर डारे॥
रघुनन्दन मुनि लाय उर, बहु प्रकार आदर दये।
कह बनादास करुनायतन तब अगस्त्य मगल लये॥१९॥

दण्डक

आय मुनिभवन सियरवन भवरुजदवन गमन करि अग्रकुम्भज सिधाये।
चरन बन्दे लपन सहित रघुवसमनि दिये आसीस पुनि सदन लाये॥
हृदय अति प्रीति मुनि सुभग आसन दिये कन्द फल मूल बहुविधि मगावा।
किये फलहार रघुनाथ सिय लपनयुत दुष्ट वध हेत आसय जनावा॥
दिये धनुबान वरदान अति कृपा करि कछुक रघुनाथ महिमा वखानी।
सकुचि सिर नाय सुठि रहे कोसलधनी सीलसुभाव मन अगम बानी॥
विदा ह्वै गीध मैत्री किये राम तब रहे प्रनकुटी करि ऋषि अनन्दे।
विगत सका सकल बिकलता दूरि करि आश्रमनि जाय रघुवीर बन्दे॥

दण्डकारन्य सम्पन्य सर्वाङ्ग करि करत जप जज्ञ तप ऋषय झारी।
सुपनखा समय तेहि आय वरवेष करि कपट संयुक्त रामहि निहारी।।
अवसि बस काम किये वाम नानाचरित लषन रुख पाय हरे श्रवननासा।
रुधिर की धार जनु श्रवत गिरि असितसे बदति रोदति गई अति उदासा।।
धाय खर-त्रिसिर-दूषन चतुर्दस सहस घेरि लिये राम रवि वाल जैसे।
किये तब चरित सुबिचित्र कोसल धनी परसपर लरिमरे अति अनैसे।।
बन्धु तिहु राम हति अमित निस्चर हने गगन सुर सुमन झरि जय सुनाये।
वनादास प्रनकुटी राजत सियबंधुयुत उभय प्रति कथा इतिहास गाये।।२०

घनाक्षरी

जायकै सुपनखा पुकार किये रावनसों भगिनी की दशा देख महा अभिमानी है।
चढ़ि रथ गौन किये तुरत मारीच पास कनककुरंग भयो कपट कोठानी है।।
रामवान प्रान तजे माया सीय हरी खल रुदन करत सुनी आरत की वानी है।
वनादास बीर गृद्धराज महायुद्ध किये प्रान परहेत दिये ऐसो खग ज्ञानी है।।२१

दण्डक

बिरह सन्तप्त रघुवंसमनि अनुजयुत सीय खोजत चले मनुज भाँती।
गीध सुभगति दिये गमन पुनि बन किये मिलो काबंध वेगहि निपाती।।
सेवरी सदन सानुज कृपासिन्धु गे भक्ति-रस-रसिक रघुवंसनाथा।
मूल फल खाय भिल्लिनि कृतारथ करी चले रघुनाथ औ लषन साथा।।
आय पम्पासरहि हर्षि मज्जन किये पिये सुचि बारि ऋषिदेव आये।
चले पुनि अग्र हनुमन्त सों भेट भै तुरत युतबंधु पीठिहि चढ़ाये।।
सखा सुग्रीव करि वालि को प्रान हरि राज दै कपिहि गिरि बास कीन्हा।
कोल कीरात ह्वै सुरन प्रनकुटी किये चरन परिगमन मन भवन दीन्हा।।
विगत वर्षा चले भालु कपि खोज सिय अङ्गदादिक अमित सुभट भारी।
गुहागिरि कन्दरा ग्राम बन बाग सरि विवर परवेस किये कीस झारी।।
मूल फल खाय जलपान करि विगत श्रम आयगे वेगि सामुद्र तीरा।
मिल्यो सम्पाति तिन सोध सीता कहे गमन किये लंक हनुमन्तवीरा।।
नांधि वारीस हति सिंधुका गिरि चढ़े देखि सुविलास अति गूढ़ लंका।
वनादास वासर विगत कीन परवेस कपि निसि समय रामवल अति असंका।।२२

रावनानुज मिल्यो सोध सबबिधि कहे जाय कै सीय परबोध कीन्हा।
खाय फल बाटिका खीस सबहि करी अमित राक्षस अक्षय प्रान लीन्हा।।
चौथि दल काल को जनु कलेवा दिये लूम-लीला किये भस्म लंका।
मान दससीस मथि पास प्रभु गमन किये पवनसुत अतुलबल बीर बंका।।

आय कपि सैन मंह चैन लहि सब चले जहाँ कपिराज रघुब्रस नाथा।
खाय फल मधुर कपिराज की वाटिका अगदादिक सुभट सकल साथा॥
सुने सुग्रीव जाने किये काज प्रभु लाज राखे आय सकल बीरा।
महा उत्साह मिलि सबहि आदर दिये वेगि चले हर्षि रघुबीर तीरा॥
आय परि चर्न सिय खोज कहे भाँति सब राम करुनायतन कपि निहारे।
कहत हनुमान से बारही बार उपकार कहि जात नहिं तात तोरे॥
साजि कपि कटक रघुवसमनि गमन किये भालुमर्कट करत सिंह नादा।
खात फल पात हर्षात परे सिंधु तट सुनत रावन हृदय अति विषादा॥
आय रिपु वधु सुख सिंधु भूपति किये थापि सिवलिंग वारीस बाँधे।
वनादास सब कटक कपि उतरि परे पार यहि वालिसुत जाय कछु काज साधे॥२३॥

छप्पय

पैठत पुर सुत हत्यो मथ्यो दसकन्धर माना।
सारद से वरबुद्धि अवसि दसमुख सकुचाना॥
पाँव धर्यो करि पैज ताहि कोउ सक्यो न टारी।
मुकुट पँवारे चारि प्रबल तिहूँ काल सुरारी॥
सोध लिये गढलक को, अति निसक बल बाँकुरो।
कह वनादास युवराजवर, आय राम चरनन परो॥२४॥

घटातोप गढ घेरि अनी चतुरग बनाई।
चारि दुआरे चोपि चहूँ दिसि परी लडाई॥
उत रावन भट भूरि इतै मर्कट की सेना।
निज निज स्वामी हेत युद्ध कृत अतिचित चैना॥
कट कटाय मर्कट कटत, पटत निसाचर भूमि थल।
कह वनादास निज निज दिसा, अति दिमाक लरते सबल॥२५॥

धूम्रकेतु अतिकाय महोदर अनी अकम्पन।
कुम्भकर्ण घननाद सबल अतिही असक मन॥
कुमुख कुलिसरद सुभट अतिहि दुर्मुख बलवाना।
सुर-रिपु मनुज-अराति भाँति बहुविधि मर्दाना॥
त्रिसिरा आदि प्रहस्त पुनि, विद्युज्जिह्वा क्षमित भट।
कह वनादास को कहि सकै, अतिहि प्रबल मुख चारि पट॥२६॥

जामवत कपिराज नीलनल अरु हनुमाना।
द्विविद मयद मुपेन पनस अतिही बलवाना॥

दधिमुख कुमुद गवाक्ष केसरी पुनि रनधीरा।
अङ्गदादि भट अमित लषन बाँके बर बीरा॥
सुठि सरोष रघुबंसमनि, करत समर नाना चरित।
कह बनादास आकास मग, देव बिलोकत रुचि सहित॥२७॥

भिण्डिपाल अरु परिघ सूल पुनि सक्ति कराला।
तोमर मुद्गर तीर चलै चोखे अति भाला॥
असित सैल सम देह रक्त जनु गेरु पनारे।
घुमि घुमि महि परत करत भट घोर चिकारे॥
कटत कोटि कोटिन सुभट, तन जर्जर रावन प्रबल।
कह बनादास पटतरन जेहि नेक हटत नहिं युद्ध थल॥२८॥

आय धनुष अरु दसन हनहिं पुनि मुखहिं निसाना।
सिला शृङ्ग पाषान गहे कर पादप नाना॥
कट कटाहि भट भूरि भालु मर्कट अति योधा।
मर्दत निस्वर अमित एकयक तदपि न बोधा॥
जयति राम जय लषन कहि, जस कपीस मर्कट सबल।
कह बनादास जय कार कर, कीस महाबल दैत्य दल॥२९॥

निज निज जोरी जुरे मुरे नहिं समर जुझारा।
प्रान दिये रन खेत लिये जग सुजस अपारा॥
रावन मारे राम अनुज युत रन महि माहीं।
लखन हने घननाद देव नभ सुजस कहाहीं॥
सुमन वृष्टि पुनि पुनि करत, रावन जीते रामरन।
कह बनादास नहिं पार लह, गावहिं सारद सहस पन॥३०॥

कीन जाय अभिषेक लषन रिपु बंधु सबेरे।
सिय लाये हनुमान जान पर नेक न हेरे॥
अवलोके रघुनाथ कछुक दुर्बैन उचारे।
सिय बिनती रुख राम लखन पावक परचारे॥
रघुपति पद उर राखिकै, पावक प्रविसी मैथिली।
कह बनादास उत्साह उर, गंगधार मानहुं हली॥३१॥

जरो विस्व मन मैलि जर्‌यो माया प्रतिबिम्बा।
राम सकल के पिता जानकी सब जग अम्बा॥

नाना लीला विसद करत जन आनद हेता।
दनुज विमोहन हार साधु उर समुझि सचेता॥
विप्र रूप पावक धर्‌यो, सबकी मति सोकहि सली।
कह बनादास सिय सत्य जो, लाये जनु कचन कली॥३२॥

रमा दिये जिमि सिंधु विष्नु कह तेहि विधि दीन्हा।
हर्षित भे सबकोय बाम प्रभु आसन कीन्हा॥
पावक भयो अदृश्य राम सिय सोभा खानी।
आये दरसन हेत देव भल अवसर जानी॥
सिव ब्रह्मा इद्रादि सव, पृथक् पृथक् अस्तुति किये।
कह बनादास कपि भालु जे, समर मरे सारे जिये॥३३॥

दण्डक

पुष्पकारूढ प्रभु गमन अववहि किये समुझि वीशेपिजन सग लीन्हे।
सिंधु ह्वै पार कृत सभु दर्शन बहुरि जहाँ तहँ मुनिन को दर्स दीन्हे॥
प्राग मज्जन किये भेजे पवनसुत अवध आय शृङ्गरौर केवट नेवाजे।
पूजि सिय सुरसरी विविध बिनती करी गुहा उर मोद सुठि ताप भाजे॥
जटा सिर मुकुट आसीन कुस साथरी जपति प्रतिस्वास श्री रामराम।
नैन वह नीर रघुवीर पकज हृदय आठहू याम तप तीव्र धाम॥
पुलक सर्वाङ्ग वारिधि विरह मगन अति हेत केहि नाथ नहि दर्स दीन्हा।
अवधि बीते रहै प्रान तन माहि जो कवन मो ते अधिक पाप पीन्हा॥
आय हनुमन्त देखी दसा भरत की हृदय अति परम आनन्द माने।
विरह की ज्वाल उर तप्त सीतल किये कुसल प्रभु सुजस वर्षा बखाने॥
आय सुत पवन प्रिय भरत की दसा कहि तुरत रघुवसमनि गमन कीन्हा।
भरत आये अवध राम आगमन कहि मात गुरु पुरजनहि मोद दीन्हा॥
धाय तजि धाम रघुनाथ के दर्स हित अवध नरनारि बहुविधि मलीना।
गुरु-द्विज-सग गमने भरत प्रभु दिसा आइगो जान नहिं विलम कीना॥
वदि गुर पाँय पुरलोग सकट हरे जननि मिलि भरत सिय राम आये।
धरी सुभ जानि मुनि तुरत आज्ञा दिये वधुयुत सीय रघुपति अन्हाये॥
साजि सर्वाङ्ग शृङ्गार भूपन विविध जानकी राम तन अमित सोभा।
अग प्रतिकोटि रति काम उपमा लजै कजपद मुनिन मन भृङ्ग लोभा॥
बनादास श्रुति विहित आज्ञा दिये ऋषि सबै बैठ सिंहासने तिलव कीन्हा।
गान नौसान सुर सुमन वर्षा करें द्विजन को दान बहुभाँति दीना॥ ३४॥

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रैतापविभजनो
नाम उभय-प्रबोधक-रामायणे मूल द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

छप्पय

ऋक्षराज कपिराज लंकपति औ हनुमाना।
अरु नलनील सुषेन कुमुद दधिमुख बलवाना॥
द्विविद मयंद गवाक्ष अंगदादिक बरवीरा।
को कवि बर्नै जोग मनोहर मनुज सरीरा॥
भरत लषन रिपु दमन पुनि, गुहा आदि दिसि विदिस है।
कह वनादास उपमा अमित, को कवि कहि अपजस लहै॥३५॥

चमर छत्र कोउ व्यजन चर्म असि औ धनुबाना।
सक्ति सूल कर धरे बिलोकहिं राम सुजाना॥
चहुँदिसि मनहुँ चकोर सरद-ससि चितवहिं नीके।
पुरवासी चहुँपास तोष नहिं मानत जीके॥
वार वार आरति करत जननी परम सनेह बस।
कह वनादास हनुमान पुनि सिव भुसुंडि जान्यो सुरस॥३६॥

आये चारिउ वेद प्रीति अति अस्तुति कीन्हा।
ब्रह्मा सिव इन्द्रादि देवगन कोउ न चीन्हा॥
गमने बिनती भाषि सकल अभिमत को पाये।
लंक जीति घर आय राम अभिषेक सोहाये॥
भुवन चारि दस जगमगत सुजस धवल रघुनाथ को।
कह वनादास सिव विधि अगम पार लहै गुनगाथ को॥३७॥

रहे सखा कछु काल न जानहिं दिन औ राती।
देवन दुर्लभ भोग करै पद-रति सरसाती॥
विदा कीन्ह रघुनाथ दीन भूषन मनि नाना।
पदपंकज सिर नाय गये उर धरि हरि ध्याना॥
अवध राम राजित सदा, सुर मुनि द्विज महिकृत सुखी।
कह बनादास सम्पन्न क्षिति, कोउ न कतहुँ देखो दुखी॥३८॥

बाजिमेध किये अमित सिया सुन्दर सुत जाये।
लवकुस अमित प्रताप लोक वेदहु जस गाये॥
दुइ दुइ सुत तिहुँ बंधु भये अति तेज निधाना।
पुरजन प्रजा अनन्द भुवन सब विधि सुख नाना॥
नारद सारद सेष शिव, कवि कोविद सुर साधु जन।
कह वनादास रघुपति सुजस, गावत पार न बुद्धि मन॥३९॥

छप्पय

राम गमन किये लंक विभीषन हित एक बारा।
आयो पुष्पक यान भयो तापै असवारा॥
भरतादिक हनुमान गने जन लंक सिधाये।
रहे लषन रिपुदमन भवन आज्ञा प्रभु पाये॥

शृङ्गवेरपुर पहुँचिगे प्रथमैं करुनाधाम है।
कह बनादास संगे गुहा प्रागहि आये राम हैं॥४०॥

बाल्मीकि पद बन्दि चित्रकूटहि पुनि आये।
अत्रि समागम भयो जहाँ सरभंग सिधाये॥
दर्सन किये अगस्त्य दण्डकारण्य विलोका।
पंपापुर अवलोकि नाथ मन को निज रोका॥

रामेश्वर दर्सन किये पुनि लंका प्रपाति भये।
कह बनादास लंकेस उर उपजत सुख पलक्षन नये॥४१॥

पंच दिवस करि बास विभीषन संग सिधाये।
पम्पापुर को बहुरि राम करुनाकर आये॥
गमन सहित सुग्रीव आय मिथिलापति धामा।
सब कोउ भये सनाथ जबहिं अवलोके रामा॥

विश्वामित्र मुनीस को आय चरन बन्दन किये।
जनक सुवन प्रभु संग मे कासी को पुनि मग लिये॥४२॥

करि गंगा अस्नान सम्भु को पूजन कीन्हा।
याचक कीन्हे सुखी दान विप्रन को दीन्हा॥
कासिराज प्रभु सखा भवन अपने लै आयो।
किये बिविध सतकार संग ही आपु सिधायो॥

बीते द्वै विंसति दिवस आये निज पुर राम जू।
कह बनादास तन धन दया जान गयो करि काम जू॥४३॥

एक मास सब रहे जानि रुख राम बुलाये।
दीन्हेव भूषन बसन अस्त्र बाहन मन भाये॥
रिपुसूदन औ लषन चले पठवन के हेता।
कहत राम जस विसद सदन सब गये सचेता॥

राम अनुज आये पठै बैठे सभा कृपाल हैं।
कह बनादास प्रभु जस अगम का बरनैं बुधि बाल हैं॥४४॥

राज एकादस सहस वर्ष कीन्हें रघुबीरा।
तिहुँ पुर सब आनन्द काहु नहिं कौनिउ पीरा॥
पुरवासिन उपदेस दिये रघुपति विधि नाना।
भरत लषन रिपुदमन ज्ञान पाये हनुमाना॥
ब्रह्म सच्चिदानन्दघन वेद बदत रस एक है।
कह बनादास निज भक्त हित लीला करत अनेक है॥४५॥

सवैया

चौदह वर्ष को राम गये वन भूप तजे तन जान जहाना।
अवध निवासी सहे सब संकट कै तप औ व्रत साधन नाना॥
लक्ष्मन औ सिय संग दिये भय भस्म धरै कहँ भर्त सुजाना।
दास बना सनबंध जो राम से तौ किन लीजिये पंथ पुराना॥ ४६॥

सेवक और सखा सखि बोलत डोलत है सब को मन देखा।
है सनबन्ध नही सुख हेत जरै किन चौदह वर्ष विसेखा॥
राम नये नहिं भाव नवा तब नाहिं तौ आजु करै करि लेखा।
दास बना न तो पेट के कारन वेप बनाये परे इमि पेखा॥ ४७॥

चौदह वर्ष अखण्ड धरै व्रत जैसे किये प्रभु लक्ष्मन सीता।
जैसे किये बसि अवध में भर्त तबै सनबंध है सांचु पुनीता॥
भाव वात्सल्य कहे न बनै कछु देखु विचारि महीपति बीता।
दासबना प्रभु अन्तर्यामी देखावन को जग स्वांग अमीता॥४८॥

छप्पय

बांधै कफनी मरन हेत तब साधु सयाना।
रंगै केसरिया रंग सूर ज्यों बांधत बाना॥
हिम आपतं औ वात सहै वर्षा जलधारा।
आस बासना नासि नेक नहिं मानै हारा॥
क्षुधा पिपासा को सहै, औ इन्द्री जीतै सकल।
कह बनादास बोवै वियावै, जैसो तैसो लागत फल॥४९॥

नाम अखंडित धार रटै निसिदिन मन लाई।
सलजं नयन तन पुलक कबहुँ मुख बोलि न जाई॥
सब दिन सून्य उपाय रहै नहिं कोहु से मांगै।
रहै इष्ट निज धाम अकेला भव निसि जागै॥
लषन भरत सिय वरत यह, पास न धन संग्रह करै।
कह बनादास मन वचन क्रम, भोग सकल विधि परिहरै॥५०॥

भाव राम को कही धरै तेहि हृदय निकेता।
जीव ईस को अंस कहै मुनि वेद को वेता॥
सखा अनुज सम सदा नृपति सुत नृपति कहावै।
तिय पिय की अरधंग गुरू चेलै ह्वै जावै॥
रीति लीजिये ईस की, काज आपने कीजिये।
कह बनादास जग आयके, बादि जन्म जनि दीजिये॥५१॥

भै लंकागढ़ अगम मोह दसकन्धर वीरा।
कुम्भकर्न है क्रोध सहज ही दहै सरीरा॥
मेघनाद है काम महोदर पुनि हंकारा।
लोभ जानु अतिकाय अकम्पन मान बिचारा॥
अनी आदि आस्चर्यं है सो मात्सर्य हि मानिये।
कह बनादास बहु बासना तृष्ना कटकहि जानिये॥५२॥

अक्षय राग अति प्रबल देख मकराक्ष हि मानो।
विधि प्रहस्त को कहि निषेधहि दुर्मुख जानो॥
विद्दत्यिस्वा कपट दम्भ कहिये सुरधाती।
त्रिसिरा प्रबल पखंड कपट है मनुज अराती॥
आसासिंधु अपार है चहुं दिसि ते घेरे सदा।
कह बनादास को पार लह रामलीन करिये अदा॥५३॥

इहां ग्यान कपिराज रीछ कहिये विज्ञाना।
धीरज अंगद अचल विरति अतिसय हनुमाना॥
पनस नील नल द्विविद केसरी सुठि भट भारी।
कुमुद मयन्द सुषेन लहै सपन्यो नहिं हारी॥
दधिमुख नौं भक्ती सुवन अति प्रताप बल भूरि है।
कह बनादास संसय नही देत मोह दल तूरि है॥५४॥

भक्ती को बल अचल कवच सो धारन कीजै।
गुरू कृपा है टोप सीस पर सो धर लीजै॥
सुचि विचार कोदंड नियम यम संयम बाना।
तप चोखी तरवारि भरोसा चर्म प्रमाना॥
श्रद्धा अरु उत्साह पुनि हिम्मति अभय तुरंग है।
कह बनादास स्यन्दन सुकृत होन योग नहिं भंग है॥५५॥

हरदम सुमिरन नाम सारथी परम सयाना।
मंत्री पुनि सतसंग सैन बहु वेद विधाना॥
सर्वभांति संतोस सेत ताको दृढ़ करिये।
पर्मबोध रिपु बंधु छत्र अविचल सिर धरिये॥
प्रबल अनल कैवल्य की लंक फूंकि करिये कटा।
कह बनादास सैना सजग कबहुँ न पग पीछे हटा॥५६॥

काटि रिपुन को सीस सिया सांतिहि उर लावै।
अविचल वृत्ति विमान तहाँ सादर बैठावै॥
मन मुनि को करि सुखी मर्म महि भार उतारै।
नाना संकट सहै देव आतमहिं उबारै॥
सहज स्वरूप सो अवध है तहाँ पलटि कारज सरै।
नहिं बनादास जन्मै मरै अविचल राज सदा करै॥५७॥

याहू तन ते अचल अवध में निसिदिन रहिये।
दुखसुख जो कछु परै मानि आनंद को सहिये॥
चक्रवती को राज तुच्छ पलहू छन लागै।
कोउ जन जाननहार सोच संसय सब भागै॥
इन्द्रादिक की बात का सिव विधि हलका लगै।
कह बनादास सुठि संतपद आपु हृदय में जो जगै॥५८॥

जो ठाटै यह ठाट उपासक राम सो सच्चा।
न तरु वेप करि लिये पेट के कारन कच्चा॥
करम वचन मन चलै यही मग में मरि जावै।
तौभी नहिं संदेह अंत में हरिपुर पावै॥
राम कृपासिंधि होय जो जीवनमुक्त कहाइहै।
कह बनादास यहि तन सुखी बहुरिन यहि जग आइहै॥५९॥

वर्ष चौदहें वादि भौहरन कुंज में आये।
तव ते अविचल चरन कहो प्रभु जौन कहाये॥
वर्स इकादस गयो भयो सब संसय नासा।
कर्म वचन मन रहीं एक रघुपति की आसा॥
सन्त गुरू प्रभु कृपा ते कछुक बात पूरी परी।
उभय प्रबोधक ग्रन्थ यह बनादास तबही करी॥६०॥

सब विधि ते बल राम काम कछु मैं नहिं कीना।
बाहर भीतर तुही कहौं नहिं बचन प्रवीना।।
ज्यों कुम्हार को पात्र सम्हारत सब दिन आये।
युग युग तीनउँ काल सदा कवि कोविद गाये।।
प्रभुकृत को गोवत नही ताते सांची कहत हौ।
कह बनादास पदप्रीति ते कबही तोस न चहत हौ।।६१।।

रेखता

भरा चैतन्य का धारा। नही कछु बार नहिं पारा।।
चरन जलजात अरुनारे। नमैं ब्रह्मादि सुर सारे।।
अचल उत्कृष्ट अति गूढ़ा। नही वारा न वह वूढा।।
पीन जुग जानु मन मोहै। सिंह कटि तून सुठि सोहै।।
सदा अक्षर सो न्यारा है। बचन मन बुद्धि हारा है।।
तडित से पीतपट राजै। नाभि अलि यमुन ज्यहि लाजैं।।
अयोनी अलख अविनासी। चराचर सर्व में वासी।।
उदर त्रय रेख अति प्यारी। मालमुक्ता की छबि न्यारी।।
वृहत् कूटस्थ अति झीना। आदि मधि अन्त से हीना।।
यज्ञ उपबीत चितहरनी। सकै भृगुचर्न को वरनी।।
विरज बागीस गुनहीना। नही पीना न है खीना।।
रेख श्रीवत्स भुज भारी। धनुस बर बान कर धारी।।
निरा अवलम्ब निर्बाना। नही कोउ जासु गति जाना।।
वृसभ हरिकन्ध कल ग्रीवां। सरद मुखचन्द छबि सीवां।।
ब्रह्मरस एक परिपूरा। नही नेरे नही दूरा।।
अधर दिज नासिका नीकी। तिलक अतिभावती जी की।।
बरन आकार नहिं कोई। सदा रस एक है सोई।।
बंक भ्रू नैन रतनारे। मुकुट सिर भानु द्युति हारे।।
सुद्ध निर्बुद्ध सुखरासी। हृदै सोइ ग्यान परकासी।।
अलक अलिऔलि चित चोरे। कनक कुण्डल श्रवन सोरे।।
महाकासं निराकासं। स्वासहू स्वास परकासं।।
सिया दिसि बाम छबि खानी। बना चहुँ चर्नरति मानी।। ६२।।

छन्द

यह सगुन निर्गुन ध्यान मिश्रित बोध ज्यहि आवै हिये।
स्रुति विहित साधन साधि सम्यक् जगत जीवन फल लिये।।
निर्पक्ष बाद विवाद तजि सब सांति ते जन ह्वै रहे।
सुख दुःख हानि औ लाभ सममुख चहे जो जैसी कहै।।

होउ अगम सागर फटो परदा थाह कोउ किमि पावई।
करि कृपा को परसाद जा कहँ देहि सोइ जन ध्यावई॥
नहिं दोउ से दुर्लभ तीसरा कोउ लोक तिहुँ तिहुँ काल में।
निउना अधिक कृत भाव जो कोउ नहि चढ़ो त्यहि ख्याल में॥

हतभागि खंडत एक एकन हिय नयन देखे नहीं।
परभनित सुनि गुनि भूलि भटकत ह्वै खरमंडल सही॥
नहि सगुन अगुन विवेक पाये किये सतसंगति कहां।
स्त्रुति वदत भांति अनेक सम्यक् बोध कोटिन में लहा॥

नहि पूर्व पर लखि परत यामें वस्तु एकौ भय नही।
जन प्रौढ़ जानत भाव याको संत बहु सोमुख कही॥
कलि काल किये बिहाल लोगन बुद्धि मन काबू नहीं।
चंचल चपलता चोप बाढ़त और कौन मही मही॥

उर नैन रुज देखे कवनि विधि सिद्ध सब कोउ ह्वै रहा।
नही दीनता उर आनि बूझत जाय सत संगति जहां॥
नहिं हृदयँ थल गंभीर ठहरत वस्तु कौनी भांति से।
ब्यौहारते नहि तोस मानत दौरि दिनहूँ राति से॥

करि त्याग आस भरोस सम्यक् जहर से साधन घने।
सुमिरे दिवस निसि नाम जे जन सकल बानक त्यहि बने॥
करुनायतन करि कृपा कस नहि देहि निज बल बाहँ को।
का करै कलियुग काल विसेस बल सियनाह को॥
कर्तव्य सारो दूरि कै ह्वै अबल सरनागत परै।
कह बनादास प्रकास त्यहि उर कसन सीतावर करै॥ ६३॥

तारे गयंद किरात कोल अडोल पुरवासी भये।
गनिका अजामिल ब्याध गीध हराम कहि धामहिं गये॥
पापान विटप पुनीत कीन्हें भालु मर्कट अनगने।
स्वपचादि निसिचर निकर पावन स्त्रुति पुरान सुयस भने॥
सेवरी परम प्रिय गोपिका व्रज काममोहित नित नई।
त्यहि साखि आगम निगम सहज स्वरूप सब पावति भई॥
प्रह्लाद कारन खम्भ फारि उवारि जब दुष्टहि दले।
रिपु बंधु कीन्हें भूप लंका भसम भवन बचे भले॥
द्रुपदी की राखे लाज हरि भट दुसासन से महा।
व्रज बूड़ ते गिरि राखि नख पर प्रवल सुरपति मद दहा॥

सुग्रीव व्याकुल बन्धु भय महि मे न दीन्है ठावँ कोउ।
बधि बालि कीन्हे भूप भँ नहि हृदै सुजस नसाउ सोउ॥
गो विप्र महि सुर साधु हित धरि देह बहु कारज किये।
कह बनादास न भजत जस प्रभु भार भू नाहक जिये॥ ६४॥

विज्ञान ज्ञान विराग भक्ति सुअग साधन मोक्ष के।
होत न ऐसे प्रबल तौ लखि सकल प्रभु हि परोक्ष के॥
निर्गुन निरजन निर्विकार पुकार स्रुति नित नेति ज्यहि।
करि कर्म पचि पचि मरत सब कै स्यो न पावत कोउ त्यहि॥
पै दिव्य वस्तु कृपा प्रसाद सो मिलै ज्यहि बडि भागि है।
कोउ नहि खडँ योग काहे रहत नहि अनुराग है॥
कोउ ग्यान निन्दत भक्ति बन्दत का विचारे हीय ते।
कोउ भक्ति खडन ग्यान मडन नाहि जाने जीय ते॥
यह दसा देखि विसेखि सबसे अलग मन मारे रहै।
गै सग कीन्हे पास पूजी बहुरि फिरि केहि का कहै॥
तुलसी कृपाल बिसाल बाहँ उबारि कीने दास है।
जपि नाम जानकिनाथ को सब भाँति पूजी आस है॥
हरि हाथ सगौं साथ भानत जोग जब जस लागि है।
तैसन समागम होत ता छन जैस जाकी भागि है॥
जिन कियो सँग रघुनाथ फिरि न हेरे साथ है।
सम्बन्ध ईस्वर जीव को बहु भाति स्रुति गुनगाथ है॥
प्रेरक करै सोइ बात साची समुझि कै उरही रहै।
सतसग रोज न रोज होवै बात इमि सज्जन कहै॥
जिमि भयो गर्भाधान तियको फेरि कर्तब का रहा।
इकबार सेंदुर चढत सिर पर भागि मे सो कर गहा॥
पुनि प्रश्न उत्तर होत ही मे आत्म परमातम सदा।
कह बनादास उभै भये इक कहन सुनन न स्रुति सदा॥ ६५॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयताप-
विभजनो नाम उभय प्रबोधक रामायणे बनादास
कृते प्रथम मूल समाप्तम्॥

प्रथम–गुरुखण्ड

कवित्त घनाक्षरी

वन्दौ दास तुलसी गोसाइँ महराज पद कलिराज उदधि जहाज अवतार है।
जीवन पै दाया रघुनाथ निरमान किये जाके मत चढे भवसागर ते पार है।।
रासि लिये जिन श्रुति सकल पुरान बीज ना तोड़ बिजात मरजाद माँझ धार है।
ऐसी रीति रहसि महान तीन काल नाहिं वनादास बदत प्रचारि बारबार है।।१।।

ग्यान को निधान औ विराग मे प्रमान बेद रीति मे सुजान रामभक्ति हिय हुलसी है।
धारना प्रचड औ उपासना अखड अनुभव वरिवड जाहि माया झखि झुलसी है।।
अमल अचाह रामनाम निरबाह जाकी मति है अथाह मरजाद पाल्यो कुलसी है।
वनादास उपमा अनूप कवि लहै नाहिं सकल मतिमान कहै तुलसी से तुलसी है।।२।।

पढ्यो न पुरान वेदशास्त्र काव्यग्रन्थ एकनाम को प्रभाव रामचरित मे अवादी है।
मन औ बडाई मतवाद द्रव्यहेत पढै कीरति की चाह ताकी सम्यक बरवादी है।।
मानुष तनलाभ रामभक्ति बात साँची यह मुकुत को सीव सुरपुर नामजादी है।
अन्तस को भाव उरवासी रघुनाथ जानै काव्य वनादास को गोसाइँ की प्रसादी है।।३।।

सरल सुचिताई निपुनाई अनुराग भरी साची दीनताई अगभूपन विलासी है।
ज्ञान गुनखानी मोदमगल अघानी रसविराग सरसानी मुक्तिहेत मानो कासी है।।
जाई मरजाद को गनाई भाव कहाँ लगि अविचल निवासी रामचरित आम खासी है।
वनादास नाम ते निबाहै पतिव्रत धर्म रानी तो गोसाइँ वानी मेरी मति दासी है।।४।।

अद्भुत परमारथ बे स्वारथ जगहेत किये घटत नाहिं बढत नित्य दुइज की उजेरी से।
पूरब अभ्यासी चवरासी के राह चलत तुलसी कृत खीचत बाँह पकरि कै बरोरी से।।
किये अति सहाय कोटि मुख से न गनाय जाय काढि लिये जीवन को कलिजुग की झोरी स।
वनादास राम के रंगीले न की यही बात फूँकत भव भरम की घेपरिया मनो होरी से।।५।।

चौदह औ चारि पुनि अठारह को भेद यामे नवघट को भाव सब समुझे विलगान है।
अपर उपपुरान और उपनिषद् को बोध होत सम्मत सब सतन को सम्यक् अमान है।।
लौकिक की रीति राजनीति को अनेक भाव एक को न खाली मनहु पुष्पक विमान है।
बनादास तुलसी से साधु गुरु भाव मानै तुलसीकृत सतन को तुलसी के समान है।।६।।

मानत सवकोऊ औ सवही को वोध होत सवको सुखदाई सव जानत जहान है।
जैसी मति तैसी गति सवको सिद्धांत जामें सोभित सव अंग करौं कहाँ लौं वखान है॥
ग्यान औ विराग योग सव ते वड़नाम जामें कपट कलि खटाई नहिं किंचित प्रमान है।
वनादास काहू को नेक प्रतिकूल नाहि तुलसीकृत सवेको पाक आम के समान है॥७॥

देखत घर सूत्र दारु पुतरी को लेखत नहि ताते सव भापत नेक राख तनहिं चोरी है।
कपट अन्तरयामी सो अनरथ को भूल यही भोगत भवसूल जड़ चेतन गो घोरी है॥
कृपा विन कटत नाहि करतब कोउ कोटि करै जरै जीव सदा तीनि ताप आगि होरी है।
सुजन जन विचारि भाव हिय में प्रसन्न ह्वै हैं तुलसी मति महल वनादास बुद्धि मोरी है॥८॥

मिले है स्वप्न माहि कृपाकरि दीने वर उर अनुराग वड़ो सुने सुभ वानी है।
सास्त्र औ पुरान वेद नानामत मुनिन को सुनै करि प्रीति न विरोध कहूँ आनी है॥
सवसे विसेप करि जानै मत तुलसी को विनहि प्रयास यामें प्रीति सरसानी है।
वनादास गुरुभाव मानै हैं गोसाई विपे ताते मति मेरी विना दामही विकानी है॥९॥

विसद विराग भरि भाग हेत कामधेनु कोटि वे न पाप पद नाम तन दे रहे।
हृदय में प्रकास कर भासकर सम सद्य मायामोह कलिकाल काटत अंधेर है॥
वनादास एकमुख कहै भाव कहाँ तक मेरे हेत हठि रज महिमा सुमेर है।
धूरि से पहार किये दिये अभिमन्तदान ताते हौ विकान विन दामहीं सवे रहे॥१०॥

तृष्ना को नसावै कामक्रोध जरि जावै रामप्रीति सरसावै जासु हिये भाव भारी है।
भावना करत गुरुगुन को न लेस राखै अतिही विसेप स्यामरूप लागि तारी है॥
चेला गुरु रूप होत यामें न सन्देह कछु उपजै प्रतीति प्रीति ताकी गति न्यारी है।
वनादास किंकर गोसाई जू को वार वार वोदि निज ओर जग सागर सों तारी है॥११॥

सरन सहायक अलायक को अवलम्ब मेरी अम्वसम हरिजस वरसति है।
वनादास वरनै वात्सल्यभाव कहाँ तक अतिहितकारी अनुराग परसति है॥
सान्ति औ समाधि ध्यान विरति विज्ञान ज्ञान आरसी समान राम रूप दरसति है।
राम देस मेख मारै विधि औ निपेध जारै वानी श्रीगोसाई मोह गनगरसति है॥१२॥

नौ रस को जाई उपजाई पंचरसहू को रामरतदाई कविताई है अमलजू।
पाई मरजाद जस गाई सियवल्लभ को अतिही निपुनाई कमाई है विमलजू॥
वनादास सोभा सरसात सव ग्रन्थन के सात कांड लागे प्रियकंज कैसे दलजू।
ऐसे सदग्रन्थ माहि प्रीति न प्रतीति जाकी ताकी मति मारो कलि कहै कौन भलजू॥१३॥

जाने और सुने औ विचारे को लाभ यामें जामें रामनाम छोड़ि दूसरी न गति है।
चातक की टेक एक राम ही की आस जाके वाके सरदार संत विपय ते विरति है॥

राम ही ते रति औ अगति राग सारी और देखैं कृपा कोर नित ऐसी आवै मति है ।
वनादास को बिस्वास रोम रोम रक्षक है पक्षक सनातन के राखे साधुपति है ।।१४।।

चेतन जड छानै भव मानै जानै साधुजन सबको मनमानै गोसाईं कविताईजू ।
कविकुल को पोपत पराक्रम प्रबल जाको ताको उर सरद ब्योम उडगन से छाईजू ।।
वनादास बिदित जहान मे न जानै कौन थौन सुखदाई उपमाई कौन पाईजू ।
सुजन सब सराहै चारिफलहू को फल यामे ससप्त समुद्र जान तुलसी बनाईजू ।।१५।।

गुनातीत गूढगति आसतीक ज्ञानधाम नाम ही से काम औ भरोस एक राम है ।
धरम करम व्रत नेम जाके रामनाम श्रुति और पुरान पटसास्त्र वसु याम है ।।
सन्तसरदार भवभार को हरनहार कृपा को अगार श्री गोसाईंजू को काम है ।
वनादास निराधार जीवन उबार किये हिये हुलसत मन बिको बिना दाम है ।।१६।।

श्रुति औ पुरान सास्त्र सारद गनेस सेस श्रीमुख सराहै सुर साधुता बडाई को ।
ज्ञान औ बिराग अनुराग सान्तिभूपन जे दूपन दबाई कोटि उपमान समाई को ।।
बोध कहै विग्रह अनुग्रह सब काहू पै कलिजुग समुद्र हेत नौका बनाई को ।
वनादास अतिही प्रकास नित नयो होत हद्द करि गयो श्रीगोसाईं साधुताई को ।।१७।।

रामनाम की रहनि रामनाम की गहनि रामनाम की कहनि ऐसी मति पाई को ।
सास्त्र औ पुरान वेद मुनि मतबाद नाना नीरसन गाठी जैसे चित्त न चलाई को ।।
करम बचन मन गति एक राम ही की चातक समान टेक स्वाति बुन्द नाई को ।
वनादास दास तौ अनेक खास होत जात हद्द करि गयो श्री गोसाईं जू दसाई को ।।१८।।

सोधे न पुरान वेद सास्त्र काव्य ग्रन्थ एक नाम ही की टेक ताते अनुभव बिसाल है ।
भापोभय हरन बानी जानौ मानौ सर्व रीतिप्रीति औ प्रतीति सानी मेटै जगजाल है ।।
वनादास कोबिद कबीस्वर तिलक भाल कलियुग कराल मधि तुलसी कृपाल है ।
आयो मूल हाथ मे तो डारपात बाकी कहा बरी बरीना ये लोन कहे बुद्धिवाल है ।।१९।।

जाके भाल भागभूरि उपजो अनुराग रामनाम ही सो काम सुबूसाम कहा जात है ।
रक जैसे निधि पाये कामी ज्यो नवीन नारि वारि वारि प्रान रूप स्याम न अघात है ।।
वनादास बिलग परत जो पलक एक ललकि ललकि लखि लालच ललात है ।
दसा पराप्रेम की प्रमान कोऊ कैसे देत पढे सर्वसास्त्र श्रीगोसाईं बनी बात है ।।२०।।

ज्ञान औ बिराग अनुराग परिपूरि पाय जगत हेरायन सम्हार सुद्धि देह की ।
भये जल मीन राम रूप प्रेमपीन अति बासनाबिहीन दसा कौन कहै नेह की ।।
वनादास सास्त्र वेद मानौ सुधि गये खेद जीवन की आस जैसे धान पान मेह की ।
पढब बिरोध सब सोय करै कौनि भाँति राति दिन कहा भार घरे कौन गेह की ।।२१।।

सास्त्र औ पुरान बेद सम्मत सब सन्तन को मानुष तन लाभ रामभक्ति को गनाई है।
तीरथ बरत तप जोग यज्ञ साधन कै पावत करोरि मध्य एक अति बड़ाई है ॥
दुर्लभ पुनि देवन को और को गनावे कौन जासु लोक प्राप्ति हेत केतो निपुनाई है।
बनादास कृपा को प्रसाद श्रीगोसाईंजू को कनका मुख पीत ते पपील जैसे पाई है ॥२२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभय प्रबोधक रामायणे
प्रथम गुरु खण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

कबिकुल के तिलक त्रिकालहू को जानहार सुजन सरदार रामरीति ऐसी गाई को।
धीरज के धुरा धरमसेतहू को चलनहार गुन को अगार ज्ञानगिरा ऐसी पाई को ॥
बिरची रमायन करुनायन कृपाल बैन कलिजुग समुद्र ऐसी नावरी चलाई को।
बनादास बचन करमन बनाय कहै मानो गुरुमन्त्र बैन सारे श्रीगोसाईं को ॥२३॥

तुलसी समान न त्रिकाल में कृपाल कोऊ सगुन अगुन हाल साधुन को थाह दई।
डूबे जगजाल में बेहाल जीव नानाभाँति कलि बिकराल मुख काल ते निकारि लई ॥
बनादास बालबुद्धि सुद्धि लिये भलीभाँति थोरी अवकातिन बिचारि दिये काटिबई।
जनम मरन गति अगति को भान गयो भयो है स्वरूप ज्ञान देखे जग राममई ॥२४॥

जनमपर्यन्त पढ़े बेद न पुरान चुकै झुकै भाव भगति को सास्त्र मतवाद है।
विद्या ते बिराग नाहि ताहि त्याग कैसे कहै चाखै नीम कौन छोड़ि दाख सुठि स्वाद है ॥
एकहू सरीरन सम्हारि भजै रामनाम बनादास होय क्यों सरूप में अवाद है।
ताते सास्त्रजन्य ग्यान साधु को स्वल्प होत सर्व बितपन्य एकनाम को प्रसाद है ॥२५॥

विद्या बेद भाल में न दूजी गति ख्याल में न फंसे जगजाल में न लेसहू अराम है।
पापन ते पीन निति होत है नवीन अति मानस मलीन नहि गाँठिन में दाम है ॥
ज्ञान गुनहीन सब साधन विहीन भाँति कोटिन से दीन तन खीन औ न काम है।
बनादास पतित पतंगपति राखे राम कामतरु कामधेनु कोटि गुना नाम है ॥२६॥

ज्ञानबोध आकर दिवाकर प्रताप जासु सीतल सुधाकर समान टेक नाम की।
बिग्रह बिराग अनुराग को सदन सुठि भार से सरीर सुधि कहाँ सुबूसाम की ॥
बनादास बदत प्रचार करि बार बार जाके मत चढ़े न चलत कलि वाम की।
जानै जहान औ प्रमान मध्य सन्तन के तुलसी हिय हुलसी भय हरनि भक्ति राम की ॥२७॥

उपमा अनूठो लोक बेद में न हेरे मिलै कापै तुला तौ लिये महतु श्रीगोसाईं को।
पाये न करोरि मुख कौन रुख पाय कहौं सारद गनेस सेस कोऊ ना सहाई को ॥
नारद महेस औ बिरंचि से न भेट जोग बूझिये बिसेपि बात कहौ दुचिताई को।
बनादास वर्त्तमान में न अनुमान आवै ताते बुद्धि बैन काहू पावै न उपाई को ॥२८॥

मेकु से रहन सर्व सम्मल विहीन जानि श्रुति औ पुरान काव्य कोस करि हीन है ।
बुद्धि न विसाल बालकाल ते न पढे बेद बढे दिन आय अब होत नाहिं कौन है ।।
पढौ सर्वसास्त्र महाराज गेस भाषै हेत देखिये विचारि सौ अनेक अग दीन है ।
बनादाल बिना कहै मानत न मूढ मन होत न अरुढ मिलै कहाँ ते नवीन है ।।२९।।

देखो जल सारे है समुद्र ही के अन्तराय लोक वेद माहिं हेरि कहै सबकोई है ।
होत है अनेक बार ही मे उतक्ठा वेग मिलै न अनूठ हिय आखिन ते जोई है ।।
ताते मन मारे कहो जौन कछु आवै बुद्धि मौन धरो जात न अनेक कहिय गोई है ।
बनादास करत बिचार उर बार बार लागी मन लाभ महासुखसिन्धु साई है ।।३०।।

ग्यान औ बिराग अनुरागहू को भागी होत अतिही प्रतीति जागी वरनै बडाई को ।
धरमधीर धुरा परधीरहू को जान हार गुन को अगार राह पाई सूरताई को ।।
साधुता सकल अग भग कोऊ काल नहिं रूप म वेहाल कहूँ उपमा न पाई को ।
बनादास रीझै राम साचेहू सनेह बस जाके हिय भासै भाव तुलसी गोसाइँ को ।।३१।।

पढे न पुरान बेद सास्त्र काव्य कोस एक नाम ही की टेक औ गोसाइँजू की बानी है ।
बारेपन मात्रा लगाये हुते अक्षरपै तबते तक आजु मत काहू को न मानी है ।।
बनादास बनब बिगर रामनाम ही सो माने गुरु गोसाइँ दास तुलसी पहिचानी है ।
हारे जन्म एक याही द्वार पै वचन क्रम भ्रम सारो नास मति ताहीते बिकानी है ।।३२।।

रामजू की ऐन मैन रिपु की नसै न जानै ताते चैन पावै नाहिं भटकै ठौर ठौरजू ।
पूरब अभ्यासी चवरासी के राह चलै टूटै त्रिगुन फासी न अनेक करै गौरजू ।।
बनादास दास जे रगीले रघुनाथजू के कूके भवपास आस पूजी मन दौरजू ।
प्रानहू ते प्यारी प्रभु कीरति उदारी जाहि सारी सब काज सोई सन्त सिरमौरजू ।।३३।।

विनय की बडाई करौं कौन मुख लगाई नहिं पाई मति सेष की निकाई है अनूप जू ।
बरवै कवितावली दोहावली अनूठी आसै बहुरो गीतावली भरी है रामरूप जू ।।
बनादास बरनै छन्दावली सलाका राम कामतरु रमायन सकल बोध खूमजू ।
दोहा चौपाई छन्द सोरठा बखानै कौन थाह पावै ग्रन्थ तुलसी कवि भूपजू ।।३४।।

तीरथ वरत तप यज्ञ जोग साधन कै यम औ नियम साधि हियेन ललाई के ।
स्मृति औ पुरानसास्त्र सोधिये अनेक अग अमित उपाय करि लेसहू न पाई के ।।
बनादास अपर नरन की चलावै कौन मुनिमन अगम सुगम ताहि गाई के ।
सकर भुसुडि हनोमान को प्रमान जामे रामतत्व आया हाय तुलसी गोसाइँ के ।।३५।।

खास बास हिय दास तुलसी के रामजू को जानकी समेत लषन अतिही प्रकास है ।
भुजा पै निवास हनोमान ज्ञान धाम महा उपमा सकल थोरि बेदै बनादास है ।।

सुकृत को सागर उजागर जगत माहिं ताहि के प्रसाद करि पूजी मम आस है।
रोम रोम रीनी और कसूरबन्द स्वास स्वास कालहू कि त्रास कटि दिये अनायास है ॥३६॥

काटे कर्मजाल जग जीवन बेहाल देखि बालबोघ बिसद रमायन बनाई जू।
अतिही अगाध साघ लागन को प्रान धन रूपी जस धाम जगर उपमा न पाई जू ॥
बनादास गांसी चवरासी काल फांसी गर मौतहू को दासी करि दरिद्रता दबाई जू।
सज्जन सुर बन्दत अनन्दत सब काहू को कलिकाल हिये साल दिये श्रीगोसाइँ जू ॥३७॥

छन्द दोहा सोरठ कवित्त पद दंडक जे उपमा न पाई कहुँ एकहूँ चौपाई को।
स्रुति औ पुरान देवबानी ते सयानी जानो मानी मन सबको निसानी मुक्ति दाई को ॥
हिन्दू औ तुरुक अंगरेजहू प्रमान देत हिये माहिं राखै पट दरसन बड़ाई को।
बनादास चारि खूट फैली फल चारि देत हेत मन कामना न राखै दुचिताई को ॥३८॥

काहे को पढ़त काव्य कोस औ पुरान वेद सास्त्र मतबाद भरे विद्या की वड़ाई है।
मन्त्र यन्त्र जादू टोना धावत रसायन हेत वसीकरन आदि लागि घूमत ललाई है ॥
कोकसास्त्र ज्योतिष औ तन्त्रहू अनेक जानै यमनी अंगरेजी माहिं जनम को बिताई है।
बनादास गाइये गोसाइँ कृत अमृत मानि छोरै जड़ चेतन गिरह राम प्रेम छाई है ॥३९॥

मुक्ति की निसेनी वरदेनी औ त्रिबेनी सरिस सीताराम धाम श्रीगोसाइँजू बनायो है।
कैधौं रघुनाथजू की करुना उफलाय चली कैधौं गंगधारा घर घर में घसि आयो है ॥
बनादस कैधौ काल जाल को जलावै आगि कैधौं कलिकाल ऊपर कृत्तिआ चलायो है।
कैधौ कलि साधु हेत सुकृत की बेलि फली कैधौ अनुराग भलीभांति भायो है ॥४०॥

कैधौ वेद सापाभयो भाषा श्रीगोसाइँजू को पूजै अभिलाषा सोरि साषा सहित सत्ति है।
कैधौं अनुराग आकर कैधौ कलि साकर हेत कैधौ ज्ञान खेत कैधौं गत्तिहू कि गत्ति है ॥
कैधौ है विरागवेली कैधौं पुनि चमेलीभक्ति कैधौं विज्ञान ढेली सुकृत सम्पत्ति है।
बनादास वासना विनास हेत कैधौ आगे कैधौ मेरी भागि कैधौ मुक्ति आवै मत्ति है ॥४१॥

कैधौ कलिसिन्धुहेत वोहित विवेक सात कैधौ उन्चास पवन रवन विषय वादर है।
कैधौं आलवालभक्ति कैधौं रामभक्ति सक्ति कैधौं धर्म सैना भूरि कीने काम कादर है ॥
कैधौ अमृतधारा कैधौं पापहेत आरा कैधौ पैन पैना से चलावै पीटि गादर है।
बनादास सांची है कीरति रघुनाथ जू की जानै सब कोई वहु सन्त करैं आदर है ॥४२॥

कैधौं वीरसास्त्र के पुरानन के पल्लव है कैधौं धर्म्मसास्त्र लता लपकी सब ओर है।
कैधौ राजनीति चतुराई के चरन चारि कैधौं सन्तोष वूट कैधौं सुकृत मोर है ॥
बनादास कैधौं है त्रिकांडहू की तिलक नीकी कैधौं रघुनाथजी की फैलो कृपा कोर है।
कैधौं लोह अन्तः कर्न चुम्बक न जानो जात कैधौं इन्द्रीवशीकर्न सांचेहू वरोर है ॥४३॥

कैधौ मन टोना के चित्तहू के चार यामे कैधौ बिसेषि अहंकार हरनहार है।
कैधौ काव्य तुलसी निसेनी परधाम सात कैधौ पितु मात सरिस साधु सुकृत सा रहे ॥
बनादास कैधौं है अनन्द के सदन सुठि काव्य को भलाई कैधौ आवत विचार है।
कैधौं मुक्ति रानी के शृङ्गार सर्वं अगन के कैधौं युक्तिखानी के विचार के अगार है ॥४४॥

कबिता गोसाईं भवसरिता की सेत कैधौ कैधौ त्रिगुनगासै हेत प्रकटी प्रवल है।
कैधौं बोध खानि जानि परत सब काहू को कैधौं मुक्तिरानि के बिबेकहू का दल है ॥
कैधौं विचार बिधि कीन्ही जग हेत जानि जामे कलिकालहू की बैठ तनसल है।
बनादास कैधो बिषरानी भक्ति भौन भौन राम दिये राज पै बिलोके जग बिकल है ॥४५॥

कैधौं नैन अजन विभजन जगत जाल हेत कैधौं अघ गजन को गगजु को जल है।
कैधौ सन्त भूषन के दूपन को दलनहार कैधौ भक्त बचक की बोलत नकल है ॥
कैधौं अज्ञानकाल कैधौ भाल भाग मेरे कैधौं बिराग वृक्ष कैधौ ज्ञान वल है।।
वनादास नास चवरासी की करन हार अतिही अपार राम कीरति अमल है ॥४६॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयताप विभजनो नाम
उभयप्रबोधकरामायणे प्रथम गुरुखण्डे द्वितीयोऽध्याय ॥२॥

कैधौं ब्रह्मदानी के निसानी कैवल्यहू की कैधौं सुखखानी दुखहू की दलनहार है।
कैधौं राम मारग को सम्मल सकल अंग कैधौ भवभग हेत लीन्ही अवतार है ॥
वनादास कैधौं बिषयबेलि की जलन आगि कैधौ घरघरन लागि करती उबार है।
कैधौ काम क्रोध लोभ मोह मान मारे हेत अन्तर निकेत काव्य चोखी खड्गधार है ॥४७॥

कैधौं कामधेनु कल्पतरु कै गोसाई बानी रामभक्ति हेत मन कानी सब काहू को।
विरति की दानी बरदानी कै ज्ञानहू की साति रस सानी मूर्ख मानै मन ताहू को ॥
बनादास कैधौं विश्राम की निवास नीको कैधौ विपय फीकी हेर निरनै निबाहू को।
कैधौ भय हरन कैधौं सरन को समूह सुख कैधौ मम हेत अवसि मेटे उरदाहू को ॥४८॥

साति सुधा आकर कै दिवाकर कै किरनि आछी अद्भुत प्रताप पृथ्वी मडल मे लसी है।
कैधौं कर्मकाड बिटप काटन को कुठार धार कैधौं काल जाल कलि कराल मुख मसी है ॥
कैधौ साधु मडली मे मडल परिपूरिचन्द कैधौं द्वन्दहरन हेत घर घर मे घसी है।
बनादास बानी श्रीगोसाईंजू की महिमा अति कही कापै जायस कलसज्जन उर्वसी है ॥४९॥

मेरी प्रान जीवन सजीवन भव रोग हेत कैधौं अति चेतन कोप हरु पुकारे है।
जागु जागु जालिम जवानी मोह नीद खोय अबहूँ जपु रामनाम नर तन सवारे है ॥
जाहुगे चौरासी चारि पहर माहि चौपट ह्वै कोऊ नाहि सुनै धर्मराज धरमारे है।
बनादास आलसी जगाय कोटि कोटि भाँति अतिहि सरसाति कला भेजति हरिद्वारे है ॥५०॥

सुरसरि की धारा कपट काटिबे को आरा कैधौं सारासार के विचार को अगारा है।
कैधौं वेदछीर निधि मथिकै निकारे अमी तुलसी गोसाईं सर्ब देव अवतार है।।
मन्दर गिरि ज्ञान को पुरन्दर से कोटि बल सूरति की जेवरी बनाये बार बार है।
बनादास कैधौं हरि रूप ह्वै कै कृपा कीन्हीं सन्त सुर पियाये रोग हरे भव भार है।।५१।।

कैधौं मोह मूल सूल कैधौं अनुकूल बोध चित्त को निरोध करन हेत कैधौ योग है।
कैधौं कवि तुलसी की लागै अति प्यारी सबही भूरि है धनवन्तरि की नास मन रोग है।।
कैधौं ज्ञान गोला सर्वसंसय की कोट ढाहै बनादास कैधौं भक्ति सकल अंग भोग है।
कैधौं है विवेक मौन कैधौं साधि राखै मौन भाषं नहिं देति अपर भाषा कहे लोग है।।५२।।

कैधौं श्रुति जाई कैधौं स्मृति सों आई कैधौं सिव की निपुनाई कै गनेसजू की गाई है।
सेष वकताई कैधौं सारद सहाई कैधौं देव चतुराई कै उपनिषद् की भलाई है।।
प्रीतिसाई सूरताई को बढ़ाइ देत सबको सित लाई संतही में अति भाई है।
ज्ञानसों कमाई कै विरागहू से छाई बनादास उर भाई कैसो तुलसी कविताई है।।५३।।

सवैया

संत सिरोमनि श्री तुलसी हुलसी सबके हिय में अति नीके।
अंग गुरुत्तु को मानौ सबै अति मूरति है येई भावत जी के।।
जानौ सगाई अनेकन जन्म की जानत कौन विना सिय पीके।
दास बना नवनायक है गुरु इष्ट के पाय बिना वित बीके।।५४।।

है जबते तुलसीकृत जपत में भक्ति हृदय अतिही रंगे भीना।
राम को नाम जपै जन जानि कै जाय भये हरि के पद पीना।।
बैठत सूत नही यमदूत को घूमि चलैं घर होत न कीना।
दास बना अस पाय संयोग जो मेटै नहीं भवरोग मलीना।।५५।।

जाके यहाँ नित होत रमायन मारुत नन्दन को तहँ वासा।
ताको रहै कहुँ ओर ते चौकस ताते फिरै जमदूत उदासा।।
दासबना असि लोभ जो आवहि तौ हनुमान देखावैं तमासा।
फाँसी को तोरि मरोरि भुजा दोउ देत चपेट चलैं उर्द्ध स्वासा।।५६।।

नाम अनन्य को है तुलसी सम आपु तौ धन्य अनेकन तारे।
जो अवतार न हो तो गुसाईं को को जग जानतो राम बेचारे।।
सम्यक् बोध दिये विधिपूर्वक सोक संदेह अनेक नेवारे।
दासबना द्युति चन्द्रप्रताप बढ़े तेहि कारन नाथ कृपारे।।५७।।

वासना लेस नही जिनके उर ताही ते देस भया सब चेला ।
कामना काल बसै जिनके हिय ताको मिलै जग मांगे न ढेला ।।
गोपद से गयो नाघि नदी भव पीछे से जात चला सब मेला ।
दास बना जेहि के परसाद से आठहु याम भया ब्रह्म बेला ।।५८।।

मूरति श्री तुलसी हुलसी हिय ताते भया सकलौ श्रम छीना ।
प्रीति प्रतीति परी यक द्वार पै तीनहु लोक लखे जनु दीना ।।
प्रौढ भयो क्रम ही क्रम ते रमते पद राम क नेह नवीना ।
दासबना श्री गोसाईं अनुग्रह बोध को विग्रह होत मलीना ।।५९।।

घनाक्षरी

उद्यम को दाहै लोकलाभ को निवाहै देत भवनिधि मे थाहै औ सराहै सब सन्त जू ।
ज्ञानीजन मानै प्रौढ पडित पिछानै करै कहाँ लै बखानै रस जानै हनुमन्त जू ।।
होते मुदितायन रमायन मे परायन जे सोभा सरसायन चौरासी को अन्त जू ।
बनादास रामप्रेम नेम कौ निबाहनहार गुन की अगार कोऊ पार न लहन्त जू ।।६०।।

साधुन को छानै पुनि तत्त्व को पिछानै भेष सबही को मानै जग जानै अति बिसद है ।
सुख को सरसावै परमारथ को बढावै अति ही को हुलसावै औ सयानी करै रद है ।।
सन्त गुरु से बोधै नहि बोधत हिये मे विषय दम्भ औ पखड कपट नासै मोह मद है ।
बनादास भासै उर अतिही प्रकास भारी बानी श्रीगोसाईं पतित पावन को बिरद है ।।६१।।

भक्तिरसभूषन सब दूषन को दलनहार पोषन प्रकास काल जाल को जलावति है ।
ज्ञानबोध आकर औ साकर कलिकटुकराल सीतल सुधाकर से रामगुन गावति है ।।
भावति सब काहू नसावति मनरोगसोग तावति गुन तीनि अनुराग बरसावति है ।
बनादास खास है निवास सीतारामजू को भागि भूरि ताकी अति जाके हृदय आवति है ।।६२।।

मुक्ति की निसानी भक्ति भूषित सयानी रसबिराग सरसानी ज्ञान खानी सब जानी है ।
प्रेमसुधा सानी मनमानी सब काहू को चारिफल दानी औ सराहै सब ज्ञानी है ।।
बनादास मेरी भवभानी नबनायक हौ चेतन जड छानी धर्मनेति को पिछानी है ।
बोध रजधानी मति विकानी सब सन्तन की बानी श्रीगोसाईं जू की मेरी महरानी है ।।६३।।

ज्ञान सरसावति औ विराग को बढावति एक रामगुन गावति रसप्रेम बरसावति है ।
सबके मन भावति रिझावति कलिकालहू को मोह को नसावति रमावति गुन पावति है ।।
बनादास ही को हरषावति हजारो बार आवति उर जेहिके जर विषय की जरावति है ।
तावति तृष्नाहू को न लावति नेह काहूसन सबको मूलनाम याम आठो फरमावति है ।।६४।।

सुगति की श्रृंगार और बिचार सारासारहू को महिमा अपार श्रीगोसाइंजू की गाई को।
सारदा सराहै न निवाहै मुखसहस सेष कोविद कबीस्वर अपर पार पाई को ॥
बनादास सुईमुख सुमेरु किमि समाइ सकै सातहू समुद्र सातकांड उपमाई को।
मेरी मति पपील टील देखि बल सर्वभांति ताते दिनराति अति आवे दुचिताई को ॥६५॥

कौन वेद जानत औ पुरानन को भेद सारो सास्त्र मतवाद सकल दूपन दवाई जू।
पापन ते साने औ बिकाने लोभ लालच कर भक्तिमुक्ति भेद कैसे पर तो लखाई जू ॥
ज्ञान औ विराग अनुराग की अनूप गति राम को स्वरूपबोध सम्यक बताई जू।
बनादास कैसे भवसागर को पार होतो जो पै कलिकाल में न होते श्रीगोसाइंजू ॥६६॥

पढ़े कोउ पढ़ावै पुनि गावै श्रवन लावै कोऊ हिये माँहि भावै तासु हो तो भलेभल है।
लाभ सव देस में महेस जू को मानस यह आलस न राखे ध्रुवधाम से अचल है॥
बनादास कासी के समान मुक्तिखानि जानी सन्तन मनमानी मुख मसि लावै खल है।
विनय गीतावली दोहावली अनेक ग्रंथ कैसी कवितावली न राखै मन मल है ॥६७॥

आस घास आगि नास तृष्ना की करनहार अनुभव अगार पार पावन न योग है।
पाप साप भरनि तरनि मोह रातिहू को कोऊ एक जानै योग नासत सव रोग है॥
कपट पखंड दम्भ दावनि नसावनि भ्रम मोद सरसावनि जलावनि भयसोग है।
बनादास काव्य श्रीगोसाइं की मलाई अमृत मृतक जियाये जीव जाने सवलोग है ॥६८॥

महामोद रासी अति अविचल क्षमासी सदा पाप निःसुम्भ दलन जानिये उमा सी है।
चन्द्र से प्रकासी गली गाँसी चवरासिहू की सन्तन उरवासी सिव सिन्धु को रमा सी है॥
खलनउर खासी मुनिसंसय विनासी फाँसी कालहू की नासी वानी तुलसी महिमा सी है।
मुक्ति हेत कासी दासी डारै करि मोचहू को बनादास हिये सूमसम्पति जमासी है ॥६९॥

कंजहि अविकासी पंचविषयन को त्रासी असि राम अविनासी चरन पंकज विलासी है।
कलिजुग की हासी घासी काम क्रोघ लोभहू को वनादास भासी सेज अनन्द की डासी है॥
निगड़ भव खलासी जीववासी बैकुंठ कीने आसा करि दासी सन्तहृदय बोधरासी है।
सबको सावकासी चपला सी चमक चारिओर नासत उदासी काव्य षोड़स कलासी है ॥७०॥

सिंहावलोकनि

पाप को पराजय ताप तीनिहू अकाजै काम क्रोघ लोभ भाजै कलिजुग कुचाली जू।
चाली सुभग साजै छविछाजै साधुसभा मध्य सिंह सम गाजै टेक नाम प्रतिपाली जू॥
पाली पथ भक्ति अमित सक्ति कौन पार जाय बनादास आस पूर कीने जिन हाली जू।
हाली से पढ़ै कृत तुलसी सुजान लोग योगजपयज्ञ त्यागि कोऊ न जात खाली जू ॥७१॥

तारन को अवतार उद्धार हरे भवसागर हजारन को जारन को।
विषयावन बेगहि मोह मनोजहि मारन को।।
मारन को मन मूढ़मनोरथ दासबना लह पारन को।
पारन को पढि कै तुलसीकृत ताते बिसेषि विचारन को।।७२।।

बिचारन को बसु याम यही तुलसीकृत प्रेमसुधारस पीजे।
पीजे सदा प्रभुनाथ हिये पदपकज पै नितही चित दीजे।।
दीजे नही मन कूरन को कह दासबना जग से जस छीजे।
छीजे नितै कर को जल जीवनि ताते रहौ हरि के रग भीजे।।७३।।

सवैया

फैलि रही जब से जग मे तुलसीकृत मानो करै अति छाया।
दम्भ पखड को दाबि दिमाग हरै कलि कामहु मोह औ माया।।
प्रीति प्रतीति हिये जिनके तिनके उर आवति बोध निकाया।
दासबना अस बूझिमे आवत है जन पै रघुनाथ की दाया।।७४।।

दारुन काल बेहाल सबै जगबुद्धि भै मन्द पढै को पुराना।
वेद को भेद अहै अतिगूढ औ सास्त्रन मे मतबाद निदाना।।
हीन भई श्रद्धा सबके हिय होत नही अनुभव करि ज्ञाना।
दासबना हमरे मत से तुलसीकृत साधु को जीवन प्राना।।७५।।

खडन कै सब साधन को अरु मडन राम को नाम किये है।
चातक टेक जथा जलस्वाति को औ जलमीन से प्रीति हिये है।।
ज्यो पतिदेव तियागति देखिये जन्मपर्यन्त निबाहि दिये है।
दासबना अस जानि परै यम द्वार ते जीवन काढि लिये है।।७६।।

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयतापविभजनोनाम
प्रथमगुरु खण्डे तृतीयोऽध्यायः।।३।।

घनाक्षरी

पाहन से हृदय पघिलि जात प्रेमरामजू के देखिये बिचारि कै सो यानी मे असर है।
बूझै औ विचारै हिये धारै जो गोसाईंकृत हेरि हेरि अन्तर की काढत कसर है।।
काम कोह लोभ मोह मानहू को मथि डारै सारे सब काज खोदै कलिजुग की जर है।
बनादास छोटो खोटो मोहिं न विचार किये बात न बनाय कहौं दिये बाद्धिन बर है।।७७।।

सवैया

सेवे सकाम जो दाम के हेत सचेत करै तेहि को अति नीके ।
धाम धरा घन पूर परै जस गावत ही नित ही सिय पीके ।।
देवन दुर्ल्लभ भोग करै सब काम सरै जस भावत जीके ।
दासवना चहै मानबड़ाई सो लेय अघाय समान अमीके ।।७८।।

घनाक्षरी

रामरूप चाहै तौ निबाहै भाव तुलसी को लिखौं कोर कागज पै पावत न देर है ।
सिया के समेत करै हिये में निवास सदा अति ही प्रकास उर काटत अँधेर है ।।
चाहै निराकार निर्विकार होय भलीभाँति प्रीति सरसाति नाम नेकन अबेर है ।
बनादास धारना गोसाईंजू की गूढ़ अति होत ही अरूढ़ लागै कठिन करेर है ।।७९।।

मन क्रम वचन स्वप्न में न आन गति बासना बिरति एक राम ही सों रति है ।
स्वाद औ शृङ्गार भार नाम ही अधार जाके बाँके सरदार सन्त अद्भुत मति है ।।
लोक वेद मतवाद सकल कुस्वाद जाहि चातक को टेक स्वाति बुन्दसी अपति है ।
बनादास सकल असंग रँगे नाथ रँग हारे कवि कोविद प्रभाव जासु अति है ।।८०।।

कृपा श्रीगोसाईंजू के भासै भाव जाके उर तिनुका समान तिहूँ लोक सुख ताके है ।
चाहत सरीर नोचि नोचि फेंका राम हेत अतिही सचेत नाम धारा उर वाके है ।।
चलत अखंड खंड खंड चाहै टूटै तन भूलेहू न कबहूँ जगत आस जाके है ।
बनादास काके हिय हुलसै गोसाईं दसा लह्यो फल लाह जन्म लिये वसुधा के है ।।८१।।

सवैया

जाके हिये हुलसै तुलसी गति सो सब अंग से साधु सयाना ।
छोरि है सो जड़ चेतन गाँठि भले विधि वेद पुरान को जाना ।।
पाय स्वरूप को ज्ञान भली विधि भौ रजनी कर वेगि विहाना ।
दासवना न अनन्द अमात करै मत काहू को फेरि न काना ।।८२।।

जाको न काम सरो यहि काल में मानि गोसाईं को भाव अनूपा ।
सो पछिताय भलीविधि ते कलिकाल दिनौदिन नाइहै कूपा ।।
सोचि सवेर चलै तुलसी पथ दास बना मिलै कोसल भूपा ।
बादि कहौं लिखि कागज कोर पै कैसे न पावै पुरान स्वरूपा ।।८३।।

चातक टेक यथा तिय पी गति यों मति आइ है राह गोसाईं ।
जाइ है सो वहि देस भलीविधि निर्गुन सर्गुन पाय सफाई ।।

कालहु की डर नेर न आवत पावत धीर विवेक बडाई ।
दासवना बनि जाय सबै बिधि जो स्रद्धा उर मे अति आई ।।८४।।

मानब मुख्य गुरुपद दीसत कान फुंकावैं हजारन बारा ।
स्वाद कछू नहिं आवत हाथ मे जो नहिं वाकी करै अगीकारा ।।
जाको गहै उपदेस भलीबिधि ताही को रूप सो होत बिचारा ।
दासवना ज्यो दिया सो दिया बचो कोऊ कहूँ कहूँ देसन सारा ।।८५।।

दत्त दिगम्बर लै मत चौबिस सिद्धि भये सद्ग्रन्थ पुकारे ।
काहू कि वाक्य सुने नहिं कान से आपनो बुद्धि से कारज सारे ।।
ग्रन्थ पढे जेहि को मन लायकै भाव गुरू उर मे दृढ धारे ।
दासवना उपदेस गहै लहि रूप सोई निज को भवतारे ।।८६।।

कान फुंकाय न छूटत जक्त सबै जग कान फुंकावन हारा ।
देह धरै तबै कान फुंकावत काहे न होत सबै भवपारा ।।
है बिधि वेद करै सब कोय सो एकै बार न वारहि बारा ।
दासबना बिन ज्ञान गुरु औ मसक्कति हीन बहै मँझधारा ।।८७।।

घनाक्षरी

मेरी आस पूजै दास तुलसी गोसाई भले अब उर माहिं रही कछू न कसरि है ।
ताते गुन गावत न आवत सन्तोप हिय अति उमगावत स्वरूप को निदरि है ।।
कोटिमुख नाहिं करौ कहाँ लौ बडाई नाय यही अवकाति कज पाय रहो परि है ।
बनादासकृत नासै ता को वेद इमि भाषै मुख देखे पाप रहै कुम्भीन निकरि है ।।८८।।

जैसे तिय पिय को सम्बन्ध होत एकबार सदुर न चढै सीस दूजे कैसे बरि है ।
त्योही सतसग करै पढै लिखै भलीभांति मान्यो दृढ करि फिरि गुरू नाहिं वरि है ।।
राम उरवासी सो कपट कैसे चलि सकै परै नक फेर फिरि मन से उतरि है ।
राम इप्टदेव सर्व ऊपर गोसाई गुरू बनादास मेरे भाल रही भागि भरि है ।।८९।।

सवैया

माने बिना गुरुवाक्य न सिद्धि असिद्धि फिरै कितने जग चेला ।
रोटी लँगोटी लिये सम्बन्ध रहैं जहँ जाय करै तहँ मेला ।।
देह निबाह औ जो उर कामना सोई है ईस्वर नेक अकेला ।
दासवना जेहि हेत गुरू वह्नु रामहुँ सेइकै चाहत ढेला ।।९०।।

घनाक्षरी

मंत्र गुरू मरयाद भयो बालकाल ही में मोको कछु ख्याल नाहिं पितु आज्ञा लहे है।
रामभक्ति भाजन महेस ह्वै कृपाल किये ताते रामतत्त्व गुरू सिवहू को कहे है।।
पुनि बहुभाँति सतसंग भयो सन्तन को माने सतगुरू एक हिये दीठ गहे है।
मतितुला तौलि देखी सबसे गोसाइँ गुरू ताते बनादास कै प्रचार निरबहे है।।६१।।

गुरु के प्रसाद रघुनाथ सों सफाई जानो तब प्रस्न उत्तर हिये हि माहिं होत है।
गुरु परमातम औ चेला जीव आतम भो मेला छूटि गयो सो अकेला तौनि सोत है।।
भयो ब्रह्मवेला बसु याम बनादास वदै तब दोऊ रूप भये भले ओत पोत है।
भारी परम्परा याही सब ही से देखि परै जाको होनहार जस ताको सो उदोत है।।६२।।

सवैया

जो परमातम आतम एक रह्यो न अनेक करै को बखाना।
सांति भयो तनहू मनबुद्धि औ इन्द्री बिकार तजे सब नाना।।
दासबना नहिं बासना आस बिनास भयो तबहीं भव भाना।
सन्त को भूपन सांति सनातन सन्तकृपा ते लहै नहिं आना।।६३।।

बरबस सांति दवाइ लिये तब साधन सर्व भली बिधि छीना।
बीची बिना निधि ज्यों अवलोकिये सुकृत सर्वफले जस कीना।।
लीन भयो जल मीन स्वरूप में होत दिनोंदिन ही अति पीना।
बानी औ बुद्धि परे सुख सोय न गोय रहे पहिचान प्रवीना।।६४।।

घनाक्षरी

जौने जौने समय माँहि जैसो होनहार रह्यो तैसो जोग लाग राम की रजायजू।
अवसन गाँठी नीर जाहि ते फकीर भयो बनादास लेन जाय काको सम्प्रदायजू।।
व्याह न बरेखी जातिपाँति से न काज कछू रामराह न्यारी यह सदा चलि आयजू।
मन बुद्धि चित्त अहंकार परे मेरो वास तहाँ जोई चलै ताते जोरिये बनायजू।।६५।।

सवैया

सांति समा सुख लोक तिहूँ नहिं है अपवर्ग परे सब ही के।
सन्त को भूपन दाहक दूपन पोपन से परकास लही के।।
जापर सन्त करै करुना गुरु देव कृपा औ भई सिय पीके।
कोटिन मध्य कोऊ यक पावत फेरि अहंकरिना उरधीके।।६६।।

घनाक्षरी

बैपरी सिथिल दिल रहै द्रवीभूत अति मति गति थकित छकित वसु याम है।
पक्षी पखहीन जैसे पचौ एक ठौर पर कुरु मसि मिटि अभ्यन्तर अराम है।।
पलक न लागै हाल बाल बुद्धि से अनन्द गयो दुख द्वद कहाँ जात सुबुसाम है।
दिसि और विदिसि देसकाल को न ख्याल जहाँ ब्रह्म मे बिहाल सोई सातिसुखधाम है।।९७।।

सवैया

दारु बिहाय सो आगि भई पुनि धूम तजे निरघूम कहावै।
पावक हीन भई तव भस्म अहै सोइ साति न बुद्धि मे आवै।।
सोई स्वरूप अहै सुचि सन्त को अन्त समय कोउ कोटि मे पावै।
सन्तसिरोमनि स्रीतुलसीसे लहै कितने निज मूरि गँवावैं।।९८।।

घनाक्षरी

रागद्वेष रहित न विधि औ निषेध रहै वहै गुनवृत्ति न औ बिना परवाह जू।
अतिही अचाह अपवर्ग हू कि इच्छा नाहिं लहै को परीक्षा सिन्धु सम अवगाह जू।।
देह बुद्धिनास वास किये परधाम जाय सुख सरसाय हरिहाय हौ निबाह जू।
राह परमारथ को स्वारथ रहित सदा तुलसी गोसाईं लहै और काहि लाह जू।।९९।।

कामिनि समान काठ कनक कुधातु जैसे मान औ प्रतिष्ठा बिष्ठा रिघिसिद्धि धूरि है।
राव रक एक दृष्टि रही न अनेक मन नाहि चलबे क इन्द्रपद पाप मूरि है।।
वाद वकवदित न स्वाद न विषाद हर्ष ज्ञान न अज्ञान ध्यान धारना से दूरि है।
सन्त सरदार भवभार के हरनहार तुलसी समान कोऊ देत फन्द तूरि है।।१००।।

चारि मुक्ति माटी सम डाटी काल मृत्युहू को सन्त परिपाटी यह सदा चलि आयजू।
ईस से अचाह तासु पावै कौन थाह गुन अति अवगाह बानी रहै मुँह बायजू।।
सेस औ महेसन गनेस पार जान जोग चतुराननहूँ की न एकहू पोसायजू।
विष्नु मुख गावें चारिवेदहू न थाह लावें ताते सत पाय परसदा वलि जायजू।।१०१।।

सवैया

ऐंड अनोखी है श्री तुलसी हुलसी हिय म मनबुद्धि परे है।
बानी विषे नहिं आइ सकै तेहि कौन कहै अहकार दरे है।।
विघ्न अनेकन हारि गये अवलोकि जिन्हें कलिकाल जरे है।
दासबना बिगरी सुधरी भवसिन्धु अथाह में थाह करे है।।१०२।।

ज्यों रितु सर्द में गर्द अकासन निर्मल होत बिहाय कै बादर।
सन्त हृदय तिमिहीन प्रपंचते दीन भये दशहू दिसि कादर ।।
ज्यों कलई बिन सीसा सफा अति लोकहू बेद को होत निरादर।
सन्त से ऊँचा नहीं तिहुँ लोक में श्रीमुख जाहि सराहत सादर ।।१०३।।

घनाक्षरी

रोम रोम वेधिगै गोसाईं बानी सर्व अंग समो समो पर रहै सदा तदा कार है।
पहरु रखावै जिमि नेक बिसरावै नाहिं जो न मत माहिं मिलै त्यागै कै बिचार है ।।
प्रीति औ प्रतीति तामें कमो कधी परै नाहिं राम उरवासी सबभांति जानहार है।
कृपा को प्रसाद ताको भाव कछु ऐहैं वेगि पील तजै कनका पपील को अपार है ।।१०४।।

सवैया

आधिये अविकल सारे जगत्त में पूरि लखै अपनी सब कोई।
ऐसो कुरोग लगो अभ्यन्तर ताते गई सब की मति खोई ।।
वुद्धि ते भिन्न भये जन सन्त पुकारत वेद पुरानन गोई।
दासवना है कृपा को प्रसाद मिलै जेहि को भव पार सो होई ।।१०५।।

माँगत हौं कर जोरि यही रघुनाथ सिया श्रीगोसाईं से नीके।
चंचलता सिगरी तजि कै रहौं स्थित सांति समान अमीके ।।
पूतरी काठ की हाथ नहीं कछु प्रेरक हौ तुमहीं सबही के।
दासवना न फुरै उर में अब काव्यकला यही ग्रन्थ सोंठी के ।।१०६।।

बाँचै सुनै जो गोसाईं महत्तु बढ़ै उर सत्तु सन्देह न कोई।
भाव गुरुत्व फुरै उर में पुनि तत्त्व बिचार को पावै गोसाईं ।।
राम सनेह सही उपजै औ रमायन में दृढ़ता अति होई।
दासवना गति मोरि विचारि कहौं काहि परै नहिं आँखिन जोई ।।१०७।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयताप विभंजनो नाम
उभयप्रबोधकरामायणे वनादासकृते प्रथम गुरुखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।।
।। गुरुखण्ड समाप्तम् ।।

द्वितीय–नाम खण्ड प्रारम्भः

घनाक्षरी

बन्दौं रामनाम कामधेनु कामतरु कोटि छोटि मति ताते कहा उपमा सो लाइये।
उतपति पालन प्रलयहेत सारो जग ज्ञान औ विज्ञान भक्ति साति जाते पाइये॥
सारो शब्द कारन ब्रसब्दहू को प्राप्ति करै आदि मध्य अवसान हीन किमि ध्याइये।
बनादास जीवन औ मुक्ति करै जानि जन करम बचन मन ताको गुन गाइये॥१॥

बडो ब्रह्म राम से न काम कामदार सदा वेदन को प्रान सब जाकर पसार है।
साधनसिरोमनि औ सिद्धि सर्व सिद्धिन को विद्धि औ निषेध रागद्वेष हरनहार है॥
बनादास पावन पतित रामनाम अति अगति को गति निराधार को अधार है।
तीरथ बरत तप यज्ञ योग ब्याज सेन गुनातीत गूढ बर्न सारो सरदार है॥२॥

उभय प्रबोधक हरन सब सोधक बिनासन विरोधक अगम गति नाम की।
काम कोह जारन औ मदमोह मारन विवेक विस्तारन न भान सुबू साम की॥
लोभ को निवारन विदारन जगत ज्वर तारन तरन न पोसाय कलि बाम की।
बनादास बासना बिनास हेत मानौ आगि आस भागि भभरि निसेनी परधाम की॥३॥

नाम को अनन्य धन्य सोई तीनि कालहू मे सर्ब वितपन्यन्त अग सकल अराम है।
नाम अनुरागी भूरिभागि जुग चारिहू मे जागी कलकीरति त्रिलोक मे न पाम है॥
बनादास पागी मति राम-जलजात पद आगी को न कामजल पियत न माँगी है।
त्यागी सर्ब भोग को विरागी रिद्धिसिद्धिहू से लागी अति लगन करै का कलि बाम है॥४॥

जीते सर्ब साधन कराल काल आयो कलि जगत बेहाल रह्यो नामबल साल है।
अतिबुद्धिवाल जे करत और साधन को छोडि कर्मजाल रामनाम न बहाल है॥
बडे हीन माल जो न आवै हरिसरन मे मरन जनम सदा फारें कालगाल है।
बनादास बिगरी सुधारें निज दिसि देखि कोसल कृपालु सुने अति ही दयाल है॥५॥

नाम को उपासक करोरिन मे कोऊ एक राम को उपासक अनेक भेष पेखे हैं।
नानावृत्ति धारि काज सारि लाज आवत न कोसलेसजू कृपालु औगुन न देखे हैं॥
नाम को अनन्यगति दूजी न स्वपन माँहि पूजापाठ आदि जल दूसरो न लेखे हैं।
चातक समान टेक किये है प्रमान उर बनादास कर्मकाड काटत बिसेखे हैं॥६॥

सुभ औ असुभ कर्म त्यागि अनुरागि नाम पागि प्रेमपरिपूर वसुयाम रजे हैं।
वासना विनास आस वास औधधाम किये दिये मन गुन में न ऐसो साज सजे हैं॥
रूप में बहाल ख्याल नहीं धनधाम दिसि जाति न जमाति परिपंच अति भजे हैं।
बनादास दाम जोरि खोरिन धरत सीस बीसबिस्वा नित बुरे कामन सों लजे हैं॥७॥

नाम गुन जान्यो है गनेस औ महेस सेस लोमस भुसुंडि हनुमान हिय गहे हैं।
सुक सनकादि आदिकवि नारदादि जाने माने दृढ़ता ते ब्रह्मसुख भोगि रहे हैं॥
जुगजुग जपे साधु तपे भवताप नाहिं महिमा अमित कोऊ पार नाहिं लहे हैं।
सेत भवसागर अचेतहू को मातुपितु बनादास प्रीतिकै जो अनतन बहे हैं॥८॥

सृष्टि को बनावैं विधि रुद्रहू संहार करै सेष महि भार धरै एक बल नाम के।
प्रथम गनेस पूज्य गरल महेस पिये यमनह राम कहि भोगी परधाम के॥
पाहन को सेतु सिन्धु दीनबन्धु नाम जाते गावत पुरान गति अजामील बाम के।
ध्रुव प्रहलाद अहलाद गजगति देखि अर्द्धनाम कहे गोद लहे जिन राम के॥९॥

भवन बिभीषन को जरो नाहिं नाम बल नाम के उचारे घंट अंड पै गिराये हैं।
गनिका विमान चढ़ी सवरी को महामान नामबल सिन्धु को कबीरजू हटाये हैं॥
द्रौपदी की राखी लाज नामही उचार किये पीपा न समुद्र डूबे छापा जिन लाये हैं।
बनादास कहि नाम महिमा को पार जाय छीपी नामदेव वेगि गऊ को जिलाये हैं॥१०॥

पुहुमि दुखारी भारी भारभयो सीस पर जायकै पुकारी सोक विधि सुर सारे जू।
साधु द्विज देव दुखी सुखी कोऊ काल में न ब्याकुल बेहाल सबै नाम ही उचारेजू॥
जबै जबै भीर परी कल्प कल्प चारिजुग सुनिकै कृपालु धरे दस अवतारे जू।
बनादास नाम ही सों सरो सबही को काम ताते राम बसु याम जीवन हमारे जू॥११॥

सवैया

नाम जपे को अहै फलभक्ति सो प्रेमा परा अरु ज्ञान बिज्ञाना।
जाते लहै पुनि सम्यक् बोध भई समदृष्टि सो मानपमाना॥
दासबना मिलै धीर विचार सुराई को पावत सींव सुजाना।
अन्त में सांति लहै जपि नाम को जाते छुटै विधि साधन नाना॥१२॥

घनाक्षरी

लोक परलोक को निबाह करै रामनाम सुबूसाम पल क्षन गुरु पितु मात से।
हितू ना त्रिलोक औ त्रिकाल जुग चारिहू में वदै चारि वेद नाम सम भूलो जात से॥

सकल सगाई त्यागि रहु अनुरागि राम काम तो हिंदू सरो न जहाँ जोरै नात से ।
बनादास चतुरसिरोमनि है सोई जग निसिदिन भजै जो सनेह तजि गात से ॥१३॥

सकल प्रपच त्यागि रहै अनुरागि राम निसिदिन भजन सँभारै स्वास स्वास है ।
विरति विवेक धीर ध्यान औ विज्ञान ज्ञान महासूर होय सब कटै भव पास है ॥
साधन अनेक माँहि जनम प्रयन्त पचै बिना रामनाम कौन काटे काल ग्रास है ।
बनादास बिनहि बिस्वास रामदास भये जौन जग आस गई मानो खोदै घास है ॥१४॥

सवैया

अक यथा नव को निर्बाहत आदि सो अन्त लौं होत न न्यारा ।
तैसेहि राम करै प्रतिपाल निसक भजै मन लाउन हारा ॥
नाम से पूजि है काम सबै बिधि फेरि वहै नहिं सो भवधारा ।
दासबना श्रुतिसत पुकारत है कलि मे जुग आखर सारा ॥१५॥

घनाक्षरी

काम न करत ब्रह्म राम कोऊ नाम बिन दिन वहु बीते भव फिरत लोमान है ।
नाना दुख सहत न लहत किन्दारकहू ब्रह्म रस एक सब ठौर मे समान है ॥
राम दीनबन्धु दयासिन्धु ऐसे नाम वहु पावन पतित दुख दावन बखान है ।
बनादास बूझि परै भजन जो करै नाहि कहा केहि काल जग के कर हेरान है ॥१६॥

अने गने तीनि जने ठहरै कदपि कोऊ भजन के किये सब होत भव पार है ।
कोऊ अर्द्ध कोऊ पूर कोऊ अति भये सूर नाम के बहाने कोऊ छूटे भवधार है ॥
बिना करतूति कधी जग तन जाय सकै राम सम दृष्टि यही आवत विचार है ।
बनादास और ख्याल सारो परित्याग करि जक लाय वसु याम रहै तदाकार है ॥१७॥

कामी ज्यो नवीन नारि क्षुधित सुनाज जैसे लोभी धन प्रीति यहि भाँति भजै नामजू ।
तनहू की नेह त्यागि रहै अनुरागि नित कहाँ दिनराति जाति और सुबुमाम जू ॥
बासना बिहाय आस दासन को यही काम लिखो कोर कागद पै क्यो न मिलै रामजू ।
बनादास धनधाम निमकहराम भूले सूले सहै अमित भले हैं विधि बामजू ॥१८॥

कचन कुधातु काठ सम देखे कामिनि को मान औ बडाई रोग जाको वसु याम है ।
आगि सम इन्द्रलोक विषसम विधिलोक कारागार के समान और देवधाम है ॥
नरक रूप तन मन बाघ देखे वसुयाम रिद्धिसिद्धि साँप परिवार तपाताम है ।
वेद औ पुरान मतवाद वेसवाद सदा वदा बनादास जानी ताहि प्रियनाम है ॥१६॥

चन्द्र चुवै अनल तुहिन स्रवै भासकर सीतल कृसानु कच्छपीठि जामें बार है।
पतिदेव पीयत जै दीपही पतंग जरै गोपद अगस्त्य डूबे ऊबै सेप भार है॥
तिमिरतर निगिलै मिलै नभ वारिघर उरग जो करै खगकेतु को अहार है।
वनादास क्षमा तजै पृथिवी कदापि काल तौहू कर्मभोग नहीं क्योंहू जानहार है॥२०॥

उवै भानु पस्चिम कमल गिरि सृंङ्ग फूलै प्रचलित मेरु ध्रुव धावै कोऊबार है।
लागै नभ वाटिका सृगालहू सो सिंह भागै मीच मरै मेघा से पिपीलि गिरि भार है॥
वनादास कीच मिलै सातहू स्वरग आय तौहून करम भोग क्योंहू जानहार है।
प्रीति औ प्रतीति करि जपत जो रामनाम करम की जर सुठि करे जरक्षार है॥२१॥

करिकै भजन रिद्धिसिद्धि सुखवृद्धि चाहै मानमर्याद मानौ महा मतिहीन है।
रामनाम जपि चारिफलहू कि चाह तजै लजै काल कर्म ताहि कलिहू मलीन है॥
देव को बिघन दबै जबै उर कामना न देखिये विचारि तौ अचारु पदपीन है।
वनादास सास्त्र औ पुरान स्रुति कहि थके जीवन स्वभाव तजै क्षन ही में दीन है॥

रामनाम जपे ते कटत कर्म संचित को क्रियामान लागत न आवत बिचार है।
परारब्ध भोग बिन क्षीन पात पीपर से सुभ औ असुभ बीज भूजै मानौ भार॥
वनादास वदत प्रचार करि बार बार जीवन को मुक्ति होत लागत न बार है।
ऐसे रामनाम से न प्रीति औ प्रतीति जाको ताको भला नहि तीनिकाल होनिहार है॥२३॥

सवैया

कोटि कृसानु से जानुरकार औ कन्नुन लाखन भान समाना।
सोम सहस्र नमानुमकार कोऊ महिमा हरिनाम कि जाना॥
दासवना उर बूझि विचारिकै ताहीते मैं विनदाम बिकाना।
चातक ज्यों न पियै जल आन तेही विधि ते नित हो प्रन ठाना॥२४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
नामखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम प्रथमोऽध्याय: ॥

घनाक्षरी

नाम के प्रताप ते निवाह नेम होत सदा प्रान अन्त लगि एक यही टेक मेरी है।
करम वचन मन नाम ही कि हठ सदा मति कोटि फेर गाँठि सकै को निवेरी है॥
बकै आववाव सब मतवाद जहाँ तक काहू दिसि भूलि न स्वपन माहिं हेरी है।
वनादास उरवासी राम से न चलै चोरी काटि फेंको जीभ जाय जपै और केरी है॥२५॥

कालजाल आगि नाम भागिहै अभागिहू कि दागि डारै तीनिगुन रहै अनुरागि है।
जागि है जगतजस माँगि है न आगि पानी खाँगि है न कछू नित रहै प्रेमपागि है।।
लागि है न कलिकाल जगत बिहाल किये बनादास द्वार द्वार दीन ह्वै न बागि है।
त्याग है न कथरी करम की कदपि काल करम वचन मन आस और त्यागि है।।२६।।

आरत हरन नाम औढर ढरन सुख भरत सरन को परन तीनि काल जू।
जनम मरन नहिं फोकट फरन अभरन को भरन भूलि माया कौन ख्याल जू।।
दारिद दरन देत वाछित बरन होत तारन तरन औ हरत कलि जाल जू।
जग उधरन सारो सकट हरन सब कारन करन बनादास प्रतिपालजू।।२७।।

कालहू को कालबुद्धि बाल को बिसाल बल दल कलिकालहू को करत बिहालजू।
जाहि नाम ख्याल भाल भागि है कमाल ताकी राल से गलत देव बिघन करालजू।।
दूजो न त्रिकाल मे समान आलबाल भक्ति हालन परत जानि महिमा बिसालजू।
बनादास गाल फारै कामक्रोधलोभहू को बडे हीन माल ताहि भजे न चडालजू।।२८।।

नाम सुखरासी सोक ससै बिनासी मुक्तिहू की हेत कासी सदा सभु उरवासी है।
ज्ञान को प्रकासी करै बिषै से उदासी चरन प्रीति देत खासी रीझै राम अबिनासी है।।
रिद्धिसिद्धिदासी आसबासना उमासी एक द्वारही को आसी लहै मुक्तिआमखासी है।
बनादास भासी हिय घासी मोहमानहू को त्रासी गुनतीनि बोध भूलेहू न झासी है।।२९।।

जानि है उपासी सूमसम्पति जमासी हिये सुबूसाम आठौयाम किये जे खवासी है।
कलिजुग की हाँसी कालकठहू कि फासी नित्यबोध को बिलासी कैवल्यहू की रासी है।।
मुक्ति चपला सी चमकि चूरन चौरासी किये भूलेहू न भूलचूक आवै आस पासी है।
उपमा महि मासी बनादास बिपति नासी राम द्वैष को बिनासी नाम पूरो अबिनासी है।।३०।।

कैधौ दीनदाता कैधौ जक्त पितुमाता मन जाको अतिराता ताते दूसरो न नाता है।
करै सर्बज्ञाता कै त्रिदेव को विधाता नाम उपमान सिरात कहि पार कौन जाता है।।
बुद्धि न समाता नहिं बैनहू मे आता विख्याता तिहूँकाल चारिवेद गुन गाता है।
ऊँचो स्वर्ग साता कमाता हरपाता गात बनादास जानै वसुयाम जौन ध्याता है।।३१।।

कोटिक अघगजन दुखभजन मनरजन है अजन हिय नैन को विभजन भर्म जाल जू।
सुमिरत ही भावत हर्षावत उमगावत उरपावत गुन जावत नसावत कलिकाल जू।।
वेदहू बतावत फरमावत पट अष्ट दसहु ध्यावत नहिं ताहूपर ऐसे नरन मालजू।
सतगुरु से बोधत सब सोधत है निरोधत मन बोधत नहिं बिषै बनादास भाग मालजू।।३२।।

भक्ति तिय भूपन सब दूषन को दलनहार पोषन जगत हेत नाम जन को सुखधाम जू।
ज्ञानबोध आकर सुधाकर से कोटिगुना सुना सतबानी अति सबको अभिराम जू।।

कैधों मृगराज क्रुरि साघन को दिमाक दलै ज्ञानबिज्ञान अति दाहिन ले बामजू ।
वनादास आलसी अभागी को अलम्भ सदा मेरे हेत कृपा कोऊ काल मे न खामजू ॥३३॥

जागै जसलोक वेद भागै भै महिमा सुनि घ्यावै मुनि ही में गुनि नितही सुबूसाम है ।
आलस अनख सोक हरप उचार करै लाखन वरष को करम ताहि खाम है ॥
वनादास बूझै मन सूझै न अबूझ लोग सोग औ सन्तापवस ऐसे नर वाम है ।
निमकहराम खोट काम करै बसुयाम लागत न दाम तापै भजन राम है ॥३४॥

तीरथ वरत तप यज्ञ योग पूजापाठ नेम औ अचार करै कोटिन जो दान है ।
यम औ नियम कूपतालहू खनावै बहुबाग फुलवारी द्विज साधु सनमान है ॥
मन्दिर बनावै औ पुरान वेद लावै मन सत्य को निबाहि तिय एक व्रत मान है ।
वनादास दया क्षमा आश्रम वरन घर्म पावन पतित रामनाम से न आन है ॥३५॥

अधम उधारन अतारन को तारन सुजस विस्तारन को नाम के समान है ।
काम कोह जारन औ लोभमोह मारन पखडदम्भ टारन सुनी न आन कान है ॥
वासना विदारन औ आस को संहारन गुमान को निवारन अनेकन प्रमान है ।
ज्ञानभक्ति कारन विसारन जगत जाल वनादास ताप तीनिहू को नकसान है ॥३६॥

नारद गनेस औ महेस सेस सारदादि कोटि कोटि मुख करैं महिमा बखान है ।
चारि स्रुतिसास्त्र पटअष्ट हू पुरान दसकोटिन कलप लगि करै गुनगान है ॥
सुरनरमुनि पार लहै न कदापि काल जैसे नभ अंत नहिं पावै पंखवान है ।
वनादास नामजस कहै कविकोविद क्यों सोई मुख कैसेहू सुमेरुन समान है ॥३७॥

कोटि जप कोटि तप तीरथ वरत कोटि पूजापाठ कोटिन अचार करै दान है ।
कोटि यज्ञ कोटि योगयम औ नियम कोटि ताल वाग कूप धर्म कोटिन विघान है ॥
कोटिहोम कोटिसौच कोटि करै आचमन कोटि विधि तर्प्पन समाधि करै ध्यान है ।
वनादास विरति विज्ञान ज्ञान कोटि भाँति कोटि विधि साधन न नाम के समान है ॥३८॥

छप्पय

तारापति गननाथ ताहि प्रति सारद कोटी ।
सारदहू प्रति सेस कोटि बैठहिं यक गोटी ॥
सेसन प्रति मुख कोटि मुखहु प्रति रसना कोटी ।
बुद्धि बिसद अति बली नेक लावै नहिं खोटी ॥
कोटि कोटि करि पैसरम कोटि कल्प लगि जोवकै ।
रामनाम महिमा तबौ वनादास नहिं कहि सकै ॥३९॥

और कहन को योग नाम को महत्व अपारा।
जिमि खग उड़ै अकास थाह को लावनहारा ॥
निज निज श्रद्धा भक्ति सुद्ध हित करनेवानी।
निज निज मति अनुसार रामजस मुनिन बखानी ॥
सन्तन को अवलम्ब लै बनादास भी कछु कहे।
नहिं गुन ज्ञान मलीनमति राम निबाहे निबंहै ॥४०॥

घनाक्षरी

छीकत जम्हात अलसातहू कहत राम ऐसो कोऊ काम नाहि सुखी वसुयाम जू।
सुबुसाम सुमिरत नाम नित नेम करि नेकहू सँदेह नाहिं लेत सुरधाम जू ॥
प्रीति और प्रतीति युत विरति भजन करै घरै उर कामना न लहै रूप राम जू।
बनादास ज्ञान औ विज्ञानहू को भागी होत जागी कल कीरति है मुक्ति मे मुकाम जू ॥४१॥

रामहू सो प्रिय नाम ताको सब काम भयो बामहू सो दाहिन दयाल नहिं देर है।
हूटै कोटि बिघन कटैगो कर्मजाल भूरि लटैगो न कधी लहै वोघ को सुमेर है ॥
धीर और विवेक वृद्धि साधु सरदार सोई चेतन औ जड गाँठि त्रिगुन को फेर है।
बनादास कुसल सकल कला भाँति अति हिय आँखि हेरि ताहि छोर तन देर है ॥४२॥

रोवै कलि बाम काम सकल बिगारै नाम परी सोच वसुयाम करै हाय हाय जू।
जमहू तजत धाम हहरि हहरि हिय काल के लगाम मुख चलै न उपाय जू ॥
मौतहू चकिलचित जित तित धाई फिरै काके घर जाई समै नाम है सहाय जू।
बनादास दफ्तर नोचत गोपित्रचित्र गाजै साधुजन रहे नाम लव लाय जू ॥४३॥

दुरे काम कोह लोम मान मतसर मोह कपट पखड दम्भ छल भूरि पाप है।
देव को विघन दवै माया मुँह फेरि बैठे नसै आस बासना जो करै नाम जाप है ॥
तृष्ना को तरंग तीव्र नास होय भलीभाँति इन्द्रिन चलायमान दहै तीनि ताप है।
रागद्वेप मेख मारै विधि औ निपेघ जारै बनादास देखो कैसो प्रवल प्रताप है ॥४४॥

हारे धर्म सकल बिकल कलिकाल डर तेऊ आय बसे पास जापक जो नाम जू।
दया छमा तोप धीर सील औ विज्ञान ज्ञान विरति समाधि ध्यान करत मुकाम जू ॥
तीरथ अटन तप जोग जज्ञ रहै कहा पूजापाठ नेम औ अचार किये धाम जू।
बनादास आस्रम बरन धर्म सत्य आदि यम औ नियम दिन काटै वसुयाम जू ॥४५॥

जापक अनन्य अनुरागि सुमिरत नाम पाय कै हवाल कलिकाल हू बिकल भो।
सीस धुनि रोवै औ बिगोवै उर बिललाय हाय हाय खाय मेरी देखो देखा मल भो ॥

हेरत उपाय कहूँ मिलत सहाय नाहिं अति ही ललाय राज उथल पथल भो।
माया मुंह बाय मोहसैन गै पराय बनादास सकुचाय यमधाम खल भल भो ॥४६॥

काल कम्पमान यमदूत को गुमान गयो कलिहू कहत मेरो बैठ तन सल भो।
दम्भ औ परांड सब सेनप सिराय रहे मोह मुंह कूटै केहि लागि मेरो दल भो ॥
काम क्रोध मान लोभ अरक जवास जरे छलहू कपट नाम पावस को जल भो।
बनादास देव को बिघन बिललाय रहे रामदास भये भले जनम सुफल भो ॥४७॥

आपगा अनन्य नाम डरै न त्रिलोकहू को सदहि सहाय जाको सुत दसरत्थ भो।
बासना बिनास आसनास न करत देर लोभ मोह कोह मान ध्वस मनमत्थ भो ॥
बिपन बिकट वली कूदत न देर लागैं बाँको वीर पौनपूत दूत समरत्थ भो।
बनादास मृत्यु काल यम को हवाल कौन कलि विकराल दलवल लत्थपत्थ भो ॥४८॥

जनमि जनमि बहु योनिन विहार किये अबौ न भजत जेहि हेत नरतन भो।
पुत्र नाति परिवार तिय के गुलाम भये बिषय सलिल माँहि मीन जासु मन भो ॥
दान जश साधुसेवा गुरु के न सेये पायँ दीन पै दयाल नाहिं नाहक सो घन भो।
बनादास बिगरी सकल अंग भलीभाँति मानुष सरीर जो न रामजू को जन भो ॥४६॥

रामनाम ही की गति रामनाम ही सों मति रामनाम ही सों रति अति भूरि भाग भो।
करम बचन मन आस औ भरोस नाम ता सम त्रिलोक में न दृढ़ अनुराग भो ॥
जुग जुग जागै जस विषै रस निरस जो नही कछु कामना अचाह पद जाग भो।
बनादास बंचक भगत भये रामजू के तिहूँ लोक माँहि ताहि लील कैसो दाग भो ॥५०॥

ह्वै कै निःकाम जपै राम ऐसो नाम तासु भयो पूरकाम अति मन अभिराम भो।
प्रेम को गुलाम सब सुकृत को धाम कोऊ होते नहिं वाम अन्त लोभ परधाम भो ॥
दास वामन परत परतीति प्रीति ज्ञानहू विज्ञान वोध सम्यक मुकाम भो।
कहा सुवूसाम नहिं दामहू सो काम कछू कृपा रामजू की ब्रह्मवेला वसुयाम भो ॥५१॥

सवैया

प्रतिस्वासहि स्वास उठै हरिनाम रहै वसुयाम सदा लवलाई।
चातक टेक विषेकलै हंस को मीन की प्रीति हिये ठहराई ॥
आतुर ताई पतंग कि लेय मरै तेहि की अति पूरि कमाई।
दासवना सिय वामदिसा रघुनाथ रहैं तबहीं उर छाई ॥५२॥

घनाक्षरी

रामनाम मातुपितु रामनाम महा हितु रामनाम चितहू को चूरि करि डारे हैं।
रामनाम धनधाम रामनाम पूरकाम रामनाम मोहमूल नीके से उखारे हैं ॥

रामनाम सारो सुख रामनाम टारो दुख रामनाम आस त्रास बासना नेवारे हैं।
बनादास ऐसो नाम जानि कै बिसारै नर रामनाम काम क्रोध लोभ मान मारे है ॥५३॥

रामनाम भक्तिहेत रामनाम स्तुतिसेत रामनाम ज्ञानखेत जग उजियारे हैं।
रामनाम बोधखानि रामनाम ब्रह्मदानि रामनाम भवभानि अधम उधारे हैं॥
रामनाम गूढगति रामनाम देत मति रामनाम राखै पति वेदन पुकारे हैं।
रामनाम उभै बोध रामनाम सर्वसोध बनादास रामनाम जीवन हमारे हैं॥५४॥

रामनाम सर्वसिद्धि रामनाम महानिद्धि रामनाम से न विद्धि कोऊ जन जाने है।
रामनाम राखै कानि रामनाम महादानि नाम रीति परै जानि सोई अति माने है॥
रामनाम गुनखानि रामनाम मनमानि बनादास परी जानि ताते भव भाने है।
रामनाम सेवै सन्त जाते जग होत अन्त नाम जपे उमाकत अति हरपाने है॥५५॥

रामनाम सर्ववेद रामनाम हरै खेद रागनाम दहै भेद रामनाम नीक है।
रामनाम मन्त्रमूल रामनाम हरै सूल रामनाम मिटै भूल तिहूँ काल लीक है॥
रामनाम बरबिलास रामनाम मिटै आस रामनाम हरै त्रास ताते सब फीक है।
रामनाम अति प्रकास रामनाम बिपय नास बनादास हृदै भास दिये मन ठीक है॥५६॥

सिव को प्रान जीवन गनेस जू को मान मूल सेप भार हरनहार विधि की निपुनाई है।
प्रान प्रहलाद अहलाद भोग इन्द्रहू को ज्ञान सनकादि आदि सारद बकताई है॥
बनादास रामनाम रक्षक बिभीपनभौन कारन सिन्धु सेत सदा सन्तन सहाई है।
सोम सितलाई भासकर हू को भूरि तेज मारुत सुत बूत नाम पतितन गति दाई है॥५७॥

सवैया

त्रिप्नुहु की अहै पालनसक्ति और कारन रुद्र सहार को नाम है।
मृत्यु को जीति लिये जपि कै सिव पान किये विप जारिनि काम है॥
काग भुसुडिहि काल न व्यापत सेपहु की बकताई को धाम है।
दासबना गति मोंहि न दूसरि ताते भला अजहूँ परिनाम है॥५८॥

घनाक्षरी

योगिन को योग भवरोगिन को मूरि नाम सूरन कि सूरताई दीनन को दानी है।
सत्त जानो सतिन को मति मतिमान को कि पडित कि पंडिताई साधु भावमानी है॥
सक्ति सब सक्तिन की भक्ति हरिभक्तन की नाम ही को जपि मुनि लोग गूढज्ञानी है।
रूप रूपवानन को धन धनवानन को बनादास मोंहि पर धाम की निसानी है॥५९॥

त्याग सब त्यागिन को भाग भूरिभागिन को राग अनुरागिन को नाम से न आन जू ।
बर बरदेसिन को धीर है कलेसिन को अस्तुति बिसेषिन को वेदन को प्रान जू ।।
गुन गुनवानन को धर्म धर्मवानन को धीर धीरवानन को मुक्ति को निसान जू ।
तपिन की तपसक्ति जपिन की जपसक्ति बनादास रामनाम व्यापक जहान जू ।।६०।।

आस निराधारन को दंड अपकारन को जन भवतारन को नाम ही प्रमान है ।
काम कोह जारन को लोभ मोह मारन को बासना बिदारन को एक ही ठेकान है ।।
हिये बोध धारन को आलस सँहारन को विपति पछारन को और कौन आन है ।
देवन उबारन को अधम उधारन को बनादास दूसरो सुनो न कहूँ कान है ।।६१।।

ज्ञानबोध आकर सहाय करै साँकर में सीतल सुधाकर से कोटि गुना नाम भो ।
हाथ पाँव पाँगुरे को आँधरे को आँखि नाम माय बाप भूखे को सुनी है वसुयाम भो ।।
दीनन को कामधेनु खीनन को सुरतरु भव तम तीव्र को तरुन सुठि घाम भो ।
गुन गुनहीन को मलीनन को गंगजल बनादास जनन को मन अभिराम भो ।।६२।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयतापबिभंजनोनाम
उभयप्रबोधकरामायणे नामखण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

सवैया

जाको अधार भयो जुग आखर ताकर काम सदा बनि आयो ।
सींव को चापि सकै तिनकी ततकालहि चक्र सुदर्सन धायो ।।
नेक निगाह भई जिन पै रघुबीर भुजा बल जाहि बसायो ।
गाजत दासबना नित सिंह से कौन सकै तेहि आँखि मिलायो ।।६३।।

जाप परा परिताप हरै सब जीवन मुक्त करै नहिं देरा ।
बैखरी विघ्न बिनास कहै अरु भक्ति को भाजन होय सवेरा ।।
मध्यमा मूल हरै भव को प्रतिकूल भये सोउ होवत चेरा ।
दासबना दुसरी द्विति‌आ दहै चारिउ जाप सो पाप निवेरा ।।६४।।

सेवत भूत भवानी भली विधि जंत्र औ मंत्रन में मन लावै ।
दिक्षा विभूति अनेकन बाँटत भैरव पूजि कै जन्म नसावै ।।
वैदिक तंत्रिक ज्योतिष जानि कै मारन मोहन को कोउ धावै ।
दासबना हत भागि भली विधि राम को नाम सुधा बिसरावै ।।६५।।

माहुर खाय रहे रुचि से दिनराति विषय महँ जन्म गँवावै ।
धाम धरा धन हेत मरै नित कातिक स्वान से मूरुख धावै ।।

दाम औ चाम गुलाम भये फँसि मान बड़ाई में ऊँच कहावै।
दासबना हिय आँखि के आँधर राम को नाम नही लव लावै ॥६६॥

मातपिता कुल को मरजाद तजै विधि वेद कि मूड़ मुड़ावै।
साधु को वेष बनाय लिये तिनके हिय में कछु लाज न आवै ॥
रोमहि रोम रमे परिपंच में तोप नही धन धाम से पावै।
दासबना बिगरे दोउ ओर से नाम सुधा रस जाहि न भावै ॥६७॥

भूलि गई यम कालहु की डर स्वाद शृङ्गार गुलाम भये हैं।
आस करैं नित ही जग की धन जाँचत ही जेहि जन्म गये है ॥
आठहु याम भजे नहि राम सो नाहक साधु को वेष लये हैं।
दासबना गर काटि मरै किन आनहि घालत आप गये हैं ॥६८॥

राम पियार लगै जेहि को तेहि और पियार लगै नहि कोई।
सिंह सियार रहै बन मे यक सन्त असन्त को भेद सो जोई ॥
पाजी को काम करै जोइ जानि कै राजी रहै तेहि से न बनोई।
दासबना कृत भूलि है राम को निन्दित है तिहुँ लोक मे सोई ॥६९॥

घनाक्षरी

अगुन सगुन दोऊ रूपन को बोध करै एक रामनाम नहि दूसरे को काम जू।
अगम अनादि दोऊ अकथ अनूप अति मति न सकति कहि महा सुखधाम जू ॥
जाने जिन पाये कछु गाये जयाजोग बल कहत सुनत सुठि देत अभिराम जू।
सहज सरूप लहि भजे कृतकृत्य भये बनादास साधन सिरान्यो वसुयाम जू ॥७०॥

सवैया

पावक एक अहै गति दारु औ एक प्रत्यक्ष सबै कोउ जाना।
एक अहै घृत क्षीर के भीतर देखत एक सबै मति माना ॥
तेल अहै तिलके गत अन्तर एक करै पकवान सुजाना।
दासबना हिम बोरा जथा जल या विधि है जुग ब्रह्म विधाना ॥७१॥

दारु के भीतर है पुनि पावक पाक बनाय सकै नहि कोई।
दूध से नाहि सरै घृत कारज औ तिल मे तरकारी न होई ॥
ऐसहि जौ लौ नही परत्यक्ष है कैसे सकै दुखदारुन खोई।
दासबना मतवाद अनेकन कान किये नुक्सान है सोई ॥७२॥

घनाक्षरी

जुगल चरन पुनि पंकज वरन जग तारन तरन औ सरन सुखधाम जू।
नखन को भास जनु तारा को प्रकास ध्वज अंकुस कुलिस कंज मन अभिराम जू ॥
जानु जुग पीन काम भाथ छवि छीन कटि केहरि मलीन नाभि स्वधा को मुकामजू।
वनादास त्रिवली त्रिवेनिहू से पापहर आवै उर जाहि के करत निसिकाम जू ॥७३॥

तून पटपीत धर धनुसर उभय कर गर मुक्तमाल बर अति मन भाई है।
जज्ञ उपवीत चित हरत कनक द्युति पटतर लघु द्विज चरन निकाई है॥
कारज ललित कर कंकन केयूर भुज हरिकन्ध कम्बुकंठ महा छवि छाई है।
बनादास सरद मयंक मुखसोभा सुठि मन्द मुसक्यानि अति मेरे मन भाई है ॥७४॥

कोर तुड नासिका दसन द्युति दाड़िम की अधर अरुन जनु अमी को मुकाम भो।
वंक अवलोकनि कमलदृग राते अति तिलक विसाल भाल सोभा सुखधाम भो॥
कुंडल कनक लोल मकर अकारवर धनुष सी भौंह भवहरन को बाम भो।
वनादास काकपक्ष कनक मुकुट सीस काम कोटि निन्दन को मानो रूप राम भो ॥७५॥

सोभा रति कोटिन की अंग अंग वारि डारै वामदिसि राजित हैं रामजू के जानकी।
जग जायमान करि पालत हरत पुनि सुचि रुचि प्रानप्रिय करुनानिधान की॥
राम सची सारदा भवानी कोटि अंस जेहि होय रूप लाभ मूल हरै मोहमान की।
शंकर विरंचि विष्नु चाहत निगाह नेक बनादास ताहि नेवछावरि है प्रान की ॥७६॥

स्याम घन लज्जित तमालहू कि द्युति फीकी मरकत नीलकंज उपमान जोग है।
दामिनि कनक सिय भामिनि से कहे किमि पीत जलजात पेखि भये वस सोग है॥
सोभा के सदन जानु छवि को चिराग वरै दम्पति सरूप सुचि सूरति को भोग है।
वनादास सारद गनेस सेस सकुचात और कवि कहै कौन मानुप निरोग है ॥७७॥

सोभा के समुद्र अंग छवि को तरंग उठै रोम रोम तोपी कोटि विधि निपुनाई है।
सारद ढँढोरि हारी उपमा करोरि बेर मिलै न त्रिलोक माहिं करै का बड़ाई है॥
सम्पति सरूप कहि सेपऊ सहमि जात नहिं गननायहू के बुद्धि में समाई है।
और कवि कोविद की बात को चलाय सकै अति मतिहीन बनादास किमि गाई है ॥७८॥

अचल अखंड आदि मध्य अवसानहीन ब्रह्म रस एक सबठौर परिपूर जू।
सतचितआनँद सघन चारिवेद बदै कोटिन प्रकास ससि पावक औ सूर जू॥
मन बुद्धि चित्त अहंकार परे देखि परै वनादास सदा इन नैनन सों दूर जू।
लाखन मुनीस्वर में एकन को लखि परै जाहि को प्रगट ताहि बरषत नूर जू ॥७९॥

स्वत प्रकास निराकास अतिगूढ गति वेदऊ बदत नहिं जानन के जोग है।
अज उत्कृष्ट जग देखत समिष्ट दिष्ट बनादास यही ज्ञान मानन को भोग है ॥
बिरुज बिलक्षन निरीह आवरन बिन निराकार निरद्वन्द योगन वियोग है।
अकल कूटस्थ अवछिन्न सबही सों भिन्न सुद्ध निरवघ्य नित पाये ते निरोग है ॥८०॥

ऐसो जुग ब्रह्म दानि रामनाम महामनि फनि जगजाल किये सकल बेहाल है।
सूझै न उपाय कलिकाल गाल फारे डारै मनि लिये फनि दुख सहतन माल है॥
कालहू को काल नाम ताहिन कगाल भजै बनादास रहै नित ब्रह्म म बहाल है।
कालगति बिकराल ताते सब साल सहै छांडि गगधार को नहाय जाय ताल है ॥८१॥

वालवुद्धिसाघ न अपर बहूकाल करै भूले इन्द्रजाल जनु सहत कसाल जू।
गाँठि लाल बांधे औ दुकालहू की साल सहै मिले न विसाल गुरु ताते परे जाल जू ॥
भाल भाग ताहि के ललाम नाम जाने जिन कालहू कि त्रास गई ब्रह्म मे बहाल जू।
बनादास लाल कोसलेस को न ख्याल जेहि बडे है न माल दुख सहै बिकराल जू ॥८२॥

अघम उधारन पतित नाम तारन सुजस विस्तारन विवेक को जहाज है।
मायामोह मारन विज्ञान ज्ञान कारन जगत ज्वर जारन बटेर कलि बाज है॥
वासना बिदारन समूह दुख टारन हरत भूरि भारन सुगति सिरताज है।
वनादास विरचि विसेप वेप साधुन को ऐसो नाम भूलै ताहि आवत न लाज है ॥८३॥

जगत गुलाम काम ताहि विधि बाम सदा जो न भजै राम सिय धाम घन फन्द है।
चलै जौ सुराह वाह वाह कहै सबै कोऊ कटत कटत कटि जात दुखद्वन्द है॥
साधु काहे त्यागत भजन को विवेकहीन ताही हेत भये सब भाँति से स्वच्छन्द है।
वनादास तापै निज करन सो पावै काटै कौन समुझावै ताहि अति मतिमन्द है ॥८४॥

पाप जल मीन औ मलीन ज्ञानवुद्धिहू से विद्यावल हीन गाँठि दामहू विहीन जू।
साघन न कीन व्रत तीरथ औ जज्ञदान नेम न अचार गया पिण्डहू न दीन जू॥
वचन प्रवीन नाहि खीन चतुराई अग तनहू छीन रहे विपय अघीन जू।
वनादास ऐसे पै नेवाजे महाराज नाम निज दिसि देखि मोहि साधुन म कीन जू ॥८५॥

पायेन करोरि मुख ताते भागि खोरि मानो हारे टकटोरि कैसे नामगुन गाइये।
सारद की बुद्धि न सहायक गनेस सेस विधि से न पहिचान काके द्वार जाइये॥
वेद न पुरान पढे सास्त्रन मे गति नाहि मतिउ मलीन उर ताही ते भ्रलाइये।
वनादास पेट भरि कौनी विधि भापै जस हहरि हहरि हिय ही मे रहि जाइये ॥८६॥

देखिये विचारि गतिमति पुनि नामी तक जौन कछु प्रेरत सो सुजस सुनाइये।
जुरै निज घर मे करोरि मन मानै सोई औरन को धन मन काहे ललचाइये॥

कपट न चलै उरवासी से कदपि काल बनादास स्वपन जो दूजो देव ध्याइये।
साखि सिव संत जीभ कटत न लागै देर करम वचन मन राम को कहाइये ।।८७।।

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम
उभय प्रबोधक रामायणे नामखण्डे तृतीयोऽध्याय: ।।३।।

घनाक्षरी

नामही सों रामभक्ति रामही सो ज्ञानसक्ति नामही ते बिरति विज्ञान सान्ति पाइये।
नामही सों सर्वबोध चित्तऊ निरोघ होत नामही सों सर्व सुखदुख बिसराइये।।
नाम ते समाधि ध्यान नाम ही ते सनमान नाम ही ते साधुता को सारो अंक लाइये।
नामही सों तनरक्षा नामही सों मिलै भिक्षा बनादास और द्वार भूलहू न जाइये।।८८।।

नाम के प्रताप आगि सीतल न होत देर नाम के प्रताप जलसागर में थाह जू।
नाम के प्रताप करि गरल अमृत होत नाम के प्रताप हरिहाथ से निबाह जू।।
नाम के प्रताप गिरि श्रृंगहू पै कंज फूलें नाम के प्रताप पद मिलत अचाह जू।
नाम के प्रताप करि सत्रु हू मिताई करै नाम के प्रताप बनादास रूप लाह जू।।८९।।

नाम के प्रताप कच्छ पीठहू में बार जामें नाम के प्रताप सुद्ध होत नहिं देर है।
नाम के प्रताप करि गोपद अगस्त्य डूबै नाम के प्रताप पंगु चढ़त सुमेर है।।
नाम के प्रताप आकफल कामभूरुहु को नाम के प्रताप तूल दहै आगि ढेर है।
नाम से प्रताप करि दिन ही में राति होति नाम के प्रताप करि निसिहू सबेर है।।९०।।

नाम के प्रताप करि कामधेनु खरी होति नाम के प्रताप बिष रहित फनीस है।
नाम के प्रताप करि दारिद्र महीस होत नाम के प्रताप करि रंक अवनीस है।।
नाम के प्रताप मीचहू को मूस मारि डारै नाम के प्रताप करि बहैगो नदीस है।
नाम के प्रताप करि गिरिऊ अकास उड़ै बनादास अचरज नाहिं बिस्वा बीस है।।९१।।

सवैया

इन्द्र को बज्र औ काल को दंड औ संकर सूल चलै दिन राती।
मेघ प्रलय नित वृष्टि करै अरु सेष की आगि नितै सरसाती।।
लोकप औ दृगपाल करै ऋषि को यहि सक्ति सर्व बहु भाँति।
दासबना सुमिरै नित नाम जो रक्षक रामन नेक पोसाती।।९२।।

कोप करै चतुरानन कोटि कृसानु औ भानु सर्व रिसिआहीं।
सर्प जहाँ लगि छाँड़ैं सर्व बिष बाघहु सिंह घरै ललचाहीं।।

सृष्टि विरोध करै सिगरी रघुनाथ गहे जेहि की दृढ बाही ।
दासबना सुमिरै नित नाम नही कछु काहु को नेक पोसाही ।।९३।।

नाम भजे क्यहि कौन बनी पुनि नाम तजे सबको बिगरी है ।
नाम जपै उलटे कबि आदि सो ब्रह्म समान प्रमान परी है ।।
नाम प्रभाव बिचारि कै देखिये अर्द्ध कहे ते करी उबरी है ।
दासबना सुमिरै जब नाम तौ वाते न उत्तम आन धरी है ।।९४।।

काम से सुन्दर भोग पुरन्दर और धनेसहु से धनवाना ।
ऊँचे बडे चतुरानन से अरु भानु कृसानु सा तेजनिधाना ।।
सुक्र से पडित धीर अखडित पौनहु ते अधिकी बलवाना ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही पहिचाना ।।९५।।

बुद्धि विनायक औ सबलायक सारद कोटि भई चतुराई ।
भीम से आकर सील स्वधाकर सेषहु से अधिकी बकताई ।।
दानी बडे बलि से नृग से हरिचन्द औ कर्नहु ते अधिकाई ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ।।९६।।

सूरसिरोमनि रावन से पुनि गावन गन्ध्रव ते अति भाई ।
मुनि मे सुक नारद औ सनकादिक वासव से घन विद्या बडाई ।।
जोग मे गोरख दत्त से ज्ञान औ जीवन लोमस ते बढि पाई ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ।।९७।।

हाथी हजारन द्वार पै झूमत घोडेन की न रही समवाई ।
भूप अनेकन जोरि खडे कर सेनप सूर महा कटकाई ।।
धाम धरा धन कौन कहै तरुनी रति से बहु सुन्दरि पाई ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ।।९८।।

सेठ बडे साहूकार बडे सब बस्तु कि बैठि दुकान लगाई ।
उद्यम को परमान नही मनिमानिक द्रव्य अनेक कमाई ।।
साखि बडी सनमान बडो कहि कौन सकै अतिही प्रभुताई ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ।।९९।।

वेदपुरानहु के बक्ता अरु सास्त्रन में कोउ पार न पाई ।
जाति बडी औ महत्त्व बडी जपजज्ञ औ कर्मन की अधिकाई ।।
मन्त्र औ जन्त्र करै बहु तन्त्र औ देव अनेकन पूजत धाई ।
दासबना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ।।१००।।

मूड़ मुड़ाय जटा को रखाय बिभूति लगाय कै बाँह उठाई ।
ठाढ़ रहै जल सैन करै पुनि भाँति अनेकन वेप बनाई ॥
अन्न तजै फरहार करै अरु बाँधि कै पेड़ में पाँव झुलाई ।
दासवना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ॥१०१॥

द्रव्य के हेत फिरै जग धावत द्वार अनेकन पेट देखाई ।
तीरथ बर्त करै तपजोग औ साधन भाँति अनेक कमाई ॥
नेम अचार करै बिधि कोटिन औ महि को परदक्षिन लाई ।
दासवना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ॥१०२॥

तापत आगि औ काँपत सीत में जाइ कै पर्वत खोह समाई ।
जाति जमाति अनेकन जोरत सून्य में आसन बैठि लगाई ॥
पूजा औ पाठ करै बहुभाँति से घंटा घरी दिनराति बजाई ।
दासवना न कछू बनि आय जो राम को नाम नही लव लाई ॥१०३॥

नाम भजै कि भजै भजनानँद और तजै सब साधन भूरी ।
काहे को लोन बरी बरी नावत याही ते बात परै सब पूरी ॥
आँखिउ मूँदि चलै मग जो यहि नेक झुकै नहि पूरि मजूरी ।
प्रीति प्रतीति करै उर में दृढ़ दासबना भव बन्धन तूरी ॥१०४॥

नाम जपेक रहै फल रूप औ है फलरूप सरूप को ज्ञाना ।
ज्ञानहु को फल होय विज्ञान विज्ञान ते भक्ति परा परमाना ॥
जानो परा फल पूरन सांति औ सांति परे नहि है कछु आना ।
दासवना बिरले जन जानि है सन्तसिरोमनि बोधनिधाना ॥१०५॥

बीज ते वृक्ष और वृक्ष ते बीज है औ सिधि साधन नामहि जानै ।
जो मतवाद अनेक परै सुनि ताके नहीं भटको मन मानै ॥
सारदहू मति फेरि सकै नहि नाम विसारद जोह ठानै ।
दासवना रहै नामै समाय सो ज्यों सरि सिन्धु को होत मिलानै ॥१०६॥

घनाक्षरी

नामगति अकथ अथाह औ अनादि अति मति बरनत कोटि सारद की होंची है ।
सेसहू गनेस औ महेस पार पावै नाहि नारद बिरंचि सिन्धु सीपी ज्यों उलीची है ॥
सास्त्र औ पुरान वेद नेति कै निरूपै जाहि कवि कोविदादि बनादास बुद्धि नीची है ।
जुग जुग जागै जस तीनि काल तिहूँ लोक मानो धुति चंद जन कृपा वारि सींची है ॥१०७॥

॥ इतिश्री नामखण्डे चतुर्थोऽध्यायः समाप्तमिति ॥४॥

तृतीय-अयोध्याखण्ड

कवित्त घनाक्षरी

गाइये गनेस बिष्नु बेस औ कलेस हर सेस सारदादि जासु उपमान जोग है।
बुद्धि के निधान दान दीजे रामजस गावो मगल औ मोद देनहार भक्तिभोग है।।
सोभा सील सागर उजागर को जान गति राम जनमन अति करत निरोग है।
बनादास ताते पद वन्दिये अनेक बार आकर बिज्ञान ज्ञान नासै बिघ्न सोग है।।१।।

वन्दौ मेघबरन चरन जलजात जुग रमा के समेत बिष्नु करो उरधाम जू।
अग कोटि काम छवि बाम मागसिन्धु जाहै रतिउ न ब्याज सम सोभा को मुकामजू।।
क्षीर सिन्धु वासी बुद्धिबोध को प्रकासी मोहमूल को विनासी जन करै निसि कामजू।
वनादास दीन पै दयाल प्रतिपाल प्रन वेदउ बदत देत जन अभिराम जू।।२।।

बन्दिये महेस भक्तिभाजन विज्ञानधाम कामरिपु मम हित बारे ते कृपाल है।
प्रथमहि सेये सिव करम बचन मन तन घन धाम नेवछावरि न जाल है।।
आदिमध्य अन्त तात चाहत निगाह नेक औढर ढरन रामदास न दयाल है।
बनादास दिये बख्सीस सो निवाह करो रामपद प्रेम नेम बढे बिधु वाल है।।३।।

बन्दौ सिव भामिनी समस्त लोक स्वामिनी जगत अभिरामनी औ दामिनी से गात है।
सुम्भनिसुम्भ दले खले जो त्रिलोकहू को गनपति गुनधि षडानन की मात है।।
देवन उबार करि तारे दुख दुसह सो बेद औ पुरान गुनगायेन सिरात है।
बनादास रामभक्ति हेत को निहोरो तोहि दीजिये दयाल ह्वै कै मन ललचात है।।४।।

वन्दिये समीरसुत धीरबली बाँको अति साको तीनिकाल मे जगत जोर जाको है।
काको ऋनी राम आको दूसरो न चारिजुग प्रेम परिपाको पदकज रस छाको है।।
बनादास ताको अवलम्ब है वचन क्रम विघन हरत हेत देत हठि हाको है।
महि औ पताल नाको वाको पटतर नाहि लहे जिन लाहु जन्म लिये बसुधा को है।।५।।

वन्दौ श्रीसारद अलायक कि अवलम्ब अम्बसम कृपा न बिलम्ब नेक लाइये।
कीजे मति विमल अमल रामगुन गावो पावो वोधवर्न अर्थ अरज लगाइये।।
विद्या वेद हीनवल पीनन मलीन बुद्धि सुद्धि वसुधामहूँ न नेव विसराइये।
वनादास चाहै रहा अन्तस करन पार ताहू कि उपाय करि कृपा ठहराइये।।६।।

वन्दौं सन्त पाँय धूरि मूरि भवरुज हेत करत सचेत अति काटत अँधेर जू।
बोध बिधि आकर दिवाकर प्रताप जासु सीतल सुधाकर से महिमा सुमेर जू॥
ऊँचेहू ते ऊँचे करैं नीचेहू पै कृपा वेगि स्वारथ रहित परहित को न देर जू।
बनादास बिना साधु करुना न छूटै जग लूटै कलिमाया परै सदा काल फेर जू॥७॥

वन्दौं चारि वेद षट सास्त्र औ पुरान अष्ट दसहु प्रनाम करौं जाते उजियारे हैं।
बन्धन औ छोरै हेत जानत सचेत कोऊ दोऊ अधिकार मुनिनायक पुकारे हैं॥
बनादास हरिजस बदत सकल काल जाते जन सन्त उर अति मोद भारे हैं।
हेत पर निरत सुनी है स्रुति स्वास हरि ताते हरिरूप छाँड़ि कहै किमि न्यारे हैं॥८॥

वन्दौं विधि सुर सिधि लोकपाल दिसिपाल यमकाल सूर ससि चराचर सारे जू।
वन्दिये बसिष्ठमुनि जाते मुनिज्ञान लहौं सुकसनकादि व्यास आदि कवि भारे जू॥
सम्वत नछत्र प्रेत पितर औ नाग नर द्विज उदैत अरु दस अवतारे जू।
रामजन जानि कै अनुग्रह बिसेषि करो बिनवत बनादास पद सिर डारे जू॥९॥

वन्दौं अवधेस मिथिलेस बाम भागीयुत पुरजन जाति जन परम प्रवीन जू।
भरत लषन रिपुदमन चरन बलि सरयू अवध सूरसरि पाप खीन जू॥
मिथिला सरित सरि धरि सिर बार बार राम के उपासक पुरान औ नवीन जू।
बनादास कर जोरि माँगै सबही सो वरवृद्धि राम प्रेम नित रहौ रंग भीन जू।॥१०॥

वन्दौं सिय पाँय जुग जल जल जाय जाहि सकै जो सराहि जग ऐसो कवि कौन है।
ज्ञान बोधदाता तुही जगत की माता मनराता पद जाहि ताहि भयो भव दौन है॥
सुधासान्ति मूरति न सूरति बिसारु मोरि खोरि तजि बनादास दीजे माँगौं जौन है।
दयाक्षमा आकर सहाय करै साकर में अन्तस करन पार पावो नित भौन है॥११॥

वन्दौं श्री गोसाईंजू के चरन चारु चित लाय जल जल जाय धूरि मूरि भवरोग को।
नैनू ते नरम भरम जाल को दलनहार फल अधिकार चारि सोखै सर्व सोग को॥
बनादास नाम लिये ज्ञान को प्रकास हिये अतिही सहायक भगति भूरि भोग को।
रामनाम प्रीति परतीति सरसात सदा तीरथ बरत तप खंडै मख जोग को॥१२॥

वन्दौं सतगुरु पाँय पुनि पुनि रघुराय बार बार सीस नाय धूरि धूरि नैन जू।
कृपा करुना के ऐन हैन पट तर कोऊ तिहूँ पुर माहि सबै चाहे निज चैन जू॥
बहुरि अखंड अज अचल अरूप ब्रह्म करत प्रनाम जो अगमवृद्धि वैन जू।
बनादास निगम पुकारै नेति नेति जाहि नातो कछु मोह ते परत लखि सैन जू॥१३॥

वन्दौं रामनाम महादानि अनुमानि परै अगुन सगुन दोउ रूप हेत जानिये।
सारो गुन खानि सब औगुन कि हानि तिहूँ गुनन को भानि ताहि सम काहि मानिये॥

दूजो न पियत पानि स्वातिबुन्द ही की कानि जाकी परी ऐसी बानि एक प्रन ठानिये ।
बनादास करम बचन मन नाम गति धन्य वाकी भाग्य ऐसो काहि उर आनिये ।।१४।।

भूत औ भविष्य बर्तमान मे जहाँ लौं जग चौरासी लक्ष चराचर ब्रह्म सारे है ।
आदिमध्य अवसान चारि जुग मे न दूजा अन्त माँहि चहूँ वेद ऐसन पुकारे हैं ।।
देखै ब्रह्मवादी एकब्रह्म करि तिहुँ काल जाको जैसो भाव किये तैसो निरधारे है ।
बनादास दृष्टि भेद खेद के हरै या राम कामतरु नाम मति कहै बार बारे है ।।१५।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयतापविभजनोनाम
उभय प्रबोधक रामायणे अयोध्याखण्डे प्रथमोऽध्याय ।।१।।

अगुन सगुन जाके न विवाके विधि निधि गई हाथ से परम साधु माने हैं ।
चित की खभार भवभारन टरत नेक भयो न विवेक ताते ससय मे साने हैं ।।
वडे पक्षपाती खडे एकएक भलीभाँति एकएक प्रतिपादि कैसन अयाने है ।
बनादास कारन औ कारज बिचारै नाहि सदा वस्तु एक कोऊ सत पहिचाने है ।।१६।।

सवैया

निरगुन सरगुन ब्रह्मस्वरूप अगाध अनूप करै को बखाना ।
जाहि जनावत सो जन पावत आवत कोटि उपाय न ध्याना ।।
नाम अधीन उभय तिहुँ काल मे पूरन प्रेम हृदय ठहराना ।
दासबना नहि लागत देर सबेर हि तत्त्व परै पहिचाना ।।१७।।

घनाक्षरी

हीन सब अग से मलीन ज्ञानबुद्धि वेष रेष पापपीन मे न कहत बनायजू ।
कोसलेस कृपाकोर निज ओर करै कछु ताको अचरज नाहि सदा चलि आयजू ।।
पावन पतित नाम अधम उधारन है वारन विदित गति अगनित पायजू ।
बनादास करम वचन मन बुद्धि करि दूजो न सहाय सुत दसरथ रायजू ।।१८।।

वसौ अवघधाम नाम लै लै पेट पालौं निति मिति न अनीति की विदित गति मोरि है ।
बिरचि सुबेष साधु सारदूल को सुआँग ज्ञान औ बिरागहीन भगति न तोरि है ।।
पच मे प्रमानन निपटि मनमानी भये बनादास तापं प्रभु मानत न खोरि है ।
समुझि कृपालु कृत चित्त न परत चैन मैं न गुन गाय सकौं मुखन करोरि है ।।१९।।

प्रथम करम हरि हेत करि नानाभाँति ताहि पुनि त्यागि कै उपासना मुकाम है ।
नाम लव लावै मन बुद्धि करि ध्यावै अनुराग सरसावै हिय आवै रूप राम है ।।

तत्वन को सोध मन बोध कहूँ आतमा को लाभ भये होत ज्ञान धान है।
वनादास अन्तस करन परे सरे काज नासे मनोराज नहीं कोऊ सूध वाम है ॥२०॥

करम वचन मन सत्य लिखौं कागज पै रामनाम छोड़ि मोहि दूसरी न गति है।
धूरि के समान सब साधन है मेरे मत स्वातिबुन्द नाम जिमि चातक की रति है॥
जानै उरवासी राम करै दुहुँ कैसो काम लागत अनैसो सबै ऐसी दिये मति है।
वनादास आज के उपास कहँ सत मोहि तोहि परी आये राखि आये साधुपति है ॥२१॥

मैं हूँ बालबुद्धि जानि कान न करत कछु प्रौढ़ जन जानि है विचार भाव ही को जू।
निन्दत सकल जग बन्दत सो जानि परै जो पै रघुनाथ उर परत न फीको जू॥
व्याह पूतनाति कोन नातो नात नाथ ही के ताते हरषात गात दिये मन ठीक जू।
वनादास बल औ विवेक बुद्धि रावरो है वचन करम मन साचो भक्ति लीक जू ॥२२॥

जल हिम ओरा एकनेकन संदेह यामें जनहित अगुन सगुन सदा होत है।
बीज ते विटप पुनि बिटप ते बीज जैसे याही विधि दोऊ रूप सदा ओत पोत है॥
वेद में प्रमान औ जहान में भ जानै कौन ब्याह भये तिय पति की भई गोत है।
वनादास पीव बिछुरे से जीवनाम धर्यो मिलत न देर लहै प्रीति जौन सोत है ॥२३॥

गंगधार मिलते गंगोदक मिटत नाम परै खेत सम्भर सो सम्भर न देर है।
सिंधु सरि गई नाम रूपऊ विनास होत पाहन की जाति मेर सेर औ सुमेर है॥
ब्रह्म जिमि तूल सूत भयें ते पुरुष नाम प्रकृति संजोग जग बसन को ढेर है।
बनादास मथि छाछ सबै कोऊ छाँडि देत सुद्ध है सरपि पुनि छोनव करे रहै ॥२४॥

ईस दसपाँचन पुरानसास्त्र स्रुति कहै वहै परवाह में अनेक लोग भले हैं।
त्यागि विस्तार जो सिमिटि जात ज्ञानदृष्टि सोई लहै सांति अहं आगि में न जले हैं॥
ज्यों ज्यों बुद्धि बढ़त कढ़त उर बोध त्यों त्यो टूटत न जगत अमित सोक सले हैं।
बनादास जब मुँह कौर जल आय गयो तदपि न फिरै चले जात चोपि हले हैं ॥२५॥

छप्पय

भरद्वाज किये प्रस्न पाय मुनि याज्ञवल्क्य प्रति।
कौन राम सो अहै जाहि सिव जपत एकगति॥
दसरथ सुत सो कहै दहै ताको संदेहा।
रघुपति पद जल जातभयो अति ही न बने हा॥
रामब्रह्म को भेदगत सो प्रसंग सादर कहत।
बनादास जेहि हेतु ते सहज स्वरूपहि जिव लहत ॥२६॥

पारबती किये प्रस्न सभु सो जेहि हित लागी।
पाछिल मोह बिचारि राम पद अति अनुरागी॥
ब्रह्मबुद्धि नहिं भई प्रभुहि नर नृप करि माना।
पुनि सकर उपदेस नेकहू किये न काना॥
सीता रूप बनाय कै जाय परीक्षा को लई।
कह बनादास पति से विमुख बहुरि खाक जरि बरि भई॥२७॥

पायो फल परिपाक प्रीति बाढी तेहि कारन।
छाया पाछिल मोह सभु सो कीन नेवारन॥
ब्रह्म सच्चिदानन्द निगम जेहि नेति निरूपा।
व्यापक बिरुज अखड अचल अज अलख अनूपा॥
दसरथ सुत मम स्वामि सोइ कहे ईस अति हित सहित।
कह बनादास नर देह धरि भक्त हेत किये बहु चरित॥२८॥

गयो गरुड जेहि हेत बसै जहँ काक भुसुडी।
ज्ञानीगुन आगार भक्ति पथ परम अखडी॥
तिनभाषी निज मोह ब्रह्म अवतार सुना जग।
सो प्रभाव कछु नाहिं बुद्धि अज्ञान गही मग॥
नास किये सदेह तिन कही कथा रघुबस मनि।
कह बनादास सपनेहुँ विषे रामब्रह्म दुइ कहेउ जनि॥२९॥

रामब्रह्म अवतार कहे विधि नारद पाही।
सौनक प्रति कहे सूत ब्रह्म कोसल पति आही॥
नृपति परीक्षित सभामध्य सुक्देव सुनायो।
महापुरुष परब्रह्म इष्ट निज राम बतायो॥
चहुँ श्रुति चहुँ जुग कालतिहुँ रामब्रह्म सब मुनि कहे।
कह बनादास प्रभु प्रेरना निज अनुभव सोई लहे॥३०॥

रामब्रह्म दुइ कहै ताहि के मुख मसि लागै।
नहिं छूटै ससार जगत बहु जोगिन बागै॥
अज्ञ अकोविद अधम सत सग जाहि न लागा।
राम ब्रह्म मे भेद करहिं ते लोग अभागा॥
कपटी पाखडी पतित पापी मति कुठित अतिहि।
कह बनादास कृत बुद्धि नर सपनेउ नहिं पावै गतिहि॥३१॥

जो केवल नृप कहै गिरै रसना तेहि चाही।
लहिहै तन जातना सरैगी तब मुख माही॥

सम्भापन नहिं करै होय कोउ अतिहि महामुनि।
मुख देखे ते पाप ताहि त्यागिये हृदय गुनि॥
घरे ते सुठि मनु जाद तन ओढ़ि लिये नर खाल है।
कह बनादास नरकहु न थल हरि विमुखी बाचाल है॥३२॥

अगुन सगुन से प्रथक राम जो कोउ अस गावैं।
ताकी मति सामानि तत्त्व को थाह न पावै॥
अगुन सगुन दुइ रूप कहत स्रुतिसास्त्र पुराना।
चहुँ जुग तीनिउ काल संत मुनि करत प्रमाना॥
तिसरा आयो कहाँ ते कल्पित बात बिचारिये।
कह बनादास संगति तजो वचन नहीं उर धारिये॥३३॥

ब्रह्म पृथक कोउ और ताहि ते हरि अवतारा।
जो कोउ ऐसा कहै चही उर कौन विचारा॥
ईस्वर नहिं दस पाँच एकई वेद बतावै।
कारज कारन पाय अगुन ते सगुन कहावै॥
जल ओरा हिम आननहिं यामें न्यूनाधिक कहा।
कह बनादास बसि भक्ति के ब्रह्म भूप सुत ह्वै रहा॥३४॥

रामायन सतकोटि ब्रह्म करि सब कोउ भाखा।
बाल्मीकि हनुमान नेक संसय नहिं राखा॥
कलि में हित कल्यान गोसाईं विरचे सेता।
रामब्रह्म सब कहे महामुनि ऊर धरेता॥
तामें जो संका करै तेहि मुख मसि लागै सही।
आगम निगम पुरान कह मही अनोखी नहिं कही॥३५॥

घनाक्षरी

हिम ऋतु अगहन मास सित पंचमी है रामजू को ब्याह दिन जगत विदित है।
सम्वत सहस्र नवसत को प्रमान जानो तापै एकतिस पुनि बरष लिखित है॥
बनादास रघुनाथ चरित प्रकास किये बुद्धि तौ मलीन पुनि लागो अति चित है।
उभय प्रबोधक रामायन है नाम जाको सात खंड सात छंद सारो जग हित है॥३६॥

प्रथमहिं गुरुखंड दूजे नामखंड भयो तीजे औघखंड अति मोद को निधान भो।
चौथे है विपिन खंड विविध चरित किये रावन को खंड देव विपति विहान भो॥
पंचम विहार खंड उभय लंक गौन राम लाखन कि रुचि पाली जानत सुजान भो।
षष्ठम है ज्ञानखंड भवखंड खंड जामें सतयें में सान्ति खंड बनादास कान भो॥३७॥

सवैया

छप्पय घनाक्षरी और सवैया है कुंडलिया अति ही सुखदाई।
दण्डक झूलना औ पुनि रेखता जामे रहै मन वेगि लोभाई ॥
सान्ति निसानी है सातहू छन्द तेही करिकै भये सात सोहाई।
काव्य को ग्रंथ विलोके न सप्नेहु दोप बनाप्रभु की प्रभुताई ॥३८॥

छप्पय

नाम भवहरन कुज अवधपुर मघ्य सोहाये।
तेहि आसन आसीन चरित रघुपति को गाये ॥
प्रभु लीला अतिविसद धेनु सुर सुरतरु अधिका।
काम क्रोध मद लोभ मोह अघ खग गन बधिका ॥
लोकहु माँहि प्रसिद्ध है स्तुतिपुरान सब कोउ कहै।
कह वनादास बलवुद्धि लघु राम निबाहे निरबहै ॥३९॥

रामायन सतकोटि मुनिन बहुबिधिहु बखाना।
महिमा कोटि समुद्र पार कोउ लहत न जाना ॥
निज निज मति अनुहारि भावभक्ती के गाये।
वचन वुद्धि मन सुद्ध हेत सरधा अधिकाये ॥
जिमि पिपीलिका सिंघु को करत मनोरथ पार हित।
कह वनादास तिमि मोरि गति लागो भाँति अनेक चित ॥४०॥

नहिं विद्या वलवुद्धि पढे नहिं वेद पुराना।
किमि जानो इतिहास चरित्त प्रभु कोटि विधाना ॥
बाँधे प्रथमहिं सेत महीपति जनु सरि माही।
तेई महामुनि मोहिं पार करिहैं गहि वाही ॥
रामनाम महिमा सुमिरि प्रभु सुसील सरदार है।
कह वनादास नहिं मन हटत ताते करिहै पार है ॥४१॥

उभय ब्रह्म को रूप अगम सतसिंधु समाना।
तासु निरूपन करव कठिन सब कोऊ जाना ॥
सील धाम श्रीराम जानि जन करहिं सहाई।
सगुन रूप हित कथन लेहिं गहि बाँह उठाई ॥
अगुन अमित उतकृष्ट है कहव कठिन समुझव कठिन।
कह बनादास नहिं आनि गति पार करिहि को राम बिन ॥४२॥

वचन करम मन बुद्धि मोहि गति सपनन दूजो।
नामहि के अवलम्ब जवनि कछु आसा पूजी ॥
करिहैं अजहूँ कृपा सीलनिधि राम उदारा।
जासु साहिबी सकुचि कहत स्रुति सेसहि हारा ॥
चारिउ जुग तिहुँ काल में मुनिन विदित गुन गाथ है।
कह बनादास करिहैं कृपा सुठि सुसील रघुनाथ है ॥४३॥

सवैया

देत विभीषन बैरी को बन्धु कृपालु कृपा करि कै अपनाई।
लंक को राज दिये सकुचाइ कै गावत वेद पुरान बड़ाई ॥
बाँदर भालु सखा जिनकी न निवाहत हैं अति सील सगाई।
दीन दुखी न दुनी मे सुकंठ से दासबना सो कपीस बनाई ॥४४॥

मान दिये सबरी गृह जाइके सिद्धि मुनीस अनेक बिहाई।
प्रेम अधीन भये तेहि के फल खात सराहि अनेक मिठाई ॥
पाँवर गीध की कीन कृपा निज रूप बनायकै धाम पठाई।
व्याध निषाद बनाये सखा अस दासबना प्रभु की प्रभुताई ॥४५॥

कोल किरात घने बन के तिन के संग सील सनेह बड़ाई।
संग में नाना करैं व्यवहार किये समता गति जानि न जाई ॥
चक्रवती को सरूप बिसारिकै ईस्वरता तेहि काल बिहाई।
ऐसो स्वभाव कृपानिधि को सुनि है धृग प्रीति प्रतीति न आई ॥४६॥

औध निवासी अधीन रहे पन बालहि ते तजिकै प्रभुताई।
खेलत खात सखा संग में रुचि पालतु हैं सबकी सकुचाई ॥
लेत हैं दाँव औ देत भली विधि राखतु हैं उर चेत सदाई।
दासबना जेहि में लरिके कोउ जानि न पावहि की नरजाई ॥४७॥

जाइ मुनीस की जज्ञ रखाइकै भाँति अनेक किये सेवकाई।
भय अरु प्रीति लिये दोउ भाय पलोटत पायँ सदा मनलाई ॥
ताड़का मारि सुबाहु बिदारि हते सब राक्षस की कटकाई।
दासबना तेहि की सुधि नाहि नितै मुनि की डर है उर छाई ॥४८॥

दुःखमयी घरनी मुनि की तिन तत्क्षन दिव्य सरूप हि पाई।
दारुन साप ते तारि अहल्यहि चरन छुये की रही पछिताई ॥
सोई स्वभाव भरो उर में तेहि ते मन मोर नही डर खाई।
दासबना बिरदावलि है केतने बलहीन को पार लगाई ॥४९॥

वेडो स्वभाव परो मन को नहिं मानतु है कितनो समझाई।
मन्त्र न जानत बीछिहु को अरु साँपहि के मुख मे कर नाई ॥
जानि न पाइत कासे निसक किधौं भ्रुव वक कि कोर सहाई।
दासबना तजि हैं नहि मोहिं सदै वलहीन को राम रमाई ॥५०॥

ऐस्यो पै नाम प्रभावन जानि है,ताके हिये को मसाल जरावै।
दीरघ ह्रस्व को भेद न जानत अक्षर पै भरि मात्रा लगावै ॥
पख सो हीन उडात अकास मे दास वना सो दसा लखि पावै।
नाम प्रताप चहै सो करै नहिं ताते हिये कछु ताजुब आवै ॥५१॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रयतापविभजनो नाम
उभयप्रवोधक रामायणे अयोध्याखण्डे द्वितीयोऽध्याय ॥२॥

घनाक्षरी

रामजस भवआगि भागिहै अभागिहू कि सात खड सुठि परधाम की निसेनी है।
कालिका कराल साधुसुर प्रतिपाल हेत सुम्भ ताप पापहू कि हरन त्रिवेनी है ॥
भाट भूरि तिहुँ पुर सुजस प्रचारन को भक्ति औ विराग ज्ञानहू की सुख देनी है।
वनादास नाम की अनन्यता अनेक लहै जाके उर वसै आगिपानिहू न लेनी है ॥५२॥

आकर विवेक वोघ साँकर करम जाल मोह को दिवाकर सुजस रघुनाथ भो।
सुरतरु अनुराग आलवाल ज्ञानहू को भाल के कुअक हरतालयुत पाथ भो ॥
पढै लिखै धारै उर चलै को विचार करै रामहू सहाय गुरु कौनन सनाथ भो।
हाथ पाँव पाँगुरे को आँधरे को आँखि सदा बनादास हेत सव काल देत साथ भो ॥५३॥

दूपनदलन गुनभूपन भो रामजस पोपनप्रकास उर करत न देर है।
क्षमा को पुहुमि धीरहेत को सुमेर सदासूरता को सेर पाप हरत सबेर है ॥
साँति की सहायक अलायक कि अवलम्ब मायामोह कलिकाल काटत अँधेर है।
वनादास बिरति विज्ञानहू को कामधेनु सील को समुद्र तोप कारन कुबेर है ॥५४॥

पर उपकार औ बिचारहेत कामतरु ज्ञान औ भगतिहू कि आकर सदाई है।
बधु परमारथ को स्वारथ कि मातुपितु जनम अकारथ कि सदहिं सहाई है ॥
वनादास दम्भ औ पखडहू को कालरूप कलिकाल खलन के मुख मसि लाई है।
छल औ कपट अहि भरनी समान।सदा वरनि को सकै लघु बदन वडाई है ॥५५॥

कामक्रोध लोभमोह मारन को असि धार वासना वटेर हेत रामजस वाज भो।
आसघास को कृसानु भानु भवयामिनी को कलिकाल विघन विटप हेत गाज भो ॥

चारिफल लिये दानि महा अनुमानि परै सुखखानि बसुयाम साधु के समाज भो।
तृष्ना के तरंग हेत निरवात दिनरात बनादास मेरे हेत महा महराज भो ॥५६॥

रागद्वेष मूषक को मारजार के समान बिधि औ निषेध करि महा मृगराज भो।
आलस अनख सोक संसय अपार धार साधु हेत सर्दाहि बिवेक को जहाज भो॥
दीनता दुकाल हेत समय सुकाल नित कायर औ कूर भक्त बंचक को लाज भो।
बनादास दुर्जन दनुज साधु निन्दक जे अति अबिचारिन को सोक को समाज भो ॥५७॥

रामदास दाहिन दयाल दीन लोगन पै रोग दोष दारिद को करत अकाज भो।
क्षमा दया सत्य सम दम मनसंयम को प्रजा के समान सब काल में सुराज भो॥
ज्ञानिन को मोद औ विज्ञानिन को सुखसेज बिरति के कारन बिचार सिरताज भो।
निन्दक को मुखमसि बन्दक सुकृत असि बनादास मेरे हेत राम कैसो राज भो ॥५८॥

सवैया

याचकता को जलावनि आगि किधौ मम भागि विचार परै जू।
संग्रह कारन धार कुठार औ कादरता असि बाढ़ि धरै जू॥
जाति जमाति हि बोरनि सिन्धु सी बन्धु असंगहि पार करै जू।
दासबना धनधाम धरातल स्वार्दसिगार पै गाज परै जू ॥५९॥

रामकथा मति भाषी यथा सब पार तथापि नहीं कोउ जाई।
कोटिन सिन्धु कहे उपमा लघु कैसे पिपील सकै समुहाई॥
नाम महत्त्व विचारि कछू गुरु साधु सदा निरहेत सहाई।
दासबना रघुबीर स्वभाव सुने मन ताहि ते नाहि डेराई ॥६०॥

वालक ज्यों बलहीन गिरै जल मातुपिता तेहि धाइ उठावै।
सो अटपट्ट चलै नितही वोहू झटपट्टहि संगहि धावै॥
ताके नही अपमान औ मान तेही करकै सुख काल गँवावै।
दास बना यों स्वभाव पर्‌यो निसिवासर सोइ सनबन्ध रखावै ॥६१॥

घनाक्षरी

साधुता सकल अंग तरु हेत जलधार मोहमूल खनै को कुदारि नित नई है।
बिरति बिज्ञान ज्ञान आगि हेत दारु भूरि संसयसरि सबल को तरनी सी भई है॥
पक्षपात पावक को पाथधार बसुयाम रामगुनगाथ को नवीन बीज बई है।
वाद वकवाद अभिमान बेलि को तुपार बनादास सुगति कि जरि पासि दई है ॥६२॥

हँसी मसखरी के हलाल हेत छूरीधार नानामत वाद खग गर काटि दई है।
सूधे साधु लोगन को मातुपितु से सहाय खल खोट खर हेत मानो भारमई है॥

अति से अचेतन को गुरु से सचेत करै रामपथ पथिक को सम्मल सी भई है।
बनादास विपति विटप हेत पाहन सी निजरूप बोध हेत मानो स्रुति जई है ॥६३॥

सोकसिंधु सोखन को कुम्भज सी रामकथा साधुमडली म चन्द्रमडल सी भई है।
आनदसरोज भूरि भासकर किरन सी त्रिगुन की गाँठि छोरै मानो डीठि नई है॥
आलस गलानि हानि तूल को कराल पौन इन्द्री दुख दलन को महामारी मई है।
बनादास मनरोग मेटन सजीवनि सी कलह कुचाल भेष साँपिनि सी लई है ॥६४॥

नैनदोष अजन विभजन जगत जाल पापिन के मज्जन को गग जलधार भो।
दोषदुखदूषन निसाचर से गजन को लालच सी लकहि प्रभजन कुमार भो॥
सत औ असत दलभजन को महारुद्र सारो भार सजन को सेष अवतार भो।
बनादास साधु जन रजन को सुखमूल मेरे हेत रामजू के पजन उबार भो ॥६५॥

कैधौ अज्ञानकाल कैधौं भाल भाग मेरे कैधौं जक्तजाल महिप दलै हेत सक्ति है।
कैधौं रोगससय की महाभूरि देखि परै कैधौं तीनिकाल आलवाल रामभक्ति है॥
मोहनिसि सोवत को पहरु प्रमान कैधौ कैधौ अति तनहू ते करती विरक्ति है।
कैधौं चारि अतस करन कि मरन मीच बनादास कैधौ सारे सन्त अनुरक्ति है ॥६६॥

रामभक्त जीवनि कै ज्ञानिन को मोदमूल कैधौ व्यग्र चित्तन को धाम बिसराम है।
कैधौ सब जगत की हरत सकल सूल कैधौ खल प्रतिकूल साधु को अराम है॥
कैधौ है बिरागिन को राग की हरनहार कैधौं मम रक्षा को करत बसुयाम है।
पायेन करोरि मुख महिमा बखानो किमि बनादास रामकथा आनन्द को धाम है ॥६७॥

जो तौ मन बचन करम ह्वैहौं रामजन सिवजी के चरन म वारे ही बिकान जू।
जब लगि रहै तन तब लगि नामै घन भुलेहू स्वपन मे देखौ आस आन जू॥
कोऊ अंग करि रघुनाथ सिय जानै निज तौ तौ ग्रथ सतन म परि है प्रमान जू।
बनादास प्रीति औ प्रतीति करि धारै उर ताकी कछु भव राति होइगी बिहान जू ॥६८॥

राम खोट्यो जन को वचन प्रतिपाल करैं बालबुद्धि को बिसेषि मन न डरतु है।
स्वामी को स्वभाव सील सभिमाई देखि करि करनी न देखे निज मोतु को भरतु है॥
बनादास लोक परलोकहू कि सोच नाहि रहत निसंक नाहि कालहु डरतु है।
जुग जुग जागै जस जन को न खाँगै कछु आलसी अभागी कूर कायर तरतु है ॥६९॥

मोको अभिमान सदा लेहौ ललचैहौ जाहि पावत हौ ताते ढीठ वचन कहतु हौं।
भव के दरेर को दलक उर आवै नाहि ताते भूलि आस औ न वासना वहतु हौं॥
तीनि काल तीनि लोक मे न दूजो देखि परै रघुनाथ जानकी को चरन गहतु हौं।
भीतर न होती जगह आवत भरोस किमि बसुयाम राम कै निबाहे निबहतु हौं ॥७०॥

कोटि कामधेनु कामतरु गुना रामनाम सुना साधु लोगन से ग्रंथ में प्रमान है।
अनुमानहू में आवै ऊँची दृष्टिवालेन के ताहि करि मन विन दामही बिकान है ॥
यम न गयन्द प्रहलाद से प्रमान केते ताते अहलाद उर रामनाम प्रान है।
वनादास सील रघुनाथ को न ढील परै येती उर लालसा न दिनराति आन है ॥७१॥

सन्तगुरु उपदेस रामनाम ते न आन स्तुतिउ पुरान सास्त्र करत वखान है।
सोई रामनाम आय पर्यो भोड़ी बानिन में नाम नाते कौन ऐसो करै जो न कान है ॥
ऐस्यो पै न मेरो वैन आनै रघुनाथ उर साधुजन मानै नाहिं मेरो कृत जान है।
मेरे मन भुलेहू न किया निरमान मेरो प्रेरक जो प्रेरत सो करत वखान है ॥७२॥

दूपन हमारो गुन भूपन है रामजू को दूपन करोरि गुनाकारनी बिचारे हैं।
नारद गनेस सेस सारद न पार जाहि सोई रघुनाथ सन्तजन उर धारे हैं॥
तबौ कछु सोच नाहिं भाल भाग पोच परी रामजस भापत न माने हिय हारे हैं।
वनादास अफल न ह्वै है श्रम केहू भाँति अबै महा मोद उर उठत हमारे हैं ॥७५॥

देत ततकाल फल पीछे कि चलावे कौन जो न राम गुन गावै को मुखभेक भो।
श्रवनन सुनै तरु खोढ़र समान स्तुति होत न रोमांच तन काँट सो अनेक भो॥
नैन सो वराट सुनि चलै न प्रवाह धार कंठन निरोध मानौ जनम अलेख भो।
बनादास देन के कुठार जोग साँचिहू सो द्रवै जो न हृदय मुख नाहिं देख वेक भो ॥७४॥

सवैया

सुनि कै जस राम न नैन वहे जल रोम खड़े नहिं भे सब अंगा।
कंठ से वाक न वन्द भई मन गहवर नाहिं भयो सरवंगा॥
जौ न द्रवौ हृदया तेहि काल नही उपजो उर प्रीति अभंगा।
दासवना तन सो केहि काम नहान न जो अनुराग कि गंगा ॥७५॥

ख्याल गयो न दिसा विदिसा नहिं मौन भयो मन मूढ़ गँवाई।
भाव न भूलि गई तन की अनुराग कहा कवनौ विधि पाई॥
अंगन मे सिथिलाई नहीं जनु प्रीति कि रीत्ति में दाग लगाई।
दासवना सुख जान सोई जन वैन औ बुद्धि नही मन आई ॥७६॥

तौलौ न सन्त सराहत भक्ति दसा अस जो लगि नाहिं न पाई।
आठहु याम रहै रँग भौन मनौ उनमत्त लखा किमि जाई॥
साधन कोटि करै विन धाय कै कर्म अनेकन भाँति कमाई।
दासवना जप जोग विराग करै मख धाम अनेकन धाई ॥७७॥

पूजा औ पाठ अचार विचार औ संयम नेम अनेक बढाई।
सम औ दम दान करै तप बर्त को साधन वेद जहाँ लगि गाई॥
है सब को फल राम सनेह कहूँ कोउ कोटिन मे यक पाई।
दासवना उपजो अनुराग फलो सब साधन को तरु आई॥७८॥

है अनुराग दसा अति गूढ नही तेहि की कोउ हद्द बताई।
नृत्यत गान करै कतहूँ कहुँ मौन धरै गति जानि न जाई॥
फेरि ठठाय हँसे कबही जग माहि बिलक्षन देत देखाई।
जक्त पवित्र करै जन सो तिहुँ लोक को तारन ग्रन्थ न गाई॥७९॥

पारस पाय डरै न दरिद्रहि ताके हिये नहि मोद समाई।
चाहै कँकाल कहै सब लोग सुनै उर मे अति सो हरषाई॥
दासवना अनुराग लहे परिगै तेहि की अति पूरि कमाई।
पोढी है पैड मिलै प्रभु के हित भाँति अनेक पुरानन गाई॥८०॥

राम सनेह नही उपजी नर के तन को फल तौ नहि पाई।
भूलि परे जितही तितही मतबाद अनेकन मान बढाई॥
दासवना न इहाँ सुख पावत अन्त चले पुनि मूरि गवाँई।
भागि के हीन मिलै गुरु पूरन ताते परी नहि पूरि कमाई॥८१॥

प्रेम बिना नहि पार कोऊ जुग बारहि बार बहै भवधारा।
सूझत नाव न बेड़ा न केवट जाकरि कै सतसंग बिसारा॥
होय भला कवनी विधि ते फल लागै कहाँ महि बीज न डारा।
दासबना चतुरा तिहुँ काल मे जोई भजै दसरत्थ दुलारा॥८२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने भवदापत्रैतापबिभजनोनाम
उभयप्रबोधक रामायणे अयोध्याखण्डे तृतीयोऽध्यायः॥३॥

सेये बिना सतसग सनायन कोटि उपाय करै किन कोई।
वासना बीज कि भूजन आगि औ मुक्ति कि आकर जानिये सोई॥
कामधुका सुरपादप कोटि नही महिमा तिहुँ लोक मे गोई।
बन्दो है वेद पुरान चहूँ जुग दासबना निज नैनन जोई॥८३॥

कौन कहै सतसंग महत्त्व को सारद सेस गनेस थकैजू।
चारिउ वेद न गाइ सकै कवि कोविद भाँति अनेक बनैजू॥
कौन अहै चतुरा जग मे अस जो सतसंग प्रभाव अकैजू।
सिन्धु समीप खडी अवलोकिहि भाँति से पारहि जाय सकैजू॥८४॥

सम्भर खेत से है सतसंग परै सोइ सम्भर होत न बारा।
सुक नारद औ सनकादि अगस्त्य भुसुंडि अनेकन वार पुकारा॥
सूर कबीर गोसाईं कहे सब सन्तन कीन यही निरधारा।
दासबना परमान अनेक बिना सतसंग नहीं भवपारा॥८५॥

भूधर भूमि कृसानु नदी तहँ सोम और सूर किये निरधारा।
ज्यो जगहेत सदा इनकी गति ता बिधि सन्तन को अवतारा॥
जे निज स्वारथ भूलि न देखत नित्य करैं उपकार बिचारा।
दासबना उपमा न तिहूँ पुर तेई करैं जग सागर पारा॥८६॥

पै जड़ता को सुभाव धरे सब सन्त हैं चेतन रूप अनूपा।
कोटि गुनाकर है इन ते वर कैसे कै जानिये सन्त स्वरूपा॥
जो सतसंग करै मन लायकै वेगि मिलावत कोसल भूपा।
दासबना निज रूप लहै जिउ जाते परै नहि सो भवकूपा॥८७॥

धन धाम धरा धन देत कोऊ पट भूषन अन्न औ पात्र बिचारा।
मनि मानिक हाथी औ घोड़े कोऊ जल आगि औ दारु अनेक प्रकारा॥
विद्या बड़ाई औ तन्त्रहु मन्त्र रसायन राज औ स्वर्ग को द्वारा।
दासबना जन सन्त सो देत नहीं जेहि ते जग आवन हारा॥८८॥

विद्या औ वेद पुरानहु सास्त्र पढ़ै बहुभाँति अनेक बिधाना।
तप तीरथ वर्त औ योगहु यज्ञ अचार बिचार औ नीति निधाना॥
यम औ नियमादिक पूजा औ पाठ करै कोउ तीनिउ लोक को दाना।
दासबना सतसंग बिना कबही न मिटै जग को भरमाना॥८९॥

या सबको कबही न करै अरु सन्त की संगति में लवलावै।
सर्वबिकार को धोइ सो डारत लै हरि के पद में ठहरावै॥
हंस करै बक से तत्कालहि स्वानहु सद्य में बाछा बनावै।
ऊँच औ नीच विचार विहाइ कै एकहि घाट में लै नहवावै॥९०॥

तप यज्ञ औ दान अचार विचार औ भाँति अनेकन तीरथ धावै।
साधन वेद कहै जहँवाँ लगि आगिहु तापि के गंग नहावै॥
हाथ पसारि कै देखै तेही छन होय कछू तबतो लखि पावै।
प्रीतिप्रतीति से धावत है जग ह्वैहै भला कबहीं अस आवै॥९१॥

सतसंगति सद्यहि काल फलै करि दर्शन साधु को वैठि विचारै।
जो कछु बात सुनै तेहि औसर बूझेल है तेहि को निरवारै॥

ताप मिटै उर को तत्कालहि होय सुबुद्धि औ सीतल धारै।
दासवना जे सकामी अहै तिनहूँ को अनेकन कारज सारै ॥६२॥

जो निसकाम करै सतसगति औ स्रद्धा उर मे अति आवै।
सद्य सृगाल ते सिंह करै पुनि का कहि कोयल वेग बनावै ॥
शका नही तेहि मे कोउ भाँति पुरानहु वेद अनेकन गावै।
दासबना निज नयनन देखि कै कागज कोर पै अक बनावै ॥६३॥

जो सुख है छन को सतसग मे ताको कहूँ उपमा ठहरावै।
इन्द्र कुबेर दसा दिग्पाल जहाँ लगि लोकप बुद्धि थहावै॥
ऊँचो बडो बिधि को दरजा नहिं ब्याजहु से उर मे कछु आवै।
दासबना नृप सेठ महाजन पै दुख रूप सो कौन गनावै ॥६४॥

मुक्तिउ नाहि तुलै तेहि को जेहि कारन है बिधि कोटि उपाई।
ताते बडो सबसे सतसग सोई चतुरा जेहि बुद्धि समाई॥
ज्ञान बिरागहु भक्ति को आकर ताके समीपन एक बडाई।
दासबना पितु ऊँच सदा सुत ते बहुभाँति सबै कोउ गाई ॥६५॥

मातपिता गुरुसन्त सबै कछु रामहि ते अधिकौन सँदेहा।
जासु अधीन गये सबभाँति से नित्य किये जिनके उरगेहा॥
ताही के द्वार मिलै सबको सब सतन को मत जानिये येहा।
दासबना महिमा अति साधु कि ताते करो नित ही नवनेहा ॥६६॥

नाहि न वस्तु तिहूँ पुर मे जन सत के जोग सबै ठहराई।
रोमहि रोम रिनी सबकाल मे सीस रहै पद कजन वाई॥
दासबना किमि गाय सकै महिमा अति आनन एकहि पाई।
तापर बुद्धिहु ज्ञान मलीन सदा जनसत है मोर सहाई ॥६७॥

यावत धर्म बतावत वेद तुलै नहि सन्तन की सेवकाई।
ब्याजहु से न तुलै बिधि कोटिन ताते तनौ धन औ मनलाई॥
दासबना हमरे मत से परिगे तेहि की अति पूरि कमाई।
कामना कारन है जनसत कलप तरु कोटिन कामद गाई ॥६८॥

निंदा करै जनसन्तन की मुख ताके परै कृमि वार हजारा।
कोटिन कल्प लौ नरक परै निकरै तव तामस को तनधारा॥
बाघ औ बोछी भये पुनि साँप औ कूकुर का कह आर न वारा।
दासबना जेहि वे पुनि नर्क न जाइ परै कबहीं न उधारा ॥६९॥

सेवा करै नित ही जोइ संत कि और निरादर कै सब धर्मा ।
ताते नही धर्मज्ञ है दूसर पूरन भे तेहि के सब कर्मा ॥
है तेहि करतल में फल चारि रह्यो उर में नहिं दूसर मर्मा ।
दासवना यक राम सनेह सबै विधि जानहुँ और कुकर्मा ॥१००॥

जीवनि है जग में जनसन्त कि और भये मुरदासम सारे ।
धाम धरा धन बाम गुलाम सदा जिन राम को नाम बिसारे ॥
धाय मरे धन हेत ललाय कै अन्त समय यमधाम सिधारे ।
दासवना न कछू बनि आय कहा नरधै तन कारज सारे ॥१॥

सन्त से ऊँचा न तीनिहु लोक में को महिमा कहि पारहि जाई ।
संकर विष्नु विरंचि बखानत तेऊ नहीं पुनि पारहि पाई ॥
कौन सकै कविकोविद गाय सुई मुख नाहि सुमेरु समाई ।
दासवना मतिहीन कहै किमि वन्दत पंकज पांय सदाई ॥२॥

घनाक्षरी

जैसे विन वारिद जगत जल देय कौन ऐसे जन सन्त रामजस भल पाये हैं ।
मृतक जिआये जीवधान पान दादुरि से अनुभव सागर से भरि,भरि लाये हैं॥
सलिल को पाय महि साह ज्यों अमित होत ज्ञान औ बिराग भक्तिभाव उपजाये हैं ।
वनादास संतन को गुनन बखानि जात कोटिन कलप लगि सारद जो गाये हैं ॥३॥

जैसे कृषी करम में कुसल किसान होत त्योंही हरिमारग में सन्तहू सुजान हैं ।
लोह में लोहार औ सोनार लोग सोन माहि वनिज में वनिक औ वरई ज्यों पान हैं ॥
वनादास ऐसे साधुलोग नाना साधन में ध्यान औ समाधि ज्ञान विरति विज्ञान हैं ।
लहे वोधसम्यक औ भक्ति सांति भेद जानै सहित कैवल्य जैसे पंडित पुरान हैं ॥४॥

पुहुमि सो क्षमा पुनि धर में सुमेरु जैसे सोम सितलाई अरु सिन्धु से अगाध जू ।
सूरता में सिंह पुनि नभ से न अन्त मिलै गुन के निधान जिन काटे भवबाध जू ॥
ज्ञान औ विराग भक्तिभूषित हृदय नित्य हरिजू को चरनन भूलैं पल आध जू ।
वनादास वासना औ आस को बिनास किये कौन गुन गाय सकै ऐसे जन साध जू ॥५॥

सवैया

वैरी विदारितिहूँ पुर के निसिवासर सोवत सांति परेजू ।
संसै समुद्र को सोपि गये उर सम्यकबोध सँभारि भरेजू ॥
भूलि नही गुनवृत्ति वहै पुनि तोपु :तृपत्तमै पाय अरेजू ।
दासवना गति अन्तसकर्न सदा तिन चर्न प्रनाम करैजू ॥६॥

जिनकै उर मे उपजै न कछू अतिसुद्धी लहे रघुबीर भजे ते ।
रामसरूप तेई जग मे बहुराग औ द्वेष बिसेष तजे ते ।।
भिन्न भये सकलौ परपच से जाइकै साति के सेज परे ते ।
कौन करै विधि और निषेध को दासबना भवसिन्धु तरे ते ।।७।।

राम कहावत सो सब गावत जैसनि बुद्धि सो बूझि है लोगा ।
भाग्य कहा अस भाल बसी जेहिते इन भोग को भोगिहौ भोगा ।।
ऐसनै सन्त कृपा करिहैं तब कौनिहुँ रीति से लागिहि जोगा ।
दासबना न कमी दरबार मे काको न काटि दिये भव रोगा ।।८।।

जा विधि चन्द्र अकास रहै जलजीव कहै हमरे सगवासी ।
ऐसहि सन्त टिके परधाम मे देखत जक्त यहाँ उपहासी ।।
सन्तन की गति कोऊ न जानत मानिये सन्त सदा अविनासी ।
दासबना पहिचानत सोय हिये जिनके हरिरूप प्रकासी ।।९।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभय प्रवोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रैतापविभजनो नाम चतुर्थोऽध्याय ।।४।।

सरजू सरि से सरि नाहि त्रिलोकहु सोक नसावति है सक नाही ।
तीनिहुँ ताप जरावति है उर भावति है गति जानि न जाही ।।
राम को रूप मिलै करुना जेहि मानहुँ सौपति है गहि बाही ।
दासबना तेहि की सरनागति छोडिकै और कहाँ फिरि जाही ।।१०।।

घनाक्षरी

आनी बसिष्ठ ज्ञानी जानी तीनि लोक मानी मुक्ति की निसानी सदा सद्य भव मानी है ।
चारिफल दानी बरदानी रामभक्ति हूँ की पराप्रेमसानी कर्म काटत सन्त जानी है ।।
सारी गुनखानी पहिचानी प्रौढ पडितजन ससय खनिखानी राखै साधु कुल कानी है ।
कामक्रोध हानी बनादास वदै बानी ऐसी सरजू उर आनी नित्य मेरी महरानी है ।।११।।

मानसर से जाई आय अवध रही छाई नरनारि सकल धाई पाप मेटत अधिकाई है ।
वेद जस गाई सेवै साधक मन लाई देत सबको सितलाई परत पूरी कमाई है ।।
सोभा अधिकाई पुर अवध की निकाई रही अतिहौ छवि छाई करै कहाँ लौ वडाई है ।
सिद्धसुर आई नित्य बन्दत सिरनाई जोरि बैठत अथाई बनादास हिये भाई है ।।१२।।

सोहत धवलधारा पाप काटिबे को आरा भवन उन्नत किनारा नाद करत अति गभीर है ।
बत्त चक्रवाक हंस विपुल बिहार करै महिमा अपार भारी भीर तीरतीर है ।।

रामप्रेम आकर औ साँकर कलिकाल हेत सीतल सुधाकर तीर तीर में फकीर है।
बनादास ज्ञानी जन योगी ध्यान धारि बैठे रामभक्त भारी जे फकीर में अमीर है ।।१३।।

मुक्ति की पताका तीनिलोक माँहि साका बहत अवधपुर नाता पाप हरत हाकी हाका है।
देवनगुन आका जसगावत नित जाका फल पावत परिपाका देत मानो भरि ढाका है।।
बाँका विरद वाका कविकोबिद गाइ थाका पार नाही महिमा का कही पटतर नाहीं जाका है।
बनादास ताका नहिं फाका परत सरन माँहि देत है निसाका सुखमूल बसुधाका है ।।१४।।

सवैया

मानस नन्दनि है जग वन्दनि काटत फन्दनि सन्तन गाई।
कामहु क्रोधहु लोभ निकन्दनि मन्दनि मोहहु के मसि लाई।।
आलस नासनि पाप बिनासनि ताप निकासनि साधु सहाई।
दासबना कबि कौन कहै करै नारद सारद वेद बड़ाई ।।१५।।

घनाक्षरी

पाप की पराजै ताप तीनिहु अकाजै कामक्रोध लोभ भाजै सरजू प्रवल प्रताप जू।
भक्तिसाज साजै सन्तसभा तट बिराजै करै कलियुग की अकाजै दलै दम्भहू को दाप जू।।
वीची छवि छाजै ओ विराजै दिसि उत्तर में सुख को समाजै अवध अविचल मिलाप जू।
बनादास जीवन मुकुतन करत देर प्रीति औ प्रतीति लाइ करै नामजाप जू ।।१६।।

सवैया

जक्त समुद्र भरो जल पाप से लक्षन कुंड जथा बड़वानल।
वृन्द करोरि मने कर एक परै निसिवासर नासत सो जल।।
भाँति अनेक सहाय किये तेहि ते नहिं बैठत है कलि कोसल।
दासबना अस्नान औ ध्यान को भूलत जेपल तेई अहैं खल ।।१७।।

घनाक्षरी

सरजू सुखरासी सोकसंसय विनासी ज्ञान उर में प्रकासी अति कीन्हें जल पान ते।
सकल कलुष नासी भक्ति रामजू की भासी ताप तीनिहूँ निकासी नित्य किये अस्नान ते।।
सर्वबोधवासी हिय आसा को गासी अति सबबिधि सावकासी बनादास जाके ध्यान ते।
कैधौं मोदमाला कैधौं जगतभाग भाला वीची सरजू विसाला विपति नासै अनुमानते ।।१८।।

सवैया

राम कि गंग करै मुखभंग जो अन्त समै जम कै गन आवै।
पाप बिनासि कै सुद्ध करै तट जोई मरै सो बिमान चढ़ावै।।

कूरम काक बिगोवत गात लिये सरजू जल मे सुख पावै ।
दासबना तेहिकी अति भागि कहा महिमा चतुरानन गावै ।।१९।।

घनाक्षरी

कुरुम औ काक स्वान मीन औ सृगाल गीध सरजू के जल मे कलह करिकरि कब खाहिंगे ।
अतिही भुखाहिं औहुआहिं मेरी देखी देखा एक्न ते एक छीनि छीनि लै जाहिंगे ।।
बनादास ऐहै दिन मेरो कब भागिवाला काल कलिकाल धर्मराज पछिताहिंगे ।
बैठे विमान पै निसान को बजावै देव फिरि फिरि तनदसा देखि राम मिलन जाहिंगे ।।२०।।

मूरछल को करै सुर करते सिर बार बार अस्तुति रघुनाथ जू की स्रवन मे सुनावैंगे ।
सरजू अयोध्या सत गुरू नाम महिमा को आनँद उर उमगि प्रेम बिह्वल कब गावहिंगे ।।
बनादास भाल भागि मेरी अलगैहै तव सुनि सुनि आनँद अतिहि उर को उमगावहिंगे ।
सचित प्रारब्धकोअमानकर्म फूंकिसकहिं विघ्ननिन सिर पांव दाबि रामधाम धावहिंगे ।।२१।।

जहां सोमसूर औ पावक को प्रकास नाही वेद चहूं नेतिनेति नितही जेहि गावत है ।
जाके लिये सिद्ध मुनियोगी नानायुक्ति करै साधक औ ज्ञानी सब जाको ललचावत है ।।
मानुपतन लाम को प्रससा होत ताही हित अतिही हतभागि जग्न ताको बिसरावत है ।
भक्तिभाव करिकै उतकठा उर बार बार बनादास महिमा नाम जीवत जन पावत है ।।२२।।

गगा औ जमुना सरस्वती नर्मदा आदि सरजू समान घेनुमती न त्रिवेनी है ।
सफरा कावेरी नारायनी अनेक सरि सरजू बिसेपि रामधाम की निसेनी है ।।
सेवै करि प्रीति मन भावत सो पावत है गावत पुरानफल चारि को बरेनी है ।
औरो अभिलाप मन लाखन सो पूर करै बनादास बदै सरजू रामरूप देनी है ।।२३।।

सवैया

औघ प्रभाव अपार सनातन सारद वेद पुरानन गाये ।
तीनिउ लोक तकै सरनागति जा करिकै सब पाप गँवाये ।।
दर्सन होत सबै दुख भागत सकरहू बहुभाँति गनाये ।
सारद सेप बिरचि बखानत राम पुरी सुखधाम सुभाये ।।२४।।

जन्म धरे जहँ ब्रह्म परात्पर औध से औधि 'रही नहिं दूजी ।
तेंतिस कोटि बसे सुर जामहिं आस भली विधि से सब पूजी ।।
तीरथ की न रही गनती महिमडल के रहे आय पसूजी ।
दासबना तिहुँलोक परे है सरूप तहां प्रभु राजहि भूजी ।।२५।।

सहस्र यकादस को परमान प्रभाव कहा कोउ जानन हारा।
चारि वखानि के जीव तजे तन जन्म नहीं जग दूसरि बारा॥
साधक को मन भावति देति मिलै करुना करि राजकुमारा।
दासबना उर प्रीति प्रतीति टरै कोउ भाँति से कोटिन टारा॥२६॥

तीनिहुँ ताप को बेगि बिनासत गासत संचित कर्म न जाई।
दूरि करै प्रारब्धहि बेगि नही क्रयमानहुँ लागन पाई॥
सुद्ध कै देत सरूप को ज्ञान औ पापहि ज्यों भरनी अहि खाई।
दासबना महिमा तव जानिहै रामसिया उर में रहै छाई॥२७॥

मस्तक सात पुरी को प्रमान है जे जग में अतिही गति दाई।
निरगुन रूप महेस बखानत राघव को महिमा अतिगाई॥
सरगुन है सरजू सरि सर्वदा भाकरि औध रहो छबि छाई।
दासबना जगन्नाथ स्वरूप सबै पुरवासी करै को बड़ाई॥२८॥

वास किये ते बिनास करै तिहुँ तापन को नहिं बार लगाई।
अंत में मुक्ति घरी कर में सुखपूर्वक राखत छोह बड़ाई॥
प्रीति प्रतीति हिये जिनके निसिवासर नाम रहै लवलाई।
दासबना उर त्यागि विराग करै तेहि जीवन मुक्ति सदाई॥२६॥

भरै बनाय कै कोल्हू में पेरत अल्पहि काल बड़ो दुख पावै।
कासीपुरी गति देत मरे पर औघ में जीवन मुक्ति कहावै॥
तीरथराज पचीस हजार सो सम्वत स्वर्ग में वास करावै।
दासबना यहि भाँति सुनी लखि औघ प्रभावन ख्याल में आवै॥३०॥

घनाक्षरी

काहे को जात और धामन को धाय धाय द्वारका केदार बद्रीनाथ मन लाये हैं।
नीमपार कासी औ प्रयागहू में बास करें औघ फल मेरे मत ब्याजहू न पाये हैं॥
हरद्वार मथुरा कुरुक्षेत्र जात पुष्कर को बनादास देखो कैसे घूमत मुँह बाये हैं।
सबको मूल औघ मृषा तात प्रतिकूल भये रामरूप सगुन जहाँ जियत मुक्ति पाये हैं॥३१॥

सवैया

सेइये जन्म लौ जन्म की भूमि जहाँ रघुनन्दन होत न न्यारा।
गच्छति एक उपाय नहीं कहुँ औघ से कौनेहुँ काल विचारा॥
प्रीतिप्रतीति बिना नहिं सूझत दासबना करते मनि डारा।
गुंजा गहे अपनी रुचि से तेहि को पुनि को समुझावन हारा॥३२॥

घनाक्षरी

औधधाम आय और धाम कौन काम जाय रामनाम छोडि और नाम काहे लेत है।
पाय नरदेह किये अचल न उभै नेह बनादास, मेरे जान अति ही अचेत है।।
औध सम धाम औध रामसम राम एक उपमान कहूँ कहै ऐसन सचेत है।
अमृत विहाय कै ललाय लागे माठा पियें भजन को त्यागि मानो वरत वरेत है।।३३।।

सवैया

जौलौं जियो न टरौ पुर औध सो वार्राहि बार यही प्रन मेरा।
राम से नाम तजै नर जौन सो मानिक त्यागि कै बीन बहेरा।।
ऐसन नाम रहै रसना नहि काटि बहावत लावो न देरा।
दासवना जस गावो नवा नित पकज पाँय सदा रहु डेरा।।३४।।

औध नही ससि पावक सूर बिराट से भिन्न है जासु सरूपा।
वेद पुकारत नेति चहूँ रस एक विराजत कोसल भूपा।।
नाहि लखै हिय नैन बिना पचि हारे कितै अति रूप अनूपा।
दासबना जेहिके पहिचान से फेरि न आइ परै भवकूपा।।३५।।

घनाक्षरी

महितल हरिचक्र ऊपर निवास जाको महा परलइउ मे नास तासु नही है।
कविकोबिदादि किमि महिमा बखानि सकै यज्ञ उपबीत भरि देव भूमि लही है।।
सरजू औ तमसा के बीच सुर मीच चाहे नीच नर ताहि जग माहि किमि कही है।
बनादास अवध निवास सरस एक जाको गारि मुक्ति गाहि नित्य एक ताहि सही है।।३६।।

कीटहू प्रयन्त तन त्यागि हरिधाम जात महिमा अपार चारि वेदहू बखाने हैं।
सारद गनेस सेस सदाही सराहै जाहि महादेव तनमनधन से बिकाने हैं।।
बनादास ऐसी औध मेरी प्रान जीवन है कपटी कुचाली क्रूर अधम न माने है।
पाय नर देह ह्वै कै अचल निवास कियो सरजू न तीर मरे हीन भागि जाने हैं।।३७।।

सवैया

औध से अन्न चहै मन जान को तुर्त गरे भर गाड खनावै।
आसन कै तेहि म ततकालहि कठ भरे लगि माटी पटावै।।
तौ मन से कहै जाहु चले अब दासबना हमरे मन भावै।
पाजी के राजी भये निसरै नहि औध सनेह ते देह सेरावै।।३८।।

घनाक्षरी

पंचकोस मर्याद चौदह चौरासी कोस करत प्रदक्षिन जो अति मन लाई है।
अक्षै पुन्य ताकी सर्व तीरथ किये को फल करत पुरान मुनि जाकर बड़ाई है।।
कासी तीर्थराज चित्रकूट नीमषार लंकै संगम औ मनोरामा मिथिला सिधाई है।
वनादास बक्सर बारानसी पूर करै रीझैं सियाराम मुख मांगै तीन पाई है।।३९।।

युक्ति न बनाय कहीं लखो निज नैनन कि पाये मन कामना न कृत को दुराये हैं।
एक वस्तु मिलैगी न संसय कदपि काल प्रीति और प्रतीति करै याही कर आये हैं।।
निज अनुभव उर फुरे काज पूर भयो महाराज रामदीन गाहक सुभाये हैं।
वनादास लोकवेद बिदित प्रभाव औध तामें करै भावना अकल किमि जाये हैं।।४०।।

औध के सदृस तिहुँलोक में न प्रिय आन तीरथ औ धाम वेद जहाँ लौं बखाने हैं।
जल मीन के समान बनादास को प्रमान लिखौ कोर कागज पै झूठे झूठ माने हैं।।
मेरो मन राजी इमि कैसे तासु दोष दीजै सपन में छाँड़ैं नाहि ताते कृत्य माने हैं।
बनादास और कोऊ नहि किमि जानि सकै राम उरवासी सब घट की पिछाने हैं।।४१।।

सवैया

औध नहीं प्रिय रामहि देय को सेय रहे वहु बात गवारे।
नाम औ रूप जो लीला छूटै तबौ धाम ते होत नही पल न्यारे।।
चारिउ भये नहि प्रानहु ते प्रिय प्राप्त नही कछु काज न सारे।
दासवना भये कौन उपासक स्वाद सृङ्गार में जो मम तारे।।४२।।

घनाक्षरी

नामरूप धाम लीला सर्व अंग भोग करि उमँगि उमँगि अनुराग माहि भरे है।
ग्रंथन को सोध सब सन्तन को बोध जानि निज नैन देखि रामदास भये खरे हैं।।
फिरि मतवाद लागि सकै नाहि काहू कर सकल प्रकार काम जाहि सुठि सरे हैं।
करम उपासना और ज्ञान को सफाई भई बनादास नेई सान्ति सेज सोवै परे हैं।।४३।।

रागद्वेष मेख मारे विधि औ निषेध जारे हारे मतवाद सतसंग में प्रवीन हैं।
साधन सकल छीन तिहूँ गुनहीन भये पीन होत सान्ति दिनदिन हीन वीन हैं।।
कौनि नाहि होत फिरि काज कछू तनहू से सकल प्रपंच भये सहज मलीन है।
बनादास साधन सुकृत तरु आय फले भानु की किरन जैसे मंडल में लीन है।।४४।।

मरा न जियत रहे घटका समान लाग अन्तसकरन वलहीन मानो मरे हैं।
मनबुद्धिवचन में आवत सरूप नाहि लोन को खेलौना जनु जल माहि परे हैं।।

बाद बकवाद मत एकहू सोहात नाहिं कालहू कि भीति गई दोष दुख दरे है।
भार के समान एकतन व्रत मान देखै बनादास बिगत सकल काम सरे है ।।४५।।

सरजू अयोध्या संत गुरु द्विज रामनाम सिव काम किये जस गावो बसुयाम है।
सातहू से आठ नाहिं पर्‌यो मेरी छठी माहिं छोड़ि छल भाषत छिपावो केहि काम है ।।
मानै कृत्य नाहिं कृत निन्दक है नाम ताको पापमुख देखे वाको भले बिधि वाम है।
बनादास और उरवासी विन जानै कौन मान मनै नाहिं प्रानहू ते प्रिय राम है ।।४६।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे उभयप्रबोधक रामायणे अयोध्याखंडे
कलिमलमथने भवदापत्रयतापविभजनो नाम पचमोऽध्यायः ।।५।।

सास्त्र और पुरान लोक वेदहू बिदित बात रामभक्ति दानो कौन सिव के समान है।
सेवै क्रम बचन जो हर हिय लाय सदा बनादास होय प्रभु प्रेम को निघान है ।।
औढर ढरन देत बांछित बरन सोक सकट हरन प्रन पूरो भगवान है।
तारन तरन दुख दारिद दरन कूल सरजू अवध मे नगेस्वर प्रमान है ।।४७।।

दीन पै दयाल भालचन्द्र सेन दूसरो है खूसरो मराल करै अमित प्रमान हैं।
सेये विन संकर न पूरी रामभक्ति होति भव रुज मूरि मोद देन के निधान है ।।
वैष्नव प्रथम रेख काल कर्म मेख मारै हारै स्रुति सारद को पार जाय आन है।
बनादास मेरे हित अवसि दयाल भये नाथ नाथन के नाथ मेरे जान हैं ।।४८।।

भोलानाथ भूतनाथ भैरव भवानीनाथ कासीनाथ गिरिनाथ नाथ है अनाथ के।
दीननाथ पीननाथ गननाथ नागनाथ रुद्रनाथ जगनाथ कहैं गुन गाय के ।।
वेदनाथ विद्यानाथ वाहनवृषभनाथ मायानाथ सुरनाथ दूजो ऐसो नाथ के।
वनादास मन्त्रनाथ यन्त्रनाथ नाथन के नाथ करै सन्तन सनाथ के ।।४६।।

कालकूट असन ब्यसन भांग भोगी बडे नांग रहबे कि रुचि सुचि गौर गात है।
भस्म अंग सारे अरधंग में जगत मात आक और धतूर प्रिय अति वेल पात है ।।
दसपंच नैन रिपु मन पंचगात बर दसभुज विक्रम मे अधिक सोहात हैं।
डमरू त्रिसूल चर्म असि धनुवान सक्ति जाकी कृपा कोर सुर सिद्ध ललचात है ।।५०।।

सोभित कमंडलु बिभूति गोला अनमोला बोला रामनाम भोला प्रनदीन दान है।
रामरूप हियकंज हेरत सकल काल दारिद को वित्त जैसे अति ललचान है ।।
दूजो को दयाल है त्रिलोक मे बिसाल ऐसो बनादास कासी जासु मुक्ति को निसान है।
चारि वेद गावें सेस सारद न पार पावें चतुराननहू हारि मानें कै बखान है ।।५१।।

जटाजूट सीस मृगराजे रजनीस गंग पारबती अरधंग अग में बिभूति है।
कंठ कालकूट गौर गात में अनूप छबि कबि को सराहि सकै सांप अजगूति है ।।

नगन अमंगल अनंगल को मूल सिव भोग प्रतिकूल फलचारि को प्रसूति है।
बनादास जाके कृपा काम सब पूर होत प्रबल प्रताप सकै कलहून घूति है ॥५२॥

काम कोह मारन मनो जब घुजारन त्रिपुर को बिदारन सकल सुरदेव हैं।
ज्ञान औ विज्ञान धाम बिरति मुकाम सदा रामभक्ति भाजन को जानि सकै भेव है।
बलवान भटमारि रेख महिमा अलेख सकै को सराहि बेष बिकट कुटेव है ॥
परमदयाल भाल भाग है बिसाल वाको बनादास बदत जो सिवपद सेव है ॥५३॥

नरमुंड माल धर नाग उर हार धर बिष बिकराल धर सुठि सूल धर है।
चन्द्रमा सुभाल धर सीस गंगधार धर मृगराज खाल धर देत दीन बर है ॥
सक्ति धनुबान धर चर्म औ कृपान धर डमरू सुजान धर राम जन हर है।
भाँग औ धतूर धर बेलपात भूत धर बनादास सिवन सनेह नर खर है ॥५४॥

डाकिनी साकिनी भूत प्रेत औ पिसाचगन कृत्य आवै ताल महामारी जातुधान है।
मन्त्र जन्त्र तन्त्र जादू टोना सिद्धि साबर है विद्या वेद ज्ञान ध्यान भक्ति के निधान हैं ॥
बिरति बिज्ञान सांति सावधान सर्वज्ञ भोगी कैवल्य रामनाम प्रिय प्रान है।
बनादास ईश्वर स्वतन्त्र औ आकासरूप चिदाकास चेतन अमल भगवान हैं ॥५५॥

त्रिपुर दलन काम कदन असन विष बसन बघम्बर औ अम्बर में लीक हैं।
सूल अग्र निरमूल नृत्य प्रलै काल समै सत्रु उर साल भाल बाल बिधु नीक हैं ॥
महाविकराल बेष सेपन सराहि सकै तकै सुरसरन सर्दाहि स्तुति ठीक हैं।
बनादाम बिरद बिदित लोक वेदहू में रामरस रसिक सकल जाहि फीक हैं ॥५६॥

गुनातीत गूढ़ गति मति न सकति कहि अति ही अचेत जो न ऐसो देवमान ते।
राम न प्रसन्न होत तास न कदपि बाल चन्द्रभाल: चरनन रति उर आन ते ॥
ब्याकुल त्रिलोक काल कूट ज्वर जरे जात परम कृपाल करि लिये विष पान ते।
बनादास ऐसो उपकारी को विकाल मांहि त्रिपुर विनास किये परहित जानते ॥५७॥

सुवन गजानन षड़ानन प्रताप अति बुद्धि के निधान सुर सेन पसु जानजू।
सक्ति पारवती भक्ति राम के निरत चितहित किये देवहते सुम्भ बलवानजू ॥
चंडमुंड रक्तबीज महिष निसुम्भ दले सारो परिवार परहित में सयानजू।
बनादास पांवर पतित नीच पांच अतिमानत बिरोध अति मूरख अयान जू ॥५८॥

संकर विरोधी सुख लहै तीनि कालहून स्तुति औ पुरान में अनेकन प्रमान है।
रामभक्त चिह्न अनुराग महादेव पद भक्तिहित भाव ताहि कामना न आन है ॥
होहि जो प्रसन्न राम प्रेम तो अभंग देहि जाते भवभंग फिरि रहत न भान है।
ज्ञान औ विज्ञान जाते सांतिहू को भागी होत बनादास दूजो को महेस के समान है ॥५९॥

देवन के देव महादेव जू दयालु बडे वैष्णव मे अग्र तजी सती असि नारी है ।
सिव ते विसेप प्रिय कोउ न रघुनाथ जू को नामरूप धाम जस प्रीति जासु न्यारी है ॥
इष्टदेव राम जाके दूसरो न काम कछू निसिदिन भजन कि सूरति सँभारी है ।
वनादास मेरे मत अतिही सचेत सोई छाँडि छल जाहि सिव प्रीति अति प्यारी है ॥६०॥

बिष्नु हे गनेस साखि प्रगट पुरान माहि गीता कृष्न कहे षटमुख हर हम हैं ।
सात पुरी अहै मोक्षदायक जगत माहि साढे तीनि साढेतीनिन सिवाय कम है ॥
ऐसन प्रमान को न मानत अजान लोग देखि परित्याग करै जो न माने सम है ।
बनादास नर तन पाय का विचार किये पिये लाज धोय ताहि राम रूप यम है ॥६१॥

गरल असन दिग बसन दिनेस तेज सुवन गनेस औ कलस हर हद्द भो ।
मुडमाल चन्द्रभाल डमरू कपाल कर वेप विकराल जासु वाहन बरद्द भो ॥
परम कृपाल कालहू को काल सत्रु साल दीन पै दयाल वर देन को मरद्द भो ।
वनादास चारि फल करत निहाल ताहि ध्यान हर हिये दोप दारिद गरद्द भो ॥६२॥

कासी मुक्तिदायक अलायक को अवलम्ब ताप हरै हेत ससि मानहुँ सरद भो ।
सिद्ध सुरवन्दत अनन्दत सकल भाँति अकल अनादि वेद विदित बिरद भो ॥
बनादास सेवत महेस काम क्रोध लोभ कपट पखड दम्भ साधुन को रद भो ।
पाय नर देहन सनेह जाहि सिवजू सो बात विपरीति ताहि माया मोह मद भो ॥६३॥

रामतत्त्व गुरु सिव माने मन वारवार भारी उपकार मम किये वृषकेतु है ।
जाते जगरुज नास वास परधाम होत ऐसन कृपाल भूलै अतिही अचेतु है ॥
सोच को विमोचन त्रिलोचन समान कौन पोचन को परिताप तिहूँ काल देतु है ।
वनादास विरद विदित लोक वेदहू मे सकर कृपालुता सदाहि भव सेतु है ॥६४॥

सुवन प्रभजन सकल दुखगजन सुजन जनरजन अमित बल बाँको है ।
ज्ञानबोध आकर दिवाकर प्रताप जासु सीतल सुधाकर से राम प्रेम छाको है ॥
बुद्धि मे विनायक अलायक सहाय सदा प्रभु गुनगायक सृङ्गार बसुधा को है ।
वनादास बाँदर औ भालु किये सबै काम एक हनुमान फल पाये परिपाको है ॥६५॥

दैत्यदल दाबि कै लपन हेत मूरि लाये जानकी हवाल रघुनाथ को सुनाये हैं ।
फूँकि लक करि उतपात पुर बार बार रावन गुमान मथि अक्षय नसाये हैं ॥
गोपद से नाघि सिन्धु नाना बिधि काम किये खीस करि वाटिका मधुर फल खाये हैं ।
कालनेमि मारि लाये कुधर उपारि सेत हेत अग्रकार वनादास मन भाये हैं ॥६६॥

बिरह पयोधि काढे भरत कि बाँह गहि राम आगौ न औघ जलवृष्टि दिये जू ।
धानपान के समान जरे परलोग सब सोक को नेवारि ताहि हरे हरे किये जू ॥

नृभरा अनन्द नृत्य राजगादी महामोद राम प्रेम को सृङ्गार आवैं सुठि हिये जू ।
बनादास भरत लषन राम जानकी सो घनिक कहाय निज रिनी ताहि किये जू ।।६७।।

उपमा न तीनि लोक हनुमान के समान दुख सिन्धु डूबत सुकंठ ताहि सेत भो ।
पीठ पै चढ़ाय रामलषन मिलाय दिये कारन मिताई कर वालिबध हेत भो ।।
सेन अप्रकार किये राम उपकार जिन बालपन माँहि बालरवि लीलि लेत भो ।
वल को निधान ज्ञान भान के समान सदा राम को देवान राज औघ को सचेत भो ।।६८।।

इन्द्र चोट चूर करि महा अभिमान मये बधे दुख दुसह बिभीषन सहाय भो ।
भौन के समेतहू सुखेन को उठाय लायो मेघनाद बध हेत करत उपाय भो ।।
जब जब युद्ध में थकित कीस भालु भये तबै तबै दैत्यन को अति दुखदाय भो ।
महिमा कहत हारैं सारदा सहस्रमुख बनादास रामदास हित अधिकाय भो ।।६९।।

तेज को निधान गान गन्ध्रब ते कोटि गुना महाबलवान धीरजवान हिमवान जू ।
बज्रनख दसनबिकट विकराल बेष भृकुटी कराल काल कुल जातुधान जू ।।
चंड मुंज दंड पिंग नयन बिसाल लूम लीला अतुलित वेद रीति में सुजान जू ।
बनादास सपन में गति जाहि दूसरी न रामजस स्रवन औ नाम प्रभु प्रान जू ।।७०।।

रामजस सुनत पुलकत न रोम सारे सिथिल सरीर जल लोचन ढरन है ।
पोचन को परिताप पाप तीनि ताप नासैं साधुन के हेत जासु सदहिं परन है ।।
बनादास विदित जगत गुननाथ जाको राखै सुष्टु रूप गति जाहि के सरन है ।
बिग्रह महेस कों कलेस में सहाय करै दीन हितकारी पुनि औढर ढरन है ।।७१।।

अर्जुन पराजै ब्याल सूदन को मये मान सुरसा पछारि लंकिनी कि घात करी है ।
सिन्धु का सँहारि जातुधान के ते मारि डारे अवनि पछारि लंक उतपात परी है ।।
बन्दी छोर विरद बिदुष वर देस सुठि अंजनी सुवन सदा साधु स्रमहरी है ।
केसरी कुमार जस गाय कौन पार जाय बनादास तासु बल अवलम्ब धरी है ।।७२।।

आनन अरुन जातुधान वन धूमध्वज सन्त जन कंज भास्कर के समान भो ।
महावली कच्छपीठि गोड़न कि गाड़ परीत्यागी मयनाक बिस राम को न कान भो ।।
धसकत धरा कटि सेम क्रिमि मकि जात भूमितल पाँव कोपि देत हनुमान भो ।
कम्प दसमीस दैत्य देखि दवकत महि बनादास दलि मेघनाद बलवान भो ।।७३।।

नाँघि कै समुद्र दिये मुद्रिका सपदि जाय सिरा सोच बिटपनिपात हेत गाज भो ।
अतिही निसंक घूमि घूमि दाहे लंक जिन रावन कटक करि महामृगराज भो ।।
बनादास मूरि रखवारन चपेट मारे कालनेमि तीतिर से हनुमान बाज भो ।
कोटि कोटि काम किये राम को रहित मान कपि दल दूलह सो मेरो सुख राज भो ।।७४।।

पापिनी पिसाचिनी जो जानकी देखाये त्रास सीस केस करषि कै सोक को समाज भो ।
गर्जि कै गवन गर्भपात सारी लक तिय निज दल मिला अति आनँद को साज भो ।।
कपिराज वाटिका को खाये फूल वेगि जाय चूडामनि दिये महामोद महराज भो ।
बनादास कलिकाल जगत बेहाल किये साधुजन रक्षा हेत राम कै सोराज भो ।।७५।।

औध रजधानी राममुक्ति की निसानी सदा मानो मन जाहि ताहि अति अभिराम भो ।
सकल भरोस आस तजि दृढवास किये लिये फल जनम को तासु पूरकाम भो ।।
आयो काल कठिन न साधन करत काम बनादास नाम अवलम्ब परिनाम भो ।
प्रीति औ प्रतीति करि जोई लवलायर है मेरे मत जीवन मुकुत वसुयाम भो ।।७६।।

सवैया

राम से नाम अयोध्या से धाम रहै बसुयाम यही जक लाई ।
गान करै नित ही प्रभु को जस दासबना पद ध्यान लगाई ।।
चातक से जल और तजै जहँ बातक साधन वेद बताई ।
कागद कोर पै बादि लिखी परि जाय भली बिधि पूरि कमाई ।।७७।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनो नाम षष्ठोऽध्याय ।।६।।

घनाक्षरी

रावन बिभीषन औ कुम्भकर्न महावीर किये तप दुष्कर सो बरनि न जाये हैं ।
एकही अगुष्ठ के बल खडे भूमि काल बहु पवन अहार उभै बाँह को उठाये हैं ।।
बनादास रवि दिसि देखि नैन भरें सकरबिरचि अनुरागबस आये हैं ।
माँगो वर कहै हम काहूके न मारे मरों बाँदर मनुजजुग जाति को वराये हैं ।।७८।।

एवमस्तु कहि पुनि आये कुम्भकर्न पास देखि विकराल वेष बिधि सोच किये हैं ।
जापे खल करिहि अहार प्रति बार बार विस्व को विनास तब उर ठीक दिये हैं ।।
सारद को प्रेरि पुनि तासु मति फेरि दई माँगे षटमास नीद सुखी निज हिये हैं ।
वनादास वहुरि विभीषन के पास आये माँगो वरदान तात भावत जो जिये हैं ।।७९।।

सजल नयन तन पुलक मगन मन कठ गदगद कर सम्पुट को किये जू ।
करम बचन मन भक्ति भगवत पद येही बर दीजै और बासना नहिये जू ।।
एवमस्तु कहि तासु भागि को सराहि पुनि ह्वै प्रसन्न दोऊ देव भौन मग लिये जू ।
बनादास पाय बरदान बड हरपान रावन कटक जोरि महामोद जिये जू ।।८०।।

सिन्धुमध्य गढ लंक कनक खचित मनिदुर्ग रजधानी दैत्य देव थान्ह किये हैं।
यक्षपति रक्षक करत रक्षा नगर केरि रावन हवाल जानि जाय घेरि लिये हैं।।
प्रवल प्रतापी जानि जीव लै पराय गये गयो पुर मध्य देखि ससि अति भये हैं।
बनादास निज सुप जानि रजधानी किये रावन सबहि जथाजोग्य भौन दिये हैं।।८१।।

सवैया

मयतनया को विवाहि दई मय दानव लंक रची देहि केरी।
पाय सुनारि सुखी दसकंधर बंधु बिबाहिसि दोयन देरी।।
पूत औ नातिउ बड़ो परिवार मनो घन भो दव घेरि अंधेरी।
दास बना बरनै कबि कौन लहै रसना सह सान न केरी।।८२।।

घनाक्षरी

सुत मेघनाद कुम्भकरन से बंधु जाके प्रवल प्रताप प्रथमहि भट रेख हैं।
इनसे अमित चित बसत न दया भूलि महाबीर विकट कठिन क्रूर बेख हैं।।
बनादास बसत असंक लंक मध्य सदा तीनि लोक अहतंक कम्पमान सेख हैं।
जाके भार कोल अरु करम कचरि जाति जबै कोप करि सैन साजत अलेख हैं।।८३।।

अनी अतिकाय अरु त्रिसरा प्रहस्त आदि प्रवल महोदर अकम्पन से वीर है।
धूम्रकेतु काल केतु खर केतु स्वान केतु दुर्मुख कुलिसरद मकराक्ष धीर है।।
सिंहनाद वज्र दंत रक्त नैन महावल सुरघाती देवघाती हेत पर पीर है।
बनादास द्विजघाती नरघाती गऊघाती ताम्र अक्ष लक्ष लक्ष घरे धनु तीर है।।८४।।

जीते लोकपाल दिसिपाल निज बाहुबल विष्नु से समर किये बैकुंठ जायकै।
धर्मराज को परास्त करि नर्ककुंड पाटे कठिन कठिन पार लहै को गनायकै।।
भानु सो बोलाय हारि मारि मारि जीते सुर मेघनाद निज वस इन्द्र किये जायकै।
बनादास सिवसैल सहज उठाय लई पुष्पक विमान लायो धनद को धाय कै।।८५।।

महि औ पताल नाक नाक दम्भ किये खल हुलसत अति बल नित नयो है।
अजय भई चारि जंघ बलि द्वारा बावन पै बूढि एक स्वेत द्वीप सिंधु नाइ दयो है।।
धरे हैं सहस्रबाहु ताहि दुख पाय बहु जाय के पुलस्त्य मुनि सो छोड़ाय लयो है।
बनादास बलि काँस मास पट वास किये दिये हैं कुबेर साप अति भीत भयो है।।८६।।

बैठे सभा एक बार कोपि दससीस कहे मेघनाद आदि सब सुभट हँकारे हैं।
सदा सुर बैरी सों पराय जात नाम सुनि जुद्ध करै सामने न कायर बेचारे हैं।।
होम औ सराप जज्ञ जीवन है देवन को करो धर्म भ्रष्ट तब मरैं बिना मारे हैं।
बनादास सहज में ह्वै हैं बस आय सब चाहो सोच लावो राहकितो मारि डारे हैं।।८७।।

चले उतपाती जीवघाती मेघनाद आदि सकल जगत निज बल जेर किये हैं।
होम जज्ञ तर्पन औ पूजापाठ नास करै साधु बिप्र मानै जोई ताहि मारि दिये हैं ॥
वेद जे पुरान पढ़ै गढ़ै ताहि अग अग गुरु पितुमात कोऊ मानत न हिये हैं।
बनादास कम्पमान सकल जहान भयो आपु धाय धाय धर्म नास कर दिये है ॥८८॥

चौदह भुवन बस किये निज बाहुबल उथल पुथल सब ओर अहतक भो।
आगि पौन जम आदि मृत्युहू को काबू किये भानु सोम त्रासमान जबै भ्रुव बक भो ॥
महा उतपात गात सूख गये जीव तजे निसिदिन इन्द्रलोक कम्पित से पक भो।
महाभीर परी धीर धरत न कहूं कोऊ बनादास समय एक रावन निसक भो ॥८९॥

जप तप जोग व्रत मख न करत रिषि केतिक निसाचरन मारि मारि खाये है।
तीरथ गवन नेम करै न अचार मुनि सुनि परै हरिकथा कहूं न सुभाये है ॥
ताल कूप बावली न धोखे खँदै पावै कोऊ बाटिका औ बाग कही जात न लगाये हैं।
बनादास ग्राम पुर नगर लगावै आगि बिनहिं कसूर नरनारि जारि नाये है ॥९०॥

गऊ द्विज करत अहार खल मारि मारि परत्रिय रमत बधत बाल घने हैं।
सारद और सेस न सराहि सकै पाप मिति अतिहि अनीति कबि कहां लौ गनाये हैं ॥
नर नाग देवकन्या वरत बर्जोरी करि चोरी ते बचत नाहि करै कौन मने है।
बनादास ज्वारी चोर लम्पट लबार बाढे मद पिया पापी जगहू मे बहु जने हैं ॥९१॥

मेघ करै सफा पुर लक गली घूमि घूमि निसिहु दिवस पौन झाड़ू बरदार भो।
जम कोतवाली करै परै नेक फेर नाहि आठहू पहर मे कृसानु पाक कार भो ॥
चन्द्र मद बुद्धि किमि बोलत सभा न इन्द्र रुचि मन धाम भानु दाव देन हार भो।
बनादास नितही पुजावन महेस आवै पावै न बिलम्ब उर सर्दहि खभार भो ॥९२॥

भृकुटी बिलोकै लोकपाल देव बार बार दिगपाल कम्पित सदा डर जाके है।
पढ़ै वेद ब्रह्मा द्वार जाको रुख राखि राखि माखि जनि उठै उर अति भीत ताके हैं ॥
बनादास अतिही प्रताप दससीस बढ्यौ उपमा ठटोरि कबिजन यहि थाके है।
कहैगो प्रभाव कोउ रावन को कहां तक ब्रह्म नर'भूप भयो आय हेत वाके हैं ॥९३॥

वेदबिधि बिगत भो धर्म निरमूल जग साधु मुनि त्रसित निसिदिवस संका।
जोग जप जज्ञ तप दान व्रत नेम नहिं सब हिये हर्ष भरे भूप लका ॥
भक्ति बैराग अरु ज्ञान बिज्ञान भे भोर के नखत से अति मलीना।
कन्दरा खोह निर्जन बिपेक तहुं कोउ अति ससकित रहत साधु दीना ॥

भूमि अति भीत सतप्त सुठि सोक बस लोक त्रै त्रसित रावन बिरोधा।
धेनु द्विज द्रोह बस मोह उतपात कृत सुवास करि चतुर्दस भुवन सोधा ॥
साधु मुनि सिद्ध सुर सकल बाढ़ु बिकल भे कहा प्रभु बुद्धि बल हेरि हारे।
ईश उपदेस ते तुष्ट मन पुष्ट भो तबै जै जैति ब्रह्मा उचारे ॥

जोरि अंजुलि विनय करत गदगद गिरा पुलक सर्बाङ्ग दृग नीर धारा।
पीर परजानि सुख खानि करुना भवन स्रवन किये बेगि देवन पुकारा ॥
गगन गम्भीर बानी भई ताहि छन डरो मति देवमुनि सिद्ध लोगा।
तुमहिं लगि मनुज अवतार रघुकुल धरो सद्यही हरौ सब जगत सोभा ॥

भालु मर्कट बपुष धरो सुर सर्बमिलि जोरि कै कटक महि रहौ पूरी।
महाआनन्द दुख द्वन्द्व ते विगत सब प्रगट भे भूमि बल तेज भूरी ॥
कन्दरा खोह गिरि गुहा कानन भरे चिन्तवन करत अति दिवस राती।
बनादास केहि काल अवतार रघुबंसमनि सकुल दल सहित रावन निपाती ॥

मास मधु नौमि सित भौम बासर सुभ मध्य दिन अवध अवतार लीना।
सहित अंसन प्रगट भूप दसरथ भवन नृपति जुत नारि कृत कृत्य कीना ॥९४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

छप्पय

मुकुट सीस द्युति भानु कनक नाना मनि भ्राजै।
मेचक कुंचित केस जाहि अवली अलि लाजै ॥
मनहुँ अहिनि के बाल अमित लपटे लटके है।
कुंडल मकराकार कनक अतिही चटके है ॥
अधर दसन बर अरुन घन बिम्वाफल दाड़िम कदन।
कह बनादास मुख सरद ससि मकंतद्युति सोभा सदन ॥९५॥

नासा चारु कपोल कंज दृग भ्रू सुठि बंका।
पटतर दीजै काहि कामधनु लागत रंका ॥
सोभित भाल बिसाल तिलक तामें जुग रेखा।
बेसर कनक लजात अचल दामिनि जनु देखा ॥
बंक सिलोकनि मन हरनि मन्द मन्द बिहसत बदन।
कह बनादास विद्युतछटा कोटि कोटि उपमा रदन ॥९६॥

वृषभ कंध हरि सरिस चिबुक धर ग्रीव बृहद उर।
मुक्तमाल बनमाल रेख लक्ष्मी पद भूसुर ॥
कनक बरन मन हरन जज्ञ उपवीत सोहाये।
भुज अजानु बर चारि पीन करि कर हिल जाये ॥
गदा चक्र धर पदुम जुत कर कंकन अंगद सुभग।
कह बनादास बहुमनि जटित जाम्बूनद अगनित सुनग ॥९७॥

कटि किंकिनी रसाल रटत अति मुखर सोहाये।
मनहुँ कमल के मध्य रहे अवली अलि छाये॥
उदर नाभि गम्भीर अधिक त्रिबली चित चोरै।
जामा झीन नवीन कनक द्युति दमकत कोरै॥
पीताम्बर कटि जनु तडित चचलता तजि कै रही।
कह बनादास नही कोटि मुख सोभा कवनो बिधि कही॥९८॥

पीन जानु मन हरै लसत रोमावलि सोभा।
कमल चरन को ध्यान भाग भाजन नहिं कोभा॥
नूपुर ध्वनि मन हरै तरै भवनिधि जेहि देखे।
तेहि पद सेये विमुख तासु गिनती क्यहि लेखे॥
अग अग बहु काम छवि अद्‌भुत रूप निहारि कै।
कह वनादास जननी चकित रही न सुद्धि सँभारिकै॥९९॥

मन्द मन्द मुसुकाय पूर्व की कथा सुनाई।
कौसल्या कर जोरि रही चरनन लपटाई॥
केहि बिधि अस्तुति करौ नाथ महिमा तव भारी।
नारद सारद सेप वेद चहुँ नेति पुकारी॥
मम सुत जा आस्चर्य बड जग उपहासी बात यह।
कह वनादास प्रभु प्रेमबस समुझाई सक्षेप मह॥१००॥

पुनि बोली कर जोरि तात तजिये यह रूपा।
कीजै वाल विनोद यहै सुख परम अनूपा॥
सुनि जननी के बचन वाल ह्वै रोदन ठाना।
जायो सुत कौसला मौन भीतर सब जाना॥
धाइँ दासी द्वार पर सुनि नरपति आनन्द अति।
कह वनादास पुर वाजने मगल गान अनूप गति॥ १॥

तुरित बोलि मुनि राय नन्दिमुख स्राद्ध क्राये।
सौमित्रा केकयीयऊ सुन्दर सुत जाये॥
राखे गुरु गुनि नाम राम लक्ष्मन रिपुसूदन।
भरत अमित परभाव कहत अति थकित सहस फन॥
स्याम गौर जोडी जुगल जननी निरखत मन हरन।
कह वनादास पुरजन सुखी मेरे जीवन प्रान धन॥ २॥

दिये द्विजन वहु दान आचकन किये अयाची।
लेनहार जनु धन दवात माना यह साँची॥

हय स्यन्दन अरु नाग दिये बाहन विधि नाना।
धेनु बसन पुनि अन्न अवनि किमि जाय बखाना॥
मनिमानिक कंचन रतन मन भावत भूपति दिये।
कह बनादास पटतर कहा सब नेवछावरि जो किये॥ ३॥

कीरति अमल अनूप अमित तिहूँ पुर में माची।
को पटतर कबिलहै मातु जौनी विधि राची॥
कबहूँ गोद विनोद कबहुँ पालने झुलावैं।
कौसल्या जुत मोद पौढ़ि पय पान करावैं॥
पीत झीन झँगुली लसत कुंचित कचग भुवार वर।
कह बनादास जेहि रस मगन कागभुसुंडी और हर॥ ४॥

कबहुँ भूप लै गोद कबहुँ जननी बलि जावै।
हलरावै दुलराय मगन मन सोहि लगावै॥
छबि निरखत तृन तोरि चोरि चित जात सुनाये।
कर पद चूमत बदन कबहुँ उर रहति लगाये॥
कौसल्या से सुख अवध गावहिं सारद सहसफन।
कह बनादास किमि पार लह सिव चतुरानन अगम मन॥ ५॥

राते कर पद अधर कुलहिया पीत सोहाई।
हरि नख सजत अमोल कंज दृग अति छबि छाई॥
कुटिल केस गभुवार सीस टोपी नृठि राजी।
तोपी सोभा काम अंग अगनित छबि छाजी॥
दुइ दुइ दसन सोहावने तोतरि बोलनि मन हरनि।
कह बनादास प्रभु बाल गति सकै न सारद स्रुति बरनि॥ ६॥

कटि किंकिनी अमोल पाँय पैंजनियाँ बाजैं।
करि केसरि को तिलक भाल अतिही छबि छाजैं॥
अंगुठो मेलत बदन किलकि कहुँ बाँह उठावैं।
नुनग पहुँचिया करन कहाँ पटतर कबि पावैं॥
कबहुँ झुलावत पालने गावत सोहिल मन हरन।
कह बनादास माता मगन उर लावत असरन सरन॥ ७॥

सुखसमुद्र में परी जात निसिदिन नहिं जानैं।
पय प्यावत उर लाय बाल लीलाकर गानैं॥

बहु मानिक मनि खचित अजिर सोभा जनु जागे।
सुभग राम सुखधाम घुटरुवन धावन लागे॥
कर गहि कौसल्या कबहुँ पगन सिखावत महि चलन।
कह बनादास पाटी पकरि खडे देखि भूपति मगन॥ ८॥

नृप उछंग लिये राम समय यक अधिक दुलारे।
गोद कौसला लषन लगे प्रानहु ते प्यारे॥
कैकेयी रिपुदवन लाय हिय सुख सरसावै।
सौमित्रा लै कांख भरत मन बहु विधि भावै॥
सुख सोभा भूपति भवन मौन लई सारदनि रखि।
कह बनादास आनंद समय हिय हुलसत को सक परखि॥ ६॥

केस झँडूले झोटि कबहुँ अति ही मचलावै।
लखि रुख भूख दुलारि दौरि जननी उर लावै॥
पियत पयोधर चोपि चपल चितवनि तिरछो है।
कबहूँ चलत पराय ठुमुकि नूपुर मन मोहै॥
स्याम गौर जोडी जुगल बिहरत नृप आँगन नितै।
कह बनादास आसन कमल मनहुँ देत महि अति हितै॥१०॥

अजिर मनि मयी खचित चरन विचरत चहुँ भाई।
पग पग पूजा कज देत अतिही छवि छाई॥
नख सिख सोभाधाम पीत झँगुली पहिराये।
अनखा अतिहि अनोख बघनहा चितहि चोराये॥
घुँघुवारे गभुवार कच रचे मातु मन लाय कै।
कह बनादास टोपी ललित कौन सवै कवि गायकै॥११॥

सुठि सोभा अवलोकि रहत तन सुधि नहिं माता।
मगन अतिहि वसुयाम कहाँ निसि औ दिन जाता॥
खेलन लागे खेल बधु चहुँ आँगन माही।
तृन तोरैं लखि मातु चरन पुनि पुनि बलि जाही॥
कनक खटोली प्याय पय कौसल्या पौढावती।
कह बनादास छवि अगम मन जब पटपीत ओढावती॥१२॥

अम्बर अमित विमान रहत निन ही सुठि छाये।
देखत बाल बिनोद देव बारिधि पट लाये॥

ब्रह्मादिक तेहि समय चहत दसरथ गृहबासा।
उत्कंठा उर अमित भये नहिं दासहु दासा॥
वृद्ध ज्योतिषी सम्भु ह्वै विपुल बार भूपति भवन।
कह बनादास उर प्रीतिबस बार बार करते गवन॥१३॥

कौसल्या पग नाय कमल कर राम देखावै।
परसत सिव चित लाय कहत लक्षन सुख पावै॥
मुनि मख राखन कहे बहुरि रिषि वधू उधारन।
तोरि सरासन ईस सीय ब्याहब जेहि कारन॥
इनहिं सुमिरि जोगीस सिधि भव संकट मेटत सदा।
कह बनादास महिभार ये हरि है संक्षेपै वदा॥१४॥

घनाक्षरी

माँगै चन्द्र खेलन को जननी बुलावै कर भावै नाहिं मचलावै हठकै अरतु हैं।
पात्र भरि पानी आगे धरे मातु आनी तात लोजै चन्दा चोपि धाय कर पकरतु हैं॥
आवत न हाथ मुख बावत सो खान हेत अतिहीं समीप देखि कबहूँ डरतु हैं।
बनादास ऐसे नाना चरित करत प्रभु जननी सकल पितुमोद को भरतु हैं॥१५॥

छोटे छोटे कर पाँय जाहि कंज सकुचाय छोटी छोटी करज नखन द्युति नोखी है।
पाँय पैंजनी कटि किंकिनी मुखर अति झँगुली नवीन झीनपीत छवि पोखी है॥
मातु रचे चिकुर तिलक सुवनाये भाल मानों प्रतिअंग में अनंग द्युति सोखी है।
बनादास अनखा अनोखे हरि नख उर सूरति संभारिन ससिख रूप जोखी है॥१६॥

पावत न पार सेष सारद समुद्र बुद्धि मसक के फूंक कहूँ उड़त सुमेर है।
दँतो दुइ दुइ दमकत हँसनि हरत मन कलबल बचन सुनत सुख ढेर है॥
ताकें तिरछौहैं बंक भौहैं सुठि नीक लागै बालक सरूप रूप धन के कुबेर है।
बनादास दूरि कहे ताहि सदा दूरि जानो कहे जो समीप ताहि निपटहि नेर है॥१७॥

कंजपाँय कंजकर कंजनैन कंजमुख नीलकंज देह द्युति मर्कत फीक है।
तुलै न जमुन नीर बारिधि गँभीर नाहिं उपमा सकल मानो कहन कि लीक है॥
सम न तमाल तरु गगन कि गनै कौन काम है न काम यातें कोटि गुना नीक है।
बनादास मानो जोत्र जरनि कि महामूरि कहै कोऊ कोटि मेरे मति यही ठीक है॥१८॥

आजु मचलावै रोवै पियत न क्षीर नीके काहू दुष्ट नारी की नजरि परि गई है।
अति अनरसे नेक कल न परत लाल जुगुति करत मोहिं बड़ी बेर भई है॥
धाइकै सुमित्रा लोनराई ले उतारे सीस तुरित अनल माहि ताहि नाइ दई है।
बनादास कौसल्या अमित दुचित्त देखि गुरुहि हँकार बेगि भेजे कैकेई है॥१९॥

आइ कुस हरे मुनि तुरित अनन्द भयो सिद्धि मंत्र नरसिंह टरत न टारे हैं।
किलक हँसत ठुनकत पय पीवै हेत जननी सचेत गोद राखि कै दुलारे हैं।।
पिये राम क्षीर सबही कि पीर दूरि भई कहत हमारे मुनिनाथ रखवारे है।
बनादास भानुकुल बिघन हरनहार सदहिं सँभार कै अनेक दुख टारे है।।२०।।

दिये दान द्विजन को जननी अनन्द जुत भूषन बसन मनिमानिक अमोले हैं।
रजत कनक अन्न धेनु मन भावत जे भूसुर असीस बर आनन सो बोले हैं।।
चिरंजीव सुत दसरत्थ चारि चिरकाल जवलगि महि न सुमेरु गिरि डोले हैं।
बनादास नेवति नेवांये वहु ब्राह्मन को पटरस भोजन असीपौ हिय खोले है।।२१।।

छप्पय

एक समय बिधि इन्द्र आदि सुर गवन किये हैं।
मिलन हेत कैलास सिवहि सुठि मोद हिये हैं।।
कीन्हें बंदन विनय हर्षि बोले वृष केतू।
कारन कहौ बुझाय अमर आयो केहि हेतू।।
सकल कहे दर्सन लिये अंतर्जामी आपु हर।
कह बनादास सिवकृपा करि कहे चरित प्रभु कछुक बर।।२२।।

राम लिये अवतार अवधपुर देवन लागी।
ब्रह्म सच्चिदानन्द दरस पावहिं बड़भागी।।
कबहुँ गयो कोउ निकट करत प्रभु बाल बिनोदहि।
बिहरत भूपति अजिर कबहुँ जननी सुठि गोदहि।।
कहे सकल सुर हरषि उर तुम अनुरागी राम के।
कह बनादास भूले विषय हम सब नहिं कोउ काम के।।२३।।

महादेव निज कथा सुरन सो सकल सुनाई।
जेहि बिधि आवत अवध राम दरसन ललचाई।।
उत्कंठा उखड़ी परै बिन लखे न चैना।
ब्रह्म धरे तनु भूप सफल कीजै निज नैना।।
राम प्रेम जागो हृदय गई लाज संकोच सब।
कह बनादास अभिमानगत प्रबल लालसा लखव क्ब।।२४।।

ब्रह्मा सिव गननाथ इन्द्र सब अवध सिधाये।
आये भूपति द्वार प्रेम मन मगन सुभाये।।

सुर समाज को देखि नृपति सुठि अचरज माना।
धाइ किये परनाम हेत मन को सब जाना॥
तुरित लयायो भूप गृह सकल सुरन सनमानि कै।
कह बनादास आसन दिये जया उचित पहिचानि कै॥२५॥

पुनि लाये रघुनाथ संग में तीनिउ भाई।
पाँच वर्ष वय बाल राम अतिही सुखदाई॥
ब्रह्मा आदिक देव देखि सब कीन प्रनामा।
भूपति नाये चरन सुरन के कहि कहि नामा॥
भागि सराहत अवधपति अपनी देव निहोरि कै।
कह बनादास सुर मगन मन बिनय करत कर जोरि कै॥२६॥

यकटक रहे बिलोकि मोद नहिं हृदय समाये।
रूपरासि रघुबीर काम कोटिन छबि छाये॥
प्रेरक सबके हृदय राम गति जानि न जाई।
विघ्न हरन गननाथ कहे ब्रह्मा हरषाई॥
करौ वेगि अभिषेक कुसल जेहि भूपति वारे।
गनपति सुड उठाय लगे फेरन अंग सारे॥
रोय उठे भय खाय कै किलकिलाय रघुबंसमनि।
कह बनादास यहि चरित को रस जानै तेहि भागि धनि॥२७॥

रूपखानि चहुँ बन्धु देखि सुर अति हरषाने।
पुनि पुनि रामहिं हेरि भागि बड़ि आपनि माने॥
धनि धनि दसरथ भूप धन्य कौसल्या रानी।
धन्य प्रजा परिवार अवध धनि धनि रजधानी॥
को कहि सकै प्रभाव को ब्रह्म धरयो जहँ भूप तन।
कह बनादास स्तुति नेति वेद अगम ध्यान जोगीस मन॥२८॥

पुनि पुनि किये प्रनाम सम्भु आदिक सुर सारे।
सहित भूप दसरत्थ सकल आये नृप द्वारे॥
देव सराहत सिवहि कृपा तव दर्सन पाये।
मान बड़ाई भूलि नहीं प्रभु देखन आये॥
तुरित सकल आदृस्य ह्वै निज निज लोकन को गये।
कह बनादास भूपति भवन रामचरित कृत नित नये॥२९॥

बड़भागी अति काग साग संग आँगन खेले।
जो जूठनि महि परै हरषि मुख में सो मेले॥

लघु वायस धरि देह बरष कृत पच नेवासा।
को जानै बिन नाथ पूर करि मन की आसा ॥
पुनि गवनत निज बास कहँ सुकृत भूरि को पार लह।
कह बनादास तेहि दसा की उत्कंठा विधि सम्भु पह ॥३०॥

बाल सग कृत गवन गलिन महँ राम कृपाला।
अनुजन सगै खेल सुभग खेलत नृप लाला ॥
बेर कलेऊ हेत जाय भूपति धरि लावै।
दूधभात मुख लाग समय लखि फेरि परावै ॥
धन्य सुकृत बासी अवध धनि धनि रानी भूप बर।
कह बनादास हौं धन्य पुनि लागो मन जेहि चरित पर ॥३१॥

घनाक्षरी

भयो स्रुति छेदन अवेदन अनूप अति मुडन सुचारि बन्धु धरी सुखदाई है।
छोटे छोटे मोती स्रुति देखि दुख दौन कोटि मोटि मति बनादास कौन भाँति गाई है ॥
गुरुपितुमातु मोद सुखद विनोद बाल हलक झलक अति मेरे मन भाई है।
उपमा ढँढोरि हारे सारद गनेस सेष सकर भुसुडि जिन चितहि चोराई है ॥३२॥

दिये द्विज दान घन याचकन सनमाना सकल असीसैं चिरजीव चारि भाई है।
अतिहि अयाची भये नाहिं और द्वार गये राम जन्म दान भरि जन्म जिन खाई है ॥
पुरजन परिवार कहै को अपार सुख आनँद अमित महिमडल मे छाई है।
वनादास लंक अहतक होत बार बार महूँवर भगति तेहि औसर मे पाई है ॥३३॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभय प्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनो नाम अष्टमोऽध्याय ॥८॥

चौपरि गजीफा सतरज नृप नाना खेल चकई भवँर घूमि वीथिन नचाई है।
कन्दुक लोकावत उडावत पतग कहूँ कहूँ कोऊ डोरिन ते डोरी काटि नाई है ॥
जीतैं कहूँ आपु कहूँ बहुरि जितावैं बन्धु ऐसे सुखसिन्धु मे न मान सरमाई है।
वनादास बादि जगजन्म गयो भलीभाँति ताके दिन राति बिधि लेखे मे न लाई है ॥३४॥

दडक

बालबिनोद अति मोददाय कबि पुलक रत जननी जनक हेत लागी।
अवधवासी युवावृद्ध नरनारि सब बालगन अति मगन परम भागी ॥
पाँय जूता जरी तरकसी कटि कसे पीतपट हरन मन को नमो है।
हाथ पग छोट छोटी कमनियाँ करे गरे मनिमाल संग सखा सोहै ॥

अवध बीथिन फिरत करत नाना चरित्र बन्धुजुत स्याम बर गौर जोरी।
सम्भु सनकादि नारद गवन बार बहु लखत छबि सींव तृन जननि तोरी ।।
जाइ बिधि धाम लीला बदत बालपन अतिहि नारद मगन सिथिल बानी।
पुलक तन सजल दृग देखि बिधि दसा कहँ सुनत चित लाय उर मोद मानी।
तृप्त नहिं लहत बरनत सुनत भाँति बहु चहत पुनि पुनि सुना सुचि बिधाता।
बनादास धिक्कार है बार ही बार तेहि जोन जलजात पद राम राता ।।३५।।

सवैया

पदपंकज जूती जरी छबि छाजत पीत पटा कि छटा सुठि सो है।
छोटि लिये धनुही अरु तीर कछोटी कसे उपमानहिं को है ।।
छोटि लसै कटि तून सुहावन छोटा है बैसन को लखि मो है।
छोटी भई छबि कोटिन काम कि दासबना सरजू तट जो है ।।३६।।

बिहरै जेहि बीथिन राम कृपाल रहैं जनु चित्र से लोग घनेरे।
बालजुवा अरु वृद्ध बिलोकत रोकत हैं पट नयनन केरे ।।
भाई समेत सखागन संग में रंग भरे सोइ जान जो हेरे।
कोटिन काम बिकैं बिनदाम ही दासबना तेहि चरन को चेरे ।।३७।।

छप्पय

भये कुसल हय केलि पेमि बाजी दौरावत।
स्यामकरन बर बिसद कौन कबि पटतर पावत ।।
जीन जरक सी लसी बसी कलंगी सिर सोहै।
किंकिनि ललित लगाम दाम बिन मन मोहै ।।
मुख पट्टा पुनि पूज है जेरबन्द गोड़न कड़े।
कह बनादास कसि तंग को द्युति रकाब लखि चित अड़े ।।३८।।

गंडा बर गर बसै लसै दुमची छबि छाई।
जेर कड़े अति रूर देत मम रेज दवाई ।।
तरफरात अति कान भूमि टापन ते फालै।
उझकि उझकि असमान अस्व मारुत गति चालै ।।
आल पूंछ मोती लसै कसे जानु जनु जात कढ़ि।
कह बनादास उर जो हुई मनहुँ वेग ते जात बढ़ि ।।३९।।

लदे सुभग गजगाह राह नहिं तुरँ निहारत।
मनहुँ गगन मग चलत चपल प्रभु चितहिं सँभारत ।।

परे जाल पचरंग भंग कृत काम अस्व गति।
को कबि उपमा लहै भई सारदहु पंग गति॥
किधौं बाजि मनमथ भयो रामहेत जग मोहई।
कह बनादास कोटिन कला लला नृपति सुठि सोहई॥४०॥

सिर टोपी सुचि टँगी रँगी सब जी मन भाई।
लसत कनक बर कोर मनहुँ दामिनि दमकाई॥
अलक अहिनि के बाल छुधित लपटे लटके है।
मेचक कुंचित अतिहि अवलि अलि ते चटके हैं॥
जुगल स्रवन बाला सुभग हलक झलक ही को हरत।
गति बनादास कासों कहै नहि चित से टारे टरत॥४१॥

आनन जनु ससि सरद दरद जानै जेहि खटकै।
अधर अरुन द्विज सघन मन्द बिहँसनि मन अटकै॥
दृग सरोज रतनार बंक अवलोकनि भावै।
भ्रू जनु कामकमान बहुरि उपमै लघु आवै॥
तिलक भाल सुबिसाल है उभय रेख कासों कही।
कह बनादास दामिनि अलप जनु चंचलता तजि रही॥४२॥

कीरतुड नहि तुलत नासिका सुठि मन हरनी।
मकंत बरन कपोल सकै छबि कबि को बरनी॥
चोरत चित को चिबुक कम्बु कलग्रीव सुहाये।
वृषभ कंध अति पीन कन्ध हरि लघु उपमाये॥
भुज प्रलम्ब करि कर सदृम बलनिधि अगम अपार है।
कह बनादास दसग्रीव से भट बहु बूडनहार है॥४३॥

कर कंकन केयूर मुद्रिका करज बिराजै।
कोड़े पंकज पानि एक बरछा छबि छाजै॥
जामा झीन नवीन कमर पटपीत सुहाई।
कसि असि अद्भुत उभय चर्म पीठि अतिभाई॥
पीन जानु जूती जरी तुरै पीठ प्रभु राजते।
कह बनादास अँग अंग पै अगनित मनसिज लाजते॥४४॥

भरत लषन रिपुदवन पवन गति अस्व बिराजे।
को कबि गरन जोग अतिहि प्रति अँग छबि छाजै॥

नखसिख सोभा सींव कनक मर्कत जुग जोरी।
स्रुति सारद सकुचात मनहुँ प्रति अंग ठगोरी ॥
विपुल महीप कुमार है रामसखा सँग सोहते।
कह बनादास असवार बर बाजी मनसिज मोहते ॥४५॥

बिहरत बीथी अवध अवधि सुख मानहु याते।
जो देखे चहुँ बन्धु गगन मग सुर ललचाते ॥
आवत सरजू तीर वीर चहुँ सखा समेता।
पुरवासी लखि मगन कहैं को आनँद जेता ॥
समय जानि आये भवन सखा सहित भोजन किये।
कह बनादास अवसर निरखि रघुकुलमनि जूठन दिये ॥४६॥

एकबार जुत बन्धु सरजू तट खेल बनाई।
गनि गनि ग्वैयाँ बाँटि लिये सुख ते दोऊ भाई ॥
लपन भरत यक ओर भये सब भाँति सचेता।
रिपुसूदन रघुनाथ एक दिसि केलि के बेता ॥
है चढ़ि चढ़ि खेलन लगे कन्दुक बाजी लाइकै।
कह बनादास पुरजन लखत अति उर मोद बढ़ाइ कै ॥४७॥

गगन बिमानन देव देखि आनँद को लूटैं।
जलद पटल को लाय अमित कुसुमावलि छूटैं ॥
एक कहैं जै राम कहैं यक भारत भैया।
निज निज दाँव बिचारि बात बोलत सुख दैया ॥
नीलसिन्धु रघुबंसमनि कहै जीतिभै भरत को।
कह बनादास यह प्रीति गति कवि उपमा अनुहरत को ॥४८॥

भाई भरत की जीति रहे महि नयन नवाई।
सकुच सील अस्नेह थाह कोउ कैसे पाई ॥
अति प्रसन्न रघुनाथ दिये बाजी जो हारे।
भरत जीति की खुसी बेगि सेवकन हुँकारे ॥
लावहु स्यन्दन नागवर अस्व चर्म असि भूपने।
कह बनादास लाये तुरित वस्तु अनूपम अनगने ॥४९॥

दिये सपन बक्सीस अस्व गज मोती माला।
कंकन अरु केयूर पीत पट बिपुल दुसाला ॥

काहू को धनुबान चर्म असि काहुहि दीना।
काहू को रथ दिये वस्त्र पुनि काहु नवीना।।
हीरा हेम अनेक मनि अपर याचकन को दिये।
कह बनादास भायप भली रहत टिको हरदम हिये।।५०।।

अवध गलिन यहि भाँति करत प्रतिदिन नवलीला।
मगन रहत पुरलोग सराहत प्रभुगुन सीला।।
चतुर्व्यूह अवतार भयो परब्रह्म अनूपा।
जेहि सेवत मुनि सिद्ध वेद पुनि नीति निरूपा।।
सिव चतुरानन सूरससि जासु अस ते अनगने।
कह बनादास पूरन सकल ब्यापक सचराचर घने।।५१।।

अचल सकल कूटस्थ रूप जाके नहिं रेखा।
अलख अगोचर अगम बुद्धि मन बचन न लेखा।।
निरालम्ब निरपेक्ष आदि मधि नहिं अवसाना।
सुद्ध निरम्र निर्बच्य निरुपम निगम बखाना।।
अज उत्कृष्ट अनीह सुचि पुरुषोत्तम पावन परम।
कह बनादास निर्गुन निरस कबहुँ न कोउ जानत मरम।।५२।।

सर्बरूप सब रहित सच्चिदानन्द अभेदा।
परिपूरन चैतन्य एकरस गावत वेदा।।
अतिसूक्षम अनुरूप परात्पर प्रेरक सर्बा।
अन्तर्जामी सकल अयोनि प्रहारक गर्बा।।
सो दसरथ सुत भक्तिबस वासुदेव नरतन धरयो।
कह बनादास भवतरन को जनहित बहु लीला करयो।।५३।।

एक बार किये गवन सरजू तट हित अस्नाना।
चारिउ भाई संग मरम भूपति तब जाना।।
दान देन के हेत बस्तु भेजी बहु पाछे।
धनदौ मोह न जोग अपर केहि देवै साछे।।
करि मज्जन रघुबंसमनि बिपुल खेल जल खेलते।
कह बनादास वै थोरि गति एक एक गहि मेलते।।५४।।

अमित सखा प्रभु संग द्विजन दिये दानध नेरे।
हय हाथी गोवत्स बिपुल अन्नन के ढेरे।।

भूषन बसन बिचित्र बिबिध मनिमानिक दीन्हा।
कनक रजत अरु ताम्र अयाची भूसुर कीन्हा॥
बहुत दान दिये जाचकन मनभावत रघुनाथ जू।
कह बनादास को पार लह सुचि स्वभाव गुनगाथ जू॥५५॥

चहुँ दिसि देत असीस मोद मन ब्राह्मन भाटा।
चिरंजीव चहुँ बन्धु बढ़ै दिन प्रति नृप ठाटा॥
नभ बिमान नगिचान बिपुल सुर मोद बढ़ावैं।
लखि लखि चरित्र बिचित्र चित्र निज हृदय बनावैं॥
काक पक्ष सुखवत खड़े मनि पानिन रघुवंसमनि।
कह बनादास चहुँ दिसि सखा बन्धु सकै को कबि बरनि॥५६॥

सकैं न सेस सराहि सारदा पंगु अतिहि मति।
अपर कौन कहि सकै थकै गननायहु की मति॥
अंग अंग मन हरै टरै चित से नहि टारे।
सुख जाने जन सोय जौन यहि भाँति निहारे॥
काम कोटि सत वारिये तदपि न बनि आवत कहत।
कह बनादास कृत कृत्य ते मगन ध्यान जे यहि रहत॥५७॥

भई बेर तेहि बार भूप मग बैठि निहारे।
भोजन हित अति काल बेगि आपुहि पगु धारे॥
पितु आवत प्रभु देखि सील संकोच अमित चित।
कर गहि चले लेवाइ रामजुत बंधु सहित हित॥
नृपति संग भोजन करत जननी निरखत मुदित मन।
वहा बनादास रघुवंसमनि मेरे जीवन प्रानधन॥५८॥

धनु बिद्या में कुसल कला असि परम प्रबीना।
देखि नवा नित चरित भूप मन जिमि जल मीना॥
छमा सील सुचि सरल क्रोधजित इन्द्री रामा।
अति उदार उपकार करत सुठि परहित कामा॥
पिता मातु बन्दत गुरुहिं नित ही सहज सनेह करि।
कह बनादास अनुजन विषे अति अस्नेह न सकत टरि॥५९॥

भूसुर भगति विसेषि संत मुनि जन सनमानत।
पूर्वाभाषि वानि प्रजा पुरजन सुठि जानत॥

सकलौ बिद्या कुसल वेद मग रुचि सरसाती।
राजनीति अति निपुन अमित गुनगन की पाँती ॥
गुरुपितुमातु प्रजा नगर बन्धु बिप्र सेनप सचिव।
कह बनादास गुरु ज्ञातिगन रामै सबके प्रानजिव ॥६०॥

रामरूप जल मनहुँ भयो सबको मन मीना।
तृप्त लहत नहिं कोऊ दिनौ दिन नेह नबीना ॥
नवा नवा नित चरित सकल मन मोहन हारा।
घर पुर बीथी माहिं करत चहुँ बन्धु उदारा ॥
भूप मोद को पार लह कहि न सकहिं सहसहु वदन।
कह बनादास पटतर नही सिथिल मनहुँ सारदहुँ मन ॥६१॥

फनिमनि ज्यों जलमीन कमल रबि प्रीति बिसेखी।
जैसे चन्द चकोर और केकी घन पेखी ॥
लोभी धन अस्नेह बिबिध इतिहास पुराना।
कहत सुनत सब कोऊ जहाँ तक जाकर जाना ॥
नृप दसरथ सो हद्द है सबहिन के सिरमौर जनु।
कह बनादास ऐसहु कहत जानि परत सकुचात मनु ॥६२॥

दंडक

अल्पही काल मे सकल गुनधाम प्रभु राम गुरुमातुपितु भगति भूरी।
सकल सतुष्ट मन पुष्ट लखि प्रीतिगति बुद्धि मन तनहु की नेह तूरी ॥
बन्धुजुत सखा सजि नाग स्यन्दन तुरै विपुल नृपतनय बरवीर बाँके।
सचिव सुत सैन को साजि सरदार सुठि देस औ नाम नहिं पार जाके ॥
साहनी सूर सेनप सकल मोदजुत रुचि अहे रहि चबहुँ 'बपिन जाही।
कुही औ बाज जुर्रा विपुल बाहरी लगर सिकरा अमित साथ माही ॥
भाँति अनेक डोरी गहे डोरिया सकल सँभारि कुत्ता कुदावें।
परक चोखे चपल वेग मन पवन गति देखत हि मृगाधारि धाइ खावें ॥
कुसल खेटक कला राम भाइन सहित जाइ बन मध्य मृगया कराही।
रीछ बाराह बहु ब्याघ्र मारत मृगा मोद सरसात सुठि हृदय माही ॥
बधे निज बान जेहि राम सुरधाम गे विपुल तप जज्ञ व्रत जाहि लागी।
तेई पद लहत पसु योनि पुनि सहज मे अतुल महिमा तुरित तनहि त्यागी ॥
मृगा पावन करत घात करुनायतन अपर जीवन नही हतत कोपी।
ब्याघ्र और सिंह जे जीवघाती बिपुल बचत नहिं हेरि कै बधत चोपी ॥

अवध पूरुब दिसा सघन कानन परम कोस द्वै पंच पुनि सरजू तीरा।
बिपिन विहार करि विविध मन भावते समय यक गये रघुबंस बीरा॥
समय तेहि महिप मारे बिपिन जाइ यक तुरित तन त्यागि भो देवरूपा।
जोरि कर करत अस्तुति बिबिध भाँति से जयति रघुवंसमनि अवध भूपा॥
योनि पशु लहे बस साप करुना भवन भयो उद्धार प्रभुबान लागे।
जात निजधाम श्रीराम परसाद करि देख बहुलोग जनु नींद जागे॥
समय सन्ध्या निरखि गौन पुर दिसि किये राम सुखधाम करि बिपिन लीला।
सरजू तट चले सब लोग निर्भर हरष परख ते चरित यह मनन सीला॥
आइ पद वंदि पितु अग्र बहु मृग धरे व्यग्रचित चकित जनु प्रकृति रीती।
भूप उर मोद को पार पावै बरनि तरनि कुल केतु बसि जाहि प्रीती॥
नवानित चरित अवलोकि पितुमातु पुनि नगरबासी अहोभागि मानै।
बनादास अस्नेह सुख देह की नेह कह दिवस अरु राति नहिं जात जानै॥६३॥

घनाक्षरी

तिहूँलोक तिहूँकाल चहूँजुग चहूँवेद रावन से भयो नाहि नहिं होनिहार जू।
ह्वै कै तबै रावन न दूजो आनि भाँति कोऊ जाके हेत लिये रघुनाथ अवतार जू॥
रावन से रावन औ राम सम राम एक उपमा न कहूँ करै कोटिन बिचार जू।
वनादास बस भयो सकल कटाह अंड दंड मुनि दिये नाहि वोलो एक वार जू॥६४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम नवमोऽध्यायः॥९॥

सवैया

वेगि सिधाउन दूत तहाँ अति भीर महामुनि है जेहि ठाँई।
लावहु दंड चुकाय सबै सुनकै गिरि खोहन जाहि पराई॥
सीस नवाव चल्यो दससीसहि खोजतु हैं ऋषि केरि अथाई।
दासबना हरि की मरजी सब काहू को एकहि ठौरहि पाई॥६५॥

घनाक्षरी

विस्वामित्र अंगिरा मरीचि भरद्वाज मुनि चमस अगस्त्य जहँ लोमस आसीन है।
अत्रि अरु चन्द्रमा पुलस्त्य वामदेव ऋषि रहे जाज्ञवल्क्य योगेस्वर प्रवीन है॥
शृंगीऋषि गौतम औ गर्ग वालमीकि भृगु प्रागमध्य गयो दूत रावन मलीन है।
बनादास सीस नाय कहे लंक ईसचर पूँछत कुसल सब बोलो बैन दीन है॥६६॥

कुसल सिरानी नाथ उर अनुमानी निज मांगतु है दड तुम सन बरजोरी जू।
कितौ गिरिकन्दरा पराय जाहि बेगि सब जानै न प्रताप भूरि बसै महि मोरी जू ॥
सुनिकै प्रसग मुनि तुरित मँगाये कुम्भ सबै मिलि दिये निज सोनित निचोरी जू।
बनादास घट उघरत लकपति नास होय यही बात कह्यो मतिमन्द भई तोरी जू ॥६७॥

सवैया

लै घट गौन किये गढ लकहि जाइ दसानन सीस नवाई।
सारो प्रसग कहै तब दूत समै तेहि भय उर मे अति आई ॥
घीर सँभारि कहे दसकन्धर लै अबही दिसि उत्तर जाई।
पर्बत के ढिग गाडि महीतल दासबना चर वेगि सिधाई ॥६८॥

आइ दुकाल पर्यो मिथिलापुर वृष्टि बिहीन प्रजा भे दुखारी।
अन्न नही उपजै कोउ भांति से पडित बोलि बिदेह बिदेह बिचारी ॥
ब्राह्मन लोग कहे हलजज्ञ करौ तबही बरषै जल भारी।
दासबना सो उपाय किये उतसाह समेत महोपति सारी ॥६९॥

घनाक्षरी

चामीकर हल मनिजटित बनाये बेगि कपिल बरन जुगवृषभ मँगाये हैं।
हस कैसी जोडी अति सोभा न बरनि जात उभय विपान सुचि कचन मढाये हैं ॥
रजत ते रचे खुर बसन ओढाये दिव्य मोती मनि मजुल सो पूँछ को गुन्हाये हैं।
बनादास पुगीफल कदलौ रसाल रोपे ध्वज औ पताक तोरना ते छबि छाये हैं ॥७०॥

मगल दर बिपट भूपन मँगाये भूरि दधिदूर्व रोचन औ लाजा अधिकार जू।
पान फूल स्रग नाना भांति के मँगाये भूप सुरभी सरपि नय बेदि बहु भार जू ॥
कचन कलस मनि दीपक बिराजमान बनादास देखे बनै कहै को बहार जू।
सुद्ध करि भूमि थल रचे है विचित्र चौक कचन रजत मनि बिबिध प्रकार जू ॥७१॥

हवनकुड कलित त्रिकोन को बनाये सुद्ध विपुल साकल्य करि होम नृप किये हैं।
महिसुर साधु मुनि अमित जिवांये भूप ब्यंजन बखानै कौन स्वाद सुठि हिये हैं ॥
रचे पकवान जिन तिन से सयान कौन अमी के समान बहु दक्षिना को दिये हैं।
बनादास कर जोरि सबहि निहोरि निमि पाइ पान परम प्रसन्न सब जिये हैं ॥७२॥

उत्तम बैसाख मास सित पक्ष नौमी तिथि उभय याम आयो दिन भूप हल नहे हैं।
गनपति गौरि गुरु भूसुर मनाय सिव कचन कि मूठि तब कज कर गहे हैं ॥

बनादास अति ही प्रकास चहुँ पास भयो सीता वाझो सीता घट चकित से रहे हैं।
खोले कुम्भ रिषयकुमारी देखी दिव्य द्युति परम अनन्द निज सुता नृप कहे हैं ।।७३।।

मोद न समात उर द्विजन को दान दिये धेनु मनिमानिक बसन वहु जाति जू ।
दिये भूमि भाजन औ वाहन अनेक विधि जाचक अयाची भये भले भले भाँति जू ।।
जनक से जायमान जानकी सुनाम धरचो आयो भूप भौन भागि कहि न सिराति जू ।
बनादास रूप तेज बल वुद्धि रिद्धिसिद्धि राजकाज मर्याद नितै सरसाति जू ।।७४।।

पाय समाचार मुनि नारद गवन किये भूपति विदेह धाय अग्र सिर नाये हैं ।
धारे धूरि सीस रिषि अवसि असीस दिये सादर सहित सुचि आसन कराये हैं ।।
अहो भागि आजु तव दरस विकार नास चरन पखारि सब भवन सिचाये हैं ।
बनादास बिधिसुत विविध प्रसंसा किये निमिराज सम नृप और कौन जाये हैं ।।७५।।

कर जोरि अमित निहोरि रिषि वार वार नृपति भवन लाय सुता पद नाये हैं ।
जानकी दरस पाय मुनि उर मोद महासीता ऐसो नाम कहि कथा को सुनाये हैं ।।
सक्तिन की सिरमौर आदिसक्ति सुता तव निगम पुरान नीति जाको जस गाये हैं ।
अहोभागि भूप जेहि गृह अवतार भयो सुकृत तुम्हार कहि पार कौन पाये हैं ।।७६।।

पुरुष पुरान परधाम ब्रह्म रामनाम औधनृप दसरथ गृह अवतरे हैं ।
देवन उबार महि भार के हरन हेत साधु द्विज धेनु को दुसह दुख दरे हैं ।।
कीरति कलित तिहुँ लोक में प्रकास ह्वै है तिहूँ काल चहूं जुग गाय जन तरे हैं ।
बनादास महामहा भूपन को.मान दलि तेई तव पुर आय जानकी को वरे हैं ।।७७।।

सुनि मुनि वचन मगन नृप वार बार मानौ ब्रह्मानन्द ते अधिक सुख पाये जू ।
भामिनी भवन मोद जानकी विनोद बाल ततकाल समय तेहि नारद सिधाये जू ।।
पुरजन प्रजा सुखी भयो जल महावृष्टि सीताजू की प्रापति परमसुख छाये जू ।
बनादास भूपति भवन सिसु खेल करैं दिन प्रति नये नये कवि कौन गाये जू ।।७८।।

मातुपितु परिजन जानकी चरित्र देखि परम पवित्र सब सुखी निसि वार है ।
मातु दुलरावै प्रिय पालने झुलावै नाना रीति को सिखाय अति करत पियार है ।।
दिन प्रति चन्द्रमा की कला सी सयानि होति नाना गुनखानि रूपखानि अधिकार है ।
बनादास कछु काल वीते पै विदेह उर समय एक आवत भो ऐसन विचार है ।।७९।।

निज सुता जाहि को बिवाहै ताते नीच होत ब्याहै न नतो वेद विधि परत विरोध है ।
धरम में बाधा सारी सृष्टि को प्रजाय यही चहूँजुग तिहूँकाल चहूँ स्तु ति सोध है ।।
ताते ऊँचो बात यह आपने से अति बड़ा ताहि कन्यादान किये होत मनोबोध है ।
सर्व अंग प्रबल प्रताप होय भलीभाँति बनादास ताते यही चित को निरोध है ।।८०।।

सवैया

भारी सरासन संकर को जुगखंड करै सोइ सीय बिवाहै।
होइ स्वयम्बर याही प्रकार ते जामे सबै जग लोग सराहै।।
कन्या ते जो वर होय बिलक्षन सर्ब प्रकार मिटै उरदाहै।
दासबना प्रन कीन हृदै हठ है अब ईस्वर हाथ निबाहै।।८१।।

घनाक्षरी

जानकी प्रताप गुनसील बल जानि करि जनक नरेस सब भाँति मे सयान है।
ऐसी हठ प्रबल प्रतिज्ञा तेहि हेत किये सुकृत के सीव ब्रह्मलीन मे प्रमान है।।
सूर धर्मवान धरि बीरन मे महाबीर साधुता मे दूजो नाहि जानत जहान है।
बनादास सूत्रधर प्रेरक सकल हिय बीस बिस्वा ये ही मेरे उर अनुमान है।।८२।।

माघमास सित पक्ष द्वितिया और सुक्रवार सम्बत भरे को सुठि सकल पलाये हैं।
गुनी बोलि जज्ञ थल रचना बिचित्र किये कंचन के मंच चहू पास मे बनाये है।।
एक ऊँच ऊँचेहू ते एक नीच नीचेहू ते चारि बिधि चित हरै बरनि न जाये हैं।
बनादास बैठे तहाँ जथाजोग नारिनर उपमा कहन को न कबि जन पाये हैं।।८३।।

सफल रसाल रम्भा तरुवर पुगी रोपे मनिन के भाँति भाँति लखा नहि जाये जू।
मनि के नेवारवन्द मदन के फन्द मानो तने है चँदेवा चारु चितहि चोराये जू।।
ध्वजा औ पताक भूरि फहरात दूरि तक गुनिन अनेक भूप प्रतिमा बनाए जू।
कोउ धनु तोरत उठावत धरत कोऊ कोऊ कर लिए कोऊ भंग करि माये जू।।८४।।

तम्बू औ कनात आसपास मे अनेक खडे रितु रितु माफिक बनाव बहु भये हैं।
उपमा न लहै कहै कौन भाँति कवि कोऊ बडे बीतरागिन को मन हरि लये हैं।।
ताहि मध्य संकर सरासन को आसन है जा सन न कोऊ जोग तोरन के भये है।
बनादास भानुबंस भूषन करैंगे भंग नारद से महामुनि आगे कहि गये हैं।।८५।।

रचे बर बाहन तुरग नाग भाँति भाँति सूरवीर भारी भट सजग सदाई है।
सैन चतुरंगिनी अपार को बखानि सकै कोट चहुँ पास अति चौकस बनाई है।।
भारी भारी तोपैं तापै लागी हैं बिबिध भाँति दगै सुबूसाम नहि कानदीन जाई है।
बनादास जगी ठाट सकल बनाय भूप जहाँ तहाँ देस देस पत्रिका पठाई है।।८६।।

महल मकान नाना सकल सवारे भूप बाहेर औ भीतर अनेकन प्रकार जू।
सचिव महाजन औ धाम सूरबीरन के बनये बिचित्र जनु देवन अगार जू।।
सहर बिलोकि सुरनायक सहमि जायँ बनादास सोये सब भाँति से बजार जू।
बिधि की निपुनताई मानो सब तोपि गई कहै कौन जहाँ जानकी को अवतार जू।।८७।।

मिथिला निवासी मानो महासुख रासी लाजैं देवलोक वासी कौन उपमा के जोग है।
घनद सुरेस जासु सम्पति सिहात देखि नीचन को भौन सुर दुर्लभ भोग है॥
रूपवान तेजवान सीलवान गुनवान धीरवान बुद्धिवान बलवान लोग है।
वनादास पंडित प्रवीन परमान वाले भूलेहु स्वपन में न काहू सोग रोग है॥८८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनो नाम दसमोऽध्याय: ॥१०॥

कौसिक बसत तट गंग घनकानन में जपत जोग मख करें मन लाय कै।
रहैं चित्त ब्यग्र अति पावत कलेस मुनि राक्षस करत बहु विघन को आय कै॥
जज्ञ समय रक्त केस मज्या नख वृष्टि करें त्वचा अस्थि नाम बहु सकै को गनाय कै।
वनादास हृदय विचार किये एकबार ब्रह्म अवतार भयो औधलावो धाय कै॥८९॥

प्रीति जोग पात कीन साप दिये महापाप ताप आनि भाँति ते न मिटैगो मिटाये जू।
वर्षा व्यतीत मनोराज उर बारबार चले भास क्वार नहिं बार नेक लाये जू॥
जाके हेत जोग जज्ञ नेम तप कोटि भाँति वेद चहूँ नेति नेति जाहि नित गाये जू।
सम्भु उरवासी बसै मानस भुसुंडि जोई वनादास कठिन से कोई ध्यान पाये जू॥९०॥

अहोभागि अमित उदय मम आजु भई आनंद को सिन्धु राम देखिहौं सुभाये हैं।
जनदुख हरन परन जासु सब काल ताही हेत धरे नरतन सुनि पाये हैं॥
मेटैंगे विसेषि सोच संकट सकल भाँति अतिहि अनंद मन औधपुर आये हैं।
वनादास रामघाट किये अस्नान मुनि नृप दरवार काहू खबरि जनाये हैं॥९१॥

मुनि आगमन सुनि विप्रवृन्द संग लिये नृप दसरथ लेन अग्रही सिधाये हैं।
करिकै प्रनाम पदकंज धूरि सीस धरे कौसिक हरषि उर नृपहि लगाये हैं॥
मंगल कुसल बूझि भवन को लाये भूप अति ही विचित्र सुचि आसन कराये हैं।
बोले जुत बंधु राम आये हैं रजाय मुनि अनुज सहित मुनिपद सिर नाये हैं॥९२॥

दिये हैं असीस राम देखिकै विसेष सुख नखसिख हेरत निमेष विसराये हैं।
सोभा के समुद्र प्रति अंग कोटि काम वारैं कविजन कहत सकुचत वो पाये हैं॥
परम छुधित जिमि मुदित सुना जपाये भोजन करत त्यों त्यों भूख अधिकाये हैं।
जैसे कंजभानु उदय वारिधि मयूर पेखि जौनी विधि चन्द्रमा चकोर डीठि लाये हैं॥९३॥

सजल नयन तन पुलकन बानी आवै नील वारिधर मर्कत द्युति फीक जू।
स्यामकज उपमा तमालतरु कौन देय रघुबीर तन काति इनहूँ ते नीक जू॥
राते दीर्घ नेत्र भ्रुव बक है विसाल तिलक रसाल बनादास छबि लीक जू।
अग अंग सोभा कहि सारद लजाय जात रोम रोम पर कामवारि एक तीक जू॥६४॥

असित कुटिल केस काकपक्ष के अमोल मानो अलि अवलि सघन अति बसे है।
कैधौं नागिनी के छौना छुधित कुसित बहुल पटि लपटि रहे पटसरन से हैं॥
कीर तुड नासिका दसन बीज दाडिम से अधर अरुन मानो अमीर सरसे हैं।
बनादास चन्दमुख मद मुसकानि लखि कौन ऐसो धीरवान रहै मन कसे हैं॥६५॥

कंध हरि कम्बुग्रीव मोतिन के माल उर भुज है विसाल जज्ञ पीत छबि छाई है।
मर्कत सिखर से कैधौ गगधार धसी कैधौं हस पाँति घन निकट उडाई है॥
कैधौं धनु इद्र उदय भयो स्याम घटा बीच पीत पटा छटा कवि उपमा न पाई है।
बनादास कवन करनहे के उर चारु काम करि करहू को निंदत सदाई है॥६६॥

नाभि अलि जमुन की त्रिबली अतीव छबि कवि को सराहै कटि लाजै मृगराज की।
जानु पीन काम भाथ पारगुन गाथ कौन रोमघन सजै सुठि सोभा सिरताज की॥
पक्ज चरन पृष्ठ अति ही वरन स्याम जीवनि है प्रान सदा मुनिन समाज की।
बनादास उमँगि उमँगि उर ही मे रहै कहैं मुनि कौसिक घरी है धन्य आज की॥६७॥

नखद्युति कमल दलन जनु मोती बैठी कैधौ तारागन आय किये पाय धाम है।
स्यामगौर जोडी सोभा कहि पार जाय कौन तामे सिरमौर सब भाँतिन से राम है॥
माने कृतकृत्य गाधिनन्दन अनेक भाँति रिपि गति देखि भूप उर अभिराम है।
बनादास पितुपास बैठे चारि भाई जाय इनते रहित प्रीति ताहि बिधि वाम है॥६८॥

पटरस भोजन कराये भूप भलीभाँति पाय तुष्ट भये मुनि अतिही सुखारे जू।
बैठे सुचि आसन महीप अस्नेह जुत सुधा सानि जनु मृदु वचन उचारे जू॥
हम सदा सेवक सकोच उर राखो जनि कही रिपिराय कौन हेतु पायँ धारे जू।
बनादास बेगही करत नही बार लावो अहोभागि आजु मम दरस तुम्हारे जू॥६६॥

राक्षस सतावैं मोहिं जप तप जज्ञ माहि जाचन के हेत नृप आये तव द्वारे हैं।
दीजै रघुनाथ जू को जाते पूरकार्य परै निसिचर बध जोग बालक तुम्हारे हैं॥
सुने बच्च सव गिरा हिये न सँभार भई राजन के राज मानो मरे विना मारे हैं।
बनादास चौथे पन पाये प्रिय प्रानपुत्र मुनि कैसे बचन कहत अविचारे हैं।१००॥

सवैया

जैसे जवास पै पावस नीर पर्यो अरविंद तुपार ज्यों भारी ।
चन्द्र मलीन भयो जनु वासर लोभाजया निज सम्पति हारी ।।
ज्यों बिन पंख भई खग की गति तैसी भई नृप की अनुहारी ।
दासबना न कहे बनि आवत बोलत धीर सँभारि कै भारी ।। १ ।।

माँगहु धाम धरा धन कोस औ धेनु तुरै रथ औ गज भारी ।
राज को काज कहौ तजि लाज को देत विलम्बन सम्पति सारी ।।
प्रान कहौ मुनि देउँ छनै महँराम सनेह न जात सहारी ।
दासबना गति देखि नरेस रहे उपमा कवि कोविद हारी ।। २ ।।

घनाक्षरी

कौसिक महीपगति देखिकै बिचारि बोले डरहु सनेह वस अति अविचारे हैं ।
बूझौ गुरुदेव वामदेव तौ स्वरूप कहै तुम्है पुत्र भाव नहि ताते जानहारे हैं ।।
बनादास आय कै वसिष्ठ सोच दूरि किये बोले वामदेव रामदेव देव सारे हैं ।
मंगल कुसल से भवन वेगि आवहिंगे तदपि न लहै तोप धीरधर भारे हैं ।। ३ ।।

अज्ञा भई भूप की भवन रघुनाथ गये मातन सो विदा माँगि पांय सीस डारे जू ।
जननी असीस दई बहुरि लगाय उर लपन सहित रघुबीर आये द्वारे जू ।।
पुनि पुनि हृदय लगाय भेंटे भूप अति मुनिहि सौंपि कर कहे बारबारे जू ।
बनादास पितु के समान आपु आन नाही जानिये विसेपि प्रानजीवन हमारे जू ।। ४ ।।

कसि कटि तून पट पीत नील सोभा अतिस्याम गौर जोड़ी सिंह ठवनि लजाये हैं ।
भारी भुजदंड चंड धरे धनुवान वीर कमलनयन मुखचन्द्र भल भाये हैं ।।
तिलक बिसाल काकपच्छ मोती स्रुति जानु पीन पांयन को जल जल जाये हैं ।
समै सम भूपन विहाय सब दूपन को साधु दुखहरन पयादे पांय धाये हैं ।। ५ ।।

सवैया

सरिता सर देखत कानन वाग रिषै संग लाग चले दोउ भाई ।
मोद अमात नही उर कौसिक मानौ दरिद्र महानिधि पाई ।।
हेत हमारे तजे पितु मातु सखा अरु सेवक औघ विहाई ।
दासबना जन दुःख निकंदन रामहि वेद पुरानन गाई ।। ६ ।।

जातहि दीन देखाय सो ताड़का एकहि बान में प्रान गँवाई ।
राम स्वभाव प्रसिद्ध सनातन जानि दुखी निज धाम पठाई ।।

प्रेम समेत दिये फलहार सो पाय कै तुष्ट भये दोउ भाई।
अस्त्र औ सस्त्र समर्पन कै मुनि विद्या अनेकन भाँति पढाई ।। ७ ।।

औषधी युक्ति दिये बिधि कोटिन जाते लगै नहिं भूँख पियासा।
तेज घटै न बढै बल भूरि करै उर म सुठि बुद्धि प्रकासा ।।
आलस नीद बिनास करै कह दासवना सकलौ रुज नासा।
सो मुनि सर्ब दिये रघुनाथहि जा भृकुटी करि जक्त बिलासा ।। ८ ।।

कै तप दुष्कर पाये महेस से सो मुनि सर्ब दिये अनुरागे।
राम रजाय भई जबही रुचि से रिषि जज्ञ करै तब लागे ।।
आपु खडे रखवारी भये दोउ बधु भुजाबल सोवत जागे।
दासवना प्रभु ऐसे कृपाल भजै नहि पाँवर लोग अभागे ।। ९ ।।

घनाक्षरी

जाने जज्ञ करत मरीच औ सुबाहु धायो महादल दैत्य कीन कछू वार पार है।
रावन के सुवा नामदार बडे बीरन मे थानेदार पार सिंधु समर जुझार है ।।
सावन के घटासम आस्रम को घेरि लिये सोनित की वृष्टि करि दिये तेहि बार है।
थोरी थोरी बयस महीप कै कुमार उभय बनादास रहे तेई मख रखवार है ।।१०।।

सवैया

स्याम सरीर मनो गिरि मर्कत सोनित के कनका सुठि राजे।
मानो लसे बहुबीर बहूटी महा रनधीर समय छबि छाजै ।।
कैधौ तमाल पै लाल मुनी घनि दासवना उपमै जनु लाजे।
जज्ञ थली मे भली बिधि ते दोउ बीर स्वरूप सँभारि बिराजे ।।११।

घनाक्षरी

खीचि कै सरासन सपदि वान मारे राम तुरित सुबाहु मारि महि मे गिराये है।
धायो है मारीच कोपि बिना फल तीर हने एक सत जोजन समुद्र तट आये हैं ।।
कोप करि लषन कटक सारी नास किये घोखे वहूँ सी लौमि सुवचन पाये हैं।
बनादास गगन विमान देव जै जै भनै अस्तुति अमित झरि सुमन लगाये हैं ।।१२।।

मुनि महामोद दुख दुसह गलानि हानि हरे रघुवसमनि लोकवेद गाई जू।
कछु दिन तहँ रहि रिषन सनाथ किये नृपति बिदेह पाती एक दिन आई जू ।।
सहित समाज हर्षि चले तब गाधिसुत अतिहि सनेह सग लिये दोउ भाई जू।
बनादास आय भागि खुली मग लोगन की करै नैन सुफल बिलोकि रघुराई जू ।।१३।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखडे भवदापत्रयतापविभजनो नाम एकादसोऽध्याय ।।११।।

छप्पय

अति निर्जन रमनोक भूमि देखे मग जाता।
बूझे मुनि से बेगि कहे कारन यह ताता॥
रिषि गौतम की नारि भई पाषान साप बस।
चरन कमल रज चहत फेरि आइहि न समय अस॥
बिहँसि राम करुना भवन परसे पंकज पाँय से।
कह वनादास अति दिव्य तन प्रगटो सहज सुभाय से॥१४॥

पहिचानी प्रभु सद्य भूरि भागी अति भामिनि।
पुलक गात दृग नीर कंठ गद्गद गजगामिनि॥
धाय परी पदकंज बोलि मुख आव न बानी।
सम्पुट पंकज पानि करत अस्तुति हर्षानी॥
जय जय रघुकुल कुमुद बिधु दृग चकोर सिय सरद ससि।
कह वनादास भव रुज के दलि नाम सदा तुव कठिन असि॥१५॥

जय ताड़का सुबाहु कदन मुनि मख रखवारे।
जय जय कृपानिकेत सनातन पतित न तारे॥
जय खंडन सिव चाप दाप भूपावलि दाहक।
जनक सोक संहरन सदा सन्तन निर्वाहक॥
जय मिथिलापुर मोद निधि भृगुनंदन संसय समन।
कह वनादास वल्लभ सिया मेरे जोवन प्रानघन॥१६॥

पिता बचन प्रतिपाल श्रान विन वनहिं सिधारन।
अनुज जानकी सहित पितर केवट हठ तारन॥
चित्रकूट आसीन सुगति दायक सरभंगा।
वन विचरत जुत मोद सुतीछन प्रीति अभंगा॥
जय जय प्रभु करुनायतन दंडक बन पावन करन।
कह वनादास आनन्द मुनि सकल सोक संकट टरन॥१७॥

वधि विराध विरदैत्य भगिनि रावन कुदरूपा।
साजि सरासन धाय कनक मृग देखि अनूपा॥
खरदूषन अरु त्रिसिर प्रवल मारीच विदारन।
कृपासिंधु रघुवीर गीध सवरी उद्धारन॥
बालि बधन सर एक ही पुनि सुकंठ कपिराज कृत।
कह वनादास रघुबंसमनि जोरि कटक प्रभु हित सहित॥१८॥

लघि सिंधु सुत पौन दौन लका रजधानी।
मर्दि निसाचर चमू दलित रावन मदमानी ॥
पाय जानकी खोज चलत नहिं वार लगाये।
प्रबल भालु कपि सैन सेतु पायोधि बँधाये ॥
जयति विभीषन अभयप्रद दलि दूपन जन गुन गहित।
कह बनादास अनुराग उर सम्भु थापि विधिवत सहित ॥१६॥

महाकटकजुत अनुज लघि सद्यहिं वारीसा।
जोरि अनी अति रूर नगर गरसित दससीसा ॥
अति कराल रिपु दनुज भालु कपि मर्दन कीना।
प्रबल पराक्रम बीर लक राक्षस करि हीना ॥
कुम्भकरन घननाद पुनि जयति राम रावन हने।
कह बनादास सुर मोदयुत आय अमित अस्तुति भने ॥२०॥

जयति पुष्पकारूढ जानकी अनुज समेता।
भरत विरह सतप्त मिले प्रभु कृपानिकेता ॥
अवधपुरी आनन्द जोति लका गृह आये।
जयति भाल अभिषेक चमर अरु छत्र सोहाये ॥
जयति जयति अवतार वर ब्रह्म भार अवनी हरन।
कह बनादास करुनायतन मोहिं अवसि पावन करन ॥२१॥

यहि प्रकार मुनि कहे मोहिं ऐसे रघुबीरा।
धरि तन परसै पाँव पाइ है सुद्ध सरीरा ॥
साप दीन हित कीन अनुग्रह मैं अति माना।
परसे पावन चरन कवन जग मोहिं समाना ॥
रामकृपा दहि दुसह दुख गइनि जगतिहिं अनन्दजुत।
कह बनादास प्रभु लपन सँग गवनत भे तब गाधिसुत ॥२२॥

आये सुरसरि तीर मुनिहिं बूझे रघुराई।
कहे सकल परसग गग जैसे महि आई ॥
कीन्हे रिषि असनान बन्धु दोउ मज्जन कीन्हा।
बोले विप्र अनेक दान अवसर सम दीन्हा ॥
हर्षि चले तव जनकपुर अवलोकत नरनारि मग।
कह बनादास दोउ कुँवर कहँ कह तनपटतर कतहुँ जग ॥२३॥

आये मिथिला निकट देखि यक सुन्दरि बागा।
सुखप्रद अति रमनीक देखि मुनि मन अनुरागा ॥

रघुनन्दन रुख जानि टिके तव सहित समाजा।
गाधिसुवन आगमन सुने तवही निमिराजा॥
आये आगमन लेन को विप्रवृन्द नृप साथ हैं।
कह वनादास अति प्रीतिजुत मुनिपद नाये माथ हैं॥२४॥

रिषि लिये हृदय लगाय बूझि मंगल कुसलाई।
जथा जोग सब काहु नृपहिं आसन बैठाई॥
अहोभागि मम आजु कमल पद दरसन पाये।
कर सम्पुट कै भूप भाँति वहु विनय सुनाये॥
आये तव रघुवंसमनि बंधुसहित लखि वागवर।
कह वनादास प्रभु देखि कै उठि सबको सत्कार कर॥२५॥

जनक लखे मुखचन्द्र भये चख मनहुँ चकोरा।
पान करत जिमि भृंग कमल रस पटतर थोरा॥
सव समाज भै सुखी देखि दोउ बन्धु अनूपा।
कौसिक रिषिहि निहोरि कहे तबही निमिभूपा॥
स्यामगौर सुकुमार सुठि केहि महीप मनि के तनै।
कह वनादास मुनि कुल तिलक तबहुँ कहत मुख नहिं बनै॥२६॥

कहहु नाथ सति भाय कुँवर काके दोउ आही।
खोजे सकल टटोरि मिलति छाया कहुँ नाहीं॥
उभय रूप भयो ब्रह्म किधौं औसर को पाई।
आतम सुख करि त्याग प्रीति अतिहि उरछाई॥
सहज बिरागी मोर मननि करि गयो निज हाथ जू।
कह वनादास इमि लखि परत करिहैं बिस्वसनाथ जू॥२६॥

घनाक्षरी

पुनि पुनि पूंछत सनेहवस निमिराज कौने वड़भागी के सुकृत फल पाके हैं।
तिहूँकाल तिहूँलोक चहूँवेद चहूँजुग मति अति थकी कहूँ उपमा न जाके हैं॥
सहज सलोने स्यामगौर कामकोटि छवि उमगत अंग न सृङ्गार वसुधा के हैं।
बार बार हेरत निमेष तजि वनादास भूपति विदेह तौ विदेहता बिवाके हैं॥२८॥

सजल नयन तन पुलक मगन मन भे सरीर सिथिल सुधा सनेह छाके हैं।
आई जो समाज निमिराज संग भोरी मति अतिही बरोरी रामलपनहिं ताके हैं॥
धनुप स्वयम्वर सो यामिनी से भोर भयो राम योग्य जानकी के हिये सब आँके हैं।
बनादास मरम न कहै कोऊ काहूसन निज उर ठीक देत जैसी रुचि जाके हैं॥२६॥

वचन तुम्हारन चलन योग्य महिपाल चौदह भुवन माहिं प्रियनहिं काके जू।
नृपति मुकुटमनि [दसरथ औघराज सुकृति को साज कुँवरौटा जुग ताके जू ।।
बनादास सोभा के समुद्र को सराहि सकै सारद गनेस सेस पैरि पैरि थाके जू।
निज काज लागि माँगि लाये मख रक्षा किये राक्षस निपाते भूरि भारी बीरबाँके जू ।।३०।।

सवैया

बेगि लिवाय चले मिथिलापति बाहेर नग्र विलोकि निकाई।
मानो चहूँ दिसि मे छलकै छबि सागर बाटिका औ अमराई ।।
सारस हंस चकोर पपीहरा नाचत मोर महा सुखदाई।
कोकिला कीर कुहूँ कोयल दासबना मन लेत चोराई ।।३१।।

घनाक्षरी

चत्त चक्रवाक खग बिपुल बिहार करें कुक्कुट परेवा वक खजन बटेर हैं।
सारस को सोर जोर तीतर बरोर बोलें हारिल औ सारिका को कहे नाम ढेर हैं ।।
राज पीत सित औ असित कंज फूले वर कूजत अनेक खग भाँति भाँति मे रहै।
बनादास गुजत भँवर चोपि चाखें रस भाखें कवि किमि लहै आसय सबके रहें ।।३२।।

जहाँ तहाँ परी दल नृपन कि ठौर ठौर धनुप स्वयम्वर के हेत जौन आये हैं।
गाजें गज मत्त बीर बाजें हैं अखाडन मे स्यंदन सुतर तुरें सकै को गनाये हैं ।।
आयुध अनेक धारि सूरबीर बाद करें बनादास लरें जहाँ तहाँ अति भाये हैं।
पटे बाज पूरे रन सूरे देस देसन के अति अभिमानो जे हैं मुख मसि लाये है ।।३३।।

अतिसुखप्रद जानि जनक निवास दिये कर जोरि कौसिक सो सद्यही सिधाये जू।
भोजन को पाय मुनि सहज स्वभाय सोये जागे दिनयाम रहे बन्धु दोउ आये जू ।।
लखि उरकंठा रामलषन को कहे बेगि देखा पुर चाहत रजाय काह पाये जू।
बनादास परम प्रसन्द ह्वै कै कहे मुनि सुखी करो लोग रूप सुन्दर देखाये जू ।।३४।।

सिहकटि तून कसि नील पटपीत धर बयस किसोर स्याम गोरचित चोर हैं।
भुज हैं अजानु धनुबानु धरे बीरबर धीरन रहत जेहि लखे मन भोर हैं ।।
दीरघ बिलोचन बिसाल माल टेढी भौंह तिलक रसाल छवि कामकोटि थोर हैं।
बनादास काकपक्ष कुंचित असित कच करें हिय घाय सीस चौतनीकि कोर हैं ।।३५।।

कंकन कलित कर मुद्रिका कर जनोखी पंक जलजात उर आयत अतीव है।
सोभित केयूर मुक्तमाल उर भ्राजमन तुलसी प्रसून जन्नपीत कम्बुग्रीव है ।।
दसन अधर अरुनारे मुसकानि मन्द काको न हरत मन सुखमा के सीव है।
कीर तुड नासिका स्रवन वर कुडल हैं बनादास कौनि जोहि जूझै ऐसो जीव है ।।३६।।

आनन सरद सोम कन्ध जुवा के हरि से जानुजुग पीन काम भाय को लजाये जू ।
बसन सुरंग प्रति अंग सुचि भूषन हैं अमित अनग निज रंग न दबाये जू ।।
नील पीत जलजात सुठिवर गात सोहै जोहै जौन मोहै ऐसो कौन जग जायेजू ।
बनादास प्रथमहिं बालगन साथ लागे जुवा वृद्ध नारिनर पीछे सुनि धायेजू ।।३७।।

सवैया

त्यागि सबै गृह काज चले जनु जन्म के दारिद लूटन सोना ।
एकन एक सो बूझत धाय गये कित सांवल गोर सलोना ।।
फैलि गई पुर बात चहूँ दिसि देखे ते मानो भये वस टोना ।
दासबना जो न आवन जोग मलैं कर दोय कहैं जियबोना ।।३८।।

प्रेम मे मत्त भये सब लोग लगे संग जात न देह सँभारा ।
को हम कौन कहा नहिं जान प्रमान करें नहिं लोग गवाँरा ।।
मानो बिदेह भयो सगरो पुर दासबना मन हाय परारा ।
बालक ह्वँ वस प्रीति बुलावत राखतु हैं रुचि वारहिं वारा ।।३९।।

घनाक्षरी

झाँकती झरोखे तिय राम रूप अनुरागि भामिनी जनकपुर अतिभूरि भागि हैं ।
चन्द्रमुख किये है चकोर नैन चैन धाय चंचल चकित चित मैन उर दागि हैं ।।
कहत परस्पर सखि स्यामगोर कैसे जागि जिय बिरह लगन अति लागि हैं ।
बनादास तनमन बावरी सी भई जनु कहत न बनत सनेह सुधा पागि हैं ।।४०।।

कुल कानि टारि टारि वारि तन मन प्रान रामहि निहारि सुचि सुमन झरतु है ।
पुरजन गुरुजन परिवार भेपभार कबहुँ डरत कहुँ लाज को करतु हैं ।।
बनादास दामिनि सी दमकत चारि ओर ऊँचे अटा चढ़ि आछे मोद को भरतु हैं ।
कहैं एक एकन ते जीते कोटि काम छबि निजनिज मति अनुमान को करतु हैं ।।४१।।

बिधिमुख चारि पंच बदन पुरारि सखि बिष्नु भुज चारि और देवकाहि गने हैं ।
सोमसुठि सीतल तपत भानु सबकाल गनपति गजमुख इन्द्र अक्षघने हैं ।।
मदन अनंग कहाँ सोभा ऐसी नरन में इनसम येई, कहूँ दूसरो न जने हैं ।
अहो भागि आजु निज नैनन सुफल करौ बनादास सबै कोऊ ऐसी उरे ठने हैं ।।४२।।

सवैया

बोली तबै सखी एक सयानि यई मुनि जज्ञ रखावनहारे ।
ताड़का मारि सुबाहु बिदारिनि दैत्यन को दल सर्व संहारे ।।

गोरे से गात सुमित्रा के तात औ सांवल सो कौसल्या के बारे।
दासवना अब आये इतै करि है मिथिला पुर लोग सुखारे ॥४३॥

जानकी जोग अहैं वर सांवल बावर भूप किये हठ भारी।
एक कहै सिव चाप कठोर अहैं अबही सुकुमार विचारी॥
एक कहै तृन से धनु तोरि है तून प्रताप को जान गँवारी।
एक कहै बनये जिन सीय तेई बर सुन्दर राम संवारी ॥४४॥

एक कहै प्रन त्यागि बरै सिय लाये विदेह इन्है पहिचानी।
एक कहै यह बात अलीक है एक कहैं सँग मे मुनि ज्ञानी॥
एक कहै लहे जन्म को लाह बिलोचन मारग मे उर आनी।
एक कहै मिथिलापुर धन्य जहाँ पग धारे यही अनुमानी ॥४५॥

जो प्रन त्यागि बरै सियरामहिं तौ नृपजन्म कोलाहल हैं जू।
होय सुखी तिहुँ लोक सखी अरु लोग भला सब भांति कहैं जू॥
हैं सुक्ती महिपाल भली विधि जानि परै सिव क्यों न चहै जू।
दासवना सिय भागि की भाजन ताते सबै विधि ते निबहैं जू ॥४६॥

जो अनहोनी धरे महि ते तन लोकहुँ वेद सुनी कहुँ नाही।
तौ अनहोनी लहै वर सांवरो है परतीति यही उर माही॥
या विधि कोटि करै उर कल्पना एक न एक गहैं तिय बाही।
खीचत रेख न टारे टरै यह दासवना चित चौनो चाही ॥४७॥

घनाक्षरी

यहि विधि करत मनोरथ को देखि देखि कहत परस्पर प्रेम मे मगन है।
भूले गृह काज को सकल पुर नारिनर सबही कि लागि सुठि राम सो लगन है॥
ब्रह्म जीव को सनेह समय पाय जागि पर्यो बनादास बालगन घूमत सगन है।
जहाँ तहाँ भेद को बताय कै लेवाय जात जल जल जाय चोपि चलत पगन है ॥४८॥

सवैया

आये स्वयम्वर भूमि जहाँ अनुरागि कै बालक लागि देखावैं।
बन्धु दोऊ अतिही रुचि पालत जात तहाँ तहँ मोद बढ़ावैं॥
माया रचै पल मे जगजासु मुनीस्वर ध्यान नही जेहि पावैं।
ते सिसु संग सखा करि घूमत जन्नथली लखिकै हरषावैं ॥४९॥

आस्रम को गवने करुनाकर सांझ समय गुरु त्रास जनावैं।
सील सनेह भये सिसु से बस दासवना न कछू चनि आवै॥

कैसे भजै नहिं ऐसे कृपालु हि जन्म तहो नहिं सो मरि जावै ।
भोगन को भव को दुख भूरि ते हो करि कै विधि ताहि जिआवै ।।५०।।

भाँति अनेक प्रतोषि कै बालक फेरे तबै रघुबीर गोसाँई ।
बंधु समेत चले हरषाय रिषय पद पंकज पै सिरनाई ।।
पाय रजाय किये कृत नित्य को संध्या निबाहि गये दोउ भाई ।
दासवना इतिहास पुरान समय लखि भाये कछु मुनि राई ।।५१।।

सँन किये पुनि कौसिक जाय पलोटन पायँ लगे दोउ भाई ।
सोल सनेह सबै गुन से जुत पूजी जबै गुरु की सेवकाई ।।
पाय रजाय किये प्रभु सँन तबै पद चापत बंधु सोहाई ।
दासवना कहे सो वहुतात गई रजनी जुग जाम सिराई ।।५२।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रवोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम द्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

छप्पय

उठि प्रभात रघुनाथ चरन गुरु वन्दन कीन्हा ।
लषनसहित विलोकि महामुनि आसिष दीन्हा ।।
वहुरौ नित्य निवाहि वन्धुजुत आयसु पाई ।
चले सुमन के हेत वाग पैठे नृप आई ।।
रखवारन ते बूझि कै लगे लेन दल फूल सुचि ।
कह वनादास वर वाटिका बाढ़ो देखि विसेष रुचि ।।५३।।

गिरजापूजन हेत जननि पठई वैदेही ।
संग सहेली सुभग सप्तनव अंगन जेही ।।
गावत मंगल गीत वाग भीतर सिय आई ।
को कवि वरनन जोग जाय मन तहँ लोभाई ।।
जनु वसन्त रितु टिकि रही द्वादस मासन गवन कर ।
कह वनादास कै लोकसुर परिहरि आये वृक्ष वर ।।५४।।

चम्पक वकुल तमाल पनस अरु कदम सोहाये ।
स्रीफल कैथर साल चिचिनी जम्वुनिकाये ।।
मौलसिरी सहतूति फालसे दाड़िम सोहै ।
नारंगी जंभीर सरीफा कमरख रोहै ।।
खिन्नी वदर अंजीर वर पुंगोफल रम्भा सुतरु ।
पारिजात आमलक सुचि चन्दन धूप प्रकास करु ।।५५।।

नीम और अम्वार तार खरजूरि सोहाये।
पाटल सुभग असोक सोक नासत सति भाये॥
लाची लौंग अमोल पिप्पली काली मिरची।
जानि परत मन हरत काम माली कर बिरची॥
दाख छोहरे विविध बिधि मेवा तरु को नाम लह।
कह बनादास पावन परम सम बसो त्रिबिध समीर बह॥५६॥

लागे तरु कचनार हार शृङ्गार सुहाये।
कदइल कलँगा कलित बसती जुही लगाये॥
सुरजमुखी सुख देत मुखी ससि चितहि चोरावै।
दुपअरिहा की दमक गमक अतिही मन भावै॥
कुज अपर मन्दार सुचि अरु गुलाव बर केवडा।
कह बनादास कैसे कहै जहँ गिरजा को कवि वडा॥५७॥

चोखे बेला चारु चमेली अति चित हरनी।
गेंदा नाना भाँति नाम कहँ लै कवि बरनी॥
गुलाचीन सेवती जूही सुख सरसावै।
गुल सब्बोग मरूर सुगन्धी अति मन भावै॥
गुलमेहदी गुल्दावदी गुलखैरा कुंदो विमल।
कह बनादास करना कलित ललित लगी तुलसी अमल॥५८॥

नाना बूटी जरी सजीवनि कौन गनावै।
मूली मूल अनेक साग स्वादित मन भावै॥
सकरकद महिकंद बिबिध विधि तामे सो है।
तरकारिन को नाम कहै ऐसो कबि को है॥
नाद बोप दव नाद मक बहुबिधि ऊख पियूख सम।
कह बनादास अगनित लता निरखत सुख लागत परम॥५९॥

झाली आली सघन काम को जनु विहार थल।
समुझे देखे बनै विलोके जाहि भाव भल॥
सकल बिटप पल्लवित सुमन फल भार नये हैं।
जयावोध बुध पाय अधिक गरुआय गये हैं॥
परसत महिवल्ली लता पता न पावै कोउ दुरै।
कह बनादास अति बालबुधि नहिं उपमा उर मे फुरै॥६०॥

कूजत कोकिल कीर सारिका अरु चकोर वर।
नीलकठ कलकंठ पपीहा पीव पीव कर॥

तीतर हारिल सोर मोर नाचत अति सोहैं।
बहु खग बोलत बोल चहूँ दिसि मन को मोहैं॥
जनु मनसिज सेना परी बहु प्रकार चतुरंगिनी।
कह बनादास जीतन लिये तिहूँ लोक अतिसय घनी॥६१॥

सावकास चहुँ पास चहूँ दिसि अति रमनीका।
तामधि सोभित बाग बागमधि पुनि सर एका॥
बाँधे मनि सोपानि चहूँ दिसि अधिक सोहाये।
रात पीत सित असित हरित अतिही मन भाये॥
नीर परम गम्भीर बर बिकसे सरसिज रंग बहु।
कह बनादास तहँ लखि परत मीन मनोहर कहूँ कहु॥६२॥

पान करत मकरन्द मत्त अति गुंजत भृंगा।
बीतराग मनहरत कूजते विविध बिहंगा॥
चक्रवाक बक हंस परेवा खंजन नाना।
सारस रव रमनीक सुनत छूटहिं मुनि ध्याना॥
कुक्कुट पुनि कलहंस कलवत्त बिपुल खग को गने।
कह बनादास वहि समय सुख देखत अरु सुनतहि बने॥६३॥

तट गिरिजागृह बनो धवल सुठि धाम सुहावा।
नानामनि नग खचित अमित चित्राम बनावा॥
सोभित कुलिस कपाट ठाट कौनो विधि बरनै।
जग जननी सिवसक्ति असुर सुर नर मुनि सरनै॥
करि मज्जन सिय सखी संग हरषि चलीं देवी भवन।
कह बनादास गावति अली भलीभाँति कह कवि कवन॥६४॥

सुमन सुभग नैवेद्य चारु चन्दन सुचि थारी।
अच्छत नाना गन्ध धूप सुभ आरति वारी॥
गिरिजा पूजा कीन जानकी अति मन लाई।
नारद वचन प्रसिद्ध समय पर सो सुधि आई॥
बर माँगे रघुबंसमनि बार बार बन्दन किये।
कह बनादास गौरीबरद चाहत फल सद्यहि दिये॥६५॥

सखी सुमन के हेत गई सिय संग बिहाई।
गहर भयो अति ताहि प्रेम बिह्वल ह्वै आई॥

पुलकगात दृग नीर बेगि मुख बोलि न आवै।
सखि बूझत का मिल्यो तोहि सो सत्य बतावै॥
आये देखन बाग को सॉवल गौर किसोर वर।
कह बनादास कोउ नृप सुवन कारन जानहुँ हर्ष कर॥६६॥

कैधौं कोउ सुर अहैं धरे जुग मनुज सरीरा।
मधु मनसिज कै अहै लखे उर रहति न धीरा॥
नर नरायन किधौं किधौ सृङ्गार औ सोभा।
भयो भूप को रूप जाहि लखि अति मन लोभा॥
किधौं ब्रह्म भो उभय वपु जानि सकै को लोग है।
कह बनादास किन देखिये अवसि देखने जोग है॥६७॥

तासु बचन सुनि सियहि भयो उतकठा भारी।
दरस लागि मन ललक अपर सखि वचन उचारी॥
आये नृपसुत काल्हि उभय कौसिक रिषि साथा।
आगे लीन्हे भूप जाहि लखि भये सनाथा॥
सुवस किये पुर नारिनर जिन निज रूप देखाय कै।
कह बनादास देखिय अवसि चली सिया सुख पाय कै॥६८॥

नूपुर ध्वनि मजीर किंकिनी चूरी बाजैं।
बिछुआ पुनि पैजनी काम करि चालहि लाजैं॥
सुनि बोले रघुनाथ लषन सो बचन सुहाये।
जनु जग जीतन हेत काम दुदुभी बजाये॥
तात जनक तनया सोई होत स्वयम्बर जासु हित।
कह बनादास आवति इतै देखत बाग लगाइ चित॥६९॥

सीता ऐसो नामधाम ते जननि पठाई।
गिरिजा पूजन हेत सखी बहु चली लिवाई॥
करैं कृपा जो देवि मिलै सुन्दर वर याको।
उतकठा उरमातु यही आसय है ताको॥
लता पटल के ओट मे सियहि देखाई राम सखि।
कह बनादास रघुबीर मुख रही चकोरी जनु निरखि॥७०॥

लगे ललकि दृग चारि लहे पारस जनु रंका।
निमिहु तजे थल पलक लाज भय आई सका॥
सजल नयन तन पुलक वचन कहि आवन ताही।
अतिसय प्रेम अधीर रही तन की सुधि नाही॥

गयो अपनपो हाथ से रामरूप हिय में लह्यो।
कह बनादास रहि मौन धरि द्वैत लेस नाहीं रह्यो ॥७१॥

सियमुख सुभग सरोज मधुप रघुबर दृग लागे।
चाखत छबि मकरन्द मनहुँ सोवत नहिं जागे॥
नखसिख सोभा निरखि कहन की रुचि उर आई।
राखे मनही माँहि खोजि उपमा नहिं पाई॥
कहत अनुज सों बिहँसि प्रभु रघुबंसी कुल रीति अस।
कह बनादास सपनेहुँ बिपे जाको पर तिय तक बकस ॥७२॥

सत्य बचन नित कहैं दान प्रानै दै डारैं।
कालहु ते नहिं डरैं खेत रन कोऊ प्रचारैं॥
ऐसे नरन निकाम कतहुँ जग थोरे थोरे।
पर त्रिय हेरन हेत अधिक निस्चय उर मोरे॥
मुख मयंक सीता निरखि तृप्त न मानत मोर मन।
कह बनादास गम्भीर गति उतर देत नहिं सहसफन ॥७३॥

पुनि बोले रघुनाथ सुभग अँग फरकत ताता।
सगुन सुहावन होत हेत सो जान बिधाता॥
करत लषन सों बात कंज मुख सिय मन पागा।
नहिं टारे ते टरत परत कहि किमि अनुरागा॥
कहत कछू कहि जात कछु चलत इतै उत पग परत।
कह बनादास रघुबीर गति मति पटतर नहिं अनुहरत ॥७४॥

रामरूप अवलोकि काम सतकोटि सुभग तन।
मनहुँ ठगोरी अंग अंग ललचात अतिहि मन॥
निरखि निरखि तन दसा भई सखियन की भोरी।
रह्यो अपनपो नाहिं समय सुख कौन कहोरी॥
थकित बुद्धि मन बचन करि मनहुँ नाग काले डसी।
कह बनादास रोमांच तन प्रेम पंक बानी धसी ॥७५॥

लक्ष्मन रघुपति दास यतिन में प्रथमहि रेखा।
तिन लीला बहु भाँति भूलि कहुँ नैनन देखा॥
कहं सीता कहं सखी कहाँ रस बाग बिलासा।
महासूर बर धीर हृदय कछु नेक न भासा॥
कुल स्वभाव प्रथहि कहे रघुपति रुखे विषयरस।
कह बनादास तेहि समय यक राम अनुज रह सान्त-रस ॥७६॥

सखियन होस सँभारि जानकी दसा बिचारी।
परबस परम अधीर सकति नहिं सुरति सँभारी॥
कर गहि बोलत व्यग सुवन नृप देखन आई।
ताहि न देखत नेक गौरि को ध्यान लगाई॥
सकुचि सिया खोले नयन नहिं देखे रघुवसमनि।
जैसे जल बिन मीन गति बिकल मनहुँ मनिरहित फनि॥७७॥

चितवत चहुँ दिसि चकित थकित अतिहि सब गाता।
बिन देखे रघुनाथ कल्पकोटिन पल जाता॥
वैदेही लखि बिकल सकल सखि खोजन लागी।
लेत सुमन दल राम लषन लखि अति अनुरागी॥
लता पटल ते बिलग भे नील पीत जलजात तन।
कह बनादास जनु उभय बिधु भई सखी तब मुदित मन॥७८॥

सखिन देखाई सीय ललकि लोचन अति लागे।
भै गति चुम्बक लोह चारि चख सुठि अनुरागे॥
रामरूप छबि धाम काम सतकोटि लजावन।
को कवि बरनै जोग काहि की मति अति पावन॥
सुभग चौतनी सीस सुचि अलक अहिनि के बाल मनु।
छुधित कुसित लटके लपटि अलि अवली सकुचात जनु॥७९॥

आनन सरद मयक रक मर्कत द्युति लाजै।
बाला स्रवन अनूप भाल सुचि तिलक बिराजै॥
अक्ष अरुन अरबिन्द वक भ्रू अति मन भाई।
अवलोकनि चित चोर हेरि पटतर नहिं पाई॥
मन्द मन्द बिहँसत बदन दाडिम द्युति बिम्बा कदन।
कह बनादास नासा सुभग रघुबर मुख सोभा सदन॥८०॥

चिबुक चारु सुकपोल कन्ध हरि कम्बुक ग्रीवा।
उर आयत मनिमाल भुजा जुग बल निधि सीवा॥
कर ककन केयूर बाम कर राजित दोना।
कटि के हरि पटपीत कुँवर साँवल सुठि लोना॥
जानु पीन जुग मन हरन चरन कमल जलजात जनु।
कह बनादास महिमा अमित बसत जहाँ जोगीस मनु॥८१॥

नखसिख सोभा सीवगौर तन लषन सुहाये।
जोडी सुभग बिलोकि सियासखि अति सुख पाये॥

रामरूप अवलोकि पिता प्रन सुमिरन कीना।
नहिं कहुँ चित थित लहहि जानकी भई अतिदीना ।।
बहुरि सुमिरि नारद वचन उर धीरज करती भई।
कह बनादास गति को कहै प्रीति पुरातन नित नई।।८२।।

इत उत घूमति बाग मृगा खग विटप निहारति।
लगी सुरति रघुवीर मुरति ते नेक न टारति।।
सीता बूझति सखिन नाम तरु लता विटप कर।
चहति न नेक बिछोह प्रीति पथ दृढ़ अतितत्पर।।
कहूँ कहूँ प्रगटत दुरत प्रभु सीता जनु सूर ससि।
कह वनादास वल्ली लता जलद पटल पटतर सुभसि।।८३।।

राम वाम कर सुमन गिर्‌यो धोखे सों भूतल।
रह्यो न पूजा जोग लेन पुनि लगे फूल दल।।
अन्तर्जामी सकल सदा जन की रुचि राखैं।
सारद सेस गनेस निगम नारद अस भाखैं।।
प्रीतिरीति पहिचानिबो त्रिभुवन तीनिउ काल महँ।
कह वनादास रघुनाथ सम कवहूँ कोउ न कतहुँ कहँ।।८४।।

सियाराम हिय मध्य रामसिय के उर माहीं।
थप्यो पुष्ट तेहिकाल तुष्ट आयो दोउ पाही।।
नखसिख देखत रूप उभय जनु मुकुरहि छाया।
तदपि न मानत तृप्त काल अति अलि लखि पाया।।
युक्ति वचन सखियन कहो ये ऐहैं यहि वेर नित।
आजु ते प्रतिदिन नेम करि गिरिजा पूजिय लाय चित।।८५।।

कछु सकोच उर माँहि वहुरि जननी भय लागो।
तदपि नही चलि सकत जानकी प्रभु पद पागो।।
वरवस चली लेवाय सखी तवही बैदेही।
मानहुँ मृगी सभीत चितवहित राम सनेही।।
देवी पूजा हेत को लेन लगी फल फूल सिय।
कर सरोज माला रचत तन इतही जहँ राम जिय।।८६।।

पार्वती के भवन बहुरि गवनी बैदेही।
उर वाढ़ी अति प्रीति मिलैं रघुपति 'हित तेही।।
संग सखी सुकुमारि सकल मिली गावहिं गीता।
कोकिल बयनी वाम चहैं मनक्रम हित सीता।।

पुलकिगात अस्तुति करत गद्गद गिरा सोहावनी।
कहू बनादास बानी मधुर अति गिरिजा मन भावनी ।।८७।।

जय जय जय जग जननि बिस्व पालनि लै करनी।
उद्भव इस्थित हेत बेद गति सकत न बरनी ।।
जय जय सिव मुख चन्द्र कान्ति कर रसिक चकोरी।
जय दामिनि द्युति देह नेह पतिपद नहिं थोरी ।।

सकल सुरासुर मुनि नमित पदपंकज जग जस धवल।
कहू बनादास बाछित बरद कवि कीरति गावत नवल ।।८८।।

जय जय जय गज बदन अम्ब हेरम्ब सुसीला।
जय महिषासुर दलनि खलनि खँदि खोदनि लीला ।।
जय बाहन मृगराज सूल असि चर्म सरासन।
तून कुसल रनकेरि हरत सब दिन सुर त्रासन ।।

जय जय जय हिमगिरिसुता जयति जयति करुना भवन।
कहू बनादास महिमा अमित दुख दूषन दारिद दवन ।।८६।।

जय मृग सावक नैन चद चम्पक बर बदनी।
चड मुड निसुभ सुभ सोनित बिय कदनी ।।
जय पति देव पुनीत जयति सक्तिन सिर मौरी।
अन्तर्जामी सकल दानि मन बाछित गौरी ।।

कारन प्रगटन करति सिय बार बार पद सिर धरी।
कहू बनादास बस हिमसुता खसीमाल पासा परी ।।६०।।

हँसि बोली तब देवि सिया मन बाछित तोरा।
अब पूजिहि सब भाँति बचन अन्यथा न मोरा ।।
सारद धर्‍यो प्रसाद सीस सीता अभिलाषी।
उर ही उर अति मोद भागि आपनि बड भाषी ।।

मन प्रसन्न अति जानकी सखिन सहित गवनी भवन।
कहू बनादास जुतबधु प्रभु मुनि समीप कीन्हे गवन ।।६१।।

जाय बदि गुरु पाँय रामलषन सुख पाये।
सुमन पाय रिषि राय करत पूजा मन लाये ।।
समय जानि रघुनाथ कथा कौसिक यह भाखी।
सरल लेस छल नाहिं हृदय कछु गोयन राखी ।।

ह्वै प्रसन्न आसिप दिये रामलषन मन कामना।
वह वनादास पूजिहि सकल तुव सुकृत अतिसयघना ॥६२॥

॥ इतिश्री उभयप्रबोधकरामायणे अयोध्याखण्डे
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

सवैया

भेजे विदेह सतानंद को मुनि कौसिक लावहु वेगि बुलाई।
आय रजाय कहे महिपाल कि बैठत आसन भे सिरनाई॥
बोले रिषै तवही दोउ बंधु को दासवना पद बंदेनि आई।
तात चलो मख देखन हेत कहे निमिराज कि आयसु आई॥६३॥

वेगि तयार भये दोउ बंधु चले मुनि मण्डली मध्य सुभाये।
साजि सरासन बान कसे कटि पीत पटासुठि तून सुहाये॥
सांवलगौर किसोर मनोहर ठौनि जुवा मृगराज लजाये।
दासवना पुर लोग सुने सब बालक वृद्ध जुवा उठि धाये॥६४॥

पुरुषनारि बिसारि सबै गृह देखने को अति ही ललचाये।
आवतु हैं मख पेखन को दोउ राजकुमार सृङ्गार बनाये॥
काहुं न कीन सँभार कोहू कर बालहु वृद्ध न संग में लाये।
दासवना नख से सिखलौं छवि धाम करोरिन काम लजाये॥६५॥

दण्डक

जनकपुर नारिनर सकल मोहे निरखि रूप रघुवीर सत मार लाजै।
सुभग सर्वाङ्गजुत अनुज कोदंड धर नील पटपीत कटि तून राजै॥
बाहु आजानु उर वृहद मनिमाल वर तुलसीजुत सुमन मुखचन्द सोभा।
मन्दमुसकानि भ्रू वंक राजीव दृग राम छविधाम लखि को न लोभा॥

चौतनो सीस कच अवलि अति कुटिल अति अहिनि के बाल जनु लपटि लटके।
छुधित अतिही कृसित कहाँ पटतर मिलै कवन असहृदय जेहि नाहि खटके॥
रंग महि आय अति भीर भारी भई तुरित नृप कहे सेवक हँकारी।
सकल लोगन जथायोग्य बैठारि कै सजगह्वै रहो कर बेतधारी॥

तुरति उपाय करि किये सब साति अति आय निमिराज मुनि चरन वन्दे ।
सुभग आसीस लहि देखि बर बीर दोउ मनहिं मन भूप अतिही अनन्दे ।।
सकल भखसाल मुनि बरहि देखराय कै सहित रघुबस मनि वीर बाँके ।
कहे रिपिराय अति सुभग रचना बनी लाय चित चारु चहुँ ओर ताके ।।

देखि दोउ कुँवर नृप मडली मलिन भै दिवस जिमि चन्द्र द्युति अवसिनासी ।
जथा मृगराज लखि नाग प्रान भो आपहि आपहि यह हरि त्रासी ।।
सकल हिय माहिं पुनि पुनि फुरत बात यह रामसिय बरहिं सदेह नाही ।
विनहिं धनुभग जयमाल नायहि गरे भूप प्रनत जै भल सब कहाही ।।
मच सुठि वृहद महिपाल आसन दिये सग दोउ बन्धु राजित मुनीसा ।
बनादास उड्डगन बिपे मनहुँ रजनीस जुग उदय भूपाल बल तेज खीसा ।।९६।।

सवैया

जैसन भाव रहा जेहि के उर तैसन ते तस रामहिं देखा ।
सीसा रहे रस एक सनातन जानि परै जस जाकर भेखा ।।
ऐसहि सुद्ध सनातन हैं प्रभु भापत सारद औ स्रुति सेखा ।
दासवना द्युति राजकुमार बिलोके न लावन जोग निमेखा ।।९७।।

पाय रजायसु भूप सुसेवक मदिर बात जनायनि जाई ।
साजि सखी नव सप्त सुअगन भाँति अनेक सृङ्गार बनाई ।।
मध्य अली मिथिलेस लली करि गावत कोकिल कठ लजाई ।
दासबना बहु भाँति के मगल जो सुनिकै मुनि ध्यान बिहाई ।।९८

मानहुँ भारती भूरि धरे तन खोजि कहाँ उपमा कबि पाई ।
चाल जिन्हैं करि काम लजावत देत मनो रति रूप दवाई ।।
ककन किंकिनि नूपुर बाजत चूरी मंजीर कहाँ लौ गनाई ।
दासबना जनु काम निसान मनो जगजीतन हेत बजाई ।।९९।।

रूप अनूप सबै अलि उत्तम तामधि जानकी सोहति कैसे ।
ज्यो छवि मडल मे छवि रासि किये उपमा कवि झूठ अनैसे ।।
तारा के मध्य निसाकर पूरन तौहूँ कहै मन भावत जैसे ।
दासबना सिय छाया नही तिहुँ काल मे आवतु है चित ऐसे ।।१००।।

घनाक्षरी

यहि बिधि मैथिली गवन रगभूमि किये सोभा सिन्धु नारिनर पैरि पैरि याकेजू ।
जानकी चकित चित्त चोपि चारि ओरे हरे कहाँ प्रानप्रीतम कुँवरवर बाँकेजू ।।

देखे मंच उन्नत मुनीस आसपास बैठे स्याम अंग सुन्दर नजरि भरि ताकेजू।
बनादास नैन मग रामहि सयानी आनी रही सांति सखिन में गूढ़गुन जाकेजू ॥१॥

सवैया

लोग कहैं मन माहि सबै अब जज्ञ करै नृप कारन केही।
ब्याज लिये कत भूरि गवांवत रामहि क्यो न बरै बयदेही॥
जो घनुभंग भयो कर और केतो तिहुँ लोकत पै दुख येही।
दासबना सिय सांवरो जोग है सिह को भाग ससाकर देही ॥२॥

राम नही घनु तोरन जोग अहैं लघु बैस अबै दोउ भाई।
या असमंजस में नरनारि कहैं बिघि की गति जानि न जाई॥
संकर गौरि मनावै गनेसहि भूप हृदय किन फेरहु जाई।
दासबना मति होय सबै कस जानी भये कुल देव सहाई ॥३॥

सीय सरूप विलोकि महीपति बन्धु दोऊ तन केरि लोनाई।
निस्चय किये वरि हैं यई जानकी यामें नही कछु संसय है भाई॥
आये को है फल लोचन लाभ सो लेहु भली विधि आजु अघाई।
दासबना मति मान बिचारत कायर कूर कपूत बिहाई ॥४॥

पापी जे हैं अयसी औ मलीन अलीक प्रलापी हृदय गति बोघा।
भाँति अनेक करै मनोराज कहै हम से जग और को जोघा॥
तोरि सरासन संकर को सिय बेगि वरै मन को अति सोघा।
दासबना है अभागि के भाजन राम प्रताप नही उर बोघा ॥५॥

या विधि आपन आपन भाव बिचार करै सब लोग लोगाई।
बंदी बुलाय विदेह कहे प्रन गूढ सुनावहु भूपन जाई॥
राय रजाय सो सीस घरे तब दासबना गवनै सिरनाई।
हर्ष हृदय अति भाट भये पुनि जज्ञ थली महँ बाँह उठाई ॥६॥

छप्पय

सुनहु सकल महिपाल कहत भूपति प्रन गूढ़ा।
घीर वीर नृप सूर होहु निज पक्ष वरूढ़ा॥
कच्छपीठ पवि कूट अतिहि सब सिव चाप कठोरा।
बूड़ि समाज सुठि लाज आज यहि अवसर तोरा॥
सुर सुरेन्द्र पुनि असुर नर राव रंक सीता वरै।
कह बनादास निमि विरद इमि भाट समय तिमि उच्चरै ॥७॥

उठे सूर वर बीर नृपति कटि परि कर बाँधे।
बार बार सिर नाय इष्ट देवन आराधे॥
करत दड महि कोऊ भुजा पुनि जानु मरोरत।
कोऊ घूरि लगाय अंग अगन ते तोरत॥
जाय घरत कोदड सिव नहिं तिल भरि टारे टरत।
कह बनादास निज निज दिसा कोटि कोटि स्रम को करत॥८॥

पतिब्रता पतिवाक्य सन्त जिमि धर्म न त्यागत।
चूर चूर कटि जात सूर रन भूमि न भागत॥
जिमिसि पुरुष को बचन चलत नहिं तीनउ काला।
एक तिया ब्रत पुरुष जथा आपन प्रन पाला॥
जथा धाम ध्रुव अचल है गिरि सुमेरु से ह्वै रह्यो।
कह बनादास कोदड सिव सकल नृपन को बल दह्यो॥६॥

ज्यो पकज निसि समय दिवस जिमि ससि द्युति हीना।
बैठहि निज थल जाय ताहि विधि भूप मलीना॥
कुलहि कालि मालाय वहुरि निज मुख मसि लावत।
नहिं पावत सन्तोष सुभट पुनि पुनि उठि धावत॥
अरुन उपल जिमि गहत खग अमिष अहार बिचारिकै।
कह बनादास चूरन भयो चोच चलत तिमि हारिकै॥१०॥

दस लागे करि क्रोध बीस तीसहु पुनि लागे।
चालिस लगे पचास साठि पुनि लगे अभागे॥
लागे सत्तरि असी बहुरि नब्बे सौ घरेऊ।
कीन्हे अमित उपाय नेक टारे नहिं टरेऊ॥
पुनि सौ सौ बढने लगे लगे हजारौ धाय कै।
कह बनादास बल सकल लै बालि भयो गरुआय कै॥११॥

लगे सहसदस भूप टरत कोदड न टारा।
कहँ उपमा कवि लहै सैन सारा पचिहारा॥
रहे बिबेकी भूप सरासन निकट न आये।
देखि देखि दोउ बधु अधिक उर मोद वढाये॥
पुरजन अति निन्दा करत साग खाय जननी जने।
कह बनादास पितु असन किये मनहुँ खरी कोदौ कने॥१२॥

जनक हृदय तेहि समय भयो परिताप घनेरा।
सोकसिन्धु मे मगन लहत नहिं बोहित बेरा॥

घनु तोरन प्रन किये जानु सो सकल जहाना।
सुनि सुनि आये भूप द्वीप द्वीपन के नाना॥
तानव तोरव लेब कर काज कछू नाही सर्‌यो।
कह वनादास विधिगति कठिन नहिं तिल भरि टारे टर्‌यो॥१३॥

कुलहि कालि मालाय सकल निज निज गृह जाहू।
पृथ्वी वीर विहीन कहा वैदेहि विवाहू॥
घरि नर नृप को वेप दैत्य देवो बाहु आये।
काहू कर नहिं टर्‌यो मनहुँ महि संगहि जाये॥
हिम गिरि ते अविचल भयो सकल सुभट की पति लई।
कह वनादास विधि बामता काह किये कैसी भई॥१४॥

सुकृत जाय प्रन तजे न तरु सिय रहै कुवाँरी।
असमंजस अस पर्‌यो दोऊ विधि बात बिगारी॥
कैधौ मेरो पाप सिया कै भाग्य बिहीना।
भूप हृदय संतप्त बचन बोलत अति दीना॥
जनिमा खै कोउ वीरवर खोली घनु कलई सबै।
कह वनादास अपमान अति वचन काह तुमको अबै॥१५॥

तिहूँ लोक निर्वीज प्रथम अस जानि न पाई।
नहि करने प्रन कठिन जगत किमि होत हँसाई॥
सुनत जमक के वचन लजारू विटप समाना।
सकुचि दिये सिर नाय वीर कछु दिये न काना॥
भूप वचन विलखान सुनि सोकसिन्धु पुरजन मगन।
कह वनादास अवसर निरखि अति सरोप बोले लपन॥१६॥

कुटिल भौंह दृग अरुन अधर फरकत मुखराते।
लै लै ऊरध स्वास वीर रस ते सरसाते॥
भूपावली विलोकि जथा करिगन मृगराजू।
अहिगन में खग केतु लवहि अवलोकत बाजू॥
जनक वृद्ध बोधिक परम भोगी जोनित ब्रह्मरस।
कह वनादास यहि समय महँ कहे वचन अविचार कस॥१७॥

भानुवंस जेहि ठौर तहाँ अस कहै न कोई।
रघुकुल कमल दिनेस बीज तहँ अनरथ बोई॥

मष्ट करहु भो अति कहाँ तक क्रोध निवारै।
उठत अंग मे आगि लागि रघुबीर सँभारै॥
तुम पालक स्रुति सेतु के छमा उचित अनुचित सबै।
कह बनादास रघुबसमनि जो आज्ञा दीजै अबै॥१८॥

मीच मलौं जिमि मूस काल मेढुक सम मारौं।
मूली सम गिरि मेरु उखारत नेक न वारौं॥
सातरसातल स्वर्ग करत लावो नहिं बारा।
सात स्वर्ग पाताल पलक मे पठवनहारा॥
जैसे सीसो काँच की पटको अंड कटाह इमि।
कह बनादास पलटौं पुहुमि छोनो पीपर पात जिमि॥१९॥

क्या यह तुच्छ पिनाक पुच्छ बम्भनी सम तोरौं।
कजनाल से दसन सकल दिगपाल दरोरौं॥
छत्रदंड सम धरौं सहस जाजन लै धावो।
छनक माहि रघुनाथ रावरो आज्ञा पावो॥
यह बापुरा पिनाक सिव पलक माहि यहि विधि दलौं।
कह बनादास जनु मत्तगज निज अगन मसकहि मलौं॥२०॥

सकुचाने मुनि जनक कुटिल नृप अति भय माने।
बाज झपट तेलवा मनहुँ जहँ तहाँ लुकाने॥
रघुनन्दन उर मोद सुखी भै सिय महतारी।
सीता परमानन्द हरष सब पुर नरनारी॥
सनमाते तब गाधिसुत अति दुलार करि लषन कह।
कह बनादास डूबत मनहुँ अवलम्बन सबो कोऊ लह॥२१॥

सवैया

राम उठौ सिवचाप विभंजहु गजहु सोच महानृप केरी।
ठाढ भये सहजै रघुबीर विदेह कहे मुनि कौसिक टेरी॥
आज्ञा भई रघुनन्दन को उर ताही ते आवत सोच घनेरी।
दासबना असमंजस है दोउ भाँति न पावत उत्तर हेरी॥२२॥

छप्पय

सीता रहै कुँवारि सम्भु धनु जो नहिं टूटै।
अजस तोनिहूँ लोक सोक पावक हन भूटै॥

अति कोमल सुकुमार राम लघु वयस सलोने।
नहिं धनु तोरन जोग रचो बिधि अब का होने ॥
नहिं पावत अवलम्ब कहुँ धरम धुरंधर धीर बर।
कह बनादास उपमा कहाँ तेहि अवसर नृप दसाकर ॥२३॥

महाभूप सिर ताज नृपति दसरथ बड़ वारे।
जासु बड़ाई अवधि कवन कहि पावै पारे ॥
बनै न कोई बात मोहिं सब जग कह पोचू।
सीता रहै कुमारि अधिक ताते यह सोचू ॥
आगे नहिं आसा रही कोऊ आय धनुभंजई।
कह बनादास सरि सोक मे बारबार नृप मंजई ॥२४॥

घनाक्षरी

लेत कनसुई मुहा चाही होत जहाँ तहाँ कानासानी करें सब कैसी यह बात है।
कहै न बुझाय कोई हठ ताके बस भये भूपति बिदेह को सयान पसिरात है ॥
कहाँ सिवचाप पवि कूट ते कठिन अति कहाँ राम कोमल सलोने सुठि गात है।
भारी असमंजस मगन पुर नारि नर बनादास जानि पाई जानकी की मात है ॥२५॥

कैसो बिपरीत काल आयो है विदेह कर समुझि परत सारी सभा भै अचेत है।
प्रन परित्यागि सिय व्याहत न रामजू को जानत न मनि तजि गुंजा गहि लेत है ॥
भूप दससहस न जा कहँ चलाय सके तौन धनु कैसे राजकुँवर को देत है।
बनादास खीझै पुर नारि नर जहाँ तहाँ देखो निमिराज कैसे हठ के निकेत है ॥२६॥

राम अनुरागबस मगन सकल लोग सजल नयन अतिपुलक सरीर जू।
और को हवाल कोऊ कैसे पहिचानि सकै जनक महीपति पै अति भारी भीर जू ॥
जौन धनु टूटे तो बिवाह रहो जानकी को उतै रहै राम की न तरु महापीरजू।
प्रन परित्याग किये सुकृत को नास होत जग उपहास ताते धरत न धीरजू ॥२७॥

दनुज मनुज देव हारि गयो तीन लोक भारी भारी बीरन की बाहुँ बल हई है।
भूप द्वीप द्वीप के उपाय कोटि कोटि किये सुई अग्र चलो नाहिं ऐसो गति भई है ॥
रावन औ बान देखि गवँसे पयान किये तौन धनु कैसे राजकुँवर को दई है।
बनादास जुग सम पलक ब्यतीत होत सिया मातु उर अति भई बिकलई है ॥२८॥

सीतामातु अति अकुलात उर बार बार देखो मति भूपति की कैसी कटि गई है।
सचिव पुरोहितन नेनप सुभट कहैं कौने देवबुद्धि सबही कि हरिलई है ॥
छोटे राम कोमल कठोर धनु तोरन को बनादास काहू भाँति धीरज न लई है।
सकल सहावें हितू समो पै न काम करैं सतानन्द भामिनि कहत अस भई है ॥२९॥

छोटो तिल आंखि को सकल जग देखि परै सारो है सरीर नहिं पेखन के काम को।
छोटी है सजीवनी हरत महारोगन को छोटो मनिमानिक बढावै केते दाम को ।।
छोटी कैसो गाज सो पतालहू को फोरि जात छोटी अति लेखनी बडाई केती नाम को।
वडो भवदाप पाप ताप तीनि काल हरै बनादास नाम छोट मानो मति राम को ।।३०।।

छोटो अति अकुस मतगन को काबू राखै सारो जग जेर किये छोटो धनु काम को।
छोटो रबिमडल प्रकास सब लोकन मे छोटे घट जोनि सिन्धु सोपि लहे नाम को ।।
छोटो पुनि मन्त्र सर्व देवन को वस किये बावन से छोटे इन्द्रपाये सुरधाम को।
छोटे बूंद बापी सर सरिता तलाब भरै बनादास रानी छोट जानो जनि राम को ।।३१।।

खडी सिय सोचति बिलोचन ते मोचै बारि रामहि निहारि हिय अति दुचितई है।
हाय तात वात को बिगारत अनेक भांति किये हठ दारुन कठिन सोई भई है ।।
अतिसुकुमार सिसु कोमल सलोने गात ताते धनु भग चाहे विष बीज बई है।
वनादास पुरनरनारि परिवार दुखी हेरत न राम ओर कहा चित ठई है। ३२।

सेये भानु गौरि गनपति औ महेस देव तेऊ समौ पाय जनु सुधि बिसराये है।
मानौ सेवकाई तौ सहाय राम भुज होहु नातौ काहू भांति वात बनै न बनाये है ।।
पितु पोति लागि खोये देत है अमोल मनि काहूभांति काहूकि न सुनत सुनाये है।
बनादास जानकी हिये कि रघुनाथ जानै कवि कौहि भांति कोऊ पटतर पाये है ।।३३।।

पलक पलक बिकलप औ सकल्प होत काहू भांति कहूँ थिति लहै न सयानी जू।
निमिप निमिप कोटि कलप ब्यतीत जाहि रामदसा हेरि हेरि हिय अकुलानी जू ।।
जहां नीति प्रीति औ प्रतीत रघुनाथ जू की तहां की न गति जानि सक अनुमानी जू।
वनादास जानि है जो पाये कछु ताको स्वाद ताहि बरबाद लोकवेदकुल कनी जू ।।३४।।

छप्पय

लषन लखे रुख राम वचन बोले गम्भीरा।
सजगहु मानि रजाय धरहु सबकोऊ धीरा ।।
दिगदती अरु कोलकमठ पुनि सँभरहु सेसा।
धरहु धरनि वरजोर मानि सब मोर निदेसा ।।
पवन काल बिक्रम सकल लोकपाल जनि कोउ चल्यो।
कह बनादास रघुबसमनि अब चाहत सिव धनु दल्यो ।।३५।।

लषन वचन सुनि लोग कछुक अवलम्बहि पावत।
नर नारी जहँ तहां पितर सुर सुकृत मनावत ।।
जो कछु पुन्य प्रभाव होय हमरे भरिजन्मा।
सो भुज राम सहाय कहत मन वच अरु कर्म्मा ।।

जो सुकृती महि पावलो सुर मुनि साधु सबै नहत।
कह बनादास रघुनाथ कर धनुष भंग पुरजन चहत ।।३६।।

सोय दसा किमि कहै मीन जनु सूखेउ पानी।
ज्यों फनि मनि बिन बिकल भाँति अतिहो अकुलानी।।
सजल नयन तन पुलक भयो मन गद्गर भारी।
सिथिल भई सब अंग अतिहि मिथिलेस कुमारी।।

करम बचन मन ठीक दै अन्तर्जामी प्रभु नितै।
कह बनादास दूजी न गति करि करुना देहैं चितै।।३७।।

घट घट वासी राम सबन उर की गति जानी।
जनक हृदय परिताप जानकी अति अकुलानी।
कीने उर अनुमान बार नहिं लावन जोगा।
कौसिक पद सिर नाय मुनिन सों लिये निजोगा।।

चले नुवा मृग राज गति मत्त नाग लज्जित अतिहि।
कह बनादास खर भर हृदय विकलप पल पल सब मतिहि।।३८।।

जानहिं राम सरूप रहे ते सान्त सयाना।
देवपितर निज सुकृत निहोरत बिबिध बिधाना।।
जुग सम निमिष व्यतीत होत तेहि अवसर माही।
काह करिहि कर्तार काल गति जानि न जाही।।

गयो राम कोदंड ढिग तेहि छन मन पटतर नही।
कह बनादास समुझे बनै नहिं आवत मुख पै कही।।३९।।

लेते पानि पिनाक चढ़ावत लखा न कोई।
चपला कैसी चमक लक्ष कौनो बिधि होई।।
भयो शब्द सुठि घोर डगो सारो ब्रह्मंडा।
चौंके सम्भु बिरंचि पर्‌यो भूतल जुग खंडा।।

मारतंड थहरात पुनि अस्व भभरि मारग चल्यो।
कह बनादास घसक्त धरा जबहि राम सिव धनु दल्यो।।४०।।

दिग गयन्द खरखर्‌यो सेष कच्छप कटि कर को।
कलमलात अति कोल धकाधक सब उर धरको।।
उछल्यो सप्त समुद्र मेरु भूधर हिमि दल भयो।
सर सरिता नद नार कूप बापी जल छलक्यो।।

कम्पमान लोकप सकल बिकल कुटिल महिपाल मनु।
कह बनादास जय जयति जय राम दल्यो जब सम्भु धनु ।।४१।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

कच्छपीठि ते कठिनकूट पवि अधिक कठोरा।
कालदंड ते विकट सकल अवनिप बल तोरा।।
सुम्मेरहु ते गरू अचल ध्रुवधाम समाना।
बिदित बेद जुग चारि हारि तिहूँ लोकहु माना।
मानहुँ नाथि पतालगो महिसँग रच्यो बिरंचि जिमि।
कह बनादास रघुबंसमनि भंज्यो पंकज नाल तिमि ।।४२।।

भो त्रिकूट ते कठिन मनहुँ मैनाक समाना।
रावन से दिय पावनही परस्यो कर बाना।।
देव दनुज ह्वं मनुज जनकपुर सब कोउ आये।
सुई अग्र नहिं चल्यो गये सब लाज लजाये।।
सप्तद्वीप अवनिप मुरे तेहि उपमा कवि कहै किमि।
कह बनादास रबिकुल तिलक तोर्यो छत्र कोदंड जिमि ।।४३।।

मिथिलापुर जय जयति तिहूँ पुर बजी बधाई।
बन्दिबिरद उच्चरत बेद विप्रन झरिलाई।।
देत द्विजन को दान विविध सम्पदा लुटावत।
सुमन वृष्टि सुर करत सुजस रघुपति को गावत।।
देव नटी नृत्यत विपुल पुर प्रमोद चहुँ पास अति।
कह बनादास तेहि समय कर पटतर नहिं कवि लहतिमति ।।४४।।

जनक मोद को कहै लहै कहँ मुख सहसानन।
पुरजन अति आनन्द जानकी को तन भानन।।
राम सरद राकेस गाधि सुत सिन्धु समाना।
पुलकावली अतीव बढत बीची बिधि नाना।।
लषन लखत रघुबंसमनि जनु दरिद्र पारस लह्यो।
कह बनादास सिय मातु सुख उपमा किमि सारद कह्यो ।।४५।।

जय जय ध्वनि चहुँ दिसा तिहूँ पुर मंगल भारी।
राम सम्भुधनु दल्यो बरी मिथिलेस कुमारी।।

विधि आदिक सुर मुदित चरित रघुपति को गावत ।
अति मुनि साधु अनन्द कहाँ उपमा कवि पावत ॥
जाचक भये धनेस जनु देनहार गृह खँगत नहि ।
कह बनादास सियराम की महिमा अमित को सकत कहि ॥४६॥

घनाक्षरी

जानि रुख जनक रजाय दिये सतानन्द सखी सुठि मोद मन मंगल को गायेजू ।
भामिनि के मध्य गजगामिनि जगतमातु स्वामिनि सजत कबि उपमा न पायेजू ॥
जाके प्रति अंग रति अमितन ब्याज तुल्य कर कंज जयमाल अति छवि छायेजू ।
बनादास गवनी मराल बाल राम पास अवनिप अमित लजारू से लजायेजू ॥४७॥

आई प्रभु निकट निकाई को निवाहे कहि लसत तमाल जनु कनक की वेली है ।
उर महामोद ओढ़े बाहेर सकोच सारी दम्पति मनहुँ छवि जगत सकेली है ॥
लाजैं कंठ काकिला के छूटे मुनि ध्यान मुनि मंगल मुदित तिय गावैं अलबेली है ।
बनादास अमित सनेह को सँभार करि सिय जयमाल पिय उर माहि मेली है ॥४८॥

जयमाल राम उर सुर डरै सुमन को पुर नरनारि मोद मंगल को गाये हैं ।
नटैं कलकिन्नरी सुनावैं रघुवीर जस अमित मुदित देव दुन्दुभी बजाये हैं ॥
स्यामगौर जोड़ी हारी सारद टटोरि उर रही टकटका लाय उपमा न पाये हैं ।
नीलघन निकट ज्यों चपला अचल रही बनादास पटतर तदपि न भाये हैं ॥४६॥

लखि द्युति दम्पति की नारिनर महामोद पाये मन भाव तजो देवन मनाये हैं ।
सिया को सरूप पेखि बिकल त्रिनेत्रि भये कुटिल महीप वहु गाल को बजाये हैं ॥
निजवल तोरैं धनु जानकी सो ब्याहैं भूप जादूगीर बालक को जानि हम पाये हैं ।
टोना करि तोरे धनु बनादास बकैं सब सुभट समाज में अनीति को मचाये हैं ॥५०॥

बाजीगर कौन काम जानकी विवाहिबो है ताते लेहु छोरि अब बेर क्यों लगाये हैं ।
भारी भारी सुभट न नेकहू चलाइ सके ताहि नृपबाल लघु कैसे तोरि नाये हैं ।
जनक रिसाय जो सहाय करै कोऊ भाँति सैन सहित जीति बांधहु सुभाये हैं ।
बनादास त्राहि त्राहि करि कर कान देत धार्मिक भूप उर क्रोध अति पाये हैं ॥५१॥

बूड़ि न मरहु भरि गगरी में बालू गरे बाँधि ऐसे वचन न जीभ जरि जाये जू ।
नाक गै पिनाक साथ आक तरु काहे होत पावस को जलन लषन लखि पायेजू ॥
मुख मसि लाय किन अवसि घरहि जात बसविधि कछु होनहार और आये जू ।
बनादास पुर नरनारि देत गारि वहु जहाँ तहाँ मोचत अतिहि नीच जायेजू ॥५२॥

पचि पचि मरे धनु साथ में न कौन भयो अब रघुनाथ सों कलह चहै किये हैं ।
करैंगे लषन क्रोध वोध सब दूरि ह्वै है एक ही निमेष में सपेटि चोटि दिये हैं ॥

कैसे पितु मात ऐसो जाये पापवत पूत करनी समुझि निज लाज नाहिं हिये है।
वनादास चाही डूबि मरै चिल्ल पानी माँहि नानी के मरे से मुख कौनी भाँति जिये है ।।५३।।

जैसे ललचात मृगराज गजयुत्थ देखि बाज ज्यो बटेर अहिगन खग केतु है।
त्योही भ्रुवबंक रक्त नैन मुखराते अति चैन डर लहत न सहै राम हेतु है।।
हिय बाहन हीन आँखि अतिही मलीन सारे बल औ प्रताप पखि भूलत अचेतु है।
बनादास रघुवीर ओर बार बार हेरि लषन सकोप अति ऊर्ध्व स्वास लेतु है ।।५४।।

सवैया

ताही समय सिव को धनुभग सुने भृगुनन्दन कोपि सिधाये।
मानो सरीर धरे रसबीर फुरेरद के पट जात नगाये।।
तून कसे कटि दोय महाभट राते से नैन कुठार उठाये।
दासबना सजि बान सरासन भाल बिसाल त्रिपुड्र बनाये ।।५५।।

गोरे से गात बिभूति सोहात मनो करि कोप को सकर आये।
सीस जटापट है मृगचर्म कहाँ उपमा कवि खोजत पाये।।
क्रोध से आनन राते अतीव सरासन दूसर कांध मे नाये।
दासबना सकुचे महिपाल मनो लखि बाज लवा दबकाये ।।५६।।

घनाक्षरी

धाय धाय पाँय परि पितु के बताय नाम मानो बिना मारे मरे कम्पन सरीर भो।
चितवत कृपा दृष्टि मानो ताहि मरन से भारी भीर देखि देखि धरत न धीर भो।।
कहत जनक दिसि कारन सुनाउ वेगि देखे जुगखड धनु अति उर पीर भो।
बनादास कहत कुठार पानि तोरे धनु सठन बताउ वेगि कहाँ तौन बीर भो ।।५७।।

उलटि सकल राजलोक को समाज देउँ सुने न स्वभाव मोर काहे ते असक भो।
बेगही समाज ते बिहाय कै देखावे मोहिं ना तौ दलौं सारी सैन अति भ्रुवबक भो।।
पुरनरनारि त्रस सोच मे परस्पर कहत न बात बनें महा अहतक भो।
बनादास भारी भारी बीरन की धीर छूटी कम्पत करेज बार बार जनु चक भो ।।५८।।

छप्पय

कीन्है जनक प्रनाम जानकिहि मुनिपद नाये।
पाये सुभग असीस बहुरि कौसिक तहँ आये।।
बोले रामहु लषन तिनहूँ पद वदन कीन्हा।
स्यामगौर अवलोकि मुदित ह्वै आसिप दीन्हा।।

सप्तद्वीप के महिप जे क्रोधवन्त भृगु देखि कै।
कह वनादास सहमे सबै ज्यों गज मृग पति पेखि कै ॥५९॥

डारि डारि हथियार बिविध बिधि बेष छिपाये।
केते बीर अधीर नारि के रूप बनाये॥
केते ब्राह्मन बने भूप केतने भये भाटा।
केते रूप कुरूप बिलानी अवनिप ठाटा॥
बहु जाचक भिक्षुक घने विपुल मजूरे ह्वै गये।
कह वनादास बहु बजनियाँ उथल पथल नृप दल भये॥६०॥

केते किंगिरी लिये सारंगी विपुल बजावैं।
बिबिध नृत्य की बेष राग नाना बिधि गावैं॥
नाऊ वारी बने घने जोलहा अरु दरजी।
पाये फल ततकाल यही भगवत की मरजी॥
भूप विवेकी धार्मिक सूरधीर ते रहि गये।
कह वनादास उपमा कहाँ लत्य पत्य बहु बिधि भये॥६१॥

कहे कोपि भृगुनाथ जनक जो सिव धनु तोरा।
सहसबाहु सतगुना ताहि रिपु मानहुँ मेरा॥
लखि विदेह की दसा राम बोले मृदु बानी।
काह कहो भृगुनाथ मोहि सेवक निज जानी॥
सेवक ह्वै सेवा करै रीति सनातन यही है।
कह वनादास रिपुरीति कृत अतिही परम अनीति है॥६२॥

बोले तबही लषन महामुनि धरिये धीरा।
टूटो हर को धनुष भई तुम्हरे उर पीरा॥
जो तोरा सिवधनुष कवन ताते बड़ पापी।
मुख दृग राते क्रोध अधर दसनन सों चापी॥
सो बिलगाय समाज तें क्यों परोक्ष बातै करै।
कह वनादास पल कल नही भल कुठार अबही मरै॥६३॥

अतिहि पुरान पिनाक परा दीर्वक को खायो।
नयो जानि लिय राम छुवत हो आपु नसायो॥
कौन किये अपराध मृषा मुनि दोष लगावै।
धरे साधु को बेष छमा उर नेक न आवै॥
बदत बात विपरीति अति बालक जाने मोहि नहिं।
कह वनादास लक्ष्मन कहे जाने ब्राह्मन लेत सहि॥६४॥

मृपा धरहु धनु बान काहि लगि पानि कुठारा।
नवगुन कीन्हे त्यागि अमित सर वचन तुम्हारा॥
करि स्तुति अविहित रीति तेहू पर साधु कहावत।
ताहू पर पुनि कोपि मोहि सुठि आँखि देखावत॥
सोई सरूप बिचारि कै जो कछु कहो सो सब सही।
कह बनादास सस्त्रौ धरे कहे लगि रिसि रोके रही।।६५।

रे नृप बालक पोच बचन नहि कहत संभारा।
सिसु बिचारि सहि रहौं सुने नहि मोर कुठारा।।
महि यक बिसति बार छत्र ते कीन्हे हीना।
कोटि कोटि नृप सूर काटि याते बलि दीना॥
सहसबाहु बिन कर किये सो अब लगि नाही सुने।
कह बनादास सठ मदमति मोहि केवल साधुहि गुने॥६६॥

अरुन नयन भ्रुव वक लपन उर अति रिस व्यापी।
कीन्हे मुनि को बेप वचन बोलत जनु पापी॥
लाये अंग विभूति भयो पट मृग को छाला।
पापै चही विसेपि लिये कर मे जयमाला॥
काटनहार जो बेनु वनता सु वडाई आपनी।
कह वनादास गोवत कहा याही ते जननी हनी॥६७॥

कौसिक बालक मन्द चहौ जो याहि उबारा।
तौ समुझावहु सद्य भापिबल तेज हमारा॥
तब सकोच से बचा अबहि तक अधम अभागी।
गयो काल नगिचाय भयो कुल घातक टाँगी॥
सुनि सरोप निभय वचन तनमन जनु जरि बरि गयो।
कह वनादास भृगुबसमनि बलबिहीन अतिही भयो॥६८॥

सुनि स्वभाव भृगुनाथ लपन की दसा विचारी।
अतिही जनक सभीत कम्पतन पुरनरनारी॥
सियामातु उर सोच कहत सिव सकल बनाई।
अबधौ का होनहार कालगति जानि न जाई॥
भई दुचित अति जानकी कुटिल भूप हर्पित घने।
कह वनादास जहँ तहँ कहत अब संजोग विधिबस बने।६९॥

फरफरात सुठि अधर लपन उर धर तन धीरा।
अतिहि निदरि भृगुनाथ कहत पुनि गिरा गँभीरा॥

हमहूँ अवलगि सहे जानि ब्राह्मन कुल तोरा।
मुनि को बेप विचारि किये उर अमित निहोरा ॥
सब क्षत्रिन को बैर जो काटि सीस लेहों अबै।
कह बनादास भृगुबंसमनि कर कुठार तान्यो तबै ॥७०॥

कीन्हे हाहाकार तबै जे लोग सयाने।
नयन तरेरे रामलषन तबही सकुचाने ॥
गाधितनय भृगुपतिहि अमित निज ओर निहोरा।
बोले राम सुजान बचन जनु अमृत घोरा ॥
सुनिय महामुनि धीरवर भृगुकुल पंकज भान हो।
कह बनादास बालक बचन करत कवन विधि कान हो ॥७१॥

है सिसु परम अजान नही महिमा प्रभु जाना।
क्षत्री जाति स्वभाव वीर लखि सो रिसिआना ॥
छमिये ताकी चूक काज कछु तेइ न बिगारा।
अपराधी मैं नाथ सीस तव अग्र कुठारा ॥
बार बार विनती किये पानि जोरि रघुवंस वर।
कह बनादास सीतल कछुक राम सीलते परसुधर ॥७२॥

बड़पापी तव बंधु कहत किमि बालक येही।
निपट निरंकुस निठुर जोग होने जम गेही ॥
कुल कलंक यह जन्यो जननि जोवन तरु घाती।
नाहि तोहि अनुहरत अधम अतिही उतपाती ॥
छांड़त तुम्हरे सील ते नहि रहते बध किये बिन।
कह बनादास स्रम थोरे हो गुरहि वेगि होतेउँ उरिन ॥७३॥

पाटे पितु रिन भले मातु निज कर बध कीना।
रहा एक रिन गुरु माथ सो हमरे लीना ॥
आनहु धनिक बुलाय तुरित मैं देउँ पटाई।
महूँ देव रिन रिनी तोहि बधि छुट्टी पाई ॥
लषन बचन सुनि क्रोध अति जरत अनल जनु धृत पर्‌यो।
कह बनादास पुनि परसुधर रामदिसा अतिरिस कर्‌यो ॥७४॥

ललकारे निज बंधु उतै कटु बचन कहावत।
बड़ो सेवरा राम इतै पद माथो नावत ॥
तोर्‌यो सिव को धनुप प्रान अब अतिप्रिय लागे।
ताते भाँति अनेक करत छल बल अनुरागे ॥

तैहूँ परम कलंक कुल धनुप धारि बिनती करत।
कह बनादास मुनि मानि मोहि केवल नहि ताते डरत ॥७५॥

मैं क्षत्रीकुल काल भाल मे दया न मेरे।
तेहि निदरै द्विज जानि कपट जाने सब तेरे ॥
धरु अबही धनुबान कुलहि मति लाउ कलंका।
संकर को धनु खंडि भयो खल अमित असंका ॥
दुप्ट करै किन जुद्ध मे न तरु रामनामहि तजै।
कह बनादास कै धनुप धरि अबै सामने ते भजै ॥७६॥

बोले गिरा गँभीर राम उर रोष जनायो।
भई बक भ्रुव कछुक अरुनता कछु दृग आयो ॥
सुनहु परसुधर बचन असत कबहूँ नहि बोले।
भानुबंस की रीति काल ते रनहि न डोले ॥
जो हम निदरै अब तुम्हैं तौ त्रिभुवन को बीर अस।
कह बनादास सपनेहु बिपे भयबस नाइब माथ कस ॥७७॥

लेहु संभरि धनुबान सुधारहु बेगि कुठारा।
सुनहु जमदगिनि पुत्र आइगो काल तुम्हारा ॥
अबलगि जो कछु किह्यो रह्यो धोखे मति ताके।
पलटै अबहि बिराट क्रोध आये उर जाके ॥
ताहि प्रचारे ईस बस अब बिलम्ब कारन कवन।
कह बनादास मति परसुधर पटल गयो टरि ताहि छन ॥७८॥

लेहु रमापति धनुप चढावहु राम उदारा।
लेतहि कर रघुबीर चढत लाग्यो नहि बारा ॥
पुलक प्रफुल्लित गात सजल दृग कंठ निरोधा।
सम्पुट पंकज पानि करत अस्तुति स्तुति सोधा ॥
जयति जयति रविकुल तिलक प्रनत पाल ससय समन।
कह बनादास पावन पतित अति अपार भव दुख दमन ॥७९॥

जयति जयति सुख सिंधु बधु दोउ छमा निकेता।
छमहु अमित अपराध नमित नित ऊर धरेता ॥
जय रघुकुल वर कुमद राम ससि सरद सोहाये।
नेति निरूपत निगम अगम गुन जात न गाये ॥
जयति जयति भुव भार हर गो द्विज सुर संकट समन।
कह बनादास जन कल्पतरु तिहूँ काल खलबल दमन ॥८०॥

जय सीतापति स्याम राम छबि कोटि अनंगा।
त्रास त्रास बासना करन दुख दारिद भंगा॥
जयति जनक दुख दलन संभु कोदंड बिभंजन।
जय बिदेहपुर मोद हेत भूपन मद गंजन॥
जय मख रक्षक दक्ष प्रभु गाधिसुवन संकट टरन।
कह बनादास ताड़ुका बधि हति सुबाहु असरन सरन॥८१॥

जय जय कटि तूनीर पीत पट सरधनु धारन।
पाप ताप संतप्त जयति मुनि बधू उधारन॥
जयति बचन बर बिसद बाक्य रचना अति चातुर।
जय जय परम कृपालु हरत दीनन दुख आतुर॥
जय जय आनन सरद ससि पंकज लोचन बंक भ्रुव।
कह बनादास आगम निगम महिमा लहत न पार तुव॥८२॥

जयति वृहद उर बाहु मालमुक्ता बर धारी।
पीतजन्न भृगु चरन रेख लक्ष्मी अति प्यारी॥
दसन अधर सुठि अरुन नासिका कीर तुंड बर।
काकपक्ष सिर मुकट स्रवन कुंडल अति सुन्दर॥
वृषभ कंध केहरि ठवनि तिलक भाल सोभा सदन।
कह बनादास मर्कत बरन नीलकंज द्युति स्याम घन॥८३॥

जय कंकन केयूर मुद्रिका करज सोहाये।
कम्बुकंठ कल घोत कहा पटतर कबि पाये॥
नाभी उदर गँभीर अधिक त्रिवली छबि छाई।
कामभाथ जुग जानु रोमावलि चितहि चोराई॥
कमल चरन नख द्युति उदित जहँ बस मुनिमन अलि अवलि।
कह बनादास सोइ पद सरन देहु रामनिज भक्ति भलि॥८४॥

माँगि सुभग बर वर्नहि गये भृगुपति तप हेतू।
बार बार मन मगन राखि उर रघुकुल केतू॥
महामोद पुर भयो गयो सारो संदेहा।
कौसिक पंकज पाँय धाय नृप धरे बिदेहा॥
नाथ कृपा कृतकृत्य अब सकल काज पूरन भयो।
कह बनादास बूड़त उदधि काढ़ि दोऊ भाइन लयो॥८५॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापबिभंजनो नाम पंचदसोऽध्यायः॥१५॥

घनाक्षरी

होय जोर जाय सो करत नहिं बार लावो समय सिखापन सो सदयही सिखाइये।
कौसिक कहत धनु टूटत बिवाह भयो अब कुलरीति वेद विधिउ कराइये ।।
भेजो चर अवधपुर नेक न अबेरकरौ भूप दसरत्थ को सबेर ही बुलाइये।
बनादास दूत बोलि नृपति कहत भये पाती कर दये पुर कोसल सिघाइये ।।८६।।

सचिव महाजन सकल कामदार बोलि भूपति विदेह अति मोद ते कहत भये।
बोलि परिचारक बितान को विचित्र रचौ नगर बजार गृह रचना बनावो नये।।
सीस धरि आयसु करत निज निज काज उर अभिलाष ताते कोऊ न बिलम्ब लये।
बनादास हाट बाट बीथी बाग बाटिका जे मानो घर बाहेर मे आनद को बीज बये ।।८७।।

रचे चारु माडवन सारद सराहि सकै कदली रसाल बेनुमनि के बनाये हैं।
मनिमयी आलवाल सफल बनाये सारे ध्वज औ पताक भूरि अति छवि छाये हैं।।
मोतिन के दाम मनिमयी है निवारबद कचन कलस मनि दीपक धराये हैं।।
बनादास मनि के विचित्र चौक चारु पूरे प्रतिमा बिबिध बिधि देवन सोहाये हैं।।

रात पीत सित औ असित मनि कज किये चोखे चारु चौरि कोरि भाँति बहु रचे हैं। ८८।।
प्रतिमा अनेक नाना मगलीक बस्तु लिये सोभा जाहि देखि रतिकामहू के लचे है।।
पचरगमनि के अवनि अतिगच्च किये जहाँ तहाँ कचन रजत करि खचे हैं।
बनादास पुगि औ तमाल छबि चुगि लिये सुरपुर बिटप के ऐसी बिधि जचे हैं।।८९।।

दुलहिनि जहाँ भई जानकी जगत मातु रघुनाथ दूलह बितान बिधि कहै को।
रचे जनगुनी पुनि सोभा ऐसी आय भरी बिधि की निपुनताई उपमा न लहै को।।
छलकत छबि कबि अपर बखानै कौन सारद कि हटै मति पुनि निरबहै को।
बनादास देखे ते बाहर जाने भलीभाँति लिखि सुनी बातन को दृढ करि गहै को ।।९०।।

आये चर आतुरन बार लाये मग माहिं चातुर परम राउ सभा मे जो हारे हैं।
भूप महामोद पाती सुनि रामलषन की छाती भरि आई धाय आपु कर धारे हैं।।
बांचत पुलक गात अस्रुपात बार बार भीजे तन बसन निकट बयठारे हैं।
बूझत कुसल क्षेम औघपात प्रेम अति बनादास बारे दाऊ नैन सो निहारे हैं।।९१।।

सांवल गौर उभय कौसिक के सग गये कहो नृप जनक बवन बिधि जानेजू।
दूर कर जोरि कहे महराज बात एक दीप लै दिनेस देखै सुनो नहि कानेजू।।
राम औ लषन नहिं पूँछे पहिचानै जोग भूपति विदेह पुनि परम सयाने जू।
महासिंह पुरुष न कोऊ पटतर ताहि बनादास कौन ऐसो देखि न बिकाने जू।।९२।।

मुनि मख राखि पुनि ताडका सुबाहु बधि भारी भारी राक्षस को रन बिचलाये हैं।
गौतम की तिया पिया सापते पषान भई बेग ही उधारि पुरजनक सिधाये हैं।।

भूप द्वीप द्वीपन के आये हैं स्वयंबर में तिल भरि धनु कोऊ भूमि न चलाये हैं।
बनादास छन माहिं नृपन को मान दलि ताहि राम कंजनाल सम तोरि नाये हैं ॥६३॥

बुद्धि बल रूप तेज के निधान बंधु दोऊ सिवंधनु भंग सुनि भृगुपति आये हैं।
ताहि अवलोकि दल भूप बिललाय गई रामहु लषन डाँटि आँखि सो देखाये हैं॥
प्रबल प्रताप लखि अस्तुनि बिसेष करि दिये धनु आपु बन तपहिं सिघाये हैं।
बनादास कौसिक रजाय पाय निमिराय पाती कर दैकै हमें इतहि पठाये हैं ॥६४॥

धावन को देत नेवछावरि सो लेत नाहिं कान मूंदि पुनि पुनि माथ महि नयेजू।
ताही समय आये हैं भरत दोऊ भाई सुनि पाती आई कहाँ से कहत अस भयेजू॥
बहुरि महीप बाँची साँची प्रीति महामोद दूतन देवाय बास गुरु गृह गयेजू।
मुनिपद वंदि बाँचि पत्रिका सुनाये नृप बनादास हृदय बसिष्ठ प्रेम ठयेजू ॥६५॥

भूपहि प्रसंसत अनेक बार महामुनि तुम सम सुकृति न तिहूँ काल भयेजू।
जाके अवतरे राम अंसन सहित आय ताकर प्रभाव पुन्य पार कौन लयेजू॥
सजहु बरात रघुबीर ब्याहै चलो बेगि पद सिर नायकै भवन भूप गये जू।
बनादास पाती रनिवासन सुनाये बाँचि निमिष निमिष उपजत सुख नये जू॥६६॥

बोले बहुब्राह्मन को भोजन कराये भूरि बिबिध प्रकार पुनि दक्षिना को दिये जू।
रजत कनक मनि भाजन बसन अन्न धनु भूमि भूसुर मगन अति हिये जू॥
जाचकन बोलि बकसीस किये नानाभाँति अस्वगज स्यंदन सराहै सुठि जिये जू।
बनादास सकल असीस देत बार बार चिरंजीव चारि सुत मातु मोद लिये जू ॥६७॥

जथाजोग सम्पदा लुटावै पुरनारिनर करि अनुराग राम हेत सुख पाये हैं।
जहाँ तहाँ जुरिकै सहेली सब गान करैं घर घर पुर बहु बजाने बजाये हैं॥
मानहुँ अनन्द चहुँ ओर उफनाय चलो लघुपुर सुख भूरि सकै न समाये हैं।
बनादास मोद न अमात दोऊ भाइन को भूपति कि दसा सकै कौन कबि गाये हैं ॥६८॥

आज्ञा भै सुमंत से दिसा मे चारि न्योत भेजो आवैं सब कोऊ तजि मोह मान मद्द है।
चक्रवती गादी औध वादिन जहान माहिं रामजू की सादी उतसाह याते हद्द है॥
लोक वेद बिदित इक्ष्वाकु बंस चहूँ जुग कोसलेस सदा निजपालत बिरद्द है।
सुरपति सखा तासु कहाँ लौ बड़ाई कहो जौन आवै ऐसे काम ताहो को असद्द है ॥६९॥

गृह पुर गली भली भाँति से बजार रचो बीथी नाना गंध से सिचावो कै बिचार हैं।
ध्वजा औ पताका चारु तोरना कलस हेम दीप मनि मानिक अनेकन प्रकार हैं॥
तुरै नाग स्यन्दन बनावो यान नानाभाँति सेनप सुभट सजैं सूर सरदार हैं।
बनादास ब्राह्मन महाजन औ जाचकन सेवक बजनियाँ कहार भारदार हैं ॥१००॥

नृपति रजाय सुनि निज निज काज लागे लगली गली अवध बनाये भली भाँति है।
कचन कलस सब साजि द्वार द्वार धरे ता पै मनिदीप अति छबि सरसाति है ।।
सफल रसाल औ तमाल रम्भातरु पुगी कहत बनाव जाहि भारती लजाति है।
रचे हैं नेवारबन्द मनहु मनोज फन्द घर घर सुख कन्द बनादास ख्याति है ।।१।।

पूरे चौक चारु निज करते सुमित्रा रूरे कचन कलस मनि दीप छबि छाजे हैं।
कोकिल बयनि कल मगल को गान करे लै लै नाम सीताराम बाजे बहु बाजे हैं ।।
अवध सोहावनि सदहि को सराहि सकै अब अमरावति अनेक विधि लाजे हैं।
वनादास तुरै साले गज साले सोधे भले जहाँ तहाँ बीरबर मत्त गज गाजे हैं ।।२।।

मगल दरबि भाँति भाँति के मँगाये भूरि दधि दूर्ब रोचन औ पान नाना फूल जू।
सृग चन्दनादि लाजा पूजत गनेस गौरि राम को विवाह मोद मगल को मूल जू ।।
कहूँ पुरनारिनर बात एक एकन से भये भली भाँति है सुकृत अनुकूल जू।
बनादास अवध छबि कवि को सराहि सकै रचना बिलोकि बीतरागी मन भूल जू ।।३।।

समय अनुकूल देव पितृ पूजा जथाजोग नारि तिय पुरुष के नाम लै लै गाये जू।
कुल रीति बेद रीति लोकरीति करै निति सीताराम नाम राग अधिक सोहाये जू ।।
मगल को चार घर घर पुर एक भाँति आनन्द मगन कहा दिनराति जाये जू।
वनादास नारिनर उर मनोराज करै रामब्याह माँहि तिहूँ भाई ब्याहि लाये जू ।।४।।

सग ही जनम भयो खेले एक सगही मे जज्ञ उपवीत सग मुडन भी भये है।
ऐसे चारि भाई जब सग मे बिवाहि जाहि जानी निज सुकृत के लागे फल नये हैं ।।
कोऊ कहै जौनी भाँति सगै सब और भयो सोही सगै ब्याह विधि भले निरमये हैं।
वनादास अवध अनन्द कौन पार लहै सारद सहमि जानि परै मौन लये हैं ।।५।।

भरत बुलाये भूप बेगही रजाय दिये चलहु बरात राम करि कै तयारी जू।
तुरतहि साहनिन सकल हुकुम दिये साजहु तुरग नाग रथ पद चारी जू ।।
वाहन अनेक भाँति सकल बनाव करो सुतुर सुधारि भारदार भारी भारी जू।
बनादास धाय निज निज काज लागे सब करत सजाव अग अग न्यारी न्यारी जू ।।६।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम षोडशोऽध्याय ।।१६।।

चीनीस्यामकरन सुरग जो तुरंगबर कसे तगजोर जग पूज पट्टा लालेजू।
नोकरे नवीनपै जडाऊ जीन जानि धरे कलगी कलितजेरबन्द हैं दुसालेजू ।।
सिरगा समुदगरी काठीपीठ कच्छिन के गोडन मे बडे बडे कुम्मयत औ चालेजू।
वनादास ललित लगाम लक्खी लाखों मुख यम तज वन्दि आसमान को उछालेजू ।।७।।

केहरी बदामी महुआ दहियल संजाफरंग है कलहमेलगंडा पेसवन्दवसी है।
पचरंग जाल परे अवलख लाखन पै कुल्ला अनमोला पोठिघरि जामें कसी है ॥
चाल सुठि चंचल पै लादे हैं सिकारगाह मुसकी मुजन्नस पै गजगाह घसी है।
बनादास सुरख सब्रुज की गुंधाये चोटी मोटे मोटे मोती लर अगनित लसी है ॥८॥

खाकी सुर चाल तरकाव नूर सोभा खानि जेर कड़े जालिम के लाये ममरेज है।
अतिमुख जोर कौन हारीनोखी नई दिये उड़त अकास मानों घोड़े बे करेज है ॥
नामजो कल्यान पाँच मानो बिना आंच जरै जौन पोस जापै मानो सूली कैसी सेज है।
हहनात फहनात जहाँ तहाँ बनादास दावत दिमाग भानु तुरंग ते तेज है ॥९॥

कुखुम कखावरि हृदावलि औ छत्र भंग गोम दोम जानु आन हड्डावाले काम के।
सिहिनी औ साँपिनि करम खनि खाय लेत भर्मवाले आवे घर भये बिधि बाम के ॥
अकर बतक्की न सरब घूट चक्की राखे स्यामताडूबूरे आँसू ढारे बसुयाम के।
कमर के लचे घने रोग दोष जुड़ बूढ़ बनादास ये तुरंगन तबेले राम के ॥१०॥

कासी कास्मीर खुरासान मुल्तान चीन महाचीन चहुँदिसि के आये महिपाल जू।
बम्बई बिलायत क़वायद करन वाले काबुल कलिंग पुरपट्टन बिसाल जू ॥
स्वेत द्वीप कुस द्वीप सालिमल सिंहलादि सातहू समुद्र वार पार गये हाल जू।
बनादास रामब्याह जानि उतसाह अति धाये सब कोऊ माने भूरि भागि भाल जू ॥११॥

देस देस के नरेस भूरि परे जहाँ तहाँ बाहेर नगर अति भई भीर भारीजू।
भूप द्वार परत पपान सो पिसान होत जहाँ तहाँ ठौर ठौर ह्वै रही तयारी जू ॥
आपन परार तेहि समय पहिचाने कौन सारद सहमि जात करै को सुमारी जू।
बाजे बहु बाजत न कान दीन जात कहूँ बनादास लाजे घन घूमघाम न्यारी जू ॥१२॥

फाटत फनिन्द्र फनि काटत कमठ पीठ कलमलात कोल चिकरत दिगपाल है।
चौंकत सुरेन्द्र महि तावत चकित चित्त धसकत धराधीर धर तन काल है ॥
कम्प हिमवान कवि कहाँ लौ बखान करै टूटि कै पिसान होत पाहन बिसाल है।
बनादास संस्या हेत बिधि उर्ध्व स्वास लेत साजत बरात दसरत्थ महिपाल है ॥१३॥

अमित मतंगन पै दुन्दुभी बजत घोर डंका ऊँट पीठिन पै अति घहरात है।
सिंहा बीन तुरही बजत सहनाई भूरि तासा ढोल डफला न कान दीन जात है ॥
पनव न फेरि डिमडिमी संख सब्द अति कहाँ लौ गनावै पन जाहि सकुचात है।
अति भारी भीर देखि भूपति रजाय दिये बाहेर नगर जोग चलन बरात है ॥१४॥

बाहर से आये पुर भीतर न आये तौन कहाँ समवाई दल महा बरजोर है।
देवता अकास में बरात देखें रामजू को जहाँ तहाँ अति गजघंट को टकोर है ॥
तुरंग नचावत कुरंग से निसान गति डग तन ताल जोर जंग अति घोर है।
बनादास उर अभिलाप होत बार बार कबहिं कुँवर देखें दोऊ स्यामगोर है ॥१५॥

गाजे मत्तनाग दिसि कुंजर लजात जाहि कलित अम्बारी झूल झालरि ललित है।
मोती मनिमानिक जडाऊ ज्योति जगमगैं भगे मेघवान मद छवि उछलित है॥
बार बार दाबत दिमाग ऐरावत को दूषन दलित लाखो लक्षन फलित है।
बनादास कचन के हौदा पीठ पाठन के उपमा टटोरि सोक सारद सलित है ॥१६॥

सत्रुजय विदित गज उपमा न जाको जग अतिही बिसाल हिम सृग के समान है।
औध महाराज जोई होत है सवार सोई सजो सब अग करै कहाँ लौ बखान है॥
जाहि लखि लालच मुरेसहू के हिये होत बनादास को तलबरात अगवान है।
भूपति के अस्त्र सस्त्र साज धरे नाना भाँति कसी है अम्बारी ता पै एक पीलवान है ॥१७॥

रेसम के रस्से स्वेत घटा घहरात घोर मद के पनारे गिरि झरना से झरे जू।
दीरघ पलक दत घन हस पाँति मानो चमाचमी चपला सी पटतर लरे जू॥
सुड को उठाय रथ रवि को लपेटो चहै भूतल धरत पाँय कच्छ कोल दरेजू।
बनादास करत चिकार घोर बार बार सुर कर कान देत आसमान अरेजू ॥१८॥

लाखों लाखौ सिंधुर के हलका हजारो चले भारी भारी साँकर पगन माँहि परे हैं।
भाले बरदार आस पास चढ़े अस्वन पै अनी को लगाये तबौ नाँहि काबू तरे है॥
एकदन्त उभयदन्त तीनिदन्त चारि दन्त दसन विहीन कौन सख्या कबि करे है।
बनादास स्याम स्वेत भूरे भाँति भाँतिन के मानहुँ धतूरे खाय नसा मद भरे हैं ॥१६॥

बैठे सरदार छोनीपति सुत बाँके बीर छयल छबीले अस्त्र सस्त्र बहु धारे जू।
कटि कर वालै पीठ ढालै औ भदीरै सीस पाग टोपी चीरारग सम लाउ दारे जू॥
परिकर कसे मन बसे तन तेज भूरि धरम धुरीन सुठि समर जुझारे जू।
बनादास उर उत्कठा होत बार बार कबै रघुनाथ नीकै नैन ते निहारे जू ॥२०॥

काबुली खधारी खेत जगल के घोडे बहु मगल के देनहारे लक्षन तुरंग है।
सिंधुजा सलोने सोने मनिन के भूषन हैं दूषन रहित अग अग जोर जग है॥
दक्षिनी पछाही हरद्वारी सिंधु सातहू के फाँदिवे को नद नार उर मे उमग है।
बनादास जलमाहि थल के समान चले भानु अस्व को दबाय देत ऐसे ढंग है ॥२१॥

मोरगी पहाडी ददरी के बहु दामवाल टाँघन टेटूआ ताजी तुरकी अमोल हैं।
घन पग धरत अवनि म अनूपगति मानो परै आगि माँहि अति ही फफोल हैं॥
टापन ते जनु सेपहू कि कटि कूचि जात फूटत कमठ पीठ दवकत कोल हैं।
बनादास धमकते धरा अकुलात बहु जाके जोरजगन ते डोलत अडोल हैं ॥२२॥

छप्पय

सुरप काठियावार अरब के अस्व घनेरे।
पवन वेग उडि जात गरद कहुँ मिलत न हेरे॥

चपला कैसी चमक मनहुँ घन माहि समाई।
अरव खर्ब्ब लै गिनव दाम कहु कौने पाई॥
बहु वनि वनि कोतल घने सो जनु थल छोड़े चलैं।
कह वनादास अति वक्रगति सुठि लगाम मुख में मलैं॥२३॥

लाजैं भानु तुरंग रंग रंगन के वाजी।
नहिं हय साले इन्द्र घने तुरकी औ ताजी॥
चोखे चाँड़े चपल चकित असमान निहारैं।
तरफरात अति कान नाक बहु वार न मारैं॥
कवि कोविद की गति कहाँ सारदहू मौने धरै।
कह वनादास को कहि सकै राम तवेले जो तुरै॥२४॥

घनाक्षरी

पोल दवि जात ठौर ठौर माहि भूमिहू कि नट कैसे कला जनु कूदत कुरंग हैं।
फफदत फदत नये भै थापी मारेहू ते बार बार भरत अकास को उमंग है॥
मन वेग पौन वेग नटत मयूर गति जानु को दवाये करै महाजोर जंग है।
वनादास पटतर हेरे न मिलत कहूँ मानहुँ तुरंग बहु रूप भो अनंग है॥२५॥

वाजी छवि छाजी सुठि राजी राखै मन वेग हहनात फहनात जोर तेज मतु भो।
वार वार कावा घिरै घिरै महि दौरि दौरि लौरि में परत जनु अति उछरतु भो॥
ताजिन में सिरताजी गाजी मर्द को गुमान झाँकै आसमान रवि अस्व निदरतु भो।
वनादास सैकड़ों हजारों लाखों कोटि कोटि एक ते अधिक एक लेखा को करतु भो॥२६॥

रग रंग के तुरंग अव लख जोरजंग उर में उमंग दौरि करत दलेल हैं।
मुसकी मुजन्नस मयूरगति मन वेग कुमयत कुल्ला बहु चले वगमेल हैं॥
सिरगा सुरंग गर्रा पर्रा जोरि भाँति बहु भारी भारी नद नार मारि जात हेल हैं।
वनादास झूमि झूमि टापन ते फालें भूमि कूदत कुरंग गति करत कुलेल हैं॥२७॥

चाल चालु चपल चलत चित चोरि लेत मुरखा सवुज मन मौज को सँभारे हैं।
खाकी खुर थार भरे कच्छी है कुरंग गति नोक रानवीन उड़ि जात धार वारे हैं॥
केहरी वदामी नट कला से करत जनु झाँकै आसमान आल पूँछ झुकि झारे हैं।
वनादास लक्खी पेलि काम करै लाखन में दहियल दावत दिमाग जनु सारे हैं॥२८॥

ताजी तरफरैं कान तुरकी उमंग भरे महु आहरत मन करत कलोल हैं।
हहनात फहनात झुकि झुकि झूमि फिरै सोभित संजाफ मानों अति ही अमोल हैं॥
सिघुजा सलोने जनु चलत अकास मग कावुली कुलाचि फोरि देत महिपोल हैं।
वनादास जंगली जुलुम अति जोर करै घन पग धरै जनु परत फफोल हैं॥२९॥

मोरगी पहाडी भारी मारी रन काम करें ददरी के रिपुदल माहि दवि जात हैं।
टांघन टेट्टआ सुख देत असवारन को अतिही अराम बिछी सेज से सोहात है ॥
देसठे दवग अग अगन ते बज्र मानो टेढी नीर वाले बहु कीमत के गात हैं।
बनादास उपमा न कवि कहूँ पाय सकै घोडे रामजू के कहि सारद सिहात है ॥३०॥

जीन है जडाऊ मोती मनि ज्योति जगमगै जीनपोसरग रोप कोप छवि छरेजू।
लादे हैं सिकार गाह गज गाह रूरे अति पँचरँग जाल बहु पीठिन पै परेजू॥
आलि पूंछ मोती लसैं कलित कलगी सीस ललित लगाम औ हमेल गडा गरेजू।
बनादास पट्टा पूज पेसबन्द जेरबन्द रँगी है रकाव अग अग सोभा भरेजू ॥३१॥

सोहत सवार बाँके भूप के कुमार अग अग छवि खानि राम सखा सरदार है।
नखसिख भूषन सवाँरे सब अग करि अस्त्र सस्त्र धारे कहि जाय कौन पार है॥
लोंटै काकपक्ष कांध पीठ पै सिपर परो कटि करवाले छूरी खजर कटार है।
कमर पट्का परत लेटाट बाफी वर बनादास सिर पागटोपी चीरा सार है ॥३२॥

ताजिन मे वाजी बरछाजी छवि अग अग नोकरे नवीन पै जडाऊ जीन कसी हैं।
पूजपुट्ठा पेसबन्द जेरबन्द गोड कडे ललित लगाम औ कलगी सिर बसी है॥
आलि पूंछ मोती लर है क्लह मेलगर रूर है रकाव जाल गजगाह लसी है।
बनादास मानो बिधि हाथ से सवाँरे निज भरत सवार सोभा कामहू कि नसी है ॥३३॥

तिलक विसाल भाल सीस चीरासुख बीरा साँवल सलोने गात अति अनमोल जू।
काकपक्ष चन्दमुख अरुन अघर द्विज कज नैन बक भ्रुव अति प्रिय बोल जू।
उर भुज भारी जानु पीत पांय जरी जूतो कवन केयूर राम प्रेम को अडोल जू।
कटिकर वालै पीठि ढालै अनुहारि प्रभु बनादास अग अग छवि है अतोल जू ॥३४॥

तुरगन धावत अधिक मन भावत उडावत अकास को सो अति मन मेल है।
धनपग धरत मनहूँ आगि परत कलासो नट करत उठावत कुलेल है॥
फफकि फफद तज कदत जुलुम करि भरि खुर धार छटा चलत अकेल है।
बनादास फिरत मनहुँ महि घिरत हहकि हिं हिं करत बछेड़ा करैं जेल है ॥३५॥

सील के निधान औ सुजान सर्व अगन मे समै समय जयाजोग जोह सब लेत है।
करत सँभार सार भार के धरैया वडे भरत समान दूजो कवन सचेत है॥
मन बसुयाम राम कज पाय भृग भयो नयो नया मोद हात हृदय निकेत है।
बनादास वालबुद्धि सुद्धि के लेवैया भजे भली समै पाय मन भावत को देत है ॥३६॥

मुस्की तुरग वार वार ही उमग भरैं छवि छांव अग अग काठी पीठि पर धरे हैं।
आलि पूंछ मोती लसैं कलित कलगी सीस ललित लगाम औ हमेल गडा गरे हैं॥
पुट्ठापूज पेसवन्द जेरवन्द गोड कडे जाल पचरग औ सिकारगाह परे है।
बनादास तापर सवार सत्रुसूदन है पांव धै रकाव पै जोरि पुरन दरे हैं ॥३७॥

पाग अरवंगी सिरजंगी ठाट वाँकी अति लोटैं काकपक्ष काँध पीठ पै सुढालजू।
उर भुज भारी कर ककन केयूर वर नेजा कर फेरत औ कटिकर वालजू॥
पौन जानु जरी जूती जो है सोई जानै जन गोरे सुठि गात उरमनिन के मालजू।
वनादास चन्द मुख वक भ्रुव कंज दृग स्रवन में वाला भाल तिलक विसाल जू॥३८॥

राम के दुलारे पुनि भरत के प्यारे लषनहु सुख सारे रिपु हृदय को साल हैं।
सोभा सुख सागर उजार अमित गुन नागर निपुन सुठि बल के विसाल हैं॥
आज्ञा अनुवर्ती तिहुँ भाइन को भक्तिजुत बनादास जुद्ध भूमि मानो महाकाल हैं।
तुरग कुदावत सो भावत हमारे मन देखे ते बनत मानो मृगाकुर छाल हैं॥३९॥

वार वार दावत दिमाग सों मतंगन को अकनि निसान अति उड़त अकास हैं।
जमत जकंदत फफंदत फरकि जात अल्मलात सुठि नहि देत सावकास है॥
घूमि घूमि झूमि झूमि टापन ते फालै भूमि भरें खुर थार थहरात वेहवास हैं।
थर्थकि थर्थकि थल छाँड़ि के चलत जनु पटतर पावत न कहूँ बनादास हैं॥४०॥

केहरी कुरंग गति तंग चार जामे कसि जीन पोस रंग देत सुठि सुखसार भो।
ललित लगाम मोटी मोतिन सों चोटी गूंधी अंग अंग भूपन अनेकन प्रकार भो॥
जहाँ तहाँ करत सँभार सो अनेक भाँति भागि को अगार रामसखा सरदार भो।
अस्व अलवेलो मन मौज को निगाह करैं बनादास चढ़त सुमंत को कुमार भो॥४१॥

सीस पै सुरंग पाग काकपक्ष लोटि रही ढाल पीठि परी कटि कसे तरवारि हैं।
छुरी औ कटारी टाट वाफी परत ले कटि नेजाकर फेरत तुरंग को सँभारि है॥
भरैं खुर थारउ झकार वार वार वेग उपमा को कहै जोर मानहु बयारि हैं।
तुरग सवार दोऊ बने हैं बहारदार बनादास देखैं लोग देत मनवारि हैं॥४२॥

साजे सुख पाल तामदान यान भाँति भाँति पीनस सुखासन सुतुरकेत तारे हैं।
परी उरत कैं जरक सी जोर जगमगैं चारि वसु द्वादस औ षोड़स कहारे हैं॥
बनादास जहाँ तहाँ विप्र वेद रिचा पढ़ैं बन्दी सूत मागध सुजस को उचारे हैं।
सचिव महाजन सुभट सूर साजि चले अवध निवासी कोऊ रहत न मारे हैं॥४३॥

ब्याह उरसाह औ दरस रघुनाथ जू को काहि नहि भावत को ऐसन मलीन जू।
चढ़ि चढ़ि यानन पै जयाजोग चले लोग ब्राह्मन औ कवि प्रौढ़ पंडित प्रवीन जू॥
मागध औ सूत वन्दीजन बहु भाँति चले बर्तहि सुमंत पुर जतन को कौन जू।
सेवक सुभट सब भाँति से प्रमान वाले टोप टोप ओघ रक्षा हेत आज्ञा दीन जू॥४४

साजे जुग स्यंदन न सारद सराहि सकैं तुरग स्यामकर्न तामें चारि चारि नहे हैं।
साजित सुरेन्द्ररथ भानु जानु सोभा हरें तबै कर जोरि कै महापति सों कहे हैं॥

एक पै चढाये हैं वसिष्ठ को नृपति वन्दि गुरुहि अरूढ देखि महा मोद लहे है।
मुनिहि प्रनाम करि दूसरे पै आपु चढे सुनासीर गुरु सग मानो सोहि रहे है ।।४५।।

।। इतिश्री मद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम सप्तदशोऽध्याय ।। १७ ।।

राम उर आनि सिव गवरि गनेस बन्दि दसरथ भूप चले सब को बजाई जू।
भये सुमसगुन समय अनुकूल आय दधि मीन दिसासुभ दरसन पाई जू।।
बिप्र के कुमार के जुग पुस्तक उदार कर लोमालोनी बार बार परी है देखाई जू।
सघट सबाल दिव्य रूप तिय देखि परी चारा चाख लेत बाम दिसा मे सोहाई जू।।४६।।

स्यामा वाम आम पर खेमकरी क्षेम कहै नकुल निहारि नृप अति सुख लहे है।
जाने अनुकूल ईस वीस बिस्वा भली भाँति सकल प्रकार सुभ काज निरवहे हैं।।
सगुनहुँ धन्य माने आपु को हजार गुना राम के विवाह मे बडाई हम गहे हैं।
बनादास सगुन बरम्भ जासु तनय भयो सगुन को सगुन सो आपु सब कहे हैं।।४७।।

दीरघ दसन दरकत दिगदतिन के दबकत बार बार बडे समरत्थ जू।
लचकत सेष कटि कच्छप कचरि जात भचकत सूकर अमित गुन गत्थ जू।।
दलकत मेदिनिउ छलकत सिंधु जल फलकत नद नार अतिहि अकत्थ जू।
बनादास थहरात मारतड छाँडि पथ जबही बरात राम चले दसरत्थ जू।।४८।।

फूटि फूटि पाहन पिसान होत मारग के धूरि आसमान माहिं भूरि अधकार है।
बाजे अति बाजत न कान दीन जात कहूँ समय तेहि चीन्है कौन आपन परार है।।
मत्त गज गाजत लजित घन सावन के तुरंग सुतर नाद करैं बार बार है।
बनादास दिसि औ बिदिस को न भान कहूँ महा अध धु ध कहै कौन वार पार है।।४९।।

वेसर महिष गाडी सुतुरके तार भूरि भार बरदार नाना भाँति भाँति के सिधाये जू।
भरि भरि कावँरि कहार कोनतार टूटे जाचक अमित देस देसन के आये जू।।
नृत्यगान वाले जनु गधरब के समान कला नट करैं बहु स्वाँग को बनाये जू।
बनादास सेवक सकल चले वाहन पै निज निज अधिकार कहाँ लौं गनाये जू।।५०।।

छप्पय

स्यन्दन प्रति दस नाग नाग प्रतिसत हैं भारी।
चोखे चाँडे चपल तुरग प्रतिदस पद चारी।।
सतपदचर प्रति सुतर सुतर प्रति एक मियाना।
तेहि प्रति गाडी एक भेद बिरला कोउ जाना।।

महिप वृषभ वेसर विपुल नहि कहार टेढुआ कहत।
कह वनादास इमि बनि चली प्रभु बरात उरही रहत ॥५१॥

स्वांगी नट को कहँ कला नाना विधि करहीं।
विप्र पढ़त कहुँ बेद बिरद बन्दी उच्चरहीं ॥
जाचक नृतक अपार बजनियां विविध प्रकारा।
सेवक भांति अनेक सखा जहं लगि सरदारा ॥
आतसबाजी अनगनी बहु मसाल वरदार है।
कह वनादास मिथिला अवध मनहुं न टूटेउ तार है ॥५२॥

सवैया

मिथिलेस लखे अवधेस को आवनो वाल अनेक रचे मग माहीं।
रिद्धि औ सिद्धि अनेकन सम्पदा तामें धरे जो धनेस लजाहीं ॥
जाते सुपास बराती लहैं तेहि हेत अनेक विचार कराहीं।
लै लै कहार चले बहु भार लहैं उपमा जेहि की कबि नाहीं ॥५३॥

पकवान औ मेवा अनेकन जाति दही चिउरा बहु भांति मिठाई।
संयम भूरि भयो प्रथमै यह पीछे से भूप विदेह पटाई ॥
दीरघ औ लघु जे सरिता सरिता में भली विधि सेतु पठाई।
दासवना को बनाव कहै समुझै महिमा निमि दात खटाई ॥५४॥

वास करै सब भांति सुपास से भूलिगे भौन बरातिन केरे।
पावत हैं सुरदुर्लभ भोग औ आसनवास जथा रुचि जेरे ॥
जो जेहि लायक ताको तेही विधि ऊँचहु नीचहु मध्य घनेरे।
दासबना इमि कै मगवास को जाय बरात जुटी पुर नेरे ॥५५॥

साजे तबै मिलने को समाज तुरंगम औ रथ नाग घनेरे।
पैदर की न रही परमान सृङ्गार किये सब लोग सवेरे ॥
वाहन भांति अनेक बनाय चले वगमेल दोऊ दिसि केरे।
दासवना दसरत्थ कि भेंट पठाये विदेह न जात गनेरे ॥५६॥

भांति अनेकन के पकवान मिठाई औ मोदक जाति अनेका।
भूषन वाहन औ मनिमानिक भाजन यान भयो यक ठेका ॥
वस्तु अनेकन भेजे विदेह लिये महिपाल कहै को विवेका।
दासवना पुनि भै बकसीस चहो तेहि अवसर जो जस जेका ॥५७।

पांवड़े वस्त्र विचित्र परें जनवासहि लै चले भूप लेवाई।
सरब सुपास तहां दिये वास गये अगवान सु आयसु पाई।

राजत भे पति औध तहां पुरमाहिं प्रमोद रह्यो अति छाई।
दासबना कहै एकहि एक बरात भली विधि अग्र सिधाई ॥५८॥

घनाक्षरी

पितु आगवन सुनि उर उत्कंठा अति कौसिक संकोच से न कहैं मुख बात जू।
जाने रघुनाथ गति मुनिहु मुदित मन सील औ संकोचहि मही में उमगात जू॥
विस्वामित्र कहे स्नुति सेत पाल राम तुम चलहु अवसि पितु मिलन को तात जू।
राम औ लषन जुत गाधिसुत बेगि चले भूपति समीप बार भई नहिं जात जू॥५६॥

सुतन समेत मुनि आवत बिलोकि नृप चले प्रेमसिंधु माहिं जनु थाह लेत जू।
वन्दे रिषि पायँ लिये हृदय लगाय मुनि पितु पायँ परे राम लषन समेत जू॥
गई मनि फनिक मनहुँ फिरि आय मिलि सुतन लगाये हिय भूपति सहेत जू।
बनादास भरत सहानुज प्रनाम किये राम उर लाय लिये कृपा के निकेत जू॥६०॥

मिले लक्ष्मन हरषाय दोऊ भाइन सो रिपुदौन भरत मुनिहिं सिरनाये हैं।
लषन सहित रघुनाथ गुरु पायँ वन्दे राम लक्ष्मन मुनि हृदय लगाये हैं॥
पूछे क्षेम कुसल सकल निज निज ओर अनुज सहित वन्दे द्विजन सोहाये हैं।
बनादास दोऊ भाय मिले औधबासिन को जथाजोग सब उरमाहिं तोष पाये हैं॥६१॥

रामहिं बिलोकि अति मुदित अवधबासी सकल बराती उर तोष सुठि माने हैं।
पितु के समीप चहुँ बन्धु भै विराजमान जनु चारिफल भये भले रूपवाने हैं॥
आनंद अवध याते उपमा न आवै उर कहां निसिदिन कोऊ जात नाहिं जाने हैं।
बनादास मिथिलानिवासी सुख राखी अति मानहुँ अनन्द को उदधि उमगाने हैं॥६२॥

देह गेह व्यवहार को सनेह सूखि गयो पुरलोग सुठि रामप्रेमपीन भये हैं।
जैसे जल पावस ते दादुर लहत मोद धान पान के समान सुख निति नये हैं॥
देखे चहुँ बन्धु ते कहत एक एकन ते बनादास उर जनु नेह बीज बये हैं।
जैसे राम लषन कुमार जुग तैसे आये भूप संग माहिं लखि चित चोरि गये हैं॥६३॥

कहत सुनत सब ब्याहें चारि भाई इहां जानी सखी तब अनुकूल विधि अति है।
एक कहें मन समुझाये ते न धीर लहे कैसे ह्वै है भूप की हमारी ऐसी मति है॥
एक कहें जिन देव प्रथम लगाये जोग सोई यह पूर करें कहें हम सति है।
एक कहें जुगल महीप से न आन जग बनादास पूरह्वै है पुन्यवान अति है॥६४॥

हिम रितु अगहन मासन में सिरमौर धेनु धूलि बेला विधि लगन बनाये जू।
परम चतुर चतुरानन विचार करि नारद के कर पुर जनक पठाये जू॥
सोई इहां जनक गनक गुनि गनि राखे दोऊ एक घड़ी ताते मोद सब पाये जू।
बनादास सोई दिन आयो कछु काल बीते भूपति विदेह सतानन्द को पठाये जू॥६५॥

औधपति पास आय सकल प्रसंग कहे नृप दसरथ जाय गुरुहि सुनाये जू।
कहे मुनि हरषि करहु कुल बेद रीति होन लागी सोई जैसी आज्ञा भूप पाये जू॥
सकल बरातिन बनाव किये बहुभांति वाहन औ यान सब अंगन बनाये जू।
वनादास बने चारि भाइन बरनि जात बानी मन सकुचात कवि किमि गाये जू॥६६॥

परे चोप डंकन पै कम्पत करेज धीर बाजें घोर दुंदुभी न कान दीन जात हैं।
सिंहाबीन तुरही औ तासा ढोल बाजे भूरि डफला डिमिडिमी की सोर सरसात हैं॥
पनवन फेरि नृत्य गान तान नानाबिधि कला करे स्वांगी केते गनिन सिरात हैं।
साजि सुख पाल नृप प्रथम चढ़ाये मुनि मानों सुरगुरु इन्द्र अग्र में सोहात हैं॥६७॥

सजे गयन्दपै अम्बारी कसे भली भांति झूल जर कसी जगमगी अति जोर जू।
मोती मनिमानिक झलक सुठि झलमलात बाजत घमंड करि घट अति घोर जू॥
दीरघ दसन दिसि कुंजर लजात जाहि मानो ऐरावत को डारे करि थोर जू।
वनादास मद के पनारे गिरि झरना से तापै दसरत्थ चढ़े भूप सिरमोर जू॥६८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम अष्टदसोऽध्यायः॥१८॥

घनाक्षरी

अस्व अलबेला हैं तबेला में अकेला छटा हेला मारि जात भारी नदीनद नारजू।
सिंधुजा सलोना टाप बूड़त न जल माहि भूमि पग धरैं मानो परत अँगारजू॥
भानुरथ बाजी मात करत पलक माहि मानों थल छोंड़े चलै कहे को बहारजू।
वनादास वांको मन मौज जोहै बार बार उपमा न जाहि ताहि किये हैं सृंगारजू॥६९॥

जगमग जीन जर कसी सर कसी छबि मोती मनि लसी चवरासी पगरसी है।
हीरामनि चोटी चारु ललित लगाम लसैं किंकिनी कलित औ कलंगी सीस बसी है॥
पूजपुट्ठा पेसबन्द जेरबन्द लाल सुचि दुमची दलील करैं गज गाह कसी है।
परे पंचरंग जाल रंगी है रकाब रूरे है कलहमेल अरु गंडा गर लसी है॥७०॥

तापर सवार राम सोभा को सराहि सकै स्याम घन लज्जित तमाल तरु फीको जू।
नीलकंज मरकत द्युति ब्याजहू से नाहि नील है जमुन जल उपमा न ठीको जू॥
मौर है सलोने सिर लोने वर अंग अंग बसन सुरंग कोर भावत सो नीको जू।
वनादास मोती स्रवन धोती सुचि हेमवर्न जूती पग जरी अति सोहैं सिय पी को जू॥७१॥

आनन सरद ससि तिलक बिसाल भाल काकपक्ष कलित सो जानै जिन देखे हैं।
वंकभ्रुव कमल नयन कजरार कोर बंक अवलोकनि करत हिय रेखे हैं॥

हरिकध कम्बुग्रीव छवि सीव बनादास कोमल कपोल समबिन्दु घन पेखे हैं।
सारद गनेस सेस रूप न सराहि सकैं जानत महेस कवि और कौन लेखे हैं ।।७२।।

मन्द मुसकानि मन हरत करोरिन को अधर अरुन द्विज नासिका निकाई है।
उरभुज भारी बर कंकन केयूर कर राते जलजातपानि देखत लजाई है।।
मरकत सिखर सो कैधौ गगधार धसो कैधौ हस पाँति घन निकट उडाई है।
बनादास उपमा न मिलत टटोरि सुद्ध देखे ते बनत मुक्तमाल अति भाई है ।।७३।।

तुरग नचावत थिरिकि थहरात नभ थलहि न आवत उमग को भरतु है।
मोर हिल जावत कुरग कुर छाल भरै करत कुलेल बार बार उछरतु है।।
घनपग धरत मनहुँ महि माला पो है भरै खुरधार नट कला को करतु है।
बनादास आसन दबाये जनु कढि जात बढि जात मन वेग धीरन धरतु है ।।७४।।

मानहुँ सँवारै विधि सारद सृगार किये कैधौं मनसिज वाजि वेष को बनायो है।
रामहेत निजरूप बुद्धि बल मोहै जग मिथिला निवासी को विसेषि अपनायो है।।
इन्द्र के तबेला सेकि आयो अलबेला अस्व फिरत अकला कवि उपमा न पायो है।
अति मन मेला रवि रथ त्यागि आयो किधौ प्रभु असवार बनादास मन भायो है। ७५।।

मोहे विधि बिष्नुन महेसहू को घीर रही इन्द्र अवलोकत अमित सुख पायो जू।
अपर सुरन गति अति नव खानि जात पारस को पाय जनु रक ललचायो जू।।
सुरतिय उर की हवाल न बखानै कवि बूझे ते बनत पटतर कहुँ पायोजू।
बनादास मिथिला निवासी की चलावै कौन आगे ही के मूडे परे ऐसो उर आयोजू ।।७६।।

सुरखा तुरग बार बार ही जमत जोर अग अग सोभा जाहि चित चोरि जात है।
काबिली कुलाँच मारि भूमि खुरधार भरै मानो रबि वाजि हेत गगन उडात है।।
हहनात फहनात झूमि झूमि घूमि घिरै नटत मयूर गति अति सरसात है।
बनादास नखसिख भूषन अनेक लसै भरत सवार द्युति मदन कि मात है ।।७७।।

कसे चारि जामे तग बेल बूटा रँग बहु जीनपोस रोस कोस अति घनी मनी जू।
गामचीस कीमखाम पीठिगर लामीलोनी पग चवरासी औ लगाम सुठि बनीजू।।
घुघुट अमोल घन पग धरैं भूमितल चोटी मनिमानिक सो गुनो जन ठनी जू।
पूजपेसबन्द जेरबन्द गंडा लाल लसैं बनो है हमेल औ कलगी सीस जनी जू ।।७८।।

समला सलोने सीस लोने लोने अंग सब रग स्यामराम अनुहारि प्रान प्यारे हैं।
चन्दमुख वकभ्रूव लावन कमलदल मोचन विपति भव सोचन नेवारे हैं।।
कुडल स्रवन काकपक्ष कच घुँघुआर मानो अलि अवलि अतिहि छवि न्यारे हैं।
अरुन अधर द्विज नासा कोर तुड लाजै तिलक ललाट कध उर भुज भारे हैं ।।७९।।

कम्बुग्रीव मुक्तमाल कंकन केयूर बरबस न सुरंग जानु पीन जूती जरी है।
सोभा के समुद्र रूप सकै को सराहि कबि सूरबीर धीर सील लोचन में भरी है॥
पीतपट कसि कटि राजित चरम असि गुन के निधान राम प्रीति बाँटे परी है।
बनादास वार वार ताहि की सराहै भागि बुद्धि औ बिवेक ऐसो रूप उरधरी है॥८०॥

लाल तुरै ताजी तेज तीक्षन तरंग भरे लाली है लगाम औ कलंगी लालि लसी है।
लाले पेसबन्द जेरबन्द गंडालाल गरे लाले चारि जामें पूज लाली मुख बसी है॥
चोटी लालि गूँधी जोनपोस जाल लाल परे लाले गोड़ कड़े ध्यान काके उर धसी है।
बैठे लाल लषन तुरंग पीठि बनादास लाखन में लोने लाल जनहिय फसी है॥८१॥

लाली सिरपाग औ ललित कर कोड़े लाल गोड़े लालि जूती उर लाले फूलमाल हैं।
लाले पट कसे कटि लाली कर बाल तट लाले कर भाला अरु लाली पीठ ढाल हैं॥
लाली प्रीति लाली रीति लाली नीति पाली नित बनादास लाले राम सेवा में बिसाल हैं।
लालच लगत सब लालै लाल लेखि लेखि जामा लाल लसै दसरत्थ नृप लाल हैं॥८२॥

लाले कंज लोचन बिमोचन बिपति जनु अधर दसन लाल नासिका निकाई है।
आनन सरद ससि तिलक बिसाल भाल कुंडल स्रवन सुठि कंठ छवि छाई है॥
उरभुज भारी कन्धमनि माल प्यारी अति कंकन करन वर अंगद सोहाई है।
बनादास जानु पीन जो है तेई जानै जनु लाल दसरत्थ जू के भाये चारि भाई है॥८३॥

तुरंग उड़ावत कुदावत कुरंग गति आवत न थलथहराय थिरकतु है।
घूमि घूमि झुमि झूमि टापन ते फालै भूमि उमंगि उमंगि नट कला से करतु है॥
अस्व अलबेला मन मेला है तबेला मध्य करत कुलेला अति जोर ते जमतु है।
जवकत जमवकत फफन्दत जकन्दत अटेरन अटत बार बार उछरतु है॥८४॥

मुसकी मुजन्नस तुरंग खेत जंगल को मंगल को देरहार छठो बरवाजी है।
फाँदि जात नदी नार फारि जात सैन सत्रु मारि जात हेला वगमेला मन राजी है॥
नाँघत मतंगन को अंगन अमित बलजंगन में जोर करै ऐसो मर्दगाजी है।
सोभा है उमंगन में रंगन से मोहै जग जो है मन मालिक सो सत्रु दौन साजी है॥८५॥

किंकिनी लगाम लसै घुंघुर पगन माहि दुम्म आल मोती दुमची की द्युति न्यारी जू।
काठी परी पीठ जाललाल औ सिकारगाह चढ़े जेर कड़े ममरेज अति भारी जू॥
रूर है रकाव पेसबन्द जेरवन्द लाल लालीमुख पूज औ कलंगी सीस प्यारी जू।
बनादास टारी छवि सकल तुरंगन की सोभा अंग अंग जानि परै अनियारी जू॥८६॥

बाँके सत्रुसूदन दलै या वीर वैरिन के भैया चारिमाहि प्रिय काहू नाहि खाम जू।
सीस पै मंदीरैं काकपक्ष काँध लोटि रही बसन सुरंग अंग सोभा सुखधाम जू॥
बंक भ्रुव दीरघ विलोचन विसाल भाल तिलक रसाल स्रुति वाला अभिराम जू।
चन्दमुख नासिका अधर द्विज नीके अति कलकंठ बनादास सोभा को मुकाम जू॥८७॥

कन्ध उर भुज भारी कंकन कलित कर अंगद अमोल अरबिन्द कर पायजू।
जानु पीन जूती जरी कटि कर बाले परी छूरी औ कटारी खरे खंजर सोहायजू॥
कोड़ा कर ढाल पीठ नेजा नोकदार रूर महासूर बनादास तुरँग नचायजू।
भरत को प्यारे राम लषन दुलारे दसरत्थ जू के बारे कहि सारद लजायजू॥८८॥

घूंघट बनाये पुनि पूंछ को उठाये हहनात बार बार धाय धरनि चलतु है।
महि खुर धरै धीर धरै न कदपि काल आल अलबेली औ लगाम को मलतु है॥
कान तरफरैउ झकरै आसमान मध्य बनादास अरि दल खलहि खलतु है।
थिरिकि थथक्कत थँभाये नाहिं थम्भत जकन्दत जमत पुनि पुनि उठलतु है॥८९॥

छप्पय

तुरय काठियावार स्वेत जंगल के घोरे।
दरियाई दक्षिनी दाम जिनके नहिं थोरे॥
काबुल और कन्धार मोरगी ददरी केरे।
आरब्बी बहु खेत गनै को अलल बछेरे॥
सकल पीठि काठी परी जीन जवाहिर जगमगै।
कह बनादास पटतर कहा मेघवानहुँ को मद भगै॥९०॥

कुल्ला करत कुलेल कुम्मयत कोटि कुलाचैं।
कच्छी भरि कुरछाल मोरगति घोडे नाचैं॥
महुआ मनको हरै सुरति सजाफ सँभारे।
सबजा सिरगा समुदकला नट कैसो मारै॥
आलि दुम्म मोती लसैं कलँगी ललित लगाम है।
कह बनादास उपमा कहाँ बाजि बेप जनु काम है॥९१॥

लक्खी लाखौं दाम केहरी कुँवर कुदावैं।
गर्रा पर्रा जुरे बदामी चितै चोरावैं॥
सुरखामुस्की सुरंग नोकरा रंग घनेरे।
खाकी भर खुर थाल चाल पटतर नहिं हेरे॥
दहियल दाम अनेक केनखसिख सुठि भूपन सजे।
कह बनादास देखे बनै उपमा कवि खोजत लजे॥९२॥

जेरबन्द कसि तंगपूज पुट्ठा मुख साजी।
गंडा गरे हमेलपगन चवरासी बाजी॥
परे जाल पंचरंग लदे गज गाह अमोले।
घूंघुट घने सँभारि स्रवन छन ही छन डोले॥

जीनपोस रंग रोस है कोस लगी हीरा कनी।
कह बनादास देखत सुखद जुग रकाब अति ही बनी ।।६३।।

राम सखा सरदार सुवन छोनीपति केरे।
अंग अंग छबि छजे रूप जनु काम घनेरे ।।
टोपी समला पाग मँदी लै चीरा सीसन।
जुलुफ कांध पर परी बसन राते राजित तन ।।
छुरी कटारी असि कमर पीठि ढाल नेजा करन।
कह बनादास जूती पगन कोड़े कर नाना बरन ।।६४।।

तुरय पीठि सब चढ़े बढ़े मन राम कृपा ते।
छरे छवीलेछैल संग प्रभु सोहत जाते ।।
नृत्यत अमित तुरंग चलत मन के गति बाजी।
टांघन टेटुआ घने नहीं मिति तुरकी ताजी ।।
जमत जकन्दत जोरते फफदत फँदत तुरंग है।
कह बनादास उछरत अवनि करत जोर बहु जंग है ।।६५।।

वामदेव रिषि आदि गाधिसुत अतिहि महामुनि।
चढ़ि चढ़ि आनन चले आचरज करै न कोउ सुनि ।।
तामदान सुखपाल मिआने पीन समारो।
मुनिगन ब्राह्मन वृन्द चलीं इनकी असवारी ।।
बन्दी मागध सूत जे सरदारन सेवक भले।
कह बनादास नृपसंग में जथाजोग सबकोउ चले ।।६६।।

मत्तदन्त बहु सजे परी नाना अम्बारी।
हौदा पाठन पीठ हेम हरि हाल सवारी ।।
झूलजर कसी लसी लगी झालरि मुक्तामनि।
दीरघ दन्त मतंग कहे सोभा न सकै वनि ।।
मद के बहत पनार हैं मनहुँ गिरिन झरना झरत।
कह बनादास ध्वनि घंटगज सावन घन निन्दा करत ।।६७।।

मानहुँ गिरि के शृंग असित सित अगनित भूरे।
करत घोर चिक्कार खात जनु मनन धतूरे ।।
खिन दन्ता दुइदन्त एकदन्ता चौदन्ता।
निदरत जनु दिसि मत्त कहत कवि तबहुँ न वन्ता ।।
भालन को लागी अनी बहु सांकड़ पांयन परे।
कह बनादास केते प्रबल तदपि नही काबू तरे ।।६८।।

पदचर संख्यानास्ति लगे बहुसुतुर के तारे।
स्यन्दन नाना यान चले सजि चार दुआरे॥
अम्बर भरे बिमान बिष्नु बिधि सम्भु बिलोकत।
रामरूप अवलोकि मगन नैनन पट रोकत॥
इन्द्रादिक जे सुर सकल दसरथ सुकृत सिहात हैं।
कह बनादास प्रभु दिसि निरखि ललकि ललकि ललचात हैं॥९९॥

सक्ति सहित सब देव देखि अति मोद बढ़ावत।
नटत किन्नरी गान तान दुन्दुभी बजावत॥
बिप्र बेद ध्वनि करत बिरद बन्दी उच्चारत।
भै अति भारी हेरि उपमा कबि हारत॥
नभ अरु नगर अनन्द अति इत मंगल गावत अली।
कह बनादास बहु बाजने आई सुभ अवसर भली॥१००॥

धरि ब्राह्मन को बेप सकल सुर भूतल आये।
देखन राम बिवाह प्रेम अतिही उरछाये॥
प्राकृति नारि सरूप चली सब देव बधूटी।
प्रभु दरसन के हेत आय रनिवासन जूटी॥
गजगामिनि तिय संग में चली सुनैना चारु मति।
कह बनादास सजि आरती रामहि परिछन प्रेम अति॥१॥

सजे सप्तनव अंग चारु बर चम्पक बरनी।
करत सुमंगल गान कंठ कोकिल मद कदनी॥
चीर चारु सुचि अंग किंकिनी नूपुर बाजत।
कंकन चूरी झनक बिछूआ धुनि छबि छाजत॥
तन द्युति रति मदमोचनी मृगलोचनि ललना घनी।
कह बनादास करि काम की लाजत चाल बहु बन ठनी॥२॥

रामरूप अवलोकि प्रेम बस सखी सयानी।
अति उमगी अस्नेह लगी परिछन तब रानी॥
कोटि सारदा सेस कल्प कोटिन जो गावैं।
हृदय मात सिय मोद तदपि कोउ पार न पावैं॥
दूलह ब्रह्म बिलोकि कै रोकि रही अस्नेह जल।
कह बनादास कबि को कहै अतिहि सुनैनी भाव भल॥३॥

लोक बेद कुल रीति सहित प्रभु आरति कीन्हा।
सखिन मध्य तब रानि भवन भीतर मग लीन्हा॥

पुर प्रमोद चहुँ पास रंक मानहुँ निधि पाई।
रामाकार एकाग्र भई मति सहजहि आई॥
मंगल गान निसान घन कान दीन नहिं जात है।
कह वनादास परिवार गृह काम न कछू सोहात है॥४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम एकोनविंशोऽध्यायः॥१९॥

छप्पय

मिले दोऊ महिपाल प्रीति कछु बरनि न जाई।
कवि कोविद सुर सिद्ध खोजि पटतर नहिं पाई॥
संकर विष्नु विरंचि राजसुर सुर हरषाने।
समधी लखे समान आजु सब करत बखाने॥
लौकिक वैदिक रीति कुल किये जनक दसरथ दोऊ।
कह वनादास जहँ जहँ कहत इन सम सुकृत न निधि कोऊ॥५॥

लोक वेद विधि सहित द्वार को चार करावत।
दोउ कुलगुरु अनुरागि स्वस्ति पढ़ि देव पुजावत॥
नेग जोग [विधि सहित [दिये सब भूप सुजाना।
अरघ पाँवड़े देत राम मंडफतर आना॥
दसरथ आदि वसिष्ठ मुनि विपुल बरातिन लै गये।
कह वनादास विधिवत्त सहित पल पल सुख उपजत नये॥६॥

निज कर आसन दिये वसिष्ठहि प्रथम विदेहा।
पूजे इष्ट समान अमित उर बढ़ो सनेहा॥
दै आसन सनमानि गाधिसुत कीन्हे पूजा।
वामदेव रिष आदि जनक सम को जग दूजा॥
सिंहासन दसरथहि दै माने ईस समान जू।
कह वनादास सबको किये सकल भाँति सनमान जू॥७॥

माड़व कंचन मध्य राम सिंहासन सोहैं।
लखि दूलह वर वेष सकल सुरनरमुनि मोहैं॥
स्याम अंग अनमोल वसन तन सोह सुरंगा।
सारदहू मति थकित छकित छवि कोटि अनंगा॥
तब वसिष्ठ अनुरागि उर सतानन्द आज्ञा दई।
कह वनादास आनहु कुँवरि बहु दासी धावत भई॥८॥

सोतहि किये सृङ्गार सखी प्रति अग सोहाई।
सृङ्गारहु सृङ्गार जानकी कवि उर आई॥
साजे षोडस भाँति व्याजु से जेहि रति कोटी।
उमा रमा सारदा सची सब अगन छोटी॥
गजगामिनि सुर भामिनी सग अली सिय लै चली।
कह बनादास कल कठ दलि तिय गावति मगल भली॥९॥

आई मडफ मध्य देव मुनि वन्दन कीन्हा।
जगत मातु जिय जानि मरम कोउ काहु न चीन्हा॥
वाजहि नभ दुदुभी बिबिध सुर बरषहि फूला।
राम जानकी व्याह सकल सुख मगल मूला॥
भवन कोलाहल भाँति बहुगान तान पुर बाजने।
कह बनादास आनन्द महा नहि उपमा आवत मने॥१०॥

उमा रमा सारदा सची सुर नारि सयानी।
प्राकृत नारि सरूप सिया सग सोभा खानी॥
सिव ब्रह्मा इन्द्रादि विष्नु बर ब्राह्मन वेखें।
माडव सकलौ देव व्याह रघुपति को देखें॥
पुर नरनारि सयान जे भरे सकल भूपति भवन।
कह बनादास वर वेप प्रभु निरखि देहि उपमा कवन॥११॥

जनक समान बिदेह समय तेहि सब नरनारी।
दूलह ब्रह्म बिलोकि अपनपौ सबन बिसारी॥
बिप्र वेद ध्वनि करें स्वस्ति कुल गुरु उच्चारें।
गनपति गौरि पुजाय बिबिध कुलरीति सँभारें॥
मगल द्रब्य अनेक बिधि परिचारक निज कर धरे।
कह बनादास ठौरहि ठवर कनक कोपरन मे भरे॥१२॥

चाहै जो जेहि समय पुरोधन कर सो देही।
गनपति आदिक देव प्रगट पूजा सब लेही॥
साखोच्चार विचारि करें दोउ कुल गुरु देवा।
ब्रह्मा आदिक प्रगट व्याह को भापत भेवा॥
तेहि अवसर की रीति जो लोक वेद बिधिजुत भई।
कह बनादास तवही मुनिन सीलहि सिंहासन दई॥१३॥

लावहु सीता मातु कहे तब कुलगुरु ज्ञानी।
धाय सुवासिनि गई भूपतिय सदर्याह आनी॥

देस काल अनुकूल जनक ढिग सोह सुनैना।
दोऊ भागि अति भूरि सोह जनु हिम गिरि मैना ॥
कनकथारजुत गंध जल आनि राम आगे धरे।
कह बनादास धोवत चरन सुरन सुमन बरषा करे ॥१४॥

समय समय अनुकूल देव दुन्दुभी बजावैं।
नटत अप्सरा वृन्द राग नाना विधि गावैं ॥
घरपुर मंगलगान विबिध विधि बाजन बाजे।
कह पटतर कबि लहै जाहि घन सावन लाजे ॥
जनक पखारत पाँय प्रभु सुरनर मुनि सब कोउ कहे।
कह बनादास भाजन सुकृत जीवन को फल भरि लहे ॥१५॥

सवैया

घ्यावत पावत ज्ञान विहाय कै जोगी लिये जेहि जोगहि त्यागी।
घ्यावत तीनिउ काल महामुनि जाहि तहो तहै भूप विरागी ॥
सेवत जाहि भुसुंडि सदा हिय संकर जा पद के अनुरागी।
दासबना पद तौन पखारत कौन विदेह ते है बड़भागी ॥१६॥

जा पद ते प्रगटी तरनी जो तिहूँ पुर के अघ कोखैं दिखायो।
जा पद तीनि नभो तिहुँ लोक सजीवनि जो भवरोग कहायो ॥
जाहि ते कोटि करैं रिप साधन हाथ यही मन भावत आयो।
दासबना सुर सिद्ध सिहात बिदेह भली बिधि धोवन पायो ॥१७॥

जा पदपंकज मानस भृंग महामुनि ज्यों जलमीन भये हैं।
ज्यों मकरन्द धरे सिव सीस पै ताके विना धृग जन्म गये हैं ॥
सृष्टि करैं विधि आस्रित जाहि के इन्द्रहि भारी जो भोग दये हैं।
दासबना उपमान कहूँ सो विदेह सनेह सुधोय लये हैं ॥१८॥

छप्पय

लोक वेद विधि सहित चरन रघुवीर पुजायो।
दोउ कुल गुरु अनुरागि सुता को दान करायो ॥
पानि ग्रहन किये राम काम सत कोटि सुभग तन।
प्रमुदित सुरमुनि सकल भले नरनारि मगन मन ॥
होम समय पावक प्रगटि आहुति लीन सबै कहे।
कह बनादास भाँवरि फिरत मनहुँ उमगि आनंद बहे ॥१९॥

राम जानकी रूप प्रगट मनि खम्भन माही।
आवत उर अनुमान जगत कहुँ पटतर नाही ॥
दरसन तृप्त न लोग भीर भारी प्रभु हेरे।
अन्तर्जामी नाथ भये तबरूप घनेरे ॥
सिय सिर सेंदुर देत जब उपमा को सारद थकी।
कह बनादास मूरति दोऊ देखि देखि मनही छकी ॥२०॥

सिवा समर्पी सिवहि जौन बिधि गिरि हिमवाना।
बिष्नुहि लक्ष्मी सिंधु कीन्ह जौनी बिधि दाना ॥
तेहि बिधि सीतहि दीन्ह जनक सब काहू भाषा।
जोडी साँवलि गौर पूरि तिहुँ पुर अभिलाषा ॥
वर दुलहिनि यक आसनहि बैठन तब कुल गुरु कहे।
कह बनादास दसरथ सुखहि कबि कहि कैसे निरबहे ॥२१॥

सवैया

दूलह राम सिया दुलही अवलोकत लोग अनन्दत थोरे।
कचन भाडव रत्नसिहासन सोभा कहै कवनी बिधि कोरे ॥
स्याम घटातट दामिनि ज्यो रही चचलता तजि कै बरजोरे।
दासबना कि तमाल के तीर लताबर कचन भावत मोरे ॥२२॥

ब्याह अभूपन अंग बिराजत मौर मनोहर साँवल गोरी।
चौर सुरग सुअग सुअंग सुहावनि मर्कत कचन की द्युति थोरी ॥
सुवरन बल्ली किधौ जमुना जल माहि सोहात कहै मति मोरी।
दासबना चित मानत नाहि थकी उपमा तिहुँ लोक टटोरी ॥२३॥

जन्म को लाभ लह सोइ जक्त म जो अवलोकतु है अजहूँ रे।
भागि के भाजन भूरि रहे परतक्ष लखे अति सुकृति पूरे ॥
दम्पति जाहि मिलै स्वपन्यो महँ आँखि तरे नहि और बिसूरे।
दासबना जहि नैन मे ऐनन चैन परै बिछुरै पलहूरे। २४॥

दम्पति सम्पति रूप कुबेर सलोने से अंग लगै अति नीके।
ब्याह समय के अभूपन उत्तम दूपन दाहक गाहक जोके ॥
नाहक मूढ भये विषयारत नेह भिगेन कहूँ सिय पीके।
दासबना भये कूर कुठार सा पादप जानो जुवा जननीके ॥२५॥

दुल्लह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय कौन कहै उपमाई।
सुन्दरता छवि तीनिहुँ लोक बिरचि किधौं सुचि रासि लगाई ॥

मर्कत कंचन से बर अंग मनो रति कोटि अनंग दबाई।
दासवना जेहि भावै हिये जगजीवन को फल सो भल पाई ॥२६॥

घनाक्षरी

दुलहिनि सिय राम दूलह सलोने गात लोने लोने भूपन सकल अंग सोहे हैं।
सुर सुरतिय नरनारि जे विदेह पुरवारि वारि देत निज कोन ऐसो मोहे हैं॥
कहै सबकोऊ ऐसी घरी फिरि ऐहैं नाहिं भरो हिय रूप जाते और जनि जोहे हैं।
वनादास भरो कुम्भ सन्दन करत फेरि फनिमनि करो जाते फिरि न बिछोहे हैं ॥२७॥

सवैया

सोभ बनी उपमा न तिहूँ पुर राम बना हमरे मन भावै।
दम्पति आसन एक विराजत जोरति कोटि मनोज दबावै॥
साँवल गौर सो गात मनोहर तोप नही जेहि ते सिव पावै।
दासवना धिग जीवन है असि मूरति से जो सनेह न लगावै ॥२८॥

जो बनरा रघुबीर विलोके हैं औ बनरी सिय देखन पाये।
तुच्छ लगैं तिन को तिहुँ लोक नहीं उर में कछु चाह जनाये॥
भागी भये परधामहु के यहि लोक में जीवन मुक्त कहाये।
दासबना मिथिलापुर वासी महासुखरासी कहा कवि गाये ॥२९॥

राम सिया अवलोकनि चारु विचारु किये न कोऊ लखि पावै।
गूढ़ सनेह न जात लखो सुठि सील संकोच हिये में दुरावै॥
दोऊ परस्पर भाव वढ़ावत ताको कहाँ उपमा कवि लावै।
दासवना अति भाग्य के भाजन जाके हिये यह मूरति आवै ॥३०॥

घनाक्षरी

चूनरी सुरंग पीत अम्बर सलोने गात लोने लोने भूपन सुअंगन सुहायेजू।
भये हैं विदेह देवतियन समेत सारे बूढ़े बारे जुवा नारि नर मन भायेजू॥
नेह को सँभारी पुरवासी कहैं बार बार एकन ते एक विधि कैसन बनायेजू।
सुकृत के रासी तौ विदेह पुरवासी भये साँवल गवर जोड़ी जाते लखि पायेजू ॥३१॥

जावक समेत चारि चरन हरत मन प्रतिमा अनेक भाँति गुनिन वनाये जू।
सीसमौर मोती स्रवन धोती कल हेमवर्न दामिनि कि द्युति फीकी कोर सुठि भाये जू॥
पीत है उपर्ना कासा सोती मोती आचरन निरखत लेत जनु चितहि चोराये जू।
जामा लाल लसत किनारीदार मोतीहार वनादास हेरि कवि उपमा न पायेजू ॥३२॥

आनन सरद ससि मरकत फीकी द्युति दीरघ अरुन नैन कजरार कोर हैं।
वकभ्रुव तिलक बिसाल भाल उभय रेख दामिनि अचवल से चोरे चित मोर हैं॥
दसन सघन बीज दाडिम को क्रांति नासै अधर अरुन जनु नासाकीर ठोर हैं।
वनादास काक्पक्ष काके न हरत मन हरिकध कम्बुग्रीव बोल थोर थोर हैं॥३३॥

काम करि सावक के कर से अजानुबाहु उर सुठि बृहदसु जज्ञ पतीधारी है।
राजै भुज अगद औ ककन कनक कर जटित मनिन मुद्रिका कि छबि न्यारी है॥
राते अरबिन्द कर जानुपीन काम भाथ सघनि रोमावली सो लागै अति प्यारी है।
वनादास कटि सिंह चरन कमल चारि स्याम गौर जोडी अंग अग सोभा क्यारी है॥३४॥

सवैया

भाग्य सराहैं सबै अपनी जो समय तेहि मे अवलोकन हारे।
सांवल गौर बनी बर जोरी वसै निसि बासर नैन हमारे॥
सुकृत पूरे सबै भली भांति से दासवना उर माहि बिचारे।
ताके समान अहै अजहूँ प्रभु के जस लागत जाहि पियारे॥३५॥

छप्पय

आज्ञा लिये बसिष्ठ कुवँरि तिहुँ जनक बुलाई।
स्रुतिकीरति उर्मिला माडवी मडप आई॥
जो कन्या कुसकेतु भरत को भूप विवाही।
लषन लाल उर्मिला लोक-विधि - वेद निबाही॥
स्रुतिकीरति रिपुदमन को नृप बिदेह ब्याहत भये।
कह वनादास सुकृत अवधि जगत धवल जस जिन लये॥३६॥

ब्याहे तीनिउ भाय जवनि विधि राम विवाहू।
उपमा नहि तिहुँ काल रहा भरि भुवन उछाहू॥
वरषहि नभ सुर सुमन घनो दुदुभी बजावहि।
नटत अप्सरा वृन्द राम कल कीरति गावहि॥
घरपुर मगल बाजने अमित कोलाहल नृप भवन।
कह वनादास आनन्द इमि भयो न अब आसा क्वन॥३७॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनो नाम विंसोऽध्याय ॥२०॥

छप्पय

दायज दिये समूह कवन करि सकै बड़ाई।
धनद सुरेस सिहात अपर कहँ पटतर पाई॥
मनिमानिक बहु जाति हेम हीरा मुक्तागन।
रजत अभूषन बसन भाँति भाँतिन के भाजन॥
पाटम्बर कम्मर कलित ललित बरन बहुजाति है।
कह बनादास संक्षेप ही नाही बरनि सिराति है॥३८॥

धनुष बान अरु तून चर्म असि नाना जाती।
सूलसक्ति पुनि कवच दिये बख्तर बहु भाँती॥
जिरह टोप अरु जिरह दिये नाना सिर कुंडी।
दिये सतघ्नी भूरिजमुरका अमित भुसुंडी॥
छुरी कटारी जाति बहु पेसकबुज खंजर खचित।
कह बनादास उपमा कहाँ दिये सिलहखाने अमित॥३९॥

समला चीरा चारु चौतनी नाना भाँती।
पागमंदीलैं सीस रंग जामा बहु जाती॥
कटि पट भाँति अनेक बिबिध स्रवनन के बाला।
कंठा कलित अनूप कहै को दाम बिसाला॥
कुंडल कंकन मुकुट सिर मुक्तामनि माला घनै।
अंगद अरु कर मुद्रिका नाम कहाँ लगि कोउ गनै॥४०॥

स्यन्दन नाग तुरंग सुतर नाना बिधि याना।
तामदान सुखपाल अनेकन भाँति मियाना॥
दासी दास समूह मृगा खग जाति अनेका।
बहरी बाज अनूप स्वान नाहीं गनबेका॥
वृषभ धेनु महिषी अमित भूमि भूरि संख्या कवन।
कह बनादास दायज दिये जो विदेह को कहत बन॥४१॥

जौन समय अनुकूल भरे माड़व तर आनी।
मन में करि संकल्प अपर राखे गुनि ज्ञानी॥
नाऊ बारी भाट बजनियाँ नाना जाती।
नेवछावरि लहिराम भये जनु धनद की पाती॥
कुँवर कुँवरि राजित भये सिंहासन माड़व महै।
कह बनादास मतिमान को जौन समय उपमा कहै॥४२॥

पुलक प्रफुल्लित गात दसरथहि मोद अनूपा।
जनु चहुँ स्तुति की सिद्धि लहे फल चारिउ भूपा॥
पुनि पुनि उमगत हृदय फले सुकृत तरु देखत।
बारहि बार निहारि राम जीवनि धनि लेखत॥
सुर समाज मुनि मडली सकल छकित चित ह्वै रहे।
कह बनादास निज निज हृदय भाग्य भूरि भूपति कहे॥४३॥

जनक जोरि करकज रहे कोसलपति आगे।
सजल नयन तन पुलक हृदय अतिही अनुरागे॥
महाराज सम्बन्ध भये हम बड सब भाँती।
लिये अवसि अपनाय भागि नहिं बरनि सिराती॥
सेवक करि मानव सदा मोहिं योग्य आज्ञा चही।
कह बनादास तामे घटै बार बार बिनती यही॥४४॥

तबही नृप दसरत्थ किये निमिराज बडाई।
तुम सम्बन्ध सुसील ईस अनुकून से पाई॥
ज्ञान सिंधु गुन धाम क्वन जग आपु समाना।
भूप भक्ति बस किये बधन हम कहहिं प्रमाना॥
इहाँ वहाँ दूसर कहाँ जोई अवध मिथिला सोई।
कह बनादास समधी उभय विनय परस्पर ही भई॥४५॥

वस्तु अनेक प्रकार जाचकन दसरथ दीन्हा।
नाऊ बारी भाट अयाची सब कहँ कीन्हा॥
हुलसत हृदय अनन्द बचा जनवास पठाये।
पुनि पुनि निमिहि निहोरि अवध पति सहज सुभाये॥
सकल बराती हरषजुत जनक सराहत हिय भये।
कह बनादास मुनि मडली सहित नृपति निज थल गये॥४६॥

अरघ पाँवडे देत राम कोहवर तिय लाई।
रूप सिंधु चहुँ बन्धु देखि भामिनि सुख पाई॥
नाना लौकिक रीति करहिं उर मोद बढ़ाये।
वोहगति जानैं अली भली विधि कवि किमि गाये॥
चतुर नारि सिखवन लगी गवरि लहव करि राम सिय।
कह बनादास बिधु वदन लखि उमँगि उमँगि हरषात हिय॥४७॥

टारो बाती लाल बाल बोलत मुसकाई।
कोलागति अति ताति बहिनि कै माम सिखाई॥

हमरे कुलि की देवि सिद्धि वड़ि लागहु पाये।
चारिउ फल भल देत उचित तुमका इहँ आये॥
तबहि लपन बोलत भये मधुर वचन मुसकाय कै।
कह बनादास कसि देवि यह बैठी वदन दुराय कै॥४८॥

मूरति देखे विना कवन विधि करहि प्रनामा।
अबहि ध्यान में अहै कहै हँसि हँसि कै वामा॥
नानाहास विलास मोद नहि सकत सँभारी।
गूढ वचन तिय कहैं अबहि अति लाल अनारी॥
राम काम सतकोटि छवि अंग अंग सोभा भरे।
कह बनादास अवलोकि हँसि सकल तियन मन बस करे॥४६॥

होत जानि अतिकाल चतुर सखि मनहि विचारे।
कुँवर कुँवरि के सहित तबहि जनवास सिधारे॥
आये तब पितु पास वधुनजुत चारिउ भाई।
अवलोके महिपाल मोद अतिही उर छाई॥
पुत्रवधू चारिउ सुवन कोसलेस के पास जू।
कह बनादास आनंद सुठि उमंगि रह्यो जनवास जू॥५०॥

विविध भाँति जेवँनार भई तब भवन विदेहा।
तबहि पठाये वोलि अवधपति सहित सनेहा॥
तामदान सुखपाल मियाना पीनस भारी।
विविध तरह के यान भई जनवास तयारी॥
सुतन सहित भूपति चले जेवन भवन विदेह कै।
कह वनादास पटतर कहाँ दोउ महिपाल ,सनेह के॥५१॥

निज कर पाँव पखारि अवधपति मिथिला भूपा।
कंचन पीढ़ा परे मनिन ते जटित अनूपा॥
वैठारे महिपाल राम पदपंकज धोये।
भूपति परम सनेह चरन जो हरहि अगोये॥
तिहूँ वन्धु कुसकेतु तव निज कर पाद पखारेऊ।
कह वनादास चहूँ वन्धु को तव पीढ़न बैठारेऊ॥५२॥

सकल बराती उठे परे सुन्दर पनवारे।
सुप वोदन गे परसि सहज में चतुर सुआरे॥

फेरे सुरभी सरपि सुगन्धित अति अनुरागे।
पंच कवल करि सबै प्रीति सो जेवन लागे॥
पटरस भोजन चारि विधि •एक एक में अनगने।
कह बनादास परसत सुघर स्वाद नही बरनत बने॥५३॥

गारी सुन्दरि देहिं मधुर सुर जोरि समाजा।
जेंवत करत विलम्ब मुदित हँसि पुनि पुनि राजा॥
दोऊ दिसा को नाम पुरुपतिय लै लै गावैं।
हावभाव करि विपुल बचन बहु ब्यंग सुनावैं॥
कौसल्या गोरी सुतिय गोरे नृप सिर मौर जू।
कह बनादास सुत साँवरो बन तन यह सुठि डौर जू॥५४॥

गोरि भरत की मातु उनहुँ सुत जाये कारे।
गोर लषन रिपु दवन यही आचरज हमारे॥
सृंगी रिषि सग दोऊ रानी मन राँची।
जाये साँवर पुत्र खवरि हम पाई साँची॥
सौमित्रा पति देव तिय जयाजोग बालक भये।
कह बनादास अचरज बड़ो नृप दमाद मुनि ह्वै गये॥५५॥

जेहि कुल की यहै रीति पुरुप नारी ह्वै बर्ती।
तहाँ कि कवन अचर्य सखी संका किमि कर्ती॥
स्यन्दन जावै पुत्र भूप घर भये निखट्टू।
अटपटि कुल की रीति नारि ताही ते चट्टू॥
यहि विधि बोलत ब्यंग बर मुदित भूप द्वारे गये।
कह बनादास अचवन किये बहुरि पान पावत भये॥५६॥

सुतन बरातिन सहित गये जनवासहि राजा।
अतिही उर आनन्द विराजत राजसमाजा॥
विस्वामित्र वसिष्ठ बाम देवादि रिषीस्वर।
जाज्ञवल्कय मुनिआदि विराजत अमित कवीस्वर॥
वन्दी मागध सूत जन विपुल विप्र बर मंडली।
कह बनादास तेहि समय महँ नृप समाज बैठी भली॥५७॥

स्वेत द्वीप कुस द्वीप साल्मलि सिंहल द्वीपा।
आदिक जम्बूद्वीप विराजत विपुल महीपा॥

खुरासान मुल्तान रूम अरु साम भुवाला।
काबुल और कलिंग चंदेरी बहु महिपाला॥
कैकय मागध कासिपति महाचीन पुनि चीन है।
कह बनादास बहु देस के बैठे नृपति प्रवीन है॥५८॥

बाँधौ गढ़ गुजरात काठियावार कमिक्षा।
खंधारी मारण्ड्र देय को घने परिक्षा॥
उदय अस्त लौ अवनि तहाँ के भूपति नाना।
काके है मुख सहस सकल जो करै बखाना॥
चक्रवती दसरत्थ नृप बेद बिदित गुन गाथ है।
कह बनादास सुरपति सखा पुनि बिवाह रघुनाथ है॥५६॥

ताते अति उत्साह बरात अमित नृप आये।
देखिय बन्धुजुत राम सकल लोचन फल पाये॥
जुरी सभा तेहि समय नृत्य की भाँति अनेका।
गान तान सुठि निपुन तुलत तुम्मर नहिं जेका॥
बजत पखावज सारँगी मंजीरा तबला घने।
कह बनादास मुरचंगमुख बहु मृदंग भावत मने॥६०॥

बाजत बीन सितार ढोल बहु ब्रिघि सहनाई।
नृत्य गान अति घने ठौर ही ठौर अथाई॥
राम ब्याह उत्साह कहाँ उपमा कवि पावैं।
जैसे भरो समुद्र चोंच जल पक्षी लावैं॥
बहुरौ कबिजन की जुगुति कछुक बार्ता सुनि लई।
कह बनादास पीछे पुनः पंडित की चर्चा भई॥६१॥

परमारथ पथ मुनिन कछुक बूझैं अनुरागे।
जो जो उत्तर लहे हृदय अतिही सुख लागे॥
गुरु पद मस्तक नाय सैन तब दसरथ कीना।
जागे प्रातःकाल निवाहे नित्य प्रवीना॥
सब प्रकार ते स्वच्छ ह्वै गुरुहि जाय बन्दन किये।
कह बनादास आसिष लही बार बार हर्षित हिये॥६२॥

महाराज परसाद कार्य सब पूरन भयऊ।
कछुक हृदय अभिलाष चहत प्रभु आज्ञा लयऊ॥

मुनि विप्रन जाचकन समय कछु चाही दीन्हा।
तब मुनिवर हर्षाय भूप दिसि आज्ञा कीन्हा॥
सवालक्ष माँगी गऊ सब प्रकार मन भावनी।
कह बनादास दीन्हे द्विजन लहि को रति अनपावनी॥६३॥

बन्दी मागध सूत जाचकन बहुरि बुलाये।
सुनि सब भूप रजाय हरषजुत आतुर आये॥
सुतरनाग रथ तुरग यान नाना विधि दीना।
मनिमानिक पुनि रजत कनक अरु वस्त्र नवीना॥
सकल अजाचक करि दिये कहत बन्धु चिरजीव चहु।
कह बनादास पुरजनक के नेगी बालत भये बहु॥६४॥

बुझि बुझि दिये सबहिं जाहि जो रुचि सो माँगा।
चक्रवर्ती दसरत्थ हृदय अतिही अनुरागा॥
मनिमानिक अरु रजत कनक पटभूषन नाना।
स्यन्दन अरु हयनाग बिबिध बिधि वाहन याना॥
सबहि सुष्ठु करि अवधपति बार बार प्रमुदित हिये।
कह बनादास अति प्रीतिजुत कौसिक पद बन्दन किये॥६५॥

करि सम्पुट करकज बचन बोले महिपाला।
प्रभु तव कृपा प्रसाद लहे आनन्द बिसाला॥
हम अनुचर सुत सहित जानि जनक बर जाई।
जेहि अवसर जो कार्य घटसि सेवक की नाई॥
हौ सब लायक अवधपति सुकृत सिंधु तुम सम कवन।
कह बनादास सकोच बस तनय भये भव दुख दवन॥६६॥

दिन प्रति सेवा अधिक वृद्धि मानहुँ सक्रान्ती।
धनु बिद्या ज्यो तीर बढ़त तेहि बिधि बहु भाँती॥
चलन चहत पति अवध रहत वसि नेह बिदेहू।
कहँ उपमा कवि लहै बढत लेहि भाँति सनेहू॥
नृप दसरथ तबही कहे कौसिक मुनिहि दृढ़ाय कै।
अब किन विदा कराइये जनक नृपति समुझाइ कै॥६७॥

भूप पहुनई करै रिधिसिधि नाना भाँती।
जब से आइ बरात दसा नहि बरनि सिरानी॥

जनक विभव ऐस्वर्य सबै कोउ करत बड़ाई।
उदय अस्त के भूप रहे मिथिलापुर छाई॥
सिय महिमा जानै कवन विना जनाये जानकी।
कह वनादास सब कछु लखै मूरति कृपानिधान की॥६८॥

गाधिसुवन तब जाय बहुत जनकहि समुझाये।
बारहिं बार निहोरि अवधपति बिदा कराये॥
सतानन्द प्रति कहे भवन महँ करहु तयारी।
सुनि विदेह के वचन महल तुरतहि पग धारी॥
उपरोहित जब उत गये गाधिसुवन आयो इतै।
कह वनादास रघुनाथ दिसि विदा हेत नृप कह चितै॥६९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रवोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम एकविंशोऽध्याय: ॥२१॥

छप्पय

प्रगट भई पुर बात चलन चाहत अवधेसा।
रामप्रेम वस भये विपुल नरनारि कलेसा॥
कहहिं एकसन एक रूप उर धरहु सँभारी।
राम परमसुखधाम सलोने नृप सुत चारी॥
उर सम्पुट कर राखिये मूरति चहूँ कुमार की।
कह वनादास आसा कवनि अवहै दूजे वार की॥७०॥

नारि अटारिन चढ़ी गईं कोउ भवन विदेहा।
मग वीथिन गृह गलिन लगी उर सहज सनेहा॥
कहहिं परस्पर बात हृदय विरहित दृग नीरा।
अब विछुरत रघुबीर सखी धरिबै किमि धीरा॥
जग्म रंक पारस लहे रोगी परम सजीवनी।
कह वनादास विधिवस गईं अब अवसर ऐसी वनी॥७१॥

तामदान सुखपाल राम चढ़े वन्धु समेता।
विदा होन के हेत गये निमिराज निकेता॥
देखि कुँवर वर चारि मोद उर सिय महतारी।
बन्दे नृप सुत चरन दीन सुठि आसिप भारी॥
राम कमलकर जोरि कह अब भूपति चाहत चलन।
कह वनादास हित विदा के हमहिं अबै पठये सदन॥७२॥

भूपन मनि बहु बसन कनक नेवछावरि कीन्हा।
आसन अतिहि बिचित्र बन्धु चहुँ बैठन दीन्हा॥
तुम प्रानहुँ के प्रान जान किमि कहिये ताता।
लोकरीति पुनि प्रवल करमगति कठिन विधाता॥
बहुरि उवटि अन्हवायकै बिबिध तरह भोजन दिये।
कह बनादास तेहि समय महँ बोलि चहूँ कुँवरिन लिये॥७३॥

विविध भाँति उपदेस करन तव लगी सयानी।
नारिधर्म कुलरीति जगतगति भाषत रानी॥
सिद्धि कुँवरि निज भवन गईं लै चारिउ भाई।
भरी अधिक अनुराग सुभग आसन बैठाई।
उत्तम कुल पुर नारि जे आय आय तहँ सब जुटैं।
कह वनादास पटतर कहाँ मनहुँ रंक पारस लुटैं॥७४॥

अति कोमल प्रिय बचन कहे तब सरहज प्यारी।
लाल लगत संकोच विनय यक सुनहुँ हमारी॥
जब से दर्सन लहे गहे तुम मनवरि आई।
आपु बिना कल पलन करौं कछु तासु उपाई॥
कै संगै मैं लै चलो कै जीवन के विधि कहौ।
कह बनादास मृगनैनि जल भरिकै पुनि मौनहि गहौ॥७५॥

राम कहे मुसुकाय सुनो भामिनि यक बाता।
लोक वेद मे विदित कमल रवि कैसो राता।
कहाँ कंज कहँ भानु रहै ताही ते सुखिया।
बिछुरत सम्पुट होत सकल जगजानत दुखिया॥
कहँ चकोर चन्दा कहाँ बात विदित यह खलक मे।
कह वनादास देखे बिना कल नहिं पावत पलक मे॥७६॥

तेहि वल भखै अंगार जगत मे बिदित कहानी।
जासे जाकी प्रीति दूरि सो नाहि सयानी॥
जो हमसे कर नेह प्रगट बाके उर होवै।
रोम रोम भरि जाय कछू नहि तासे गोवै॥
बोध मिलो दृष्टान्त ते तबही उर धीरज लयो।
कह बनादास प्रभु याहि मिसु सकल तियन को सिखदयो॥७७॥

हमतो प्रीति अधीन बात जानो यह ललना।
ज्ञान जोग बैराग्य प्रेम बिन मोहि प्रिय पलना॥

जो लावै मन मोहिं ताहिसन बोचन राखौं।
चहुँजुग तीनौ काल बिरद बहु बेदन भाखौ॥
सवगुन साधन खानि जो जोग बिरति बिज्ञान हू।
कह बनादास यक प्रीति बिन सपन न पावै ध्यान हू॥७८॥

भरत कहै मुसुकाय अहै लक्ष्मी निधि नारी।
जानि परत रघुनाथ भई सब अंग तुम्हारी॥
काल्हि अवर की होहि कवन इनको है खाढ़ा।
या विधि हास विलास मोद सबके मन बाढ़ा॥
कहे सिद्धि हँसि वचन तब तुम सौ साधु कहावते।
कह बनादास यह बुद्धि कहं नेक संकोचन लावते॥७६॥

बोले लक्ष्मन बिहँसि वर्ग यक पुरुष नारी।
ताही करिकै किहिनि आय रघुपति सों यारी॥
नारि नारि नहिं पटत और सों प्रीति न करि है।
हमको है परतीति लाज गुरुजन की डरि है॥
तुम्हरे कुल की रीति यह भगिनी मुनि सँग में गई।
कह बनादास ताते लखत सब जग में ऐसी भई॥८०॥

भरा भवन अति मोद तियन तन दसा भुलानी।
सृग चन्दन अरु पान धोर धरि लाई रानी॥
अतर अरगजा लाय बन्धु चहुँ रुचि से भामिनि।
निज कर दीन्हे पान विनय कीन्हें गज गामिनि॥
बहुरी दरस देखायवे बिपुल बड़ाई को धारी।
कह बनादास रघुबंसमनि सासु भवन पुनि पग धरी॥८१॥

कुवँरन सौपे कुवँरि बिबिध विधि विनती कीना।
लाज वही सरि नेह प्रीति पल ही पल पीना॥
सजल नयन तन पुलक रानि मुख आव न बानी।
गद्गद हृदय अतीव राम चरनन लपटानी॥
अन्तर्जामी तात तुम सब उर प्रेरक मुनि कहै।
कह बनादास सिय प्रान मन नृपहू की जीयनि रहै॥८२॥

छमा करब अपराध तात, दासी निज जानी।
मम सिर धरि सब खोरि यही विनती कह रानी॥

विसरायहु जनि तात कछुक सुधि राखेहु मोरी।
चहुँजुग तीनिउ काल जगत गति करतल तोरी॥
राम अमित समुझाय कै सासु हृदय धीरज दये।
कह बनादास जुत बन्धु के तब विदेह आवत भये॥८३॥

धाय धाय लपटाय मिलत सखियन बैदेही।
भगिनिन सहित सनेह तजै धीरज नहिं केही॥
पुनि पुनि भेटहिं मातु बिदाकरि पुनि लपटाहीं।
पुनि धीरज परिहरै बत्स जिमि धेनु लवाही॥
करुना विरह पयोधि सम मनहुँ भयो भूपति भवन।
कह बनादास बूझे बनै बानी नहिं आवत तवन॥८४॥

लिये सिया उर लाय विरह करुना रस छाके।
ज्ञान और बैराग्य जनक तेहि समय बिवाके॥
जो जानै रम भक्ति तिन्है कछु समय नाही।
जल बीची नहि भिन्न चहूँ स्रुति सत कहाही॥
मिली कुवँरि कुसकेतु कहँ बहुरि बहुरि लपटाय कै।
कह बनादास मिथिलेस तब सिथिल सनेह अघाय कै॥८५॥

सतानन्दजुत सचिव अमित इतिहास न भाखे।
नाना जग दृष्टान्त नृपति उर धीरज राखे॥
सिविका चारि विचित्र सजी सब अग सोहाई।
नानाबिधि तिय धर्म भूप वहु भाँति सिखाई॥
जानि सुअवसर घरी सुभ कुँवरि चढाई पालकी।
कह बनादास पटतर कहाँ तेहि अवसर गृह हालकी॥८६॥

दासी दास अनेक दिये जे प्रिय सियकेरे।
मनिपट भूषन वस्तु पालकिन भरे घनेरे॥
पुस्तक अमित प्रकार पढी जो कछु बैदेही।
सीतहि जो प्रिय वस्तु भूपराखी नही तेही॥
बिपुल पेटारिन मे भरे जिनसि नाम को गनि सकै,।
कह बनादास कबि विदुष वर तेऊ तेहि वरनत थकै॥८७॥

रामसील सुखधाम सासु दिसि जुग कर जोरे।
मातु बाल निज जानि नेह छाँडब जनि मोरे॥

बन्दे पद चहुँ बंधु दीन्ह वर आसिष रानी।
गवन कीन्ह जनवास सुनैना सुठि बिलखानी॥
करुना विरह समुद्र गृह मगन भई रनिवास हैं।
कह बनादास रघुवंसमनि तब आये पितु पास हैं॥८८॥

जो दायज संकल्प रहा मन जनक सँभारा।
कवि कोविद मति थकित अपर कहि लहै को पारा॥
मत्तनाग बहु साजि चले गज हलका भारी।
पर्रा घोड़ेन केर सकल विधि अंग सँवारी॥
लागे सुतुर केतार हैं बार पार टूटत नहीं!
कह बनादास महिषी वृषभ नही धेनु संख्या रही॥८९॥

साजे स्यन्दन भूरि अस्त्र सस्त्रन से पूरे।
लागे तीखे तुरय छटा जिनके अति रूरे॥
धनुष विविध विधि धरेतून बानन भरि नाना।
सक्तिसूल बहु भाँति विविध बिधि चर्म कृपाना॥
बख्तर जिरह अनेक विधि जिरह टोप कूँडी घनी।
कह बनादास बरछा विविध अति चोखी जाकी अनी॥९०॥

दस्ताने बहु धरे बिपुल बर छुरी कटारी।
लदेजमुरका भूरि लदो हथिनालै भारी॥
अमित भुसुंडी लदो रथन पर नाना भाँती।
विविध बरन के मृगा चले नहिं टूटत पाँती॥
सौ सौ गोई बैल की चली सतघ्नी भाँति यहि।
कह बनादास पीछे लगे मत्तदन्त बल अमित जेहि॥९१॥

गाड़िन लदि लदि चले व्याघ्र के पिंजर नाना।
पक्षी जाति अनेक कवन करि सकै बखाना॥
औरो जिनसि अनेक राजसी साज अमोले।
तीतर कीर चकोर मोर वर मैना बोले॥
बहरी सिकरा वाज बहु बाजदार लै लै चले।
कह बनादास बहु भाँति के स्वान लिये डोरिया भले॥९२॥

यहि विधि सकल सँभारि अवधपुर दीन्ह पठाई।
को कवि बरनै जोग कहाँ सारद मति पाई॥

चली सम्पदा बिपुल जहाँ जहँ वसे वराती।
बहु मेवा पकवान भारदारन की पाँती।।
महिष वृषभ गाडी बिपुल बहु वेसर टेटुआ भले।
कह बनादास सकुचहिं धनद यहि बिधि ते लदि लदि चले।।६३।।

कहे अवधपति बेगि सुमतहि करौ तयारी।
हुकुम पाय नरनाह साज सब भाँति सँभारी।।
स्यन्दन नाग तुरग सुतुर बहु रग सजाये।
बने बराती सकल सद्य नहि बार लगाये।।
चोपदार चहुँ दिसि फिरत अब कोउ लावहु बार जनि।
कह बनादास बाजाबजे बिबिध भाँति को सकै गनि।।६४।।

मत्तदन्त के पीठि दुन्दुभी बाजत भारी।
लादे डका सुतुर चोप तापर गहिमारी।।
मेरी पन वन फेरि बिपुल बाजी सहनाई।
तासा डफला ढोल तुरँही बीन सोहाई।।
बजे नृसिहा डिमडिमी झाँझ अमित झनकार है।
कह बनादास घन लाजते को कहि पावै पार है।।६५।।

स्यन्दन गुरु आरूढ तुरग चहुँ कुवँर सँवारा।
गनपति गौरि महेस नरेस नरेसहु तब सिर डारा।।
गुरु महिसुर को बन्दि महीपति सख बजाये।
ह्वै रथ पै आरूढ चले अवधहि चितलाये।।
बिदा करन के हेत तब चले सग मिथिला नृपति।
कह बनादास सँग सचिव द्विज सतानन्दजुत प्रीति अति।।६६।।

चली वरात अपार भार ते मेदिनि दलक्त।
सरसरिता नदनार सिंधु को नीर उछलक्त।।
उडी धूरि नभ पूरि भभरि वाहन रवि भागत।
दिग्गयन्द लरखरत धका उर मे सुठि लागत।।
डिगत मरु मग उपल रज कच्छ कोल अहि कलमल्यो।
कह बनादास दसरत्थ नृप राम ब्याहि अवधहि चल्यो।।६७।

फेरहिं दसरथ जनक प्रेम वस फिर बन भावत।
सजल नयन तन पुलक बचन मुख बेगि न आवत।।

अवधनाथ रथ उतरि विदेहहि बहु समुझाये।
जब घूमिय महिपाल दूर अतिही चलि आये॥
करसम्पुट करि जनक नृप वार वार विनती किये।
कह वनादास सेवक सदा मोहि मोल विन बित लिये।९८॥

नृप दसरथ परितोष किये बहुभांति विदेहू।
को कबि बरनै जोग बड़ो जेहिराह सनेहू॥
मिले परस्पर दोऊ कहै उपमा को सुन्दर।
कैधौं उभय दिनेस मिलत द्वै किधौं पुरन्दर॥
जनक आय पुनि राम पहँ बोले वचननि चोरि कै।
कह वनादास स्तुति संतमत मनहुँ प्रेम रस बोरि कै॥९९॥

गुनातीत गुनगूढ़ परे बुधि मानस वानी।
आदि मध्य अवसान हीन कोउ सकत न जानी॥
अचल अखंड अनीह एक रस सब उरवासी।
ब्रह्म सच्चिदानन्द भेद गत अज अविनासी॥
विरज विलक्षन विगत सब अलख अगोचर अमित अति।
कह वनादास चेतन अमल परिपूरन पुनि अजित गति॥१००॥

पुरुषोतम परधाम स्वतन्त्र सनातन दृष्टा।
निष्कलंक निरपेक्ष अयोनी सकलहु सृष्टा॥
जोग बियोग विहीन अचर चर विस्व निवासा।
अनारम्भ अनिकेत सेत भव स्वतह प्रकासा॥
अगुन सगुन सागर अगम अति अतर्क सिव सेष विधि।
कह वनादास मुनि सिद्ध सुर सारद पार न चरित निधि॥१॥

सुद्ध नित्य निरवद्य निगम निति नेति निरूपा।
निष्कलंक कूटस्थ अकल निरुपाधि अनूपा॥
निराधार निरलेप्य द्वंद्वगत महद अकासा।
निराकास अंड सूक्ष्म अनल जल थल में वासा॥
नयन विषै मो कहँ सोई अहो भागि मम अमित अति।
कह वनादास हारै कहत नारद अमित गनेस मति॥२॥

चाहत केवल प्रीति रीति यह सदा तुम्हारी।
ताते छूटै न चरन बार बहु विनय हमारी॥

बहु प्रकार परितोष किये नृप को रघुनाथा।
सम्पुट पकंज पानि जनक पद नायउ माथा॥
भूपति दीन्ह असीस पुनि भरतहि मिलि आसिष दये।
कह बनादास लक्ष्मन बहुरि रिपुसूदन चरनन नये॥३॥

नरपति दीन्ह असीस मडलो मुनि पुनि बन्दे।
पदसिर नाय बसिष्ठ राउ बहु भाँति अनन्दे॥
मुनि पुनि दई असीस बिसेषन नृप को कीन्हा।
धन्य जनक जगजन्म लाभ नीके करि लीन्हा॥
नृप कह कृपा प्रसाद तव बिदा माँगि गवनत भये।
कह बनादास कौसिक चरन तब बिदेह सठि सिर नये॥४।

घनाक्षरी

आपु के प्रसाद ते महेस धनुभंग भयो सोक सिंधु डूवत समय थाह पाई है।
आपु के प्रसाद सिया बरी रघुनाथ जू को आपु के प्रसाद पुनि ब्याहे तीनि भाई है॥
आपु के प्रसाद सम्बन्ध कोसलेस जू सो कीरति कलित तिहुँ लोकन में छाई है।
कहे निमि नन्दन मुदित गाधिनन्दन से आपु के प्रसाद कछु कमी न लखाई है॥५॥

सेवक बिचारि कृपा दृष्टि सबकाल चहो कौसिक कहत तुम अति भूरि भागी जू।
ब्रह्म बिद जासु गृह जानकी जनम लिये राम से जामात ध्यान दुर्लभ बिरागी जू॥
पद बन्दि जनक गवन पुर दिसि किये दसरथ नेह राम पायमति पागी जू।
बनादास सतानन्द आदि बन्दे चहूँ बन्धु दसरथ विदा किये सबै प्रेम त्यागी जू॥६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम चतुर्विंशतितमोऽध्याय ॥२४॥

चले पतिऔध मगवासी राम देखि देखि भाइन सहित बिन बितहि बिकाने हैं।
बीच बीच करि मग वास महा मोद जुत सुभ दिन धरी पुर अवध नेराने हैं॥
बनादास घंटा घटी वाजत निसान घन आइगे बरात पुर लोग सब जाने हैं।
निज निज काज लागे जहाँ तहाँ भली भाँति मंगल को चार सुभ साजत सयाने हैं॥७॥

दुन्दुभी धुकार की अपार घन सब्द होत सिंह बीन तुरही बजत सहनाई जू।
पनवन फेरि भेरि ड्फला औ तासा ढोल झाँझ डिमडिमी नहिं जान दीन जाई जू॥
घहरात चाका रथ वाजे गज घट घोर घंटी घहनात नृत्य गान अधिकाई जू।
देस देस के नरेस जहाँ तहाँ डेरा परे बाहेर नगर कौन संख्या पार जाई जू॥८॥

चम्पक बकुल औ रसाल रम्भा पुंगी रोपे आदिक तमाल आलवाल मनि मई है।
बने हैं नेवारबन्द मानहुँ मनो जफन्द ध्वज औ पताक सुठि सोभा सरसई है॥
कनक कलस द्वार पल्लव रसाल सुचि मनिन के दीप मानो द्युति नित नई है।
बनादास घर घर मंगल को चारइमि भूप भौन मानो महामोद बीज बई है॥९॥

साजे मातु आरती कनक थार मंगलीक वस्तु नाना भाँति नहि बरनि सिराति है।
दधि दूर्व रोचन तमाल फूल नाना जाति मंजरी औ लाजा गन्ध धरे भाँति भाँति है॥
चन्दन सिंदूर सुचि रुचि से बनाये दीप कर्पूर गूगुर धरे जे धूप ख्याति है।
बनादास मंगल को गावैं कलकंठ बैनि उपमा न मिलै जैसी नेह सरसाति है॥१०॥

बोलैं अटपटे बैन पायँ डगमग परैं सिथिल सरीर राम रूप हिय भरे हैं।
औधपुर सोभा समय कवि को सराहि सकै बनादास सारद मनहुँ मौन धरे हैं॥
बूझे कुलगुरुहि मुनीस जूर जाय दये भूप दसरत्थ पुर मध्य गौन करे हैं।
नारि बृन्द वृन्द घोपि पालकी वोहार टारि हेरैं मुख वधू लोकरीति अनुसरे हैं॥११॥

बाजैं बहु बाजनेन कान दीन जात पुर गावैं तिय मंगल उमंगि अति हिये जू।
भारी भीर अमित कोलाहल सनेह सुठि मातु बार बार बर आरती को किये जू॥
पाँवड़े अरघ देत भीतर भवन लाई विविध प्रकार नेवछावरि को दिये जू।
मनिपट भूपन कनक बारि बारि भूरि जाचक असीसैं जाहि अतिसुख जिये जू॥१२॥

ब्राह्मन न बोलि दान अमित प्रकार दिये अन्न धन धेनु वस्त्र नाम को गनाये जू।
कनक सिंहासन जटित मनि धरे चारि कुँवर कुँवरि तापै आस न कराये जू॥
स्वस्ति द्विज पढ़त सुमन सुरवृष्टि करैं नृत्यत वधूटी देव दुन्दुभी बजायेजू।
मंगल को गावैं तान तुम्मर भरत अति भाइन सहित राम व्याहि घर आयेजू॥१३॥

पूजै दुलहिनि वर वेद विधि कुलरीति अर्घ धूप नैवेद्य आरती करतु है।
सुमन के हार गर डारत मुदित चित्त मुख अवलोकि मातु मोद को भरतु है॥
मंगल को गावैं तिय हर्ष हिय बार बार प्रेम ते अधीर मातु धीरज धरतु हैं।
बनादास समय सुख सेपहूँ सहमि जात कोविद औ कवि कहि पार न सरतु हैं॥१४॥

जनम दरिद्र जैसे पारस को पाय सुखी सूर लहि विजय मूक बानी मुख आये हैं।
महारोगी मूरि पाय गई मनि फनि भेटै नीर ते बिलग भई मीन जल नाये हैं॥
नार की सुगति लहै साधक परम तत्त्व गयो प्रान तन ते बहुरि ठहराये हैं।
बनादास याते कोटि गुना मोद मातु उर कवनि प्रकार कोऊ कविताहि गाये हैं॥१५॥

सम्पदा सकल पुत्रवधुन को आगे राखि कर जोरि तब गुरु सन नृप कहे हैं।
आपु के प्रसाद से सकल कार्य पूर भयो नाथ की विभूति यह मुनि मोद लहे हैं॥
नेग अनुकूल लै कै भवन सिधाये वेगि बनादास मनवृद्धि राम रूप नहे हैं।
सास्त्र औ पुरान वेद सन्त सदा गान करैं जाके नाम करि भाव दाप भूरि दहे हैं॥१६॥

दिये दिब्य आसन बहुरि गाधिनन्दन को आह्वान अमित बोलि भूपति जेवाँये हैं।
दक्षिना औेर पान दै असीस लहे सबही सो सहित बराती सुतजुत आपु पाये हैं।।
वनादास तासु पीछे भीतर भवन गये ब्याह उत्साह कथा रानिन सुनाये हैं।
बहुरि विदेह गति वार वार कहे भूप तदपि न काहू भाँति तोप उर आये हैं।।१७।।

कुवँरिन बोलि बहु भाँति से दुलारि नृप नाना विधि उपदेस रानिन सिखाये है।
लरिका अजान जानो आई हैं पराये घर राख्यो पट पूतरी से अतिमन लाये हैं।।
जाते वह घर भूलि जाय अल्पकाल हो मे यही तुम्हे योग्य वेगि सयन कराये है।
आत ही उनीद जानि भूप आपु सयन किये बनादास जागै तिय लोकरीति गये हैं।।१८।।

छप्पय

प्रातकाल उठि नृपति नित्य निवहे सब भांती।
जबै सभा महँ बैठि जोहारे आय बराती।।
रामबन्धुजुत तबहि पितापद बन्दन कीन्हा।
मस्तक सूँघि महीप वेद विधि आसिष दीन्हा।।
सचिव सुभट पुरजन प्रजा नृपहि जुहारे आय सब।
कह वनादास जे भाट नट लेनहार लहबेर कब।।१६।।

अज्ञा दीन्हे सचिव सबन दीजै पहिरावा।
भूषन वसन विचित्र चीर बहु चारु मँगावा।।
जथाजोग दिये सबहिं काहु को तुरय देवाये।
काहुहि महिपी धेनु वृपभ पुनि काहू पाये।।
काहुहि दीन्हे चर्म असिकनक रजत बहु द्रब्य जू।
कह बनादास पाये सबै गनती अर्बन खर्बजू।।२०।।

सखी सुआसिनि धनी विपुल तिय विप्रन केरी।
जाचक भिक्षुक नारि विपुल कुलमानिज ठेरी।।
सबहिं दई पहिराव रही जाके रुचि जैसो।
बिपुल तियन को दिये अमित गाई औ भैंसो।।
बहुरि दिये नृत्यकन को नानाविधि बखसीस हैं।
नाऊ वारी बजनियाँ बहुविधि देत असीस हैं।।२१।।

पायघरी सुभ दिवस सहित विधि ककन छोरे।
नेग जोग दै सबहिं नृपति बहु भाँति निहोरे।।

रामब्याह उत्साह कवन कहि पावै पारा।
तापै एकै वदन बाल बुधि अतिहि गवारा॥
मोदक सक्कर घीव को टेढ़ो लागत मीठ अति।
कह बनादास प्रभु जस बिसद सँगवानिउ की रहि हि पति॥२२॥

देस देस के भूप द्वीप द्वीपन के नाना।
हुकुम दीन नरनाह मास भरि काहु न जाना॥
रिद्धि सिद्धि सम्पदा पठावहु डेरे डेरे।
सपन माहिं नहिं खंगै बस्तु कछु काहू केरे॥
कामदार सेवक घने ठौर ठौर देखत रहै।
कह बनादास माँगै जो यक दस देने को हुकुम है॥२३॥

घृत औ तेल तलाव भरेपुर बाहेर नाना।
चावर दालि पिसान ढेर जनु गिरि हिमवाना॥
पतरी दोना पात्र समधि की कवनि बड़ाई।
छोटा पर्वत मनहुं लोन को पटतर पाई॥
हरदी मिरचा शृंग गिरि केसरि अरु कर्पूर है।
कह बनादास लाची लवंग मिरिच आदि परिपूर है॥२४॥

सतुआ चिवरा चना मिठाई विविधि प्रकारा।
जनु पर्वत सामान्य लगे जहँ तहँ अम्बारा॥
मनुप हेत जो चहो नाम गनि पार को पावै।
चहुँ दिसि पाटा परा लेय जाको जो भावै॥
को तोलै माँगै कवन को केहि देवै मिति नहीं।
कह बनादास ठौरे ठौर धरि पूरन जो जेहि चहो॥२५॥

सुनत सहित दसरत्थ सभा बैठे हरषाये।
गुरुवसिष्ठ सुतगाधि वामदेवउ तब आये॥
भूप हृदय अनुरागि जनक की कथा चलाई।
नहिं कोउ ऐसा भयो अजहुं नहिं देत दिखाई॥
करत भोग में जोग जे जलज पात्र सम नितर है।
कह बनादास नाहीं लिपै जग जल सिद्धि सबै कहे॥२६॥

धोरवान धुर धरम सूर विद बेद विवेकी।
अति उदार नै निपुन टेक नहिं टरै जो टेकी॥

तब बसिष्ठ कहे सत्य नही कोउ जनक समाना।
गाधिसुवन तब कहे कवन जग तुम सम आना॥
राम भरत अरु लषन से सत्रुदवन जाके तनै।
कह बनादास सीता लहे पुत्रबधू को जस भनै॥२७॥

धीर धार्मिक सूर नीति जग जाकर लीका।
किये इन्द्र उपकार सोऊ बिन दार्महि बीका॥
सुरमुनि सेवी साधु बिप्र पद नेष्ठा भारी।
कौसल्यादिक भवन माहि ताही विधि नारी॥
रामब्रह्म व्यापक विरुज जासु भक्ति वस तन धरे।
कह वनादास तेहि ध्यान लै जनक वडाई सब करे॥२८॥

गाधिसुवन प्रति कहे भूप दसरथ हरषाई।
राम देत अति कठिन लगो मो कहँ मुनि राई॥
आपु रहे कछु व्यग्र कथा नहि ताते भाखी।
जीवन दरस अधीन राम कहो सकर साखी॥
बीतो जबही चौथपन अति गलानि मन मे भई।
कह बनादास सतति बिना जनु जीवनि नाहक गई॥२९॥

जैसे दल विन पील जती बिन बिरति विहूना।
दीप विना जिमि भवन पुत्र विन नृपति कछूना॥
बिद्या विना विवेक जथा सरिता बिन नीरा।
धरमसील बिन डील दूध विन जैसे खीरा॥
सकल भारकुल को धरै पुनि परलोक सुधारई।
कह बनादास सुत धार्मिक सब सेवा अनुसारई॥३०॥

मन्त्री अष्ट प्रसिद्ध अवध गादी सब काला।
तामे स्रेष्ठ सुमत अधिक उर बुद्धि विसाला॥
देखि बिसेखि उदास मोहि बूझे सिरनाई।
तिन भाषे निज हाल जौन नारद सो पाई;॥
ब्रह्मपुत्र आयो इतै कह सुमत सति भाय से।
ममनृप के सन्तति नही कहिये कछू उपाय से॥३१॥

तब नारद इमि कहे सुनो विधि सभा की वानी।
चौथेपन सुत चारि जतन करिहूँ है ज्ञानी॥

रूप तेज बल बुद्धि धीर रन सूर सुसीला।
क्षमा दया छलहीन अमित करि हैं सुभ लीला॥
अति उदार धर्मज्ञ सुचि सुरगुरु सेवी पितु भगत।
कह बनादास गुनधाम सुठि कीरति अति जागिहि जगत॥३२॥

गये बहुरि गुरु गेह कथा निज कहे सुनाई।
राज कार्य्य ऐस्वर्य्य लहे सब भाँति बड़ाई।
चाही सो सब किये धर्म जे भूपन केरे।
जज्ञ दान दिग्विजय जितेरन सत्रु घनेरे॥
अब आयो मम चौथपन यह सब कौने काज को।
कह बनादास संतति रहित केहि सिर धरी समाज को॥३३॥

गुरु कृपालु किये तोष धीर उर धरहु सँभारी।
अवसि जतन हम करब पुत्र बर ह्वै हैं चारी॥
भेजे तुरित सुमंत रहे सृंगी रिषि जहँवाँ।
धरि मुनि आज्ञा सीस सघही पहुँचे तहँवाँ॥
भाषे सकल प्रसंग तब बले बेगि हरषाय कै।
कह बनादास आये इतै मुनि अनुसासन पाय कै॥३४॥

जो जो आज्ञा किये जज्ञ के हेत मुनीसा।
सो सब संजम किये सूत मर्जी धरि सीसा॥
सरजू उत्तर दिसा नदी मनवर के तीरा।
उत्तम मास अषाढ़ भई मुनि सज्जन भीरा॥
वेद विहित मख भै तबै पुत्रहेत सुठि लाय मन।
कह बनादास पावक प्रगट भै पायस कर दिव्य तन॥३५॥

रानिन भाग लगाय बेगही दीजै राजा।
अस कहि भये अदृस्य विलोकत सकल समाजा॥
राम जननि दिये अर्द्ध उभय पुनि अर्द्ध में कीन्हा।
तामें लैकै एक केकयी कर में दीन्हा॥
रहा सो जुगल बनाय कै दोऊ रानिन कर में दई।
कह बनादास पुनि दोऊ लै सौमित्रहि देती भई॥३६॥

पाय गई जब भाग गर्भ सब तियन जनायो।
रूप तेज परकास अधिक प्रतिदिन सरसायो॥
राजकाज ऐस्वर्य्य बल सुख नूतन बाढ़त गयो।
कह बनादास दिन पाय कै राम जन्म यहि विधि भयो॥३७॥

चहूँपुत्र को जन्म भयो गुरुदेव प्रसादा।
अवध महा आनन्द दूरि भे सकल विषादा॥
रघुबर ब्याह उछाह सहित तिहुँ भाइन केरा।
सो तव कृपा प्रसाद लहे आनन्द घनेरा॥
कबहुँ उरिन नहिं आपु से बार बार दसरथ कहे।
कह बनादास सुनि गाधिसुत अतिहि मगन मन ह्वै रहे॥३८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम पचविंशतितमोऽध्याय. ॥२५॥

छप्पय

किमि गावौ जस भूरि एक मुख अधिक प्रससा।
बार बार मुनि सुजस भने रवि कुल अवतसा॥
लिये दोऊ घर मोल आपु अवधौ औ मिथिला।
को कबि बरनन जोग होय बिधि बचन न सिथिला॥
बामदेव दसरथ गिरा सुनि बोले साँची अहै।
कह वनादास कुलगुरु बदे तिहुँ पुरगति माँची अहै॥३९॥

सुतन बरातिन सहित तबहिं नृप भोजन कीना।
दिन प्रति बढत अनन्द कहै कवि कवन प्रवीना॥
विस्वामित्र बसिष्ठ वामदेवादि रिषीस्वर।
औरो आवत अवध रामहित अमित मुनीस्वर॥
बैठ सभा दसरत्थ नृप सुनते कथा पुरान है।
कह बनादास पटतर कहाँ लजित देखि मघवान है॥४०॥

द्वीप द्वीप के भूप परे पुरचारिहु पासा।
एकछत्र छिति राज कहूँ रिपु रुज नहिं भासा॥
आइ जो हारहिं भूप जथाबिधि बैठक पाई।
नृत्य गान औ तान निरखि तुम्मर सकुचाई॥
अमरावति नहिं अवध सम कहत परस्पर नृपति सब।
कह बनादास सुरपति सभा नहीं तुलत दसरथहि अब॥४१॥

लाखों सिंधुर सजे परी पीठिन अम्बारी।
तुरै कि संख्या नाहिं सजे लाखों रथ भारी॥

धनुष बान असि चर्म जिरह बख्तर बहु भाँती।
सूल सक्ति अरु गदा कहै किमि इनकी ख्याती॥
छुरी कटारी अनगनो दस्ताने कूंड़ी घनी।
कह बनादास उपमा दिये नहीं सुरेसहु की बनी॥४२॥

कंकन कर केयूर अमित मोती मनि माला।
कुंडल मुकुट समूह घने स्रवनन के बाला।
पट भूषन बहु जाति भाँति बहु रंग दुसाले।
पाटम्बर अनमोल असित सित हरित हुलाले॥
मास एक बीतो जबै जथाजोग भूषन दये।
कह बनादास दसरत्थ नृप बिदा सबहि करते भये॥४३॥

जे पाहुन प्रिय पूज्य ज्ञाति बहुभाँति सजाती।
पुरजन लोग अनेक दिये पीछे बहु भाँती॥
अस्वनाग मनि बसन बिभूषन गिनै को नाना।
अस्त्र सस्त्र बहु बस्तु कहै को बिबिध बिधाना॥
आदरजुत कीन्हें बिदा सील सिन्धु नृप मुकुटमनि।
कह बनादास पटतर कहाँ सबै बदत दसरत्थ धनि॥४४॥

सेनप सचिव दिवान सेन बख्सी बुलवाये।
महारथी भट भूरि गजाधिप अगनित आये॥
अस्वन के असवार रहे जहँ लगि पद चारी।
बन्दी मागध सूत बिदुष जन भूसुर द्वारी॥
सेवक सेवकनी घनों सनोमान सबको किये।
कह बनादास दसरत्थ नृप जो जैसा तेहि तस दिये॥४५॥

जे रघुपति के सखा अतिहि प्रिय सबहि बुलाये।
बूझि बूझि नृप दिये जवनि जो वस्तु बताये॥
रथ मतंग अरु तुरंग धनुप पुनि बान कृपाना।
चर्मसक्ति मनि वसन अभूषन गनै को नाना॥
स्त्रुति कुंडल वाला विपुल मुक्ता मनि माला घने।
कह बनादास कंकन कलित करज मुद्रिका अनगने॥४६॥

दीन्हे कर केयूर कंठ के कंठा भारी।
धीरा समला सीस लगी पट गोट किनारी॥

जुलुम जरकसी ज्योति किंजलक बसन सुरगा।
दये सखन रघुवीर भूप उर अतिहि उमगा॥
जनक जवन दायज दये इहाँ सकल विधि ते पटे।
कह बनादास दसरथ नृपति देत देत नहिं मन हटे॥४७॥

दिन प्रति सेवा सहस भाँति कौसिक अधिकानी।
करत नृपति सुत सहित आदि कौसल्या रानी॥
मन जोगवत निसि बार नजरि अवलोकत रहही।
दसरथ नृप सिरताज कबहु मुनिबर कछु कहही॥
नित्य चला चाहत रिषय राम विषय मे मन फस्यो।
कह बनादास छूटत नही जनु दिन प्रति लासा लस्यो॥४८॥

कस्यो अमित यक बार बस्यो ऐसो उर आई।
काल्हि चलेंगे अवसि आज ही नृपहिं जनाई॥
उठि प्रभात सुतगाधि चलन को कीन बिचारा।
भूप सहित परिवार आइ पद मस्तक डारा॥
रानिन सहित महीप मनि लिये चरन की धूरि है।
कह बनादास सुठि सीलनिधि नेह सकत नहिं तूरि है॥४९॥

हम सेवक सब भाँति सहित परिवार गोसाई।
राज काज सम्पदा आपु की सकल बडाई॥
जों लागै कछु काज हमारे जोग मुनीसा।
सो सब देव रजाय करौं जाते धरि सीसा॥
कृपादृष्टि जन जानि कै फेरि दरस जाते लहै।
कह बनादास तुम प्रान प्रिय दै आसिष मुनि इमि कहै॥५०॥

कृपासिंधु रघुनाथ बधु जुत पठवन हेता।
चले रिषय के साथ मुदित मन दया निकेता॥
गये दूरि तक सग जोरि कर पद सिरनाये।
अभिमत आसिष पाय अनुज जुत सदनहि आये।
रामरूप गुन सील नृप हृदय बिसूरत जात है।
कह बनादास तन गाधिसुत बार बार पुलकात है॥५१॥

सवैया

नित ही नव मगल औधपुरी जब ते घर ब्याहि कृपानिधि आये।
लोकपआदिक इन्द्र कुबेर बिरंचि सिहात हैं जाहि सुभाये॥

भे पुर लोग सुखी सब अंग से संगहि व्याह चहूँ लखि पाये।
दासवना अभिलाष यही विधि राम के राज को जोग लगाये ॥५२॥

रिद्धि औ सिद्धि बड़ाई विभव अतिही प्रति वासर बाढ़त जाई।
जैसे वढ़ै प्रति लाभ ते लोभ तिहूँ पुर में दसरत्थ बड़ाई॥
अर्थ औ धर्म औ कामहु मोक्ष उभय कर भूपति चारिउ पाई।
पुत्र बधू सिय आदिक भौन में कौन लहै उपमा चहुँ भाई ॥५३॥

राम को जन्म औ बाल बिनोद कुमार चरित्र महा सुखदाई।
व्याह को लीला विसेष अनन्द नही स्रुति सारद पारहि पाई॥
भाषै जथामति संत सनातन भक्ति को भाव हिये अधिकाई।
दासवना अति वालक बुद्धि कहा मुख एक सकै तेहि गाई ॥५४॥

घनाक्षरी

आयो विकराल काल कलिकाल कारो मुख सारो सुख सोखि लिये जीव दुख दरे हैं।
तिहूँ ताप तपत लपत लोभ लालच में काम क्रोध प्रवलन धीर कोऊ घरे हैं॥
अति विपरीति ज्ञान ध्यानन समाधि बनै इन्द्रीमन अजित फजीहति में परे हैं।
बनादास हमरे विचार यही सार आयो परम चतुर रामजस गान करे हैं ॥५५॥

विरति विचार सार वासना विदारि डारे तन दृढ़ नाहि तप तीरथ क्यों करे हैं।
सीत उप्न छुधा प्यास आस अति पीसि डारे मनोराज प्रवल सुरति सचि हरे हैं॥
राग द्वेष मेष में विसेष रोम रोम बँधे लदे सब अंग तमर जगरे परे हैं।
बनादास हमरे विचार यही सार आयो परम चतुर राम जस स्रौन भरे हैं ॥५६॥

पुलकत अंग अंग आँसू दृग पात होत कंठऊ निरोध मुख सोई जन जाने हैं।
मनबुद्धि चित्त अहंकार को हटत वलगोगन अवल जग सहज हेराने हैं॥
रामसिया रूप छहरत आय आँखि आगे जागे निसि मोहते न कहूँ लपटाने हैं।
बनादास वासना औ आमन देखाई देत एतो गुन चरित में परै पहिचाने हैं ॥५७॥

सारो बोध सोधत न बोधत हिये में विषय राग द्वेष विधि औ निषेधऊ भुलान है।
सीत उप्न छुधा प्यास दबै तामे कद्ध काल बाद बकवाद लागै जहर समान है॥
मान औ प्रतिष्ठा वहाँ कहाँ धुआँ धौर हर धनी औ गरीव वुरा भला कौन भान है।
बनादास याही हित साधन अमित चित सोई सिधि चरित में मेरे अनुमान है ॥५८॥

सवैया

राम चरित्र सोहात जिन्हैं नहि सोहात भागि विचार हमारे।
भाल सुअंक लगै कलि ह्वै घुन फेरि कुअंक बनावन हारे॥

सत समाज निरादार भाजन तासु भला नहिं कौनेहूँ द्वारे।
लोक उभय बिगरै यहि बुद्धि से कोटि उपाय टरै नहिं टारे ।।५६।।

प्रेत ते भक्तिन औरि अहै सो बिचार हिये ते चरित्र अधारे।
ताते महामुनि गावत है जस जक्त को ताप मिटावन हारे।।
जो यहि सागर मज्जन कीन्ह न तासु भयो नरजन्म वृथा रे।
दासबना नहिं जाहि सुहाय लगै मुख मे मसि कौन भला रे ।।६०।।

घनाक्षरी

नाम रूप लीला धाम चारिहू सरूप राम सतन प्रमान किये कमन सेवायजू।
एक ते अधिक एक टेकी टेक कोऊ जन मन अभिराम भयो अभिमत पायजू।।
एकहू अगम प्रभु कृपा ते सुगम होत चारिहू सुलभ सोऊ राम रूप आयजू।
बनादास पाये विना स्वाद कैसे जानि परै आवत न जाके बूझ अतिही मथायजू ।।६१।।

तीरथ बरत तप दान औ अचार नेम जोग जज्ञ पूजा पाठ कर्मकाड वहोना।
बाद बक्वाद तन स्वाद औ निषाद हर्ष विधि औ निषेध राग द्वेष माहिं दहोना।।
आयो है कठिन कलिकाल बिकराल कूर बनादास रामजस गाय गाय रहोना।
मन क्रम वचन सपन मे न आन गति सीताराम सीताराम सीताराम कहोना ।।६२।।

बसि औधधाम रामनाम जपो वसुयाम स्यामरूप माहिं नित सुरति रमावना।
आस औ उपाय और प्रीति परतीति त्यागि निसिदिन नवा जस रामजू को गावना।।
सतन को सग भग भव को करनहार ताहि करि सेवन न और द्वार धावना।
बनादास बार बार ब्रह्म को बिचार सार याते बडो सिद्धि पद काहि ठहरावना ।।६३।।

जहँ लगि साधन बतावै स्तुति करै जग मोसो कछु कामनाहिं खारी के समान है।
खांड खाय ऐसो को अभागा मुख तीत करै पर्यो मेरी पातरीन बहुत प्रमान है।।
साधन औ सिद्धि सर्वबिद्धि एक नाम रिद्धि सिद्धि सो न काम सारो नुक्सान है।
बनादास धनी औ गरीव को बिचारै कौन रोटी मिला करै सेर आधक पिसान है ।।६४।।

सवैया

मानै विरोध जो ब्रह्म विचार मे राम उपासक आपु बने हैं।
हाली नही तेहि बुद्धि मे आइ है सुद्धि लहै उरमाहिं घने हैं।।
सिद्धि उपासना ह्वै है जबै तबै दासबना भले बैठे मने हैं।
चाही कमाई कि आसव कीमत प्रीति प्रतीति ते जात गने हैं ।।६५।।

हैं तो मलीन औ खीन सबै अंगदीन कहो पै न दीन भयो है।
जानि न जाय रजाय कृपालु की ताने कहाँ कहँ तीर गयो है ॥
प्रेरत जो उर भायों सोई लिखि कागज कोर पै पार लयो है।
संत सरूप सदा निरपक्ष है दासबना नहिं आजु नयो है ॥६६॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे अयोध्याखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम षड्बिंशतितमोऽध्यायः ॥२६॥

॥ अयोध्याखंड समाप्तः ॥

चतुर्थ–विपिन खण्ड

कवित्त घनाक्षरी

रामरीति देखि पुर लोगन को महामोद नृप दसरथ जल मीन मन किये हैं।
चही जौन करन को सब करि आय चुके वासना न कोई रहि गई कछु हिये हैं॥
राजकाज कुसल सकल काम जोग राम अब अभिषेक हेत काहे बार लिये है।
बनादास तन छन भंगुर भो चौथपन मनबुद्धि अजित नचाये जग हिये हैं॥१॥

ऐसो कै बिचार महिपाल गुरु भौन गये करिकै प्रनाम सुभ आसिष को पायेजू।
बैठे मुनि निकट जुगल करजोरि बोले नाथ एक लालसा सो प्रगट जनायेजू॥
आपु के प्रसाद से सकल काज पूर भयो चौथपन बीतो रात मृषा स्रुति गायेजू।
बनादास स्वास अवकाति जल अंजलि को टूटत-न तार चुकै सहज सुभायेजू॥२॥

पुरजन प्रजा परिवार अरि मीत जेते सचिव महाजन सुभट सूरबीर हैं।
सबके हिये कि गति देखी हैं बिचार करि प्रानहू ते प्रिय लागैं सबै रघुबीर है॥
सील औ‍र स्वभाव गुन सोभा सत्य देखि देखि अब उर माहि कोउ धरत न धीर हैं।
बनादास चाहैं अभिषेक रघुनाथजु को मेरे उर माहि याकी बार बार पीर है॥३॥

स्वामी सर्वज्ञ तिहूँ कालगति जानहार सेवक धरम देखि विनय सुनायेजू।
जैसे होय मर्जी सो करों करुनाजतन कहे गुरु ऐसे काज बार न लगायेजू॥
सुकृत के सीव तुम सकल प्रकार नृप फल अनुगामी तबचही उर आयेजू।
बनादास बार बार बदि कै बसिष्ठ पद परम अनन्दजुत सभा को सिधायेजू॥४॥

बोलिकै सुमन्त अस कहत महीप भये राम अभिषेक हेत आज्ञा गुरु दये हैं।
सचिव अनन्द रोम रोम उफिलाय चलो महाराज अब नेक बार जनि लये हैं॥
ऐसो अभिलाष सबही के उरमाहि सदा सुनि लोग धान पान पानी भीजि गये हैं।
बनादास तबही रजाय दिये सूत नृप आज्ञा जो मुनीस देहि करो सिर नये हैं॥५॥

जाय मुनि पास सिर नाय कै सुमन्त बोले महाराज अति बड़काज आज्ञा दये हैं।
मर्जी महीपति की मुनि की रजाय करो होय जो हुकुम ताहि बार नाहि लये हैं॥
कहे गुरु सकल सुतीरथ मँगावो जल बहुभांति सेवक तुरित धाय गये हैं।
बनादास नगर बनाव करो भलीभाँति नाना पटभूषन मँगावो नये नये हैं॥६॥

मंगलीक बहु वस्तु भूप अभिषेक जोग बिबिध प्रकार को वसिष्ठजू बताये हैं।
साजौ रथ नाग अस्व सकल बनावो यान कंचन कलस चारु चउक पुराये हैं॥
कदली रसाल पुगीफल औ पताकध्वज तोरन निसान पूजाग्राम देव गाये हैं।
बनादास याही भाँति कहे हैं अनेक बिधि राम अभिषेक बस्तु पार कौन पाये हैं॥७॥

मुनि की रजाय पाय आय कै सुमन्त वेगि सकल प्रकार कामदारन बुलायेजू।
निज निज माफिक हुकुम सबही को दिये नानाविधि प्रथमहिं अवध बनायेजू॥
बनये बजार चारु चौहट अनेक भांति कहै कवि कौन मानो महा छबि छायेजू।
बनादास वीथी अरगजा से सिचाये सब गली गली मानहुँ अनन्द उमगायेजू॥८॥

अस्वरथ नागसेन साजे सब अंग करि सुभग सृङ्गार छुहे सिंधुर अनेक हैं।
नानाविधि भूषन ते तुरय तयार किये मानों काम हरि भेष कौन कहवे कहैं॥
ध्वज औ पताक घंटा घंटी रथ रचे रूरे सूर सरदार सब सोधे एक एक हैं।
बनादास विविध बसन पहिरावा दिये अस्त्रसस्त्र भांति भांति कौन गनवे कहै॥९॥

सेवक सुआसिनिन भूषण बसन दिये सकल सृङ्गार किये महामोद हिये हैं।
कदली रसाल औ तमाल बर पुगी रोपे मनिमयी आलबाल नानाविधि किये हैं॥
तोरन पताक ध्वज चामर ब्यजन साजे कंचन कलस मनि दीप धरि दिये हैं।
बनादास चौक चारु पूरे हैं सुमित्रा रूरे ठौर ठौर कामदार बार नाहि लिये हैं॥१०॥

द्विजन को दान बकसीस बहु जाचकन राममातु देवपितृ पूजैं मन लाये जू।
भूपति अनेक विधि साधुद्विज सेवै सुर उमँगि उमँगि उर उपमा को पाये जू॥
घर घर मंगल को चार पुर द्वार द्वार सोभा ओघ बरनत; सारद लजाये जू।
बनादास बाजे घन बाजन विविध भांति लाजे मेघवान अमरावतिहि दवाये जू॥११॥

मंगल कुसल से तिलक रघुनाथ होय ताके हेतु मातु नानाविधि किये हैं।
मन्त्र यन्त्र तन्त्र सुर पूजा विप्रवृन्द करें भरे प्रेम सारो बिघ्न बाधा सांति लिये हैं॥
याही भांति पुरजन प्रजा परिवार सब देव पितृ सेवत मनाय निज हिये हैं।
बनादास महा उतसाह न बरनि जात निज निज अवकाति अति दान दिये हैं॥१२॥

सवैया

जा दिन बात प्रचार भई रघुनाथ को माय दुखात भयोजू।
भांति अनेक उपाय करें सब पीर छनै छन होत नयोजू॥
बात भरत्थ की मातु सुनी तबहीं उर में परिताप जयोजू।
दासबना आई देखन छोह से सीस कृपालु के हाथ दयोजू॥१३॥

कौनि प्रकार ते जाय ब्यथा कहौ बेगिहि जतन करौ किन सोई।
मातु अधीन अहैं तुम्हरे असमंजस भांति अनेकन जोई॥
चौदह वर्ष को देहु हमैं बन जाइ है पीर संदेह न कोई।
दासबना उतपात बड़ो परिताप हिये तुम्हरे अति होई॥१४॥

पुत्र बिरोध परै भरि जन्म बिधौपन लाभ न टारे टरैगो।
निन्दा तिहूँ पुर मे पसरै अरु सौतिन बैर अनेक परैगो॥
गारी चहूँ जुग के जन देहिंगे तो उर भाँति अनेक जरैगो।
दासबना तुम होहु प्रसन्न हमारो कोई फिरि काह करैगो॥१५॥

मातु प्रसन न क्यो हम होहिं सहो इतनो सब कारन मेरे।
दै बर वेगि गई भवनै यह बात प्रसिद्ध भई चहुँ फेरे॥
कोटि उपाय न पीर गई सो भरत्थ की माय ने आय निबेरे।
दासबना यह बात यकात की और कोई नहि जानत हेरे॥१६॥

मगल साज सजो सब भाँति से राति दिना कहुँ जात न जानै।
आनँदमग्न सबै पुर लोग जहाँ तहँ एक न एक बखानै॥
लग्नघरी बिधि ऐहैं कबै बिन देखे न नेक कहो मनमानैं।
दासबना जनु बैठ सिंहासन रामसिया उर मे सब आनैं॥१७॥

घनाक्षरी

गुरुहिं बुलाय नृप रामधाम भेजे तब सिष देन हेत मुनि वेगि ही सिधाये हैं।
जाने आगमन राम सीलसिंधु सुखधाम धाय करुनाजतन बन्दे आय द्वारे हैं॥
बहुरि सिंहासन पै आसन कराये जाय माथ नाय पाँय सिय बेगि ही पधारे हैं।
बनादास षोडस प्रकार पूजे रघुनाथ जोरि करकज वर बचन उचारे हैं॥१८॥

हुकुम न दीन निज सेवक समान प्रभु कौन ये तौ परिस्रम भूरि भागि मेरे हैं।
प्रभुता को त्यागि आजु अति ही सनेह किये दोष दुख पाप दूरि सकल सबेरे हैं॥
छोटो सो सदन मोद मोटो न समाय सकै बहो उफिलाय बनादास चहुँ फेरे हैं।
आज्ञा काह धरों सीस कहो प्रभु बार बार जाते करौं बेगहो न होय नेक देर हैं॥१९॥

तुम स्रुतिसेतुपाल सील सिंधु गुनधाम सारो पूर काम रूप ऐसन बिचारेजू।
साजे अभिषेक साजतुद जुवराज हेत मोते कहे बोलि याही हेत को सिधारेजू॥
नृप की रजाय करो सकल समाज साज जो पै मनोराज पूर बिधि गति न्यारेजू।
बनादास करि उपदेस मुनि भौन गये राम उर सोच यह अचरज भारेजू॥२०॥

जनम करम स्रवन छेदन औ चूडाकरन जज्ञ उपवीत सग ब्याह उतसाह भो।
कुलरीति दिव्य न अनीति को है लेस जामे बन्धु को बिहाय अभिषेक वेस लाह भो॥
सचिव सयाने महिपाल वृद्ध गुरु देव तहाँ आज्ञा योग्य मन हेत निरबाह भो।
बनादास सोच के बिमोचन ससोच भये भरत से बन्धु नाहिं काह याम लाह भो॥२१॥

चितवन चित्त मे जो आय जाहि बन्धु दोय समय सजोग तबो बात सुठि नीकी है।
भूमिभार हरन को धारे तन कैसी भई मेरे सीस भार चढ यातो नहि ठीकी है॥

वनादास वारबार कहे प्रति जानकी से ठकुराई त्यागि बनै चलो रुचि जोकी है।
स्वामी सर्वज्ञ आज्ञा सीस पै सरवकाल प्रभु उर भावै नसो मोहिं अति फीकी है।।२२।।

पुरलोक जहाँ तहाँ कहत परस्पर भरत सहानुज न सभै यहि भयेजू।
कोऊ कहै ईस अनुकूल अवो आय जाहि भलीभाँति लोचन को लाह तवो लयेजू।।
रामसखा संग दस पाँच सो उमंग उर आवै रघुनाथ पास आदर को दयेजू।
जात दस आवै बीस बनादास वारबार प्रभु अभिषेक सुनि सुख नये नये जू।।२३।।

लषन आये तेहि समय अनुराग भरे जानै अभिषेक दिन काल्हि सुभ घरी है।
जानि सुचि बन्धु सील सिन्धु परितोषे रामजानकी समेत रहे आनँद सों भरी है।।
नगर कोलाहल कहत सब नारिनर बीतैं कब राति कोऊ धीर नाहि घरी है।
सिया के समेत प्रभुरतन सिंहासन पै कब अवलोकें मुनि टीका भाल करी है।।२४।।

देव अप स्वारथी कुटिल कोटि कोटि सोचैं ताहि चोर चाँदनी से अवध अनंद भो।
राम अभिषेक भयो रावन को बध गयो निसिहु दिवस पुनि वृद्धि दुख द्वंद भो।।
सुरराज गुरुदेव सबै मिलि रचि पचि सारद बुलाय कै कहत निज फंद भो।
जइये औधपुर हेत कहत सचेत ह्वै कै याही लागि नरतन ब्रह्म सुखकंद भो।।२५।।

पाछिल बिचारि काज याको न अकाज लखो राज रसभंग हेत औधपुर आई है।
घर घर मोद पुर भोरही तिलक राम देव की कुचाल कोऊ कैसे जानि पाई है।।
मंथरा मलीन मति चेरी प्रिय केकयी कि सारद संभरि तासु बुद्धि बदलाई है।
वनादास देखत अनन्दपुर जहाँ तहाँ मानो मृगीदावा देखि अति सुखदाई है।।२६।।

करत बिचार उर बार बार कोटि विधि राज लवा बाहरी से चाहत नसाई है।
महामोद मूषक मँजारि से लगाई ध्यान चाहत निदान रातिही में धरि खाई है।।
कुटिल कलपि लाखों जुगुति कुचाल करि केकयी समीप वलि चारा सम आई है।
वनादास अतिही उदास ऊर्द्ध स्वास लेत दसादेखि रानी हिय माहि डर खाई है।।२७।।

सवैया

वेगि कहै कुसलात महीप को लक्ष्मन राम अहैं सुठि नीके।
काहे उदास भई अति मंथरा त्यों त्यों वढ़ावत भेद न जीके।।
डारति आँसु उसास भरै उर रानी कहै नखरात जुती के।
दासवना सवकी कुसलात तुम्हारी नसात सो हैं दुखही के।।२८।।

कुंडलिया

राम छोड़ि काकी कुसल औ कौसल्या केर।
जाको टीका देहिगे नरपति होत सबेर।।

नरपति होत सबेर भइउ दूधे की माखी।
सत्य कहौ करिपै जब हुरिदै संकर साखी॥
कार्य्यं सुधारो जो चहौ तौ पुनि करौ न देर।
राम छोड़ि काको कुसल अरु कौसल्या केर॥२९॥

जेठे स्वामी लघु सदा सेवक रबिकुल रीति।
ताहि तिलक जो होत है क्यो देखं बिपरीति॥
क्यो देखं बिपरीति सत्य जो तेरी बानी।
मन भावै सो देव कही तब ऐसी रानी॥
बनादास घरफोरि कै भापत बचन अनीति।
जेठे स्वामी लघु सदा सेवक रबिकुल रीति॥३०॥

खावा पहिरा राज तव देखि न जात अकाज।
जारनजोग स्वभाव है परी लोन की लाज॥
परी लोन की लाज चेरि तजि होब न रानी।
कोऊ राजा होय कवनि है हमका हानी॥
बनादास कुलरीति तव महूँ कहत महराज।
खावा पहिरा राज तव देखि न जात अकाज॥३१॥

कौसल्या कबहूँ नही किये सवतिया रोप।
मिलै पतोहू सिया से पुत्र राम निरदोप॥
पुत्र राम निरदोप लहे सो जीवन लाहू।
कोता सम संसार तिहूँ पुर भागि सराहू॥
बनादास परचै लई मोहिं कृपा को कोप।
कौसल्या कबहूँ नही किये सवतिया रोप॥३२॥

रहे प्रथम दिन ते गये अब वै बातै नाहिं।
रबि पंकज रक्षा करै वहुरि जरावै ताहि॥
वहुरि जरावै ताहि पाय अवसर कर प्रीती।
समय फिरै रिपु फिरै सदा गावत अस नीती॥
कद्रू बिनता दिति अदिति कथा पुरानन माहिं।
रहे प्रथम दिन ते गये अब वै बातै नाहिं॥३३॥

सुर माया अति ही प्रवल फिरी कैक्यी बुद्धि।
पुनि पुनि पूंछति ताहिते रही तनिक नहि सुद्धि॥

रही तनिक नहिं सुद्धि कथा पाविनि बहु बरनी।
बनादास तरु कलप निपाते मानहुँ करनी॥
ताहि जीति निज बस किये भई कपट की युद्धि।
सुर माया अतिहौ प्रबल फिरी केकयी बुद्धि॥३४॥

मंगल साज सजत भये एक पाख सुनु रानि।
पाये आजु हवाल तुम तापै परत न जानि॥
तापै परत न जानि बानि अति कपट नरेसा।
तुम्हरा भोर स्वभाव पुत्र पठये परदेसा॥
कार्य्य सुधारो कौसल्या भलो समय पहिचानि।
मंगल साज सजत भये एक पाख सुनु रानि॥३५॥

अब यहि अवसर में कोऊ हितू न देखौं आन।
एक मंथरा है तुहीं जो उपदेसै ज्ञान॥
जो उपदेसै ज्ञान मरौं बरु माहुर खाई।
पावक करौ प्रवेस न तरु जल माहिं समाई॥
नैहर रहिहौं जन्मभर को दुख सहे निदान।
अब यहि अवसर में कोऊ हितू न देखौं आन॥३६॥

कपट सयानी सानि कै बहु समुझाई रानि।
हरि इच्छा भावी प्रबल सुरमाया बौरानि॥
सुरमाया बौरानि अतिहि कुबरिहि पतियानी।
कहै न चिन्ता करौ दिनौ दिन तोहिं सुख रानी॥
बनादास जो हम कहैं सोई करौ हित मानि।
कपट सयानी सानि कै बहु समुझाई रानि॥३७॥

दुइ बरयातौ नृपति से राख्यो है सुधि ताहि।
भरत राज बन राम कहँ लीजै बैर निबाहि॥
लीजै बैर निबाहि दाँव ऐसो नहिं पैहौ।
तोर छुटि गो हाथ जनम भरि पुनि पछितैहौ॥
रामराज्य नायब लपन भरत बंदि गृह माहिं।
दुइ बरयातौ नृपति से राख्यो है सुधि ताहि॥३८॥

सुनि सहमी रानी पर्‌यो मानहुँ कंज तुषार।
बेलि निकट दावा जथा काह कौन करतार॥

काहु कौन करतार सखी का करौं उपाई।
कहेसि कोप गृह परौ सहज कारज सधि जाई॥
दृढ ह्वै साधेहु काज को नृप कार्नहि अतिबार।
सुनि सहमी रानी पर्‌यो मानहुँ कज तुषार॥३९॥

राजा जोगी कौन के कहु पुरान स्रुति नीति।
अति स्वतन्त्र समरथ सदा इनकी गति बिपरीति॥
इनकी गति बिपरीति सदा ताही ते डरिये।
नहिं कीजै बिस्वास कार्य्य आपनो सुधरिये॥
अपने करतर वारि जिमि तनिक न राखै प्रीति।
राजा जोगी कौन के कहु पुरान स्रुति नीति।।४०॥

कार्य्य सुधारौ सजग ह्वै फिरि न बिचारौ आन।
राम सपथ भूपति करै तब मांगौ बरदान॥
तब मांगौ वरदान जाहि ते पलटै नाही।
चहै छूटि तन जाय रह्यो दृढ निजमति माही॥
प्रबल गुरू जिमि सिष्य को पुष्ट करत है ज्ञान।
कार्य्य सुधारौ सजग ह्वै फिरि न बिचारौ आन॥४१॥

चली केकयी कोपगृह बिधिगति अति बलवान।
बलिपसु दाना खात जिमि मृत्यु नही निज जात॥
मृत्यु नहीं निज जात नीच सगति बौरानी।
तातें सदा प्रमान बडेन को लघु सगहानी॥
सगति करिये ऊँच की लहिये ऊँचा ज्ञान।
चली केकयी कोपगृह बिधि गति अति बलवान॥४२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमयने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापबिभजनोनाम प्रथमोऽध्याय ॥१॥

कुंडलिया

त्यागि सकल भूषन बसन पहिरे फटा पुरान।
भूमि सयन प्रथमै मनो पराविधो पन जान॥

परावियौ पन जान जुगुति वहु मन ठहरावत।
खानपान सुख सेज नींद कछु ताहि न भावत॥
कौनो विधि कारज सधै यही करत अनुमान।
त्यागि सकल भूषन बसन पहिरे फटा पुरान॥४३॥

सांझ समय आनन्द नृप गयो केकयी धाम।
समय पाय मार्‌यो हृदय सुमन वान तब काम॥
सुमन वान तब काम बाम विधि गति कठिनाई।
भवन भयानक मनहुँ भूप देखत भय खाई॥
जाय दसा देखी जुवति मानहुँ महा वैराम।
सांझ समय आनन्द नृप गयो केकयी धाम॥४४॥

सक्ति सूल अरु वान पुनि सहवै जोग कृपान।
अंगै जाहि सुरपति कुलिस तियगति देखि मलान॥
तियगति देखि मलान गयो सो सहमि सुखाई।
मानहुँ संध्या समय गयो सरसिज कुम्हिलाई॥
वनादास मनमथ प्रवल चहुँजुग को नहिं जान।
सक्तिसूल अरु बान पुनि सहवै जोग कृपान॥४५॥

वार वार नृप हँसि कहत काहे रानि रिसानि।
अति दुलारि प्रिय बचन कहि सिरपर परसत पानि॥
सिर पर परसत पानि तकै नागिनि जनु कारी।
लै लै ऊँधी स्वास नाहरी मृगहि निहारी॥
तिमि अवलोकति भूप दिसि कह नरपति अनुमानि।
वार वार नृप हँसि कहत काहे रानि रिसानि॥४६॥

ह्वै प्रसन्न कहु उर मरम केहि नृप करौं भिखारी।
केहि दरिद्र अवनिप करौं प्रिया वचन उरधारि॥
प्रिया वचन उर धारि मारि डारौं सुरनायक।
केहि जाम्यो दुइ सीस भयो जो तव दुखदायक॥
अवसर अन अवसर लखौ सजौ मृङ्गार सँभारि।
ह्वै प्रसन्न कहु उर मरम केहि नृप करौं भिखारि॥४७॥

देव दनुज अरु मनु जतन को वैरी संसार।
नाम कहौ तिहुँ लोक में अबै झोकावों भार॥

अवै झोकावो भार बार नहिं लागै नेको।
करते येती पैज बचन वोलत नहिं एको।।
मन भावत माँगो जोई देत न लावो बार।
देव दनुज अरु मनुज तन को बैरी ससार।।४८।।

धीर विवेक औ सूरता चलै न नीति विचार।
चतुराई चौपट भई मार बडो बरियार।।
मार बडो बरियार बार बहु तिय मुख देखत।
जाते होय प्रसन्न जतन उर बहुबिधि लेखत।।
काल बलो अति कठिन है पुनि गति सिरजनहार।
धीर विवेक औ सूरता चलै न नीति बिचार।।४६।।

माँगु माँगु सब दिन कहत लहत न कबहूँ एक।
देत कहे बरदान दुइ बीते बर्ष अनेक।।
बीते वर्ष अनेक हरष उर कपट जनावत।
मनहुँ किरातिनि फद अग सृङ्गार बनावत।।
ऊपर करत कटाक्ष बहु भीतर कठिन कुटेक।
माँगु माँगु सब दिन कहत लहत न कबहूँ एक।।५०।।

सब दिन तुम्हहिं को हाव प्रिय दोष न कछू हमार।
थाती राखे आपुही बड स्वभाव बरियार।।
बड स्वभाव बरियार माथ अपराघ हमारे।
लेहु न दुइ के चारि कवन हित लावत बारे।।
राम सपथ तोहिं सत्य कहो राखो उर अति बार।
सब दिन तुम्हहिं को हाव प्रिय दोष न कछू हमार।।५१।।

हो वर मन मानै नही औरै वर की चाह।
अबहो हूँ दूजो त्रिया हेरै हँसि कह नाह।।
हेरै हँसि कह नाह चाह रस ब्यग सुनावत।
वाको कठिन दुराव भूप कहुँ थाह न पावत।।
बनादास सूधे नृपति नारि कपट अवगाह।
हौं वर मन मानै नही औरै वर की चाह।।५२।।

राज भरत को दीजिये प्रथमै यह वरदान।
बर्ष चारिदस राम बन दूजो पुनि परमान।।

दूजो पुनि परमान वान सम नृप उर लागे।
मर्म ठाँव गो बेधि जाहि करि फेरि न जागे॥
वनादास सुनतै भये मानो मृतक समान।
राज भरत को दीजिये प्रथमै यह वरदान॥५३॥

धनु विद्या गुरु मंथरा तरकस बुद्धि अनूप।
अमित जुक्ति सर भरि दिये उभै वान वर खूप॥
उभै वान बर खूप बचन रानी धनु वंका।
मारे नृपति कुरंग मरन हित रही न संका॥
वनादास सुठि धीर धरि बचन कहत भे भूप।
धनु विद्या गुरु मन्थरा तरकस बुद्धि अनूप॥५४॥

किमि कुभाँति बोलति बचन प्रिया न कहै सँभारि।
तू बर माँगि जवनि विधि सब जग होय उजारि॥
सब जग होय उजारि मरन मम संसय नाही।
राम दरस लगि प्रान विदित सोहै सब पाहीं॥
रिस परिहास निकारि कै माँगै बुद्धि सुधारि।
किमि कुभाँति बोलति बचन प्रिया न कहै सँभारि॥५५॥

माँगु माँगु केहि बल कहे सुनत लगे जनु बान।
मनमाना माँगै सोई फेरि कवन अनुमान॥
फेरि कवन अनुमान घेरौंदा नहिं सिसु केरा।
बनवै ताहि सुधारि बिगार बहुरि न देरा॥
देहु कितौ नाहीं कहौ लहौ कलंक निदान।
माँगु माँगु केहि बल कहे सुनत लगे जनु बान॥५६॥

बोले भूपति क्रोध तजि कहै राम अपराध।
जे अरि अनहित ना करैं तहूँ सराहै साध॥
तहूँ सराहै साध किये किम मातु विरोधा।
लागत अति बिपरीति भाँति कोटिन ते सोधा॥
प्रिया वेगि रिस परिहरै सुख न लहव पल आध।
बोले भूपति क्रोध तजि कहै राम अपराध॥५७॥

तुम अपराधन जोग है नहिं कौसल्या राम।
कार्म्य बिगारा हम सबै भले विधाता वाम॥

भले विधाता वाम काह करवौतेहि राजा।
देन कह्यो बरदान तुम्हैं उर धरम न लाजा॥
अब लगि बनियाई सबै किम खोवत परिनाम।
तुम अपराध न जोग हो नहिं कौसल्या राम॥५८॥

सत्य सराह्यो भाँति बहु अब काहे ललचात।
तुम्हैं जानि तब का परी लेइहि मूरी पात॥
लेइहि मूरी पात नही गाजर सो सूखी।
निधडक अति कटु कहै चितव जनु बाघिनि भूखी॥
देहु कितौ नाही कहौ दोऊ लोक नसात।
सत्य सराह्यो भाँति बहु अब काहे ललचात॥५९॥

सिवि दधीचि हरिस्चन्द्र नृप रघु दिलीप महिपाल।
भागीरथ आदिक सहे धर्म्म हेत बहु साल॥
धर्म्म हेत बहु साल सदा रविकुल चलि आई।
धरनि धाम धन प्रान तजै पुनि बचन न जाई॥
तुम कलक काहे लहत सूझी काह भुवाल।
सिवि दधीचि हरिस्चन्द्र नृप रघु दिलीप महिपाल॥६०॥

अति उत्तम इक्ष्वाकु कुल स्रुति पुरान जस गाव।
सूर कृपा नौ दान मे समता नहि कोउ पाव॥
समता नहि कोउ पाव नृपति समझौ मन माही।
तुम कलक को लहौ मोरि हठि जीवन नाही॥
देहु कितौ नाही कहौ मोहि प्रपच न भाव।
अति उत्तम इक्ष्वाकु कुल स्रुति पुरान जस गाव॥६१॥

दूत पठावो प्रातही आवैं दूनौं भाय।
मन प्रसन्न करि दीजिये भरतहिं राजबजाय॥
भरतहिं राजबजाय दूसरा बर जो माँगा।
यह अनर्थ को भूल प्रिया करु ताकर त्यागा॥
जोरि पानि पायन पर्यो भूप अतिहि बिलखाय।
दूत पठावो प्रातही आवैं दूनौं भाय॥६२॥

राम बिरह जनि मारि मोहि तोहि कहौ परिपाँय।
दीनं बचन भाषे बिबिध ताहि न कछू सोहाय॥

ताहि न कछू सोहाय निठुरता की महतारी।
कैधों कुलिस करेज कूबरी रचे सुधारी॥
वनादास निस्चय किये नृप तिय नीच स्वभाय।
राम विरह जनि मारु मोहि तोहि कहो परिपांय॥६३॥

किमि नखरा तिय सम करौ दान कृपनता संग।
दोऊ कौनिउ विधि बनै वहत आपने रंग॥
वहत आपने रंग दिवस निसि को किमि संगा।
लावहि कुलहि कलंक वन विधि मति कर भंगा॥
भरमवचन भेद्यो हृदय रानी अवसि उमंग।
किमि नखरा तिय सम करौ दानि कृपनता संग॥६४॥

भूप विचारेहु वार बहु निस्चय लीन्ह्यो प्रान।
राम विरह व्याप्यो हृदय विधि गति अति वलवान॥
बिधि गति अति वलवान कहे टरि निकट से जावै।
जब लगि तन में प्रान तहां तक अब न बोलावै॥
पापिनि पछितैहै भले जबलगि जियै जहान।
भूप विचार्यो वारवहु निस्चय लीन्ह्यो प्रान॥६५॥

बाज झपेटै जिमि लवा करि दपटे मृगराज।
पंकज पर्यो तुपार जनु दसा भूप सिरताज॥
दसाभूप सिरताज गाजते जिमि तरु दाह्यो।
गिर्यो धरनि धुनि माथ सोक सरि पर्यो अथाह्यो॥
प्रान जान बाजी लगी साजे तिलक समाज।
बाज झपेटै जिमि लवा करि दपटे मृगराज॥६६॥

अति ब्याकुल भूपति पर्यो मनहुँ कंठगत प्रान।
बैठि भयानक भवन में जागति मनहुँ मसान॥
जागति मनहुँ मसान केकयी भई किराती।
मारे मृगनरनाह जनहुँ जोग बसि बहु भांती॥
राम राम हा राम कहि बोलि उठत अकुलान।
अति ब्याकुल भूपति पर्यो मनहुँ कंठगत प्रान॥६७॥

कोटि कोटि विधि तर्कना भूप करत बहुवार।
काह करत काह्व गयो दुस्तर गति करतार॥

दुस्तर गति करतार राम जो कछू न मानै।
भवन माहि रहि जाय बनै सबही बिधि बानै॥
कितौ प्रान छूटै निसिहिं नही होय भिनुसार।
कोटि कोटि विधि तर्कना भूप करत बहुबार॥६८॥

उठि प्रभात देखब कहा स्रवन सुनब का बात।
लै लै ऊरध स्वास नृप हाथ मीजि रहि जात॥
हाथ मीजि रहि जात उदय जनि होहि दिनेसा।
मानै बिनय बिसेप न तरु सब भाँति क्लेसा॥
कितौ कैकयी जाति मरि तौ भी अति कुसलात।
उठि प्रभात देखब कहा स्रवन सुनब का बात॥६९॥

छप्पय

सिव प्रेरक सब हृदै करौ यदि समै सहाई।
निकसै कोई उपाय जाहि ते जरनि नसाई॥
राम बिलग जनि होहि नयन ते कौनेहु काला।
बिछुरत छूटै प्रान मनावत ईस भुआला॥
यहि बिधि ते भिनुसार भो गान तान बहु बाजने।
कह बनादास द्विज बेद ध्वनि बन्दी बिरदावलि भने॥७०॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनो नाम द्वितीयोऽध्याय ॥२॥

छप्पय

सुनत लगे जनु बान कहाँ उपमा कवि पाये।
जिमि खग पख बिहीन बार बारहि अकुलाये॥
प्रान त्याग नहि करत भरत पुनि उरध स्वासा।
व्यापी बाँकी पीर कवनि जीवन की आसा॥
सुभट सूर पुर जन प्रजा सचिव महाजन सभयलखि।
कह बनादास आये सबै तिलक कार्य करने हरखि॥७१॥

कहँ उदय रवि देखि आज अचरज बड लागे।
उठत याम निसि रहे नृपति अजहूँ नहि जागे॥

सबकोउ कहै सुमंत जगावहु भूपहि जाई।
निज निज कारज करैं कबै कोउ आयसु पाई॥
घर घर पुर मंगल महा यह कुचाल को जानई।
कह बनादास भूपति भवन चलत सचिव भय मानई।.७२॥

महा भयानक भवन किये जनु प्रेत निवासा।
जथा तथा धरि धीर गयो भूपति के पासा॥
देखा निपट कुसाज नृपति गति बरनि न जाती।
पंख रहित ह्वै पर्यो अवनि मानहु सम्पाती॥
तबही बोली केकयी रामहिं लावो बोलि अब।
कह बनादास उतते पलटि आय जगायहु भूप तब॥७३॥

सचिव परम गम्भीर बुद्धि सागर मति धीरा।
जानी रानि कुलाचि गई तासे उर पीरा॥
आये द्वारहि बहुरि नयन जोरे नहिं काहू।
वाहो पग बढ़ि चले जहाँ रावन ससि राहू॥
देखि सुमन्तहि राम तब करि प्रनाम आदर दये।
कह बनादास दसरथ सदृस सूत बचन बोलत भये॥७४॥

संक्षेपति महँ कथा सकल रघुपतिहि सुनाये।
सीघ्र उठे रघुनाथ सचिव संग सहज सिधाये॥
देखि सुमन्त उदास राम अन अवसर जाही।
काह कीन करतार लोग जहँ तहँ पछिताही॥
जाय दसा देखे नृपति सुठि स्रीहत भूतल पर्यो।
कह बनादास प्रभु घोर धुर जात नहीं धीरज धर्यो॥७५॥

करि प्रनाम पितु मातु बहुरि बोले रघुराई।
जननी पितु दुख हेत बेगि किन कहै बुझाई॥
करौं सो सब उपाय जाहि ते होय निवारन।
भरत मातु तब कही तात जानौ यह कारन॥
देन कहे बरदान दुइ जो रुचि सो माँगे सही।
कह बनादास भूतल परे हाँ नाही नहि कछु कही॥७६॥

तुम पर अधिक सनेह यही सब दुख कर मूला।
चहो निवारन कोन मिटै सहजे सब सूला॥

नृपहि चौथपन गये तुमहिं ऐसो सुत पाये।
तात जतन सो करौ जाहि करि धरम न जाये॥
भरत राज कानन तुम्हैं सुनतै बिन मारे मरे।
कह बनादास हा राम कहि राम रटत भोरहि करे॥७७॥

भूप उठाये सचिव कहत रघुपति पग धारे।
चातृक जनु जल स्वाति लहै तब नैन उघारे॥
बोले रघुकुल केतु बात लघु लगि दुखपावा।
तात न प्रथमै मोहिं कोऊ करि चेत जनावा॥
बड़भागी सोइ तनय जग मातु पिता जेहि सुख लहै।
कह बनादास पालै वचन स्रुति पुरान मुनि सब कहै॥७८॥

मोको महा अनन्द मिलन मुनि जन बहु भाँती।
भरत बन्धु सुचि राज लहै अति सीतल छाती॥
पुनि सम्मत पितु मातु भल बड़ि भाग हमारे।
जो न करौं बन गौन चढ़े सिर दूषन भारे॥
समय पाय अस चूकई तासो जगत न अधम कोउ।
कह बनादास अनुकूल बिधि·ममहित मोदक हाथ दोउ॥७९॥

नहिं बिषाद कर समय नेक अब सोच न कीजै।
ह्वै कै अवसि प्रसन्न तात आज्ञा मोहिं दीजै॥
लै जननी से हुकुम बनहिं चलिहौ पद लागा।
चरन बंदि रघुबीर उठे तुरतहिं अनुरागी॥
नगर फैलिगै बात यह धनु बिया सर वृद्धि जिमि।
कह बनादास यक ते सहस लाखन बढ़त करोरि तिमि॥८०॥

जहाँ तहाँ सिर धुनै लोग बहुबिधि बिलखाही।
कहहिं परस्पर बात कालगति जानि न जाही॥
काह रह्यो का भयो पापिनि का उर ठयऊ।
दिये बिस्व परिताप तिलक होतै बन दयऊ॥
एक कहैं खोये नृपति तिय प्रतीति कीन्हे वृथा।
कह बनादास एकै कहैं रबिकुल की करनी जथा॥८१॥

रघु दिलीप हरिचन्द्र कहैं सिवि सगर कहानी।
भये भगीरथ आदि सदा कुल धर्म निसानी॥

कैसी करी दधीचि महा धार्म्मिक भे भूपा।
त्यागे तन धन धाम राज लहे सुजस अनूपा॥
एक कहैं सम्मत भरत सुनत एक सिर धुनि रहै।
कह बनादास कर दै स्रवन त्राहि त्राहि पुनि पुनि कहै॥८२॥

बिगरि जाय परलोक भरत को दोष बिचारे।
बडे धीर धर्मज्ञ राम जेहि प्रान पियारे॥
काल कर्म अति प्रबल कोऊ कर काहु न खोरी।
विधिगति अति बलवान कहै आवत मति मोरी॥
कौसल्या सुठि साधु मति सवति रीति कबहुँ न सुनी।
कह बनादास एकै कहैं यह पापिनि का उर गुनी॥८३॥

केते गारी देहि अधिक निन्दा उच्चारैं।
भई वेनु बन आगि बार बारैं धिक्कारैं॥
जरिहै जन्म प्रयंत किये करनी कैकेई।
ह्वै है नहि कछु सिद्धि मृषा जग अपजस लेई॥
तृन सम नृपतन त्यागि है कहत जहाँ तहँ लोग सब।
कह बनादास सीता लषन कैसे रहि हैं भवन अब॥८४॥

राम करहिं बनबास भरत भोगैं पुर राजू।
कहै कवन अस अधम परै कोरा मुख आजू॥
रघुवर बिरह विसेष जरहि प्रतिदिन पुरवासी।
बना आय असजोग जगत को सुख पै नासी॥
सुख के सुख रघुवंस मनि ताहि पापिनी दुख दिये।
कह बनादास केकै सुता विकल सकल भूतल किये॥८५॥

दुखित सकल नरनारि बनै विधि बात बिगारे।
गुंजाकर गहि लिये केकयी पारस डारे॥
प्रथम देखावा अमी दिये पीछे विष भारी।
विधिगति अति बलवान कहैं यक एक बिचारी॥
पुरजन बिलपत जहाँ तहँ जननिहि बन्दे जायकै।
कह बनादास रघुवर निरखि मोद मनहुँ निधि पायकै॥८६॥

तात करहु अस्नान खाहु जो कछु मन भावै।
होत अवसि अति काल बाल जननी बलि जावै॥

जायहु पिता समेत चित्त चाहहि तब मैया।
बार बार इमि कहे तनिक रुचि राखहु मैया॥
कबहि लगन आनँद मयी सिंहासन आसन निरखि।
कह बनादास फल सुकृत लहि सकल लोग हरषहिं परखि॥८७॥

पिता दीन बनराज काज जहँ सकल हमारा।
जननी देहु रजाय जात जेहि होय न बारा॥
मधुर वचन रघुबीर लगे सरसम अकुलानी।
जनु जवास पर आय पर्‌यो पावस को पानी॥
थरथर कम्पित गात सब परस्यो कज तुपार जिमि।
कह बनादास अति धीर धरि कौसल्या कह बचन इमि॥८८॥

राज देन के हेत सुभग दिन मंगल साजा।
तात कवन अपराध जानि बन भापे राजा॥
किमि यह भयो अनर्थ अर्थ सब भापहु ताता।
होत न धीरज हृदय छनँ छन कम्पित गाता॥
तव सुमन्त सुत सब कहे संछेपै महँ जानिकरि।
कह बनादास जननी कहे अति धीरज उर आनि करि॥८६॥

बिधि बुध सुठि बिपरीति काल की गति कठिनाई।
दीजै काको दोष बात यहि बिधि बनि आई॥
अन्त नृपहि बनवास अनौसर करि दुखभारी।
काह कीन करतार बिसारेहु जनि महतारी॥
भरत भूप पुर जन प्रजा तुम बिन अति दुख पाई है।
कह बनादास कैसी करौ बनत न एक उपाय है॥९०॥

समाचार अनुमानि जानकी तब उठि आई।
बन्दि सासु पद बैठि हृदय सोचति अधिकाई॥
सीय दसा अनुमानि कौसला पुनि अकुलानी।
सीता सुठि सुकुमारि बहुरि बोली मृदु बानी॥
संग कौन चाहत गवन तव रजाय रघुपति कवनि।
कह बनादास मैं जानकिहि देहु बिचारि कै सिखतवनि॥९१॥

बोले रघुकुल भानु सुनौ भामिनि यह बाता।
है अवसर उतपात वृद्ध मेरे पितु माता॥

रह्यौ अवध सहि कठिन करौ इनकी सेवकाई।
पति आज्ञा अनुकूल धर्म याते न बड़ाई॥
स्रुति सम्मत परलोक सुख जगत सुजस बिस्तार जू।
कह बनादास तुम रह्यौ गृह मानो मतो हमार जू॥९२॥

कह सीता अकुलाय प्रानपति भल सिख दीन्हा।
मैं हूँ उर अनुमान अमित भाँतिन सों कीन्हा॥
स्रुति सम्मत अरु लोक तियहि एकै पतिदेवा।
याते अपरन धर्म करै स्वामी की सेवा॥
पिय वियोग समदुख न कोउ सुरपुर नरक समान है।
कह बनादास स्वामी सबल चहै कहौ सो ज्ञान है॥९३॥

अतिही तन सुकुमारि विपति कानन की न्यारी।
तुमहि जाउँ लै संग जगत में अपजस भारी॥
कुस कंटक नद नार गहन वन कठिन पहारा।
व्याघ्र सिंह वृक भालु रूप इनको विकरारा॥
घोर सब्द गर्जहिं विपुल लर्जहिं सूर जे धीर वर।
कह बनादास निसिचर प्रवल भषहिं जे आमिष मनुज कर॥९४॥

लागहि पानी अवसि विषम हिमघाम बयारी।
मही पगन में त्रान भयानक मारग भारी॥
असन कन्द फल मूल सोऊ अवसर संजोगा।
प्रतिदिन प्रापति नाहि विविध बिधि जोग वियोगा॥
वन के हेत किरातिनी रची विरंचि बिचारिकै।
कह बनादास कानन विपति बीर न सकहिं सँभारिकै॥९५॥

नाथ भये तपजोग मोहिं सुकुमारि विचारी।
यऊ वचन उर सहे विपति याते का भारी॥
प्रभु विहाय तन रहै परै जो अस पहिचानी।
राखौ मो कहँ भवन नही यामें कछु हानी॥
भानु विना दिन जाहि विधि प्रान विना तन जानिये।
कह बनादास जल विन नदी पति विहीन तिय मानिये॥९६॥

धरनि धाम परिवार प्रजा जहँ लगि जगनाता।
पिय विहाय तिय हेत सकल तरनिहु ते ताता॥

जवन कठिनता कहे तवन सब राउर जोगा।
हमहिं उचित बसि अवध करी नाना बिधि भोगा॥
जाना बिधि बिपरीति गति खड खड उर नहिं भयो।
कह बनादास सुठि दुसह दुख सहि है हिय नित नित नयो॥९७॥

हरि हौं स्रम मग केर चापि पद जलज समाना।
बैठि डोलैहौं वायु कवन याते सुख आना॥
देखि देखि बिधु बदन पलक सम दिवस सिरैहै।
प्रभु बिन पल जो एक कल्प कोटिन सम जैहै॥
वृक बराह करि रीछ अहि ब्याघ्र सिंह कोउ का करै।
कह बनादास प्रभु सग मे कालहु को मन नहिं डरै॥९८॥

कन्द मूल फल असन मोहि सो सुधा समाना।
प्रभु बिहाय बिष अमी भाँति कोटिन ते जाना॥
नाथ साथ साथरी सदापै फेन सेनी का।
आपु रहित सुख सेज कोटि पावक सोधो का॥
अन्तरजामी ते बहुत कहब जानिये हानि अति।
कह बनादास तन रहि सकै देखिय हृदय बिचारिगति॥९९॥

चलहु हरपि हिय बनहि बेगि जननिहि सिरनाई।
पाये सुभग असीस मातु लिय हृदय लगाई॥
जनि बिसरायहु तात सकल घटबास तुम्हारा।
मानि मातु को नात दरस पावों यक बारा॥
पुनि आयो निज भवन प्रभु हँकराये सेवक सबै।
कह बनादास जे निज सखा सूर बीर लावो अबै॥१००॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम तृतीयोऽध्याय ॥३॥

छप्पय

गऊ जहाँ तक रही हुकुम दीन्हें सब आवै।
ब्राह्मन भिक्षुक भाट बुलाये जो जहँ पावै॥
जाचक नानाभाँति जहाँ तक सबहँ कराये।
स्यन्दन औ गजबाजि सकल रघुबीर मँगाये॥
मनिमानिक कचन रजत भूषन वसन अपारगति।
कह बनादास माँगे सबै को कबि बरनै अगमगति॥१॥

सीतहि आज्ञा दिये बसन तन लै बिलगाहू।
आजु सर्व को दान जोग राखब नहिं काहू॥
धनुष बान असि चर्म तुरै रथ नाग अनेका।
सूरबीर निज सखन दिये चाही जस जेका॥
मनिमानिक कंचन रतन विपुल जाचक को दई।
कह बनादास कोटिन गऊ अन्न अमित ब्राह्मन लई॥२॥

कुंडल कंकन मुकुट घने मोतिन के माला।
भूषन बसन अनेक दिये बहुरंग दुसाला॥
कर मुद्रिका अनूप जटित मनिगन बहु तेरे।
दीन्हें भाँति अनेक कनक केयूर घनेरे॥
निज सेवकन बुलाय के अमित सम्पदा प्रभु दई।
कह बनादास बरनै कवन कवि कोबिद जैसी भई॥३॥

पाटम्बर किंजलक कलित कम्बल बहुजाती।
दीन्हें महिषी वृषभ बरन बहु अगनित भाँती॥
जो जेहि लायक होय तवन सो ता कहँ दीना।
दानी रघुपति आज कहैं सब लोग प्रबीना॥
जुत्थ जुत्थ ब्राह्मन कहै जाचक जहँ तहँ अनगने।
कह बनादास रघुबीर जै आजु सबै बानक बने॥४॥

जो सम्पति सिय पास सकल ब्राह्मन को दीना।
नानामनि औ कनक रजत को कहै प्रवीना॥
भूषन बसन बिचित्र जवन निज अंगन केरे।
जो जेहि लायक दिये सखिन सेवकनि घनेरे॥
द्विज भामिनिन बुलाय कै सकल सम्पदा सिय दई।
कह बनादास सिधि बिबिध विधि जासु अनुचरी नित नई॥५॥

समाचार सुनि लषन सद्य आये प्रभु पासा।
मानहुँ तुहिन सरोज पर्यो सुठि वदन उदासा॥
बंदे पंकज चरन सरन रघुपति सबंगा।
बार बार उर डरत मनोरथ होय न भंगा॥
जहँ लगि सील सनेह जग देह गेह तृन सम तजे।
कह बनादास मन बचन क्रम राम संग सब विधि सजे॥६॥

दसा देखि रघुबीर तबै बोले मृदुबानी।
तात कालगति कठिन कहत स्रुति मुनि बर ज्ञानी ॥
भूप वृद्ध मम बिरह भरतजुत वधु विदेसा।
प्रजा मातु परिवार पर्‌यो सुठि सबहिं कलेसा ॥
तुम सब के अवलम्ब यक अन अवसर धीरज धरौ।
कह बनादास हमरे मते सब सँभार सव कौं करौ ॥७॥

प्रजाराज जेहि दुखी पाप याते नहिं दूजा।
करम बचन मन चही मातु पितु गुरुपद पूजा ॥
सब पुरान औ बेद सास्त्र कर सम्मत येहा।
सब कर करहु सभार अवधि भरि बसिकै गेहा ॥
तुम्हहिं सग लै चलौं वन ह्वै है सबै अनाथ अति।
कह बनादास यहि समय महँ चाही दृढता तात मति ॥८॥

सहमि गये सुठि हृदय कम्प तन आव न वानी।
पुनि बोले धरि धीर काल अवसर अनुमानी ॥
नाथ दीन सिखनीक ठीक उर महूँ बिचारा।
मोरे धरम न नीति एक प्रभु चरन अधारा ॥
पिता मातु परिवार गुरु सुर साहेब यक तव चरन।
कह बनादास मन बचन क्रम सोवत जागत प्रभु सरन ॥९॥

कीरति बिजय बिभूति भुक्ति नहिं मुक्ति कि आसा।
अन्तरजामी नाथ सदा प्रभु प्रेम पियासा ॥
डरौं न बेद बिरुद्ध हँसै जग सो भय नाही।
मातु पिता गुरु कहा भान नहिं मम उर माही ॥
स्वघा नेह प्रतिपाल किय वारेहि से रघुबस मनि।
कह बनादास अब यहि समय त्यागे नाथ न सकत वनि ॥१०॥

प्रभु सेवा को भार सुमन से मोहिं सब काला।
सोई जीवन प्रान बिचारे अंकित भाला ॥
धर्म नेति विधि बेद मातु पितु गुरु सेवकाई।
राजकाज मर्याद जगत की मान बडाई ॥
मंदिर मेरु समान मोहिं चरन सपथ साँची कहै।
कह बनादास प्रभु बिन भवन प्रान कवनि बिधि से रहै ॥११॥

भूप भयो पन चौथ बाम विधि मति हरि लीन्हा।
ह्वै कै नारि अधीन आपु को जिन बन दीन्हा ॥

नति आरत स्वारथी होय जो परबस कोई।
कामी क्रोधी अधी अवसि अयसी जो होई॥
बातुल अरु रोगी रिनी इनको वचन प्रमान नहि।
कह बनादास स्तुति साधु मत भाँति अनेकन नीति कहि॥१२॥

नृपति कहे बन गवन आपु कबहुँ नहि कीजै।
सिंहासन पर बैठि मोहि प्रभु आज्ञा दीजै॥
जो बदले महिपाल अवसि सेवै बंदिखाना।
भरत कछू उर गुनै हतो सानुज मैदाना॥
सुभट सूर सेवक सचिव जो आज्ञा नहि अनुसरै।
कह बनादास अवनिप अमित सो सचहि मम कर मरै॥१३॥

कीजै राज स्वतंत्र मंत्र जो यह मन भावै।
सकलौ करौ सम्हार कृपानिधि सुठि पति लावै॥
राजनीति इमि कहै राज कीन्हे ते होई।
नृपति रीति अति गूढ़ काह प्रभु लेहै गोई॥
निज रुचि होय तौ बन चलौ नाथ न त्यागौ मोहि छिन।
कह बनादास जीवन कहाँ जिये मीन बरु बारि बिन॥१४॥

जाने निस्चय राम लपन फिरि मिलहि न राखे।
लावहु आज्ञा मातु चलहु बन प्रभु अस भाखे।
महामोद उर भयो गयो सारो संदेहा।
बिदा होन के हेत गये निज जननी गेहा॥
हृदय ससंकित बंदि पद किये विनय लक्ष्मन जबै।
कह बनादास सुन ते बिकल भई सुमित्रा सुठि तबै॥१५॥

कीन्हे पापिन काह अहोबिधि गति बलवाना।
अन अवसर दुख दीन कीन सब जग हैराना॥
को त्रिभुवन अस अहै जाहि प्रिय राम न सीता।
धरि धीरज उर कठिन कहे पुनि वचन बिनीता॥
तात खुली तव भागि अति मोहि जुत जस भाजन भयो।
कह बनादास जगजन्म को लाभ सकल भाँतिहि लयो॥१६॥

धन्य जन्म जगतालु लगे जेहि राम पियारे।
रहित राम पद प्रेम जुबा तन जननि कुठारे॥

पुत्रवती सोइ मातु सुवन रघुपति जन होई।
न तरु काटि बलि देय बिमुख हरि सरवसु खोई ॥
धन्य देस महि ग्राम गृह जहँ उपजै भगवत भगत।
कह बनादास कुल धन्य सो देव प्रसंसत हित सहित ॥१७॥

जो हरि को जनहोय ताहि चहुँ बेद सराहै।
सारद सेस गनेस भागि तेहि लहत न थाहै ॥
करै पुरान बखान सास्त्र परसंसय ताही।
कबि कोबिद जस भनै कवन समता जग माहीं ॥
तिहुँ पुर मस्तक तिलक सो मन क्रम बचन जो राम को।
कह बनादास भगवत न जन सुर तन कौने काम को ॥१८॥

जहाँ राम सुख धाम तहाँ सत अवध समाना।
बैदेही तुव मातु जनक रघुपति सुठि जाना ॥
करम बचन छल छोड़ि किहेउ निसिदिन सेवकाई।
काम क्रोध मद लोभ दम्भ अरु कपट बिहाई ॥
राग रोष ईर्षा तजेहु आस न कहुँ उर आवई।
कह बनादास बिन बासना सो जन राम कहावई ॥१९॥

मद मत्सर अभिमान तजेहु मन बच अरु काया।
साँची प्रीति लगाइ भक्ति सुत किहेउ अमाया ॥
राम सिया सुख लहैं ताहि अति निज सुख मानेहु।
जो तन मन दुख परै सुखहु को सुठि सुख जानेहु ॥
नीचा अनुसन्धान करिय लषन रुख निरखेहु सदा।
कह बनादास आसिष दई भक्ति हेतु बहु बिधि बदा॥२०॥

गुरु मामिनि द्विज नारि विपुल जे ज्ञाति सयानी।
जुत्थ जुत्थ मिलि आय सबन उपदेसो रानी ॥
कहहु राम अपराध काह कौसला बिगारा।
राज देत बन दीन बज्र सकलौ पुर डारा ॥
रघुपति प्रान समान तव सवति द्रोह कोउ नहिं सुनी।
कह बनादास यहि समय महँ काहे ऐसी बिधि गुनी ॥२१॥

राम भरत कहँ देउ राम नाहीं बन जोगा।
देखहु हृदय बिचारि कहहिं का तुम कहँ लोगा ॥

पुनि दूसर वर लेहु भूपसन जो मनमानी।
राम जान वन तजो करम अरुमानस वानी॥
सवन सिखापन दीन तेहि जा करि कै सब विधि हिते।
कह वनादास सुठि क्रोधवस जनु कालो नागिनि चिते॥२२॥

तुम्है कीन्ह को पंच सवै निज निज गृह जाहू।
विन बूझे उपदेस करत नहिं लाज लजाहू॥
हँसै सकल जग हमैं तुम्है सों काह परी है।
तुम परसंसा जोग भाल विधि भाग हरी है॥
विषम दृष्टि स्वासा उरध मानहुँ मृगी निहारई।
कह वनादास वाघिनि जथा क्रोध न नेक सँभारई॥२३॥

राम गवन वन करत नृपति तृन से तन त्यगि हैं।
लक्ष्मन सीता दोऊ संग रघुपति के लगि हैं॥
भरत हेत लिये राज खाक तप करि करि ह्वै हैं।
यह सारी विपरीति कैकयी आँखिन ज्वै हैं॥
अजस पेटारी दुख उदधि रहिहै जन्म प्रयंत भरि।
कह. वनादास नहिं कछु सरिहि गवनी गृह कहि तोप करि॥२४॥

गुरु मंथरा गूढ़ नेह अविचल उर दीन्हा।
सो कैसे चलि सकै परिस्रम वहुविधि कीन्हा॥
जैसेउ कठा काठ कुपाठ न घूम न जोगा।
वसी कृपनता प्रथम उदारन फिरि सो लोगा॥
जिमि स्वभाव मूरुख प्रवल सत्य संघ संकल्प जिमि।
कह वनादास केकयो उर कहा न वेधै अल्प तिमि॥२५॥

जो पय रोगी चहै वैद सो अवसि वतावै।
भई लषन गति सोय नही आनन्द समावै॥
वन्दे जननी चरन सुभग सुठि आसिष पाई।
मानहुँ मृग वन केर चल्यो पग वंध तुराई॥
आये प्रभु जहँ जानकी वन्दे पंकज पायँ पुनि।
कह वनादास लछमन कहे कथा राम आनन्द मुनि॥२६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रवोधकरामायणे
विपनिखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

छप्पय

सीता लषन समेत तुरित रघुनाथ सिघाये।
देखि बिकल पुरलोग बेगि भूपति पहँ आये।।
बन्दे दसरथ चरन सचिव तब नृपहिं जगावा।
राम जानकी लषन सहित लखि अति दुख पावा।।
अवसि कठिन उर धीर घरि नृपति बचन बोलत भये।
कह बनादास उपमा कहाँ प्रेम बिरह जानहुँ जये।२७।।

जनकसुता अवलोकि भयो अतिसय दुखभारी।
काह करत करतार बोध नहिं मिलत बिचारी।।
पुत्री सुठि सुकुमारि कठिन मग कानन केरा।
चरनकमल तब देखि हृदै नहिं लेति दरेरा।।
मानिकहा मम रहहु गृह सासु ससुर परिवार सब।
कह बनादास पुरजन प्रजा तुम सब कहँ अवलम्ब अब।।२८।।

पितु गृह कबहूँ रहेउ कबहुँ पुनि रह ससुरारी।
बार बार नृप कहैं यहै जसि रुचि अनुसारी।।
चित्र केर कपि देखि डरति नहिं धीरज आवै।
सिंहब्याघ्र वृक भालु निसाचर भय उपजावै।।
महाबीर देखत तजै धरि सूरता समय तेहि।
कह बनादास तुम जात बन कोउ न सक्त कोउ भाँति कहि।।२९।।

सिया न उत्तर देति अपर जे नारि सयानी।
गुरु त्रिय बृद्ध जठेरि सकल बोली मृदु बानी।।
तुमहिं कवन बन दीन्ह रहहु घर अवसर देखी।
सासु ससुर जो कहै धरौ सो हृदय बिसेखी।।
कवन अग बन जोग तव काह कहहिं मग लोग सब।
कह बनादास अति अवसि करि मानहुँ कहा हमार अब।।३०।।

बनहित रचे बिरंचि भाँति बहुजाति किराती।
कै मुनि तिय बन जोग भोग तजि तप अति राती।।
सियहि न भावत कछु चरन रघुपति चित राता।
लागत बिष सम ताहि कहत सब कोमल बाता।।
अतिही मन कादर भयो समुझाये मानै नहीं।
बनादास कह प्रभु संग तज बसब दुखतें अधिकी यही।।३१।।

अन्तरजामी राम कहहिं पुनि स्तुति औ संता।
बचन बुद्धि मन थकत बलो अति गति भगवंता॥
कोउ काल कोउ कर्म कोऊ करता करि भाखै।
कोउ सांख्य कोउ न्याय कोऊ मुनि जक्तहिं नाखै॥
कर्म करै या और कोउ भाग और के सीस है।
कह बनादास दसरथ कहे अनहोनी गति ईस है॥३२॥

देखि राम मुखचन्द्र बहुरि लछमन बैदेही।
मुरछि मही तल पर्यो रही तन सुधि नहिं तेही॥
बोले राम सुजान तात बिनती सुनि लीजै।
दीजै हर्षि रजाय आपु बिस्मय कत कीजै॥
अहो भागि मम अमित अति पितु आज्ञा सुखमूल है।
कह बनादास बन मुनि मिलन जननी मति अनुकूल है॥३३॥

कैकेयी तब तमकि बसन मुनि भाजन आनी।
धरि आगे रघुबीर बचन पुनि बोली रानी॥
धरम धुरन्धर तनय राम सब कोउ जगजाना।
चौथेपन में तात चहत पितु सुजस नसाना॥
जाय लोक परलोक दोउ सहित प्रान याही छनै।
कह बनादास कबहुँ न कहै नृपति जान तुम कहँ बनै॥३४॥

भूषन बसन उतारि राम मुनि बेष बनाये।
लषन सहित तेहि समय मनहुँ अतिसय छबि छाये॥
पितु कहँ कीन्ह प्रनाम बिरह बस बोलि न आवा।
मातहि माय नवाय उचित सम सबहिं मनावा॥
अति प्रसन्न रघुबंसमनि बेगि चले सुर भयहरन।
कह बनादास महि धेनु द्विज सन्त सदा जाके सरन॥३५॥

राज मनहुँ रजु सबल कुरंग सम रघुकुल केतू।
बरबस चल्यो तुराय भार भुवहरने हेतू॥
कानन दिसि कुरछालि चलत जिमि मोदन थोरा।
ताही बिधि किये गवन अवधपुर चहुँदिसि सोरा॥
लषन सिया गति अति अकथ पाय संग जनु परम निधि।
कह बनादास दारिद महा सुख समात नहिं ताहि बिधि॥३६॥

प्रजा बिकल यहि भाँति मनहुँ मनि बूड जहाजू।
जित तित धावहिं बिकल लखहिं सब सोक समाजू॥
जीवन को धिक्कार गये बन रघुकुल केतू।
कहहिं एकसन एक रहब गृह अब केहि हेतू॥
प्रेत लखहिं परिवार प्रिय सम्पति बिपति समान सब।
कह बनादास रघुबीर बिन कैसे रहि हैं प्रान अब॥३७॥

भूपति करवँट लीन जबहिं मूर्च्छा ते जागे।
तुरित बुलाय सुमन्त कहत असबस अनुरागे॥
राम जानकी लषन तात रथ पर लै जाहू।
सुठि कोमल सुकुमार होत हिय दारुन दाहू॥
गग नहाय देखाय बन बसि दिन दस पुनि इत फिर्‌यौ।
कह बनादास हा राम कहि फिरि मूर्च्छित भूतल पर्‌यौ॥३८॥

माथ नवाय सुमन्त साजि रथ सुन्दर घोरे।
चोखे चचल चपल दाम जिनके नहिं थोरे॥
लै रथ चल्यो तुरन्त मिले रघुपति गुरु द्वारे।
भाषे भूपर जाय मुनिहुँ रुख राखन हारे॥
जथाजोग परितोष करि सबही को गुरु पगधरे।
कह बनादास रघुबसमनि अवध बन्दिगवनहि किये॥३९॥

पुरजन सचिव सयान सूर सेनप सब आये।
भूपति बेगि उठाय भवन कौसल्यहि लाये॥
निज निज मति अनुसार सबै नृप को समुझावत।
मानहुँ ज्वर को असन सुनत एकौ नहिं भावत॥
दिना चारि की लालसा अवधि सूत आवन रह्यो।
कह बनादास ताही लिये नृपति प्रान राखत चह्यो॥४०॥

आये बहुरि बसिष्ठ समय लखि दशरथ गेहा।
बामदेव मति धीर भूप ऊपर सुठि नेहा॥
जाने गुरु आगमन कीन नृप दड प्रनामा।
अमी रहित जनु चन्द स्वास ऊरध हा रामा॥
मनि बिन फनि कर हीन करि मीन बिलग जल ते जथा।
कह बनादास अवकाति लघु दसरथ नृप जीवन तथा॥४१॥

बैठि समय अनुकूल सुभग आसन मुनि दोऊ।
ज्ञान सिंधु सुठि अवधि जाहि जानत सब कोऊ ।।
बोलि वचन विनीत साधु सम्मत स्रुति सारा।
अभ्यंतर अनुमान होय कछु नृपहि अधारा ।।
कालकरम कर्ता प्रबल सब कोउ करत उपाय है।
कह बनादास नहिं कछु चलै होवै जसि बनि आय है ।।४२।।

भानुवंस भे भूप एक से एक उदारा।
सत्यव्रती अतिधीर समर में परम जुझारा ।।
तिहूँ पुर में गुन गाय सुजस सद ग्रन्थन गाये।
चहूँ जुग तीनिउ काल नही कवि पटतर पाये ।।
तुम नृप सब के सिरमौर वेद निरूपत नेति जेहि।
कह बनादास निजभक्ति बस पुत्र बनाये जानि तेहि ।।४३।।

राम ब्रह्म अवछिन्न भार महि टारन हेता।
धारे नर की रूप प्रगट तब भये निकेता ।।
निज कारन के हेत गये बन दूनौ भाई।
आदि सक्ति जानकी जक्त यह जिन उपजाई ।।
गो द्विज महि सुर सन्त हित चरित करहिंगे विविध विधि।
कह बनादास जेहि गाय सुनि जन उतरहिं भव अगम निधि ।।४४।।

तातें काहु न दोष सकल प्रेरक हरि जानौ।
यावत जगत प्रपंच हाथ काहू मति मानौ ।।
पवन अगिनि ससि सूर संभु विधि आज्ञाकारी।
लोकपाल जमकाल मृत्यु इन्द्रादिक झारी ।।
सर सरिता गिरि वन सपति सिप्तसिंधु सब चर अचर।
कह बनादास वर्तंत सबल मर्यादा तिल भरि न टर ।।४५।।

जग व्योहार अपार सिंधु गुन दोष नसाना।
जन्म मरन सुख दुःख हानि औ लाभ प्रमाना ।।
ऊँच नीच मध्यस्थ जानिये जोग वियोगा।
प्रिय अप्रिय विधि अविधि कर्मवस भोगत लोगा ।।
पाप पुन्य सुभ असुभ फल गुन स्वभाव परवाह अति।
कह बनादास तन धरि सहत जीव ईस की अगम गति ।।४६।।

सुत सुकृती धर्मज्ञ धीर पुनि सूर सुजाना।
राजनीति सुठि कुसल वेद विद दया निधाना ।।

जथा उचित सब किये चह्यो जो नृप तन पाई।
एक एक सत भाँति तिहूँ पुर कीरति छाई॥
सत्य धर्म निबह्यो सकल सर्बोपरि लहि राम सुख।
कह बनादास अब समय यहि मानहुँ तुम जनि कछुक दुख॥४७॥

बिद्या बुद्धि बिबेक धीर औ ज्ञान सुराई।
सब असमय के हेत मुनिन बहुकीन बडाई॥
अस्त्र सस्त्र को बाँधि सूर बड बीर कहावा।
समय किये नहि काम मनहुँ स्रम ही फल पावा॥
ताते ससय परिहरौ बार बार गुरु बहु कह्यो।
कह बनादास रघुबर बिरह अचल समाधी मन रह्यो॥४८॥

गुरु के बचन अनूप सुनत कछु सुख उर आवा।
सभरि बैठि नरनाह थाह बूडत जनु पावा॥
वामदेव तब कहे सुनहुँ दसरथ महिपाला।
नहि विपाद कर समय सोच कत करी बिसाला॥
धावन पठवो वेगि ही रिपुसूदन आवहिं भरत।
कह बनादास अवसर निरखि करि हैं सब मन अनुहरत॥४९॥

जैसे लछमन राम तथा भरतौ रिपुसूदन।
सब लायक समरत्थ धरौ सतोप आप मन॥
बीतत चौदह बरस कछू लागिहि नहि वारा।
भरत न लेहैं राज वचन मानिये हमारा॥
आवत ही रघुपति तिलक होइहि जै जै कार सब।
कह बनादास यह समुझि उर आप सोच परिहरिय अब॥५०॥

थोरे दिन मे राम काम अपना सब करि हैं।
सुर मुनि सत उबारि भार भूतल को हरिहैं॥
बहुरि अवध को राज बधु सब आज्ञाकारी।
तिहुँपुर सुजस अनूप आपु धीरज उर धारी॥
अन अवसर रबि अस्त ज्यो सब जग को अति ही विपति।
कह बनादास पुरजन प्रजा परिवारहु जीवन नृपति॥५१॥

यद्यपि ईस्वर राम काम पूरन भगवाना।
पुत्रनेह चित चुम्यो चलत नहि एको ज्ञाना।

सूरति सील स्वभाव चलनि अवलोकनि बोला।
गुन आचरन अनूप मीन मन जल अन मोला॥
बिछुरत प्रीतम नीर के धोखेहु जिय तन एक छन।
कह बनादास यह कठिनता प्रान रहैं तन राम बन॥५२॥

मनि बिछुरत फनि मरै लोक बेदहु परमाना।
चितवत चन्द्र चकोर दृष्टि दिसि करत न आना॥
चातक जीवन स्वाति बुंद ते लागी टेका।
गंग जमुन जल आदि दृष्टि में नाहिं अनेका॥
यह जड़ जीवन की दसा प्रीतिरीति कस पीन है।
कह बनादास दसरथ कहे प्रीति देस सुठि झीन है॥५३॥

रहै न तन छन भंग एक दिन मरना सांचा।
देह धरे की दसा काल सिर ऊपर नाचा॥
प्रीति कि पर मिति जाय जिय बसत नरक समाना।
कोटि पुरंदर भोग रोग कोटिन सम जाना॥
मीन जिये वरु वारि बिन फनिहू मनि बिन किन रहै।
कह बनादास दसरथ जिये राम रहित इमि को कहै॥५४॥

हा हा राम सुजान प्रान अबहीं तन माहीं।
छन छन लहत कलंक काह करतब बिधि आहीं॥
जाना निस्चय मुनिन प्रान तृन सम परिहरि हैं।
रहिगै अवधि सुमंत नेक फिरि धीर न धरि हैं॥
समय जोग परितोष करि तबही गुरु कीन्हे गवन।
कह बनादास दसरथ नृपति बिलपत कौसल्या भवन॥५५॥

भोजन पान बिहीन नींद निसि भूपति त्यागा।
ऊर्ध्व स्वास सह बिरह राम रट अति अनुरागा॥
धरनि धाम धन तिया तनय तन तृन सम लेखे।
तिहुँ पुर में अस्नेह भूलि दसरथ नहिं देखे॥
रघुपति रूप समाधि सुठि बिलग न चित पल एक है।
कह .बनादास तिहुँ काल में राखे अनुपम टेक है॥५६॥

इहाँ सचिव सिय लषन राम तमसा तट बासा।
चढ़ि स्यंदन पुनि चले भानु को होत प्रकासा॥

रहे गोमती तीर सई बसि चौथे बारा।
आये गगा निकट धवल अवलोके धारा॥
बिबिध नदी महिमा कहत करि मज्जन जलपान किय।
कह बनादास रघुबसमनि बार बार आनन्द हिय॥५७॥

सवैया

पाय हवाल चलो हरषाय गुहा मिलने अति ही अनुरागा।
रामहि देखि पर्‌यो धरनी तल दड समान सराहत भागा॥
बूझत छेम कृपालु निषादहि देव सिहात कहै बरबागा।
दासबना यहि ते जग धन्य को अगनित साधन को फल लागा॥५८॥

घनाक्षरी

देखि पद कज अब कुसल कृपालु भई भयो जन लेखे प्रभु कृपा परसादजू।
आपु पद बिमुख सुरेसहू समाज नर कहो तौ अति नीच पोच पाँवर निषादजू॥
बन्दे सिय लषन सचिव पद अनुरागि कहे धारी पायँ करि जनहि अवादजू।
बनादास चौदह बरष पुरजावो नाहि मोहि पितु आयसु सुनत भो बिषादजू॥५९॥

गगतट तरु तर आसन बिचारि भले माँगि कै रजाय बेगि सदन सिधाये हैं।
नानाभाँति मूल फल अकुर मँगाये भूरि दूध दधि धृत जुत भूसुर बनाये हैं॥
खासी कुस साथरी सकल साज साजि लायो मुठि चोपि चित लाय आसन लगायेजू।
बनादास कोमल ललित पात वृच्छन के अति अनुरागि चुनि चुनि कै बिछायेजू॥६०॥

सियाबधु सचिव सहित फलहार करि रघुनाथ आसन पै किये बिसराम है।
बोले बेगि पाहरू निषाद राज सूरबीर करि कै सजग सब राखे ठाम ठाम है॥
कसिकै निषग धनु बान लै तयार भयो बनादास जागन के हेत चारि याम है।
बैठो पास लषन फरक रघुनाथ जू से भूमि सैन देखि कहे बिधिगति बाम है॥६१॥

मनिमयी खचित सुरेसहू से ऊँचो भौन अतर अरगजा अमोल सुख साज है।
हेम परयक पयफेन से सुभग सेज तनो चारु चाँदनी कहत कवि लाज है॥
जाहि देखि रति कामहू की ललचात चित ललित उसीसी महामोद को समाज है।
बनादास तापै रघुनाथ सिया सैन करें महितल साथरी पै सोये सोई आज है।।६२॥

केकयी कुटिल सुख समय दुखदानि भई ऐसी मति ठई कियो जैसन न कोई है।
कालहू करम बिधिहू कि गति बलवान कहैं मतिवान देखे आँखिन से सोई है॥
औधराज सुख सोचि इन्द्रहू सहमि जात धनद लजात कवि उपमा न जोई है।
ताके प्रियप्रानहू से रामसोय सोये भूमि चक्रवर्ती सुत दसरत्थ के न गोई है॥६३॥

बिरह बिषादवस अवसि निषाद भयो बचन न आवै मुख अक्षि आँसूपात जू।
वार बार दृग देखि हृदय न विदरि जात कुलिस निदरि जात कैसी भई वात जू ।।
बिधि से न चलै बस उर न प्रबोध होत होतो दुख दानि आनि देते करि घातजू।
बनादास स्रुति संत सम्मत बिचारि उर लषन कहत सोच त्याग सुनो तातजू ।।६४।।

राम ब्रह्म बिरुज बिलच्छन सकल सुरपच्छपात रहित कहत मत साधुजू ।
आदि मध्य अवसान जाकर न जानै कोई कहैं स्रुति नेति अति अगम अगाघुजू ।।
अचल अखंड परिपूरन सरवदेस चेतन अमल जोगी जन अवराधु जू।
बनादास एकरस तीनि काल में समान जाके पहिचानते कटत भवबाधुजू ।।६५।।

अज अवच्छिन्न पुरुषोत्तम परम धाम निराधार निर्विकल्प निह प्रपंच घन है।
सतचित आनंद निरीह निस्संक नित्य जीवहू के जीव परे बुद्धि चित्त मन है ।।
सूक्षम अस्थूल गति कारन सरूप जासु बनादास बदै कोई नभ के गगन है।
जाके हेत साधन बिहित बेद कोटि कोटि कोटिन के मध्य कोऊ एक भो मगन है ।।६६।।

महि अप तेज औ गगन वायु थूल देह इन्द्री दस पंच प्रान अन्तस करन है।
सूक्षम सरीर सोई कारन यहू ते गूढ़ बासना अमित वोही जीव को जरन है ।।
आतम सकल भिन्न विषय बिलासी भयो प्रकृति सँजोग करि जनम मरन है।
बनादास छूटि बे कि और न उपाय कोई वचन करम सिया राम की सरन है ।।६७।।

कहव सुनव अरु देखव विचारै जौन तन मन इन्द्री भोग गुन माया रूप है।
विधि औ निषेध रागद्वेष अपमान मान हानि लाभ भिन्न एक आतमा अनूप है ।।
जगत प्रवाह माहि परे बुद्धि मन्द भई अन्तर की खोज गई बाह्य दृष्टि सूप है।
बनादास सकल प्रपंच मोहमूल जानो याते प्रतिकूल लहै सहज सरूप है ।।६८।।

अमन अप्रान तत्त्व रहित सरीर राम कोटि काम सुन्दर जगत अभिराम है।
आनंद को सिन्धुजाके सीकर ते लोक तीनि जोगन बियोग अति दूरि ताते स्याम है ।।
बरन अकार ते रहित तीनि कालहू में सगुन सरूप सोई सुठि सुखधाम है।
बनादास इन के सनेह ते रहित जौन घरे तन नाहक सो भले विधि बाम है ।।६९।।

ताहि दुख लेस न विचारत सनेहवस भले सियाराम रत होहु बसुयामजू।
जगतीनि काल में न सकल प्रपंच माया करि कै भजन सन्त होत निष्कामजू ।।
भवनीद सोवै जग खोवत सरूप निज विषय बिलास त्याग जागे को मुकामजू।
बनादास वचन करम मन रामगति मति न फुरत आन अति सुखधामजू ।।७०।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम पंचमोऽध्यायः ।।५।।

घनाक्षरी

जागे होत प्रात प्रभु नित्य को निबाहि वेगि माँगि बटछीर सिर जटा को बनाये जू ।
अनुज सहित पुरलोग बिलखात देखि तबहिं सुमत जल लोचन मे छायेजू ॥
बोले रघुनाथ दिसि अवसि निहोरा करि नृप को मरन भलीभाँति जानि पायेजू ।
भूप की रजाय देख राय वन लायो राम गग अन्हवाय दिन दसवसि आयेजू ॥७१॥

तात पितु तुल्य कुल तरनि प्रभाव जानौ सोचे मग धरम को तुम वार बार जू ।
अब न उचित बिन चौदह वरष बीते अवध बिलोक्ब हमार अधिकार जू ॥
पुरजन प्रजागुरु साहेब सकल मिलि किहेउ उपाय सुखी जाहि ते मु आरजू ।
बनादास भरत के आये पैसें देस कह्यो राज पद पाय जाय नेतिन बिचारजू ।७२॥

मातु पितु सेवा गुरु प्रजन को प्रतिपाल रिपुहेत दाँव को देखाये सब काल जू ।
मत्र माहिं गूढ निज धरम अरूढ सदा साधु बिप्र सइ वन राखै उर काल जू ॥
बिपय निरस ईस भजन मे तदाकार याही रीति भये जेते भारी महिपाल जू ।
बनादास नीतिहीन नृपति न काम कछु सकल प्रकार ते न रहै भागि भाल जू ॥७३॥

बार बार जोरि कर कहत सुमन्त रोय जीवन नृपति तब दरस अधीन है ।
जानौ भलीभाँति फनि मनि गति रही भूप जलते बिलग रहि सकत न मीन है ॥
फेरिये जो मैथिली तौ प्रान अवलम्ब कछु सीता उपदेसैं बहुरामजू प्रवीन है ।
बनादास कहै तन छोडि छाँह जाय कैसे जानकी बिचारै होत काहू को न कीन है ॥७४॥

कहेउ प्रनाम सासु ससुर से मोरि वदि मोहिं सुख कानन मे अवध समान है ।
सेवा समय भयो विपरीत बिधि कैसी करै बहुरि कहत भये भानुकुल भान है ॥
पिता से प्रनाम कह्यो जननी समेत तात मम हेत चिन्ता नेक उर मे न आन है ।
बनादास दिवस न जात कछु बार लागै ऐहौं दिन पूर करि जौन परमान है ॥७५॥

सचिव को सोक कोऊ कैसे कै बखान करै मानहुँ जहाज डूबि सिन्धु मँझधार है ।
स्रवन न सुनै दृष्टि लोचन की मन्द भई सग हेत सोचत अनेकन प्रकार है ॥
रघुनाथ जानकी लषन परनाम करि चले गग निकट को उतरन पार है ।
बनादास मुरछि अवनि पर्‌यों सूत सद्य सुधि बुधि रहो न सरीर की सँभार है । ७६॥

घोड़े हिहि करैं बार बार राम ओर हेरि अतिहि बिकल मानौ जल बिन मीन है ।
आये तट गग प्रभु केवट सों नाव माँगि कहत कृपालु ह्वै है मेरो नाहिं कौन है ॥
पाहन ते कठिन न सुना काठ कान कहूँ परसत पद भई नारि सो नवीन है ।
बनादास ताहि सम तरनी तरिक जाय फेरि कहाँ पैहौं दीन दाम ते बिहीन है ॥७७।

सवैया

सारद नारद सम्भु बिरंचि औ वेदहु भेद तुम्हार न जाना ।
जो तरनी घरनी मुनि होय मरै परिवार बिना सब दाना ॥
याही ते पालौं कुटुम्ब सदा जग उद्यम को नहिं और ठेकाना ।
पाँव पखारन मोहिं कहो चहो दासबना वहि पार जो जाना ॥७८॥

बन्धु सिया दिसि हेरि हँसे प्रभु प्रीति कि रीति कोऊ यक जाना ।
सोई उपाय से पार उतारहु जाते मिलै घर लोग को दाना ॥
हरपि हृदय भरि लायो कठौता सो दुर्लभ को जल गंग समाना ।
दासबना पदपंकज धोवत देव सिहात को या सम आना ॥७९॥

घनाक्षरी

धारि वोर घेरि घेरि बैठो परिवार सब फेरि फेरि मुदित चरन बारि पिये जू ।
जोगी जन ध्यावें ध्यान कष्ट करि पावें कोऊ जीवन भुसुंडि की महेस गोये हिये जू ॥
जाहि करि तीनि लोक तीनि पग भयो नाहिं अति भूरि भागी जो जनक धोय लिये जू ।
बनादास पितृजुत आपु भवपार भयो पीछे रामलपन सियहिं पार किये जू ॥८०॥

छप्पय

सिया कंज कर जोरि अतिहि सुरसरिहिं निहोरी ।
पति देवरजुत आय करौं जेहि पूजा तोरी ॥
पुरवहु मम अभिलाप देवि महिमा स्रुति गावै ।
सुर नर मुनि जेहि सेय सकल अभिमत को पावै ॥
रामलपनजुत जानकी पुनि पुनि किये प्रनामजू ।
कह बनादास प्रागहि चले गुहा सहित सुखधामजू ॥८१॥

निसि तरु तर करि बास सम सय भयो निबाहू ।
गवने प्रातःकाल उमगि उर अवसि उछाहू ॥
महिमा तीरथराज कहत दिसि लपनहिं सीता ।
आय त्रिवेनी लखे सितासित नीर पुनीता ॥
करि प्रनाम रघुवंसमनि हरपि हृदय मज्जन किये ।
कह बनादास लछमन सिया सखा सकल प्रमुदित हिये ॥८२॥

पसरो प्राग हवाल जुगल अवधेश कुमारा ।
कीन्हें मुनि को वेप राज तीरथ पग धारा ॥

रूप सील गुन धाम अंग सत काम लजावै।
सगनारि सुकुमारि कहाँ पटतर कवि पावै॥
वैपानन तापस गृही बटु अनेक देखन चले।
कह बनादास जनु रक निधि तेहि अवसर लूटत भले॥८३॥

आस्रम भारद्वाज गये बेगिहि रघुराई।
कीन्हे दड प्रनाम लिये मुनि हृदय लगाई॥
कुसल छेम को बूझि सुभग आसन बैठारे।
लछमन सिया निपाद चरन मुनि मस्तक डारे॥
दीन्हे सुभग असीस तब पुनि पुनीत वोले वचन।
कह बनादास रघुकुल तिलक सन्तन जीवन प्रानघन॥८४॥

आजु धन्य तप जोग सफल जप जज्ञ विरागू।
धन्य नेम आचार आजु अति पूरन भागू॥
राम तुम्हहि अवलोकि सिद्धि सब साधन आजू।
समदम तीरथ बास फले सब सुकृत समाजू॥
भारभूमि को हरनहित प्रगट भयो दसरथ भवन।
कह बनादास सियबन्धुजुत चल्यो सन्त सुरदुख दवन॥८५॥

सछेपै महँ कथा सकल रघुवीर बखानी।
दसरथ बिरह बिपाद जथा माँगे बररानी॥
अहोभागि मुनि आजु कमलपद दरसन पाये।
भयो राज रस भग सुकृत मम प्रकट सुभाये॥
पिता वचन सम्मत जननि भाय भरत से राय भो।
कह बनादास सन्तन मिलन मोहिं अति ईस सहाय भो॥८६॥

कन्दमूल सुठि स्वाद तबहिं मुनि राज मँगाये।
सिया लषन रघुनाथ गुहा सुठि प्रेम सो पाये॥
प्राग निवासी अमित दरस रघुनन्दन आवैं।
देखि देखि दोउ बन्धु सकल लोचन फल पावैं॥
राति समै प्रभु सैन करि प्रात प्राग मज्जन किये।
कह बनादास पदबन्दि मुनि तबहिं चलन चाहत हिये॥८७॥

नाथ कवन मग जाहिं कहे तब मुनि मुसकाई।
सुगम करन मग सन्त कुसल बटु चारि बुलाई॥

राम साथ करि दीन्ह खुले तिनके बड़ भागा।
पहुँचावन रघुपतिहि चले उमगत अनुरागा॥
गवन किये रघुवंसमनि देखत तरुवर बाग बन।
कह बनादास जमुना उतरि विदा सबन किय मुदित मन॥८८॥

राम चले बन जात कथा मग कानन छाई।
देखि देखि दोउ वीर थकित पुर लोग लोगाई॥
संग नारि सुकुमारि कहहिं जल भरि भरि नैना।
चलत पियादे पाँय जोग मारग ये हैना॥
धन्य देस धरनी नगर मातु पिता जाये इन्हें।
कह बनादास पुनि धन्य हम भये कृतारथ लखि जिन्हें॥८९॥

तिन महँ कोऊ समान कथा कछु जिन सुनि पाये।
मातु पिता बन दीन्ह कहहिं दसरथ नृप जाये॥
कैसी जननी तात सघम यहि कानन दीना।
एक कहहिं बलवान काल गति अतिहि मलीना॥
एक कहहिं धनि भागि मम भये बिधाता दाहिने।
कह बनादास किमि दोष ते जोपै नहिं जाते बने॥९०॥

घनाक्षरी

सूखि गये अधर मलीन मुखक्रांति भई जानकी समित जानि बैठे वट छाँह जू।
लाये जल लषन सिया के हिया मोद सुठि बनादास निज हेत लखे उर नाहजू॥
अंचल ते झारत चरनरज बार बार करत समीर न तृप्त मन माँह जू।
आनन सरद समबिन्दु सारे लोप भये प्रीति रीति अति कहि जाय कौन पाहँजू॥९१॥

सवैया

जानि बिलम्ब को ग्रामवधू ललचाय हिये मलना बहु आई।
सील सँकोच भरी अभिअन्तर चाहतु है पुनि बूझि न जाई॥
देखि सनेह सिया भय सन्मुख बोल तुहै तबहीं मुसुकाई।
साँवर गौर सो रावर कौन है दासबना किन मोहिं बताई॥९२॥

गोरे से गात लजावत कंचन पंकज कोमलता सकुचाये।
देवर सो सखि जानो सगे कटि तून कसे धनुबान चढ़ाये॥
नील सरोज विनिन्दित मर्कत अगन सोभा अनंग दवाये।
दासबना मुसुकाय तकै सिय नैन के कोर ते नाह बताये॥९३॥

ग्रामवधूटी भरी अति मोद मनो निधि लूटी दरिद्रिन आई।
रूप अगार दोऊ सुकुमार विलोकत ही चित लेत चोराई॥
जानो सगाई अनेकन जन्म की नयन नही कोउ भाँति अघाई।
दासबना सुठि सानी सनेक कहैं किन आजु बसो यहि ठाई॥९४॥

जो सेवकाई करै सो भली विधि दुर्लभ है सुठि दर्स तुम्हारे।
देस कुठावें कुगावें बसें नहिं जानी कहा विधि आज विचारे॥
जन्म अनेकन साधन कै मुनि ध्यानहु जाहि न जो बन हारे।
दासबना अति भागि के भाजन नयनन ते प्रत्यक्ष निहारे।९५॥

घनाक्षरी

तारन तरन कैवल्य जोग लोग भये दुख भव मग के विनहिं स्रम दहे हैं।
सुरमुनि साधक सिहात तासु भागि देखि बार बार सिवा सो महेस कहि रहे हैं॥
बनादास ग्राम ग्राम याही विधि मोद होत कौने दिन घरी वस ऐसो लाभ लहे हैं।
चलन चहत रघुवसमनि ताहि छन सारे नर नारि साथ नेह नदी बहे हैं॥९६॥

सवैया

राम चले उठि अग्र सिया पुनि पीछे ते लछमन वीर सोहाये।
लच्छन छीनि लियो मनि मानिक लोग न ता विधि ते दुख पाये॥
पथ बतावन सग चले बहु फेरे फिरें नहिं रूप लोभाये।
जाउ जहाँ तहँवाँ पहुँचाय कै लौटेंगे दासबना इमि गाये।९७॥

पीछे से आय सुने कोउ हाल विहाल मनो तुरितै उठि धाये।
जो समरत्थ न मीजि रहैं करकोसन जाय कै दर्सन पाये॥
दूरि कछू तक फेरि चले सँग तौ पुनि रामकृपालु बुझाये।
दासबना मग लोग मिलें बहु साथ मे घूमि चलें ललचाये॥९८॥

छाँह करें घन वारहिं वार समीर वहै अति ही सुखदाई।
मारग औनि भयो जनु पक से काँकरी काँट सो भूमि दुराई॥
चर्न की रेख बचाय चलें सिय लछमन वानि प्रदछिन लाई।
भक्ति औ ज्ञान विराग चले जनु दासबना तप को मनलाई॥९९॥

कोई कहैं विधि कैसो कठोर कुअवसर माँहि दिये बन जेरे।
वाहन यान तजै रथ नाग रचे केहि पारन आँखि अँधेरे॥
सयन करें महुवे तरु के तर सुदरि सेज लिये केहि केरे।
दासबना धनधाम औ भोग वे नाहक भो सबलो मत मेरे॥१००॥

छप्पय

नील पीत जल जात कनक मरकत बर जोरी।
मध्य नारि सुकुमारि सखी निरखहु तृन तोरी॥
सिंह ठवनि कटितून कसे मुनि पट दोउ बीरा।
जटामुकुट सिरसोह पानि लीन्हे धनु तीरा॥
दीर्घ बिलोचन बंक भ्रुव सोहतिलक सुठि भाल है।
कह बनादास सुकुमार दोउ बिधु बदनी बर बाल है॥१॥

भारी उर भुज अवसि अंग प्रति मनहुँ ठगोरी।
सोभित बिनहि सृङ्गार लखत सखि मति भइ भोरी॥
चलत पयादे पाँय कमल ते कोमल नीके।
मुख कहि आवत नाहि जौन बिधि भावत जीके॥
चितवत चौंधोसी लगी नहि देखे भरि नैनजू।
कह बनादास चित लै गये प्रान न पावत चैनजू॥२॥

सवैया

देखे सखी जब से दोउ बीर बिमोचन नीर न नैन सुखाहीं।
बाहर भीतर नीक न लागत काह करें कछु सूझत नाहीं॥
पक्षी समान अधीन भई पर ज्यों पिंजरा गृह बंधन माहीं।
दासबना गये प्रान उतै तन छूटै नहीं बिधि सेन बसाहीं॥३॥

कोउ कहै हम प्रातहि जाब गये जहँ साँवर गोर बटोही।
रैनि न नींद नहीं दिन भोजन मानै नही मन राम बिछोही॥
गाँवहि गाँव दसा यह ह्वै रही खान औरु पान सोहात न कोही।
दासबना यकएक बुझावत आवेंगे बेगि यही मग जोही॥४॥

कोऊ करै ब्रत साधन नेम लिखैं यहि मारग जा करि रामा।
पितृ औ देव मनावै भली बिधि बेधि गयो उर में बसुयामा॥
रूप औ सील संकोच बिचारत बोलनि चाल निसंजुत बामा।
दासबना मगबासी भये सब जीवन मुक्त महासुख धामा॥५॥

ग्राम समीप निवास किये जहँ मानो भये सब औध के बासी।
बैठे जहाँ छन एक छहाँन को ताहि तुलै नहि प्राग औ कासी॥
तीरथ धाम सिहात कलपतरु ह्वैगे सबै सहजे सुखरासी।
दासबना धरे पाँव जहाँ जहँ भे फलदायक काम दुहासी॥६॥

छप्पय

अमरावतिउ सिहात जहाँ जहँ राम धरै पग ।
को कबि बरनै जोग लहै उपमा सो कहाँ जग ।।
जिन जिन देखे जात राम लछमन औ सीता ।
अनायास मिटि गई सकल बिधि ले भवभीता ।।
नहिं ऐसो वह रूप है देखे फिर चित से टरै ।
कह बनादास जानै सोई तन मन सुधि बुधि सब हरै ।।७।।

घनाक्षरी

कैसे कैसे साधन किये हैं कौने कौने जन्म ताके फल भोगन को भये मग लोग हैं ।
देवता सिहात मुनि सिद्ध बार बार तेहिं अब कछु देखि न परत जप जोग है ।।
देखे भरि लोचन विमोचन जो भवरोग वसौ उर रूप सुचि सुरति को भोग है ।
बनादास कौनी घरी साइति सुग्राम बसे कैसे दिन जामे दरु जाते भे निरोग है ।।८।।

सवैया

दूरि ते आवत देखि कृपालु नवीन लिये कलसा भरि पानी ।
आनि धरे बटबाँह भली बिधि साथरी पात बिछायनि जानी ।।
धाय गये फलहार के हेत जहाँ तहँ को स्रद्धा अधिकानी ।
दासबना प्रभु बास करी कर जोरि कहै निज सेवक जानी ।।९।।

कीन निवास तहाँ रघुनंदन मूल भले फल सुन्दर आये ।
कै फलहार बिराजत आसन पाँय पै लोटत बधु सुभाये ।।
ग्राम के लोग रहे बहु घेरि भये बस प्रेमन भवन सुभाये ।
दासबना इतिहास कथा सुचि लछमन जानकी राम सुनाये ।।१०।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम षष्ठोऽध्याय. ।।६।।

सवैया

कीन बिदा पुरलोगन को प्रभु सैन किये रजनी सरसानी ।
तून कसे कटि बान सरासन जागत भाय हिये सुखमानी ।।
प्रातहि जागि निबाहि कै नित्य कहे रघुबीर तबै मृदुबानी ।
दासबना कौने मग जाहिं पचासन धाय चले अगमानी ।।११।।

संग गये बहु दूरि लौं लोग बिदा सबही किये राम सुजाना।
बंधु सियाजुत जात बिलोकत बाटिका बाग लता द्रुम नाना॥
काम किधौं मुनि बेप किये रति औ रितुराज परै नहिं जाना।
दासबना पुर लोग जहाँ तहँ भाँति अनेक करैं अनुमाना॥१२॥

पर्नकुटी करिहौ केहि ठावँ कहै सिय कानन है कित दूरी।
कैसन होत न देखे कहूँ बन दासबना तरु है घन भूरी॥
सिंह औ ब्याघ्र करैं सुठि नाद मृगानर धेनुहि खात जे तूरी।
राम कहैं नगिचाय गये मिलै काल्हिहि भामिनि भानु सबूरी॥१३॥

ता दिन निर्जन में भई साम रहे बटछाँह बिछायकै पाता।
बारि अहार भयो तेहि बासर नित्यहु ते अति हरषित गाता॥
सैन किये प्रभु पूरनकाम चराचर के सोइ आहि बिधाता।
दासबना सिय बन्धु समेत लिये मगकानन होत प्रभाता॥१४॥

घनाक्षरी

दूरिहि से गिरि सृंगवर्नहि देखाये सीय बालमीकि महामुनि जहाँ पै असीन हैं।
पल्लवित विटप सुमन फलजुत सोहैं चीकन हरित पात अतिही नवीन हैं॥
सिंह ब्याघ्र मृगा गऊ नाना जीव कानन के चरैं एक संग माहिं बैर से बिहीन हैं।
बनादास मध्य दिन गये रघुवंसमनि बंदत चरन मुनि लाय उर लीन हैं॥१५॥

बूझे छेम कुसल लपन सीय धरे पायं महामोद बालमीकि कवि किमि गाये हैं।
दिये सुचि आसन बिराजमान रघुबीर बेगिहि से मूलफल भाँति भाँति आये हैं॥
करि फलहार तुष्ट ह्वै कै बैठे मुनि पास सकल प्रसंग रघुनाथ जू सुनाये हैं।
बनादास हँसि कहे बालमीकि लीला तव जा कहँ जनावत सो कोऊ जानि पाये हैं॥१६॥

सिव चतुरानन गनेस सेस सारदादि नारदादि मुनि गुनि गुनि नित ध्याये हैं।
जैसे खग अम्बर उड़त नाहिं अंत लहै चहुँवेद नेति नेति करि जाहि गाये हैं॥
पैरि पैरि थाकत सरूप सिंधु मतिमान बनादास काहू भाँति पार नाहिं पाये हैं।
मनबुद्धि बचन के परे कहि आवत है जानत पै सोय जाहि कृपा कै जनाये हैं॥१७॥

आदिसक्ति जानकी जगत जायमान करि पालन औ थिति जासु करुना के कोरजू।
बालक घरौंदा सम खोय डारै पल माँहि जबै कहूँ होत भ्रुव सहज मरोरजू॥
निज लीला करि उतपत्ति भे जनक भौन रिद्धि सिद्ध दया छमासील सरबोरजू।
बनादास तव रुख राखत सरब काल भई भलीभाँति सुर साधु बन्दो छोरजू॥१८॥

छीन पात पीपर से पीठि पै कटाह अंड सकल अधार लछमन मुनि गायेजू।
आनन सहस जस गावत जपत नाम तिहूँ काल माहि तोष कदपि न पायेजू ॥
अति अनुरागी भूरि भागी भये किंकर सो भुव भार हरैं हेत साज को बनायेजू।
बनादास चले चोपि दैत्य दल दलै हेत ऐसो तिहूँ रूप आप अवसि जनायेजू ॥१६॥

रहे सिर नाय राम कहि न सकत कछु बूझे मुनिसन हम बसे केहि ठाँव है।
आपु निर्बिघ्न रहै और को न बिघ्न होय ऐसन बिचार करि कहिय उपाव है॥
ऐसी बिधि बसे तुम उजरौ न कोऊ काल तापै फिरि बसा चाहौ खाली नहिं गाँव है।
बनादास हेरि खोजि कहत निवास नीक बूझेहु तौ रहौ तहां जह मोहि भाव है॥२०॥

छप्पय

तप तीरथ व्रत नेम करैं जे तुम्हरे हेता।
जोग जज्ञ व्रत दान मान तजि रहैं सचेता॥
तुम्हरे पूजा पाठ प्रदच्छिन नित ही लावै।
तुम्हरो भोग लगाय सदा जे जूठन पावै॥
पट भूषन अर्पन करैं धारन मानि प्रसाद है।
कह बनादास तेहि उर बसौ राखौ सदा अवाद है॥२१॥

सत्य बचन जो कहै गऊ ब्राह्मन को मानै।
परधन औ परनारि सदा जे बिष सम जानै॥
भावै नही अनीति बेद आज्ञा को पालै।
परहित मे चित निरत त्यागि सब अग कुचालै॥
सीता अरु लछमन सहित राम वास तेहि उर करौ।
कह बनादास सुठिनीक है तातै जनि कबहूँ टरौ॥२२॥

सेवैं जे तव साधु बचन अरु मानस कर्मा।
ताहो मे दृढ़ प्रीति अवर नहिं दूसर धर्मा॥
छाया भोजन वस्त्र तोय स्रद्धा से देवै।
परिक्रमा दंडवत प्रसादी जल पद लेवै॥
तन धन ते अर्पन सदा राखै कछु न दुराव है।
कह बनादास तेहि उर बसौ सुठि पवित्र सो ठाँव है॥२३॥

मंत्र तुम्हारो जपै सदा जस तुम्हरे गावै।
सुजस तुम्हारो सुनै कबहुँ संतोष न पावै॥

तव चरचा दिन राति बचन मिथ्या नहिं भाखै।
जग ब्योहार बिहाय संत संगति मन राखै ॥
तिनके अभिअन्तर बसौ रामलषन सीता सहित।
कह बनादास अति निरबिघन करहु रुचै ताते कहित ॥२४॥

जातिपाति धनधाम तजैं जे तुम्हरे हेता।
मातु पिता तिय तनय बन्धु कोउ संग न लेता ॥
जाके राग न द्वेष गहै बिधि नाहिं निषेदा।
जानै पाप न पुन्य डरै नहिं लोकहु बेदा ॥
एक तुम्हहिं को लै रहै रामनाम गहि लीक जू।
कह बनादास तेहि उर बसौ सो गृह सबसे नीकजू ॥२५॥

स्वाति बुन्द तव नाम रहै ह्वै सदा पपीहा।
आस तजै त्रैलोक्य नाहि जाके उर ईहा ॥
नहिं दूसरो भरोस आपना करतब त्यागा।
अर्पन किये सरीर हृदय अति दृढ़ अनुरागा ॥
तेहि उर तव निज भवन है तिहूँ काल में लखि परै।
कह बनादास बसिये तहाँ पल छन हू जनि परिहरै ॥२६॥

दुख सुख में रस एक हानि लाभौ समदृष्टी।
नहिं निरखै नानात्व भावना एक समिष्टी ॥
धनी गरीब समान न पापी पुन्यी लेखै।
अस्तुति निन्दा एकमोर मै कबहुँ न देखै ॥
सो राउर भल भवन है बास निरन्तर तहँ करै।
कह बनादास मुनीवर बदे ये अस्थल मोहिं लखि परै ॥२७॥

सम मृद हेम पषान काठ कामिनि यक भाँती।
उदासीन संसार नाहिं काहू की पाँती ॥
वर्नास्रम ते रहित देह नहिं गेह सँभारा।
दया क्षमा सन्तोष सुर धुर धीर उदारा ॥
बोलहि बचन बिचारि कै सम दम नहिं टारे टारै।
कह बनादास सिय लषन जुत तेहि मानस बासा करै ॥२८॥

पराबुद्धि को प्राप्ति पृथक देही सो देखै।
थावर जंगम तुमहिं अपर कछु भूलि न लेखै ॥

तिहूँ गुनन को त्याग ज्ञान विज्ञान निधाना।
विरति विष्णु को विभव गलित सारो अभिमाना ॥
लोचन चातक स्वाति जल सदा तुम्हारो रूप है।
कह बनादास जुत जानकी बसौ हृदय गृह खूप है ॥२६॥

कह्यो समय अनुकूल राम तहँ करौ निवासा।
सब प्रद सुठि अस्थान देहु सब मुनिन सुपासा ॥
चित्रकूट रमनीक अवसि गिरि कानन चारू।
वह पयस्विनी समीप सदा मृग विहग विहारू ॥
कंदमूलफल संकुलित आकर्षन चित को करै।
कह बनादास महिमा अमित स्रुति पुरान जस विस्तरै ॥३०॥

आजु घरी दिन धन्य दरस दुर्लभ तव पाये।
सुनहु राम सुखधाम चरित निज कछुक सुनाये ॥
रह्यो विप्र की देह निरंतर नीच सँघाती।
तमोगुनी आचरन भाँति सबही उत्पाती ॥
कामी लोलुप कुटिलता सतति जाये सुठि घने।
कह बनादास दारिद्र अति किये जाय बासा बने ॥३१॥

रक्षा हेतु कुटुम्ब कर्म नित करत किराता।
मारै बन के जीव मनुप हिंसा मनराता ॥
भोजन नहिं भरि पेट बस्त्र आदिक से दीना।
अति पापी आचरन तनौ मनबुद्धि मलीना ॥
जो कछु मिलै सो आनि कै तिय सुतादि रक्षा करै।
कह बनादास जम यातना नहीं बेद आज्ञा डरै ॥३२॥

सप्तरिषय तब आय मिले कानन यक वारा।
अति प्रकास को देखि भयो हिय हर्ष अपारा ॥
धाये लै धनुवान बधन को ताहि बिचारे।
मुनि बोले मुसकाय पास का अहै हमारे ॥
मेरो यह नित कर्म है बिन मारे छाँड़ नहीं।
कह बनादास तब तिन कहे एक बात मानो कही ॥३३॥

बूझौ निज गृह जाय तुम्हारे तन सम्बन्धी।
हींसा ले है पाप कि भै तेरी मति अंधी ॥

आयो मेरी बुद्धि जाय बूझे सब काहू।
तब तिन दिये जवाब पाप हम लेहिं न लाहू॥
हम जानैं अपनो गुजर पाप तुम्हारा तव सिरे।
कह बनादास तब आयकै अति सभीत मुनि पद गिरे॥३४॥

मेरो नहिं उद्धार होन अब जोग मुनीसा।
तब सब करुना किये हर्ष हिय दिये असीसा॥
सत संगति भै प्राप्ति प्रभाव न खाली जैहै।
ह्वै है तव कल्यान कहे में जो मम ऐहै॥
करि कौसिक उपदेस किये सो उलटा रटना कहे।
कह बनादास आखर उभय ताही छन दृढ़ करि गहे॥३५॥

मरा मरा के कहे होत सो रामै रामा।
जपत जपत कछु दिनहिं मनहुँ पाये सुखधामा॥
भै तब कृपा विसेष और कछु मोहिं न भावै।
वाहज वृत्ति गै भूलि हृदय जग भान न आवै॥
बीतो काल असंख्य जब सप्तरिषै बहुरे तबै।
कह बनादास बिन उठि लगी भै सरीर मृतिका सबै॥३६॥

रहिगो सत्वा मात्र रिषै आये तेहि ठाई।
उच्चारन सुनि नाम गयो अतिही नगिचाई॥
तबहि निकासे मोहिं तेजमय रूप प्रकासा।
अति प्रसन्न तब भये कहे सब कल्मष नासा॥
वाल्मीकि भाये बहुरि कहे जन्म तव दूसरो।
कह बनादास तुम महामुनि अब मराल भयो खूसरो॥३७॥

असि महिमा तव नाम रेनु कीने गिरि भारे।
आसु पूर अभिलाष कृपानिधि दरस तुम्हारे॥
और चही कछु नाहि जानकी लषन समेता।
रामस्याम सुखधाम वसौ नित हृदय निकेता॥
तबहि विहँसि रघुपति कहे आजु बसन को है नही।
कह बनादास पद बंदिकै चले चित्रकूटै सही॥३८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

छप्पय

आय दीख बन गहन जीवगन करहिं बिहारा।
गिरि समीप पयस्विनी बहत सुचि धनुप अकारा॥
लागत अति रमनीक राम सिय लषनहिं भाये।
अति बिसाल बट एक ताहि तर प्रभु चलि आये॥
अनुज जानकी के सहित कीने सुथल निवास तब।
कह बनादास देवन लखे रमो राम मन भाँति सब॥३९॥

धरि तन कोल किरात सकल दरसन हित आये।
अनुज जानकी सहित राम लखि सुर सुख पाये॥
रचे पर्न तृन साल कछुक लछमन स्रम कीना।
लघु बिसाल अति ललित देव आस्रम छबि छीना॥
ज्ञान और बिज्ञान तप जनु तन धरि आये तपहिं।
कह बनादास सोभा समय अति अनूप को पार लहि॥४०॥

राम आगमन सुने मोद अतिही मुनि वृन्दा।
अत्रि आदि सब चले बिलोकन सुनि सुख कन्दा॥
मुनि मंडली बिलोकि उठे सहजे रघुराई।
बन्दे सब के चरनरेनु पद नैनन लाई॥
सियालषन परनाम किय सकल रिषिन आसिष दये।
कह बनादास रघुबंसमनि मुनिन संग बैठत भये॥४१॥

चितवत सब चित लाय लखत जिमि चन्द चकोरा।
कमल देखि रबि सुखी बिलोकत जनु घन मोरा॥
बोले राम सुजान आजु बड़ भाग हमारे।
मिटे पाप परिताप देखि पद कमल तुम्हारे॥
सत संगति ते सुख अवधि भवनिधि सुठि बोहित सबल।
कह बनादास तबही मिलै पुन्य पुराकृत अति प्रबल॥४२॥

राम कस न अस कहहु सदा पालक स्रुति सेतू।
जाकर सहज स्वभाव जनन पर अतिसय हेतू॥
जात रहे सब कोऊ रिपै छोड़े बन आना।
आप आगमन पाय हर्ष सब काहू माना॥
कछुक काल ते रजनि चर करत उपद्रव जानिकै।
कह बनादास रघुबंसमनि अब न जाहु भय मानि कै॥४३॥

कीन्ह बास भलि ठाँव यहाँ नित रहब सुखारी।
हम सब भये सनाथ सकल भय संकट टारी॥
बिबिध भाँति परितोप मुनिन को रघुबर कयऊ।
राम रूप उर राखि रिपय निज निज थल गयऊ॥
पर्नकुटी करि देवगन बिनय भाषि सबकोउ गये।
कह बनादास गति सुरन की अपर न कोउ जानत भये॥४४॥

आये कोल किरात मूल फल लै लै दोना।
अंकुर भांति अनेक चले जनु लूटन सोना॥
भरे हृदय अनुराग करें रघुपतिहि प्रनामा।
स्वाद भेद गुन सहित सराहहिं सबके नामा॥
हम सेवक परिवारजुत जो मर्जी सो सब करब।
कह बनादास पुनि पुनि कहै जानि सकोच कछु उर धरब॥४५॥

कानन गुहा पहाड़ सकल पग पग हम जानैं।
चलबै संग अहेर जबै प्रभु को मन मानैं॥
रामप्रेम पहिचान गये मिलि सब महँ कैसे।
भावत सब के हृदय सगे सम्बन्धी जैसे॥
बचन सुनत सादर सहित ऐसे सील निधान है।
कह बनादास अस प्रभु बिमुख पसु बिन पूंछ बिपान है॥४६॥

सिवन लहे संतोप आजु लगि जाके ध्याना।
साधन करत मुनीस जासु हित कोटि बिधाना॥
मन बुधि बानी परे निगम जेहि नेति निरूपा।
खग न लहै नभ अंत ताहि बिधि अगम सरूपा॥
कोल किरातन संग में ते प्रभु सुख मानत भले।
कह बनादास नर नहिं लखत सो स्वभाव माया छले॥४७॥

कीन्हे जब ते बास मूल फल संकुल कानन।
बिगत बैर सब जीव चरहिं संग गज पंचानन॥
भई बिपमता नास राम दर्सन के पाये।
सोभित भो बन अवसि मनहुँ रितुराज लगाये।
प्रकटी मनि गिरि आकरन अमित प्रकार सजीवनी।
कह बनादास रघुपति बसे तेहि महिमा अतिसय घनी॥४८॥

जे कानन जग अहैं मोच्छदायक परमाना।
नन्दन बन सुरलोक पुरानन जाहि बखाना॥
प्रभु बन की अति महतु सकल बरनै निज ओरा।
बसहि राम सिय लषन जवन कछु कहिय सो थोरा॥
सैल हिमाचल आदि जे उदय अस्त सुम्मेरहूँ।
कह बनादास बन्दत सबै चित्रकूट सम नहि कहूँ॥४६॥

सर सरिता नद नार सिंधु सातौ परमाना।
गंग जमुन नर्मदा धेनु मति जे सरि नाना॥
कावेरी सरस्वती पुरानन जा कहँ गाये।
मन्दाकिनी बखान करहिं सब सहज सुभाये॥
कोल भिल्ल बन बसत जे ब्रह्मादिक सुर आदरत।
कह बनादास जेहि संग मे रामचरित नाना करत॥५०॥

राजित पर्न निकेत राम सिय लषन समेता।
मानहुँ रति रितुराज मदन आयो तप हेता॥
सेवहिं सीता लषन प्रभुहि क्रम मानस बानी।
जिमि प्राकृत जन देह नेह को सकै बखानी॥
सीता अरु लछमन सहित जौनो विधि ते सुख लहत।
कह बनादास रघुबसमनि सोई करत अरु सोइ कहत॥५१॥

जमुना तक पहुँचाय बहुरि गोपुरहि निषादा।
देखी दसा सुमंत भयो अति हृदय विषादा॥
नैन दृष्टि भै मन्द बचन नहिं सुनत पुकारा।
तुरग पियैं नहि नीर नही तृन करहिं अहारा॥
हेरि हेरि दच्छिन दिसा बार बार हिहिनात हैं।
कह बनादास अतिसय विकल नैनन आँसू पात हैं॥५२॥

राम अस्व अवलोकि लहेउ दुख केवट भारी।
कहहिं सकल नर नारि जियहिं किमि पितु महतारी॥
जेहि बियोग ते दसा भई ऐसी पसु केरी।
पुरजन प्रिय परिवार सकहिं किमि सोक निबेरी॥
चतुर चारि चर संग करि सचिव अवध भेजे तुरित।
कह बनादास अतिही विकल नहिं कतहूँ चित लहत थित॥५३॥

लाय कौन मुख जावँ अवध का कहब सँदेसू।
आये बन पहुँचाय भरेहु ते अधिक कलेसू॥

सहिहैं पामर प्रान अजहुं नहिं करत पयाना।
धृग जीवन बिन राम सीस धनि पर्यो सुजाना॥
कहुं कहुं मुच्छित चेत कहुं राम बिरह अहि को डस्यो।
कह बनादास छन छन लहरि नहीं रहत तन मन कस्यो॥५४॥

अतिही हानि गलानि हने जनु ब्राह्मन गाई।
किये मनहुं गुरु द्रोह सोक उर नाहिं समाई॥
जैसे सूर कहाय समर से सुठि बिचलावै।
भगै चिता ते सती नाहिं मुख काहु देखावै॥
जती धीर बर साधु सुठि जिमि कुसंग ते बिगरई।
कह बनादास तिमि सचिव उर सूल न कैसेहु निकरई॥५५॥

बुझि है जननी राम धाय किमि उत्तर दे है।
नृप तृन से तन तजहिं तनिक धीरज नहिं ले है॥
मुख देखत पुरलोग मोर अतिसय दुख पैहै।
आये राम पठाय स्रवन बिषि कवन समैहै॥
यहि दुख ते दुख को अधिक तज तन तन को प्रान है।
कह बनादास का बस चले बिधिगति अति बलवान है॥५६॥

सेवक फिरे निषाद अवध निकटहि पहुँचाई।
तरु तर करि रथ खड़ा रह्यो दिन तीन गवाँई॥
कीने नगर प्रवेस सूत अतिही अँधियारे।
मनहुं भयानक रूप भूप रथ राखिनि द्वारे॥
कौसल्या के भवन नृप जानि तहाँ जात्रा करी।
कह बनादास नहिं पग परत गयो बहुरि धीरज धरी॥५७॥

बैठ्यो कहि जय जीव नृपति गति देखि न जाई।
सचिव आगमन भाषि मातु रघुबीर उठाई॥
कहहु सखा कहँ राम कहाँ लछमन वैदेही।
लायहु अवधहि फेरि गये कै प्रान सनेही॥
बिलखि वचन बोले सचिव अतिहि कठिन धीरज करी।
कह बनादास रथ पै चढ़े तब आज्ञा सिरपर धरी॥५८॥

प्रथमहि तमसा तीर किये रघुबीर निवासा।
बसे गोमती तीर समय सम भयो सुपासा॥

बहुरि सई तट बास प्रात ही किये तयारी।
सृङ्गबेरपुर गये देखि अति गुहा दुखारी॥
करि मज्जन गंगा निकट वास किये रघुवीर तब।
कह बनादास सुठि प्रीतिजुत कीन निषाद सम्हार सब॥५६॥

प्रातहि नित्य निबाहि तुरत बटछीर मँगाये।
अति प्रसन्न जुत बन्धु तबहिं सिर जटा बनाये॥
बिनती बिबिध प्रकार कीन दीनता सुनाई।
तब सँदेस सब भाँति कहे रघुपतिहि बुझाई॥
मम मैं जलि नहिं कछु चली परमधीर रघुवीर बर।
कह बनादास फेरी सियहि अवलम्बन नृप प्रानकर॥६०॥

समुझाये रघुनाथ सिया मन नेक न माना।
बन सत अवध समान कीन सो कछू न काना॥
सवसन कहे संदेस रहैं जेहि भूप सुखारी।
सोई करव उपाय लहै जनि दुख महतारी॥
मुनि नायक पुनि भरत सन पुरजन प्रजा समाजजू।
कह बनादास जाते सुखी रहै अवध महराजजू॥६१॥

सुनि रघुबर वर बचन लगे सर बिषम समाना।
पर्यो अवनिअति मुरछि सिथिल सुठि इन्द्री प्राना॥
लै लै ऊरध स्वास गये बनराम सनेही।
कहत अवसि बिलखात प्रान छोड़त नहिं देही॥
धरि उरधीर सुमन्त तब समुझावत महिपाल मनि।
कह बनादास असमय परम भये अधीरन परत बनि॥६२॥

जग जस भाजन मीन नीर बिछुरत तन त्यागा।
मनिहूँ बिलगते फनिक मरै ताते बड़भागा॥
सहि अपजस जग जिये तासु जीवन कहि लेखे।
अब तक रहो सरीर बिना रघुनन्दन देखे॥
परम सनेही राम बन तन छोड़त नहिं प्रान सठ।
कह बनादास नरपति कहे अब केहि कारन पराहठ॥६३॥

दसरथ दसा बिलोकि कहत कौसल्या रानी।
महाराज बिदसर्व आपु सुठि पंडित ज्ञानी॥

राम वियोग समुद्र धीर ते लहिये पारा।
ना तरु निपट अनर्थ आपु सबके आधारा॥
अन्ध साप आई सुरति राम मातु सो सब कही।
कह बनादास अति विरह बस भई विकलता उर सही॥६४॥

सास ससुर से कहे जानकी दंड प्रनामा।
बहुरि कंजकर जोरि दंडवत कीने रामा॥
सूत बचन सुनि नृपति दिये पुनि नयन उघारी।
जथा मीन जल बिलग ताहि कोउ सींचत बारी॥
रामलषन सिय नाव चढ़ि बहुरि गंग पारहि गये।
कह बनादास देखे खड़े खंड खंड नहि उर भये॥६५॥

प्रागराज कै बास बहुरि करि जमुना पारा।
अतिसय बिरह बिषाद निपादहु पुर पगधारा॥
मोहि देखे पुनि आय तुरत सेवकन हुँकारी।
बरवस पठ्ये अवध संग कीन्हे त्वरचारी॥
सुनि सुनि रघुपति की कथा बिथा बिरह बाढ़त नई।
कह बनादास दसरथ दसा जा बिधि फनि की मनि गई॥६६॥

जथा मीन जल बिलग भई भूपनि अनुहारी।
जान्यो नृपति पयान सांचु रघुबर महतारी॥
भयो प्रानगत कंठ पीर रघुबीर कठोरा।
धीरज कछुक सँभारि रानि नर नाह निहोरा॥
राम राम कहि राम कहि नरपति तन त्यागत भयो।
कह बनादास सुकृत अवधि दसरथ परधामहि गयो॥६७॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

कुंडलिया

रुदन करत रानी महल नाम रूप जस भाखि।
रोवैं दासी दास बहु दै दै अगनित साखि॥
दै दै अगनित साखि बिकल अति पुर नर नारी।
करैं कल्पना कोटि देंहि कैकेयी गारी॥
आये प्रात बसिष्ठ मुनि अति उर धीरज राखि।
रुदन करत रानी महल नाम रूप जस भाखि॥६८॥

बामदेव आदिक रिषय समझाये सब काहु।
नृप तन राखे नाव मे तेल भरे ता माहु ॥
तेल भरे ता माहु बहुरि चर चारि बुलाये।
कहि कै सकल प्रसग ताहि पुनि सुठि समझाये॥
नृप सुधि कतहूं जनि कह्यो बेगि भरत पहुँजाहु।
बामदेव आदिक रिषय समुझाये सबकाहु ॥६९॥

याही भाष्यो भरत से गुरु बोले दोउ भाय।
सचचलो मम सग मे गवन किये सिर नाय॥
गवन किये सिर नाय तिन्है नहिं मन बिलामा।
मग जहँ तहँ करि बास गये कैकय नृप धामा॥
भरत चरन बन्दन किये कहि प्रसग समुझाय।
यही भाष्यो भरत से गुरु बोले दोउ भाय॥७०॥

सुनत भरत तुरतै चले रथ चढ़ि दूनौं भाय।
उरखन मडल बिबिध बिधि चित न कहूँ थिति पाय॥
चित न कहूँ थिति पाय कुआगम प्रथमै आना।
देखि सपन बिपरीति करहिं कोटिक अनुमाना॥
पुनि चर की बानी सुनी अटपट परी लखाय।
सुनत भरत तुरतै चले रथ चढि दूनौ भाय॥७१॥

नगर निकट आये जबै महा भयानक लाग।
सरसरिता बिपरीति गति कुम्हिलाने बन बाग॥
कुम्हिलाने बन बाग बिबिध असगुन अवलोकत।
होत नही हिय घोर भाँति बहु मन को राकत॥
बनादास उर मे गुनत प्रकटो कैसो भाग।
नगर निकट आये जबै महा भयानक लाग॥७२॥

खर स्रृगाल अरु काक गन बोलहिं सुठि प्रतिकूल।
देखि देखि बिपरीति गति होत भरत उर सूल॥
होत भरत उर सूल सत्रुसूदन बिलखाही।
मन ही मन उतपात कहैं नहिं कोउ कोउ पाही॥
काह करिहि करतार दहु देखि परत दुख मूल।
खर स्रृगाल अरु काक गन बोलहिं सुठि प्रतिकूल॥७३॥

पैठतपुर भीतर बिथे जानि परत घरि साय।
पुरजन जो कोऊ मिलै गवँ जोहारै आय॥

गवें जोहारै आय अतिहि स्नेहत सब कोई।
संभापन नहिं करै देखि दुख दारुन होई॥
कैकेयी सुनि आगमन सजी आरती धाय।
पैठत पुर भीतर बिषे जानि परत घरि खाय॥७४॥

द्वारे आये भरत जब भवन भयंकर लाग।
मानहुँ स्री सगरी गई केकय उर अनुराग॥
केकय उर अनुराग भेंटि भवनहिं लै आई।
बूझति नैहर कुसल भरत संछेप बताई॥
कहु जननी इतकी कुसल देखा रहित सोहाग।
द्वारे आये भरत जब भवन भयंकर लाग॥७५॥

यहाँ कुसल बूझत कहा सकल सुधारो तात।
भै मन्यरा सहाय सुठि पूरिपरी सब बात॥
पूरिपरी सब बात कछुक करतार बिरागा।
भूपगवन परधाम भरत सुनि रुदन अपारा॥
अतिहि मुच्छि भूतल पर्‌यो बार बार अकुलात।
यहाँ कुसल बूझत कहा सकल सुधारी तात॥७६॥

तात तात हा तात कहि बिलपत दोऊ भ्रात।
चलत न देखे नैन भरि प्रबल आंसु दृग पात॥
प्रबल आंसु दृग पात नहीं सौंपे गहि बाहीं।
मोहि लै कर रघुबीर घोर आवति उर नाहीं॥
कह बनादास पितु मरन को हेतु कहै किन मात।
तात तात हा तात कहि बिलपत दोऊ भ्रात॥७७॥

आदिहि ते करनी सकल बरनी कुटिल कलंक।
तात सोच सब परिहरो राज्य करो निःसंक॥
राज्य करो निःसंक सुनत दुखदायक बानी।
मानहु जर्‌यो जवास परसतहि पावस पानी॥
रामगमन बन सुनि भरत अतिही उर अह दंक।
आदिहि ते करनी सकल बरनी कुटिल कलंक॥७८॥

भरत बिलोकत कैकयी नागिनि सी उर लागि।
अरे पापिनी होसिके सब जग बोई आगि॥

सब जग बोई आगि भागि सुठि मोरि सिरानी।
राम बिरोधी कौन मोहिं विधि तव सुत जानी ॥
बनादास पटतर कहा राम नेह हिय जागि।
भरत बिलोकी केकयी नागिनि सी उर लागि ॥७९॥

कुल कलक जाये वृथा जन्मत हते न मोहिं।
बन पठये सिय राम कहँ समुझि पर्‌यो का तोहिं ॥
समुझि पर्‌यो का तोहिं सर्‌यो मुख पर्‌यो न कीरा।
नही गिरी गलि जीभि लिहे बर घरि उर घीरा ॥
बनादास काढ़्यो नहिय अनहित रघुपति जोहिं।
कुल कलक जाये वृथा जन्मत हते न मोहिं ॥८०॥

घिक घिक घिक घिक्कार तोहिं मात पिता घिक तोर।
जहँ जन्मी सो ठाँव घिक घिक कुल सम्मत मोर ॥
घिक कुल सम्मत मोर गाँव घरनी घिक सोई।
घिक सो देस जवार तहाँ के धिक सब कोई ॥
अनहित लागे राम जेहि ताहि नरक अघ घोर।
घिक घिक घिक घिक्कार तोहिं मात पिता घिक तोर ॥८१॥

मोहिं घिक बारै बार है जठर जन्म तव लीन।
जेहि लगि रघुनदन दुखित को मो ते अघ पीन ॥
को मो ते अघ पीन भयो कुल भानु कलकू।
भये लाख गुन नीक मोहिं ते बेन त्रिसकू ॥
घर परिजन सुख कल्प तरु जेहि कुठार बिधि कीन्ह॥
मोहिं घिक बारहि बार है जठर जन्म तव लीन्ह ॥८२॥

राम लपन सिय गमन बन मरन नृपति को कीन।
सोक सन्त पितु सकल जग आपु बिधवपन लीन ॥
आपु बिधवपन लीन प्रजा परिवार दुखारी।
अपजस भाजन भई मिली जेहि असि महतारी ॥
मुख देखे पातक लगै सो मुख हमको दीन।
राम लपन सिय गमन बन मरन नृपति का कीन ॥८३॥

यहि विधि कोटिक कल्पना भरत करत बिलखाय।
तेहि छन आई मन्थरा अंग नव सम बनाय ॥

अँग नव सप्त बनाय देखि रिपुहन रिसि बाढ़ी।
मारे कसि कै चरन पीर पाई अति गाढ़ी॥
फूटो कूबर टूट मुख आहि आहि बिललाय।
यहि बिधि कोटिक कल्पना भरत करत बिलखाय॥८४॥

दलित दसन सोनित बमन परी धरनि मुरझाय।
लगे घसीटन केस गहि निपट दया बिसराय॥
निपट दया बिसराय लखे नख सिख सुठि खोटी।
मारे पुनि पुनि लात उखरि आई कर झोटी॥
भरत बिचारी नीति उर दीन्हें तुरत छुड़ाय।
दलित दसन सोनित बमन परी धरनि मुरझाय॥८५॥

मैं कीने सब भाँति हित सो अनहित फल लाग।
बिधि करनी बिपरीति कै कैधौं मोर अभाग॥
कैधौं मोर अभाग सुना अस दीखन काऊ।
तबहुँ बदै कटु बैन नारि अति खोट सुभाऊ॥
राम मातु पहँगे तुरत भरत भरे अनुराग।
मैं कीन्हें सब भाँति हित सो अनहित फललाग॥८६॥

छप्पय

बंदे जननी चरन भरत सह बंधु सुभाये।
मातु लिये उर लाय राम लछमन जनु आये॥
सजल नयन तन पुलक स्रवत पय प्रभु महतारी।
भरत कुसल सुठि बूझि लाय उर अधिक दुलारी॥
रुदत बदत दोउ बंधु अति राम मातु धीरज करी।
कह बनादास का सोचिये बिधि गति ह्वै ऐसी परी॥८७॥

बोले भरत सप्रीति कुसल का कहिये माता।
मोरि कुसल सब काल चरन रघुपति जल जाता॥
सो सुख सुर तरु मोर करनि केकयी निपाती।
दई बिषम दुख नेय जरै जाते नित छाती॥
जेहि लगि तुव ऐसी दसा मातु कुसलता को कवनि।
कह बनादास गति मोरि अब भै चीता कैसी नवनि॥८८॥

जनि जिय करहु गलानि तुमहि रघुनाथ पियारे।
तुम प्रिय रामहि सदा कौन यह टारन हारे॥

काहुहि दोष न देहु कालगति कठिन बिचारी।
राम सरिस सुत बनहि जिये ताकी महतारी॥
अनुरागी सिय रामपद अमित बुझाये नहिं रही।
कह बनादास गति लषन की ताही बिधि जानी सही॥८९॥

पितु समीप सब तजे बसन भूषन रघुबीरा।
पहिरे बल्कल चीर समुझि उर काहि न पीरा॥
सीता सुठि सुकुमारि धरी तापस की बेषा।
तात कठिन उर भयो सकल इन नयनन देखा॥
नृप आज्ञा ते सचिव सँग रथ लै गये चढ़ायकै,।
कह बनादास तट गंग ते लौटे अति दुख पाय कै॥९०॥

आय कहे सब कथा सुनत दुख कह दुख लागा।
अतिही बिकल महीप तुरत तृनसे तन त्यागा॥
कुलिसहु से उर कठिन सहे सब यह उतपाता।
मरन जियन भल नृपति लहे धिक मो कहँ ताता॥
भरत प्रबोधे मातु बहु स्रुति पुरान इतिहास कहि।
कह बनादास निज गति कहत अभि,अंतर नहिं सकत सहि॥९१॥

मातु पिता द्विज गुरू गऊ सिसु त्रिय बधि डारै।
नृपहुँ चलै अनीति बचन मिथ्या उच्चारै॥
ब्राह्मन बेचै बेद सुरा बेस्यारत होई।
भैषज्जी हलग्रही मसी चक्री है जोई॥
कृतनिन्दक मधुहापि सुननिन्दारत पर धन हरै।
कह बनादास जो मोरमत जननी सो अघसिर परै॥९२॥

जो पालै बहु गऊ बनै सेवा सो नाही।
कहवावै जो पंच करै परपंच सदाही॥
देखि और धन धाम पुत्र उर आपन जारै।
कहै परावा पाप सदा परनारि निहारै॥
करै घात बिस्वास जो मित्र द्रोह परद्रोह रत।
कह बनादास अघ मोहि सो जो जननी यह मोर मत॥९३॥

गाय गोठ द्विज धाम दहै नृप माहुर देई।
करै अगम्यागमन बमन करि नैसोइ सेई॥

तंत्री ज्वारी चोर कपट पाखंड पसारै।
मारै नाना धातु अवसि हिंसा उरधारै॥
पापी तीर्थ रसायनी सदा दम्भ छल से भरै।
कह वनादास जो मोर मत जननी सो अघ सिर धरै॥६४॥

छत्री को तन धारि युद्ध ते बिचलै सोई।
सती चिता ते भगै तासु मुख लखै न कोई॥
पतिवंचक जो नारि पाय ताको अति पीना।
साधु विप्र की वृत्ति हरै निजवा पर दीना॥
हरि बासर आदिक वरत ता दिन जो भोजन करै।
कह वनादास जो मोर मत जननी सो अघ सिर परै॥६५॥

मांस भखैंह्व बिप्र जती निज धर्महि त्यागै।
करै साधु को वेप असत में सुठि अनुरागै॥
सिष्य कहावै जोय न आज्ञा गुरु की मानै।
सुतह्व भूलै जोप मातु पितु भक्ति न जानै॥
विहित धर्म निज जो तजै वरनास्रम होवै कोई।
कह वनादास जो मोर मत सो जननी अघ मम सिर सोई॥६६॥

सिव निर्मायिल भखै सहा पर मठ जो सेवै।
होय धनी जे लोग द्रव्य संचै नहि देवै॥
निज नारी को त्याग होय परत्रिय रत जोई।
रिन लै कै नहि देय मनुप तन पोपक होई॥
कामी क्रोधी लोभ रत स्रुति आज्ञा मानै नहीं।
कह वनादास जो मोर मत जननी अघ मम सिर सोई॥६७॥

जो हरिहर पद त्याग मसानन भूतन सेवै।
निज आतम को घात सदा औरन दुख देवै॥
जो हन्ता गो वीर्य्य नग्न नारी अवलोकै।
पंडित सुजन कहाय पाप से मनहि न रोकै॥
पर मैथुन निरखै जोई गुरु आसन पर पग धरै।
कह वनादास जो मोर मत जननी सो अघ सिर परै॥६८॥

कौसल्या बिलखाय लिये सुठि हृदय लगाई।
जनि गलानि जिय करहु तुम्हें मैं जान सदाई॥

तुम्हैं सदा प्रिय राम कर्म मानस औ बानी।
जो कोउ तात सुगाय लोक परलोकहु हानी॥
जागत ही भिनसार भो आये गुरु पुरजन सबै।
कह बनादास मुनि आगमन भरत जानि आये तबै॥६६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम नवमोऽध्याय ॥६॥

छप्पय

बन्दे गुरु द्विज पायँ सबै कोउ आसिष दीन्हा।
करौ समय सम काज राज मुनि आज्ञा कीन्हा॥
सेवक सचिव सयान काम निज निज सब लागे।
पितु करनी के हेत भरत अतिसय अनुरागे॥
बेद बिहित अन्हवाय कै नृपतन रचे बिमान है।
कह बनादास तापर किये को करि सकै बखान है॥१००॥

चन्दन अगर सुगन्ध अमित बहु भार मँगाई।
सुरभी सरपि समूह समधि सुचि बहुबिधि आई॥
सरजु तीर चितलाय अवसि बर चिता बनाये।
जनु सीढी सुरधाम ताहि पर नृप तन लाये॥
दग्ध किये स्रुति रीति से भरत तिलाजलि तब दिये।
कह बनादास बिधिवत सकल करि भवनहिं गवनहिं किये॥१॥

कृपा रीति प्रति दिवस बेद बिधि ते चित दीन्हा।
यहि बिधि सकल निबाहि भरत दस गात्रहि कीन्हा॥
हय हाथी रथ यान बिबिध भाँतिन के दीन्ही।
भूपन बसन बिचित्र अयाची भूसुर कीन्ही॥
कनक रजत गो वृषभ महि भाजन भाँति अनेक के।
कह बनादास दीन्हे भरत उपमा मिलै न एक के॥२॥

जहाँ बेद जस कहै सहस भाँतिन सो कीना।
दिये द्विजन बहुदान जाचकन बस्तु नवीना॥
भरत भक्ति जेहि भाँति कहा उपमा कवि पावै।
तुल्य न तीनिहुँ काल लोग सब यहि बिधि गावै॥
पितु हित जसि कीन्ही कृपा पार लहै कहि कौन है।
कह बनादास अति अगमगति सारद साधत मौन है॥३॥

सावधान जब भये सभा मुनि नायक आये।
मन्त्री मीत पुनीत महाजन सुजन बुलाये॥
जुरे जबै सब लोग तबहिं गुरु भरत बुलावा।
आये दूनो भाय चरन पंकज सिर नावा॥
सकल द्विजन वंदे भरत बैठे आयसु पाय जव।
कह बनादास प्रभु मातु को पठये रिषय बुलाय तब॥४॥

प्रथम राम अभिषेक कहे जेहि बिधि नृप ठाना।
बहुरि केकयी कथा लिये जेहि विधि बरदाना॥
सियालपन अनुराग कहे पस्चात् बखानी।
रघुनन्दन बन गमन कहे पुनि मुनि बर ज्ञानी॥
भूपति बिरह बिषाद कहि कीने संग सुमन्त जिमि।
कह बनादास पहुँचाय प्रभु सचिव आगमन अवध तिमि॥५॥

नृपति मरन बिलखाय कहे बहु भाँति मुनीसा।
सुनहु भरत गति ईस सदा सबही के सीसा॥
पाप पुन्य जस अजस जन्म औ मरन जहाँ लौं।
हानि लाभ गुन दोष कर्म आधीन तहाँ लौं॥
आवत जब होनहार जस लागत तैसो जोग है।
कह बनादास बस काल के करत जीव सब भोग है॥६॥

नृप सुकृती जेहि भाँति सेस सारद कहि हारे।
धर्मसील गुन भोग कौन कबि पावै पारे॥
सुर गुरु सेवी साधु प्रजा प्रिय प्रान समाना।
भयो न है होनहार कौन दसरथ सम आना॥
सूरधीर अरु बेदविद नीतिनिपुन पुनि रिपुदवन।
कह बनादास सब के मते भूप मरन संसय कवन॥७॥

नृपति मरन बन राम प्रजा परिवार मलीना।
भूप राजपद दिये तुमहिं चाही सो कीना॥
पालन अरु परितोष भाँति सब सब कर करहू।
स्रुति सम्मत जगरीति नेकु मन बुद्धि न डरहू॥
सौंपेहु आये राम के सेवा किहेउ लगाय चित।
कह बनादास सुनि बन सुखी रघुपति मनि हैं परम हित॥८॥

सचिव कहे भल अवसि भूप आज्ञा गुरु मर्जी।
प्रजा और परिवार सूर वीरौ सब गर्जी॥

भरतन उत्तर देत राम जननी मृदु बानी।
कहे जौन मुनि कहत तात करिये हित मानी॥
तुम अवलम्बन सबहि के कौन महाउत्पात विधि।
कह् बनादास कदरात इमि तात बात किमि होय सिधि॥९॥

बोले जुग कर जोरि भरत गुरु सभा निहोरी।
आरत को न सम्हार न मानवता ते खोरी॥
मात पिता गुरु बचन करी बिन किये बिचारा।
लोकबेद मरजाद सकल धर्मन मे सारा॥
केकैसी जननी भई दिये सकल जग सूल है।
तम सब स्वारथ बसि भये अति बिरचि प्रतिकूल है॥१०॥

लषन राम सिय बिपिन आन मग बिन पदचारी।
को जायो ससार जोन मुनि होय दुखारी॥
सत्यप्रेम प्रनपालि नृपति परधाम पधारा।
सब अनर्थ को मूल एक मैं भले बिचारा॥
मोर जन्म जगदुःख हित वहुरि लषन सिय राम को।
मोहि से अधम को राज दै चाहत सब निज काम को॥११॥

निज निज स्वारथ वस्य दसा मम कोउ न बिचारा।
राज रसातल जात नेक लागै नहि बारा॥
मोरे जी की जरनि जान को बिन रघुनाथा।
सूझत कोउ न उपाय चरन लखि होब सनाथा॥
सील सिंधु रघुबसमनि निज दिसि ते अनुरागि हैं।
मैं अघ अवगुन को सजौं तबहूँ कदपि न त्यागि हैं॥१२॥

सवैया

प्रातहि काल करौ बन गौन कल्प सत से पल मोहि बितीता।
दाह बुझात नही अभिअन्तर जौ लौं न देखि हों राम औ सीता॥
धन्य भरत्थ कहै सब कोय सराहत है सुठि प्रीति पुनीता।
दासबना सब अवध निवासी सुखी उपमा न मनो जग जीता॥१३॥

छप्पय

उपज्यो महा अनन्द जहाँ लगि पुर नर नारी।
होतै प्रातःकाल मिलन रघुबीर तयारी॥

गे सब निज निज भवन गवन की करहिं बनावा।
धन्य भरत धनि भक्त हरे दारुन दुख दावा॥
जुवा वृद्धि अरु बालगन राखे रहैं न धाम जू।
कह बनादास अस को अवध प्रियन जाहि सिय राम जू॥१४॥

सेवक सुभट बिचारि भरत राखे रखवारी।
इन्द्र धनद धन देखि जासु मति टरै न टारी॥
देस कोसपुर सौंपि सुभग पालकी सजाये।
करि कै सकल सम्हार राम जननी पहँ आये॥
भाषे सब निज उर मरम मातु प्रात कीजे गवन।
बोले सेनप साहनी कामदार जहँ लगि जवन॥१५॥

साजहु स्यन्दन नाग तुरै वर बहु बिधि जाना।
पदचर पुनि असवार गजाधिप रथी सयाना॥
अबहीं भेजहु जाय चलैं मग सोधन हारे।
मारग रचैं सुधारि नेक लावैं नहिं बारे॥
तिलक साज लीजे सकल तीरथ तोय अनेक है।
कह बनादास मुनि मन बसैं बर्नहिं करै भिषेक है॥१६॥

तेहि निसि परी न नींद सबै प्रभु पद अनुरागे।
प्रात चले मुनि नाथ बाम भार्गीजुत आगे॥
सिबिका जननी सकल लोग सब निज निज जाना।
चली अवध दल अगम कौन कवि करै बखाना॥
चले पयादे बन्धु दोउ सबै चलाय दिये जबै।
कह बनादास गति भरत की राम मातु जानी तबै॥१७॥

कौसल्या गुरु देव बहुत भरतहिं समझाये।
राम बिरह कृस लोग नही मग जोग सुभाये॥
रथ चढ़ि चलिये तात सकल पुरजन हित लागी।
माने भरत रजाय मातु गुरु पद अनुरागी॥
अनुज सहित स्यन्दन चढ़े चित्रकूट किये गौन है।
कह बनादास तन सकल संग मन जहँ जानकि रौन है॥१८॥

प्रथमै तमसा वास दूसरो गोमति तीरा।
तीजे सई समीप परे दल तहँ अति भीरा॥

तप व्रत धारन किये जबहि ते राम सिधाये।
अवधपुरी नर नारि प्रीति कहि पार को पाये॥
सृंगबेरपुर निकट गे चौथ दिवस सब लोग है।
कह बनादास केवट सुने सब प्रकार सजोग है॥१६॥

फरकत रदपट अवसि कुटिल अतिसय भय भव है।
भरतहि निदरि विसेष बचन सुठि कहतरि सो है॥
अहै केकयी सुवन कछुक आस्चर्य न तासू।
अति ही कीरति बिसद तिहूँ पुर पसरी जासू॥
बिपतरु अमी न फरि सकै तिहूँ काल बिपरीत है।
कह बनादास आस्चर्य का उर आनी नृप नीति है॥२०॥

मैं अतिसय जन नीच भरत भाई जग जाना।
राम काम जस लेउ बादि मारौ मैदाना॥
जाने प्रभु असहाय चले दल लै दोउ भाई।
समुझि परिहि सो आजु पैज करि भुजा उठाई॥
सूर धीर सम्हरहु सकल आजु काज रघुबीर है।
कह बनादास मरनो समर पुनि सुरसरि को तीर है॥२१॥

लीजे सन्मुख लोह गग जनि उतर न पावै।
बीर बाद बहु बदै भटन उत्साह बढावै॥
माँगे तरकस धनुष कवच कूँडी असि चर्मा।
जुद्ध ठाट को ठाटि बीर बोलत निज मर्मा॥
खड मुड मै मेदिनी कर तन लावै बारजू।
कह बनादास निज तेज बल बीर करत परचार जू॥२२॥

महारथी गज अधिप तुरगन के पति मारैं।
कायर कूर बिहाय भूलि पद चरन निहारैं॥
धनुषबान असि चर्म कवच कूँडी सिर धारैं।
सूल सक्ति अरु परसुधारि जय सब्द उचारैं॥
लायक बीर बिलोकि कै गुहाराज आदर करत।
कह बनादास लै नामको एक एक अकन भरत॥२३॥

देखि सुभट समरत्थ हृदय अति चौगुन चाऊ।
कहँ बिलम्ब केहि काज ढोल किन बजै जुझाऊ॥

अहोभाग्य अति आजु राम कारज तन आवै।
मन में सुठि उत्साह मारि सब सैन चलावै॥
घाट घाट बोरहु तरनि तीर तीर मुरचा करौ।
कह बनादास सजुगे सुभट गुह रजाय सिर पर धरौ॥२४॥

गुहा सचिव कर जोरि भाँति बहु बिनती कीन्हा।
अनुचित उचित बिचारि हुकुम चाहो तस दीन्हा॥
जेहि न होय पछिताव बहुरि पीछे कोउ भाँती।
अपने चूके जरै जन्म भरि आपनि छाती॥
लेउ मर्म मिलि भरत कर बैर प्रीति कैसे दुरै।
उचित होय सो कीजिये मेरे उर ऐसी फुरै॥२५॥

हर्प्यो अवसि निषाद मंत्र तुम नीक बिचारा।
तुरतहि सेवक बोलि मिलन को साज सँभारा॥
माँगे खग मृग मीन बस्तु बहु नाना भाँती।
लाये बिपुल कहार कहाँ संख्या कहि जाती॥
सजग रहो सब जहाँ तहँ लेउँ मर्म मैं जाय कै।
कह बनादास करतूति लखि तब तस करिहौ आय कै॥२६॥

गने लोग लै संग भरत दिसि मिलन सिधाये।
प्रथमहि चरन बसिष्ठ दूरि ते मस्तक नाये॥
कहि रघुपति जन नीच आपनो नाम बतावा।
रघुपति सखा बिचारि लषन सम निकट बुलावा॥
दीन्हे सुभग असीस मुनि भरत त्याग स्यन्दन किये।
कीन निषाद प्रनाम तब धाय अंक तेहि भरि लिये॥२७॥

भेटे लषन समान प्रीति नहिं हृदय समाई।
बूझे मंगल कुसल कहे तव पद कुसलाई॥
मिले बहुरि रिपुदवन सकल जननिन सिर नावा।
सुत सम जानि असीस दिये अति उर सुख पावा॥
सुर मुनि ताहि सिहात सब कहँ बसिष्ठ रघुपति अनुज।
भेटे अंक लगाय तेहि नीच ब्याध माफिक दनुज॥२८॥

अपनावै जेहि राम ऊँच सबहो सन सोई।
यहँ जुग तीनिउ काल नहो स्रुति चारिउ गोई॥

समुझि मोरि करतूति भजै नहिं राम उदारा।
तेहि को सिखवै ज्ञान गुहा कह बारहि बारा॥
सनकारे सेवक सबै भरत सखा कर कर गहे।
मीन विलग जनु नीर ते सोचत सीतलता लहे॥२९॥

आये सुरसरि तीर रामघाटहि सब बन्दे।
मनहुँ मिले रघुनाथ भरत यहि भाँति अनन्दे॥
जननी सब अन्हवाय आपु प्रभु घाट अन्हाये।
करि सुरसरि स्नान टिके सब जेहि जहँ भाये॥
आये जहँ कीन्हे सयन रामलषन अरु जानकी।
कह बनादास बन्दे भरत जरनि गई कछु प्रान की॥३०॥

चरन चिह्न कहुँ देखि नैन रज अजन लाये।
पैकरमा बहु भाँति भरत कीन्हे अति भाये॥
समाचार पुरलोग पाय दर्सन के हेता।
धाये सब जहँ तहाँ कहै कोलह सुख जेता॥
करत दंडवत लोग सब रज पद नैनन लावते।
कह बनादास प्रभु मिलन सम सबै कोऊ सुख पावते॥३१॥

भरत पहुनई कीन्ह सखा अतिही मन लाई।
कन्दमूल फल असन अनेकन भाँति मँगाई॥
सब कोउ करि फलहार सयन कीन्हे निसि माहीं।
घाट घाट की नाव अमित आई निसि ताहीं॥
प्रात काल जागे भरत जननि चढाई नाव तब।
कह बनादास तरनिन चढे लोग भये हैं पार सब॥३२॥

प्रागहि कोन्ह पयान प्रथम मुनि राय चले हैं।
सिबिका चढि चढि मातु चलीं सब भाँति भले हैं॥
सारी सेन चलाय भरत पीछे दोउ भाई।
चले पियादे पायँ कहै कबि किमि कठिनाई॥
सहजे सादे वेप सुठि सीस नही छाया करत।
कह बनादास गति भरत की लोगन लखि धीरज धरत॥३३॥

झलका पंकज पाँय पानहिंउ कीन्हे त्यागा।
रामराम मुख रटत भरे उर अति अनुरागा॥

स्यन्दन नाग तुरंग संग में को तल जाही।
कह सेवक कर जोरि चढ़त वाहन कत नाहीं।
राम गये वन प्रान बिन मोहि सिर बल जाना उचित।
कह बनादास सबकोउ चलहु नाहक मन करते दुचित ॥३४॥

पहुँचे सब जुग जाम गये हैं लोग प्रयागा।
आये तिसरे पहर सिथिल तन बस अनुरागा ॥
भरत सिता नीर देखि कर पंकज जोरे।
बोलत बचन बिनीत प्रीति रस मानहुँ बोरे।
रामचरन पद पंकरुह सलिल चहो मन मीन है।
कह बनादास पुनि पुनि कहत ह्वै द्वारे अति दीन है ॥३५॥

आरत के चित चेत रहै नहि तीरथ राजा।
दान करन को मोहि भीख मांगत नहि लाजा ॥
अब अपनी दिसि देखि देहु मन भावत मोहीं।
जाचक जो फिरि जाय बात तौ अवसि न सोहीं ॥
रिधि सिधि सम्पति चाह नहि नहीं स्वर्ग अपवर्ग रुचि।
कह बनादास गरजी सदा देहु राम पद प्रेम सुचि ॥३६॥

मैं बेनी बरबाग धन्य तव जन्म जहाना।
तुम रामहि प्रिय प्रान बचन मानहुँ परमाना ॥
सिव ब्रह्मा इन्द्रादि विष्नु बैभव बैरागी।
तुम से तीनिहुँ काल नाहि रघुपति अनुरागी।
धरहु धीर अवसर निरखि सब विधि मंगल मूल है।
कह बनादास कदरात कित सदा राम अनुकूल है ॥३७॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम दसमोऽध्यायः ॥१०॥

छप्पय

सुनि बेनी वर बाग भरत अति आनंद पाये।
अवध निवासी सकल हृदय अतिसय हरषाये ॥
करि मज्जन दोउ बन्धु दान बहु बिप्रन दीन्हा।
जाचक बिपुल बुलाय तोष सबही कर कीन्हा ॥
भरद्वाज पहँ आय कै कमल चरन बन्दन किये।
मुनि भेंटे उर लाय तब ह्वै प्रसन्न आसिष दिये ॥३८॥

रिपुसूदन पद बन्दि वैठि अनुसासन पाई।
मुनिबर किये बिचार वचन बोले सुखदाई॥
जनि उर करहु गलानि भरत तुम से तुम एका।
सदा राम प्रिय प्रान कौन अति भला विवेका॥
माने राम रजाय के अवसि भला सब भाँति है।
कह बनादास साहेब सबल लघु सेवक अवकाति है॥३९॥

नाहिं केकयी दोष गिरा ताकी मत फेरी।
पाये सुरपुर सोध सोच सब भाँति निवेरी॥
तापस तीरथ बास बचन मिथ्या किमि कहही।
राम चराचर ईस सदा लीला तनु गहही॥
जपतप मख साधन किये सो फल दर्सन राम है।
ताकी सिद्धी दरस तव भयो मोहि परिनाम है॥४०॥

भरत कज कर जोरि तबहिं बोले बर बानी।
सीज धर्म अरु नीति बिरति रस प्रीति मे सानी॥
भूप गये परधाम मातु भै अपजस भाजन।
मैं अनरथ को मूल भूलि सो आवत लाजन॥
बिगरि जाय परलोक बरु लोक सकल निन्दा करै।
कह बनादास सांची बदत ताहू को नहिं मन डरै॥४१॥

राम लपन अरु सिया श्रान विन पग बनचारो।
यहि दावा उर दहै जतन खोजत हिय हारी॥
राम दुख के हेत जन्म मम धिग धिग मोही।
राम बिरोधी जोय भयो सो त्रिभुवन द्रोही॥
राखि कहौ कछु साखि सिव अतिहिं परी बाँकी भई।
कह बनादास औषध न काउ वृद्धि होत दिन प्रति नई॥४२॥

भरद्वाज तव कहे तात धरिये उर धीरा।
ह्वै है सकलो सान्ति मिलत ही सिय रघुबीरा॥
तुम कहँ अवसि क्लेस सुजन मन मुठि उपदेसा।
राम भक्ति रस अगम थक्ति सारद स्रुति सेसा॥
अतिथि पूज्य प्रिय आजु तुम यह मोहिं माँगे दीजिये।
कह बनादास भाषे भरत आज्ञा सिरधरि कीजिये॥४३॥

अति असमंजस पर्यो घर्म याही दृढ़ चीन्हा।
गुरु रजाय सुठि सीस सोच मुनिबर तब कीन्हा ।।
नेवते पाहुन वृहद चही तेहि विधि पहुँनाई।
आय खड़ी भइ सिद्धि कहे मरजी प्रभु पाई ।।
राम बिरह व्याकुल भरत आजु करो यहि काज को।
कह बनादास हरि सकल सम करिये सुखी समाज को ।।४४।।

महिमा अगम विचारि बन्धु रघुपति सेवकाई।
अहोभाग्य उरमानि चलो मुनि पद सिरनाई ।।
प्रथम बनाये वास जाहि सुर सदन लजाहीं।
दासी दास अनेक सकल सम्पति तेहि माहीं ।।
सेज सुभग पयफेन से मनि दीपक भ्राजित भवन।
तने चँदेवा चारु सुठि कबि उपमा पावै कवन ।।४५।।

नानाविधि पकवान देव को दुर्लभ जोई।
स्रग चन्दन बहु गन्ध सुमन सब रंग समोई ।।
देवांगना अनूप जहाँ तहँ भवनन राजैं।
रतिउ तुलै नहिं रूप मेनका रम्भा लाजैं ।।
कामधेनु भवनन विपे द्वार द्वार सुरतरु लगे।
कह बनादास ऐस्वर्य सुठि देखन वाले जेहिं ठगे ।।४६।।

नचत अप्सरा वृन्दतान तुम्बरु बहु भरहीं।
बाजा बिबिध प्रकार सब्द जाको मन हरही ।।
पंखा मुरछल चमर पान झोरा कर लीन्हे।
बहुसों टेवर दारखड़े पल छन रुख चीन्हे ।।
तुरय नाग स्यन्दन सुभग सजी सवारी अनगनी।
कह बनादास बरनै कवन बदत न सारद सों बनी ।।४७।।

वापी कूप तड़ाग बाग देखत मन मोहै।
फलि पाके निज भार नये बरनै कवि को है ।।
सुधा सरिस अति स्वाद खात मन तृप्त न होई।
सुमन वाटिका विविध कहाँ उपमा कवि जोई ।।
सीतल मन्द सुगंध तेहि समय सुभग मारुत वहै।
कह बनादास अमरावती समय न आनंद को लहै ।।४८।।

इक्षुविकार अनेक स्वाद सुठि सुधा समाना।
नानाविधि रितु पक्व सुरस फल कवन बखाना ।।

दालि पिसान अनूप बना चिउरा की ढेरी।
तंदुल भाँति अनेक ख्याति तरकारिन केरी॥
दूध दही घृत सस्त पुनि तेल तलाव भरे घने।
लौंग मिर्च लाची अमित कूरा के सरि अनगने॥४६॥

स्रीपासा अम्मार मुकुर को लागो ढेरी।
नाना भूषन वसन लेय जस रुचि जेहि केरी॥
कहि गीता भागवत विविध विधि होत पुराना।
पंडित परम प्रबीन करहिं रामायन गाना॥
तिहुँ पुर दुर्लभ बस्तु जो ठौर ठौर पर ख्याति है।
कह बनादास आस्चर्य अति मति वनंत सकुचाति है॥५०॥

मीन मांस के ढेर कहै को अथक कहानी।
सोनित के बहु कुंड सुरा के अगनित जानी॥
अतुलित वैभव देखि अचर्य बिलोकन हारे।
कहैं परस्पर लोग दीख नहिं कतहुँ सुनारे॥
चकित होत चतुराननहु जाहि निरखि अतिसय हिये।
कह बनादास तप तेज बल भरद्वाज ऐसा किये॥५१॥

मुनिवर रिधि सिधि सबै समय तेहि चम्पक फूला।
कीन्हे विविध बिलास भरत मन भँवर न भूला॥
भरत पंकरुह पात सकल सुख सम्पति नीरा।
भयो अस्परस नाहिं महामहिमा रघुबीरा॥
जैसे ज्वर के जोर ते भोजन की रुचि जात है।
कह बनादास वृद्धहिं जया तरुनी बिप दरसात है॥५२॥

चक्रबाक निसि समय सहज ही जया बियोगा।
जैसे सरुज सरीर काज केहि नाना भोगा॥
जाहि रामपद प्रीति ताहि को सकै लोभाई।
सुरपति सुख जनु वांत साखि निगमागम गाई॥
प्रातकाल मुनि चरन गहि चित्रकूट गवने भरत।
नहिं पग आन न छाँह सिर मुनि अखंड व्रत आचरत॥५३॥

छाँह करै घन बिपुल बहै सुखदायक बाऊ।
कहत राम सिय राम भरत बिस्मित चितचाऊ॥

ग्राम ग्राम यह कथा सकल मग कानन छाई।
धन्य भरत पुनि धन्य कवन भयप असपाई॥
राज्य दीन पितु ताहि तजि राम मनावन जात हैं।
सिर पग नाँगे करत तप कंद मूल फल खात हैं॥५४॥

रामवास थल बूझि निपादहि करत प्रनामा।
नैनन लवत धूरि मिले जनु जानकि रामा॥
वन्दत मुनि द्विज साधु देव आस्रम जहँ पावैं।
रटत स्वास प्रसि नाम सजल लोचन पुलकावैं॥
कतहुँ विरह बस होत सुठि लै लै ऊरध स्वासजू।
कह बनादास अनुराग जनु उमँगि चलत चहुँ पास जू॥५५॥

भरत दसा को देखि साधु मुनि सिद्ध सिहाही।
धन्य भरत जय भरत कहैं सब निज निज पाहीं॥
हम वन वसि का कीन्ह राम इमि लगे न मीठे।
लगी कल्पना अवसि नहीं वासना उबीठे॥
कालिन्द्री को उतरि तब वास किये वहि पार है।
रामभरन वर वारि लखि चले होत भिनसार है॥५६॥

जहँ तहँ मग नर नारि कहैं सब सीय न संगा।
वेप न सों लखि परै सेन संगै चतुरंगा॥
उर में नहिं उत्साह प्रसन्न न आनन देखैं।
कहत परस्पर लोग भेद याही सुठि पेखैं॥
भरत सत्रुहन बंधु दोउ कोउ कह वन कीन्हे गवन।
हेत मनावन राम के अनुरागी इन ते कवन॥५७॥

जानैं ते इमि कहे जात यहि विधि दोउ भाई।
संगै सखा निपाद प्रीति कवि सकत न गाई॥
इन्द्रहि सोच अपार भरत वन गवन विचारी।
अब धौ काहो निहार बनै विधि वात विगारी॥
राम कनौड़े प्रेमवस भरत सो प्रेम जहाज है।
जो रघुवर धूमहि अवध अव बिगरो सुरकाज है॥५८॥

सारद बोले बहुरि करै किन वेगि उपाई।
कै फेरै मति भरत मिलैं कै नहिं रघुराई॥

तिन जाने मति मन्द राखि सुरराउ सकोचू।
कहे बारही बार अमरपति करी न शोचू॥
सीप उलीचे सिंधु किमि सूखि सकै सुरराज है।
कह बनादास हरिजनन को को करि सकै अकाज है॥५६॥

जहां भानु तहँ तिमिर सीत ढिग अनल न जाई।
मेढुक ले इनमेरु उरग खग केतु न खाई॥
सिंह ससाकी समर कहो कैसे बनि आवै।
चिन्तामनि को पोति कबहुँ समता नहि पावैं॥
तब कीन्हे रुख राम के अब अकाज ह्वै है सही।
कह बनादास गुरु चरन परि तब सुरपति ऐसी कही॥६०॥

कीजै बेगि उपाय होन अब चहत अकाजू।
सहसौ लोचन अघ लखे गुरु सुठि सुरराजू॥
मायापति को दास ताहि ते कीजै माया।
होय भूरि मे हानि न फाकी कौन चलाया॥
राम सदा समदृष्टि है स्तुति पुरान सब कोउ कहे।
कह बनादास तिहु काल मे जासु रीति ऐसी अहे॥६१॥

सेवक बैर सो बैर प्रीति सेवक सेवकाई।
कोउ जन जानन हार जानि सब काहु न पाई॥
दुर्वासा गति विदित तिहूँ पुर ठौर न पाये।
अम्बरीप के सरन भये तब चक्र बचाये॥
हरि भक्तन को सेय कौन हरिबस नहि कीन्हा।
चहुँजुग तीनिउँ काल बदत बहु भाँति प्रबीना॥
कार्य कीन्ह जो निज चहौ भजौ भरत मन लायकै।
कह बनादास यहि भाँति गुरु कह सुरपति समुझायकै॥६२॥

होहु भरत के सरन परन करिकै सब देवा।
राम बस्य बसुयाम जाहि अस जानहु भेवा॥
भरत भागवत परम करहिं किमि देव अकाजा।
परहित तन परिहरै सत गुन इमि सुरराजा॥
सो दधीचि गति बिदित है बहुरि गरल सकर पिये।
कह बनादास गुरु बचन सुनि सुरपति सुर हरषित हिये॥६३॥

छाके सुधा सनेह चलत पग डगमग डोलहि।
मन जहँ सीताराम कुम्भ जनु भरे न बोलहि॥
भरत गहे कर सखा कहत रघुपति गुनगाथा।
चले जात मन मगन बंधु लघु सोभित साथा॥
सायंकाल मुकाम किय नींद परी नहि रैन तेहि।
राम मिलन की लालसा मनोराज जस भाव जेहि॥६४॥

चले होत परभात रामगिरि गुहा देखाये।
त्यागे बहुजन जान सबै कोउ मस्तक नाये॥
भरत हृदय संकल्प बहुरि विकलप बहु भाँती।
सुमिरत सील सनेह रामगुन गन की पाँती॥
पुलक प्रफुल्लित गात अति परत उताहिल अवनि पग।
काल करम जननी दसा सुरति भये नहि उठत डग॥६५॥

सुनत आगमन मोर राम उठि अनत न जाही।
ताही छन तन त्याग प्रान किमि रह घट माहीं॥
संभापन नहि करैं मोहि त्यागैं करि क्रोधा।
परा रहौं तेहि ठावँ निरादर को बहु बोधा॥
जायो जठर कुमात ते भागि हीन यह सब उचित।
कह बनादास इमि सोचि कै होत हिये अतिसय दुचित॥६६॥

जग जस लीन्हे लषन राम पय अति अनुरागी।
मातु पिता धन धाम सुहृद तिनुका सम त्यागी॥
हरदम सेवा निरत समय जेहि संग न कोई।
सहत दुसह तन ताप नाहि जे निज दिसि जोई॥
देह धरे को फल लह्यो बन हित रघुपति जन्म मम।
कह बनादास तिहूँ काल में को मोते दूजा अधम॥६७॥

धन्य सुमित्रा मातु उदर जेहि लछमन जाये।
करि नाना उपदेस संग बन राम पठाये॥
कैकैसी मम जननि अजस भाजन दुखदायक।
सकल भुवन बन बसे जाहि करि सिय रघुनायक॥
आतप हिम जल वात सहि नाँगे पग विचरत बनहि।
हृदय न होत दरार किमि कुलिस निदरिगे यातनहि॥६८॥

निज दिसि करिहैं ख्याल नीति मय सील निधाना।
ह्वै हौं तुरित सनाथ करत इमि उर अनुमाना॥

प्रभु स्वभाव रस एक बालपन से रुचि पाली।
भयो अमित उत्पात राम किमि गहहिं कुचाली।।
यहि बिधि कोटि कुतर्क उर करत जात छन छन भरत।
उमँगि उठत निज भक्तिबल कबि छाया किमि अनुहरत।।६९।।

केवट कहे बहोरि देखिये बिटप बिसाला।
नील पात बट सुभग लगे सुंदर फल लाला।।
तेहि तर बेदी दिब्य सिया निज हाथ बनाई।
नव तुलसी के वृच्छ सुमन कर लषन लगाई।।
ताही तर प्रनकुटी प्रभु बैठ बेदिका कृपानिधि।
कह बनादास आनन्दजुत आसपास मुनि साधु सिधि।।७०।।

परे लकुट से भरत करत दंडवत सप्रीती।
कोक बिपट तर लहे प्रेम लीन्हे जनु जीती।।
इहाँ राम निसि कछुक सपन सीता अस देखा।
आये भरत समाज सहित सब सासु कुवेखा।।
जागि कहे रघुनाथ प्रति कहा सपन नहिं नीक है।
कह बनादास मेटै कवन जो खींचो बिधि लीक है।।७१।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयताप बिभजनो नाम एकादसमोऽध्यायः ।।११।।

छप्पय

नित्य निबाहे राम बैठि सुचि आसन आई।
देखे उत्तर दिसा धूरि नभ मंडल छाई।।
भागे बहु बन जीव मृगादिक सहज सुभाये।
कहे किरातन आय भरत काननहिं सिधाये।।
सेन संग चतुरंग अति वार पार नहिं लखि परै।
कह बनादास रघुबंसमनि उर बिचार लागे करै।।७२।।

केहि कारन काननहिं भरत आये दोउ भाई।
ताहूपर संग माहिं लिये अतिसय कटकाई।।
चित थिति लहे न राम हृदय गति सपन बिचारा।
रद पुट फरकत अवसि बक भ्रुव दृग रतनारा।।
सुनहु नाथ करुना भवन निज सम प्रभु जानत सबहिं।
कह बनादास जे कपटमय तिनहिं न पतिआई कबहिं।।७३।।

जे विषयी जग जीव जबै प्रभुता को पावै।
लोक लाज परलोक वेद मरजाद मिटावै॥
भरत कहावत साधु तेऊ अधिकारहि पाई।
करै यकंटक राज्य वनहिं आये दोउ भाई॥
कुटिल कुअवसर ताकि कै राम निरादर को किये।
कह वनादास केकय सुवन नहिं अचरज आवत हिये॥७४॥

सुत की यह कुटिलई जननि सारो जग जारे।
नाथ साथ धनु हाथ कहाँ तक कोउ रिस मारे॥
अनुचित छमब कृपालु कहौं बूझे बिन बाता।
आज सकल फल देउँ लेहि नीके दोउ भ्राता॥
कसि परिकर कटि तून जटाजूट बाँधत भये।
कह वनादास भाषत बलहि करि प्रमान सुठि उर ठये।७५॥

प्रभु सेवक जस लेउँ करै विधि सम्भु सहाई।
मारौं सेन समेत समर सोवहिं दोउ भाई॥
लवा दलै जिमि बाज करिहि मृगराज पछारै।
भेंड़ी के दल माँहि परे वृक जथा विदारै॥
तमकि प्रतिज्ञा कीन तव वन्धु दुहुन को: बध करौं।
कह वनादास प्रभुपद सपथ तीन धनुष सर कर धरौं॥७६॥

लोकपाल दिग्पाल ससंकित सकल जहाना।
लछमन कोप कराल चहत जनु भभरि भगाना॥
गगन गिरा गंभीर अवसि बल तेज वखानी।
अनुचित उचित विचारि बात करिये अनुमानी॥
करि सहसा पछितात पुनि बुधन सराहैं तासु मति।
कह वनाहास नम गिरा सुनि गुनि आयो संकोच अति॥७७॥

सनमाने रघुवीर तात तुम नीति विचारा।
कठिन राजमद सदा बुद्धि का कौन बिगारा॥
भरत अलौकिक पुरुष अवसि मैं जानौं नीके।
कहौं प्रीति परतीति रीति भावत निज जीके॥
विधि हरिहर इन्द्रादि पद पाय भरत मति नहिं हलै।
कह बनादास मेरे मते जो कदापि पृथिवी चलै॥७८॥

घनाक्षरी

गिरि सृ ग फूलै कज गोपद अगस्त्य डूबै छमा छोडै छोनी कच्छ पीठ जामैं वारजू।
तिमिर तरनि गिलै मिलै नभ वारि धर पतिदेव त्यागि पीव दूजो भरतार जू।।
चन्द चुवै अनल कृसानु वरु स्रवै हिम उरग जो करै उरगारि को अहारजू।
बनादास भारत जै सेषहू कदपि काल तौहू राजमद न भरत होनिहारजू।।७६।।

फूलै नभ वाटिका कृसानु सिन्धु तूल दाहै जियै मीन वारि बिन अचरज अति है।
ससा सीस सीग जामैं मूस मारै मीचहू को बनादास फनि करै मनि से बिरति है।।
कालकूट असन ते अमर कदपि काल अमी ते मरन लहै पातकी सुगति है।
भानु उवै पच्छिम नसावै मोह ज्ञानहू को राज्य पावै भरत न तबौ हालै मति है।।८०।

सवैया

लोग अन्हाय रहे सरितीर भरत्त चले तवही प्रभु ओरा।
बन्धु उभय पुनि केवट सग मे सील सकोच सनेह न थोरा।।
नैन से नीर खडे तनु रोम लखे पद अकित भूमि कठोरा।
दासबना रज नैनन लावत कौन लहै उपमा वर जोरा।।८१।।

नाथ निपाद दसा अवलोकि बिदेहू भयो मग कौन सँभारै।
सिद्धि तपोधन जोगी लजात अकास ते देव अनेक निहारै।।
दासवना कहैं धन्य भरत्त लखावत मारग बारहिं वारै।
अग्रहि अग्र झरै कुसुमावलि पन्थ यही उर माहि बिचारै।।८२।।

छप्पय

जटाजूट कटि कसे लिये कर धनु औ बाना।
आवत देखे भरत लषन कीन्हे अनुमाना।।
साहब सेवा उतै इतै प्रिय बन्धु सकोचू।
असमजस अस पर्‌यो कर्‌यो ताहित पुनि सोचू।।
स्वामिधर्म अतिसय सबल रहो ताहि पर टेक है।
कह बनादास खीचे वितहि चगसे चारु विवेक है।।८३।।

सवैया

स्यामल गात जटा मुनि के पट दीर्घ बिलोचन पकज लाजे।
बेदी पै साधु समाज सुहावन तामधि मे रघुबीर बिराजे।।
दासवना उपमा न लहै कवि भावै हिये अतिसय छवि छाजे।
अग्र खडे प्रभु लछमन बीर मनोहर धीर सरासन साजे।।८४।।

छप्पय

परे लकुट से अवनि लपन रघुपतिहि निहारे।
भरत करत परनाम उठे प्रभु कृपा अगारे॥
धाय लिये उर लाय छोह अतिसय रघुबीरा।
रह्यो कही कटि तून कही छूटे धनु तीरा॥
मिले परस्पर बन्धु दोउ मन बुधि चित अहमित तजे।
कह बनादास उपमा समय हेरि हेरि कबि जन लजे॥८५॥

कबि कोबिद किमि कहै थकै सारद सहसानन।
रघुपति भरत सनेह अगम संकर चतुरानन॥
गननायक सनकादि सुकादिक ऊरध रेता।
नारदादि जोगीस महामुनि तत्त्व के बेता॥
कहत कठिन समुझत कठिन बन्धु दुहुन अनुराग जू।
कह बनादास तिहुँ काल में को करि सकै बिभागजू॥८६॥

रिपुसूदन प्रभु मिले भरत लछमन दोउ भाई।
कीन्ह निषाद प्रनाम कुसल बूझे रघुराई॥
सत्रु दमन अरु लपन भेंटि उरमाहिं अनन्दे।
भरत सहानुज जाय जानकी पदरज बन्दे॥
सीता आसिष दीन्ह सुभ सुठि प्रसन्न देखे भरत।
कह बनादास संसय सकल दूरि भई उर ते तुरत॥८७॥

सवैया

कुम्भ समान भरो अभिअन्तर बैन को बोलब काहु न भाये।
धीर सँभारि निषाद कहे प्रभु मातु गुरू पुर के जन आये॥
सीय समीप रहे रिपुदौन तबै करुना कर बेगि सिधाये।
सील निधानन राम समान पुरान औ बेद महामुनि गाये॥८८॥

आय गहे गुरु पंकज पायँ मुनीस लिये उर माहिं लगाई।
बन्धु समेत असास दिये सुभ बिप्रन बन्दे सबै रघुराई॥
दासबना परनाम किये प्रभु मातु भरत्त कि नेह बढ़ाई।
भाई समेत मिले जननी निज औ द्विज नारि जहाँ तक आई॥८९॥

हर्ष विषाद समय तेहि को यक माहि सनो कछु जात न गाई।
कौन बिभाग सकै करि सो मति सारद सेषहु की सकुचाई॥
दासबना पुरलोगन भेंटि चले जननी गुरु देव लिवाई।
औरो गने गन संग लिये मुनि नायक जा कहँ दीन्ह रजाई॥९०॥

आये सबै रघुबीर के आस्रम सासुन धाय मिली बैदेही।
तापस वेष बिलोकि कै जानकि धीर सँभार रह्यो नहिं तेही।।
वेष बिलोकि कै सीय दुखी सब देहिं असीस अतीव सनेही।
दासबना नृप को परधाम कहे मुनि नायक भो बिधि जेही।।६१।।

भाँति अनेक बिलाप करैं सब मानो महीप अकाजेउ आजू।
हेत सनेह बिचारि कै मनं अधीर भये अतिही रघुराजू।।
रोवत दासी औ दास घने तेहि अवसर मानहुँ सोक समाजू।
दासबना समुझाये मुनीस बिषाद अनौसर केर अकाजू।।६२।।

घनाक्षरी

रामघाट माहिं अस्नान सब कोऊ किये दिये हैं तिलाजलि समय तेहि रामजू।
किये हैं निरम्बु व्रत गत भयो बासर सो आज्ञा मुनि दिये पुनि किये तैसो कामजू।।
बनादास बीते दिन उभय प्रभु सुद्ध भयो करत बिसुद्ध तिहुँ लोक जासु नामजू।
स्नुति सेतु पालक कलुष खल घालक करत बहु चरित जनत मोद धामजू।।६३।।

सवैया

दिन भोज न रैन न नीद भरत्तहि कल्पना कोटि उठै उरमाही।
कौन प्रकार फिरैं रघुबीर बिचार कछू ठहरै हिय नाही।।
मातु मतै गुरु बात बनै सो कहैं रुख राखि तौ काहू पोसाही।
दासबना जिमि कीच के बीच मे मीन न जीवनि मीच लखाही।।६४।।

मातु मतै महँ मो कहँ मानि कै त्याग करै तौ कछू न बसाई।
सेवक जानि सुनै बिनती निज ओर चहूँ जुग राम बडाई।।
मैं केहि भाँति कहौं घर घूमिये वाके पिता सुरकार्य नसाई।
दासबना मत मुख्य यही सबके सिर ऊपर राम रजाई।।६५।।

आये मुनीस भरत्त समीप महाजन मन्त्रिय मीत बुलाई।
सेनप सूर सखा समरत्थ जुरी पुरलोगन कैरि अथाई।।
राम सुसील सहैं सुठि सकट मानिकै नीके सनेह सगाई।
कौनि प्रकार चलैं पुरऔधहि दासबना सो कहो समुझाई।।६६।।

घनाक्षरी

सुनि मुनि बचन बिलोकत भरत मुख दसा देखि सबही बि वहे गुरु ज्ञानीजू।
सुनौ तात भरत उपाय सो बिचारो आजु जौनी भाँति रघुबीर चलें रजधानीजू।।
बनादास कर जोरि बचन कहत मृदु बूझत कृपानु मोहिं काह अनुमानीजू।
दीजिये रजाय सो अवसि सिर राखि करौं याही मेरो बिहित धरम परै जानीजू।।६७।।

सवैया

कानन गौन करौ दोऊ वन्धु फिरैं रघुनन्दन लछमन सीता ।
आनँद मगन भये दोउ भाय मिलैं उपमा न मनौ जगजीता ।।
जानहुँ आछत भूपति के भयो राम को राज सबै दुख बीता ।
दासबना भरि देह बसौ बनया सम मोर न दूसर होता ।।९८।।

आये सबै रघुवीर के तीर उठे गुरु पांयन पै सिर नाये ।
बोले वसिष्ठ सुनौ रघुनन्दन भूपति तौ परधाम सिधाये ।।
सोक समुद्र में मग्न सबै अवलम्ब भरत्त इहाँ को लै आये ।
कैसे जियैं परिवार प्रजा सब दासबना सो कहौ सति भाये ।।९९।।

घनाक्षरी

रबिकुल रच्छक कृपालु सब काल आपु सो तौ विद्यमान मोंहि सोच कौन परी है ।
प्रथहि मोहि जो रजाय दीजै महाराज सकल प्रकार धरि सीस सोई करी है ।।
जा कहँ उचित जस ताहि पुनि कही तस अतिहित मानि मानि सबै अनुसरी है ।
बनादास याते न परम स्रेय देखि परै कहि रघुबीर इमि पुनि मौनधरी है ।।१००।।

भरत की प्रीति नाहिं सोचि कहे रघुनाथ मेरी मति अवसि भगतिवस भई है ।
कहै जो भरत ताहि सुनौ परमान करि परम प्रसन्न ह्वै के राम आज्ञा दई है ।।
धन्य भाग भरत को गुरु अनुराग इमि मेरे मत जगत जनम फल लई है ।
बनादास कहै सो करत नाहिं बार लावों कहे मुनि तात त्यागि सारी दुचितई है ।।१।।

कहौ निज रुचि बात सोच औ सकोच छोंड़ि राम की रजाय गुरु कहे बार बारेजू ।
सजल नयन तन पुलक मगन मन भरत समय सम वचन उचारेजू ।।
सारो उत्पात भे कुमातु द्वार मेरे हेत भूप परधाम गये जारे जग सारेजू ।
ताको न सकोच सोच साँचो साखि सिव जाको राम वनगौन सुनि मरे विना मारेजू ।।२।।

जग पोच कहै परलोकहू कि सोच नाहिं केकई सुवन कोटि कुम्भी अधिकारी है ।
कमल चरन त्रान बिन सिया राम वन लषन सहित जाके हेत पद चारी है ।।
धिग धिग मोंहि जग वादिहि जनम लियो प्रभु दुख कारन को याते पाप भारी है ।
बनादास याही दाह दहै उर आवाँ इव औषध न सूझ अति हेरि हिय हारी है ।।३।।

स्वामी को स्वभाव सील सकुचि सनेह सोचि मातु पितु गुरु बैन पेलि इहाँ आये हैं ।
हारीखेल मो कहँ जितावै वालपन माहिं कोप अपकारी पै न कोई जानि पाये हैं ।।
सुनें जौन कानन सो नैनन से देखे आय हृदय कठोरन दरार भो सुभाये हैं ।
विधि कलाकुसल विचारे उर बनादास केकई सुवन तजि काहि को सुहाये हैं ।।४।।

यहू निज मुख मोहिं कहत न बनै आजु मातु जो असाधु सुत साधु कही भये हैं।
बोवै विष वेलि फलै अमी फल कौन भाँति बचन सुनत लोग बिलखाय गये हैं॥
बनादास सीलसिंधु बोले रघुबंसमनि अतिहि बिनीत बैन अमी जनु जये हैं।
भयो नाहिं अहै होनिहार तुम्हैं समान बिधि निज कला माँहि काहि निरमये हैं॥५॥

मृषा न गलानि करौ तात मम बैन मानि तुम सम तुही तिहुँ लोक मे न आनजू।
पालन औ पोषन सकल जग तोरे हाथ कहत प्रमान ऐसो मोरे अनुमानजू॥
पुन्यवान लोक सब बसत अधीन तव लिये कर अमी कोऊ मीचहि डेरानजू।
बनादास बन्धु लघु मुख पै बड़ाई करै तदपि न रघुनाथ नेक सकुचान जू॥६॥

बातुल बिवस भूत अवसि अकोबिद जे जननिहिं दोष देत सहज अयान है।
किये संत संग नाहिं हिये न प्रकास कछु बनादास सुने नाहिं स्रुतिन पुरान है॥
पूंछ औ बिषानहीन ओढ़ि लिये नरखाल ईस्वर अधीन जगजानत जहान है।
कालकर्म सबही के सीस बर्तमान होत दोष देय काहि कौन ऐसो बलवान है॥७॥

भरत न मित्त चित्त जोरि कर कंज कहे मोहिं सह बंधु बन भेजी रघुनाथ जू।
जानकी लपन जुत आपु औध गौन करी प्रजा परिवार कीजे सबहिं सनाथ जू॥
या तौ बन जाहिं तीनो भाई आप घूमैं घर बनादास कहि नाये कंजपद माथ जू।
ना तौ प्रभु गुरु संग भेजिये लपन बेगि दीजिये रजाय मोहिं चलौ बन साथ जू॥८॥

ना तौ वर्ष चौदह को औध इहै थापैं आप कीजै अंगीकार जो तिलक साज आयो है।
समै समै माफिक रजाय मोहिं दीन करी सारी सेवकाई करौ ऐसो उरभयो है॥
गुरु मातु प्रजा परिवार जाको जहाँ रुचै तहाँ वास करै कछु सोच न जनायो है।
बनादास आपु कृपा काज सारो पूर ह्वैहै धन्य धन्य भरत सकल सुरगायो है॥९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम द्वादसोऽध्यायः ॥१२॥

सवैया

सोच विचार करैं करुनाकर तत्छन उत्तर देत न भाये।
सारी सभा उर माँहि सँभार कहै अब धौं विधि काह बनाये॥
ताहि समय मिथिलेस के दूत उभय रघुनंदन के ढिग आये।
दासबना कै प्रनाम कहे नृप आवन बेगि बसिष्ठ बुलाये॥१०॥

घनाक्षरी

कहे मुनिराज निमिराज की कुसल कहो कुसल तो औधराज संगही सिघाये हैं।
नृपति हवाल सुनि औध चरचारि भेजे भरत को भेद लेन बेगिपुर आये हैं।।
चले चित्रकूट को भरत उत दूत गये सकल प्रसंग मिथिलेस को सुनाये हैं।
वनादास भरत सराहि बहु भाँति नृप चले चित्रकूट दिसि बार नाँहि लाये हैं।।११।।

विस्वामित्र आस्रम मुकाम किये एकवार कौसिक सहित वारानसी पुनि आये हैं।
बहुरि प्रयाग वसि जमुना उतरि रहै आजु प्रातकाल अग्रह महि पठाये हैं।।
दूत बिदा किये हाल भूपति को मुनिराज आयगे समीप राम सबही सिघाये हैं।
गने लोग संगजुत भरत लषन प्रभु सुठि सील सिंधु कोऊ जन जानि पाये हैं।।१२।।

रामसैल देखि नृप वाहन को त्याग किये मुनि द्विज संग माँहि चले मिथिलेसजू।
प्रभुपद प्रेम नेम किये प्रन पूरो जन सकल समाज को न मग को कलेसजू।।
मत्त अनुराग पग डगमग परे महि ऐसो कबि कौन लहै उपमा बिसेस जू।
वनादास ज्ञान जोग बिरति बिज्ञान बोध सबसे बिलच्छन सो जानी प्रीति देसजू।।१३।।

जहाँ राम लषन लगन मन तहाँ लगी मगन अतीव तन छूँछ परि गयो है।
सारो मन कारन बिगारन उबारन को जारन अनेक ज्वर अंत ठावँ ठयो है।।
स्तुतिउ पुरान परमान अनुमान निज ताहि बिन दुःख सुख कहो काहि भयो है।
बनादास बिना मन दिये काज काको भये देखो वस भाव राम अग्र आय लयो है।।१४।।

किये हैं प्रनाम राम नृपति असीस दिये नमत परस्पर भाव आन भयो है।
वन्दे मुनि मंडली बहुरि रघुबंसमनि भरत लषन भूप उर लाय लयो है।।
करुना बिरह कूल भरी प्रेमपाथ सरि ज्ञान औ बिराग धीर तरु ढाहि दयो है।
आस्रम परम पद सिंधु राम लिये जात हरष बिषाद नार जहाँ तहाँ जयो है।।१५।।

मिथिला निवासी औधवासी एक ठौर भये मिलि भेंटि करत बिलाप भाँति भाँति हैं।
भयो है परस्पर रानिन को समागम बिनहि अहार सव रहे तेहि राति हैं।।
भोर भये आय सब जुरे रघुनाथ पास सचिव महाजन सुजन गुरु ज्ञाति हैं।
वनादास सतानन्द कौसिक वसिष्ठ आदि नृपति बिदेह जासु ज्ञानिन में ख्याति हैं।।१६।।

सोक सरि मगन सकल जन भलीभाँति मुनिन विवेक नहुबो हित लगायेजू।
स्तुति औ पुरान सास्त्र नाना इतिहास कहि लोक गति बिबिध सवहि समुझायेजू।।
वाले रघुबीर गुरु दिसि अतिकाल भयो बिनहि अहार उभय याम दिन आयेजू।
वनादास रामघाट सबै अस्नान किये कोल औ किरात बहु मूलफल लायेजू।।१७।।

जहाँ तहाँ टिकी निमिराज की समाज बहु तरु अनुकूल सब काहुन तकायो है।
कामता कलपतरु भयो तेहि काल माहि कामधेनु कोटि गुना काह कवि गायो है।।
सकल प्रकार मिथिलेस पहुनाई करै सीतल सुगंध मन्द पौन अति भायो है।
बनादास कन्दमूल फल नाना अंकुर लै सचिव सयान डेरा डेरा पहुँचायो है।।१८।।

आये मुनिराय पहँ राम करुनाजतन चरन कमल बन्दि बैठे सुचि ठौर जू।
जोरि करकंज कहे गुरुहि निहोरि नाथ लोग दुखी देखि बनै एकहू न गौर जू।।
कंदमूलफल को अहार करि पावैं स्रम मातु कृस गात मन मानत न और जू।
बनादास आय मिथिलेस जू कलेस सहे बनहू मे थोर थोर वसे सब जौर जू।।१६।।

भूप परधाम आप इहाँ ताते धारी पायँ बहुत ढिठाई होत उचित सो कीजिये।
रामहि प्रसंसि गुरु कहत बहोरि भये सबही के ओर को निहोर मुनि लीजिये।।
जैसे दसदिसा मे दवारि न सँभारि जाय आये ह्वै कै विकल कछुक तोष दीजिये।
बनादास दरस पिया सेन तृपत लहे सब उर माहि बिन राम कैसे जीजिये।।२०।।

जहाँ आपु तहाँ औघ सब सुख भलीभाँति तुमहि बिहाय भौन भावै बिधिबाम है।
कन्दमूल फल देत अमी ते सरिस स्वाद कानन लगत सतगुन औधधाम है।।
सबही के हिय माहि संग बनबास करी रामहि विहाय भौन माहिं कौन काम है।
ताते दिनाचारि देखि चरन को पैहैं सुख बनादास बन्दि गुरु गमे थल राम है।।२१।।

करि फलहार सबकोऊ बिसराम पाये जनक के आये औघ लोग सुखी भये हैं।
रहि दिन चारि और रामको दरस ह्वैहै मज्जन करत पयस्विनी मोद लये हैं।।
रामपद अंकित अवनि बन देखि देखि सकल बिषाद सोक सबही के गये है।
कानन की सोमा सहसानन थकित होत बनादास कौन कवि पटतर दये हैं।।२२।

सवैया

करि केहरि ब्याघ्र बराह ससा खगहा मृग मर्कट बैर बिहाई।
रीछ बराह घने बन जीव चरैं धन मे न कहूँ बिषमाई।।
बैल गऊ महिषा बहु जाति लगी सबही कहँ राम रमाई।
दासबना यह देखि दसा न सुभावत जै नर देहहि पाई।।२३।।

घनाक्षरी

मुनि मख जपतप साधन करत भूरि ध्यान औ समाधि माहिं सहज मगन है।
भये भीत रहित स्वच्छन्द सब अंगन से तरु तर सिलन पै सोहत नगन है।।
भयो सुखसिन्धु चित्रकूट रघुनाथ आये सबही कि लागी सुठि राम सो लगन है।
बनादास मिथिला निवासी औधवासी सारे अद्भुत लीला भूमि देखत पगन है।।२४।।

सवैया

फल मूल औ अंकुर दोनन में लिहे औघ निवासिन को मुख जोहै।
कोल किरातन के सुनि बैन मुनीसन के सहजे मन मोहै॥
तू प्रिय पाहुन आये बनै नहिं सेवा के जोग कोऊ बिधि को है।
दासवना यह लीजै कृपा करि तौ हम पावैं अनन्द घनो है॥२५॥

पाप परायन बास करै वन जीव के घातक आमिष भोगी।
पेट भरै न लहै कटि को पट भाँति अनेक रहै नित सोगी॥
धर्म कि बुद्धि कि सुद्धि नहीं पसु संगी सनातन मानस रोगी।
दासवना प्रभु दर्स प्रभाव भई मति उज्ज्वल या विधि जोगी॥२६॥

मानहुँ द्वादस मास वसन्त वसैं हरि कानन भूलि न जाई।
सोभित वृच्छ अनेकन जाति रहे फलि फूलि कै भूमि नेराई॥
कूजत पच्छी अनेक प्रकार के दासवना मन लेत चुराई।
कोकिल कीर चकोर पपीहरा नाचत मोर महा छवि छाई॥२७॥

हारिल तीतिर सारस सोर लहै कवि कौनि बिधा उपमाई।
मानहुँ देव धरे बहु देह रहे रघुनन्दन के जस गाई॥
भाँति अनेक झरैं झरना गिरि सृङ्गन ते जल स्वाद सोहाई।
दासवना बन औ गिरि देखि कै भूले नहीं गृह की सुधि आई॥२८॥

जानि न जात कहाँ निसि औ दिन रामहिं देखि विसेषि सुखारी।
ईस दिनेसहि नारि निहोरि कै जाचतु है बर कोछ पसारी॥
रामके संग सदा बसिये वन याते नही सुख स्वर्गहु भारी।
दासवना कहै पूरुष पेलि कैहौं रहिहै बिधि अंकहि टारी॥२९॥

घनाक्षरी

समय पाय आयो है वसिष्ठ निमिराज पास करि कै प्रनाम सुभ ठौर बयठारे हैं।
कहे नृप मरन कछुक कैकेयी कथा देस काल समय सम बचन उचारे हैं॥
महाराज करी सोई जाते राम औघ चलैं स्त्रुति औ पुरान नेति बिद आपु सारे हैं।
वनादास बार बार मन में महीप गुनैं बनो न विचार इहाँ काहे पग धारे हैं॥३०॥

राम सत्यसिन्धु पितु भक्त स्त्रुति सेतुपाल स्ववस सनातन पुरान स्त्रुति गाये हैं।
तिहूँ काल चहूँ जुग चहूँ बेद बिधि मिलै रामको रजाय सीस सबके सुभाये हैं॥
उतपति पालन प्रलय थिति सम्भु बिधि पानी पौन पावक न सकत चलाये हैं।
वनादास दिगपाल लोकपात जमकाल मरन जनम सारो जाल जानि पाये हैं॥३१॥

भगति अनन्य बस राम तीनि काल माँहि भरत सो सीवा आपु देखिये बिचारिजू ।
रामकी रजाय भूलि भरत न पेलै जोग सकल प्रकार मन ही मे रहे हारि जू ॥
सत्य प्रीति पालि कै महीप परधाम गये आये इहाँ वनो नाहि रहे न सँभारिजू ।
बनादास धूमव बडाई लैकै भले भवन वन ते पठाय बन सकै कौन टारिजू ॥३२॥

राम कहतूति सब नृपहि सुनाये मुनि जनक समेत पास भरत सिधाये हैं ।
आयकै प्रनाम किये प्रीति जुत भाई दोय समै सम आसन दै सबै बैठाये हैं ॥
भरत समीप आई अवध समाज सारी जथाजोग सबकाऊ माथ पद नाये हैं ।
बैठे निज निज ठावँ बनादास भारी भीर भरत निहोरि नृप बचन सुनाये हैं ॥३३॥

सवैया

चाहे सवै कोउ राम चलैं घर तात उपाय कहौ सा बिचारी ।
सील सकोच से भीर रहे सहि भाई प्रजागुरु हैं महतारी ॥
सूर सचिव सबही कर सम्मत है तुम से न कोऊ अधिकारी ।
केवल भक्ति अधीन सनातन वेद पुरान सबै निरवारी ॥३४॥

धीर सँभारि भरत्त कहे सब अंग से बात बिरचि बिगारी ।
बिस्व बिरोधी किये बिधि नीके से कैकै भई जेहि की महतारी ॥
जानकी लछमन राम बसैं बन आन बिना नित हीं बन चारी ।
दासबना परधाम गये नृपसारो अनर्थ को मैं अधिकारी ॥३५॥

घनाक्षरी

ज्ञान अम्बुनिधि तापै बूझत उपाय आपु पितु के सदृस निज हृदय बिचारी है ।
तीनिकाल गति जाहि आमलक सम कर वर बर अमित सदहि जिन टारी है ॥
बनादास भानुकुल रच्छा के करनहार तेऊ सिरभार धरें बात अनिआरी है ।
मेरो ई अभाग यह सकल कहावत है बिधि बिपरीति कोई सकत न टारी है ॥३६॥

बिद्यमान राम मातु गुरु मिथिलेस जहाँ कौसिकादि बामदेव रिषय अनेक है ।
तहाँ मोसे किंकर की बात को पोसाय सकै दोजिये रजाय जोग्य मोंहि करबे कहे ॥
आपु से समर्थ अर्थ सारो करतल जामु सबै को चलाय करि ठानी जौनि टेक है ।
बनादास सारी सभा देखें मुख बार बार कहे हिय माँहि धन्य बुधि औ बिबेक है ॥३७॥

मुनि मिथिलेस जामु सामने नमित चित ओर को हवाल कौन भरत से भाई को ।
जनक नरेस सब अंग सनमानि कहे भायप भगति तात ऐसी कहाँ पाई को ॥
बिरति बिज्ञान ज्ञान करम कुसल नेति राम अनुराग तुव मतिन समाई को ।
बनादास सारदादि सेषहू सहमि जात प्रीति सिंधु माँहि थाह सकत न पाई को ॥३८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापनिर्मंजनोनाम त्रयोदशमोऽध्याय ॥१३॥

सवैया

सारी सभा उठि सद्य चली रघुबीर समीप सबै कोउ आये।
दंड प्रनाम जथाविधि सर्व समय सम आसन को तव पाये।।
जाज्ञबल्क मुनि औ सुतगाधि सतानंद आदि मुनीस निकाये।
दासबना मति सोक सनी उरमाहिं विचार करैं सति भाये।।३६।।

मानौं समाधि रहे सब साधि नही चित की थिति पावत कोई।
वोले तबै रघुनाथ कृपालु अनौसर में रबि अस्त जो होई।।
को न कलेस लहै तेहि काल तेही विधि भो उत्पात बड़ोई।
दासबना मिथिलाधिप औ गुरु रच्छक भे कछु वातन गोई।।४०।।

घनाक्षरी

जहाँ गुरु मिथिलेस वामदेव सतानन्द कौसिकादि रिपि जाज्ञवलिक मुनीस है।
तहाँ मोहि आज्ञा जोग्य समुझि रजाय दीजे सकल प्रकार करै सोई धरि सीस है।।
कहे प्रभु पीछे जाहिं जैसन हुकुम होय करै सबकोय उरराखि विस्वावीस है।
बनादास निज अधिकार छोड़ि करै जोई लोकहू विदित बेद को न भयो खीस है।।४१।।

छप्पय

जाज्ञवल्क्य मुनि कहे नृपति बन तुम्हें न दीन्हा।
दिनाचारि के हेत सूत को संगै कीन्हा।।
करि गंगा अस्नान बहुरि काननहि देखाई।
जनककुमारी सहित फेरि अनेहु दोउ भाई।।
यही वात जग विदित है आय चित्रकूटहु वसे।
कह वनादास सबकोउ लखत कछु तपहू में तन कसे।।४२।।

कृपन कामवस क्रोध होय अयसी अति वूढ़ा।
अघी अलायक रंक मोहवस होवै मूढ़ा।।
नीच प्रसंगी होय चहै कछु कारय साधा।
इनका कहा न करै नही स्रुति विधि में वाधा।।
आपु अवध चलिये अवसि काहू विधि नहिं दोप है।
कह बनादास सुनि मुनि वचन प्रभु उर आयो रोप है।।४३।।

नास्तीक से वचन कहत कैसे मुनि राया।
जैसो पिता हमार कौन तिहुँ पुर में जाया।।

सत्य लिये मोहिं त्यागि प्रान तजि प्रेम निबाहे।
जो दीन्हे बन नाहिं देह छोडे पुनि काहे॥
निज तन खाल खिचाय कै करौ जनक पद पान ही।
कह बनादास दसरत्थ से तदपि उरिन नाही सही॥४४॥

मेटे मुनि की सकुच गुरू रामहिं समुझाये।
नास्तीक पै नाहिं आप को प्रीति कहाये॥
तब कौसिक इमि कहे राम जो करहु बिचारा।
कोई करना जोग्य नेक लाई नहिं बारा॥
वामदेव सोई बदे सतानन्द आदिक सबै।
कह बनादास उर समुझि कै मुनि बसिष्ठ बोले तबै॥४५॥

भरत निरूपम पुरुष राम तब कुल सिव साखी।
मेरी मतिबस अवसि अनुज उरकी रुचि राखी॥
तबहिं कहे मिथिलेस बात मोरेहु मन मानी।
देखि गुरू अनुराग कहे तब सारँगपानी॥
धन्य भरत को भाग्य है मुनि मिथिलेस प्रसन्न अति।
कह बनादास जो कछु कहैं सोई करौं मम बचन सति॥४६॥

लखि निज सिर छर भार भरत कह जुग कर जोरी।
कैकैसुत बिधिबाम कालकर्मौ दिसि खोरी॥
नाही धर्म बिचार ज्ञान को नेकहु लेसा।
सहे अमित उत्पात चरन प्रभु हरेउ कलेसा॥
प्रेम सलिल पालन किये बारेहि ते रघुबसमनि।
नहिं बिरचि सो सहि सक्यो बिलग किये फनिमनहुँ मनि॥४७॥

ह्वै ब्याकुल सर्वाङ्ग सरन रघुबीर तकाये।
निज दिसि देखे नाथ सकल दुख दोष दवाये॥
गुरु गोसाँइ अनुकूल अतिहि मिथिलेस कृपाला।
प्रनतपाल प्रन त्यागि मोर प्रन सुठि प्रतिपाला॥
दूषन सब भूषन भयो मिटा पाप परिताप उर।
कह बनादास भावत हृदय कहत सभा सतिभाव फुर॥४८॥

सवैया

आजु कहै मन बारहि बार लहे सुख हौं अभिषेक भये को।
हानि गलानि कुतर्क गयो सब मोद भयो बन संग गये को॥

सोच सकोच भये सब दूरि रह्यो मन माँहि न कारन एको।
दासबना अनुकूल कृपालु तहाँ फिरि दुःख को वीज बये को ॥४६॥

मोहिं यही मत भावत नीक प्रसन्न रहैं जेहि ते रघुराई।
सील सकोच विहाय करैं सोइ दासबना सबको सुखदाई॥
मोहिं रजाय जो देहिं दया करि सोई करौं उर मोद बढ़ाई।
धन्य भरत्त कहैं सुरसर्व अमात न हर्ष बजाव बधाई॥५०॥

सेवक धर्म अतीव कठोर चहै सब ओर ते जो कुसलाई।
तौ जोगवैं मन स्वामि सदा निसि वासर ही फल चारि बिहाई॥
साहेब के सुख ते सुखिया सुख दुःख कौ भान भले बिसराई।
दासबना अपमान औ मान बिरोधि बिलोके ते जानु सदाई॥५१॥

जो सुख स्वारथ सेवक देखि है तौ सेवकाई को स्वाद न पैहै।
स्वामी सकोच सह्यो जबही जग में सुख कौन प्रकार देखैहै॥
दासबना सब भाँति गयो सेवकाई के धर्म में दाग लगैहै।
लोक नहीं परलोक तहाँ सब चाहत जे सहजे बनि जैहै॥५२॥

सारो सभा मति वस्य भरत्त के राम हिये अति आनंद भारी।
देव प्रसंसत भाँति अनेक जरै सब अंग भले महतारी॥
माँगत मीच विरंचि ते नित्य बनै न कछू सब अंग बिगारी।
दासबना सुठि हानि गलानि मिलै उपमा न मरै बिन मारी॥५३॥

छप्पय

भरत बुलाये राम अवसि निकटहिं बैठारे।
दै आदर सब भाँति कृपानिधि वचन उचारे॥
नरपति राखे सत्य भयो मो कहँ बनवासा।
प्रजामातु परिवार भयो सब जगत उदासा॥
प्रेम पैज करि तन तजे मानहुँ तृनक समान है।
कह बनादास ताको वचन कीन्ह चहो परमान है॥५४॥

पालो मिलि सब कोय बनै जाते सब अंगा।
कीरति अतिहि पुनीत होय जनु पावनि गंगा॥
तात मातु परिवार प्रजा कर पालन करहू।
द्विज जननी गुरुदेव सदा आयसु अनुसरहू॥
एकै साधन सिद्धि सब मम मत ते पूरा परै।
कह बनादास घरहू बनहु गुरु करुना रच्छा करै॥५५॥

मुनि मिथिलेसहु भीर तुमहिं दु:ख लेस न भाई।
अति असमय के समय बंधु सुठि करहु सहाई॥
यहैं अवधि भरि कठिन हेत सब जानौ नीके।
सुठि कोमल सिर कुलिस धरौ अजमंजस जीके॥
मोहिं सब भाँति भरोस है बिपति बाँटिये तात अब।
कह बनादास तुम सेतु हौ मैं जानत हौ भाँति सब॥५६॥

सभा अवसि करि बृहद करत लघु बधु बडाईं।
रघुपति परम कृतज्ञ कहाँ उपमा कबि पाईं॥
जनुगुन अल्प सुमेरु मानि कै कृपा बढावत।
औगुन उदधि समान जानि ताको बिसरावत॥
साहेब सीलनिधान सुठि जे भूले नरदेह धरि।
कह बनादास अति मंद मति बार बार बहु नरक परि॥५७॥

भरतहुँ सजग जनमि कीन्ह गुन दोष विभागा।
पुनि पुनि कहत कृपालु भरे उर अति अनुरागा॥
सकल धर्म के धुरा भक्ति रस सागर पूरे।
लहैं न सारद थाह सेस आदिक मति रूरे॥
तात जक्त आधार तुम तिहूँ काल संसय नही।
कह बनादास करुनाजतन जानत मैं नीके सही॥५८॥

भरत सकुचि सिरनाय जोरि बोले जुगपानी।
प्रभु रजाय सो सीस भागि भलि आपनि मानी॥
आनेउ तीरथ तोय तासु हित काह रजाईं।
पद अंकित बन भूमि दरस इच्छा अधिकाईं॥
अत्रि रजायसु राखि सिर कानन अटन सो तात भल।
जहँ आज्ञा मुनिबर करहिं तहाँ राखिये तीर्थजल॥५६॥

चरन बन्दि रघुबीर भरत आस्रमहिं सिधाईं।
निज निज थल सब गये करत दोउ बधु बडाईं॥
बहुरि सेवकन बोलि तीर्थजल सकल चलाये।
आपु अत्रि मुनि साथ बिनहिं पग थान सिधाये॥
कहुँ मज्जन परनाम कहुँ कहूँ करत असनान है।
कह बनादास लघु बंधुजुत भुजनु मोद निधान है॥६०॥

सवैया

पद अंकित भूमि कृपानिधि की लखि चरन को चिह्न महासुख पावैं ।
वारहि बार प्रनाम करैं रज लै दृग दोय मे अंजन लावैं ।।
तीरथ देवल देखि जहाँ तहँ बूझत हैं मुनि राज बतावैं ।
दासबना सद्धा सुठि प्रीति से बंधु दोऊ तहँ मस्तक नावैं ।।६१।।

छप्पय

कहँ नामजुत महत अत्रि मुनि अमित प्रकारा ।
महिमा तीरथ अतुल कवन कवि कहि लह पारा ।।
चित्रकूट की कला वेद कहि पार न पाये ।
अवध त्यागि जहँ लषन सिया रघुनन्दन छाये ।।
जाय घरे गिरि निकट जल तीरथ तात अनादि यह ।
कह बनादास सो लोप भो भरत कूप पुनि नाम कह ।।६२।।

आय तीसरे पहर चरन रघुनन्दन बन्दे ।
भाषे सकल प्रसंग सुनत प्रभु अवसि अनन्दे ।।
प्रातकाल उठि भरत संग गवने दोउ भाई ।
लिये गने जन संग बिपिन बिचरत सुखदाई ।।
देखि सैल महि सुभग सुठि उपजत उर अनुराग है ।
कह बनादास गति भरत लखि मुनिन सराहे भाग है ।।६३।।

पंच दिवस भे भरत अवसि गिरि कानन चारी ।
जाना अवसर आय अवध की चही तयारी ।।
आय किये परनाम राम पद दूनौं भाई ।
मुनि मिथिलाधिप आदि जुरी तब वृहद अथाई ।।
गुरु मिथिलेसहि वंदि प्रभु कीन्हे विपिन प्रनाम है ।
कह बनादास सुभदिन घरी आजु सीलनिधि राम है ।।६४।।

करि कै नीचे नैन भूमि प्रभु पेखन लागे ।
देखि लोग सब दसा हृदय निज निज अनुरागे ।।
अवलोके रुख राम भरत सेवक सनकारे ।
करहु तयारी सकल नेक लावहु जनि वारे ।।
सजल नयन कर जोरि कै रघुपति दिसि बिनती किये ।
दीजे कछु अवलम्ब अब सेय अवधि भरि जेहि जिये ।।६५।।

चरन पाँवरी तबै राम करुना कर दीन्हे।
राजनीति कुल धर्म उचित उपदेसहि कीन्हे ।।
प्रजा दुखी जेहि राज चढ़ै पातक सिर भारी।
नीति न पालै नृपति निरै होवै अधिकारी ।।
दलबल राखै मन्त्रबल मुख्य धर्मबल जानिये।
कह बनादास मृगया बिपे अति आसक्ति न आनिये ।।६६।।

सवैया

सत्रुहि दाव देखाये सदा पुनि साधु गऊ द्विज को सुठि मानै।
मातु पिता गुरु देव कि भक्ति औ इन्द्रिन जीति सदा तप ठानै ।।
दान कृपान मे सूर सनातन दासबना पर नारि न जानै।
वृद्ध की सेवा औ जज्ञ जथाविधि तौ सब धार्मिक भूप बखानै ।।६७।।

छप्पय

हय हाथी हथियार कुसल सब बात मे होवै।
बिद्या चौदह कुसल वेद बिद बहुतन सोवै ।।
वचन सत्य सब काल सदा दीनन पर दाया।
मुख्य मनोरथ गूढ ईस की भक्ति अमाया ।।
सदा सुखी यहि जग रहै जीतै बैरी बाम को।
कह बनादास सुठि बिसद जस अंत जाय सुरधाम को ।।६८।।

साम दाम अरु दंड बिभेदौ जानै नीके।
चाल सात्विकी रहै भावती सब दिन जीके ।।
मुखिया मुख से चही अंग सब पालनहारा।
खानपान को एक फेर नहिं परै बिचारा ।।
होय भूप बिगरै धरम वाको नहिं निस्तार है।
कह बनादास रघुबंसमनि भाषे बारहि बार है ।।६९।।

भरत समीप बुलाय मिले सुठि अंग लगाई।
परम प्रेम दोउ भाय कहाँ उपमा कबि पाई ।।
बिदा कीन्ह समुझाय मिले रिपुदवन बहोरी।
भेंटे लछमन भरत अंग अंगन ते जोरी ।।
राखे सिर प्रभु पाँवरी मनहुँ पाहरू प्रान के।
कह बनादास गवने भरत लै सब धर्म निसान के ।।७०।।

वन्दे सीता चरन भरत दोउ बंधु बहोरी।
पाये सुभग असीस हृदय आनन्द लहोरी॥
चित्रकूट के मुनिन भरत पुनि कीन्ह प्रनामा।
सबसे लहे असीस भये सुठि पूरन कामा॥
दीन्हे लोग चलाय सब आपु रहे सुठि मात हित।
कह वनादास सिविका सकल साजे बहुविधि लाय चित॥७१॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनो नाम चतुर्दसमोऽध्यायः॥१४॥

सवैया

सासुन जाय मिली तबही सिय भाँति अनेक ते आसिप पाई।
धाय मिली जननी लपटाय विदेह के पाँयन पै सिरनाई॥
दीन भले उपदेस असीस किये सब अंग अतीव बड़ाई।
पुत्री पवित्र किये कुल दोय सदा तव कीरति धौल सोहाई॥७२॥

जाय मिले रघुनन्दन मातन बंधु समेत लिये उरलाई।
दै सुभ आसिप कीन्ह विदा गुरुदेव के पाँयन पै सिर नाई॥
भेंटे लगाय हिये मुनिराय भली विधि से सुभ आसिप पाई।
दासबना मुनि मंडली वन्दि बहोरि बिदेह मिले दोउ भाई॥७३॥

सासुहि कीन्ह प्रनाम कृपालु असीस लहे निज आस्रम आये।
मातन यान चढ़ाय सबै वन देवी औ देवन सीस नवाये॥
गौन किये दोउ बन्धु भरत्त निषाद तबै प्रभु पास सिधाये।
दासबना पद बंदन कै चलो संग भरत्त के सो मन लाये॥७४॥

छप्पय

जाजवल्क्य सुत गाधि वाम देवादिक सारे।
मुनि बसिष्ठ मिथिलेस तबै अवधहि पग धारे॥
चले जात सब मष्ट कहत कछु काहु न कोई।
प्रभु गुन सील स्वभाव सुरति पल ही पल होई॥
समाधिस्थ चित मत्त मति विरह भरे अनुराग है।
कह वनादास सारदौ नहि सो करि सकै बिभाग है॥७५॥

मग बीचै करि बास आय केवट के धामा।
राम सखा सब भाँति दिये सब कहँ विस्रामा॥

बहुरि चलेउ उठि प्रात सई तट कीन्हे बासा।
चौथे दिन भो आय गोमती तीर निवासा।।
दिन पँचये आये अवघ बास किये मिथिला नृपति।
कह बनादास आये जनक पुर जन भे सब सुखी अति।।७६।।

करिकै सार सँभार गये बीते दिन चारी।
अवध अन्न जल केर रहे नित अन अधिकारी।।
भरत आय कर जोरि चरन गुरु बन्दन कीन्हा।
आयसु होय सनेम रहौ मुनि आज्ञा दीन्हा।।
जो तुम कछु करिहौ सहज सो ह्वै है जग लीक जू।
कह बनादास तेहि मग चलत सब विधि सब कह नीकजू।।७७।।

प्रथम द्विजन को बोलि बिबिध बिधि बिनय सुनाये।
जो मोहि आज्ञा जोग्य तवन भाषव सतिभाये।।
सेनप सचिव सुमन्त प्रजा परिजनहिं बुलावा।
सबको करि परितोष भरत सुख बास बसावा।।
जननी गुरु सेवा सकल सो सौंपे रिपुसूदनहिं।
कह बनादास सम्मत किये राम संग मानौ बनहिं।।७८।।

राम मातु पहँ आय जोरि कर आज्ञा लीन्हा।
नन्दिग्राम प्रन कुटी सोधि महि आसन कीन्हा।।
सिंहासन पादुका करै ताकी नित पूजा।
रामनाम अस्मरन परन राखे नहिं दूजा।।
लै रजाय कारज करत डरत मनहुँ रघुवीर डर।
सम दम नेम अखंड व्रत की महिमा कह भरत कर।।७९।।

मुनि तापस लखि लजित गुरुहिं संकोच जनावत।
अति दुष्कर तप करत नाहिं उपमा कबि पावत।।
पुलक गात दृग नीर स्वास प्रतिनाम उचारत।
हृदय कंज सिय राम रूप लच्छनहिं निहारत।।
दसरथ धन लखि धनद लघु सुर सुरेन्द्र इच्छा करत।
कह बनादास ताते विरति सुठि मुनि व्रत को आचरत।।८०।।

ज्यों चम्पक बन भृङ्ग पाव पायोज पात जनु।
चक चकई निसि समय ताहि बिधि त्याग भरतमनु।।

जन्म सुरज ज्यों भोग वृद्ध तरुनी नहि पेखत।
अवधराज सुख सकल तया भूले नहिं देखत ॥
विधि हरिहर इन्द्रादि पद राग न आवत जासु मन।
कह बनादास तिहुँ पुर विषे रामै केवल प्रान धन ॥८१॥

सवैया

जो जग जन्म न होत भरत्त को को अनुराग गली लखि पावत।
दीन मलीन दुखी जग जीवन कौन बिराग के पंथ चढ़ावत ॥
ईस्वर जीव को भाव जथाबिधि दासबना फिरि कौन बतावत।
ऐंड़ अनोखी द्वितीय नदी सत ताते नितै हमरे हिय भावत ॥८२॥

छप्पय

चहै राम पद प्रीति भरत को भाव विचारै।
मन बच क्रम उर धरै तरै औरन को तारै ॥
जाकी रहसि अनूप सदा द्युति चन्द्र समाना।
कबहूँ घटन न जोग बढ़त दिन दिन जग जाना ॥
राम स्ववस जिन वस किये कीरति कलित कलंक बिन।
कह बनादास जेहि जग भजत तजत नहीं ते एक छिन ॥८३॥

मन्दर जासु बिवेक बुद्धि रजु मये वेदनिधि।
भक्ति अमो लिये काढ़ि बदै जेहि सन्त परम बिधि ॥
सर्व अंग ते हीन दीन जे राम दुआरे।
अति अपंग आलसी जगत से भये खुवारे ॥
ऐसेन पै करि अति कृपा निज दिसि प्याये लाय चित।
कह बनादास तिहुँ काल में भरत सदृस देखे न हित ॥८४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम पंचदसमोऽध्याय। ॥१५॥

छप्पय

चित्रकूट बसि राम किये नाना विधि लीला।
सो सुख जानन हार महामुनि बर दम सीला ॥

एक बार चुनि कुसुम बसन सीतहि पहिराये ।
फटिक सिला आसीन प्रीति प्रभु सिय लखि माये ।।
सुरपति सुत ह्वै काक सठ किय कठोर करतूति अति ।
कह बनादास हरि बल उदधि थाह लीन चह मन्दमति ।।८५।।

सीता पद पाथोज चोंच हति बहुरि उड़ाना ।
चली रुधिर की धार राम करुना निधि जाना ।।
सीक सरासन बान बनै रघुबीर पवाँरे ।
उड़ो अमित भय खाय तीर तेहि संग सिधारे ।।
लोक लोक भागत फिरै पीछा तजै न नाथ सर ।
कह बनादास ब्रह्मादि सिव अवलोके नहिं राम डर ।।८६।।

फिरत फिरत बहु लोक भ्रमित स्रम आयो वोही ।
पितु समीप तब गयो न राख्यो रघुपति द्रोही ।।
पुनि भाग्यो भय खाय मिल्यो नारद मग माहीं ।
देखे अतिसय बिकल दया आई उर माहीं ।।
तब मुनीस कह ताहि सन अवसि होयगो तुव मरन ।
दूरिहि ते उपदेस करि तब पठयो रघुबर सरन ।।८७।।

त्राहि त्राहि प्रभु सरन पर्‌यो कहि ब्याकुल भारी ।
पाहि पाहि पदकंज बिरद प्रन तारन हारी ।।
दिये आँखि यक फोरि प्रान राखे भगवाना ।
अवसि उचित बध तासु राम सुठि दया निधाना ।।
निज करनो फल पायकै सुरपति सुत धामहि गयो ।
कह बनादास रहि कछुक दिन राम गवन करते भयो ।।८८।।

सवैया

जानकि बन्धु समेत कृपानिधि तौ मुनि अत्रि निकेतहि आये ।
आगे से आप लिये रिपि रामहि कीन प्रनाम सो कंठ लगाये ।।
दै सुभ आसिष लाय कै भौनहिं आसन दिव्य दिये अति माये ।
भेंटी सिया अनसूयहि बेगि भले मन भावत आसिष पाये ।।८९।।

छप्पय

सकल धर्म पतिदेव तियहि चहुँजुग तिहुँकाला ।
मन ,बच कर्मन और लोक बेदौ प्रतिपाला ।।

अवसि सुगम सुठि कठिन सरिस खाँड़े की धारा।
जो भामिनि भै पार नाहि भूले संसारा॥
उत्तम मध्यम नीच लघु चहूँ भाँति परमान है।
कह बनादास सीता सुनहु राम तुम्हिं प्रिय प्रान है॥६०॥

नहिं जग भयो न अहै नहीं अब होनेहारा।
मैं मेरा पति एक बृहद को यही विचारा॥
पिता पुत्र सम अनुज तीनि ते चारि न दृष्टी।
सो मध्यम त्रिय कहो भांति यहि देखै सृष्टी॥
समय पाय मन हलै चलै भरि जन्मन तन ते।
पतिहि सेय भै पार ताहि लघु करि कविगन ते॥
भैं वस विन औसर वचै सो निकृष्ट तिय मानिये।
कह बनादास पतिव्रता वड़ि प्रथम रेख तव जानिये॥६१॥

सवैया

जो व्यभिचारिनि तीय अहै तिनको जग जन्म मृषा विधि दीन्हा।
कायक वाचक औ मन से अपनो पति सेय नहीं वस कीन्हा॥
कोटिन जन्म को खोय दिये भरतार भजे पर पापते पीना।
दासबना मुख देखन जोग न निंदित लोक तिहूँ मति हीना॥६२॥

छप्पय

अनसुइया चुनि वसन सुभग सीतहि पहिराये।
नमित परस्पर उभय कहाँ कवि पटतर पाये॥
मुनिवर उर अति प्रीति विविध फलहार करावा।
बन्धु सिया जुत राम तुष्ट रिषि सुठि सुख पावा॥
करि निवास रघुवंसमनि विदा माँगि कीन्हे गवन।
कह बनादास अनुराग मुनि पटतर कवि पावै कवन॥६३॥

सवैया

अग्र चले रघुवीर बने कटि तून कसे मुनि को पट भाये।
सीस जटा पदकंज ,से कोमल मध्य में सीय महाछवि छाये॥
पीछे से लछमन लाल चले कवि हेरि नहीं उपमा कहूँ पाये।
दासबना रति औ मधु मार चले बन ज्यों रिषि वेष बनाये॥६४॥

छप्पय

असुर बिराध निपाति मिले मग मुनि सरभगा।
देखि राम सिय लषन भयो उर अमित उमगा ॥
रघुपति कीन्ह प्रनाम धाय मुनि हृदय लगाये।
लह्यो गई मनि फनिक रक पारस जनु पाये ।
गयो काल बहु लखत मग देखि प्रभुहि कृतकृत्य अब।
कह बनादास अनुराग सुठि अस सजोग प्रभु मिलिहि कब ॥६५॥

कीजै छनक बिलम्ब दीनजन कारज हेता।
मिल्यो त्यागितन तुमहि नमित नित ऊर घरेता ॥
आनि काठ रचि चिता बैठि तापर मुनि धीरा।
लषन जानकी सहित खडे आगे रघुबीरा ॥
जोग अगिनि तब प्रगट करि देह दहे सरभग है।
कह बनादास भागी परम कीरति पावनि गग है ॥६६॥

रिषि निकाय गति देखि कहत मुनिवर बडभागा।
अस्थि अमित अवलोकि कहे प्रभुजुत अनुरागा ॥
याको कारन कह्यो समय लखि सबकोउ गाये।
नाथ निसाचर निकर अमित मुनि धरि धरि खाये ॥
सजल नयन रघुबसमनि अवनि रहित राच्छस करौ।
कह बनादास प्रन अवसि करि तौन धनुप सर कर धरौ ॥६७॥

सकल मुनिन आस्रमन जाय उर मोद बढाये।
अभय भये रिषि अमित करहि जपतप मन लाये ॥
राम भरोसो जाहि ताहि को चितवन हारा।
चक्र सुदर्सन अहै तासु हित नित रखवारा ॥
बूझन की मरजी नही तुरित काम अपनो करै।
कह बनादास गति अवर नहिं जो तेहि बल धीरज धरै ॥६८॥

सवैया

नाम सुतीच्छन सिष्य अगस्त्य को राम बिलच्छन सो अनुरागी।
कायकमान सबैन हुते गति और नही अति ही बड भागी ॥
जाने कृपालु किये बन गौन समय तेहि प्रीति हिये सुठि जागी।
दासबना करै कोटि बिचार रह्यो अस्नेह निरन्तर पागी ॥६९॥

साधन हीन मलीन औ दीन कृपा करिहैं किमि राम कृपाला।
जोग न जज्ञ नही व्रत नेम न प्रेम को लेस परे जगजाला॥
सीलको सागर राम उजागर है इतनो अवलम्ब बिसाला।
दासवना जन दोष न देखत सो नित ही अपनो प्रन पाला॥१००॥

घनाक्षरी

रुदत हँसत कहीं नृत्यत करत गान गदगद गिरा पुनि पुलक सरीर है।
कही चलें आगे कहीं पीछे को बहुरि जात कही चुप रहैं बहै नैनन सों नीर है॥
मन बुद्धि वचन से दसा परे पेखि परै मग में अचल अति बैठो मति धीर है।
वनादास प्रीति रीति गाहक न राम सम जानकी लषनजुत आये रघुवीर है॥१॥

अच्छ अरविन्द भ्रुव बंक स्रुति कुंडल है सीस पै मुकुट काकपच्छ मन हरे हैं।
तिलक विसाल भाल उभय रेख तड़ित सी मानहुँ अचल रहो मुक्तमाल गरे हैं॥
अरुन अधर द्विजि चन्दमुख मन्द हास नासिका अनूप छवि कीर तुंड तरे हैं।
वनादास हरिकन्ध कम्बुग्रीव सोभा सींव द्युति मर्कत स्याम वारिधर परे हैं॥२॥

उर भुज वृहद केयूर कर कंकन है मुद्रिका करज करकंज छवि छाई है।
पीत जज्ञ हेमवर्न भृगु चर्न रमा रेखा त्रिबली उदर माहि सुठि मन भाई है॥
धनुबान तून कटि पटपीत सोभा सींव जामा लाल लसैं कवि उपमा न पाई है।
वनादास को रहै कलित चित चोर जनु मोर मन मोहतन बरनि सिराई है॥३॥

उभय जानु पीन काम तूनहू को निन्दै जनु लसत रोमावलि सो अति मन मोहे जू।
कंज पाँय कलित ललित नख क्रान्ति सुठि तिहुँ पुर विदित सो निति मति पोहेजू॥
वनादास जलमीन के समान रहै सदा जैसे भृङ्ग कंज को न छनक बिछोहे जू।
वामभाग जानकी जगत मातु सोभा सींव निकट तमाल वल्ली कनक के सोहेजू॥४॥

अंग अंग पै अनंग रति कोटि भंग होत सेष सारदादि सबै पैरि पैरि थाके हैं।
सोभा सिन्धु उभय रूप कबि को सराहि सकै हिय कंज मुनि अवलोकि छबि छाके हैं॥
बनादास राम गहि बाँह को बुलावत भे रिषि वेप जानिकै न चाहत सों ताके हैं।
करि चतुराई भुज चारि रघुराई भये खोलि दिये नैन तब पेखे वीर बाँके हैं॥५॥

पर्यो मुनि चरन उठाय उर लाये राम मर्कत कनक बिटप जनु भेंटे हैं।
तृपत न मानत छुधित ज्यों सुना जपा ये वनादास प्यास अभिअन्तर कि मेटे हैं॥
आनन जलज रघुवीर अच्छ भृङ्ग भयो बासना विहीन सुचि सूरति समेटे हैं।
पुलक सरीर नैन नीर गदगद कंठ बोलत बचन जनु सुधा सों लपेटे हैं॥६॥

छप्पय

बन्दि जानकी लषन करत अस्तुति कर जोरे।
जै जै रामकृपालु अंग सबहित सुठि मोरे॥
जै जै दीन दयालु पाल स्रुति सेतु सनातन।
जेहि ध्यावत जोगीस जारि बुधि चित्त अह मन।
मानस हंस भुसुंडि सम्भु उर पकज भृङ्गा।
जयति जानकी जुक्त रूप रति कोटि अनगा॥
जैसानुज रघुकुल कमल पोषन भव भजन कुसल।
कह बनादास जै कृपानिधि चरन कमल ते मोर भल॥७॥

जै दसरथ सुत सुखद करत सुभ चरित अनूपा।
कौसल्या उर मोद बिबर्द्धन बालक रूपा॥
पुरजन प्रजा अनन्द हेत सुर बिटप समाना।
गाधिसुवन दुख दवन खलन घालक बलवाना॥
जयति उधारन मुनि बधू जनक नगर मगल करन।
कह बनादास जन अभयप्रद भद्र सकल असरन सरन॥८॥

जै महेस को दंड खंड नृपमान बिभंजन।
भृगुपति गंजि गुमान सकल सज्जन मन रंजन॥
सीय बिबर्द्धन मोद विजयतिहुँ पुर जस पावन।
सकल सोक सताप पाप परि पंथ नसावन॥
राजित माड़व कनक तर बाम भाग स्री जानकी।
कह बनादास को नहिं करै लखि नेवछावरि प्रान की॥९॥

ब्याहि बन्धुजुत गवन अवधपुर आनंद भारी।
गुरु पितु प्रजा प्रमोद अमित हरषित महतारी॥
कानन गवन बहोरि देव मुनि बिपति बिदारन।
खल घालक जनु काल अवनि सुठि भार उतारन॥
सूर्पनखा कुद्रूप कृत खर दूषन त्रिसिरा कदन।
कह बनादास बधि बालि पुनि सुठि सुकंठ आनंद सदन॥१०॥

लंक अमित उत्पात पवनसुत सिय सुधि लायो।
सरनागत रिपुबन्धु तुरत नृप पदवी पायो॥
सेतु बाँधि सिव थापि घेरि लंका गढ़ बंका।
कुम्भकरन घननाद घालि रावन निस्संका॥
बषि सुमन सुर हर्षजुत ब्रह्मादिक अस्तुति भनैं।
कह बनादास रघुबसमनि गुनगन को ऐसा गनैं॥११॥

ह्वै विमान आरूढ़ लषन सिय सखन समेता।
बहुरि अवध कृत गवन नमत पहु ऊर धरेता॥
भाल भ्राज अभिषेक देव मुनि जै जै बानी।
रघुनन्दन नरनाह कोसलापुर रजधानी॥
यह चरित्र ह्वै है विसद मन भावत पैहैं सबै।
कह वनादास भावत मनै मम रुचि सो दीजै अबै॥१२॥

सवैया

तू मम प्रान समान कहे प्रभु माँगहु जो मन भावत नीका।
बन्धु सियाजुत वास करो हिय राजसी साज सो भावत जीका॥
दै बर अंग लगाय मुनीसहि गौन किये रवि के कुल टीका।
दासवना गुरु दर्सन हेत सुतीच्छन संग चलो मन बीका॥१३॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रवोधकरामायणे
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम षोडसोऽध्यायः॥१६॥

सवैया

जाय कहे प्रथमै गुरु ते सुमिरो निसि वासर जा कहँ देवा।
संभु विरंचि सदा जेहि ध्यावत कोऊ न जानि सकै कछु भेवा॥
दासवना दसरत्थ कुमार सदा सुर सिद्ध करैं जेहि सेवा।
आये मिले तव आस्रम को तेई जाहि विना सब जीवब नेवा॥१४॥

पूरन पैज परी करुना तब भाँति अनेक अगस्त्य सराहे।
धन्य सुतीच्छन जन्म अहै तुव तात भली विधि नेम निवाहे॥
कुंभज कीन विलम्बन नेकहु राम मिले कहँ अन्तस चाहे।
दासवना चले अग्र ततच्छन पच्छ जमे जनु प्रेम प्रवाहे॥१५॥

जानकी बन्धु समेत कृपानिधि आय मुनीसहि कीन्ह प्रनामा।
धाय लगाय लये उर मे मुनि ज्यों फनिगै मनि ता विधि रामा॥
मंगल छेम भली विधि बूजिकै लावत भे तवहीं निज धामा।
दासवना दियो आसन दिव्य सो धोसर ह्यो तवही भरि यामा॥१६॥

राजित भे मुनि मंडली मध्य सबै दिसि सन्मुख राम गोसाईं।
मानहुँ चन्द चकोर लखैं रिषि तृप्त लहै न विसेष लोनाई॥
आजु धरी धनि राम कहे तव दुर्लभ संत समागम पाई।
दासवना जेहि सेये बदै स्तुति जन्म अनेकन को अघ जाई॥१७॥

गावत सास्त्र पुरान महातम जो तन धैन किये सतसगा।
काह भये तन पाये मनुष्य को दासबना सबही बिधि नगा॥
साधन कोटि करै बिधि बेद के होत नही कबही भवभगा।
कायक बाचक मानस ते न लगै प्रिय साधु सोई सठबगा॥१८।

होय उदय बहुजन्म के सुकृत तौ सतसगति को सुख पावै।
सभु सुरेस बिरचिहु को पद ब्याजहु से उपमा नहि आवै॥
दासबना जेहि सेवन से सहजे भवरोग कि ताप नसावै।
को अस मूरुख त्यागि कल्पतरु अघ बबूर के बागहि धावै॥१६॥

कीजै बिचार सोई मुनि नायक जा बिधि रावन को बध होई।
जो सुरसाधु सतावत भूसुर औ परनारि अनेक बिगोई॥
धर्म बिघ्वस किये सब अग से कम्प धरा नहि धीर धरोई।
आपु प्रताप ते बात नही कछु दासबना बिहँसे मुनि जोई॥२०॥

राम सनातन रीति नई नहि जो निज दासन देत बडाई।
रूप दुराय बदै लघुता निज सोभा सदा तुमही कहँ पाई॥
भानु प्रकास ते चच्छु लखै सब ना तरु अध समान सदाई।
दासबना स्रुति नेति पुकारत जाके बिना धिग जीवन जाई॥२१॥

घनाक्षरी

आदि मध्य अतहीन जीरन नवीन नाहि पीन,नाहि खीन रस एक सबकाल जू।
अचल अखड परिपूरन बदत वेद जानै जन भेद सब हिये मे बहाल जू॥
अज उत्कृष्ट गूढ सूक्ष्म स्वतन्त्र नित्य निराकार निर्द्वन्द्व सारो प्रतिपाल जू।
बनादास अकथ अनीह आवरन बिन स्वेत पीत असित हरित नहि लाल जू॥२२॥

सतचिद आनँद सघन सुद्ध निर्बध्य निस्सग निर्गुन निरजन अनूप है।
बिरुज बिलच्छन अलख अद्भुत अतिमति न सकति कहि अगम सरूप है॥
बनादास निराधार सर्बाधार निर्विकार निर्बिकल्प निगम बदत बिस्वरूप है।
चेतन अमल दिसि बिदिसि न खाली कहूँ अकल कलानिधान भयो सुत भूप है॥२३॥

बिस्वभार हरन के हेत अवतार भयो बूझत उपाय मोहि सो तो मेरो भाग है।
अहोदिन दर्सन को पाय कृतकृत्य भये सगुन सरूप माहि मुठि अनुराग है॥
जानों गूढ गति पै निरति मति याही दिसा बनादास निर्गुन ते नितही बिराग है।
जाने जो सगुन सुख माने न अगुन मन बस्तु एक उभय कहै अवसि अभाग है॥२४॥

कन्द मूल फल बहु भाँति के मँगाये मुनि अकुर औ दधि दूध इन्दु को बिकार है।
रघुनाथ जानकी लषन को सनेह मुठि तबहि अगस्त्य जू कराये फलहार है॥

ह्वै कै तुष्ट तबहि सयन किये रघुवीर नित्य को निबाहे उठि होत भिनसार है।
घनादास बन्दि मुनि चरन सनेह जुत रविकुल रवि किये चलन बिचार है ।।२५।।

सवैया

बास करें केहि ठाँव मुनीस कहे तव कुम्भ जवै नर साला।
पंचवटी पर पर्नकुटी करि साप हरो मुनि केर विसाला ।।
तून कोदंड दिये निज हाथ कहे मरि हैं यहि ते दसभाला।
दासवना सिरनाय सनेह से ताहि लिये दसरत्थ के लाला ।।२६।।

गौन किये प्रभु बन्धु सियाजुत गीध मयत्री किये तव जाई।
भाँति अनेक जटायु दिये वल बास करो बनया रघुराई ।।
चिन्ता न कीजिये कौनिहुँ वात की भूप सखत्व कहे समझाई।
दासवना हरि आवत ही बन केरि दसा कछु बर्नि न जाई ।।२७।।

लागे सबै तरु पल्लव पावन भार ते भूमि रहे नियराई।
फूले फले ततकाल कृपा प्रभु मानो बसन्त वस्यो नित आई ।।
गुजत भौर भले रस चाखत कूजत पक्षी घने समुदाई।
दासबना वन सोभा भई अति पार लहै कवि को उपमाई ।।२८।।

बोलत कीर चकोर पपीहरा हारिल तीतर सोर सोहाई।
सारिका आदि कुहू करै कोयल सारस रौ मन लेत चुराई ।।
मोर नटैं निज छाँह निहारत भो वन भाँति सबै सुखदाई।
पंचवटी पर पर्नकुटी तट रेवा रहे रघुनन्दन छाई ।।२९।।

घनाक्षरी

दंडक विपिन निप्पाप भयो राम आये वसत निकाय मुनि जप तप करे हैं।
आस्रमन जाय जाय सुख अधिकाय दिये पाप के अमित वल काहूहि न डरे हैं ।।
देखिकै अनूप रूप होत कृतकृत्य सव जोग जज्ञ फल लहि सुकृत सों भरे हैं।
वनादास फिरत अहेर देखि मोहैं मृग अति छवि छाके प्रान लोभ ते न टरे हैं ।।३०।।

व्याघ्र सिंह और बराह ससक स्रृगाल मृग मर्कट गयन्द गऊ संग माँहि चरे हैं।
प्रवल प्रताप राम रूप सव देखि देखि त्यागे विपयो कोई बैर नाँहि करे हैं ।।
भये वन जीव सुखी प्रजा ज्यों सुराज्य पाय बनादास सूखे तरु सुठि हरे हरे हैं।
पावन वधत मृग ताहि परधाम देत राम सम साहेव न कोऊ आँखि तरे हैं ।।३१।।

सवैया

सीस जटा मुनि को पट है कटि तून कसे धनु वान चढ़ाये।
कंज बिलोचन भौंह सिकोरि कै ताकत धात महाँ उपमाये ।।

दासबना झुकि झाँकत हैं मृग अग अनेक अनग दबाये ।
मूरति सो हुलसै हिय जाहि के सो भल जन्म लिये सुख पाये ।।३२।।

सीतल मन्द सुगन्ध समीर भये सरिता जल निर्मल नीके ।
अकित भूमि भई पदपकज ते सीय सुखी अवलोकनि पीके ।।
बन्धु करै सुधि भूले न भौनकि सेवा समाधि लगी सुठि ठीके ।
राम सिया करुना दृग देखि कै दासबना कछु सोच न जी के ।।३३।।

घनाक्षरी

कहत पुरान कथा नाना इतिहास राम सुनि सिय लषन अमित सुख पाई है ।
उतपति पालन प्रलय थिति जगति की बेद औ बेदान्त कहै कहाँ लौं बड़ाई है ।।
रावन की भगिनी सुपनखा से नाम जाको अतिही बिचित्र कामरूप को बनाई है ।
नखसिख भूषन अनूप साजि बनादास समय एक पचबटी प्रभु कुटी आई है ।।३४।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम सप्तदसमोऽध्याय ।।१७।।

घनाक्षरी

देखि रामरूप काम मोहित बिसेष भई अतिही कटाच्छ करि बोलि मृदु बैन जू ।
रूप सुठि मोरे निज रुचि बर पाये नाहि ताही ते कुमारी रही सहे दुख मैन जू ।।
खोजत फिरत बिधि रचे हैं संजोग भले अवलोकि आपु उर आयो भले चैन जू ।
आजु पूजी आस बनादास सावकास भलो सिय दिसि देखि प्रभु किये नैन सैन जू ।।३५।।

सवैया

बन्धु कुमार अहै लघु मोर सँजोग भलीबिधि भामिनि तोरा ।
गवनी बहोरि सो सेष समीप अनेकन भाँति से ताहि निहोरा ।।
सुन्दरि सेवक मैं उनको नहि तोर निवाह बिचार है मोरा ।
दासबना समरत्थ हैं साहेब चाहे करें सो गई प्रभु ओरा ।।३६।।

राम बहोरि पठाई उतै उर मे न सकोच करी कछु माई ।
राजी करौ यहि को हँसि कै कहे फेरि अनन्त समीप सो आई ।।
तौ मुसकाय कहैं पुनि लछमन तोहि बरे अतिसय अघमाई ।
दासबना सकुचाय तबै निज रूप भयकर सो प्रगटाई ।।३७।।

नासिका स्रवन हरे ततकाल कृपालु को बन्धु न बार लगाई ।
गेरु पनार मनो गिरि शृंग से सो खर दूषन पास सिधाई ।।

घोर चिकार करै अतिसय गति देखि कै वूझत भे तिहुँ भाई।
दासवना सो प्रसंग कहे सव कोपि चले सजि सेन वजाई।।३८।।

राम कहे तव बन्धु दिसा सिय लै गिरि कन्दर जाहु सबेरे।
गौन किये प्रभु आयसु पाय कै आय गये सठ सो भट भेरे।।
गर्जत तर्जत भाँति अनेकन भूलेहु नाहि दया जिन के रे।
दासवना त्रिसिरा खर दूषन राम को रूप अनूप लखे रे।।३६।।

देव अदेव लखे नर औ मुनि ऐसे विलोके न सुन्दरताई।
जो भगिनी इन कीन्ह कुरूप तवौ वध लायक हैं नहि भाई।।
मन्त्र विचार किये मिलि कै सव तौ चर चातुर वेगि बुलाई।
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु तासु प्रसंग लै आवहु जाई।।४०।।

घनाक्षरी

भूप के कुमार किये अवसि अनीति वड़ि तवौ मंत्र आयो उर ऐसन हमारे हैं।
देहिं निज रारि नारि को न रहो काम कछु जाहि घर वन्धु उभय प्रान लै विचारे हैं।।
वनादास आयो दूत तवै रघुनाथ पास निज प्रभु वचन सो कहत प्रचारे हैं।
कहे रघुवीर सूर वीर को न काम यह दया रिपु ओर काम कायर को सारे हैं।।४१।।

छत्री को स्वभाव फिरै कानन अहेर हित ऐसे मृग मारि मारि जग जस लेते हैं।
मारे कई एक औ विचारे कई एकन को इनको अवसि मारि मारे आगे केते हैं।।
धाये जुद्ध करन को लागो डर मरन को वनादास जाहि घर जीवन जो चेते हैं।
समर विमुख मारे अतिहो निषेध होत ताते छोड़ि देहैं पाल सदा स्रुति सेते हैं।।४२।।

सवैया

जाय कै दूत प्रसंग कहे सुनि स्रोन जरे अतिहो तिहुँ भाई।
मारहु वेगि की बाँधहु सद्यहि धाय चलो रिपु की कटकाई।।
राम अकेल सों जुद्ध परी रवि वाल समान सों घेरिनि आई।
दासवना दस चारि हजार वली विरदैत्य करै को वड़ाई।।४३।।

धाय धरौ पकरौ वहु वोलत वाजा जुझाऊ अनेक वजाई।
अस्त्र औ सस्त्र पर्वारत भूरि सो काटि किये रज से रघुराई।।
घोर चिकार करे रजनीचर राम हिये अतिक्रोध जनाई।
कीन टँकोर सरासम को भये दासवना वधिरे समुदाई।।४४।।

कोप किये त्रिसिरा खर दूपन वान अनेकन रामहि मारे।
काटि दिये सिगरे तिल तुल्य सो वेगिन राचछ सात निकारे।।

धरते धनु पै सो हजार गुना चले लाखन ह्वै किये जर्जर सारे ।
दासबना लखि राम परस्पर लागे कटैं सहजै भट भारे ।।४५।।

घनाक्षरी

बानन सो मारि रघुनाथ जू को तोपि लियो मानहुँ निहार माँहि दिनमनि दुरे हैं ।
समर सुभट तीनि भाई को बडाई करैं रावन समान सूर नेकहु न मुरे हैं ।।
रिपु सर काटि कै हजार तीर मारे प्रभु दस दस सहस सो बेधि गये उरे हैं ।
भये सुठि स्रमित भ्रमित झूमि झूमि रहे बनादास कवि उर उपमा न फुरे हैं ।।४६।।

सँभरि कै मारे मक्ति सूल रघुनाथ जू पै आवतहि ताहि तिल सम प्रभु काटे हैं ।
कोप करि मारे राम सहसपचीम बान अतिही कराल लुत्थ लुत्थन पै पाटे हैं ।।
सिरभुज रुड खड खड परे भूमि तल लरत परस्पर एक एक डाटे हैं ।
बनादास अतिही सरोष तीनि भाई धाये प्रबल प्रताप वीरताई परी बाँटे हैं ।।४७।।

सतसत बान राम मारिकै गिराये भूमि रुड मुड बाहु भिन्न भिन्न करि दिये हैं ।
सकल सुभट लरि मरे है परस्पर रामाकार देखि देखि अचरज हिये हैं ।।
रुधिर के गाढ़ भरे भूमि तल जहाँ तहाँ जुत्थ जुत्थ जोगिनी सो चाटि चाटि लिये है ।
बनादास गीध चील्ह भुजा ले उडात केते कालिका कराल घट्ट घट्ट रक्त पिये है ।।४८।।

जम्बुक हुवात खात भूत औ पिचास नाचैं एकन ते एक छीनि छीनि लै परात है ।
कटकटात कूदत कला अनेक केलि करैं ब्याह को बिचार करि साजत बरात हैं ।।
मुड फोरि फोरि गूदा सानि सानि सोनित सो सेतु आसमान जहाँ तहाँ सब खात हैं ।
बनादास देवता अकास माँहि जय जय भनैं सुमन बरषि बार बार उमगात हैं ।।४९।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनानाम अष्टदसमोऽध्याय ।।१८।।

कुडलिया

लछमन लाये जानकी कुटी बिराजत राम ।
मानहुँ मुनि को वेष धरि मधुजुत रति औ काम ।।
मधुजुत रति औ काम सुर्पनखा रुप नसायो ।
राच्छस कुल पर कोपि मनहुँ कृतिया चलायो ।।
बनादास नासिहि सकल भयो बिधाता बाम ।
लछमन लाये जानकी कुटी बिराजत राम ।।५०।।

खर दूपन बध जानिकै सूर्पनखा बिललात ।
जाय पुकारी रावनहि धिग तव पौरुप तात ।।

धिग तव पौरुष तात दसा ऐसी भै मोरी।
उपज्यो कुलहि कलंक जगत अपकीरति तोरी ॥
बनादास मद पान करि निसि दिन सोवत खात।
खर दूपन वध जानि कै सूर्पनखा बिललात ॥५१॥

देस कोस की सुरति नहि पर्‍यो ऐस में आय।
स्रुति पुरान वादे कहै राजनीति बिन जाय ॥
राजनीति बिन जाय पाप हरि चरित वखाने।
विना ताड़ना नारि संग ते जती नसाने ॥
बनादास मिश्रता गै बिना स्वच्छता पाय।
देस कोस की सुरति नहि पर्‍यो ऐस में आय ॥५२॥

बिना धर्म नहि धन रहै सुजस कृपनता खाय।
उपजत जबहि कपूत भे कुल की कानि नसाय ॥
कुल की कानि नसाय नहीं बिन गय गरु आई।
बिना सील को डील जाय मुख आपु बड़ाई ॥
हरिहि दिये बिन सत करम बनादास नसि जाय।
बिना धर्म नहि धन रहै सुजस कृपनता खाय ॥५३॥

गै बिद्या अभ्यास बिन फुरै न अवसर बात।
चतुराई चौपट भई फिरि पीछे पछितात ॥
फिरि पीछे पछितात तोप बिन बिप्र नसाई।
बिना लाज कुल बधू लाजते गनिका जाई ॥
मात पिता को भक्ति बिन पूत अवसि नसिजात।
गै बिद्या अभ्यास बिन फुरै न अवसर बात ॥५४॥

जाय तिया परिवर्त बिन समर सकाने सूर।
जाय साधुता सहज ही संगति बैठे कूर ॥
संगति बैठे कूर मान माँगे ते जावै।
पुत्र सोई नसि जाय मातु पितु जो न पढ़ावै ॥
बनादास नासँ तुरै फेरै जो न जरूर।
जाय तिया परिवर्त बिन समर सकाने सूर ॥५५॥

जाय प्रीति परनीति बिन गुरुवस आस नसाय।
ठकुरसोहाती ते सचिव बैद गयो भय खाय ॥

बैद गयो भय खाय व्यग्रता पाक नसावै।
भूषन वसन विहीन निधन बिन धर्महिं जावै॥
बनादास धीरज बिना इन्द्रीगन बहि जाय।
जाय प्रीति परतीति बिन गुरु बस आस नसाय॥५६॥

नीति कहै यहि भाँति से बुद्धि विपर्य्यय तोरि।
तब रावन बोलत भयो अतिसय मोछ मरोरि॥
अतिसत मोछ मरोरि नाक को स्त्रौन निपाता।
बहु जल्पै केहि कार्य सत्य किन बोलै बाता॥
बनादास तबही कह्यो नैनन आँसु निचोरि।
नीति कहै यहि भाँति से बुद्धि विपर्य्यय तोरि॥५७॥

कोसलपति के कुँवर दुइ कानन आये तात।
पुरुष सिंह अतिसय बली सुन्दरता सुठिगात॥
सुन्दरता सुठि गात नारि सँग मे सुकुमारी।
नहिं पटतर तिहुँ लोक सकल कबि दिये जुठारी॥
बनादास अपराध बिन स्रुति नासा किये घात।
कोसलपति के कुँवर दुई कानन आये तात॥५८॥

खर दूषन पहँ मैं गई लागो तुरित गोहारि।
सेन सहित यक राम तेहि सहजे डारे मारि॥
सहजे डारे मारि हारि रावन उर खावा।
खर दूषन अति बली बिना हरि कवन नसावा॥
बनादास निस्चय किये लै आवो प्रिय नारि।
खर दूषन पहँ मैं गई लागो तुरित गोहारि॥५९॥

जो नृप तनय तौ बनै है काह करैंगे मोर।
जो भगवत अवतार भो तरिहौं भवनिधि घोर॥
तरिहौं भवनिधि घोर बैर ताते हठि करिहौं।
बनादास रन खेत राम बानन ते मरिहौं॥
यहि विधि मत्र दृढाय कै चढि स्यन्दन भुज जोर।
जो नृप तनय तौ बनै है काह करैंगे मोर॥६०॥

चल्यो बेगि मारीच पहँ रथ नाँधे खर चारि।
तिनकी उपमा किमि कहै मानहुँ बेगि बयारि॥

मानहुँ बेगि बयारि-सिन्धु यहि पारहि आवा।
जहाँ बसे मारीच देखि सादर सिर नावा॥
तेइ बूझा कारन कवन यहि बिधि गवन सुरारि।
चल्यो बेगि मारीच पहँ रथ नाँधे खर चारि॥६१॥

कहे सकल पर संग तम होवौ कपट कुरंग।
जाते नृप नारी हरौ बेगि चलौ मम संग॥
बेगि चलौ मम संग कीन मारीच विचारा।
उतर दिये नहिं बनै राम कर मरन हमारा॥
वनादास बोलत भयो छनक रह्यो ह्वै दंग।
कहे सकल परसंग तुम होवौ कपट कुरंग॥६२॥

परब्रह्म अवतार भो सुनहु सत्य दससीस।
बैर किये कछु नहिं बनिहि मानहु बिस्वाबीस॥
मानहु बिस्वाबीस नृपति सुत तौ अतिसूरा।
इनते किये बिरोघ कवहुँ लहि लागिहि पूरा॥
मुनि मख राखन को गये ये सुत दोउ अवनीस।
परब्रह्म अवतार भो सुनहु सत्य दससीस॥६३॥

कर विन सर मोहि मारेउ आयो सागर तीर।
सत जोजन छन एक में बड़े वीर रनधीर॥
वड़े वीर रनघीर ताड़ुका सुभुज विदारे।
खर दूषन त्रिसिरादि सहज में जिन संहारे॥
वनादास रावन सुनत उठी हृदय में पीर।
कर विन सर मोहि मारेहु आयो सागर तीर॥६४॥

सवैया

मोर प्रवोघ करै गुरु से सठ कोपि कह्यो तबही दस भाला।
बेगि चलो अवही चढ़ि कै रथ ना तरु आय गयो तुव काला॥
पूरब की करनी प्रगटी उपजी उर ताछन बुद्धि विसाला।
दासवना बहु भाँति मनोरथ देखि हौं मैं दसरत्थ को लाला॥६५॥

बान सरासन साजि कै घाईहै जाहि मुनीस्वर ध्यानन पावैं।
संकर मानस हंस निरंतर नेति जिन्है चहुँ वेदहु गावैं॥
हौं अवलोकिहौं बारहि वार सो भागि वड़ो अनुमान में आवैं।
दासवना जेहि नाम लिये सहजे भव संकट सोक नसावैं॥६६॥

घनाक्षरी

आये बन मध्य तब कपट कुरंग भयो कनक सरीर मनिबुन्द सुठि नीके हैं।
सिया अवलोकि कहे छाला अति नीक याको बार बार राम प्रतिभावत सो जीके हैं ।
प्रथमहिं सती सीता पावक प्रवेस किये राखे प्रतिबिम्ब इहाँ बैन मानि पाके हैं।
बनादास साजि कै सरासन औ बान धायो मायापति राम बैन मानि माया नीके हैं ।।६७।

पर्‌यो पीछे लागि भागि चल्यो सो मरुत गति प्रगटत दुरत गहन बन गयो है।
धायो रघुबीर मग छोड़ै न कुरंग कर अति दुरि जाय ताहि तीर मारि दयो है ।।
लषन को नाम सुर ऊँचे से उचार कियो पीछे मन्द सुर राम कहत सो भयो है।
बनादास ताहि निज गति दियो कृपासिंधु दीनबंधु पानि तासु खाल काढ लयो है ।।६८।।

मृग पीछे चले तब सौंपि सिया लषन को कहे तात रखवारी कियो भलीभाँति जू ।
निस्चर भयकर फिरत घन कानन म जानकी स्वभाव जिय सहज डेराति जू ।।
जबही लषन नाम सीता सुने ऊचे स्वर बनादास बार बार उर अकुलाति जू ।
कालगति कठिन ठन्यो है हानिहार आन ताहि टरै सकै ऐसो काको अवकाति जू ।।६९।।

जाहु बन धाई है कलेस बस भाई तव लषन कहत मात कहा चित गयो है।
भृकुटी बिलास जाके जगजाय माल हास पालन प्रलय ताहि कौन दुख दयो है ।।
बनादास क्रूर वाक्य वाली बैदही तब लषनहुँ मन होनिहार बस भयो है।
भरत से मिले हम जानित मरम तव चाहत अकाज ताते उर ऐसो जयो है ।।७०।।

इहाँ संग दिहे किहे मन मे कपट ऐसो स्वामी को स्वभाव सूधो भले जानि लयो जू ।
खाँचि धनुरेख सेष गवन किये ततकाल करत विचार काहु सिय उर ठयो जू ।।
उरबासो रघुनाथ ताते न दुराव चलै अति असमजस को बीज उर बयो जू।
बनादास डरत मनोरथ करत बहु ताही समय माहि दससीस आय गयो जू ।।७१ ।

एक डरै राम डर जानकी अकेलि तजे तन तेज हत भयो लछमन बीर है।
जती को बनाय बेष दसमुख माँगे भीख सिया कछु लाई मूल फल धरि धीर है ।।
कहत बहारि बाँधो दान न सयाना लेहौं होनहार बस नाँघि आई सो लकीर है।
बनादास कहे साँच लौन किन मेरे संग तबै सीता कहे बालै कैसन फकीर है ।।७२।।

निज तन प्रगटि प्रबोधै लाग जानकी को चलौ मम साथ बन काहे तप जरे है।
बिबिध प्रकार तन पाय कै बिलास करौ बासव को लाभ नाहि तौन मेरे घरे है ।।
बनादास अवसि सभीत भई सीता तब खल आय गये प्रभु धीर उर टरे है।
बन्दि कै चरन गहि बाह सो उठाय लई रथ पै चढाय हाँकि बार नाहि करे है ।।७३।।

किये हैं बिलाप बार बार वैदेही तब अहह सनेही राम भारी पीर भई है।
सुन्यो गीधराज जान्यो राम बाम हरी खल धायो करि कोप खग बार नाहि लई है ॥
रावन विचारै को न आवत समान काल जान्यो पन्नगारि उर माहि ठीक दई है।
बनादास कहे पुत्री धीर उरमाहि घर आय गयो सद्य अब कर तन गई है ॥७४॥

खडा रहु खल पापी पाँवर परम पोच नीच महा परनारि सूने जात हरे जू।
चोच अरु चंगुल से देह सारी चोथि डारी करि परबाजो सुठि भारी जुद्ध करे जू ॥
असित सैल जनु गेरु के पनारे चले अतिही मुरछि दससीस भूमि परेजू।
बनादास छीनि लिये जानकी जटायू गीध जागि दसकन्धर सो धीर उर धरेजू ॥७५॥

बानन ते मारि किये जर्जर जटायू तन लरत परस्पर दोउ महाबीर हैं।
हारे न हटत रामकाम मे घटत अति चोंचन ते काटि काटि डारे धनु तीर हैं॥
बनादास पर्‌यो भूमि खल उभय पंख काटे रावन कृपान काढ़ि भई उरपीर हैं।
तिहू लोक चहूँ वेद बिदित बिसेपि भयो रंघुनाथ हेत किये त्यागन सरीर हैं ॥७६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम एकोनबिसोऽध्यायः ॥१९॥

घनाक्षरी

अतिही सभीत सठ रथ न सकत हाँकि करत बिलाप सीय बरनि न जाई जू।
सुनि बन जीव जहाँ तहाँ न धरत धीर मनहुँ गवास बस परी सुठि गाई जू ॥
बैठो है सुकंट गिरि ऊपर समाज जुत जानकी बिलोकि ताहि दिये पटनाई जू।
बनादास लै गयो दसानन सो लंक गढ़ साम दाम दंड भेद अमित देखाई जू ॥७७॥

बाटिका असोक राखे सबै भाँति हारि हिय बासव बिचारि कै उपाय तब किये हैं।
पायस बनाय जाके खाये न छुधा पियास द्वादस बरप आय जानकी को दिये हैं॥
बढ़ै तन तेज बल बुद्धि को प्रकास करै धीरज कराय पुनि बार नाहि लिये हैं।
गये निज धाम राम लपन को देखे जब बनादास हिय सुठि संसय मे सिये हैं ॥७८॥

त्यागि कै अकेलि सीय पेलि आयो बैन मम ऐन में न जानकी कहत मन मोर है।
निस्चर भयंकर फिरत घोर कानन में जानि कै बिसारे सुठि नारि नर चोर है॥
लपन कहत नाथ मोरि कछु खोरि नाहि काल और करम बहु भाँति बरजोर है।
बनादास बहुविधि मानै न बुझाये मम बचन कहत भई अवसि कठोर है ॥७९॥

आये पंचबटी कुटी सूनि परी सिया बिन व्याकुल अतीव भये नर अनुहारी है।
हाय प्रिया प्रान जान कैसे रहैं तोहि बिन छन कल नाहि धीर धरै न संभारी है।
बनादास बिकल कहत बात तात सन अब कैसे मिलैं मिथिलेस की कुमारी है।
अनुज बुझावत समुझावत अनेक भाँति अवसि सनेह देह दसा को बिसारी है ॥८०॥

दै कै कुरी दाहिन चलत भये खोजें वन बूझत बिटप लता पता नाहि पावने।
खग मृग मरकट करहिं निहोरि कहँ देखे कहूँ जानकी को काहे न बतावते ॥
सुमिरि सुमिरि उर सील औ स्वभाव सुचि अमित प्रकार गुन अनुज सों गावते।
बनादास मानों महा कामी सुठि दीन भया बचन बिचित्र कहि बिरह बढ़ावते ।८१॥

सदा रस एक कहूँ जाग न बियोग जाके सत चिद आनँद सघन स्रुति गाये हैं।
सेष सारदादि नारदादि बिधि सम्भु आदि सुक सनकादि काऊ थाह नाहिं पाये है ॥
साईं प्रभु नर अनुहारि यह लीला करें बनादास देव रिषि बचन दृढ़ाये हैं।
देखे कृपा कोर ताहि मोह न कदपि काल उमगि उमँगि राम लीला लव लाये हैं। ८२॥

आगे आय देखी भूमि भीगी बहु सोनित सो जहाँ तहाँ तीर धनु कटे परे पखे हैं।
कहत लषन प्रति इहाँ कोऊ जुद्ध किये गीध पर्यो भूमि तल लखे सो बिसेखे हैं।
तात कहो कारन बिलोकि रघुनायजू को खग भूरि भागी नहिं लावत निमेखे हैं।
कहत कृपालु दससीस ऐसी हाल करी लै गयो सा सीय रहे नैनन सो देखे हैं ॥८३॥

दरस के हेतु राखे प्रान पदकंज पेखे चलन चहत धाय गोद भरि लिये हैं।
लावन ते मोचि बारि गीध अन्हवाये राम कहत बिचार मेरे कछु दिन जिये है ॥
दिब्य देह इच्छा भोग मोहिं पितु सुख दीजे बनादास गीध हरषाय हँस्यो हिये हैं।
त्यागि मनि पारस को गुंजाकर गहै जौन ऐसन बिसयि बिधि काहि अन्ध किये हैं ॥८४॥

सारद गनेस सेस गाय न सकत गुन नारद बिरंचि कोउ पार नाहिं लहे हैं।
साधन अनेक करि जोग जग्य पूजा पाठ ध्यानहू न पाय सकैं तन तप दहे हैं ॥
राज्य तजि जाके हेत नृपति बिरागी होत बनादास चारि स्रुति नेति नेति कहे हैं।
मानस महेस हंस महामुनि ध्यावैं नित खांगो अब काह बैठि तासु गोद रहे हैं ॥८५॥

ऐसा न बनिहि नाथ बहुरि कदपि काल कहत कृपालु गति कर्मन ते लहे है ॥
पर उपकारी हेन अगम न कछू जग सुगम तुम्हहि सब जौन कछु चहे हैं।
गीध तन त्यागि विष्नु रूप भयो ताही छन अतिहि अगम परधाम मग गहे हैं ॥
बनादास चारि करकंज किये सम्पुट सो सहज सनेह हरि जस गाय रहे हैं ॥८६॥

छप्पय

जय रवि कुल बर कुमुद सुखद सर्वाङ्ग सुधाकर।
जय हरिहंस बिहार काग उर बिसद मानसर ॥
जयति अवध प्रद हर्ष कोसला मोद बिवर्द्धन।
जय सुन्दर सतकाम बाम सिय हरन सम्भुमन ॥
जय दसरथ सुत सत सिय टरन भार महि अवतर्यो।
कह बनादास पावन परम सुजस सकल जग बिस्तर्यो ॥८७॥

जय रच्छक मुनि जज्ञ सम्भु को दंड बिभंजन।
जय मदगंजन भूप जनक नृप सुठि मनरंजन।
जय भृगुपति हरगर्व सर्व उर अन्तरजामी।
जय बिदेह पुरमोद बिबर्द्धन विधि सिव स्वामी॥
जयति ब्याह प्रभु जनकजा अवध गवन ण्वितु वाकि हित।
कह बनादास मुनि बेप धरि त्यागि तिलक बन गवन कृत॥८८॥

जय जय पावन पतित दीन प्रिय अघम उधारन।
जयति नाम सत सुर बाम गौतम को तारन॥
जयति बेद गुनगाथ नाथ सर्वदा अनाथन।
जय जय अगम सरूप पार चित बुद्धि अहं मन॥
जयति सच्चिदानन्द घन ब्यापक परि पूरन सकल।
कह बनादास कैवल्य पद सर्व कलानिधि अति अकल॥८६॥

जयति आस ईर्षादि त्रास बासना विदारन।
जयति काममद क्रोध लोभ मोहादिक मारन॥
जय जय कपट पखंड दंभ दारिद कृत नासा।
जयति भक्ति वैराग्य ज्ञान उर सन्त प्रकासा॥
जयति बोघ विग्रह करन सरनागत आरत हरन।
कह वनादास जन कामधुक कल्प बिटप तारन तरन॥६०॥

जय बिराध वध करन सुगति दायक सरभंगा।
जय भगिनी रिपु रूप हरन सुचि स्यामल अंगा॥
जय खर दूषन त्रिसिर.समर सह सेन बिभंजन।
जयति जानकी वचन पाल माया मृगगंजन॥
जयति गीध परधाम प्रद पावर आमिप भोगरत।
कह वनादास प्रभु पाहि पद सद्य भयो भवरुज विगत॥६१॥

स्याम गात सिर मुकुट तिलक वर भाल सुभ्राजै।
स्रुति कुंडल सुठि लोल अलक अवली अलि लाजै॥
नाभी सुभग गंभीर उदर त्रिवली छवि धामा।
उर आयत मनि माल रूप लखि लाजहिं कामा॥
जानु पीन मृग राज कटि कमल चरन पट पीतधर।
कह वनादास आजानु भुज चारि विभूपन अंगवर॥६२॥

ऐसो पाय सरूप भाँति बहु अस्तुति भाखी।
गीघ गयो हरिधाम राम मूरति उर राखी॥

गगन सुमन बरवृष्टि देव दुन्दुभी बजावत।
बार बार उर उमंगि राम कल कीरति गावत।।
आमिप भोगी अधम तन पायो ऐसी मुक्ति वर।
कह बनादास को पार लहु जस स्वभाव रघुनाथ कर।।९३।।

सवैया

बान सरासन सीस जटा मुनि को पट राजित सांवल गोरे।
तून कसे कटि काल की काल बिहाल फिरैं सिय हेरत सारे।।
रूप छटा लखि जो नहिं मोहै बिरंचि रचे जग मे केहि कारे।
दासबना उपमा न तिहू पुर सांचेहु प्रान सजीवनि मोरे।।९४।।

सो रस जानु महेस भुसुंडि महामुनि जे जल मीन भये जू।
मोह बिमूढ न गूढ लखै गति अंगुलि जे दृग मांहि दयेजू।।
दासबना अवलाकै उभय ससि नाहिं सुजान समान लयेजू।
जे रस सर्गुन मे न पगे जनु ब्याज के कारन मरि गयेजू।।९५।।

ब्रह्म परात्पर राम कृपालु बिसाल महत्व को पारहि पावैं।
नेति पुकारत बेद चहूँ कवि कोविद की फिरि कौन चलावैं।
पालत हैं स्रुति सेतु सनातन कारज कारन सा बरतावैं।
दासबना सुरसन्त के हेत महीतल मे कबही प्रगटावैं।।९६।।

भांति अनेक से प्राकृत खेल करै जन तावे महा सुख पावैं।
गाय तरै सहजे भव सागर कायक बाचक मानस ध्यावैं।।
छीर पियैं बछरा थन देखिये औ किलनामुख सोनित आवैं।
दासबना जड जीव करै भ्रम सो निज दूपन रामहि लावैं।।९७।।

खोजत सीतहि बन्धु चले दोउ जायकै अग्रकबन्ध निपाते।
ब्राह्मन को तन राच्छस भो बरनी पुनि सो मुनि साप कि बाते।।
रामकृपा गति पाय सो आपनि जात भयो उर मे हरषाते।
दासबना सबरी गृह गौन किये रघुनानिधि भक्ति क नाते।।९८।।

काल असख्य ब्यतीत भयो नित ही नव प्रीति बढे तेहि बेरी।
चौका लगाय बिछाय सुआसन धाय अनेकन बार सो हेरी।।
दोनन से फल नाना प्रकार के भाग्य उदय कब होयगी मेरी।
दासबना प्रभु आवत है मनोराज उठै उर मे बहु तेरी।।९९।।

तोरि कै मान मुनीसन को प्रभु आवत आवत आय गये हैं।
धाय परी सबरी पदकंज बिलोचन नेह को नीर जये हैं॥
दासबना पुलकावलि अंग बिलोकि कृपालुहि मोद भये हैं।
प्रेम को गाहक ऐसो न दूसर सादर ताहि उठाय दये हैं।१००॥

अर्घ बिलोचन नीर किये तेहि प्रेम के पाँवडे दै गृह लाई।
आसन उत्तम डासि दिये तेहि ऊपर राजित भे रघुराई॥
आरती धूप किये भलीभाँति से जानि कै दोनन में फल लाई।
दासबना प्रभु पावत प्रेम ते भाँति अनेक सराहि मिठाई॥१॥

चक्रवती दसरत्थ के बालक पाहुन ते फल सागन केरे।
रामहि केवल प्रेम पियार है और कछू नहि भावत हेरे॥
जाहि मुनीस्वर ध्यानन पावत संकर मानस लीन बसेरे।
दासबना रुचि से सुठि खात सराहि कै माँगत भीलिनि सेरे॥२॥

कै फलहार भये हरि तुष्ट कहे सबरी तबही मृदु बानी।
नाथ सबै गुन साधन हीन मलीन कुजाति औ नारि अयानी॥
कीन कृपानिज ओर कृपालु भरी अभिअन्तर भाव सयानी।
दासबना मुनि बैन भयो फुर आजु घरी अति उत्तम जानी॥३॥

राम कहे सुनु भामिनि बात अहै यक भक्ति को नात पुनीता।
ताते विहीन जो होय बिरंचि से जानहु सो सब अंगन रीता॥
जासु हृदय अति पावन प्रेम सबै विधि से मोहि सो जन जीता।
दासबना अनुराग नहीं उर काह किये पढ़ि कै नर गीता॥४॥

प्रेम समान न मोहि कछू प्रिय जानै कोऊ अन याकर भेदा।
ज्ञान विराग औ जोग सबै विधि साधन कोटि करै सहि खेदा॥
दासबना जहँवाँ लगि धर्म बतावत सास्त्र पुरान औ वेदा।
कौन करै सकलो बहु काल विना अनुराग सो जानु निपदा॥५॥

जानत सीय को खोज कछू कहुँ तौ किन भामिनि देहु बताई।
तौ सबरी कहे जानि के बूझत पंपासरै गवनो रघुराई॥
पावन पर्व तहै सुखदायक ह्वै है तहाँ कपि केरि मिताई।
दासबना सो कराइहि खोज अनेकन मर्कट भालु पठाई॥६॥

छप्पय

छनकरमौ रघुवीर तजो छन भंगुर देही।
अब राखौ केहि हेत पाय कै प्रान सनेही॥

लोकबेद सो हीन नारि सुठि अन अधिकारी।
देखहु भक्ति प्रताप तासु कैसी महिमारी॥
रामलषन पाये दरस अवलोकत सन्मुख रही।
कह बनादास भामिनि भली चाहत तन दाह्यो सही॥७॥

जय रविकुल बर कज भास्कर राम कृपाला।
जय महेस उर बिसद मानसर सुभग मराला॥
जय जय पावन पतित दीन गाहक रघुबीरा।
ब्रह्मादिक के ईस सदा सेवहिं मुनि धीरा॥
जयति काम सतकोटि छबि कबि पटतर पावै क्वन।
कह बनादास असरन सरन चरन कमल भव रुज दवन॥८॥

जय जय मोह मनोज क्रोध मद लोभ निवारक।
राग द्वेष भय हरन अवसि समता बिस्तारक॥
आस त्रास ईर्षादि बासना बृहद बिभजन।
बिधि निषेध त्रय ताप तीनि गुन अघ गन गजन॥
भक्तिज्ञान बैराग्य प्रद कल्पबिटप जन काम धुक।
कह बनादास महिमा अगम बदत सदा सनकादि सुक॥९॥

दभ कपट पाखड दर्पदारिद दुखनासक।
दुसह दाह दुर्बसन दाहि बिज्ञान प्रकासक॥
सीलसिंधु सुखधाम राम सम राम सनातन।
थक्ति सारदा सेष पार चित बुद्धि अहमन॥
जय जय नृप दसरथ सुवन भुवन चारिदस जस बिदित।
कह बनादास भूलेहु नहीं चरन कमल परिहरै चित॥१०॥

जयति सच्चिदानन्द ब्रह्म ब्यापक अविनासी।
परिपूरन सर्वत्र चराचर घट घट बासी॥
बिरुज बिलच्छन बृहद सूक्ष्म परमान माई।
अचल अखड अनीह गूढ गति जान न कोई॥
जयति आदि मधि अतगत पुरुषोत्तम पावन परम।
कह बनादास तिहुँ काल मे नहिं कोऊ पावन मरम॥११॥

अगुन अगाध अरूप अनघ अद्वैत अभेदा।
अलख अजोनी नित्य नेति भाषत चहुँ बेदा॥

निराधार निरलेप्य अकल कूटस्थ कलानिधि।
द्वन्द रहित दुर्द्धर्ष देस अरु काल विगत विधि॥
सुभग सगुन विग्रह बिसद हृदय राखि भामिनि भली।
कह बनादास सुकृत अवधि प्रगटि जोग पावक जली॥१२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपनखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम विसमोऽध्यायः॥२०॥

सवैया

ताहि दई गति दुर्लभ राम चले जुन बंधु न बार लगाये।
सोध जहाँ तहँ लेत सिया कर पंपा सरोवर तीरहि आये॥
सुन्दर नीर नहाय पिये जल आसन उत्तम बधु बिछाये।
दासबना तरु छांह बिराजत देव रिषय तेहि काल सिधाये॥१३॥

धाय प्रनाम किये जुत बंधु सिरोमनि सील सदा रघुराई।
हर्षि असीस दिये मुनि नायक भाव परस्पर है दुहुँ ठाई॥
नारद बैठि जबै सुचि आसन पांव पसारत भे लघु भाई।
दासबना तबही कहे राम धरो धनि आजु न हर्ष समाई॥१४॥

जा छन होत है सन्त समागम तासे न काल त्रिकालहु माहीं।
सो नहि गाय सकै सहसानन बेगिहि तीनिहुँ कर्म नसाहीं॥
होय सरूप को ज्ञान भली विधि दासबना सहजे भव जाही।
मिथ्या बिहाय गहै सत को जब सो सतसंगति को फल आहीं॥१५॥

छप्पय

नारद हृदय सकोच साप प्रभु मम अंगीकृत।
सहत अमित उत्पात खेद आयो न तनिक चित॥
हरि कीन्हे उपकार भयो मम दिसि अपराधा।
कीजै कवन उपाय भये प्रभु हित मुठि बाधा॥
समरथ को रघुनाथ से तहँपुर तीनिउँ काल है।
कह बनादास अस्तुति करत महिमा अवसि बिसाल है॥१६॥

जयति राम घनस्याम काम सतकोटि सुभग तन।
निरालम्ब अवलम्ब संत जन सदा प्रान धन॥

जय दिनकर कुल केतु सेतु स्तु ति सब दिन रक्षक।
काल कर्म गुन दोष दाहि आरत जन पक्षक।।
सेवक औगुन मेरु से रज समगन तन कृपानिधि।
कहि बनादास गुन अल्प गिरि तिहूँ काल इमि बिरद बिधि।।१७।।

जटा मुकुट सिर भ्राज अच्छ अरविन्द सोहाये।
तिलक भाल भ्रु व वक्र चन्द मुख सुठि छवि छाये।।
कम्बुग्रीव हरि कंध बृहद उर बाहु बिसाला।
तून कठिन को दंड तीर राजित मृगछाला।।
कटि मुनि पट पाथोज पद राज रिषीस्वर बेष बर।
कहि बनादास साँवर गवर हर मर्कत द्युति कनक कर।।१८।।

जय दसरथ सुत सुभग कौसला मोद बिबर्द्धन।
सील सिंधु सुखधाम अवधबासी मोहन मन।।
बाल चरित कृत विविध सभु चित चोरन सीला।
भावत भले भुसुंडि परम सुखदायक लीला।।
महि गो द्विज सुर सन्तहित लीन मनुज अवतार वर।
कहि बनादास दुष्कर बिपति हरन राम धनुबान धर।।१९।।

रिषि मख रक्षक दक्ष जयति मुनि बधू उधारन।
भंजि सभु को दंड जनक नृप सोच निवारन।।
दलित मान महिपाल सौध पुर जन मुददायक।
सुर नर मुनि आनन्द गर्व मर्दन भृगुनायक।।
ब्याहि बधु चहूँ गवन पुर तिलक त्यागि कानन चल्यो।
कहि बनादास बनवास करि निकर मुनिन को दुख दल्यो।।२०।।

बधि बिराध बल बृहद सुगति दायक सरभगा।
दंडक बिपिन पुनीत सुपनखा खंडे अगा।।
कार बन बिपुल बिहार बधु सिय आनद दायक।
खग मृग मोहित रूप अगम सोभा रघुनायक।।
खर दूषन त्रिसिरा दलन कपट कुरंगहि भग किये।
कहि बनादास गति गीध प्रद हति कबन्ध सबरी प्रिये।।२१।।

बहुरि सखा सुग्रीव बालि बध दायक राजहि।
कास गवन सिय खोज पवनसुत दूत बडकाजहि।।

लंकेस्वर रिपु बन्धु सिंधु करि सेतु बिसाला।
बहुरि थापि गौरीस गवन लंका ततकाला॥
बालि तनय रिपु मद मथन गढ़ निग्रह बिग्रह प्रबल।
कह बनादास कपि भालु सु.ठ खंड्यो निसिचर महा दल॥२२॥

बधि रावन घननाद आदि घटकर्न बिभंजन।
सकल सेन आनन्द लाय सिय सुवन प्रभंजन॥
ब्रह्मादिक करि बिनय यान बढ़ि अवध गवन कृत।
सजि भूषन सर्वाङ्ग मातु अवलोक्य सहित हित॥
सिंहासन आसीन प्रभु भाल तिलक वर गुरु करैं।
कह बनादास जय जयति जै सुर नर मुनि आनँद भरैं॥२३॥

भष्यो सकल भविष्य परम सुखदायक लीला।
माँग्यो वर कर जोरि महामुनि वर दमसीला॥
रामनाम ससि सरद बसै उर ब्योम निरन्तर।
सहित जानकी अनुज कृपानिधि परै न अन्तर॥
हृदय राखि मूरति मधुर गौन कियो नारद जबै।
कह बनादास जुत बन्धु के चलत भयो रघुपति तबै॥२४॥

रिष्यमूक गिरि निकट गये जबहीं रघुबीरा।
तबहि देखि सुग्रीव भयो अति हृदय अधीरा॥
पुरुष सिंह बल धाम जुगल आवत यहि ओरा।
हनूमान अवलोकि तिन्हैं डरपत मन मोरा॥
बालिबन्धु मन मलिन सुठि मिलि काहुहि पठयो इतै।
कह बनादास लै मर्म को सैन बुझायहु मोहिं चितै॥२५॥

तुरित चल्यो सुत पौन विप्र को वेष बनाई।
आवत लगी न बेर जहाँ लछमन रघुराई॥
माथ नाय तब कहे रूप छत्री मुनि वेखा।
लच्छन अंग अनूप नहीं पटतर जग देखा॥
सहत दुसह दुस वन बिपे कारन कवन कही कथा।
कह बनादास रघुवंसमनि अपनी गति भाषी जथा॥२६॥

अवध नृपति दसरत्थ उभय जनता सुकुमारा।
पिता वचन प्रतिपाल हेत कानन पगुधारा॥

सग नारि सुकुमारि हरी राच्छस बन माही।
पावत कतहुँ न खोज फिरत हेरत हम ताही॥
कहो बिप्र आपन चरित हम निज किये बखान है।
कह बनादास प्रभु दरस फल प्रगट भयो उर ज्ञान है॥२७॥

सजल नयन तन पुलक कपट को बपु वह गयऊ।
उपजी प्रीति पुनीत प्रगट बाँदर तन भयऊ॥
पर्‌यो चरन अकुलाय नाथ उर बहु अजाना।
प्रभु माया अति प्रबल तासु बस फिरौं भुलाना॥
ताते बुझब उचित मोहि प्रभु किमि बूझत मनुज मिसु।
कह बनादास पितु मातु जो तजै तौनि बहै किमपि सिसु॥२८॥

सब साधन करि हीन अवसि पामर मर्कट तन।
बनै न कछू उपाय नही काबू इन्द्रीमन॥
तापर प्रभु पहिर्‌यो कवनि बिधि पावउँ पारा।
पाहि पाहि पद सरन कह्यो पवनज बहु बारा॥
तब उठाय उर लायऊ कृपासिन्धु रघुबसमनि।
कह बनादास लछमन जथा हनुमत मान्यो भागि घनि॥२९॥

नाथ सैल पर बसै बन्धु बाली सुग्रीवा।
तासो करिय सखत्व अहै अतिसय बल सीवा॥
अभय करिय जन जानि ताहि सिय खोज कराइहि।
मर्कट भालु अनेक देस चहुँ दिसा पठाइहि॥
राम कहे भल तात अति तुरत चढाये पीठ पर।
कह बनादास दुहुँ बन्धु कहँ पटतर कतहुँ न हर्ष कर।३०॥

सवैया

गौन किये तबही गिरि ऊपर आये तुरंत सुकठ के तीरा।
आसय जनाय तबै हनुमान पर्‌यो पदपकज सो रघुबीरा॥
भाखो कथा कपि साखो उभय दिसि राखो न बीच मिल्यो जिमि तीरा।
दासबना दिये बीच कृसानु रह्यो सुत पौन महा मति धीरा॥३१॥

घनाक्षरी

सकल प्रसग तब सखहि सुनाये राम तात सिय खोज अब तक नहि पाये हैं।
जाते मिलै जानकी उपाय साई कियो चाही तबहि सुकठ बहु भाँति समुझाये हैं॥
मिलैं नाथ सीता सब सोच आपु दूरि करैं डारि दिये पट तेहि बेगि ही मँगाये हैं।
बनादास ताहि पहिचान प्रभु लाये उर तब कपि सकल प्रसग को सुनाये हैं॥३२॥

एकबार इहाँ बैठे कपिन समेत रहे मारग अकास माहिं देखे रथ जात जू।
अति बेगवन्त परी अवसि कलेस बस कहे न बनत बहु भाँति बिलपात जू॥
हमें देखि तबहिं सयानी पट डारि दिये अच्छ अरबिन्द होन लागे नीर पातजू।
बनादास प्रीति रीति जानै कौन राम बिन ताही करि सन्त बित रहित बिकातजू॥३३॥

कारन कवन बन माहिं कपि राज बसो कहत सुकंठ राज मेरे नहि भाग है।
तबहिं कहत प्रभु बचन न मृषा जैहै हनुमान उर अति आयो अनुराग है॥
जौन हेत भई है मिताई मन माहिं आयो तौन काज सिद्धि भयो बारहु न लाग है।
बनादास कथा तब कहन सुकठ लागे राम पद प्रेम जोग उरमाहिं जाग है॥३४॥

सवैया

बालि बड़ो मम बन्धु कृपानिधि प्रीति पुनीत न जाय बखानी।
दुन्दुभी नाम निसाचर एक सो आयो इहाँ अतिसय हठ ठानी॥
बालि से जुद्ध भयो तेहि काल अहै यह सातहू तार निसानी।
दासबना दुर्‌यो जाय गुहा महँ संगहि बन्धु गयो अभिमानी॥३५॥

कुंडलिया

महूँ बालि संगै गयों मोहिं कहे परमान।
जो नहि आवौं पाख में तौ मोहिं मार्‌यो जान॥
तौ मोहिं मार्‌यो जान गुहा मे गयो समाई।
बालि आसरे नाथ रह्यो मैं वाही ठाई॥
एक मास बीत्यो जबै निकस्यो रुधिर बिमान।
महूँ बालि संगै गयों मोहिं गयो परमान॥३६॥

बालिहि मारेसि मोहिं बधिहि यह बिचार मैं कीन।
भाग्यों अति भय खाय के सिला द्वार दै दीन॥
सिला द्वार दै दीन सचिव सब कीन्ह बिचारा।
बिना नृपति को राज निर्वाहहै कवनि प्रकारा॥
मोहिं तिलक कीन्हें सबै निज स्वारथ लवलीन।
बालिहि मारेसि मोहिं बधिहि यह बिचार मैं कीन॥३७॥

दनुजहि मार्‌यो बालि तब लोथ फेंकि सो दीन।
सोनित कनु का तन पर्‌यो तबै क्रोध मुनि कीन॥
तबै क्रोध मुनि कीन साप दीन्हे सुठि वका।
यहि गिरि आवै बालि भसम होवै नहि संका॥
बनादास आयो घरै अतिसय बल पीन।
दनुजहि मार्‌यो बालि तब लोथ फेंकि सो दीन॥३८॥

रिपु सम मार्‌यो माहि सो हरयो बाम घन धाम।
ताको भय रघुबसमनि फिर्‌यो अनेकन ठाम ॥
फिर्‌यो अनेकन ठाम कतहुँ बिस्राम न पायो।
करिकै अमिन उपाय तबै यहि गिरि पर आयो ॥
बनादास निसिदिन डरो तबौ कृपानिधि राम।
रिपु सम मार्‌यो मोहि सो हर्‌यो बाम धन धाम। ३९॥

सवैया

राम कहे करि कै तब पैज हतौं सर एकहि ते सठ बाली।
सम्भु बिरंचि सुरेसन रच्छक पच्छ करै तिहुँ लोक जो हाली ॥
दासबना स्रुतिसेन को पालक कोपि कहै सुठि कीन कुचाली।
बन्धु तिया बिलसै बिबिचारते हैं जग मे असकौन न माली ॥४०॥

मित्र के दुख से दुख नही तेहि मुख्य बिलोकत पाप अपारा।
मेरु से क्लेस गिनै अपनो रज सो रज से हिमवान से भारा ॥
मित्र ते और हितू न त्रिलोक म कोटिन माहिय वाहन हारा।
खाडे कि धार मिताई को धर्म है दासबना स्रुति नेति पुकारा ॥४१॥

कुंडलिया

सुत बनिता धनधाम से राखै तनिक न बीच।
निज परार बुधि जो करै सो अति मति को नीच ॥
सो अति मति को नीच बिगरि जावै परलोका।
ताते करै विचार जलै मे जलजो जोका ॥
बनादास सुठि स्वच्छना तजै कपट उर कीच।
सुत बनिता धनधाम से राखे तनिक न बीच। ४२॥

मित्रद्रोह ते पाप नहि चहुँ जुगतीनिउ काल।
ऐसी लहि परतीति कहुँ लखै न ते बुधि बाल ॥
लखै न ते बुधि बाल बदन पर सोहर भलाई।
पीछे मन कुटिलता ताहि परिहरै सदाई ॥
बनादास मित्रता तप मानो अवसि बिसाल।
मित्रद्रोह ते पाप नहि जानो तीनिउ काल ॥४३॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम एकविंसतितमोऽध्याय ॥२१॥

कुंडलिया

तब सुग्रीव कहत भये वाली वली विसाल।
तासु परीक्षा वधन की अहै सातहू ताल॥
अहै सातहू ताल ताहि रघुपतिहि देखावा।
लागी नेक न बार बिना पारसरम नसावा॥
बनादास जाने तबै प्रभु कालहु के काल।
तब सुग्रीव कहत भये वाली बली बिसाल॥४४॥

घनाक्षरी

रामपद प्रीति परतीति बालि वधन कि तबहि सुकंठ उर सहजहि आई है।
कहे वरदान को प्रभाव रघुनाथ जू सो बालि देखै आँखि तासु अर्द्ध बल पाई है॥
जाहु तुम बालि पहँ ऐहै बेगि तुम्है देखि तबै उर मारौं बान बदै रघुराई है।
बनादास चल्यो प्रभुपदकंज सीस नाय जानि बालि गवन सुनारि समुझाई है॥४५॥

छप्पय

तब तारा कर जोरि पायँ परि पति समझायो।
जिनहि मिले सुग्रीव नाथ सो जानि न पायो॥
नृप दसरथ के सुवन राम लछमन से नामा।
सिंह पुरुष दोउ बन्धु अवसि जानहु बल धामा॥
तेहि विरोध नहि कुसल तव राखहु मम अहिवात पति।
कह बनादास हरि अवतरे तू जानै किमि तासु गति॥४६॥

समदरसी सर्वज्ञ सकल उर अन्तरजामी।
जेहि ध्यावैं जोगीस अचर चर सब को स्वामी॥
सदापाल स्रुति सेतु भूमि को भार उतारन।
निज इच्छा अवतरे अवसि पतितन को तारन॥
जो मरि हैं रघुवंसमनि तजि छनभगुर देह को।
कह बनादास संसय न कछु जैहौं हरि के गेह को॥४७॥

यहि विधि तिय समुझाय चल्यो तबही बर वीरा।
तुच्छ जानि सुग्रीव क्रोध अति जग्यो सरीरा॥
तरुतर देखहि राम भिरे दोऊ भट भारी।
तव करिकै सुठि कोप बालि मुष्टिका प्रहारी॥
अवसि विकल सुग्रीव भो ह्वै सभीत भाग्यो तवै।
कह बनादास भै सोच उर प्रभु समीप आयो जबै॥४८॥

तब बोले रघुवीर दोऊ एकै अनुहारी।
यहि कारन सुग्रीव नही मारे सरमारी।।
परसे पंकजपानि व्यथा तनकी भै खीसा।
पुनि दीन्हे बल बाँह कजकर राखे सीसा।।
निज पट को कटि चिह्न करि तब पठये सुग्रीव है।
कह बनादास देखत चल्यो बालि अतुल बल सीव है।।४६।।

दिग गयन्द सम भिरे नही एक एकन पारे।
जबही स्रमित सुकठ तबहि रघुबीर सँभारे।।
प्रभु देखै तरु ओट होय जेहि भाँति लराई।
मार्यो बिसिख कराल पर्यो भूतल भहराई।।
पुनि उठि बैठो बालि तब आगे देख्यो राम है।
कह बनादास उर प्रीति सुठि सकल भाँति निष्काम हैं।।५०।।

स्रुतिपथ पालन हेत भयो अवतार तुम्हारा।
मार्यो ब्याध समान कौन यह कवन विचारा।।
का बनये सुग्रीव नाथ मैं काह नसावा।
समदरसी प्रभु नाम तवन कछु देखि न पावा।।
सन्मुख कस मारे नही कहत बचन सुठि नीति है।
कह बनादास रघुनाथ मे अभ्यन्तर मे प्रीति है।।५१।।

नहिं सिर पर कोऊ अहै करौ चाहै तुम सोई।
ईस्वर परम स्वतन्त्र ताहि ते लगत न कोई।।
अनुचित उचित बिचार लाज औ धर्म अधर्मा।
जीवहिं जानि गरीब किह्या ताते बस कर्मा।।
नीवर करैं नियाब को जबर चहै तैसी करैं।
कह बनादास देखे भले यह उलटी गति लखि परैं।।५२।।

तुमहूँ स्वारथ बस्य किह्यो अप्रिय प्रिय दोऊ।
बीरधर्म परिचारि लरैं राखैं नहि सोउ।।
नहि आवत उर सकुच सकल विधि से बलवाना।
मरे कवन मम हानि एक दिन मरिहि जहाना।
का करि है सुग्रीव सो जो करते प्रभु काज मैं।
कह बनादास अन्तष्करन रघुपति आयो लाज मैं।।५३।।

रे सठ कीन्हे पाप अनुज तिय सुता समाना।
मम भुज बल परताप सठ कछु किये न काना।

त्रिय बिनती नहिं सुने मूढ़ अतिसय अभिमानी।
सुनि कै भयेन सरन भरत को राज न जानी।।
पापी बचै न कतहुँ कोउ सकल अवनि में सोर है।
कह बनादास रघुबंसमनि ताते बध मो तोर है।।५४।।

पुनि मेरा यह बिरद सदा दीनन पै दाया।
करौं गरीब उवार पच्छ सब दिन चलि आया।।
अभिमानी खल काल सदा चहुँ बेद बखानैं।
तिहूँ लोक तिहुँ काल कवन ऐसा नहिं जानैं।
सुजस नास को नहिं डरौं करौं दास रच्छा सदा।
कह बनादास जानै न का कबि कोविद सन्तन बदा।।५५।।

आरत हरन स्वभाव सदहिं परतिज्ञा मेरी।
निज दिसि देखौं नाहि बिपति काटौं जन केरी।।
होवै मेरे सरन करौं ताको रखवारी।
पल छन परै न भूल लगै नहिं तातिं बयारी।।
लोक और परलोक को सार संभारत बै करौं।
कह बनादास यहि जगत में ताही कारन तन धरौं।।५६।।

भरत परम धर्मज्ञ प्रजा चाही जस राजा।
तामे किये अनीति होय कि म नाहि अकाजा।।
अब राखै तन अचल बचन नहिं मृषा हमारा।
बालि कहा को अधम बनै कै जौन बिगारा।
ध्यान अगम जोगीस मन निज करते प्रभु बध किये।
कह बनादास सन्मुख लखत यह अवसर तजि धिक जिये।५७।।

पसू जोनि मम जन्म ताहु में पाप लगायो।
यह प्रभु की जबरई कहा अस बेदन गायो।।
अन्त समय गति नाथ ताहु पर राखौं देही।
अति दुस्तर संसार आय को गयो निबेही।।
अब लैहो नहिं खोरि मैं मनिकंज को गुंजा गहै।
कह बनादास इमि नीति कह अवसर चूके दुख लहै।।५८।।

अहै एक मम बिनय तौन माँगे मोहि दीजै।
सफल करन सर्वांस दास अंगदनिज कीजै।।

एवमस्तु कह राम बालि प्रभु पद चित लावा।
राम राम कहि राम सद्य हरिधाम सिधावा॥
कपिपति जब कीन्हे गवन धायो सब पुरलोग है।
कह बनादास छूटे चिकुर तारा अतिवस सोग है॥५९॥

उर ताडन निज पानि बदति रोदति तहँ आई।
मानेहुँ नहिं मम कहा नाथ बहुबिधि समुझाई॥
अगद को नहि कहे कछुक मोहि धीर न दीन्हा।
हा पति प्रान अधार गवन परधामहि कीन्हा॥
अति बिलाप तारा करत समुझाई रघुबीरजू।
कह बनादास जिव नित्य है भामिनि घर तन धीरजू॥६०॥

अगिनि अगिनि मे जाय पौन मे पौन समावै।
पानी पानी माहिं गगन गगनहि मिलि जावै॥
माटी माटी मिलै परी सा परगट देही।
जीव ईस को अस अमर सोचै किमि तेही॥
अहकार सिव मे गयो मन ससि माहिं समात है।
कह बनादास बुधि बिधि बिपे चित हरि मे ठहरात है॥६१॥

यहि बिधि दीन्हे ज्ञान हरी तारा की माया।
रघुपति भाँति अनेक नगर बासिन समुझाया॥
अनुज बोलि प्रभु कहे जायपुर कीजै काजा।
राज्य दिहेउ सुग्रीव बहुरि अगद जुवराजा॥
सबहि कहे समुझाय तव क्रिया बन्धु की कीजिये।
कह बनादास राज्यहि करौ मम कारज चित दीजिये॥६२॥

आई बर्षा समय रहो गिरि ऊपर छाई।
यहि बिध सबहि बुझाय गये आस्रम रघुराई॥
लछमन आये नगर अतिहि पूजा पद कीन्हा।
धूपदीप नैवेद्य बहुरि चरनोदक लीन्हा॥
भवन सिधाये सो सलिल राज्य दीन सुग्रीव को।
कह बनादास जुवराज पद दै अगद बल सींव को॥६३॥

लछमन आये बहुरि जहाँ राजित रघुराई।
करि कै बेप किरात कुटी सब देवन छाई॥

गिरि पर बर्षन बसे भई अति ही बन सोभा।
जहँ रघुबीर निवास पार महिमा कहि कोभा॥
बिगत बैर बन जोवगन बिहरत एकै संग हैं।
कह वनादास करि केहरी नाना रंग कुरंग हैं॥६४॥

वर्षा रितु रमनीक अधिक छबि कानन छाई।
स्याम घटा घन घुमड़ि भूमि बर्षहि नियराई॥
झिल्ली को झनकार अवसि नाचहिं कल मोरा।
हरित भूमि सम्पन्न चहूँ दिसि दादुर सोरा॥
पिव पिव रटत पपोहरा कूजत कीर चकोर है।
कह बनादास सिय बिन लषन निसि न चैन चित मोर है॥६५॥

कहुँ बासव धनु उदय अधिक सोभा सरसाई।
स्यामघटा के निकट कतहुँ बक पाँति उड़ाई॥
जहँ तहँ नीर प्रवाह अधिक झरना गिरि झरही।
निसि चमकत खद्योत सोक बिरहो उर करही॥
भूमि जीव सुठि संकुलित तृन बन भयो अपार है।
कह बनादास कानन सघन पंथ न सूझन हार है॥६६॥

लषन कह्यो कर जोरि रहो उर में जिज्ञासा।
अस अवसर नहिं मिलिहि पूर कीजै जन आसा॥
कहिये ब्रह्म सरूप जोव माया जग जाला।
भक्ति ज्ञान विज्ञान कहो वैराग्य कृपाला॥
कहिये साँतिं सरूप प्रभु बद्धमोच्छ भाषो सकल।
कह बनादास निज नाम को महिमा जाते मोर भल॥६७॥

है सतचिद आनन्द ब्रह्म को जानहु रूपा।
बहुरि सदा रस एक ताहि ते परम अनूपा॥
अचल अखंड अनीह अलख अद्वैत अभेदा।
अकल कलानिधि अगुन जाहि नहिं जानत बेदा॥
आदि मध्य अवसान बिन परिपूरन ब्यापक अहै।
कह बनादास चित अहं मन ताहि बुद्धि नाही लहै॥६८॥

आस बासना विषय संकल्प बिकल्प धरई।
हर्षसोक संजुक्त अहं को त्याग न करई॥

मन बुधि चित के सहित राग औ द्वेष न छूटै।
बिधि निषेध भय लगी सग इच्छा नहि टूटै ॥
बिलग न होवैं त्रिगुन ते ईस्वर निस्चय भो नही।
कह बनादास लच्छन सकल जानहु जीवहि के सही ॥६९॥

ममता भय और मोर तोर कामादिक क्रोधा।
लोभ मोह अभिमान सकल भाँतिन गत बोधा ॥
दंभ कपट पाखड कनक कामिनि भै सोका।
गो गोचर बिस्तार फैलि गो तीनिहुँ लोका ॥
यह माया परपच सब यामे कछु ससय नही।
कह बनादास निज रूप को बोध बिलग जानौं सही ॥७०॥

प्रथमैं अपनी देह तनय त्रिय औ पितु माता।
घरनि धाम धन आदि जानिये भगिनी भ्राता ॥
हित औ मीत अनेक वृषभ गो हाथी घोरे।
स्रुति और सास्त्र पुरान अहै बिस्तार न थोरे ॥
पाप पुन्य जीवन मरन बहुरि करम अरु काल है।
कह बनादास सुख दुःख जे यह सारो जग जाल है ॥७१॥

ह्वै अर्पन मम सरन चरन तजि परनन दूजी।
साधन सकल बिहाय आस नामहि ते पूजी ॥
तन सारो पुलकाग नैन आवै जलधारा।
सहजे कठ निरोध कहाँ हम कहँ ससारा ॥
कहुँ गावत नृत्यत कतहुँ कबहुँ मौनता धरि रहे।
कह बनादास बिन बासना यही भक्ति मम जन कहै ॥७२॥

पचभूत अस्थूल बहुरि इन्द्री अरु प्राना।
चारिउ अन्तष्करन थूल सूछम तन जाना ॥
झीनि बासना अतिहि ईस इच्छा मिलि कारन।
याते आतम भिन्न होय रस एक सो धारन ॥
बिगत मान बासना गत कही तात सो ग्यान है।
कह बनादास मक ब्रह्म बिन अवर न दूजा ध्यान है ॥७३॥

जबही तत्त्व अतत्त्व ब्रह्म मे लीन सदाई।
ब्रह्मा पील पपील दृष्टि जाको सम आई ॥

अस्तुति निन्दा हानि लाभ जेहि कबहुँ न भाना।
सुरभी स्वान स्वपाक विप्र में ब्रह्म समाना॥
कोउ तत्पर सेवा विषे कोउ तन को तारन करै।
कन बनादास विज्ञान सो राग द्वेष नहिं हिय धरै॥७४॥

तन ममता परिहरै रिद्धि सिधि तिहुँ गुन त्यागै।
तजि इन्द्रिन को भोग नाहिं कतहूँ अनुरागै॥
दाम बाम से बिलग आस बासना विनासी।
स्मृति पुरान मतवाद कहाँ मगह औ कासी॥
निर्जन भावै सर्वदा सब प्रपंच का त्याग है।
कह बनादास कोउ जन लहै ताहि कही वैराग है॥७५॥

बद्ध विषय अनुराग मोह ममता लपटाने।
देह गेह सुत बित्त तिया आपनि कै जाने॥
संसय आसावस्य बासना बृहद न थोरी।
एतो बित गृह भयो चहत इतनो फिरि जोरी॥
सत्रु मित्र बहु कल्पना परे काल के जाल है।
कह बनादास हरि विमुख जे तिनसे कवन न माल है॥७६॥

हर्ष सोक भय मोह हानि गिल्यानि न आवै।
संसय चिन्ता रहित आस बासना नसावै॥
भोग करै प्रारब्ध रहित अभिमान सदाई।
सभ सीतल सन्तोष धीर बर सहज सुराई॥
विरति हुते बैराग्य नित विषय रहित सो मुक्त है।
कह बनादास त्रैगुन रहित तिहूँकाल वेदुक्त है॥७७॥

बद्धमुक्त भ्रम सबै सकल साधन की नासा।
ईस जीव निर्भेद सहज ही स्वतः प्रकासा॥
अन्तःकरन विहीन देह बुद्धी भै भोरी।
भये दोऊ दल रहित रहै खटका केहि कोरी॥
सब प्रपंच जानों समिधि जब जरि वरि होवै भसम।
कह बनादास सो सान्ति पद सब सन्तन के यह रसम॥७८॥

कुंडलिया

परा पस्यंती मध्यमा एक रकार उचार।
भये वैखरी बरन बहु ज्यों तरु पाता डार॥

ज्यों तरु पाता डार बीर्य सब केर रकारै।
बाहेर सब के सीस कोऊ जन सन्त बिचारै॥
बनादास अच्छरन का साँचेहु प्रान रकार।
परा पस्यती मध्यमा एक रकार उचार॥७६॥

प्रथमै बानी परा है पस्यन्ती पुनि दोय।
तीजी जानो मध्यमा तहँ बिस्तार न कोय॥
तहँ बिस्तार न कोय बैखरी नाना रूपा।
जिमि ईस्वर से भई सृष्टि सब भाँति अनूपा॥
परा न प्रगटै जो बरन काहु वाक्य ते होय।
प्रथमै बानी परा है पस्यन्ती पुनि दोय॥८०॥

परा प्रतिष्ठित सर्बदा अरु बैखरी समानि।
स्रुति पुरानहू विदित है स्रीमुख आपु बखानि॥
स्रीमुख आपु बखानि परा गति लखै न कोई।
जाहि जनावौ मही भेद जानत है सोई।
ताते सार रकार है लिये सुजन पहिचान।
परा प्रतिष्ठित सर्बदा अरु बैखरी समान॥८१॥

सब बर्नन को बाप है जानौ एक रकार।
ताही ते प्रगटे सकल नाना भो बिस्तार॥
नाना भो बिस्तार भेद मात्रा स्वर केते।
छन्द प्रबन्ध अनेक कहाँ लौ बरनै तेते॥
बनादास स्रुति सास्त्र भे अमित प्रकार अपार।
सब बर्नन को बाप है जानौ एक रकार॥८२॥

छप्पय

कोटि जज्ञ जप कोटि कोटि तीरथ असनाना।
कोटि नेम आचार कोटि पूजा तप दाना॥
कोटि जन्त्र औ मन्त्र तन्त्र साधन विधि कोटी।
कोटि बेद को पाठ नाम की महिमा मोटी॥
कोटि भक्ति के अंग है विरति ज्ञान बिज्ञान घन।
कह बनादास हरि नाम सम ध्यान समाधि न वदै जन॥८३।

अगुन सगुन दोउ रूप सदा जाके आधारा।
महिमा सारद सेष कहत कोउ लहै न पारा॥

विरति ज्ञान बिज्ञान राम नामहिं ते आवै।
बाप से बड़ा न पूत कहत कोउ सुना न भावै॥
हरिजस भापै नाम बल नामै अनुभव मूल है।
कह बनादास जन धन्य ते एक नाम अनुकूल है॥८४॥

नगो मूल जब हाथ पात डारै को दौरै।
मूढ़ परोसा त्यागि घरै घर मांगत कौरै॥
मुक्तामनि को छोड़ि खेत में बीनै दाना।
पूर गुरू नहिं मिला लाग नहिं नाम निसाना॥
धारा सुरसरि की तजे चाटत तृन को सीत है।
कह बनादास साधन अमित करते मति विपरीत है॥८५॥

कलि मे केवल नाम काम करिहै नहिं दूजा।
बाम भये बिधि भले अपर साधन न पसूजा॥
सेवै सेमर सुआ भुआ हाथे में आवै।
तैसे नाम विहाय अपर ते मुक्ति न पावै।
जीति लियो विकराल जुग धर्म जहाँ लगि स्तुति कहै।
कह बनादास सुठि सहज ही रामनाम भव रुज दहै॥८६॥

उभय प्रबोधहिं करै सरै लोकहु को काजा।
भोजन छाजन सकल सँभारै प्रतिदिन साजा॥
जाचकता को हरै आस बासना नसावै।
मन इन्द्री स्वाधीन नाम बल सुठि सुख पावै॥
जब चातक मत को गहै स्वाति बूँद नामहिं लहै।
कह बनादास साधन सकल न कल जलहिं तजि निर्वहै॥८७॥

भजन करै निष्काम कोटि विधि ऊँचा दरजा।
लगै न एको हाथ नही मन मानै बरजा॥
मृपा बनै कंगाल राज नहिं करै अकामा।
ऐसी खोटी बानि भयो जुग जुग विधि बामा॥
अभ्यन्तर ते निकरि गै तिल तिल तृष्णा जासु उर।
कह बनादास सन्तन सदा किये बड़ाई तासु फुर॥८८॥

सुनि प्रभु के वर बचन लषन पद मस्तक डारे।
दीन बन्धु तत्काल जगत ते जिवहिं उघारे॥

तुम बिन जानैं कौन जीव विषयहि लपटाने।
करुना दृग जेहि ओर सहज मे ते भव माने॥
परम कृपा मोपै करी हरी सकल भ्रम फन्द है।
कह बनादास ऐसे प्रभुहि जे न भजै मति मन्द है॥८९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम द्वाविंसतितमोऽध्याय ॥२२॥

छप्पय

बीतो वर्षाकाल कास बन माहि फुलानी।
जहाँ तहाँ कम कीच बीच मछरी अकुलानी॥
सोष्यो मग को सलिल चले नृप बनिक भिखारी।
तपी तजे घर आस भये सुठि इच्छाचारी॥
भूमि जीव सकुल गये भये सलिल सुठि अमल है।
कह बनादास सोभा अवसि भयो गगन अति अमल है॥९०॥

एक समय हनुमान वहाँ उर कीन बिचारा।
भो सुकठ मति मलिन काज रघुबीर बिसारा॥
जाय कहै कर जोरि भोग में अस लपटान।
भूलि पाछिली सूल होब औ आब न जाने॥
कह कपीस अकुलाय कै जहँ तहँ पठवहु कीसजू।
कह बनादास सीता खबरि लावहि बिस्वाबीसजू॥९१॥

उदय अस्त गिरि आदि मेरु मन्दर कैलासू।
हिमगिरि औ सुम्मेरु जहाँ तहँ बाँदर बासू॥
कानन जे जग माहि चहूँ दिसि पठवहु मर्कट।
जाते सुनत रजाय बेगि आवहि सारे भट॥
हनुमान कीन्हे जतन पठये जहँ तहँ बीर है।
कह बनादास पहिचानि कै सुठि बुध सुवन समीर है॥९२॥

इहाँ राम बिलखाय कहे वर्षा रितु बीती।
मिली न सीता खोज तात बाढ़त उर प्रीती॥
जुग से पलक सिरात मोहिं जनु बिन बैदेही।
बिन जाने का बनै बुझावत मन मिसु येही॥
कपिपति भूलो भाँति केहि परि सुख राज समाज है।
कह बनादास निस्चय किये करि लीन्हे निज काज है॥९३॥

सोई धनु औ बान बने मम भुजा बिसाला।
जाते मारे बालि रहा सुग्रीव बिहाला॥
पाँवर पसु पति नीच बीच पाये ते भूला।
अब तक लई न खोज गई पछिली सब सूला॥
क्रोधवंत प्रभु जानि कै लषन लिये धनु बान है।
कह बनादास कटितून कसि अवसि महाबलवान है॥६४॥

लखे लषन रुख राम कहे तबहीं समुझाई।
सहजे दाँव देखाय सखै ली आवहु भाई॥
तुरित गयो पुर माहिं बीर धनुबान चढ़ाये।
जारि करौ पुर छार सुनत कपिपति अकुलाये॥
तारा अंगद संग लै पठये तब हनुमान जू।
कह बनादास सुठि चरन परि कीन्हे सुजस बखान जू॥६५॥

करि बिनती गृह लाय सुभग आसन बैठारे।
अतिही प्रीति समेत बालिसुत चरन पखारे॥
धूप दीप नैवेद्य बिबिध बिधि पूजा कीन्ही।
तारा स्रद्धा प्रीति चरन जल सिर धरि लीन्ही॥
आय दंडवत तब करी सकुच सहित कपि राय जू।
कह बनादास लछमन तबै भेंटे अंग लगाय जू॥६६॥

तब बोले सुग्रीव कीस बहुगे प्रभु काजा।
सिय खोजन के हेत बुलावन सुभट समाजा॥
अंगदादि कपि सैन चले जहँ रघुकुल नाथा।
लछमन संगै आय कोसपति नायउ माथा॥
भेंटे हृदय लगाय प्रभु सबहि सहित सनमान है।
कह बनादास पीछे मिले अंगदादि हनुमान है॥६७॥

नाथ विषय बलवान करै जोगिन मन छोभा।
कपि कामी पसु पोच अवसि मेरो यह सोभा॥
जापर कृपा कटाच्छ पार सोई जन पावै।
अपर तीनिहूँ लोक विषै सरिता बहि जावै॥
अब ऐसी करुना करी सब तजि प्रभु चरनन भजौं।
कह बनादास हरि दरस को यह प्रभावता ते लजौं॥६८॥

जे जन विषय विरक्त नहीं लोभादिक क्रोधा।
सत्य वचन गत मान आपु सम ते भल सोधा॥

पावै तुम्हरी कृपा लहै करि साधन नाहीं।
ताते तेई धन्य किये बैराग्य सदाही ।।
सबहि प्रबोधे राम तब सिय खोजन जे कपि गये।
कह बनादास अवसर निरखि हनूमान कहते भये ।।९९।।

कपिपति किये विचार अंगदादिक जे वीरा।
जामवन्त हनुमान जाहि दच्छिन दिसि धीरा ।।
अपर दिसा बहु सुभट मास भरि को परमाना।
लावहु सीता खोज न तरु मरनो निज जाना ।।
प्रभु पद गहि कीन्हे गवन तब बोले हनुमान जू।
कह बनादास दै मुद्रिका कहे लागि कछु कान जू ।।१००।।

सवैया

खोजत बेगि चले गिरि कन्दर औ घट घाट नदी नद नारे।
बाटिका बागन ग्राम तजें कहुँ नग्र पुरा अरु कानन भारे ।।
जो रज निस्चर भेंट भई कहुँ मारि चपेटन प्रान निकारे।
दासबना बहु दीन पुकारत जानि कै ताहि तजै अधमारे ।।१।।

या विधि बीति गये बहु बासर भे जल कारन प्रान दुखारे।
मर्न भयो सब कोऊ बिचारत तौ गिरि पै हनुमान निहारे ।।
देखे तहाँ बक हंस घने खग कूजें उड़ै नभ में बहुवारे।
जानि जलासय गौन किये तहँ लागि करे चहुँ ओर विचारे ।।२।।

घनाक्षरी

देखे महि बिबर हले हैं हनुमान अग्र पीछे सब कोऊ कपि तहाँ पैठि पेखे हैं।
रचना बिचित्र मनि खचित बिबिध धाम मोहै मन मुनिन के लावै न निमेखे हैं ।।
हेमा को बिबर जाहि लंका निर्मान किये सोई मय बनये विचार कै विसेखे हैं।
बनादास भरो सर नाना फल फूल लागे अमी के समान प्रान जीवित सो लेखे हैं ।।३।।

बैठि तपपुंज तिय ताहि अवलोकत भे सब कोऊ जाय कै प्रनाम तब किये हैं।
बूझे सो प्रसंग तब सकल हवाल कहे करि अस्नान फल खाहु आज्ञा दिये हैं ।।
जाय करि मज्जन सकल जलपान किये खाय कै मधुर फल सुखी सुठि हिये हैं।
बनादास जाय सब बहुरि प्रनाम किये इहाँ आय परे मानो मृतक से जिये हैं ।।४।।

मैं तो जैहौं राम पहँ तिन निज हाल कहे पैहौ सिय खोज उर सोच मति कीजिये।
ध्यान करो रामजू को विवर सो पार ह्वै हौ आज्ञा दिये सबै कोऊ आँखि मूँदि लीजिये ।।

मूंदत नयन सबकोऊ सिंधु तीर आये समुझि प्रताप रस प्रेम उर भीजिये।
बैठे सब सोच करैं पाये सिय सोध नाहीं बनादास बीर हैं अधीर हाय मीजिये ।।५।।

कुंडलिया

खोज लिये बिन जाहि जो पैज किये सुग्रीव।
यामें कछु संसय नहीं तौ वह मारै जीव।।
तौ वह मारै जीव कहे अंगद बिलखाई।
उभय भांति ते मौत बनै कछु नाहिं उपाई।।
बनादास ब्याकुल सकल भये महाबल सीव।
खोज लिये बिन जाहि जो पैज किये सुग्रीव।।६।।

जामवन्त तबही कहे धीर धरौ जुवराज।
बिन सीता की सुधि लिहे वहां कौन है काज।।
वहां कौन है काज लाज कर अवसर बीरा।
सुमिरहु श्री रघुबीर हृदय में आनहु धीरा।।
समुझावत सब भांति से सकलौ कीस समाज।
जामवंत तबही कहे धीर धरौ जुवराज।।७।।

मनुज न जानौ राम को ब्रह्म सच्चिदानन्द।
सुमिरत जाके नाम को मुनि काटत भव फन्द।।
मुनि काटत भवफन्द मुक्ति सिव देवै कासी।
अतिसय पूरन भाग्य भये सब राम उपासी।।
बनादास ऐसे प्रभुहि भजहि न ते मति मन्द।
मनुज न जानौ राम को ब्रह्म सच्चिदानन्द।।८।।

मन बचन क्रम करि होहु सब राम काम आरूढ़।
रघुनाथै की कृपा ते होवै सहज अगूढ़।।
होवै सहज अगूढ़ सिन्धु सोपे घट जोनी।
वह रामै को 'कार्य ताहि ते नीकी होनी।।
बनादास असमय परे अवसि सहायक गूढ़।
मन बच क्रम करि होहु सब राम काम आरूढ़।।९।।

मन छीजे पुरुषारथौ छीन होय दृढ़ जान।
ताते गाढ़ी समय में धीर न तजै सयान।।

घोर न तजै सयान भरोसा हरि को कीजै।
जो तृन ते कर बज्र बज्र तृन कासे छीजै॥
बनादास ह्वै है भला सुमिरौ सो भगवान।
मन छीजे पुरुषारथौ छीन होय दृढ जान॥१०॥

जामवन्त को बचन सुनि सबको मन हरषान।
सपाती गिरि कन्दरा आरौ पाये कान॥
आरौ पाये कान गुहा ते बाहेर आवा।
देखि जुत्थ कपि भालु हृदय मे सुठि सुख पावा॥
आजु सकल भच्छन करौं दिन बहु केर भुखान।
जामवन्त को बचन सुनि सबका मन हरषान॥११॥

सवैया

काल असख्य से उद्र भरो नहिं आजु दिये हरि एकहि बारे।
देखि महा बिकराल सरूप डरे सब बांदर भालु बिचारे॥
अगद बोलत भे तेहि अवसर नाही जटाइव से होनि हारे।
दासबना को प्रभाव कहै जिन राम क काम सरीरत जारे॥१२॥

दै परतीति बुलाय समीपहि बन्धु कथा सब बूझत भयऊ।
तो जुवराज कहै विधिपूर्वक जो जग मे अतिसय जस लयऊ॥
लै चलो सिन्धु समोपहि मो कहँ जा विधि बन्धु तिलाजलि दयऊ।
दासबना सह गीध सबै जन ताछन सागर के तट गयऊ॥१३॥

कुडलिया

तब सम्पाति कहत भयो अपनो पूरब हाल।
जुवा रहे दोउ बन्धु जब पौरुप अतिहि बिसाल॥
पौरुप अतिहि बिसाल उडे रबि भेंटन कारन।
गये निपट नगिचाय तेज तब लाग्यो जारन॥
बन्धु फिर्‌यो मैं ना फिर्‌यो बिधि गति कठिन कराल।
तब सम्पाति कहत भयो अपनो पूरब हाल॥१४॥

दीपक परै पतग जिमि भई दसा तिमि मोरि।
पख जर्‌यो पहुँच निकट भूतल पर्‌या बहोरि॥
भूतल पर्‌या बहोरि कीन्ह पुनि हृदय बिचारा।
पावक करं प्रवेस मरैगे बिनहि अहारा॥
मुनि यक नामे चन्द्रमा दीन्हे ज्ञान बहोरि।
दीपक परै पतग जिमि भई दसा तिमि मोरि।१५॥

हेत सदा प्रारब्धवस तू त्यागै केहि लागि।
समय समय पर मिलैगो जो कछु तेरी भागि॥
जो कछु तेरी भागि आपु से सो चलि आवै।
जो नहि मिलै अहार देह कैसे ठहरावै॥
तन अभिमानहिं दूरि करि रहै राम अनुरागि।
देह सदा प्रारब्ध बस तू त्यागै केहि लागि॥१६॥

ब्रह्म परात्पर अवधपुर जब लेहैं अवतार।
धेनु संत सुर कारने हरैं भूमि का भार॥
हरें भूमि का भार नारि चोरिहि दससीसा।
ताके खोजन हेत पठावहिं प्रभु भट कीसा॥
बनादास तेहि दरस ते जामिहि पंख तुम्हार।
ब्रह्म परात्पर अवधपुर बल लैहैं अवतार॥१७॥

सीता दिहेउ बताय तुम मुनि आज्ञा भै मोहिं।
पन्थ निहारे काल बहु आजु सुखी लखि तोहि॥
आजु सुखी लखि तोहि देखि मोहि धरिये धीरा।
प्रभु के कृपा प्रसाद भई सुठि सुभग सरीरा॥
बैठी सिया असोक तर मोहिं परत है जोहिं।
सीता दिहेउ बताय तुम मुनि आज्ञा भै मोहिं॥१८॥

गीधहि दृष्टि बिसाल सुठि तुमहिं परत नहिं पेखि।
नांधै सत जोजन उदधि सीता आवैं देखि॥
सीता आवै देखि करौ सबकोऊ बिचारा।
होय राम को काम उचित यह अहै तुम्हारा॥
सम्पाती गवनत भये दैकै उदक बिसेखि।
गीधहि दृष्टि बिसाल है तुर्महि परत नहिं पेखि॥१९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिनखण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम त्रॅविंसतितमोऽध्यायः॥२३॥

छप्पय

जामवन्त तब कहे कहौ निज निज बल भाई।
होय राम को काम कीन्ह सो चही उपाई॥

जोजन प्रति सब बढ़े बीर जहँ लगि बरियारा।
तबहिं बालिसुत कहे पार मैं जाने हारा॥
आवन को नहिं पार मन अंगद कहे बिचारजू।
कह बनादास पुनि रिच्छपति तुम सबके सरदारजू॥२०॥

नहीं अहै तन तरुन अवसि आई वृद्धाई।
छन म औरयो देखि याह अब किये बड़ाई॥
बामन बाढ़े जबै बरनि को पावै पारा।
तिहूँ लोक पग तीनि सुजस जाको बिस्तारा॥
सप्त प्रदच्छिन कीन्ह मैं जुवा रह्यो तेहि काल महँ।
कह बनादास क्यों चुप रहे बोल्यो पवनकुमार पहँ॥२१॥

राम काम हित जन्म तात तव महिमा भारी।
जन्मत ही अति बेगि लिये उडि लीलि तमारी॥
अब तौ जुवा प्रचड काह तेहि लका जाना।
रघुपति चरन सँभारि तबहिं बोले हनुमाना॥
कनक भूधराकार तन प्रबल तेज व्याप्यो बदन।
कह बनादास ध्रुव वक सुठि तब निज बल भो अस्मरन॥२२॥

नाँघौ सातौ सिन्धु तुच्छ क्या सागर सारा।
आनौ अहित त्रिकूट लक लागै नहिं बारा॥
रावन सेन समेत हतौ छन एकै माहीं।
सीता सीस चढाय चलौ लै रघुपति पाहीं॥
राम काम के कारने मेढुक से मोचहि मलौं।
कह बनादास बजरग बर बदत कोपि कालहि दलौं॥२३॥

तुम सब लायक तात कह्यो तबहीं रिच्छेसा।
आवो सीतहिं देखि यही रघुबीर निदेसा॥
अगदादि जे बीर सबै सुनि आनँद भारी।
हनूमान हिय हर्षि कीन्ह गढ तंक तयारी॥
कालछेप सब कोउ किह्या कन्दमूल फल खाय कै।
कह बनादास जब तक नहीं आवा सिय सुधि पायकै॥२४॥

सिन्धु तीर गिरि एक चट तापर भय त्यागे।
सिमिटे कर औ पाद बहुरि अवलोके आगे॥

कुरक्षाल्यो पय गगन बेगि उपमा नहिं आना।
जथा राम को बान चल्यो तैसे हनुमान।।
धन्य सो रघुनाथजू धनुष मनहूँ कपिराय भो।
कह बनादास दल भाय से सर से बीर निकाय भो।।२५।।

तरक्यो जब हनुमान हल्यो अति भूधर भारी।
पर्‌यो सिन्धु भहराय जीव नाना विधि झारी।।
झूम्यो मर्कट भालु सिन्धु में *बिनहिं प्रयासा*।
हनूमान को बेग कवन पावै अवकासा।।
नभ मारग में जात है बैन तेय से सुठि सबल।
कह बनादास सुत पौन को पटतर कहुँ पावै प्रबल।।२६।।

गगन जात हनुमान सिन्धु उर कीन्ह बिचारा।
वेगि कहे मैनाक जाय तैं देय सहारा।।
रामदूत जिय जानि कीन्ह उति राय प्रनामा।
कीजै मोहिं सनाथ छनक लीजै विसरामा।।
कर ते परसे पवनसुत दरसे मोहिं दूजो नहीं।
कह बनादास प्रभु काज विन किये चैन कैसो लहौं।।२७।।

देवन कीन्ह बिचार लंक गवने हनुमाना।
बलबुधि तेज प्रताप चही इनको कछु जाना।।
पठये सुरसा सपदि मिली कपि मगहिं मझारा।
बोली अर्वास सरोप सुरन मोहिं दीन अहारा।।
तबहिं कहे हनुमान जू यहि छन दीजै जान मोहिं।
कह बनादास प्रभु काज करि आय पैठिहौ बदन तोहिं।।२८।।

नहिं कीन्हे कछु कान अतिहिं सो वदन वढ़ावा।
पवनतनय बलवान दुगुन तेहि रूप देखावा।।
सुरसा जोजन जुगल तबहिं निज मुखहि पसारा।
हनुमत जोजन चारि किये आनन बिस्तारा।।
जोजन प्रति बढ़ने लगी पोड़स जोजन मुख किये।
कह बनादास वत्तिस बहुरि हनोमान हरषित किये।।२९।।

जस जस सुरसा बढ़ी भये कपि ताको दूना।
तबहिं करि अनुमान हिये आई कछु ऊना।।

सतजोजन मुख किये भये अति लघु हनुमाना।
माँगि विदा जब चले महा महिमा सो जाना॥
जेहि लगि पठये देव मोहि तव प्रताप जानत भई।
कह बनादास आनन्द अति दै आसिष सुरसा गई॥३०॥

रघुपति सन्मुख होत होय तिहुँ पुर हितकारी।
बार न बाँके कबहुँ लगै नहि ताति बयारी॥
गोपद सातौ सिन्धु अनल अतिही सितलाई।
पगु चढ़ै गिरि सृग सत्रु सुठि करै भलाई॥
आक होय सुरतरु सरिस सुनि आस्चर्य न कोउ करै।
कह बनादास प्रभु पद बिषे दृढ प्रतीति जो जन धरै॥३१॥

नाम सिन्धु का जासु रहै सो जलनिधि माही।
जो नभ मारग उड़ै गहै ताकी परिछाही॥
फेरि न सकै उडाय खाय ता कहँ सो मारी।
अति दुस्तर गति तासु जियै यहि विधि नभ चारी॥
सोई चरित कपि से किये तुरत बधे सुत पौन है।
कह बनादास बल बेग सम सिन्धु पार किये गौन है॥३२॥

सिन्धु तीर गिरि एक चढे तापै कपिराई।
गढ लका अति दुर्ग पर्‌यो सर्वाङ्ग देखाई॥
कनक कोट मनि खचित नाहिं उपमा अमरावति।
बरनै सोभा तासु भारती सुठि सकुचावति॥
चारि द्वार चारिउ दिसा लच्छ लच्छ रन सूर है।
कह बनादास पहरा खडे सब प्रकार गति कूर है॥३३॥

महारथी गज अधिप तुरयपति औ पदचारी।
द्वारे रच्छा करै बिबिध बिधि आयुध धारी॥
कोट मध्य भट कोटि कोटि यक बारै गर्जै।
बिपुल अखाडेन भिरै लरै नाना बिधि तर्जै॥
खर खच्चर अज या महिष वृषभ गऊ सठ भच्छही।
कह बनादास मदपान कृत नग्र चहुँ दिसि रच्छही॥३४॥

बाजत पनव न फेरि ढोल सिंह सहनाई।
घोर सब्द दुन्दुभी कान कहुँ दीन न जाई॥

तुरही औ तम्बूर डिमडिमी भाँति अनेका।
सोर चारिहू द्वार लजित सावन घन जेका॥
वन उपवन अरु वाटिका बाग जहाँ तहँ सोहहीं।
सर बापी बहु कूप बर दासबना मुनि मोहहीं।३५॥

तुरय साल रथ साल बिपुल गज साल सोहाई।
करत घोर चिक्कार जाहि गज दिसा लजाई॥
बनी बजार बिचित्र चहूँ दिसि सुठि चौ गाना।
बसगिति घनी अनूप भरे राच्छस बिधि नाना॥
तने चँदोवा चारु अति लागे कुलिस कपाट है।
कह बनादास पचरगगच को बरनै बर ठाट है॥३६॥

कपि उर कीन्ह बिचार तहाँ दिन सकल बिताई।
लंक गवन निसि किये अवसि लघु रूप बनाई॥
मिली लंकिनी तर्वहि कहे मम मरम न जाना।
लंक चोर भखु मोर हने मुष्टिक हनुमाना॥
रुधिर वमन मुख नासिका स्रवन सपदि भूतल परी।
कह बनादास अवसर निरखि उठि बहोरि धीरज धरी॥३७॥

जब रावन तप किये विषम बन तीनिउ भाई।
सिव बिरंचि तहँ आय दिये, बरदान बड़ाई॥
चलत कहे मोहि बात राम त्रेता तन धरिहैं।
भक्तन तारन हेत अमित लीला बिस्तरिहैं॥
तासु त्रिया दसमुख हरिहि ह्वै अभिमान अचेत हैं।
कह बनादास निज दूत प्रभु पठावैं खोजन हेत हैं॥३८॥

जबहीं कपि के हने तोहि नहि रहै सँभारा।
निस्चय जाने तर्वहि भयो राच्छस संहारा॥
मोर सुकृत सुठि वृहद दूत प्रभु दर्सन पाये।
करिहौं रघुपति कार्य धीर बल बुद्धि सुहाये॥
आसिष दीन्हे अवसि करि तुरत किये कपि गौन जू।
कह बनादास चहुँ दिसा में सोध लिये सुत पौन जू॥३९॥

जहँ तहँ धीर वरुथ जुत्थ अति भारे भारे।
घूमहि रजनी समय सकल लंका रखवारे॥

पवनतनय बल वृहद मनहुँ अहि म उरगाही।
गलिन गलिन कृत गवन नेक हिय माननहारी॥
गयो दसानन भवन मे अति विचित्र बरनै कवन।
कह बनादास जेहि देखि कै सारदहू साधै मवन॥४०॥

सयन किये तेहि दीख परो गिरि सृङ्ग समाना।
बाम दच्छ दिसि नारि नाग सो वहि बिध नाना॥
काउ जाघा पर सीस काऊ भुज पर धरि माथा।
सुर किन्नर कन्यका नाग का अगनित साथा॥
स्वास लेत सुठि घार सुर मनहुँ मेघ गरजत घने।
उडहि जीव परि सामने नहि पटतर आवत मने॥४१॥

विविध जीव को मास धरो वहु भाँति बनाई।
सानित मदिरा कुम्भ भरे देखे समुदाई॥
आमिष अमित अपक्व जहाँ तह लागी ढेरा।
त्वचा निकासी लोथ टँगो वहु जीवन केरी॥
मीन अनेकन भाँति की जाति जाति को गनि सकै।
कह बनादास सख्या रहित पार काव कवि को अकै॥४२॥

कोस खजाने घने करै को तेहि सुम्मारी।
धनुष वान असि चर्म कवच सुठि भारी भारी॥
तोमर मुद्‌गर घने सक्ति औ सूल कराला।
भिन्दिपाल औ परिघ धरे नानाविधि भाला॥
जगी रोसनी तेज अति मनि दीपकन प्रकास है।
कह बनादास उपमा कहाँ जहँ रावन को वास है॥४३॥

गृह गृह खोजे घूमि नही सीता कहुँ पाये।
सोच करत वहु भाँति भवन ते बाहेर आये॥
जादर वन मुख लाय वहुरि बीरन महँ भाई।
करिहैं कपि उपहास भले सीता सुधि पाई॥
पैज किये कपिराज हैं सवहो को मारैं सही।
नहि सीता की सुधि मिली रघुपति तन रखिहै नही॥४४॥

लछमन रघुवर रहित छनक राखं नहि देही।
तजिहैं तन कपिराय परम रघुबीर सनेही॥

जौ नर है सुग्रीव कुटुंब पम्पापुर मरि है।
जैहै अवध हवाल भरत पलधीर न धरि है॥
रिपुसूदन जननी सकल सुनत अवधवासी मरैं।
पाय खबरि मिथिला नृपति बिनहि आगिखर सब जरैं॥४५॥

मोर जाब सुठि प्रलय तिहूँ पुर खोवनहारा।
ताते मनहिं दृढ़ाय डुबिये सिन्धु मझारा॥
डूबे मृत्यु अकाल बिगरि जावैं परलोका।
कीजै पुहुमी त्याग तबहुँ अतिही उर सोका॥
लीजै किन संन्यास को कै कासी में तन तजै।
यहि बिधि कोटि कुतर्क उर भै गलानि चिन्ता लजै॥४६॥

बन उपबन बाटिका नगर बाहेर बहु देखा।
कुम्भकर्न तहँ गयो करै बिस्तार को लेखा॥
पुर बाहेर सो निकट परा सोवै षट मासा।
जागै जबही बीर होय तिहूँ पुर में त्रासा॥
ताको मारग एक दिसि आवै रावन के निकट।
कह बनादास पैंड़े तेही पुनि पलटै जहँ रहै भट॥४७॥

हनूमान तेहि देखि किये उर में अनुमाना।
धरिकैं अति लघुरूप गयो भीतर बलवाना॥
स्रवन नासिका उदर माहिं हेरे बैदेही।
रावन राखे होय जानि कै परम सनेही॥
बीति गये बासर कई पुनि आये निसि लंक है।
कह बनादास ब्याकुल अवसि दिसि राच्छमन असंक है॥४८॥

पुनि कीन्हे अनुमान हिये हनुमान बिसेखी।
राखे जलनिधि मध्य सिया कहुँ परत न पेखो॥
ताते खोजी सिन्धु मन्त्र याही दृढ नीका।
इतना उर में फुरत दिसा बायें काउ छीका॥
जग्यो बिभीषन समय तेहि राम राम सुमिर्‍यो जबै।
कह बनादास सुतपवन सुनि हृदय मोद मान्यो तबै॥४९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिनखण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम चतुर्विंसतितमोऽध्यायः॥२४॥

छप्पय

पुनि आयो उर माहिं निसाचर लंक घनेरा।
अति अचरज की बात इहाँ कहँ साधु बसेरा॥
चल्यो बहुरि तेहि ठाँव बृन्द तुलसी के देखा।
हरि मंदिर वर बनो नाम अंकित अति पेखा॥
जाने कोउ सज्जन इहाँ अवसि जोग्य पहिचान है।
कह बनादास स्रुति नीति मत साधु सोहित नहिं आन है॥५०॥

बिप्र रूप तब धरे द्वार पर वचन सुनाये।
अवसि हर्ष सुनि भये बिभीषन उठि तहँ आये॥
करि जुत प्रीति प्रनाम तबहिं तिन वचन उचारा।
कहहु कथा द्विज देव हेत कवने पग धारा॥
हम कहँ दुर्लभ दरस तुव आजु अहो मम भागि है।
कह बनादास सुनि प्रिय वचन उठे हृदय अनुरागि है॥५१॥

कहे कथा निज नाम राम के काम सिधाये।
मिले बिभीषन हरषि अवसि उर मे लपटाये॥
सजल नयन तन पुलक नाहिं आवति मुख बानी।
दोउ जन प्रेम अधीर रही निज नाहिं निसानी॥
तामस तन साधन रहित अवसि मलिन मन वाम है।
कह बनादास कवनी तरह करि हैं करुना राम है॥५२॥

नही जोग जप जज्ञ नही व्रत तीरथ दाना।
नहिं तप नम अचार सत सगति नहिं जाना॥
पढे न बेद पुरान पाठ पूजा नहिं कोई।
नही भजन अनुराग जन्मगे बादिहि खोई॥
खल मडली निवास नित मृतक तुल्य मानहुँ जिये।
कह बनादास तव दरस ते कछु भरास आवत हिये॥५३॥

बिन रघुपति की कृपा मिलत नहिं प्रभु अनुरागी।
हनूमान तव दरस भाग भालहि सुठि जागी॥
कपि कहँ सुभ गुन धाम राम पद पूरन प्रेमा।
होत न ऐसो बात लंक निबहत को नेमा॥
प्रीति परस्पर उभय दिसि अतिहि मगन दोउ जन भये।
कह बनादास का हम कहाँ रहि नहिं तेहि अवसर गये॥५४॥

घनाक्षरी

कहे हनुमान तात साधन सकल मूल जानो राम नाम ऐसो दूसरो न आन है।
जोग जज्ञ पूजा पाठ तीरथ वरत दान नेम औ अचार नहिं नाम के समान है॥
जप तप नहिं तुलै व्याजहू समानताहि भक्ति औ विराग होय जाहि करि ज्ञान है।
सो तो लक माहि तात सुलभ सकल वाल भूसो के समान सब जोरव जहान है॥५५॥

मुक्ति राम नाम ही से भुक्ति राम नाम ही से राम नाम ही से सब साधुता को अंग है।
जोग रामनाम ही से छेम रामनाम ही से रामनाम ही सो होत उर में उमंग है॥
प्रेम रामनाम ही सो नेम रामनाम ही सो जानो रामनाम से मनोरथ न भंग है।
बनादास तामे लंवतोर धन भेद दोसै रामनाम जपे जन सबसे असंग है॥५६॥

जपे रामनाम जिन काम ताको पूर सब कूरन से दूर सूर सोई धीरवान है।
काल औ करम संग सकल न भग करि रंगे राम रंग दृढ़ होत ज्ञानवान है॥
बिरति बिज्ञान ध्यान धारन सकल अंग सानिहू को भागी सोई परम सुजान है।
बनादास ऐसो नाम तजि ध्यावै और जौन ताका पसु जानो हीन पूंछ औ बिषान है॥५७॥

प्रीति औ प्रतीति जाकी भई रामनाम ही सों दृढ़ व्रत अति मानो चातक समान है।
करम वचन मन साधन अपर जल स्रुति औ पुरान करै काहू कौन कान है॥
बनादास सुकृत को सीव सोई जग माहि फेरि ताहि कर वो नर हो कछु आन है।
सुर नर मुनि सब ताही की सराहै भागि कहत बिभीषन सों ऐसो हनुमान है॥५८॥

रामनाम रहित सहित कुल कोटि गयो हमरे विचार सोई सांचो जातुधान जू।
ता कर निरादर विसेषि लोक वेदहू में संत मत माहि भयो मृतक समान जू॥
राम अनुरागी भूरि भागी तीनि कालहू में जागी कल कीरति सो देव के समान जू।
[ब]नादास देव दैत्य मृतक औ जीवत को जानिये विसेषि रामनाम परमान जू॥५९॥

छप्पय

गयो दिवस जब बीति कहे हनुमत सुनु भ्राता।
कीजै सोई उपाय लखौ जेहि सीता माता॥
तबहि बिभीषन कहे जतन सिय देखन केरी।
चले वेगि हनुमान सोच सब अंग निवेरी॥
अति लघु रूप बनाय के गये हृदय हरषान है।
कह बनादास जहँ जानकी कीने उर अनुमान है॥६०॥

तरु असोक चढ़ि गयो सोक सो कपिहि बिसेखी।
रह्यो न धीर सँभार दुखित सुठि सीतहि देखी॥

कृस सरीर सिर जटिल राम नामहिं लव लाई।
उडि उडि लागी धूरि दसा तन की बिसराई॥
लोचन मोचत वारि अति सूख अधर पद नैन हैं।
कह बनादास मूरति हृदय निरखति करुना ऐन हैं।६१।

उर्ध्व स्वासजुत आह बिरह सह सुठि बैदेही।
पच्छी उडि उडि गये त्यागि निज बास सनेही॥
सहि न सकै खग पीर कहाँ उपमा कबि पावै।
देखि जानकी दसा धीरजुत को रहि जावै।
मूर्तिवन्त कैधौं बिरह कै परगट तप रूप है।
कह बनादास को कहि सकै सीता दसा अनूप है।६२॥

कुंडलिया

रावन आयो समय तेहि सग अमित बरनारि।
लग्यो प्रबोधै जानकी सठ मानैं नहिं हारि॥
सठ मानैं नहिं हारि सुनैं किन बचन सयानी।
मय तनुजादिक अहै जो न मेरे पटरानी॥
सकल अनुचरी तव करौं मम दिसि नेक निहारि।
रावन आयो समय तेहि सग अमित बरनारि॥६३॥

मेरी दिसि देखै नही रत तपसी के ध्यान।
राज्य भोग नहिं आदरै को मो सम जग आन॥
को मो सम जग आन कहा ताको नहिं मानै।
आयो क्या होनिहार टेक अपनी सुठि ठानै॥
बनादास जो नहिं सुनैं मरि हौ काढि कृपान।
मेरी दिसि देखैं नही रत तपसी के ध्यान॥६४॥

सुना सीर से सत बिभौ जाके बस तिहुँ लोक।
साम भानु इन्द्रादि जम काका दिये न सोक॥
काको दिये न सोक सम्भु बिधि जेहि आधीना।
चाहे सो बर लिये सकल सुर जा सो दीना॥
बचन न मानैं तपो प्रिय जाको कहीं न रोक।
सुना सीर से सत बिभौ जाके बस तिहु लोक॥६५॥

रे पापी निलज्ज सठ दसमुख अधम अयान।
ताहि पीठि दै जानकी बोली बचन प्रमान॥

बोली बचन प्रमान हरे सूने खल मोही।
तू खद्योत प्रकास भानु रघुपति को द्रोही॥
बनादास अब तक नही खोज लहे भगवान।
रे पापी निर्लज्ज सठ दसमुख अधम अयान।६६॥

केहरि की समता करै कैसे मूढ़ सृगाल।
बैनतेय कहँ काग सठ मृषा न मारै गाल॥
मृषा न मारै गाल हंस समता बक कैसे।
बैठो आनन मीच बचन क्यों कहै अनैसे॥
बनादास निज किये को फल पावैगो हाल।
केहरि की समता करै कैसे मूढ़ सृगाल॥६७॥

जाहि बन्धु को रेख धनु नाधि न सकेहु मलीन।
तासु प्रिया सो बचन इमि बीसो लोचन हीन॥
बीसो लोचन हीन कंठ तव असि कै मोरे।
कै गिरि है महिमाहि सद्य दस मस्तक तोरे॥
बनादास हौंहू यही अवसि प्रतिज्ञा कीन।
जाहि बन्धु को रेख धनु नाधि न सकेहु मलीन॥६८॥

मारन धायो कोपि खल तवहीं काढ़ि कृपान।
सुनि सीता के बचन कटु दसमुख सुठि खिसियान॥
दसमुख सुठि खिसियान नारि तवही समुझावा।
अति सकोपि भुज बीस विकट निसचरी बुलावा॥
सीतहि त्रासो जाय कै एक मास परमान है।
मारन धायो कोपि खल तवही काढि कृपान है॥६९॥

कहा न मनिहै मास में तो मरिहौं प्रन कीन।
भौन गयो दसकन्ध तब सीता उर अति दीन॥
सीता उर अति दीन इहाँ निसिचरी अपारा।
त्रास देखावहि सियहि रूप नाना विकरारा॥
बनादास लोचन विपुल कोऊ नयन ते हीन।
कहा न मानिहै मास में तो मरिहौं प्रन कीन॥७०॥

स्रवन नासिका औ वदन काहू को विकराल।
काहू को तन खीन है कोउ अति पीन बिसाल॥

कोउ अति पीन बिसाल काल की जनु महतारी।
उर्ध्व केस दृग रक्त भयानक अतिही कारी॥
त्रिजटा नामे राच्छसी अवसि भक्ति पथ पाल।
स्रवन नासिका औ बदन काहू को बिकराल॥७१॥

स्वप्न सुनाई सबन को लका जारी कीस।
जातुधान सेना हते खंडित भो भुज बीस॥
खडित भो भुज बीस नगन मुडित दस सीसा।
खर अरूढ यहि भाँति गया दच्छिन अवनीसा॥
बनादास सब अंग से भई बाटिका खीस।
स्वप्न सुनाई सबन को लका जारी कीस॥७२॥

पायो राज्य बिभीपन नगर दोहाई राम।
सिया गई रघुबीर पहँ कीस भालु सुखधाम॥
कीस भालु सुखधाम स्वप्न ह्वै है यह सांचा।
मानो वहा हमार काल रावन सिर नाचा॥
बनादास सिय सेय कै सुखी करो बसुयाम।
पायो राज्य बिभीपन नगर दोहाई राम॥७३॥

मर्कट नोचत भाँति वहु तुम सब सिर के केस।
हनत मुष्टिका पृष्ठ मे पावत अमित क्लेस॥
पावत अमित कलेस कहा ताने मम करिय।
जनकसुता के चरन अवसि करि सब कोउ परिय॥
बनादास यहि भाँति से ह्वै है भला बिसेस।
मर्कट नोचत भाँति वहु तुम सब सिर के केस॥७४।

तासु बचन सुनि कै डरी परी सिया के पाँय।
माँगि बिदा जाती भई रज निसिचरी निकाय॥
रज निसिचरी निकाय रही त्रिजटा तेहि ठाँई।
सिया कहे अकुलाय काह अब करिये माई॥
बनादास यह दुसह दुख क्यो हूँ सहा न जाय।
तासु वचन सुनि कै डरी परी सिया के पाँय॥७५॥

या असमय के बीच मे तुही सहायक एक।
बिपय बचन दसमीस सुनि रहै न बुद्धि बिवेक॥

रहै न बुद्धि बिबेक करौ तुम अवसि उपाई।
आनि काठ रचि चिता अनल पुनि देहु लगाई॥
बनादास निसि दिन कवन सूलैं सहैं अनेक।
या असमय के बीच में तुही सहायक एक॥७६॥

तब त्रिजटा कर जोरि कै समुझाई बहु भाँति।
कही कथा इतिहास सुनि जाते सोच सिराति।
जाते सोच सिराति वचन मानौ बैदेही।
रघुपति प्रबल प्रताप आइ हैं प्रान सनेही॥
बनादास सब मारिहैं बचै न निसिचर जाति।
तब त्रिजटा कर जोरि कै समुझाई बहु भाँति॥७७॥

यहि बिधि कहि गवनी भवन सीता उर अकुलात।
मास एक बीतिहि जबै करिहि प्रान को घात॥
करिहि प्रान को घात बात वरनि सकै न कोई।
तजिये तन जेहि भाँति जतन नाना बिधि जोई॥
बनादास प्रतिकूल बिधि ताते कछु न पोनात।
यहि बिधि कहि गवनी भवन सीता उर अकुलात॥७८॥

रावन आयो जाहि छन सुने पवननुत बात।
बनादास सुठि क्रोध बस मनहुँ दहे सब गात॥
मनहुँ दहे सब गात समौ लखि रहे चुपाई।
जिमि गयन्द को देखि सिंह को नहिं समवाई॥
देहौं प्रात सजाय मठ पलपल पर अकुलात।
रावन आयो जाहि छन सुने पवनसुत बात॥७९॥

अब सीता की देखि गति पल जनु कलप समान।
करत कोटि कल्पना उर बार बार हनुमान॥
बार बार हनुमान सिया बिनवत जेहि तेही।
जापै पावक मिलै तद्प छूटै यह देही॥
बनादास सुठि दुसह दुख को करि सकै बखान।
अब सीता की देखि गति पल जनु कलप समान॥८०॥

तारा देखौ गगन में मानहुँ अमित अँगार।
अवनि न आवत एकहू अवसि सबल होनिहार॥

अवसि सबल होनिहार चन्द पावक नहिं देई।
जाते जारौं देह कस न विनती सुन लेई।।
बनादास माने नही त्रिजटा बचन हमार।
तारा देखी गगन में मानहुँ अमित अँगार।।८१।

अब असोक विनती सुनै करै नाम की लाज।
सदय सोक मेरो हरै करै न समय अकाज।।
करै न समय अकाज नवल पल्लव जनु लागी।
कस नहिं पावक देय देह दाहन हित माँगी।।
बनादास सिय बिकलता कहि न सकै अहिराज।
अब असोक बिनती सुनै करै नाम की लाज।।८२।।

दीनबन्धु सुख सिन्धु प्रभु निपट बिसारे मोहिं।
यहि अवसर नहिं कोउ सुनै बिरद लाज नित तोहि।।
बिरद लाज नित तोहि तजे कौनी बिधि दाया।
कारये सोई कृपालु जाहि ते छूटै काया।।
दिये मुद्रिका डारि तब हनुमान सिय जोहि।
दीनबन्धु सुखसिन्धु प्रभु निपट बिसारे मोहि।।८३।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम पंचविंशतितमोऽध्यायः ।।२५।।

कुंडलिया

तेहि अवसर सुत पवन उर अवसि उठ्यो अकुलाय।
सिय उठि लीन्हो मुद्रिका तबही हिय हरषाय।।
तबही हिय हरषाय सुनै को प्रभु बिन मेरी।
बिनय करत तत्काल कृपानिधि किये न देरी।।
बनादास लखि मुद्रिका सदय उठी बिलखाय।
तेहि अवसर सुत पवन उर अवसि उठ्यो अकुलाय।।८४।।

माया ते रचि जाय नहिं जीतन जोग न कोय।
तेहि अवसर सीता हृदय अतिसय बिस्मय होय।।
अतिसय बिस्मय होय बहुरि उर में अनुमानी।
करि करुना रघुबीर पठाये मम हित जानी।।
दे रे पावक मुद्रिका कहत मैथिली रोय।
माया ते रचि जाय नहिं जीतन जोग न कोय।।८५।।

बचन सुने त्रिजटा नहीं गिर्‌यो न गगन अँगार।
नहि असोक ससि ख्याल किय मेरो दुःख अपार॥
मेरो दुःख अपार नाथ विनती चितलाई।
वेगि पठाये तोहि करै नहि तू सुनवाई॥
वनादास दे अनल की मुंदरी करै नेवार।
बचन सुने त्रिजटा नही गिर्‌यो न गगन अँगार॥८६॥

नाथ सुने तू नहि सुनै मुंदरी अति बरियार।
तेहि अवसर बोलत भये मधुरे पवनकुमार॥
मधुरे पवनकुमार मातु मुंदरी मैं आनी।
रघुपति करुनासिंधु दिये तुम का सहिदानी॥
वनादास बरनै लगे प्रभु को सुजस अपार।
नाथ सुने तू नहि सुनै मुंदरी अति वरियार॥८७॥

सीता के दुख दूरि भे सुनत सुजस रघुवीर।
तजे अवध तब ते कथा भाषी सुवन समीर॥
भाषी सुवन समीर कहे तबहीं बैदेही।
सो होवै किन प्रगट कहत जस परम सनेही॥
वनादास तब पवनसुत आये जानकि तीर।
सीता के दुख दूरि भे सुतन कथा रघुवीर॥८८॥

नखसिख वरने रूप प्रभु कर पद रेख अनूप।
लछमनजुत भाषे तवै अतिसय सुभग सरूप॥
अतिसय सुभग सरूप नेकहू फेर न आवा।
वैदेही सब बूझि अवसि उर अचरज छावा॥
वनादास बहुविधि करै मन दृढ़ होय न खूप।
नख सिख वरने रूप प्रभु कर पद रेख अनूप॥८९॥

आयो उर संकोच सिय फिरि बैठी तेहि बार।
सुनि राच्छस मायावरी होय न हिय अतिवार॥
होय न हिय अतिवार तवै कह पवनकुमारा।
राम दूत मैं मातु सप्त प्रभु चरन हजारा॥
वनादास निस्चय भयो बचन विचारे सार।
आयो उर संकोच सिय फिरि बैठी तेहि बार॥९०॥

अति कोमल चित कृपानिधि कित निठुराई कौन।
दारुन विपति विचारि मम अब तक सुधि नहि लीन॥

अब तक सुधि नहिं लीन मोर अवगुन मैं जाना।
बिछुरत चरन सरोज प्रान नहिं कीन्ह पयाना ॥
बनादास विपरीत बिधि बुद्धि बिसद हरि लीन।
अति कोमल चित कृपानिधि कित निठुराई कीन ॥९१॥

कहे बचन कटु लषन को बिछुरत कृपानिधान।
केहि सुख लहि राखे तनहिं तजे न पावर प्रान ॥
तजे न पावर प्रान अजहुँ बिधि काह देखावैं।
भई बिरह बस सीय कहाँ उपमा कवि पावैं ॥
बनादास पुनि पुनि कहे राम दसा हनुमान।
कहे बचन कटु लषन को बिछुरत कृपानिधान ॥९२॥

कहहु कुसल जुत अनुज प्रभु बूझत बारै बार।
तव दुख ते दुख कृपानिधि भाषे पवनकुमार ॥
भाषे पवनकुमार कहे प्रभु बिछुरत सीता।
करै कवन बिस्तार भयो सारो बिपरीता ॥
बनादास मन उत रह्यो इत तन पर्यो खुआर।
कहहु कुसल जुत अनुज प्रभु बूझत बारै बार ॥९३॥

रघुपति को तन भान नहिं कहत बचन हनुमान।
कहने को कछु आन है बोलि जात कछु आन ॥
बोलि जात कछु आन चलत इत उत चलि जावैं।
थक्कित सारदा सेस खोजि उपमा नहिं पावैं ॥
बनादास गति प्रीति की येते मैं पहिचान।
रघुपति को तन भान नहिं कहत बचन हनुमान ॥९४॥

बन के नाना जीव जे तन ऊपर लसि जात।
बैठ रहत आसन विषे जानि न पावत मात ॥
जानि न पावत मात गात से सुरति भुलानी।
समाधिस्थ तव रूप रामगति परै न जानी ॥
बनादास रहि रहि कबहुँ ऊर्ध्व स्वास अकुलात।
बन के नाना जीव जे तन ऊपर लसि जात ॥९५॥

हाँसी ते कहुँ उच्चरत धरत नही उर धीर।
लषन प्रबोधत भाँति बहु ऐसी गति रघुबीर ॥

ऐसी गति रघुबीर खोज अब तक नहिं पाई।
अब लगि है नहिं बार अवसि ऐहैं रघुराई॥
वनादास कपि के सहित बधि राच्छस घनुतोर।
हाँसी ते कहुँ उच्चतर घरत नही उर धीर॥९६॥

अबहिं मातु मैं जाउँ लै प्रभु आज्ञा नहिं दीन।
सदल आय रघुबंसमनि करिहैं रिपु कुल खीन॥
करिहैं रिपु कुल खीन मारि रावन रन माही।
तब लै चलिहै तोहिं तिहूँ पुर सुजस बसाही॥
वनादास जसगाय सो तरिहैं परम प्रबीन।
अबहिं मातु मैं जाउँ लै प्रभु आज्ञा नहिं दीन॥९७॥

सुनत वचन संसय भयो तब सीता उर माँहि।
सुत तुमही सम कपि अहैं निसिचर अति भट आँहि॥
निसिचर अतिभट आँहि प्रगट निज तनु हनुमाना।
कनकभूधराकार तेज तीच्छन जनु भाना॥
वनादास निस्चय भयो हनुमत पटतर नाँहि।
सुनत बचन संसय भयो तब सीता उर माँहि॥९८॥

देखो सुंदर फल विटप अतिसय मातु भुखान।
सुनि सीता बोलत भई रखवारे बलवान॥
रखवारे बलवान तासु भय तनिक न मोही।
आज्ञा दीजे जननि खाउँ फल हति सुरद्रोही॥
वनादास तब सिय कहे खाहु दिये वरदान।
देखो सुंदर फल बिटप अतिसय मातु भुखान॥९९॥

छप्पय

चल्यो नाय सिर चरन बाग पैठे हनुमाना।
रचना परम बिचित्र कवन कवि करै बखाना॥
चहुँ दिसि चारु देवाल कनकमनि खचित सोहाई।
भाँति भाँति विश्राम मनहुँ कर काम बनाई॥
सुभग बुर्ज चोरत चितहि मानहुँ गिरि के सृंग हैं।
कह बनादास फूले बिटप गुंजत नाना भृंग हैं॥१००॥

लागे तरु बहु जाति जाति बल्ली छित छाई।
सुमन फलन के भार जाहि सुर रुख लजाई॥

लता लसत तरु मध्य कहाँ उपमा कवि पावै।
हरित ललित पल्लवित मुनीसन चितहि चोरावै॥
द्वादस मास बसत जनु इंद्र वाटिका तुच्छ जेहि।
कूजत पच्छी भाँति वहु बनादास मन हरन केहि॥१॥

तासु मध्य सरसोह पानि मनि चितहि चुराई।
सुभग नीर गभीर सघन पुरइनि छवि छाई॥
राता पित सित असित चहुँ दिसि सरसिज फूले।
करत पान मकरन्द चोपि सुठि मधुकर भूले॥
कूजत खग नाना बरन मीन मनोहर मन हरै।
कह बनादास बर बाटिका केहि उपमा कहँ अनुहरे॥२॥

तामधि सुभग निकेत देवपति सदन लजावै।
कनकमयी मनि जटित अवसि अवलोकत भावै॥
बने झरोखा ताख पाख गोखा सुठि सोहै।
झालरि झाड़ अनूप निरखि मुनिनायक मोहै॥
तने चँदोवा चारु बर जनु रति काम विहार थल।
कह बनादास चित्रामबर नाना कौतुक करत कल॥३॥

कबहूँ त्रियन समेति करै दससीस विहारा।
अपर पुरुष नहिं जाहि रहैं तेहि पालनहारा॥
ताते प्रिय बाटिका परम है रावन केरी।
प्रमदा वन तेहि नाम धर्यो दसकन्धर हेरी॥
प्रगट असोक सो बाटिका चहुँदिसि चारि दुवार हैं।
कह बनादास नौबति झरत निसिहु दिवस एकतार हैं॥४॥

सहस सुभट प्रतिद्वार रहैं ताकी रखवारी।
अनचिन्हार अलि तहाँ नही पावहिं पैठारी॥
हनूमान सब देखि चहत सो अवसि विध्वन्सा।
रावन प्रान समान लंक मानहुँ अवतन्सा॥
लगे खान फल तूरि तरु निरखे जब रखवार जू।
कह बनादास यक्कबारगी मारे दैत्य हजार जू॥५॥

भो अति हाहाकार कछुक कीने अधमारे।
गिरत परत कछु जाय बेगि दससीस पुकारे॥

आयो कपि बिकराल बाटिका कीने खीसा।
मारे निसिचर निकर सुनत कोपा भुज बीसा॥
भेजे सुठि लायक सुभट देखि गर्जि सुत पौन है।
कछु मारे मर्दे कछुक कछुक सिन्धु किये गौन है॥६॥

बिटप तोरि झकझोरि खात फल बारहिं बारा।
प्रलय करै जिमि रुद्र पौनसुत रूप सँभारा॥
कीन्हे सुठि खै कार चहूँ दसि फिरि फिरि खोई।
करनि इच्छु को खेत निपातै तेहि बिधि सोई॥
गये बहुरि रावन निकट अंग भंग अति तंग है।
कह बनादास नहिं कछु बनै कपि कुंजर बररंग है॥७॥

बोल्यो अच्छय कुमार कोप करिकै दसकन्धर।
किये बाटिका खीस देखु सुत कैसन बन्दर॥
अमित सुभट लै संग चला रावन सुत बंका।
हनूमान तेहि देखि गर्जि रव घोर असंका॥
अति बिसाल तरु तोरि कै कीन्हे तासु निपात है।
कह बनादास कपि क्रुद्ध ह्वै किये दैत्य बहु घात है॥८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम षट्‌विंसतितमोऽध्यायः॥२६॥

घनाक्षरी

हाथ पाँव तोरि तोरि मुंड केते फोरि फोरि सिंधु माहिं बोरि बोरि भारी भट मारे हैं।
केते महि मर्दि डारे केते गर्दि बर्दि डारे केते अधमारे केते चीरि फारि डारे हैं॥
केते गाल फारि मारे केते तन मीजि डारे केते अधमारे जाय रावन पुकारे हैं।
बनादास अच्छय बध सुने दसकन्ध जब तब अति कोपि घननाद को हँकारे हैं॥९॥

मारे सुन तात बाँधि लाउ कपि कहा कर धरि पितु आज्ञा सीस सुभट हँकारे हैं।
तोमर परिघ भिंदिपाल धनुबान धरि असि औ चमर धरि धाये बीर भारे हैं॥
अस्व गज खच्चर अरूढ़ ह्वैकै स्यन्दन पै रावन सुवन संग चले कारे कारे हैं।
बनादास बाटिका को घेरि लिये चारि ओर कटकटाय चोपि हनुमान चोट मारे हैं॥१०॥

लूम को लफाय मुख बाय औ कखाय दृग अवसि रखाय कपि पादप उपारे हैं।
भंजन करत मुखबीरन को बार बार इत मेघनाद अति कोपि ललकारे हैं॥
सुवन प्रभंजन करत अरिगंजन मनहुँ वृक मेढुक के दलहि बिदारे हैं।
बनादास अस्त्रसस्त्र कोपि चोपि बार बार एक हनुमान पै अनेक बीर मारे हैं॥११॥

खड खड टूटत सो बज्र अग माहि सारे जग मे सवल सुठि पवनकुमार है।
मारे बहु सूरबीर धीर बिचलाये रन जौनी ओर परै धाय हाय हाहाकार है ।।
सारथी औ स्यन्दन निपाते घननाद कर रावन सुवन किये तबही विचार है।
बनादास जीति नहि जायगो विसेषि बल तव ब्रह्मबान कोपि मारे बिकरार है ।।१२।।

महिमा अपार जानि ताहि अगीकार किये ह्वै है प्रभु कार्य और ताते भूमि आयो है।
गिरत समीर सुत केते बीर पीसि डारे बाँधि नागफांस ताहि मेघनाद लायो है ।।
सुनि कपि बन्धन निसाचर अमित धाये देखि दससीस उर क्रोध अति आयो है।
बनादास दाँत पीसि बीस हाथ मीजि डारे सुत बध सुरति करत बिलखायो है ।।१३।।

मारे काहे राच्छस बिटप क्यो उपारे कीस अवसि असंक लाग प्रान कीन आये है।
कौन हेत आये हैं कहाँ से किन बात कहु बोले हनुमान सक नेकहू न लाये हैं।।
बाँदर अहार फल खाये ताहि भूख लागे मकट स्वभाव करि तरु तोरि नाये हैं।
बनादास मारे मोहि ताहि मारे भलीभाँति लायो तव पूत बाँधि येतो नाहि भाये है ।।१४।।

मारे मधुकैटभ बिदारे जो हिरन्य अच्छ हेत प्रहलाद जिन खम्भ फारि डारे है।
धेनु द्विज सुर साधु हेत अवतार लिये प्रबल प्रताप दसरत्थ नृप बारे है।।
सकर सरासन मृनाल सम तोरे जिन नृप मद मथे भृगुनाथ जाते हारे है।
बनादास बधे हैं बिराध और कबन्ध हने खरदूषनादि छन एक मे सँहारे हैं ।।१५।।

ताड़का सुबाहु बधि मुनि मख रच्छा किये गौतम कि तिया तारे वेद जस गाये हैं।
खेलत सिकार खल तोसो मृग मारि तजे तासु दूत जाकी त्रिया चोरी हरि लाये है ।।
खोज लेन आये कछु मानहुँ सिखाये मम ह्वै है कुल कुसल जो तेरे मन भाये हैं।
बनादास सादर जनकसुता आगे करि बेग चलु सरन तौ सबै बनि आये है ।।१६।।

अवसि दयालु रघुनाथ को स्वभाव सदा दीन भये सब अपराध दूर करेंगे।
करौ राज्य अचल सकल सुख भली भाँति यही अवकाति तेरी कार्य सब सरेंगे।।
ना तो प्रभु बानन से जर्जर सरीर ह्वै हैं दससीस बीस बाहु भूतल मे परेंगे।
बनादास गीध चील्ह चगुल से खैहैं नोचि स्वान औ सृगाल सब धाय धाय धरेंगे ।।१७।।

सुनि कपि बचन मनहुँ जरिबरि गयो मिलो गुरु ज्ञानी मोहि मारो आज्ञा दिये है।
ताही समय आयो है बिभीषन समाज माहि माथ पदनाय तव मने तिन किये हैं।।
परत बिरोध नीति दूत है अवध्य सदा और दड करी कछु बैन मानि लिये हैं।
बनादास कहे दसकन्ध अग भग करि भेजो याहि जामे कछु दिन मे न जिये हैं ।।१८।।

पूंछ प्रिय बाँदर को सम्मत सबन किये पटबाँधि तेल बोरि आगि लाय दीजिये।
रावन बिहँसि कहे भला सो जतन करो धाये सब जहाँ तहाँ बार नाहि लीजिये ।।
लाय कै लपेटत बढाई लूम तबै कपि अट तन पट घृत तेल काह कीजिये।
बनादास बाजन बजाय कै फिराय पुर फूंकि दिये बेगि निज पीठि आगि मीजिये ।।१९।।

घाय चढ़े कनक अटारी निबुकाय कपि हाय हाय करै यह कैसी बात भई है।
आवै होनिहार जस तैसई प्रगट बुद्धि अब सुद्धि भई काम आगे खोय दई है॥
मंदिर ते मंदिर कुलांचि कपि दाहै लंक अवास बिसाल औ परम हरुअई है।
बनादास तात मात जहां तहां बिललात धीर न धरात कहैं बाट परि गई है॥२०॥

बढ़ी ज्वाल माला चले मारुत उंचास कोपि अतिही सबल कवि उपमा न पायेजू।
ठौर ठौर आपै आप उठी आगि जहां तहां बिना हनुमान गये घने घर लायेजू॥
अन्ध धुन्ध धूम करि बिकल निसाचर भे पावत न राह जहां तहां बिललायेजू।
बनादास बनत न काहू को बनावा कछु समय तेहि भारो भारी बोर कोपि घायेजू॥२१॥

आगि लागि आगि लागि बचो जहां तहां भगिनी औ भाउज भगावत घनेरे हैं।
जरो छोटो छोहरो छबीलो हाय कैसी करें जरी छोटी छोहरी न जाय सकै नेरे हैं॥
बूढ़ी जरी बूढ़ो जरो मूढ़ो दसकन्ध हेत अतिही अचेत सुनै काहू को न टेरे हैं।
बनादास कहा हम बांदर न देव कोऊ माने तब नाहिं अब परे तासु फेरे हैं॥२२॥

कहैं पानी पानी औ निद्यानी नारि भागी जात सुत पितु तात मातु कोऊ न सँभारे हैं।
जहां जाहि माहि तहां तहां लागि आगि देखै अवसि अभाग्य करैं अतिही चिकारे हैं॥
भाई बाप धिया पूत सकल अधूत करैं बनादास फेरि परैं आगि ही मंझारे हैं।
होस औ हवास सावकास कछु करैं नाहिं जहां तहां झौंसे फिरैं केते अधमारे हैं॥२३॥

जरत बजार चौक सौक से बनाये जौन वस्तु को गनाय सकै हाय हाय करे हैं।
जरै पीलखाना तोपखाना औ तबेला जरै सुतुर को साला रथसाला जात जरे हैं॥
हाथी जरे घोड़े जरे डेरे भांति भांतिन के रावैं बिललाय धीर जात नाहिं धरे हैं।
बनादास जहां घरैं तहां जरै वस्तु सारी बीथी गली कूचन में धूरि जात बरे हैं॥२४॥

रोवैं बिललावैं दसकन्ध बधू बार बार धाउ मेघनाद औ प्रहस्त करै कार को।
हाथी छोरु घोड़ा छोरु जरत बछेड़ा छोरु चहूँ ओर आगि लागि करै न सँभार को॥
जरत पेटारे औ सदूक तोसेखाने खास बनादास धाम धाय लाउ भारदार को।
होत उत्पात जरो जात परिवार गात आवत न लाज दससीस दाढ़ीजार को॥२५॥

हाय हाय पानी पानी कहैं बिललानी रानी भागी हैं निद्यानी छन छन पावत न छांह को।
जहां जाहि भागि तहां लागि देखैं आगि छूटे बसन हैं नांग हठि गारी देहि नाहको॥
कहै मुख बांदर बिनोकैं आंखि बांदर सुनहि कान बांदर न भागे पावैं राह को।
हिये माहि बांदर बिकल बनादास फिरै पावत बिरोध फल कियो राम साह को॥२६॥

कोपि दससीस कहै मारो बेगि बांदर को अनी अतिकाय औ अकम्पन हँकारे हैं।
दुर्मुख महोदर कुमुख औ कुलिसरद मेघनाद औ प्रहस्त धावो सूर सारे हैं॥
दसहूँ बदन अकुलाय कै उचार किये मूल शक्ति बान हनुमान पर डारे हैं।
लागत न रेख एक राम को प्रताप भारो बनादास भूरि भट सुठि ललकारे हैं॥२७॥

लूम को लँबाय कोपि गाल को फुलाय सुत पौन घाय घाय वेते वीर दाहि डारे हैं।
मारे हैं घुमाय चोट चपरि अनेक भटनट कैसो कला करि अवनि पछारे हैं।
बनादास बानो हनुमान हुडवाई खेलै प्रबल अनल कोऊ सकै न सँभारे हैं।
जरो हाथ पाँव पेट दाढी मोछ लाखन की गिरे भूमि टूटो रद घूमि घूमि मारे हैं ।।२८।।

काहू को न चलो बल तब खल टेरे मेघ कहो सिंधु जलवृष्टि करो लंक सारेजू।
मानि कै रजाय चले गरजि घुमडि सुठि अवसि प्रबल मानों प्रलय मेघ भारे हैं ।।
लाये झरि चारि ओर जैसे मघा भादो के घृत सम होत अति अनल प्रचारे हैं।
बनादास बढी ज्वाल माला को बखानि सकै तब सुत पौन सुठि तेज को सँभारे हैं ।।२९।।

गर्जो अट्टहास खास दूत रघुनाथ जू को रोखि कै कखाय दृग अति कटकटाय कै।
चौखडी कुलाँच मारि फारि जातुधानन को आनन बिदारे बडी लूम को लँबाय कै ।।
बनादास लागो है अकास मे प्रकास भानु भुज हैं अजानु दल दैत्य को दबाय कै।
अंजनी को लल्ला जारि गल्ला चारिवोर चोपि रावन महल्ला पर हल्ला कियो घाय कै ।।३०।।

बल को न अन्त है रँगीले भगवन्त जू के लीले रवि बाल कौन जानै न प्रमान को।
घाय घाय धौकत औ लौकत है चहूँ ओर डौकै जनु प्रलय काल घन के समान को ।।
बनादास लंक हालै पक्ष से परत पग लूम कों लँबाय घाय देत जातुधान को।
जारे पुर गल्ला फारि दैत्यन को कल्ला भयो रावन महल्ला पर हल्ला हनुमान को ।।३१।।

घूमि घूमि दाह्यो लंक अतिहो असक कपि भवन बिभीषन को रामजू बचायो है।
प्रबल अनल ज्वाल माल बढी चारि ओर राच्छस औ राच्छसी न भागे राह पायो है ।।
महा अन्ध ध्वन्ध कहूँ धुआँ सो न देखि परै बनादास नाना भट घेरी घानी लायो है।
अति खल भल्ला गलबल्ला न बर्नि जात रावन महल्ला पर हल्ला मारि आयो है ।।३२।।

सवैया

सपदा सचि घरे तिहु लोक कि खाक भई सब एकहि बारा।
काल कलेवा दिये दल चौथि महा बलवान समीर कुमारा ।।
देव अदेव दबै तेहि को पुरसो झोपडो जनु राँड कि जारा।
दासबना हत भागि गयो खल राम बिराधो को कौन उबारा ।।३३।।

घनाक्षरी

रावन से मानी रजधानी गढ़ लंक ऐसो सुभट समूह ताहि नेकहू न मुरिया है।
सिंधु नाँघि सुरसा पछारि सिंधुका को मारि आतही ललकारि लंकिनी को मुख तुरिया है।।
बाटिका उजारि पूत रावन सँहारि डारि बनादास मारे भट सामुहेन जुरिया है।
देवता अकास मे बखान हनुमान करें फूँकि दिये लंक मानो राँड कै सी कुरिया है ।।३४।।

राम काम करन के हेत अवतार जाको ताको जस वखानै कौन अतिही असंक है।
सीता की सोक हरे सिंधु नांघि पवन पूत बाटिका उजारि घोर चार्‍यो अहतंक है ।।
वनादास कीन्हे उत्पात न धरात धीर हांक हनुमान पुर हालै जनु पंक है।
मारे दल चौथि मानौ काल को चबेना दिये रंक कैसी झोपड़ी जराये जिन लंक है ।।३५।।

सवैया

राम बिरोध भयो रुज रावन भांति अनेक असाधि प्रमाना।
कालहु कर्म भये यक ठौर हकीम मिले तबही हनुमाना ।।
जारि कै लंक मृगांग किये उपदेस दिये तेहि को अनुपाना।
दासवना नहिं लाग कछू दृढ़ कै अपनो मरनो तिन जाना ।।३६।।

घनाक्षरी

रावन से नाथ संग माहि जाके महाबीर अति रनधीर पार लहै गुनगाथ को।
बन्धु कुंभकरन न पटतर तीनि लोक सुवन अमित बल बड़ो मेघनाथ को ।।
जीते दिग्पाल लोकपाल कहा नरन की लंक ऐसी गढ़ी खाई भयो सिंधु पाथ को।
दूत रघुनाथ को छनक माहिं छार किये वनादास नग्र मानो निपट अनाथ को ।।३७।।

सवैया

हौन को कुंड मनौ गढ़ लंक अटारी भई अरनी सो विचारा।
आहुति सीसि गरी भई संपदा लूम स्रुवा घृत राच्छस डारा ।।
राम दोहाई सो स्वहा समानहु ने हनुमान हजारन वारा।
दासवना पर्‍यो सिंधु में जायकै तर्पन कीन्ह समीर कुमारा ।।३८।।

घनाक्षरी

राम काम सिद्धि हेत किये अनुष्ठान यह स्रम नासि जानकी समीप पुनि आये हैं।
करिकै प्रनाम कहे दीजिये रजाय मातु जाते रघुनाथ जू को खबरि जनाये हैं ।।
कहे सोय तोहिं देखि जरनि अनेक गई अब सोई काल हाल कहत न भाये हैं।
वनादास जौन मास माहिं रघुनाथ आये फेरि काहू भाँति मोहिं जियत न पाये हैं ।।३९।।

अनुज सहित कह्यो प्रभु से प्रनाम मोर काहे भये निठुर बिरद लाज तजे हैं।
राजा जोगी काके मीत बात दोऊ परी आय बहुरि विचरि करि निज दिसि लजे हैं ।।
रह्यो न प्रथम प्रेम खेम होय कौनो भाँति अब कपि जानौ सुठि सांचो साज सजे हैं।
वनादास बीते मास जीवे कौन आस जानौ कूच के नगारे दस मौलि बैन बजे हैं ।।४०।।

सक्रसुत कथा कह्यो तात जथाबिधि भई बान को प्रताप आप काह भूलि गये जू ।
सलिल नलिन नैन भरे समै जानकी के कहे हनुमान मातु चीन्ह कछु दयेजू ॥
बनादास चूडामनि दिये कर सीता तब ताही छन ताहि कपि गाल मेलि लयेजू ।
जोरि पानि चरन प्रनाम करि बार बार पायकै असीस सुभ सुठि मोद भयेजू ॥४१॥

अजर अमर सुभ गुन धाम पूर काम करै कृपा राम ऐसो बरदान दिये हैं ।
हनुमान उर अति मोद न अमाय सकै चलत कि बार सुठि अट्टहास किये हैं ॥
गर्भवती राच्छसी सकल गर्भपात भयो लक अहतक रह्यो धीर नाहि हिये है ।
बनादास प्रभु पद बन्दन कै बार बार राम नाम डोरी उर माहि गहि लिये हैं ॥४२॥

सागर सहज नाँघि आयो सब बीर जहाँ किल्किला सबद सुतपवन सुनाये हैं ।
देखि हनुमान हर्ष महा जाम्बवान आदि मृतक सरीर मानौ प्रान फिरि आये हैं ॥
भेंटे अगदादि नहि आनद अमात उर चूमत लँगूर जात उपमान गाये हैं ।
बनादास सिया सोध बोध सब बातन को दिये महाबीर मान लेस न लखाये हैं ॥४३॥

चले रघुनाथ पास नेक न बिलम्ब किये जहाँ तहाँ खात फल मधुबन आये हैं ।
लागे फल खान सब अगद रजाय मई रोके रखवार ताहि मुष्टिका चलाये हैं ॥
जायकै पुकारे आय अगद बिध्वसे बाग जाने कपिराज राम काज को कै आये हैं ।
बीते कछु काल आय गये सारे बीर वर बनादास मिलत सुकठ अग लाये हैं ॥४४॥

कीन्हे काज हनुमान प्रान राखे सबन को कहे जाम्बवान धाय अक भरि लये हैं ।
करि अति आदर सकल बीर सग लिये तब कपि राय रघुबीर पहँ गये हैं ॥
फटिकसिला पै बैठे लषन सहित प्रभु आय कै सुभट सब चरनन नये हैं ।
देखि कै प्रसन्न मुख जाने राम काज किये भेंट उर लाय लाय सुखी सब भये हैं ॥४५॥

सवैया

कार्य किये हनुमान भली बिधि रिच्छ कहे रघुबीर कृपाला ।
ताहि मिले करुनाकर फेरि से लाय लिये उर बाहु बिसाला ॥
तृप्त न मानत मानहुँ राम मिले पुनि प्रीति स लछमन लाला ।
दासबना यह सील बिचारि न होय सरन परै मुख काला ॥४६॥

घनाक्षरी

सकल प्रसग जाम्बवन्त समुझाय कहे किये जैसी करनी समीर सुत जाय कै ।
कही कैसे सिय करि करत निबाह प्रान चूडामनि दिये राम रहे उर लाय कै ॥
नीरज नयन नीर आये भरि कृपासिधु जानकी सँदेस तब कहे है बनाय कै ।
बनादास बिपति बिलोके प्रभु मैथिली कि कौन ऐसो धीरवान है धीर लाय कै ॥४७॥

नाथ नाम जामिक कपाट पद कंज ध्यान रहत विलोचन बहत निसि बार जू।
नातरु विरह आगि तन तूल दाहि डारे स्वासहू समीर को न चले उपकार जू ॥
कलप कलप सम निमिष व्यतीत होत बनादास अब नेक लाइये न वार जू।
मास मे न आवैं तौ जियत नहिं मोहि पावैं सुनत वचन नैन आई जलधार जू ॥४८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रवोधक रामायणे विपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनो नाम द्वादस सप्तविसतितमोऽध्याय: ॥२७॥

घनाक्षरी

सुन कपि रावन प्रतापवान तिहूँ लोक जारि पुर पूत मारि बाग फूल खाये हैं।
तोरि तहँ राच्छस निपात किये नाना भाँति कहे हनुमान मैं न कछू जानि पाये हैं ॥
कृपा बलवान चहै जासे जो कराय लेय बाँदर को वल जाय बिटप हलाये हैं।
बनादास कहे जाम्बवन्त सोई जीवत है घटै प्रभु कार्य और मृतक कहाये हैं ॥४६॥

गोपद से सात सिंधु सीतल कृसानु ताहि सत्रु मित्र होय नहि अचरज ताको है।
कोपै जम काल सेष मृत्यु इन्द्र संभु विधि सक्ति जहाँ लगि कछु बारहि न बाँको है ॥
मातु पितु गुरु अरि हित मति बैरी ताके फेरै आयु न जरिसो मोहमद छाको है।
बनादास सुभगुन धाम पूर काम सोई हेरैं जाहि वीर सो सृंगार बसुधा को है ॥५०॥

प्रति उपकार मो सों तोसों कपि होत नाहि ताते नाम रिनी तू धनिक सब काल जू।
करत बड़ाई हनुमान की नमित चित बार बहु ऐसो कहे कोसल कृपाल जू ॥
पाहि पाहि करि परे पाँयन पवनपूत दीजै निज भक्ति अन पाय नीर साल जू।
बनादास एवमस्तु कहे करुनाजतन तिहूँ काल कौन रघुनाथ से दयाल जू ॥५१॥

बल बुद्धि तन मन गुन सब रामही को प्रेरक सकल उर माहिं बसुयामजू।
जीव की औकाति तुच्छ छनहू न निज वस परम कृतजकृत माने ऐसो राम जू ॥
ऐसे प्रभू करम वचन मन लाय भजै बनादास सहज विहाय सब कामजू।
विमुख जे भये जानों जननी जठर गये महामति मंद तेई निमकहरामजू ॥५२॥

कहे कपिराज सेन जौलो सिय खोज पाये तौलो रहो आसरा न अब कछु बेर है।
कहत कपीस गौर भयों प्रभु आगे ही से आवत सुभट अब नेकहू न देर है ॥
पुनि मन बेग वीर भेजे जहाँ तहाँ बहु बनादास जुटत जे रहे दूरि नेर है।
दिसिहु विदिस चली अनी भालु बाँदर की गिरि वन बागन ते सुभट घनेर हैं ॥५३॥

उदै अस्त भूधर हिमाचल और विन्ध्य गिरि मंदर सुमेरु नाम कहाँ लौं गनाये हैं।
इन्द्रलोक बिधि लोक लोकपाल जहाँ तक सिवसैल आदिक के मरकट आये हैं ॥

रात पीत स्वेत स्याम धूसर अनेक रंग जोर जग जालिम न पटतर पाये हैं।
बनादास सख्या हेत सारद सहमि जात और कबि कोबिद को पारस कै जाये हैं ॥५४॥

कानन जहाँ लौ जग नाना बाग बाटिकन रहे छाय प्रथम से जोरि सेन भारी है।
बिलग बिलग चले जुत्थ जुत्थ बर्न बहु कटकटात कोप करि अति बनचारी है।
आय आय करत प्रनाम रघुनाथ पद बूझत कुसल छेम सील सुठि न्यारी है।
मिलत कपीस सन सीस नाय सारे बीर बनादास लंक हेत ह्वै रही तयारी है ॥५५॥

कूदत कुलाँचत बदर बीर बाद नाना लूम को लँबाय धाय चौखरी भरतु हैं।
कटकटात काटत दसन ते बिटप कोपि देखि राम बन्धुजुत मोद उछरतु हैं॥
बनादास सहज असर्क लंक लीलो चहैं कठिन कराल नहि कालहि डरतु हैं।
उडत अकास कला करत अनेक भाँति धीर न धरतु खाव खाव ही करतु हैं ॥५६॥

दिग्गजडिगत दरकत दंत दीरघ जे उछलत सिंधु जल भूमि अतिहले हैं।
कल्मलात कोल कर करात पीठि कच्छप की रबि रथबाहन भभरि भाग चले हैं॥
अल्मलात आसन से संकर बिरंचि इन्द्र वापी कूप सर सरितादि खल भले हैं।
बनादास सेपहू सहमि ऊर्ध्व स्वास लेत कूचि जात कटि कोपि लंक राम चले हैं ॥५७॥

किचकिचाय काटत कमठ पीठ बार बार अवसि कठोर परि जात रेख अंक भो।
मानौ बिजै लिखत फनिन्द रघुनन्दन की मन्दन के मुख मसि भये भ्रुव बक भो॥
हालै हिय रावन मदोदरी को कम्पगात कुंभकर्ण मेघनाद अति अहतक भो।
बनादास पंक सम डोलत करेज दल जबहीं पयान कोपि रामजू को लंक भो ॥५८॥

कटकटाय मर्कट बिकट भालु भूरि चले राम औ लषन हनुमान पीठि राजे हैं।
कपिराज जाम्ववान नील नल बीर बाँके द्विबिद मयंद न्यारे न्यारे सैन साजे हैं॥
दधिमुख कैसरी पनस औ सुषेन धीर कुमुद गवाच्छ सब सिंहनाद गाजे हैं।
अंगदादि अग्र कपि कुंजर समूह चले महादल मुखहि निसान बहु बाजे हैं ॥५९॥

औघट को घाट करैं पर्वत को फोरि बाट सिला सृङ्ग तोरत समूह चले जात हैं।
खात कन्दमूल डार पातहू चबात जात जाके भार धरा बार बार अकुलात हैं॥
सिंह सम खेलत सिकार जनु चारि ओर पावैं धरि रांच्छ्रम तुरत करैं घात हैं।
बनादास यहि बिधि आये प्रभु सिंधु तीर बीर लंक दिसि देखि देखि अकुलात हैं ॥६०॥

पुरजन बानो सुनि रानी अकुलानी अति सिंधु वहि पार आई सेन रघुबीर जू।
साचि कै अनेक बात पतिपांय परि कहै आपु सेन तिहूँ लोक माहि रन धीरजू॥
खाये भोगे अवसि असोच ह्वै कै राज्य किये एक दिन छूटि जात सबया सरीर जू।
तातें नृप जाय बसैं चौपपन कानन में करै जप जाग तप सहि बहु पीर जू ॥६१॥

चहूँ बेद चहूँ जुग तिहूँकाल रीति यह ताते परनारि पिय हठ करि दीजिये।
राज्य दै कै सुत को भजन हेत महाराज करो न बिलम्ब आपु बन गौन कीजिये।।
लोक परलोक बनै सारो अंग भलीभांति उर में बिचारि मम बैन मानि लीजिये।
वनादास बनै न विरोध रघुनाथ जू सों मारे जासु मरो औ जिआये जाहि जीजिये ।।६२।।

जाके वस लोकप सकोप वन सहैं इन्द्र सिव बिधि काबू जम मृत्यु जीत लिये हैं।
भाई कुंभकर्न पुत्र मेघनाद के समान लंक ऐसी गढ़ी सिंधु खाईं घेरि लिये हैं।।
सुभट सरोष एक एक जग जीतै जोग बनादास तासु नारि कैसे भीत हिये हैं।
हरि से बिरोध तिहूँ काल कुल जाके भयो ताके तप हेत उपदेस मोहिं दिये हैं ।।६३।।

आये नृप बालक बटोरि कीस भालु भूरि खाहि भले राच्छसन प्रिया सोच करे हैं।
राज्य दै कै भरत को पितु वनबास दिये निपटि न काम जानि ताहि किमि डरे हैं।।
दूजे तप छीन तन मरत अहार बिन नारि के बिरह करि और जात जरे हैं।
वनादास कहा तेरो ख्याल बात भूलि गई तिहूँ लोक वस भूप तनै काह करे हैं ।।६४।।

ऐसो कहि ताहि उर लाय सभा माहिं आयो पतिहि विसेषि तिय मति भ्रम माने हैं।
जहाँ तहाँ आय रिपु राच्छस हवाल कहे डेरा परो सिन्धु तीर बीर बैरि खाने हैं।।
बिहँसि दसानन कहत कैसी मति मारो परे भूमि तल नभ चाहत उड़ाने हैं।
वनादास सचिव वदत सव वार वार डरै को अहार सन सुने नाहिं काने हैं ।।६५।।

ताही समै आयो है बिभीषन सचिव संग करिकै प्रनाम बैठ आसन सोहाये हैं।
मालवन्त आदि सब भारी सभा देखि करि रावन तबहिं इमि बचन चलाये हैं।।
कहो निज निज मत कीजिये विचार कैसो तबही अनुज कर जोरि माथ नाये हैं।
वनादास पाय अनुसासन कृपालु कहो मति अनुरूप औ पुलस्त्य सिष्य आये हैं ।।६६।।

संकर बिरंचि चाहि सेवत मुनीस घोर स्रुति और पुरान नेति जाको जस गाये हैं।
उत्पति पालन प्रलय जासु भ्रू बिलास माया करै जाहि कौन पार कोऊ पाये हैं।।
चराचर ईस सर्बव्यापक बिरज ब्रह्मबेदहू वदत नेति संत जन ध्याये हैं।
वनादास तेई राम त्रेता अवतार धरे सहज स्वतन्त्र निज इच्छा अति भाये हैं ।।६७।।

सुर द्विज देव महिधेनु सन्त धर्म हेत पितु को वचन मानि वनहिं सिधाये हैं।
आनी हरि ताकी त्रिय बात बिपरीति अति अजहूँ सबेर साथ सचिव पठाये हैं।।
पर त्रिय हरे बसो अघमूल लोक बेद तजो ताहि बिष से न देर नेक लाये हैं।
वनादास करम वचन मन भजो राम लोक परलोक भलीभांति बनि आये हैं ।।६८।।

सुनि मुठि जरा बीस हाथ दांत पीसि डारे सठ विपरीति काहे उर आई है।
जियत जियावा मोर पच्छ करै तपिन को कुलहि कलंक भये मृषा मम भाई है।।
मालवन्त कहे करो कहत बिभीषन जो नीति को बिभूषन बचन सुखदाई है।
वनादास रिपु पच्छ बोलत मलीन दोऊ चढ़ी है अभागि सीस मीच किन आई है।।६९।।

सुमति कुमति सबही के उरबास करै साधु स्रुति सम्मत न बात कछु नई है।
जहाँ रहै सुमति सकल सुख मूल जानों कुमति के आये मानो बिपबीज बई है।।
पित अनहित को बिचार नाहिं रहि गयो ताते जानि परत कुमति उर ठई है।
ठकुरसोहाती बात कहत सचिव सब बनादास यामें पूरि काकी परि गई है।।७०।।

दंड गहि मारत न काल बुद्धि ज्ञान हरै करै बिपरीत काम लखत सयाने है।
बिधि गति बलवान कहै कोई कोटि भाँति ताहि दुखदायक न कछू उर आने हैं।।
स्रुति औ पुरान साधु सम्मत सुनत जरै जानो तब किये जम सदन पयाने हैं।
बनादास याही भाँति भाषे सदा सन्तजन जाको होनिहार भला सोई लोग माने हैं।।७१।।

सम्मत पुलस्त्य मुनि निज अनुमान कहे तात सब भाँति भला राम ही के भजे है।
बुध औ पुरान स्रुति रीति अनुमानि परै लोकहू प्रमान हित पर नारी तजे हैं।।
भये कुलघातक तू पातक अनेक किये राम से बिरोध करि नर्क साज सजे हैं।
बनादास तब उर चरन प्रहार किये बहु प्रति उत्तर ते कछु हिय लजे हैं।।७२।।

गहि पद तबही बिभीषन कहत भये तुम पितु सरिसन मारे मोहिं लाज है।।
राखहु दुलार मोर सिय देहु रामजू को तात सर्व अंगन से सुख को समाज है।
कहत कुमत्र सब परिहिं न पूरि जाते ह्वं है बहु भाँतिन से अन्त में अकाज है।
बनादास किये अपकार उपकार करै तिहूँ काल सन्तन को बिरद बिराज है।।७३।।

सवैया

आई सिय जब ते पुर मध्य कहो तब ते भई कौनि भलाई।
सोने की लंक दही पल एक में सो बिपरीति परै न लखाई।।
मारिकै पूत उजारि कै बाटिका सेन समूह दिये बिचलाई।
दासबना यक बाँदर जासु चली न तुम्हारि कछू मनुसाई।।७४।।

घनाक्षरी

कहे रिपु पच्छ तोहि भावत है बार बार मिलु किन जाय राम अवसि पियार है।
तुरित बिभीषन गवन किये प्रभु पास कहत बचन सारे सभा माहिं सार है।।
मैं तो रघुबीर के सरन भये बनादास नाहिं दोष मोर काल आयगो तुम्हार है।
मालवन्त गयो गृह बन्धु चलो सिंधु पार करत मनोरथ अनेकन प्रकार है।।७५।।

आरत हरन भगवन्त स्रुति संत कहैं दीनबन्धु सुखधाम आरत न मोसे हैं।
आलसी अभागी कूर कायर को यही द्वार तिहूँ काल चहूँजुग बदै बेद पोसे हैं।।
संकर बिरंचि इन्द्र सोम सुरगन राउ सेष सारदादि मुख फेरत सदोसे हैं।
बनादास बिरद पताके फहरात सदा हेरा करै हरि बार आवै अपवोसे हैं।।७६।।

अहोभाग्य आजु ऐसे चरन बिलोकों नैन जासु पद पाँवरी भरत मन लाये हैं।
जौन पद जनक पखारे मनि माड़व में गौतम कि नारि जाहिर जगति पाये हैं॥
सहित कुटुम्ब घोय पिये हैं निपाद जाहि अतिही सनेह सिवहि ये में बसाये हैं।
बनादास जौने पद माया मृग पीछे घाये जाके ध्यान काल सिय लंक में बिताये हैं॥७७॥

गंग को जनक सुक सनकादि ध्यावैं जाहि आवै ध्यान कठिन ते सेप स्तुति गाये हैं।
जाके हेत भूप तजि राज्य को बिरागी होत जोगी जन जोग त्यागि जाहि में समाये हैं॥
भवरुज दरन सरन को समूह सुख बनादास कृपा कोर कोऊ जन पाये हैं।
तिहूँ काल चहूँ जुग चहूँ बेद में प्रमानता कहूं तजत नाहि जाहि अपनाये हैं॥७८॥

सीलसिंधु दयासिंधु गुनसिंधु सुखसिंधु दीनबन्धु कहूँ सुने राम से आन है।
धर्मसिंधु रूपसिंधु छमासिंधु बलसिंधु पापसिंधु सोखन को कुम्भज समान है॥
जोगसिंधु भागसिंधु जयसिंधु विद्यासिंधु बिरद बिराजै सब जानत जहान है।
बनादास ज्ञानसिंधु बिरति बिज्ञानसिंधु बोधसिंधु सांतिसिंधु साहब सुजान है॥७९॥

दूपन दरन सर्व भूपन भरन जग कारन करन पुनि तारन तरन है।
पीत उद्धरन सोक संसय हरन देत वांछित वरन दीन गाहक परन है॥
दुष्टन जरन नासै जनम मरन सुठि साँवर बरन होत काहे न सरन है।
दोप निदरन नाम जपे अमरन थापे आस्रम बरन बनादास ज्ञान घन है॥८०॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिन-
खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनो नामाष्टाविंशति तमोऽध्याय: ॥२८॥

घनाक्षरी

करत मनोरथ बिबिध उर बार बार सिंधु पार गयो कपि सेन ढिग आयो है।
रोंके भालु बाँदर कवन आये कहाँ सन काह तेरो हेत नाम काहे न बतायो है॥
रावन अनुज नाम कहत बिभीषन से बनादास दीनबन्धु सरन तकायो है।
पाय समै जाय कोऊ कहे रघुनाथ पास महाराज रिपु बंधु दीन द्वार आयो है॥८१॥

बैठे कपि राज जाम्बवान नल नील आदि द्विबिद मयन्द कपि केसरी सुखेन है।
दधिमुख कुमुद पनस औ गवाक्ष बीर हनुमान अंगदादि कपि बल ऐन हैं॥
प्रभु बन्धु अपर गनावै नाम कहाँ लगि राम काम तत्पर सुठि सुख देन हैं।
बनादास बूझे मंत्र सबहि सुनाय राम कहो निज निज मत भावै जेन केन हैं॥८२॥

कोऊ मारौ कोऊ बाँधौ कोऊ कहै मायाबिद कोऊ कहै त्याग करौ कोऊ मौन गहे हैं।
परम गँभीर रघुबीर को बिरद जानें बोध मनमाहि कछु लपन न कहे हैं॥

वनादास हनुमान उर अस्नेह अति ताते बार बार हरि ओर हेरि रहे हैं।
राम गति जानै कौन दूसरो जनाये बिन भूखो ज्यों सुनाज देखि अति चित चहे हैं ॥८३॥

समय धरम नेति मर्जाद अनुकूल कहे सब कोऊ सुठि उचित बिचार है।
जहाँ रस भगति लगति नहिं बल्ली याको ताको न तजत प्रनय ही बार बार है॥
सारो अंग हीन मति खीन औ मलीन पापी अघम असाधि अति आलस अपार है।
बनादास एक संग सरन को होय सुठि ताको गहि बाहँ राखै ऐसी सरकार है ॥८४॥

अंगद औ हनुमान लावो लकपति वेगि सुनि रघुबीर वैन सुठि हरषान हैं।
धाये अति नृभर बिभीषन को गहे बाँह लाये सद्य जहाँ राम करुनानिधान है॥
देखत विदेह भयो नेह सुधि गेह कहाँ इत रहि गये जहाँ तहाँ धनु बान हैं।
पर्यो भूमि लकुट से त्राहि त्राहि कृपासिंधु बनादास दीनबन्धु दीन जातुधान हैं ॥८५॥

रावन अनुज कुल राच्छस मे जन्म भयो तामस सरीर भक्ति ज्ञान न बिराग है।
साधन सकल हीन पाप ही ते पीन सुठि सर्व अंग हीन नाथ सरन मे लाग है॥
स्रवन सुजस सुनि गुनि मन माहि चल्यो पापी पोच पावर न करै प्रभु त्याग है।
बनादास सुनि छल हीन बानी जानी जन रही वस्तु अनो ताते राम प्रिय लाग है ॥८६॥

धाय कै उठाय भेंटे रामजू अजान भुज लिये उर लाय बेर तक नहिं त्यागे हैं।
सजल नयन तन पुलक मगन मन रावन अनुज सर्म सुठि अनुरागे हैं॥
मुख न वचन आवै रही न सँभार देह बनादास भक्ति जोग उर अति जागे हैं।
बगल बैठाय लंक ईस कुसलात कहो राम अनुरागि सद्य सिंधु नीर माँगे हैं ॥८७॥

देखि पदकंज भई कुसल कृपानिधान अवसि सँभारि तन मन बुद्धि बैन है।
तुरतहि कंज कर तिलक कृपाल किये हनुमान आदि उर पाये अति चैन है॥
माँगि कै रजाय अग्रभाग बैठो रिपु बंधु तजि कै निमेष देखै छवि कोटि मैन है।
बनादास ललकि ललकि ललचात अति गति को बखानै तोष मानत न नैन है ॥८८॥

सवैया

सीस जटा मुनि को पटराजित लाजित लाखन काम है जाही।
मानस जो हर हंस निरंतर ध्यान जिन्हें मुनि लाव सदाही॥
ते प्रभु प्रेम ते अंग लगाय मिल्यो जेहि को अतिही गहि बाही।
दासबना अभिषेक किये कर भाल को भाग्य सराहि है ताही ॥८९॥

धन्य बिभीषन देव बदैं नभ कौन कृपालु है राम समाना।
फूल झरे सुर बारहि बार मरो दृढ़ रावन सो पहिचाना॥
बैठि बिलोकत माधुरी मूरत ताही ते हर्षि बजावै निसाना।
दासबना सुठि भक्ति को भाजन बाँदर भालु सबै कोउ जाना ॥९०॥

घनाक्षरी

तिलक बिसाल भाल कंज नैन वंक भ्रुव भुज उर बृहद वृषभ कन्ध नीके हैं।
आनन सरद ससि मंद मंद मुसकात मकंत द्युति जाहि लागे अति फीके हैं।।
अरुन अधर द्विज नासा कीर तुंड लाजै कम्बु कंठ बनादास भावत सु जीके हैं।
जज्ञ पीत कंज कर त्रिबली गँभीर नाभी पीन जानु कमल चरन मन टीके हैं।।६१।।

तून धनु बान धर मानों मनसिज मुनि मघु के सहित जूठे उपमा अनेक है।
जीवहू को जीव जीव पीव छवि सीव सुठि जानै जन सोई जाहि सांची पद टेक है।।
बनादास अन्तःकरन सुद्धि वदै मिलै सदग्रन्थन में तबही विवेक है।
सीसा में लसहि तन रूप सुद्ध देखि परै जानै संत जन वहु ठानत कुटेक है।।६२।।

सवैया

तात कहौ निवहौ केहि भाँति से तौ सब अंग अतीव कुवासा।
दुष्ट के संग से नर्क भला बिगरो मन नित्य लहै न प्रकासा।।
सज्जन कंचन हेत कसौटी है जे तुम से अहैं उत्तम दासा।
दासबना दिन चन्द न सोभित पाय निसा सबको सुख भासा।।६३।।

कंचन जैसे कसौटी कसे पर होय खरो सबको मन माने।
बिघ्न बिपत्ति असज्जन संग से साधु सरूप सदा अधिकाने।।
ज्यों रन पायकै सूर खुलै इमि कायर सूर परै नहि जाने।
वैरी बरोर वड़ाई अहै रिपु सिंह सृगाल वधे को बखाने।।६४।।

एक तो राच्छस के कुल जन्म तमोगुन ते नहि कोई सुकर्मा।
दूजे परो दस मौलिको संग कृपालु विना कोउ पावन मर्मा।।
नाथ कृपा हनुमान मिले यह सज्जन रीति सिखाव सुधर्मा।
दासबना पुनि संभु कहे चलु राम के सर्नन आनसि भर्मा।।६५।।

नारद को प्रथमें उपदेस रह्यो जब रावन की मति मारै।
राम विरोध करै हठि कै तब तू करुना कर सर्न सिधारै।।
तातें भई दृढ़ता उर में दसकन्ध किये अतिही उपकारै।
दासबना उर घात किये पद बात कहे हित को दरबारै।।६६।।

बाढ़ी गलानि हिये बहु भाँति से तौ प्रभु के सरनागत आये।
सील स्वभाव सुने सरकार को द्वार न दूजो कहूँ लखि पाये।।
वेद विराजत है जसपावन पापी अनेकन को अपनाये।
दासबना सरनागत धर्मन एको लहे जेहि सन्तन गाये।।६७।।

तात तुम्हैं पहिचानैं भले हम मोसे बनी नहि सो हम जानैं।
तू सुभ लच्छन भौ न सखा प्रभु आपन दूषन आपु बखानैं ॥
ठौर नही तिहुँ लोकहु मे तेहि लक को राज्य दिये नहि मानैं।
दासबना सब भाँति बनी प्रभु मैं केहि माफिक कूर निदानैं ॥६८॥

छप्पय

तू इच्छा जब किह्यो चलै सरनागति माही।
यही हमारो बिरद लेहि ठौरै गहि वाही ॥
केवल आवन पर्‌यो लक मे तुम्हैं न लीन्हा।
रह्यो सोच उर माँहि नमित ताते मुख कीन्हा ॥
ऐसो सील स्वभाव सुनि नेवछावरि नहि जो भयो।
कह बनादास हमरे मते जननी जठरहि जरि गयो ॥६६॥

कर्म वचन मन आस सदा यक स्वामी केरी।
जग भरोस बल आपु बासना सकल निबेरी ॥
तन अर्पन हरि सरन बिष्नु बैभव को त्यागा।
सकल धर्म परिहरै कमल पद दृढ अनुरागा ॥
प्रभुकृत नित्य चितवन कृत रहै सदा निष्कर्म है।
कह बनादास गति नाम यक यह सरनागत धर्म है ॥१००॥

नहि एको आचरन कहौं सरनागत आये।
राम कहे है नाहि जानि कौनो बिधि पाये ॥
सुनहु सखा सति भाय साधु से प्रिय मोहि नाही।
यह जानै जन प्रौढ भजो जिन को हिय माही ॥
तुमसे सत पुनीत जे तिनही कारण तन धरौं।
कह बनादास नासै सुजस नेक नही ताको डरौं ॥१॥

जो सेवै मम संत रहौं ताके आधीना।
तिन्हैं न कछू अदेव सर्व करतब तिन कीना ॥
मेरे सत्रु न मित्र नही मृदु मन औ काया।
त्रिगुनात्मक ते भिन्न रचै यह मेरी माया ॥
सत प्रीति ते प्रीति है साधु बिरोध बिरोध जू।
कह बनादास आगम निगम सदग्रन्थन को सोध जू। २॥

सतै मुख ते खाउँ तृप्त संतै के पेटे।
जानै कोउ कोउ सुजन संत भेंटे मैं भेंटे ॥

संत तृषा ते तृषा जाय मेरी सब भाँती।
संतै सुख ते सुखी रहौं दिनहूँ औ राती॥
जिन जाने यहि भेद को तिन को संतै एकप्रिय।
कह बनादास बहु वेद मत काहू पर नहिं जात जिय॥३॥

भेष मात्र जो होय ताहि मम रूपै जानै।
सेवै मन बच काय सहज में सो भव मानै॥
मानै जो सह काम सहज में सो फल पावै।
ऊँचा पद निष्काम मोहिं मिलि जगत नसावै।
दुराचारहू जो भजै साधुइ समुझै जोग है।
कह बनादास कछु काल में कटि जैहै वह रोग है॥४॥

ममहित धन औ धाम तजे धरनी पितु माता।
सेवक सखा सनेह त्यागि भगिनी सुत भ्राता॥
बरषा औ हिम वात सहे आतप बहु भाँती।
छोडे सब अभिमान रही कछु जाति न पाँती॥
छुधा पिपासा से विकल सहे अमित अपमानजू।
कह बनादास मम नाम जपि रहत परायन ध्यान जू॥५॥

नही इन्द्र सुख चहै नहीं सिव विधि को दर्जा।
निस्पृह मुक्तिहु ओर काहु को सुनहिं न वर्जा॥
मोहू ते नहिं चहै तृप्त मानै नहिं मोते।
मैं ही यक प्रिय सदा प्रीति भय अवसि निसोते॥
रोम रोम रिनियाँ रहौं इमि अनन्य जन जे अहैं।
कह बनादास मम उजुर नहिं सोई करौ जो कछु कहैं॥६॥

लंकराय परि पाँय जोरि कर विनय सुनाये।
करहु नाथ इमि कृपा भजन कीजै सति भाये॥
राज काज परिवार सकल माया को जाला।
तुम बिन हितू न कोय परत लखि दीनदयाला॥
प्रथम रही जो वासना प्रभु प्रताप पावक दही।
कह बनादास साँचो कहौं अब इच्छा नहिं कछु रही॥७॥

करहु कल्प भरि राज्य लंक कर यह मम इच्छा।
काल कर्म गुन दोष दबै सब तासु परिच्छा॥

जहाँ संत सब जात अंत पैहौ पुर सोई।
दर्सन मोर अमोघ तात जानत सब कोई।।
तोष बिभीषन को भयो उर ससय सारी गई।
कह बनादास रघुवर चरन भई प्रीति अति नित नई।।८।।

सुठि सुकृत को सीव भक्ति भाजन जग जाना।
संतन माहि प्रमान बखानत बेद पुराना।।
राज्य लहे भरि कल्प सखा को दर्जा पाये।
अंत माहि पर धाम राम यहि बिधि अपनाये।।
को कृपालु रघुनाथ सम सदा अनाथन नाथ हैं।
कह बनादास तिहुँ काल मे वेद बिदित गुन गाथ हैं।।९।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिपिन खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनो नामैकोनर्विसतितमोऽध्याय: ।।२९।।

छप्पय

बोले रघुकुल भानु मंत्र सब करहु बिचारा।
जोरे बहु कपि कटक तरी किमि सिंधु अपारा।।
कोउ नाही कछु कहे लंकपति उत्तर दीन्हा।
होवै जैसी समय उचित भरि चाहो कीन्हा।।
तब पितृन परगट किये गौरव राखन जोग है।
कह बनादास बिनती करी मानी तासु नियोग है।।१०।।

भायो रघुपति हृदय नाहि लछमन मन माना।
जड़ से विनय न जोग सुधारी धनु अरु बाना।।
ह्वै है तुम्हरै कहा धरहु धीरज उर भाई।
बात पूरि तव परै करै जब देव सहाई।।
देव देव कुपुरुष करहि सिंह सूर को काम नहि।
कह बनादास सुठि क्रोध जो सात सिंधु सोखै अबहि।।११।।

दीजै देव बताय ताहि मारौं छन माही।
कौन आपु ते बड़ा सहौं पल एक न जाही।।
प्रभु बोले मुसकाय देव नहि मारन जोगा।
तिहूँ काल तिहुँ लोक करै सब तासु नियोगा।।
देव देखि नाहीं परत ताते काबू क्वन है।
कह बनादास धीरज करो देखो होवै जवन है।।१२।।

कुस आसन कर लिये पवनसुत संग रघुबीरा।
डासि दिये रुख पाय बैठि प्रभु जलनिधि तीरा ॥
बीति गयो दिन तीनि उदधि कछु किये न काना ॥
बोले राम सकोपि लषन आनो धनु बाना।
धर्‌यो तीर कोदंड पै जरन लगे जल जीव है।
कह बनादास व्याकुल भयो सागर अवसि अतीव है ॥१३॥

कनक थार भरि रत्न बिप्र को बेष बनाये।
बिन भय कबहुँ न प्रीति मान तजि उदधि सिधाये ॥
आय मिल्यो रघुबरहि बिनय तब बहुबिधि कीन्हा।
मोहि सुखात नहि देर बड़ाई आपुहि दीन्हा ॥
जेहि बिधि उतरै कपि कटक सो उपाय चाहो कियो।
कह बनादास रघुबंसमनि सिंधुहि सुठि आदर कियो ॥१४॥

दुइ भाई नल नील तिन्हहिं मुनि बचन प्रमाना।
लै गिरि सिखर पषान करहि सुन्दर जलयाना ॥
नहि डूबै पाषान तासु कर कौनेहुँ काला।
मर्जादा मम रहहिं काम तब कोसल पाला ॥
एवमस्तु रघुपति कहे सर अमोघ क्या कीजिये।
कह बनादास सागर कहे मम उत्तर तजि दीजिये ॥१५॥

गवन कीन परि पाँय बान रघुनन्दन मोचे।
हर्षवन्त सब सेन भई कत नाना सोचे ॥
तब बोले रघुबीर बैर कर कारन काहा।
बँधे बाँध सामुद्र तरै सेना अवगाहा ॥
सुनि सुकंठ रघुबर बचन भालु कीस बोले तबै।
कह बनादास लावो गिरिहि सिला सृंग धाये सबै ॥१६॥

बाँदर भालु समूह चले सब गर्जि गर्जि करि।
सिला सृंग गिरि लाय देत नलनील पानि धरि ॥
बाँधत लिखि लिखि नाम जुटत उतरात पषाना।
किये सेतु सुठि पुष्ट हर्ष रघुबीर सुजाना ॥
बढ़ो थाप मर्कटन की स्त्री रघुबीर प्रताप है।
कह बनादास जप जानकी औ रावन को पाप है ॥१७॥

तबहि कहे रघुनाथ अवनि पावनि रमनीका।
बहुरि सिंधु को तीर नीक लागत सबही का ॥

मोरे मन कल्पना सम्भु अस्थापन करिये।
नहिं सिव से प्रिय और सकल बिधि ते निस्तरिये॥
रावन रिपु जीतें अवसि जेहि प्रताप ससय नही।
कह बनादास रघुबसमनि हर्षि हृदय ऐसी कही॥१८॥

थापे बिधिवत लिंग नाम रामेस्वर राखे।
बहुरौ सबै सुनाय राम करुनानिधि भाखे॥
गगाजल के सहित आय जो दर्सन करिहै।
अति दुस्तर ससार अवसि करि पार उतरिहै।
सेइहि जो ईस काम ह्वै मन वाछित ताको फलिहि।
कह बनादास सकर कृपा मोर वचन नाही चलिहि॥१६॥

सेइहि स्रद्धा सहित कामना सकल बिहाइहि।
सिव की कृपा प्रसाद प्रेम भक्ती मम पाइहि॥
सिव समान को अहै भेद विरला जन जानै।
मेरो दास कहाय सम्भु सो ईर्षा मानै॥
मैं न द्रवो कोउ काल मे सो मन से जावें उतरि।
कह बनादास किमि सुख लहै जरनि जाय नहिं जन्म भरि॥२०॥

जो होवें सिव भक्त द्रोह मेरी दिसि राखै।
सुगति लहै नहिं स्वपन वचन ताके हित भाखै॥
रामै जाके ईस नाम रामेस्वर मानो।
रामहु को जो ईस उभय दिसि भेद पिछानो॥
या विधि ते है परस्पर परम्परा आवति चली।
कह बनादास निर्भेद जे दोउ दिसि ते दाया फली॥२१॥

मम कृत सागर सेतु जोई जन दर्सन करिहैं।
घोर धार ससार ताहि मे भूलि न परिहैं॥
मोह मान कल्पना सकल कंटक उर नासिहि।
पाय विसद बैराग्य हृदय अति बोध प्रकासिहि॥
सभा माहिं दसमुख सुने बाँधे जलनिधि सेतु है।
कह बनादास दसहू बदन बोला मनहुँ अचेतु है॥२२॥

घनाक्षरी

बाँधे सिंधु सागर समुद्र नीरनिधि बाँधे तोयनिधि उदधि पयोधि औ नदीस है।
अम्बुनिधि साँचे हू वारीस बाँधे राम तपी अजहूँ प्रमाद नाहिं जाने भुज बीस है॥

बनादास बांदर औ भालु मृषा पचि मरे सो तौ बने जरहि ते उठाये गिरि ईस है।
बाहर बढ़ाय बात बोलत अनेक भांति उर माहि सोच सुठि आई दससीस है ॥२३॥

छप्पय

गयो विभीषन जबहि दूत तबहीं सुक नामा।
पठये रावन वेगि चरित देखन को रामा॥
आयो कपि के कटक दरस रघुवीर प्रभाऊ।
जाते सकल प्रसंग बिसरिगो सहज दुराऊ॥
पकरि कीस मारन लगे हरत नासिका कान को।
कह बनादास दीन्ही सपथ रघुपति कृपानिधान को॥२४॥

लाये लछमन पास तुरत सो दीन्ह छुड़ाई।
रावन को पत्रिका लिखे कर तासु पठाई॥
आयो दसमुख सभा चरन मस्तक सो नाये।
समाचार के हेत निकट दसवदन बुलाये॥
कहसिन रिपु को तेज बल बहुरि विभीषन की दसा।
कह बनादास सुठि ब्यंग पुनि रावन तेहि अवसर हँसा॥२५॥

रूप तेज बल धाम राम सब पूरन कामा।
त्योंही तेज निधान बन्धु अतिसय बलधामा॥
कीस भालु की कटक नहीं बरने बनि आवै।
लीला चाहत लंक हुकुम रघुवीर न पावै॥
सूर सुभट अतिसय बली बोलत वचन असंक हैं।
कह बनादास अब विलम्ब नहि ग्रसन चहत गढ़ लंक है॥२६॥

गयो जबहि तुव बन्धु तुरित रघुवीर बुलाये।
भेंटे अंग लगाय बन्धुजुत अतिमन भाये॥
मांगि उदधि को नीर तिलक रघुनायक कीन्हा।
कल्प एक को राज्य लंक कर अविचल दीन्हा॥
तासु बैन को मानि कै मारग मांगे सिंधु से।
कह बनादास याके लिये बात भई दुहुँ बन्धु से॥२७॥

प्रथम कौन अभिमान राम सायक संधाना।
विप्र रूप को राखि उदधि तजि आये माना॥

बाँधहु सेतु कृपालु सेन उतरै यहि भाँती।
सुनतै राम रजाय चले मर्कट उत्पाती॥
सिंधु सेतु बाँधे सुदृढ थाप किये गौरीसजू।
कह बनादास अर्सा नहीं उतरत बिस्वावीस जू॥२८॥

नाथ जोरि कर कहौं बचन कछु सुनिये मोरा।
राम विरोध न करो नाइ सिर अमित निहोरा॥
अति प्रताप बल भूरि ब्रह्म पूरन अविनासी।
रचै अमित ब्रह्माड छनक मे मायादासी॥
मन बच क्रम ह्वै तेहि सरन भजिय अवसि मन लाय कै।
कह बनादास दीजै सिया ह्वै है भला वनाय कै॥२९॥

सुनत जरा दसमौलि मृत्यु आई सठ तोही।
लखत न निज अवकाति ज्ञान उपदेसत मोही॥
तहूँ जाय किन अबै करसि बहु जासु बड़ाई।
सचिव विभीषन भये थाह रिपु की हम पाई॥
मचले जाय समुद्र ढिग सठ साखा मृग जोरि कै।
कह बनादास अभिमान भरि बोला मोछ मरोरि कै॥३०॥

कुंडलिया

लछमन पाती बाँचिये तबही दीने खोलि।
पढ़न को आज्ञा दिये रावन सचिवहि बोलि॥
रावन सचिवहि बोलि महादसमुख अभिमानी।
बालत व्यंग अनेक कहौ किन मनुज कहानी॥
बनादास प्रभु बन्धु के बचन लिखे हैं तोलि।
लछमन पाती बाँचिये तबही दीने खोलि॥३१॥

रे दसमुख खद्योत खल पोच नीच अज्ञान।
हियो कपारो होन दृग लखैं न रघुपति भान॥
लखैं न रघुपति भान जक्त जननी हरि आने।
मानै कहा हमार न तरु जमधाम पयाने॥
तव हित लिखे प्रचारि कै वेगि करै परमान।
रे दसमुख खद्योत खल पोच नीच अज्ञान॥३२॥

कठ कुठारी दसन तृन दाबि जानकी अग्र।
दसहू सिर नाँगे चलै रघुपति सरनहि व्यग्र॥

रघुपति सरनहि व्यग्र पाहि प्रन तारत हारी।
त्राहि त्राहि हरि सरन बचन इमि दीन उचारी॥
बनादास यहि भाँति मिलु बनिहै कार्य समग्र।
कंठ कुठारी दसन तृन दाबि जानकी अग्र॥३३॥

निज नारी को संग लै पुरजन प्रजा समाज।
सुनतहि आरत बचन को अभय करैं महराज॥
अभय करैं महराज मानु साँची मम बानी।
नहिं तव आयो काल किये अपने कर हानी॥
बनादास कुल दल सहित भयो सबेर अकाज।
निज नारी को संग लै पुरजन प्रजा समाज॥३४॥

सुनत हँस्यो रावन तबै छोटे मुख बड़ि बात।
महिपर नभ चाहत गहा काहुहि नाहि सोहात॥
काहुहि नाहि सोहात सुई आनन किमि जाई।
कैसेहु गिरि सुम्मेरु सिखे कहँ अमित झुठाई॥
परिहै दससिर सामने बूझि परिहि कुसलात।
सुनत हँस्यो रावन तबै छोटे मुख बड़िबात॥३५॥

दूत चल्यो रघुपति सरन अतिसय चित में चाउ।
आयो मर्कट सैन में देखहु दरस प्रभाउ॥
देखहु दरस प्रभाउ भयो राच्छस मुनि ज्ञानी।
पायो अपनो रूप गयो उर आनंद मानी॥
बनादास रिषि साप गे ऐसे प्रभु को गाँउ।
दूत चल्यो रघुपतिसरन अतिसय चित में चाउ॥३६॥

सवैया

राम कहे कपिराय बुलाय बिलम्ब नही छन को अब कीजे।
बाँधि कै सेतु तयार भयो सब मर्कट भालु को आयसु दीजे॥
बेगि चलें गढ़ लंक दिसा प्रथमै सनवीर दोऊ कर मीजे।
दासबना अस कौन अहै भट देखि कै जासु न दाँत पसीजे॥३७॥

छप्पय

कटकटाय कपि कोपि कोटि कोटिन यक साथा।
चले जुत्थ के जुत्थ जयति बोलत रघुनाथा॥

कोउ अकास मग उडत पृष्ठ जलचर कोउ देवत।
उतराने जल जीव राम लखि दृग फल लेवत।।
कोऊ सेतु कोउ जल चरन चढि चढि सुख से जात है।
कह बनादास अति भीर भै बरने नाहि सिरात है।।३८।।

रह्यो सेतु को नाम भये सब जलचर सेता।
रामरूप लखि छक कहै को आनंद जेता।।
कछु सागर प्रेरना अवसि प्रभु दरसन लागी।
भे मर्कट जलयान उदधि के जिव बड भागी।।
गगन गर्जि अगनित गये नहीं आसरा कछु लिये।
कह बनादास बलराम को सुमिरि सुमिरि प्रमुदित हिये।।३६।।

सैल सुबेल समीप सिंधुतट डेरा लीन्हा।
लक अमित अहतक सोच सुठि दसमुख कीन्हा।।
निज निज मत सब कहो सिन्धु नांघो रिपु सैना।
मन्त्रिन मति अति अन्ध कहैं सारे प्रिय बैना।।
नर कपि भालु अहार मम बार बार बूझिय कहा।
कह बनादास हानिहार जस सोई सब उर बसि रहा।।४०।।

नाम महोदर जासु सकल सैना को नायक।
रावन को रुख पाय बचन बोला सुखदायक।।
प्रथमै बुझत मत्र लगै पीछे नहिं नीका।
कहै जथारथ जोंई होय तुम्हरे मन फीका।।
कहो नीति ऐसी कहा ताहि न करत विचार जू।
ठकुर साहाती जो कहै सो प्रिय तव दरबार जू।।४१।।

अनुजहि मारे लात सरन रघुबीर सिधायो।
मालवन्त गृह गयो तबहि ते सभा न आयो।।
प्रिय बानी जो कहै तासु नाही परमाना।
कहै जथारथ बात होत तामे कल्याना।।
सो अतिसय कटु लागती कहने वाले कम अहै।
कह बनादास सोउ स्वल्प जो तामे सुनि कै सुख लहैं।।४२।।

मिथ्या मारहि गाल कहैं जा मोर अहारा।
नर बांदर भय कवनि जानिये अवसि लबारा।।

वन उजारि पुर जारि गयो जो अक्षय सँहारी ।
कीन्हे हम सुम्मार चौथि सैना जो मारी ॥
नहिं भूँखा कोउ लंक में ताहि न कीन्ह अहार है ।
कह बनादास यहि बुद्धि ते नाही भल होनिहार है ॥४३॥

सत जोजन सामुद्र सेतु बाँधे छन माहीं ।
सिलासिंधु उतरात सुना काने कोउ नाही ॥
वधि ताड़का सुबाहु हते खरदूषन बीरा ।
मारे बहुरि बिराघ कबंधहि अति रनधीरा ॥
वालि वधे जिन एक सर अरु खंडे हर को धनुप ।
कह बनादास भृगु मद हरे पुनि पुनि ते भाषत मनुप ॥४४॥

तेहि बिरोध नहिं कुसल नाथ यह सम्मत मोरा ।
मुनि पुलस्त्य को वचन अनेकन भाँति निहोरा ॥
जाते कल्लह मिटै जतन सो अवसि विचारो ।
होय राम सों जुद्ध मरों तब अग्रसुरारी ॥
जातुधान कुल मुकुटमनि मन मानिहिं करिहो सोई ।
कह बनादास सुनि चुप रह्यो अभ्यन्तर जरिगो सोई ॥४५॥

कह प्रहस्त कर जोरि तात बिनती कछु मोरी ।
दीजे सिया पठाय नाहिं यामें कछु खोरी ॥
मोहिं कादर जनि गुनहु उचित भाषत उपदेसा ।
आनमन्त्र के किये अवसि सब अंग कलेसा ॥
सचिव संग करि भेजिये सब प्रकार चाहो भला ।
कह बनादास जग बिदित है बड़ प्रताप नृप कोसला ॥४६॥

नारि पाय फिरि जाहिं रारि को काम न कोई ।
नहिं मानै जो तदपि लरिय सन्मुख भल सोई ॥
कहेसि अमित दुर्बचन भयसु कुल माहिं कलंका ।
मेरो पुत्र कहाय अबहिं ते ब्यापी संका ॥
जो आई मर्कट कटक भूँखे निसिचर खाहिंगे ।
कह बनादास कौनो तरह नृप बालक समुहाहिंगे ॥४७॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम त्रिंशतितमोऽध्यायः ॥३०॥

छप्पय

निसा समय आनन्द भवन गवना दससीसा।
महामत्त अभिमान अवसि निरखत भुज बीसा॥
पाये सुधि मैं सुता सिंधु उतरे रघुबीरा।
डेरा निकट सुवेल सोचि उर धरत न धीरा॥
जोरि पानि पति से कहत बचन कान मम कीजिये।
कह बनादास करि कै कृपा माँगों सो मोहिं दीजिये॥४८॥

मिल्यो विभीषन राम भला सब भाँति विचारा।
मालवन्त गृह गयो नाहिं आवत दर्बारा॥
ठकुरसोहाती कहैं सभा सकलौ मति भोरी॥
मुनि पुलस्त्य को बचन कान प्रिय कियो न सोरी॥
मानुष मानत राम को परब्रह्म जाने नही।
कह बनादास ब्यापक विरज नति नेति जेहि स्रुति कही॥४९॥

सेवहि मुनि जोगीस जानि ईस्वर अबिनासी।
रचे अमित ब्रह्माड छनक मे जाकी दासी॥
सो माया अति प्रवल सम्भु विधि सबहि नचावैं।
बाल घरौंदा सदृस सहज मे सकल नसावैं॥
तासो सम रन सोहई अजहुँ सिया पिय दीजिये।
कह बनादास रामहिं भजो जगत विमल जस लीजिये॥५०॥

आयो मर्कट एक लक दहि तव सुत मारा।
कीन्ह् वाटिक खौस अमित निसिचर सहारा॥
भयो न कछु तेहि सग लखे निज नैनन सर्बा।
सुनहु न हित उपदेस भूपा पिय आनहु गर्वा॥
बांधे सेतु समुद्र मे पार उतरि सेना परी।
कह बनादास सूझत नही अब चाहत पति का करी॥५१॥

सीता अति प्रिय तुमहिं जनकपुर ते किन लाये।
भागहु बाँवे लगाय बसन कोदड उठाये॥
तोरि सरासन सम्भु परसु धर मान विध्वस।
मुख मसि लागी नृपन जगत रघुबीर प्रसस॥
भुज बल ब्याहे जानकी सुर नर असुरौ पचि मरा।
कह बनादास तेहि समय मे नहिं तिल भरि हर धनु टरा॥५२॥

जनि कुल घालक होहु नाथ राखहु अहिवाता।
करते राम विरोध लोक तिहुँ तरनि ते नाता॥
कादरि नारि स्वभाव विविध सदग्रन्थ वखाना।
मम पत्नी यह दसा अपर को कवन ठेकाना॥
बाँधे सेतु समुद्र का उतरहिं वोस पयोधि जव।
कह बनादास सिनु नृपति को सूर सराहव महूँ तव॥५३॥

होत प्रात दसकन्ध आय निज सभा विराजा।
गावहिं तुम्बर तान बजावहिं बहुविधि बाजा॥
सुरपति सभा न तुलै और केहि पटतर देवै।
बैठे सूर समूह नाम कहं लग कोउ लेवै॥
इहाँ लषन कुस साथरी डासे जुत मृगचर्म है।
कह बनादास नाना सुमन लाय धरे करि सर्म है॥५४॥

वामदच्छ कपिराज विराजत लंक नरेसा।
जहँ तहँ वाँदर भालु धरे नाना वरवेसा॥
प्रभु पीछे आसीन लषन लाखन में धीरा।
अग्र विराजत भये वालिसुत मुवन समीरा॥
कहुँ धनुष कहुँ वान प्रभु कहूँ तून सोभा घने।
कह बनादास मुनि पट जटिल नहिं कवि उर वनंत बने॥५५॥

तेहि अवसर को ध्यान धन्य जाके उर लावै।
उपमा सारद सेष कहाँ कवि कोविद पावै॥
कपि उछंग प्रभु सीस किये कछु अवसर पाई।
अंगद औ हनुमान चरन चापत मन लाई॥
उठि बैठे कछु बेर में आलस मेटे रामजू।
कह बनादास आनन्दप्रद जनहित पूरन कामजू॥५६॥

वैठ जाय निसि समय सभा मँह अतिहि असंका।
नेक नहीं उर त्रास दसासन भुज वल वंका॥
किन्नर औ गन्धर्व लगे तेहि अवसर गावन।
कवि उपमा को लहै सहज सुर राज लजावन॥
कहत विभीषन सोचकित राम ध्याल दच्छिन गये।
कह बनादास घन दामिनी मनहुँ मेघ गर्जंत भये॥५७॥

अति उतंग अस्थान सिखर पर सुभग अगारे।
यहि अवसर दसमौलि वैठि तहँ दीख अखारे॥

वाजत ताल मृदग पखाउज जनु घनघोरा।
गान तान अप्सरा नृत्य तजनु दादुरि मोरा॥
छत्र मेघडम्बर सिरे तासु स्यामता भासजू।
सीस मुकुट ताटक त्रिय जनु दामिनी प्रकासजू॥५८॥

देखि अमित अभिमान कूदि कपिराज सिधाये।
छत्र मुकुट ताटक तूरि महिमाहिं गिराये॥
रसाभास करि सकल भूमि तल दसमुख आवा।
जनु चपला की चमक चरित कोउ जानि न पावा॥
को आयो कैसा कियो अति अचरज सब उर भयो।
कह बनादास सुग्रीव तब गंजि कृपानिधि पहँ गयो॥५६॥

समुझाये तब राम काम कैसा यह कीन्हा।
तुम मुखिया सब माहिं सत्रु घर मे पग दीन्हा॥
यक तौ रात्री समय सग दूजा कोउ नाहीं।
अब ऐसा जनि किह्यो जौन आवै मन माहीं॥
अति विरोध नृपनीति मे बार बार रघुपति कहे।
कह बनादास कपिराज तब प्रभु पद पकज कर गहे॥६०॥

आपु निकट अभिमान देखि सुठि मोहिं न भावा।
तरकि गये कपि खेल कोऊ कछु जानि न पावा॥
कीन्हे सकल विध्वस छनक मे जिमि हरि खेला।
सकलो सभा ससंक अवनि दसकन्धर मेला॥
चलत गंजि रव घोर अति तब जाने कोउ बीर है।
कह बनादास अनुकूल प्रभु देन जोग को पीर है॥६१॥

भवन गयो दसकन्ध सयन करि प्रातहि जागा।
निरखत बीसहु बाँह सभा महँ आव अभागा॥
जुरे निसाचर आय कहत तबही दससीसा।
नाँघे काह समुद्र उडहिं खग बहु वारीसा॥
बीस पयोधि अपार जे उतरहिं सौ बरबीर है।
कह बनादास कैलास जेहि नहीं उठावत पीर है॥६२॥

इहाँ कहत रघुबीर सखा का करिय विचारा।
पठई अंगद दूत कह्यो तब लंक भुवारा॥

बालि तनय कहँ बोलि बेगि कह कोसलराजा।
करहु लंक गढ़गौन तात कीजै मम काजा॥
रिपु सन कीन्हेहु बतकहो बलबुधि नेति निचोरिकै।
कह वनादास बोलत भये कपि अंगद कर जोरिकै॥६३॥

साखामृग गुन हीन कहा करनी यहि लागी।
स्वतः सिद्धि प्रभु कार्य भाग्य मेरी अति जागी॥
सब सुभगुन बलधाम राम अति आदर दीन्हा।
रघुबर सीस निधान कोऊ विरले जन चीन्हा॥
चरन बन्दि अंगद चले राम रूप राखे हिये।
कह बनादास इमि लखि परत सकल काम प्रथमहिं किये॥६४॥

पैठे लंक निसंक बंक भ्रुव वरनि न जाई।
दृग क खाय लगूर बीर बर अवसि घुमाई॥
विन बूझे मग कहँ देखि निसिचर भय भारी।
पुर खर भर जहँ तहँ भाव कपि लंक जो जारी॥
रावन सुत खेलत रह्यो तासे ह्वै गै भेंट है।
कह वनादास दोउ नवल तन अतिसय बली अमेट है॥६५॥

बात बात बत बढ़ी हन्यो कपि मुष्टिक एका।
सो कीन्ह्यो तन त्याग चल्यो अंगद आगे का॥
सभा द्वार कपि गयो निसाचर एक पठावा।
सुन दससीस विचारि कीस कहँ बेगि बुलावा॥
बालि तनय मृगराज गति रावन ढिग पहुंच्यो जबै।
कह वनादास कपि देखि कै उठे तुरत निसिचर सबै॥६६॥

रावन अतिहि सकोपि सकल दिसि नयन तरेरी।
अंगद बैठि निसंक जुत्य जनु करिगन केरी॥
बहुरि कहे दस बदन कौन बंदर कहँ आये।
मैं रघुपति को दूत हेत तव नाथ पठाये॥
मम जन कहिं तोहिं मित्रता जनक नाम भार्पे कसन।
कांख बास जाके किये सुनत बचन लाग्यो हँसन॥६७॥

रहा विचारा बालि तासु सुत कुटिल कपूता।
निज मुख ते सठ कहत राम तापस को दूता॥

तव मुख तोरन हार लाज नहिं लगत अभागे।
गिरी न रसना अबै गिरिहि रघुपति सर लागे॥
बहुरि कहत रावन भयो बालि कहाँ रे बांदरे।
कह बनादास अगद विहँसि दिन दस मे लायहु गरे॥६८॥

परत्रिय लाये चोरि बोरि डारे कुल पापी।
मुनि पुलस्त्य जस बिसद भइसु खल अधम सुरापी॥
हँसि बोला बहिलाय जाय सिव सैल उठावा।
दसदिग्गज वर जोर पराभव जावे पावा॥
सहसबाहु दीपक धरे सोस बारि सो रावना।
कह बनादास जीतन गयो बलि पायों जस पावना॥६९॥

टाँग पकरि झकझोरि बूढि यक सिन्धु मे नाये।
महा अधम दसमौलि मनहिं कछु लाज न आये॥
जीते जम औ भानु जुद्ध बैकुठ मे कीना।
लोकपाल बस सकल दड सुरपति सो लीना॥
बाँव दियो पुरजनक में नेक नही हर धनु छुयो।
कह बनादास हयसाल मे बाँधेहु पर नाही मुयो॥७०॥

सो रावन जग बिदित चलत डोलत जेहि घरनी।
सतजुग मे बल जासु भई कलिजुग की करनी॥
क्यि बाटिका खीस सुवन हति लंका जारे।
एकै कपि हनुमान चौथि सैना सहारे॥
पुरुपारथ गोये कहाँ गटई गगरी बाँधि कै।
कह बनादास मरु डूबि किन सिन्धु माँहि दम साधि कै॥७१॥

रे कपि बोलु सँभारि चलन चाहत जम गेहा।
पठये किन हनुमान हेत मम न करु सनेहा॥
स्वामि उपासक जाति करहु नाना बिधि लीला।
नाचि कूदि बहु भाँति नाय निज पालत सोला॥
देखनहारहु ते सहे न तरु प्रान जाते अबै।
कह बनादास बूचो बहिनि देखि सहे सहि है सबै॥७२॥

नारि दुखी तव नाय अनुज तेहि को लखि दीना।
कुल कलंक तुम दोऊ हृदय सब भाँति मलीना॥

जामवन्त सुठि वृद्ध सिलप कर्त्तब नल नीला।
मोसों जुरने जोग कौन ऐसा बल सीला॥
तोसे लरत न सोह कोउ मेरे सँ नामहि सठ।
कह बनादास दिनकर कहाँ कहँ खद्योत न तजै हठ॥७३॥

ज्यों मृगपति बध ससा कौनि संसार बड़ाई।
तेरे मारन हेत लाज रामहिं अति आई॥
ताहित पठये मोहिं कठिन छत्री कर क्रोधा।
सहि न जाति कोइ भाँति करै कवनो बिधि बोधा॥
सकल तरह कल्यान है दसमुख मम कहना सुनै।
कह बनादास पापी पतित आन नहीं कछु उरगनै॥७४॥

घनाक्षरी

दाँत दाबि दूब अरु कंठ में कुठारी बाँधि अग्रकरि जानकी चलै जो यहि भाँति से।
पुरजन प्रजा निज नारि संग चेरी करि नांगो दससीस और सारे गुरु ज्ञाति से॥
आरत हरन पाहि पाहि पद कृपासिंधु त्राहि त्राहि किये सुखी होय दिन राति से।
बनादास सीलसिंधु दीनबन्धु रघुनाथ अवसि सनाथ करै तोहि अवकाति से॥७५॥

सुनि दससीस दहो पावक मनहुँ घृत अरे नीच पाँवर न आनहुँ को सोच है।
छोटे मुख बड़ी बात बोलत न लाज लागै अवसि दुसील नहिं नेकहू सकोच है॥
मैं तो मुख तोरन कै जोग रहे दसौ सुठि दिये नर जाय राम येही बात मोच है।
बनादास कठिन सहत अति ताही लगि न तरु सजाय देते तोहि पापी पोच है॥७६॥

लंक को समुद्र करि सिंधु सद्य लंक करों लंक महारावन कोपल में बनावों रे।
दोनन त्रिकाल हू में जाते तिहूँ लोक माहिं ताहिं करों लंक नृप बिलम न लावों रे॥
मारि सैन सकल सिपा को निज पीठि राखि चेरी कै मदोदरी को अवहीं सिखावों रे।
बनादास बार नहिं लावों बालि बालक तो दूत रघुनाथजू को साँचु कै कहावों रे॥७७॥

तोरि दसमुख लंक पंक करों पल माहि रंक कैसी झोपरी उजारत न बार जू।
कुंभकर्न मारि घननाद वधवाद करों राच्छस सकल भूंजि डारों कोप भार जू॥
काल मौत मारों मुष सदृस पलक माहि राम काम हेत तव बालि को कुमार जू।
बनादास कैसी करों प्रभु न रजाय दिये दाँत हाय मीजत अनेकन प्रकार जू॥७८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिन
खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम एकत्रिंशतितमोऽध्याय:॥३१॥

सवैया

येती झुंठाई सिखे कहूँ मूढ करै केहि लागि मृषा गल मारी।
कैसो निलज्ज है बांदर जाति न साहेब कार्य को मानत हारी॥
बालि नही अस मारे सिगाल सिखे तपसी सग माहिं लबारी।
दासबना गुन गाहक हौं तेहि ते सहि लेत सबै रिस टारी॥७९॥

तौ गुन गाहकता हनुमान बखान किये हमहूँ कछु जाना।
लाज न रोप न माप अहै तव धोय पिये सब अग से माना॥
ताते ढिठाई किये सुनु रे सठ ऐसो निलज्ज त्रिलोक न आना।
बाग उजारि दिये सुत मारि गये पुरजारि किये नहिं काना॥८०॥

घनाक्षरी

जारे रिपु हृदै कोस बीस बिस्वा भली भाँति मेघा धनु सर जनु बचन कृसानु है।
उक्ति जल बुद्धि सूप भारती बहावै तासु ताहि करि बीस बाहु बचो जातुधानु है॥
अगद सकोपि कहे सुनु बीस आँखि हीन चलु राम सरन को करुना निधान है।
बनादास त्राहि त्राहि करत कृपालु ह्वहैं अभय करैं तोहिं भुज तजु मद मानु है॥८१॥

अगुन अमान बुद्धि हीन जानि पिता तजे किये बनबास मम त्रास अधिकान है।
नीचपोच बांदर न मृषा काहे आवै लाज बार बार करै सठ ताकर बखान है॥
बिजयी त्रिलोक ताहि तपी को सुनावै डर ऐसे ऐसे नर मारि खात जातुधान है।
बनादास सुनि कोपो कपि अति कटकटाय जानि अपमान बानो चाहे घरिखान है॥८२॥

छप्पय

मार्‍यो दुहुँ करत मकिताहि छन भूतल भारी।
सयहि दसौ किरीट गिर्‍यो गह अगद चारी॥
सोफेंके प्रभु पास कछुक सिर धर लकेसा।
कपि को प्रबल प्रताप देखि लह अवसि कलेसा॥
लक हल्यो जनु पक से पुनि समुद्र जल उच्छल्यो।
कह बनादास उत्पात अति सबल सुभट के हिय खल्यो॥८३॥

पुनि रोपे करि पैज पांवतेहि सभा मँझारी।
सठ टारै मम चरन जाउँ सीता मैं हारी॥
सुनत भयो अतिक्रोध बीर बोल्यो दसकन्धर।
पद गहि अवनि पछारु जान पावै जनि बन्दर॥
ललकारे सारे सुभट आदिक जे घननाद हैं।
कह बनादास धाये सकल भरने जस बरबाद हैं॥८४॥

अनो अकम्पन कुमुख महोदर आदिक बीरा।
चले कोपि अति काय कुलिस रद जे रनधीरा ॥
दुर्मुख सुर रिपु बली सुभट मकराच्छ कहाये।
नाम गनावै कौन कर्न घट तजि सब आये ॥
गहि गहि पद टारन लगे तिलहू भरि नाही टरा।
कह बनादास पटतर कवन सकल दैत्य दल पचि मरा ॥८५॥

घनाक्षरी

मेघनाद आदि कोटि कोटि भट आय जुटे अंगद चरन नहि नेक खसकतु भो।
कर बल छल करि करत उपाय कोटि छोटि बात सब कीन्ह तौहूँ टसकतु भो ॥
बीर भे अधीर पीर हिये बीच आय गई कम्पत सरीर सुठि धरा धसकतु भो।
बनादास हहरि हदकि जातुधान गये अति दसकन्ध को करेज कसकतु भो ॥८६॥

हाल तो सुमेरु सेषहू को कटि टूटि जातो फूटि जाती कच्छ पीठि तौहू नहि चालतो।
विधि लोकइन्द्र लोक रुद्र गिरि डोलि जातो सातहू समुद्रहू नीर जदपि उछालतो ॥
धसि जातो ध्रुवलोक खसि जातो भानु भूमि बनादास कौन पद अंगद को टालतो।
चालतो बिरंचि अंक कालहू कलपि जातो करै का त्रिलोक जाहि राम प्रतिपालतो ॥८७॥

सिमिटि सिमिटि बल करै भट भूरि भारे टारे न टरत जनु सम्भु को पिनाक भो।
रह्यो एक कुंभकर्न पर्न कियो सारो पुर टारो कोऊ नाहि मानो विधि कैसो आंक भो ॥
जैसे पतिदेव तीय पीय बैन चलै नाहि ध्रुव कैसो धाम जानि परै परिपाक भो।
बनादास हिमवान अचल सुमेरुहू से तीन काल माहि रामदानी मन साक भो ॥८८॥

नाघि गो पताल कैंघो गाघि गो कमठ पीठि कहे ते न बनै गिरिमानहू त्रिकूट है।
चारि ओर सोर मचा विधि महि संगर चाप चाभरि लंक धरि बीरन को छूट है ॥
अचा बालि बचा से दसानन अनेक भाँति खचा करि क्रोध पैज अवसि अटूट है।
बनादास मुरझाय रही सैन सबं अंग जानो छठी दूध उल्टि आयो घूंट घूंट है ॥८९॥

उठो आपु रावन प्रचारे वेगि जुवराज वेगि मेरो पद गहे तेरो क्योंहूँ न उबार है।
धरु सीस रामचर्न तोहि कहे बार बार मुक्ति भुक्ति देन हार कोसलकुमार है ॥
बनादास तब सकुचाय बैठो आसन पै पट पै किरीट सीस धारिहू उघार है।
वैसे विकराल दूजे सोभा औरि आय बनी सोहत अतीव उर करत बिचार है ॥९०॥

सवैया

सारद से चतुराई बनी अरु बुद्धिहु माहि विनाय कथा के।
सेषहु से वकतित्व घनी दसकन्धर के अतिही उर धाके ॥

मान मथे सब बीरन को गढ लंक बिपे फहरात पताके।
दासबना रघुनाथ समीप चल्यो तब गर्जत बालि के बाँके ॥६१॥

देव प्रसंसत बारहि बार भुजा बल बुद्धि अनूप है जाके।
कोबिद औ कबि गाइहैं कीरति सैन सृङ्गार लहै उपमा के॥
राम को काम किये तन धैतिन तीनिउ काल तिहूँ पुर साके।
दासबना रघुबीर के पांयन आय पर्यो तव बालि के बांके ॥६२॥

लंक निसंक धर्यो पद पैज कै जानि पर्यो महि सग खैंचा है।
बीर हुंकारत भो दसकन्धर चारिहु ओर मे सोर मचा है॥
धाये जहां तहँ ते भट भूरि निसाचर को दलहारि पचा है।
दासबना सुर सिद्ध कहैं जग मे बल बाँकुरो बालि बचा है ॥६३॥

अंगद गौन कियो जबही तब पुत्र को मर्न दसानन जाना।
सोच किये अतिही अभि अन्तर स्रोहत लकन जात बखाना॥
मयतनुजा पहुँ गो दसकन्धर पुत्र बियोग ते रोदन ठाना।
दासबना अब चाहत काह करो नित ही अपनो मन माना ॥६४॥

बाग उजारि गयो पुर जारि सँहारि कै राच्छस औ सुत मारे।
आज मथ्यो मद बालि के नन्दन लंक ससकन घोर घरारे॥
पैठत ही हत्यो पुत्र को प्रानहि पीछे से आय गये तव द्वारे।
ऐसे निसक हैं किंकर जाहि के दासबना किमि पाइहो पारे ॥६५॥

देहु सिया अजहूँ पिय बूझहु काहे को नित्य करो गलमारी।
अगद औ हनुमान से सेवक तास न चाहत जीति मृषारी॥
नाहक घात करो कुल की हठि मानत नाहिं न बैन हमारी।
दासबना रघुबीर बिरोध कहे न बनै जसि ह्वै है दसारी ॥६६॥

घनाक्षरी

सारो पुर गारी देत कानन करत नेक बन्धु मिलो राम जाय लात घात किये ते।
माने न पुलस्त्य बैन मन्त्रन बिभीषन को मालवन्त रहो वृद्ध घर राह लिये ते।
सुने न महोदर प्रहस्त कहा मैंहूँ बके कैसे मति मारी नाहिं आयो कछु हिये ते।
बनादास बिपरीति देखि परै सारो अंग करत कुमन्त्र नित्य महामान पिये ते ॥६७

अति बिललाय हाय हाय कै पुकार किये आँसू पात आँखिन ते अति दुख पायो है।
जानाबस काल भयो काहू किन सुनै कही करै वोही सद्य जौन निज मन भायो है॥
आजु ते न कहौं कछु दृढ उर ठीक दिये रावन रिसाय कछु आँखि को दिखायो है।
बनादास नारि को स्वभाव कबि सत्य कहैं मंगल मे काच नाच, नानाविधि आयो है ॥६८॥

जाते दिगपाल लोकपाल जिन बाहुबल सोम भानु मृत्यु काल जम बस किये हैं।
स्वरग पताल मृत्युलोक में न बाकी कोऊ देवका बिचारे दंड इन्द्रहू सों लिये हैं॥
बन्धु कुम्भकर्न सुत मेघनाद बलवान लंक ऐसी कोट सिंधु खाई जासु दिये हैं।
बनादास बात बिपरीत कहे बनै नाहि नरन के मारे तासु नारि भीत हिये हैं॥९९॥

बिपुल प्रबोध करि सयन किये संग माहि प्रातकाल उठि निज सभा को सिधायो है।
सचिव सुभट सुर आय पद माथ नाये बन्दीगन बहु बिरदावलि सुनायो है॥
सहज असंक लंकपतिन गनत नेक प्रबल प्रतापी रिपु सीस पर छायो है।
बनादास कहत सुनाय सबही कि ओर चहत अहार बिधि घर ही पठायो है॥१००॥

सवैया

बालितनय को बुलाय कृपालु दिये अति आदर बूझत बाता।
सारो प्रसंग कहे गतमान जहाँ सन रावन पूत निपाता॥
सोध थयान किये गढ़ को तब राम कहे सब लायक ताता।
दासबना कर जोरिकै अंगद नावत सीस हिये सकुचाता॥१॥

घनाक्षरी

बाँदर की जाति डारपात को हलावै जानै खात फल तोरि तोरि यही अवकाति है।
चंचल चपल पसु प्रातहु जो नाम लेत मिलै न अहार ताहि ऐसी नीकी भाँति है॥
स्वामी को प्रताप सदा जन न बड़ाई देत ताही करि सिद्ध मुनि भजैं दिन राति है।
बनादास पाय तन राम को न काम किये निमकहराम सभी देखा देखी जाति है॥२॥

कपिराज रिच्छराज लंकपति बोलि राम सकल सुभट सन ऐसी बिधि कहे हैं।
करहु निरोध गढ़ अब न बिलम्ब कछू मोहि जुग समपल एक बीति रहे हैं॥
किये चारि अनीं दिसा चारिहु संजोग दिये सेनापति सोधि सोधि जहाँ जस चहे हैं।
बनादास द्वार द्वार नेकहू न बार लाये पादप पहार सिला सृंग सब गहे हैं॥३॥

नील नल द्विबिद मयन्द गये दच्छिन को महाबीर धीर घने घालें जातुधान हैं।
अंगद कुमुद दधिमुख अरु केसरी है पस्चिम दुआर पर चारि बलवान हैं॥
पनस सुषेन औ गवाच्छ कपिराज भये पूरब के द्वार पर सूरता निधान हैं।
बनादास राम औ लषनपति लंक रहे उत्तर के द्वार हनुमान जाम्बवान हैं॥४॥

मुख्य मुख्य बीर चारि द्वारन पै जयाजोग और भये तासु नाम कहाँ लौ गनाये जू।
चहूँ अनी चारि ओर सोर करि धाय चली अति अभिलाष अभिअन्तर बढ़ाये जू॥
बनादास राम काम पर प्रान देन चले तृन के समान गुन तासु किमि गाये जू।
लहे जन्म लाभ कबि कोबिद की बात केतो सुकृत के सीव पार सारद न पाये जू॥५॥

सवैया

लंक निरोध सुन्यो जब रावन कोपि कहे सब ही सन बानी।
देखौ दसा नर बाँदर की सहजे जेहि आय कै मौत तुलानी॥
जैसे परै भखु अजगर के मुख तै सहि आय कै सैन समानी।
दासबना बिपरीति भै बुद्धि नही गति काल परै पहिचानी॥६॥

घनाक्षरी

त्रिसिरा प्रहस्त औ महोदर गोपूरब को भिंदिपाल असि चर्म धारे धनुबान हैं।
दुर्मुख कुमुख मकराच्छगयो दच्छिन कौ सक्ति सूल गदाधारि अति बलवान हैं॥
अनी अति काय मेघनाद द्वार पस्चिम भो परिध प्रचंड धारि रावन समान है।
बनादास दसकन्ध देवघाती सुरघाती मनुज अराती द्वार उत्तर प्रमान हैं॥७॥

मुख्य मुख्य और बीर द्वार द्वार जथाजोग तोमर औ मुद्‌गर अनेक अस्त्र धारे हैं।
कोट के कगूरन पै जहाँ तहाँ चढि गये सिंहनाद करैं जनु प्रलै मेघ भारे हैं॥
बनादास तृन सम गनै न त्रिलोकहू को अवसि सकोपि चारि ओर ललकारे हैं।
उत कटकटाय कपि भालु गढ घेरि लिये जैति रामजू की बार बारही उचारे हैं॥८॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिपिन
खण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम द्वात्रिंशतितमोऽध्यायः॥३२॥

छप्पय

कनक कगूरन सोह निसाचर कारे कारे।
मेरु सृंग पर बैठि मेघ जनु भारे भारे॥
भालु कीस लखि जाहिं तिनहिं नीचे करि गिरही।
कटकटाहिं भट भूरि घोर निस्वर चिक्करही॥
पादप सृंग पषान गिरि धाये गहि मर्कट भले।
कह बनादास गढ गर्जते भाँति बिबिध गोला चले॥६॥

गेगढ ऊपर धाय भालु मर्कट करि हूहा।
गर्जंत तर्जंत अतिहि अनोचहुँ ओर समूहा॥
उत राच्छस भट भूरि भिरे जोरी से जोरी।
महि पटकैं उठि लरैं हाथ पग औ मुख तोरी॥
देखि सबल मर्कट कटक धाय अनो अति काय अति।
कह बनादास माया किये बरनि सकै कवि कौन गति॥१०॥

अन्ध ध्वन्ध बहु धूरि बरषि कीन्हें अँधियारी ।
उपलवृष्टि अति घोर बिकल भे बहु बन चारी ॥
चहुँ ओर ते चोपि सकल सैनापति धाये ।
जयति जयति दसकन्ध कीस भालुन बिच लाये ॥
रुधिर मूत्र मल केस नख महानकं बरषे जबै ।
कह बनादास रघुबंसमनि बान एकै मारे तबै ॥११॥

निसिचर माया दूरि किये जब कृपानिधाना ।
फिरे कीस औ भालु चले अंगद हनुमाना ॥
द्विविद मयंद गवाच्छ नील नल क्रोधित भारी ।
दधिमुख पनस सुषेन केसरी बीर प्रचारी ॥
कुमुद काल गर्जत मनहुँ जाम्बवान कपिपति चले ।
कह बनादास जयराम कहि जयति लषन रिपु दल मले ॥१२॥

उत प्रहस्त मकराच्छ महोदर अनी अकम्पन ।
दुर्मुख कुमुख कठोर कुलिस रद त्रिसिरा बल घन ॥
मेघनाद अतिकाय, देवघाती सुरघाती ।
विद्युज्जिह्वा आदि बीर वर मनुज अराती ॥
कालकेतु खरकेतु हैं सुररिपु गोघाती घने ।
कह बनादास सोनित नयन नाम कहाँ लगि कोउ गने ॥१३॥

निज निज जोरी जानि भिरे दोउ दिसि ते बीरा ।
एक एक नहि मुरे सबल अतिसय रनधीरा ॥
निज निज स्वामी जयति सर्वहि इच्छा मनमाहीं ।
चहूँद्वार घमसान जुद्ध नहि बुद्धि समाहीं ॥
इतै जयति रघुवर लषन उतै जयति रावन कहैं ।
कह बनादास बहु भट कटत परत भूमि आयुध गहैं ॥१४॥

तोमर मुद्गर परिघ सूल बहु सक्ति कृपाना ।
भिन्दिपाल अरु गदागजि लीन्हें धनुबाना ॥
ढोल दुन्दुभी पनव बिपुल बाजहिं सहनाई ।
सिंहा भेरिन फेरि तुरंही सब्द सोहाई ॥
ललकारहिं मारहिं सुभट कटहिं पटहिं भूतल घने ।
कह बनादास देखे बनै जुद्ध नहीं भासत मने ॥१५॥

कटकटाहिं भट कीस भालु चिक्करहिं कठोरा ।
आनन हनहिं निसान बली मुख अति बरजोरा ॥

पादप सिखर पहाड दसननख आयुध वीरा।
सिंहनाद सुठि करैं समर मे अतिसय धीरा॥
जयति राम जय लषन कहि जय क्पीस सुग्रीव जू।
कह वनादास मर्दंत घने निसिचर भुजवल सीव जू॥१६॥

उदर फारि मुख तोरि पटक महि भुजा उपारहिं।
अन्तावरि गर मेलि कीस जयराम पुकारहिं॥
सक्तिसूल अरु वान निसाचर करहिं प्रहारा।
फरसा परिघ प्रचड भिन्दि पालन गहि मारा॥
तोमर मुद्गर असि हनहिं सिला सृग कपि डारते।
कह वनादास धरि कुधर भट ललकारहिं वहु मारते॥१७॥

अगद औ हनुमान लेहिं गिरि प्रवल उठाई।
डारि देहिं यक वार जुत्थ को जुत्थ दवाई॥
लिये दाबि चहूँ द्वार भगे निसिचर भट भारे।
नहिं ताकत कोउ घूमि भालु मर्कट ललकारे॥
चढे कँगूरन कोपि कपि मर्दहिं अमित निसाचरा।
कह वनादास बिचलो सैन धीर न कोउ अवसर धरा॥१८॥

अगद और हनुमान लिये गहि कचन खम्भा।
अतिहि प्रवल भट जुगल किये उत्पात अरम्भा॥
ढाहत कनक मकान कलस गहि राच्छस मारहिं।
कटक्टाहिं अति क्रुद्ध केस कसि नारि निकारहिं॥
कपि लीला बहु विधि करैं बृहद लूम लपकाय कै।
कह वनादास दिसि राच्छसिन धावहिं गाल फुलाय कै॥१६॥

लका हाहाकार भयो रावन कुलघाती।
धीर धरै कोउ नाहिं जुगल कपि अति उत्पाती॥
मुखिया मुखिया मारि पास रघुबीर पवाँरहिं।
कटक्टाय अति कोपि लूम लीला ललकारहिं॥
सुभट मर्दि फेंकत सबल परत झुड के झुड हैं।
कह वनादास रावन निकट फूटत जनु दधिकुड हैं॥२०॥

लंक उदधि जनु मथत जुगल सुठि मन्दर भारी।
अंगद अरु हनुमान किये लंका पँठारी॥

इहाँ कहत रघुनाथ लषन प्रति बारहिंबारा।
बालितनय सुत पौन नेक मानत नहिं हारा॥
चढ़ि आये नल नील गढ़ द्विविद मयन्द समेत हैं।
कह बनादास मारे सुभट बहु प्रकार रनखेत हैं॥२१॥

कुमुद केसरी आदि लिये निज दिसा दवाई।
ललकारहिं बहु वार हतहिं राच्छस समुदाई॥
पनस गवाच्छ सुषेन दिसा पूरब उठि धाये।
मर्दहिं निस्चर अमित बरनि कवि पार को पाये॥
नरगागढ़ चारिउ दिसा भयो अमित उतपात है।
कह बनादास घर घर विषे नारी अति बिललात है॥२२॥

देखि अजय घननाद हृदय सुठि क्रोध सँभारा।
लै लै लायक नाम सूर बीरन ललकारा॥
बाँदर भालु अहार किये तिन ऐसी करनी।
बूड़ि मरहु किन सिन्धु जियत गड़ि जाहु न धरनी॥
कहा मदोदर कुलिसरद कुमुख बीर अति काय है।
कह प्रहस्त त्रिसिरा कहा अनी अकम्पनि काय है॥२३॥

विद्युज्जिह्वा किते देवघाती सुरघाती।
कहा बीर मकराच्छ किते हैं मनुज अराती॥
स्वान केतु खर केतु रक्त लोचन गो हन्ता।
सुरापानि मुख कूट ऊर्ध्व केसी बलवंता॥
मारहु मर्कट भालु भट खाहु चहूँ दिसि चौपि कै।
कह बनादास धाये सकल ललकारे सुठि ओपि कै॥२४॥

भिंदिपाल असि चर्म लिये धनुबान घनेरे।
सूलसक्ति अरु परिघ लिये फरसा बहु तेरे॥
तोमर मुद्गर धारि बीर बरछा बहु लीन्हें।
चले सरोष समूह जयति दसकन्धर कीन्हें॥
उतपादप पाषान गिरि सृंग तोरि कपि डारही।
कह बनादास आयुध दसन नख जयराम पुकारही॥२५॥

परो मारु घमसान अवसि रावन सुतकोपा।
मर्दत मर्कट भालु जुद्ध इच्छा अति चोपा॥

सिंहनाद करि दैत्य सबल धाये चहुँपासा।
क्रुद्धे काल समान त्यागि जीवन की आसा॥
मारहिं बाँदर भालु भट चपरि कोट बाहर किये।
कह बनादास कपिराज इत ललकारत हरषित हिये॥२६॥

निज निज जोरी जानि भिरे जतिही रिसराते।
हारे नाही हटत सूर सहजे रन माते॥
जयति रामजय लपन भालु कपि कह बहु बारा॥
जय रावन घननाद निसाचर करहिं उचारा।
घूमि घूमि घायल परत करत घोर चिक्कार हैं।
कह बनादास उठि रुड भट लरत अनेकन बार हैं॥२७॥

कटकटाहि कपि भालु घोर रव निसिचर करही।
सिंहनाद घननाद बीर जय जय करि लरही॥
हाथ पाँव को तोरि मुड मुडन ते फोरत।
केते बीर पछारि जलधि मे हठि हठि बोरत॥
कतहुँ दबत कपि भालु दल कबहुँ निसाचर भागते।
कह बनादास जय हेतु निज समर निसा सुठि जागते॥२८॥

पादप अरु पाषान सृग गिरि करहिं प्रहारा।
नखन बिदारहिं उदर मनहुँ नरहरि अवतारा॥
सक्तिसूल तरवारि उतै राच्छस भट मारहिं।
भिंदिपाल अरु गदा परिघ परचड प्रहारहिं॥
तोमर मुद्गर मारते सबल सूर दोउ दिसि लरे।
कह बनादास रन छकि रहे नही एक एकन मुरे॥२६॥

साँझ समय को जानि फिरी दोउ अनी अपारा।
आये निज निज ठौर बीर बाँके बरियारा॥
अवलोके रघुबीर कृपा दृग स्रम सब छीजे।
परे कमल पद धाय हृदय अति प्रेम पसीजे॥
सुम्मारी रावन लिये उतै अर्द्ध सैना खपी।
कह बनादास सुठि सोच बसि रह्यो जीम दसनन चपी॥३०॥

तब बोल्यो घननाद प्रात देखहु बल मोरा।
करौं सत्रु सहार बचन भाषों का थोरा॥

जाय किये सब सैन चैन रावन उर नाहीं।
नर कपि भालु अहार भयो अचरज तिन पाहीं ।।
निज लंगूर की कोट करि मध्य सैन राखी सबै।
कह बनादास मुख मेलि कै पवनसुवन सोये तबै ।।३१।।

सवैया

प्रातःकाल उठे कपि भालु लिये तरु सृंग पषान पहारा।
घेरि लिये गढ़ चारिउ द्वार भये वसि क्रोध सरूप सँभारा ।।
पाय हवाल चल्यो घननाद जहाँ तहँ वीरन को ललकारा।
दासवना दसकन्धर को सुत कोपि किये बहुबान प्रहारा ।।३२।।

होत न सामुहे मर्कट भालु तबै प्रभु बन्धु चल्यो सिरनाई।
तून कसे कटि सीस जटा अरु नयनन छाय रही अरुनाई ।।
गोरे से गात मनो अति रात किये धनु बान कहा उपमाई।
दासवना बल पाय वली मुख वेगि चले उतसाह बढ़ाई ।।३३।।

घनाक्षरी

जोरी जोरी जानि भिरे सुभटप्रचारि करि मल्ल जुद्ध अस्त्र शस्त्र नाना विधि जारहीं।
बिटप पषान गिरि सृंग लिये भालु कपि नखन दसन मुख उदर बिदारहीं ।।
हाथ पग तोरि तोरि मारे मुंड फोरि फोरि डारें सिंधु वोरि वोरि बहु ललकारहीं।
बनादास जातुधान मारु घमसान किये जैति रघुबीर जैति रावन उचारहीं ।।३४।।

जुरे लछमन घननाद वीर क्रुद्ध करि अतिहि विरुद्ध एक एकन न पारहीं।
मारे सतवान रथ सारथी निपाते अस्व लषन सबल जैति रामजू उचारहीं ।।
चढ़ो दूजी स्यन्दन चलाये सतवान कोपि चोपि लछमन तिलसम करि डारहीं।
बनादास सक्तिमूल डारे बहु एकै बार काटिकै फनीस ताहि पुनि ललकारहीं ।।३५।।

मारे मेघनाद उर लछमन बात सतकाटि सुत रावन सरीर को बचाये हैं।
पुनि तीस सिली मारेउ भुज ताकि ताकि दसमुख सुत पर्यो महि मुरछाये हैं ।।
बहुरि सँभारि उठे सिंहनाद करि वीर मारे सरकोपि लछमन काटि नाये हैं।
बनादास छल बल किये घननाद बहु काहू भाँति नेक सावकास नहि पाये हैं ।।३६।।

भयो अति व्याकुल जबहिं दसमौलिसुत तब ब्रह्मसक्ति उर लखन के मारे हैं।
पर्यो महि मूर्छि प्रताप अति भारी तासु मेघनाद जायकै उठाय हिय हारे हैं ।।
रह्यो सरमाय सांझ समय आई फिरे बीर सबदिसि रघुवीर बूझे अँधियारे हैं।
बनादास कहाँ बन्धु तौलौं सुत पौन लाये देखि दसा लषन कि धीरन सँभारे हैं ।।३७।।

करत विलाप बहु प्राकृत स्वभाव जिमि कपि दल बिकल बिलोकि विकलई है।
कह्यो रिपु बन्धु लंक बयद सुखेन बडो लावै हनुमान कछु निसा बीत गई है॥
पवनसुवन सह सदन उठाय लायो देखि गिरि औषधी कि नाम कहि दई है।
बनादास ह्वै है प्रात प्रान तौन हाथ ऐहै सुनि कै प्रसंग पीर सब उर भई है॥३८॥

कहे रघुनाथ लछमन को जियाओ तात रामपद बन्दि सद्य पौनसुत चले हैं।
पाय खोज रावन गयो है कालिनेमि पास कहे बेगि जाय तात अजनी को छले हैं॥
तिन कहे तुम हरि आने जक्त मातु जानि तब ते बिचारौ कैसे कैसे फल फले हैं।
बनादास नांधि सिंधु अच्छय कुमार मारे बाटिका उजारि पुर जारि अति खले हैं॥३९॥

तासु पथ रोकै कौन सुनि बहु गारी दिये उर मे विचार करि कालनेमि गयो हैं।
सर ढिग बाटिका बनाय कुटी बैठो मग माया को प्रपंच पल माँहि निरमयो है॥
देखि सुभ आस्रम मुनीस कोऊ बैठो एक प्यासे हनुमान लखि हरषित भयो है।
बनादास जायकै प्रनाम कपि किये ताहि तृषा को प्रसंग बेगि तासो कहि दयो है॥४०॥

दये सो कमंडल कहेन यासो पूर परै सरै सो देखाय दई कहे असनान करौ।
दीच्छा कछु लेहु जाते ज्ञान को प्रकास होय सतसंग किये कर सद्य फल आय फरौ॥
होत है समर राम रावन सो समय यहि गुरु के प्रसाद सब सहज मे देखि परौ।
बनादास जीतैं रघुबीर न सदेह जामे बातन मे लावो चहै जाते निज काज सरौ॥४१॥

प्रभु उर प्रेरक न लाये हनुमान बार पैठे सर माँहि एक मकरी चरन गहे।
किये तासु घात दिव्य रूप सो प्रगट भई अहै यह राच्छस वचन कपि सन कहे॥
करि असनान जल पान सो बहोरि गये लेहु गुरु दच्छिना लपेटि सुठि लूम नहे।
बनादास पटकै घुमाय बार बार महि मरन के समय मे दुरावता सुनांहि रहे॥४२॥

प्रगटि असुर तन राम कहि त्याग किये चले हनुमान बेगि पवन समान है।
पहुँचे समीप गिरि औषधी न चीन्हि पाये अवसि प्रकास देखि किये अनुमान है॥
रहे तहाँ रच्छक सो बरजे अनेक बार लूम में लपेटि लिए ताहि हनुमान है।
बनादास सैल को उपारि लै पयान किये उपमा मिलत नाहि महाबलवान है॥४३॥

पाहि पाहि करत पुकार ताहि छोडि दिये चले नभ मारग मे जैसे रामबान है।
आयो औध ऊपर अमित हाहाकार सुनि भरत बिचारे उरकोऊ जातुधान है॥
बिना फरमारे सर रोदा खीचि स्रौन तक भूतल सपदि पर्‌यो महाबलवान है।
बनादास राम नाम ऊंचे से उचार किये सुनत भरत भयो मृतक समान है॥४४॥

हाय बिधि कैसो किये यह बिपरीत बात वैसे उर तपै भये राम जनघाती है।
सजल नयन तन पुलक भे बार बार प्रभुहि सुमिरि भरि आई अति छाती है॥

गये पुनि निकट प्रसंग बूझे कहे कपि काम तव सरै जब जैये अर्द्धराती है।
बनादास प्रात भये आवें न लषन हाय अति पछतात जन्म मेरो उतपाती है ।।४५।।

अति अकुलई हनुमान हिय जानि परी तव बिलखाय कहे भरत दयाल है।
करम बचन मन जो न होय दूजो गति होहिं रघुबीर मम ऊपर कृपाल है।।
बनादास तो तो छन एक न बिलम्ब लागै हनुमान तन दूरि होय सब साल है।
भयोस्रम बिगत न नेकहू बिलम्ब लागी पवनकुमार उठि बैठे तत्काल है ।।४६।।

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमल मथने उभयप्रबोधक रामायणे विपिन खंडे
भवदापत्रयतापविभंजनो नाम त्रयस्त्रिंशति तमोऽध्यायः ।।३३।।

घनाक्षरी

कहे गिरि सहित सपदि बैठो बान मम सद्यही पठावों जहाँ जन सुखदाई जू।
आयो उरमान कछु पुनि अनुमान किये राम वन्धु को प्रताप पार कौन पाई जू।।
तव हनुमान कर जोरि कहे बार बार आपु के कृपा ते जैहों वान की ही नाई जू।
बनादास वहाँ राम सोच करें भाँति वहु आयो न कुमार पौन अर्द्धरात्रि आई जू ।।४७।।

सवैया

मातु पिता मम हेत तजे धरनीपुर औध महा सुखदाई।
आतप बात सहे बरषा हिम बास किये बन जाहित आई।।
देखि सके न दुखी कबहूँ मोहि काल ब्यतीत किये फल खाई।
दासवना बिलखाय कहे प्रभु काहे न मोहि सिखावत भाई ।।४८।।

कंज बिलोचन मोचत बारि उठाय कै वन्धु हिये में लगाई।
कैसे रहें तन पाँवर प्रान बिछोह भये पर जानि न जाई।।
जुद्ध रहो न सिया अब आइहै दासवना किमि औघहिं जाई।
मारहिं बैन जहाँ तहँ लोग त्रिया हित क्यो प्रिय बंधु गँवाई ।।४९।।

घनाक्षरी

भाई को भरोसो जौन तौन न त्रिलोकहू में ऐसो सनबन्ध जग दूसरो न आन है।
मातु पितु सुत आदि त्रिय प्रिय देखि परै समै पर नहिं कोई भाई के समान है।।
साँकरे सहाय करै पेलि रनरिपु मारै बनादास औ सरपै देय प्रानदान है।
बार बार करत बिचार रघुबसमनि भयको हरै जाको न अनुज समान है ।।५०।।

सवैया

काज अकाज भो देवन को भुव भार उतारन को अब ऐहै।
मारिहै को दसकन्धर दारुन साधु गऊ द्विज देव दुखैहै॥
प्रान नही छन भारत राखि है मेरे तजे तन ओध बिलैहै।
दासबना बिगरी सब खेल विभीषन कौन के भौन समैहै॥५१॥

बाँदर भालु अधीर सबै रघुबीर दसा लखि बारहि बारा।
तौ लगि आय गये हनुमान लिये कर बाम बिसाल पहारा॥
लेहु सुखेन सजीवनि चीन्हिहु लायकै सो मुख लछमन डारा।
दूरि भई सब पीर तेही छन हर्षि हिये सिये राम उचारा॥५२॥

बैद दिये पहुँचाय सो लंकहि औ गिरि फेरि तहाँ धरि आये।
पौनहु ते अधिकी कपि बेग मनोगति की उपमा किमि गाये॥
राम के काम को है अवतार धरे तन को फल सो भल पाये।
दासबना सम तान तिहूँ पुर तीनहुँ काल न दूसर जाये॥५३॥

प्रातहि होत लिये गढ घेरि गहे गिरि पादप सृंग पषाना।
पाय हवाल चलो घननाद चढो रथ पै कर लै धनुबाना॥
सग निसाचर को दल भूरि इतै सुत बालि महा बलवाना।
दासबना लरै बीर परस्पर दोऊ उभय दिसि ते हरपाना॥५४॥

तोमर मुद्गर सेल्ह औ सूल चलावहिं सक्ति निसाचर भारी।
चक्र गदा फरसा कर धारि सरासन बान करै सुठि मारी॥
पादप औ गिरि सृंग पषान गहे हठि क्रुद्ध लरैं बनचारी।
दासबना नख आयुध दन्त मनो नरसिंह कला बहुधारी॥५५॥

बानन मारि किये तन जर्जर अंगद नेक न मानत हारी।
सैल बिसाल प्रहार किये यक स्यन्दन सारथी अस्व बिदारी॥
तौ तरु तोरि हने तेहि ऊपर काटि गयो करि जुक्ति सुरारी।
दासबना दोउ बीर भिरे पुनि एकहि एक सकैं नहिं पारी॥५६॥

घनाक्षरी

उडत अकास कही भूतल मे आय लरैं करैं घात विविध सबल दोऊ बीर हैं।
कज्जल पहार हेम मानो महाजुद्ध करैं जहाँ तहाँ बाँदर दैत्य लरैं घीर हैं॥
उदर बिदारि हाथ पगतोरि मुंड फोरैं बोरैं सिंधु माहि देहि एक एक पीर हैं।
आये हनुमान निबुकाय अन्तर्धान भयो बनादास हते सूर सुवन समीर हैं॥५७॥

पुनि चढ़ि स्यंदन पै जनक कुमारि लायो सबहि देखाय सोस काटन लो लाग है।
अंगद औ हनुमान अति हाहाकार किये ऐसो तोहिं उचित न कैसन अभाग है।।
जेठो दसकन्धपूत अवसि सपूत भये सूरबीर धीरन में तेरो जस जाग है।
बनादास ताहू पै न सुने माथ काटि दिये मर्कट औ भालु बस भये अनुराग है।।५८।।

साँझ समै सैन दोऊ गई निज निज ओर बीरन को रघुबीर कृपा दृष्टि हेरे हैं।
भये स्रम बिगत सिया को जब हाल सुनी धीरधुर अतिहि अधीर कहे केरे हैं।।
सारो स्रम मृपा भयो कहत परस्पर अवसि ससोक अवलम्बनहिं नेरे हैं।
बनादास समै तेहि आयो दसकन्ध बन्धु कहिकै प्रसंग सोच सबकी निबेरे हैं।।५९।।

यह मेघनाद माया ऐसो करै नानाविधि वहाँ राम लषन को सोस धनुबान जू।
रावन रजाय राति समै माहिं सिया अग्र धरे जाय कोऊ जातुधानी जातुधान जू।।
कहे दसबदन सँदेस बहु भाँतिन सो अब कहो करें नाहिं काके अभिमानजू।
बनादास बाँदर सयन बहु बहि गई मारि गये दोऊ बन्धु बड़े बलवान जू।।६०।।

सवैया

मानै कहा मम नातो बचौं अब सीय बिलाप करै अति भारी।
काह देखाय किये बिधि काह न धीर धरै मिथिलेस कुमारी।।
जाने निसाचर को कुल नास भयो किन बीच में बात बिगारी।
दासबना यह पाँवर प्रान रहै तन में दहु काह बिचारी।।६१।।

हेम कुरंग किये बिधि जौन औ देवर को कटु बैन कहावा।
भाँति अनेक सहे उत्पात सोई बिधि नैनन याहू देखावा।।
ताहू पै प्रान पयान करें नहिं दासबना अब काह सुनावा।
धीर धरै नहिं कौनिहुँ भाँति से जानत मोर अभागि जियावा।।६२।।

त्रास देखाय कै रावन पास गो तो त्रिजटा तेहि औसर आई।
सीय बिलाप बिलोकि समै तेहि दारुन दाह रही उर छाई।।
मातु मृपामति सोच करै यह राच्छस माया महा अघमाई।
दासबना तुव पाँय को सप्त मृपा सब जानहु मैं सुधि पाई।।६३।।

सीय विषाद हरे त्रिजटा दससीस समा अतिही बिलखाना।
राच्छस सैन्य सिराय गयो कछु काज भयो न कहा विधि ठाना।।
कोपि कहे तबही घननाद लहे बर इष्ट से आपु न जाना।
दासबना निसि बीते बिलोकहु तो दसमौलि महासुखमाना।।६४।।

प्रातहि काल दिये भट हूह समूह बलो मुख भालु सिधाये।
सृंगसिला गिरि औ तरु तोरि न खायुध लंकहि घेरत काये।।

वृष्टि करैं सब एकहि बार ढहावत कंचन भौन सोहाये।
दासबना अतिही उतपात कहाँ उपमा कबि खोजत पाये ॥६५॥

स्यन्दन साजि चढो घननाद धरे बहु आयुध औ धनुबाना।
गौन कियो नभ मारग को,लग्यो मारन मर्कट भालु न जाना॥
सस्त्रन की किये वृष्टि अपार भयो अति क्रोधित तौ हनुमाना।
बालितनय जुत लै गिरि पादप दासबना बिरुझे बलवाना ॥६६॥

भूतल और अकास फिरै नहिं मारन हार कहूँ लखि पावै।
बानन ते तन जर्जर कीन्ह अनेकन माया कि भै उपजावै॥
सोनित मूत्र पुरीष करै झरि मज्जा औ केस कहाँ लौं गनावै।
अस्थि त्वचा बहु पीब कि वृष्टि न भागत राह कहूँ कोउ धावै ॥६७॥

बानन ते सर पंजर कीन्ह बचा कोउ बीर नही दल माही।
अंगद औ हनुमान अनन्त भये अति ब्याकुल बोलि न जाही॥
नील बिभीषन और कपीसन दासबना कोउ धीर धराही।
भाँति अनेक बकै दूर बैन अकासन कोउ अवलोकत ताही ॥६८॥

लागो करै पुनि राम सो जुद्ध चलावत बान भये अहिसारे।
बाँधि लिये छन मे सब अंगन बेदउ जानि सकै महिमारे॥
नाम लिये भवसिंधु सुखात जिन्हैं हित जोगी सरीरन जारे।
दासबना रस जानत सन्त सदा जेहि ओर निगाह कृपा रे। ६९॥

छप्पय

कहाँ बिभीषन पतित अधम खल भ्राता द्रोही।
कहँ अंगद हनुमान निकट नहिं आवत मोही॥
कहाँ द्विविद नल नील बन्धुघती सुग्रीवा।
कहत अमित दुर्बाद प्रगट भो भुज बलसीवा॥
स्ववस किये सारी सयन जामवन्त डाटे तबै।
कह बनादास तब काल सठ मोहिं नाहिं जानै *अबै ॥७०॥*

वृद्ध जानि दिये त्यागि मृत्यु आई अब तोही।
मारे सूल कराल रिच्छ गहि लीन्हे वोही॥
छाँडे अवसि सकोपि लगी घननाद की छाती।
पर्‌यो घूमि महि मुर्छि मर्‌यो ,नाही सुरघाती॥
बर प्रसाद अति प्रबल है बल देखाय तेहि रिच्छपति।
कह बनादास महि मर्दिकै फेंकै लंका दूरि अति ॥७१॥

नारद पठये गरुड़ चल्यो सघहि प्रभु पाही।
हाहाकार अकास बेग कछु बरनि न जाहीं ॥
जनु भूधर जुत पच्छ सपदि आयो हरिपासा।
खायो ब्याल बरुत्य गयो उड़ि बहुरि अकासा ॥
भयो बिगत स्रम रामजू किये सुखो सेना सबै।
कह बनादास घननाद उत जागि लग्यो जग्यहि तबै ॥७२॥

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विपिन खंडे भवदापत्रयतापविभंजनो नाम चतुस्त्रिंसतितमोऽध्यायः ॥३४॥

छप्पय

कुंभकर्न पहं जाय जगावन लाग्यो रावन।
बर्जाह बाजने अमित मनहुँ गर्जहि घन सावन ॥
भारी भारी मल्ल अंग मर्दहिं बहु भाती।
करें अमित पै सर्म नेक नहि ताहि पोसाती ॥
साठि सहस हाथी जबै चढ़ि दाबे यक बार है।
कह बनादास तबही उठो महाबोर बरियार है ॥७३॥

रावन दसा विलोकि कह्यो तबही बिलखाहीं।
बंधु कहै केहि हेतु गयो तब गात सुखाही ॥
आदि अन्त सब कथा कहे रावन तेहि पाहीं।
कुम्भकर्न सुनि कहे भाय कोन्हे भल नाहीं ॥
विस्वम्भर सों द्रोह करि जगत मातु आने हरी।
कह बनादास यह मति उदै पुनि चाहत पूरी परी ॥७४॥

प्रथम जगाये नाहि किये अब काह जगाई।
नारद मुनि दिये ज्ञात तोहिं कह ते समुझाई ॥
तबही रावन कहे मंत्रहित नाहि उठावा।
सबल सैन जो लंक भालु मर्कटन नसावा ॥
स्रद्धा होय तो जुद्ध करु नहि सोवं पुनि जायकै।
कह बनादास सुनतै बचन जगो वोर रस आयकै ॥७५॥

बहुरो राम सरूप हृदै करि कै दृढ़ ध्याना।
मगन भयो भरि दंड नही फल अनुसधाना ॥

भेंटु अंक भरि मोहिं जाय देखौं रघुनाथा।
ध्यान अगम जोगीस वेद गावहिं गुन गाथा॥
रावन माँगे ताहि छन मद औ महिष अपार है।
कह बनादास लेखा करै मानौ निपट गवाँर है॥७६॥

महिष खाय मदपान किये भो मत्त अतीवा।
चल्यो गर्जि गढ़ त्यागि अकेला भुज बलसीवा॥
वहाँ बिभीषन कहे स्याम सुम्मेरु समाना।
कुम्भकर्न रन चल्यो नाथ अतिसय बलवाना॥
मिल्यो अग्र तेहि आय कै कहे सकल परसंग है।
कह बनादास मारे चरन किये मान मम भग है॥७७॥

कहत परम हित बचन कीन्ह सो अवसि अनीती।
तेहि गलानि ते भई रामपद पंकज प्रीती॥
त्राहि त्राहि करि सरन पर्‌यो प्रभु चरनन आई।
दीन जानि रघुबीर मोहिं निज दिसि अपनाई॥
धन्य बिभीषन धन्य पुनि निस्चर कुल भूषन भयो।
कह बनादास रघुपति सरन आये सब दूषन गयो॥७८॥

रावन भो बस काल सुनै किमि तोर सिखावा।
करि कुल को संहार मरिहि तब असि मति आवा॥
तात सदा छल छोड़ि किहे उर रघुपति सेवकाई।
काम क्रोध मद लोभ राग औ द्वेष विहाई॥
मत्सर औ अभिमान तजि आस बासना परि हर्‌यो।
कह बनादास इमि हरि भजै सो जीवत भव निधि तर्‌यो॥७९॥

जाहु तात मोहिं भेंटि काल आयो अब मोरा।
ह्वैहैं मुठि जग बिदित सुजस घटि है नहिं तोरा॥
मैं हूँ सन्मुख मरब राम बानन के लागे।
जेहि लगि कोटिन जतन तजन तन देखिहौ आगे॥
पुनि भेंटे दोऊ बन्धु तब बहुरि बिभीषन इत चले।
कह बनादास रिपु अनुज को अवमि मागि जागो भले॥८०॥

चलत बिभीषन सग भालु मर्कट सब धाये।
सिला सृंग पाषान बिटप गिरि तापर नाये॥

सो मानै कछु नाहिं चला सन्मुख बलवाना।
जनु सेवा सब करैं थके पर कपि विधि नाना।।
कोटि कोटि मर्दै गरद कोटि कोटि अंगन मले।
कह बनादास उपमा कहाँ कुंभकर्न रिपु दल दले।।८१।।

कोटि कोटि गहि कीस खाय जावैं एक बारा।
स्रवन नासिका बाट निकसि मार्गहि बरियारा।।
नखन बिदारहिं गात बज्र तन बेधन कोई।
भागे मर्कट भालु नाहिं कोउ सन्मुख होई।।
सुनि निसिचर धाये सबल कुंभकर्न रिपु दल दल्यो।
कह बनादास इत कोपि कै जामवन्त आतुर चल्यो।।८२।।

कीन्हे चरन प्रहार मुष्टिका बहु उरमारी।
भिरे अतिहि परचारि अवसि माने नहिं हारी।।
मल्लजुद्ध तब भई जुगल गिरि असित समाना।
दीन्हे कछु पैशर्म रिच्छपति सुठि बलवाना।।
फेंकि दिये कन्दुक सरिस जामवन्त भूतल पर्‌यो।
कह बनादास कपिराज तब देखि हृदय क्रोधहि कर्‌यो।।८३।।

हने मुष्टिका लात ताहि कछु नाहिं बसाना।
तकिया तूल समान कांख दाबे बलवाना।।
लंका चलो असंक नासिका काटि उड़ाने।
परचारे सुग्रीव समर से जात पराने।।
कटी घ्रान सो जानि कै फिर्‌यो आस जीवन तजे।
कह बनादास सन्मुख चल्यो राम चाप सायक सजे।।८४।।

नहिं कोऊ समुहाय खाय सो काल समाना।
हिय हारे कपि भालु सकल उर को प्रभु जाना।।
सन्मुख रघुपति ओर चला गर्जत अति भारी।
सुठि आनन फैलाय लच्छ सर तब हरि मारी।।
सकल बान मुख में भरे चल्यो काल तरकस जथा।
कह बनादास कवि को कहै अकथनीयता को कथा।।८५।।

राम हने पुनि बान भिन्न धड़ सिर करि दीन्हा।
धायो रुंड प्रचंड खंड जुग तब सो कीन्हा।।

धसकि मसकि गै धरा गिरत डोली सुठि धरनी।
मत्त नाग चढि जाय जवनि विधि ते लघु तरनी ।।
हनीदुन्दुभी देवगन सुमन वृष्टि प्रभु पर करे।
कह बनादास सुर स्वारथी जयति राम तब उच्चरे ।।८६।

ताको तेज समान राम आनन मे धाई।
सहसा लखे न सर्ब ईस गति जानि न जाई ।।
सुखी भालु औ कीस पीसि गे गिरत करोरी।
पर्‌यो जवै धर धरनि वरनि सक सोक बिकोरी ।।
सुनि रावन व्याकुल अमित भयो होन मनि फनि जथा।
कह बनादास घननाद की कही बिभीपन तव कथा ।।८७।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभजनोनाम पर्चत्रिसतितमोऽध्यायः ।।३५।।

छप्पय

करै जज्ञ घननाद सुभट पठइय रघुवीरा।
सिद्धि भये पर अजित अवसि ह्वाइहि रनधीरा ।।
अगद औ हनुमान तवै बोल रघुनाथा।
द्विबिद नील नल आदि किये लछमन के साथा ।।
जटाजूट कटि तून कसि अतिसय रोप बढाय कै।
कह बनादास सवहिं चले राम चरन सिरनाय कै ।।८८।।

कुडलिया

देवी जहां निकुम्भिला अति प्रसिद्ध अस्थान।
सिद्धि भूमि सो अवसि कै रावन सुत बलवान ।।
रावन सुत बलवान गयो तहँ मत्र दृढाई।
परै जज्ञ जो पूरि सत्रु जीतौ समुदाई ।।
सामग्री बहु भांति लैबना दास हरपान।
देवी जहां निकुम्भिला अति प्रसिद्ध अस्थान ।।८६।।

छप्पय

जाय दीख मख करत तहां रावन सुत वैसा।
धनुप बानजुत सक्ति देत आहुति मद भैसा ।।

कह अंगद हनुमान विमुख रन ते इत आयो।
प्रान लोभ के हेत जज्ञ में मन सुठि लायो॥
ये कायर लच्छन सबै सुनत लिये धनुवान है।
कह बनादास मुष्टिका हनि पवनसुवन बलवान है॥९०॥

लखराय पद टेकि कोप करि सक्ति चलावा।
पकरि लिये हनुमान तूरिकै भूमि बहावा॥
लछमन मारे बान एकसत उर भुज माहीं।
महासूर बरियार ब्यथा माने कछु नाहीं॥
वहुरि सूल मारे सँभरि काटे लछमन बीर हैं।
कह बनादास कृत परस्पर जुद्ध महा रनधोर हैं॥९१॥

मारे दस दस बान सकल सुभटन उर माहीं।
द्विविद नील हनुमन्त वचे अंगद कोउ नाहीं॥
तब तरु एक उपारि पवनसुत वेगि प्रहारा।
खंड खंड सो किये वहुरि कपि तेहि ललकारा॥
मल्ल जुद्ध दोऊ भिरे एक एक नहिं पारते।
कह बनादास माखे अवसि नेक नहीं मन हारते॥९२॥

कहुँ भूतल भट लरहिं कतहुँ पुनि गगन उड़ाहीं।
दोऊ प्रवल प्रचंड लहत उपमा कवि नाहीं॥
करिमाया घननाद निवुकि गो वहुरि अकासा।
पुनि प्रगटो कटु कहत लषन उर क्रोध प्रकासा॥
मारे बान-सहस्र जब तबहि मूर्च्छि भूतल पर्‌यो।
कह बनादास पुनि सँभरिकै बीर लषन सों रन जुर्‌यो॥९३॥

रहे निसाचर संग कहाँ लगि नाम गनाई।
गने लोग रनधीर जहाँ तहँ परी लराई॥
मल्ल जुद्ध कहुँ करें सिला गिरि सृंगन मारें।
नखन दसन कपि क्रुद्ध निसाचर उदर बिदारें॥
द्विविद नील नल पवनसुत अंगदादि मर्कट सबल।
निज निज जोरी जानिकै अतिहीं रनमाते सवल॥९४॥

सक्ति सूल तरवारि गदा मुद्गर भट मारें।
तोमर परिघ प्रचंड एक एकन पर डारें॥

भिंदिपाल कोउ लिये कोऊ परसा कर भारी ।
जातुधान सुठि सूर नेक नहिं मानत हारी ।।
कटकटाहिं मर्कट बिकट सिंहनाद निसिचर करैं ।
कह बनादास उत्साह जुत निज निज जयकारन लरैं ।।६५।।

मारे सत सर कोपि बहुरि लछमन उर माही ।
मुर्च्छि पर्‌यो प्रभु बन्धु रही सुधि छन यक नाही ।।
कीन्हे अति उर कोप रक्त लोचन ह्वै आये ।
पहुँचि गयो अब काल याहि मैं बहुत खेलाये ।।
मारे चालिस बान तब चले फुफकरत ब्याल से ।
कह बनादास सिर हृदय भुज लागे मानहुँ काल से ।।६६।।

राम कहत तन तज्यो पर्‌यो सो भूतल माही ।
रुंडसीस भुज बिलग देय केहि पटतर ताही ।।
कह अंगद हनुमान धन्य दसमुख सुत बीरा ।
सुमन वृष्टि नभदेव जयति जय गिरा गँभीरा ।।
जय अनन्त जगदीस कहि सुर सावक पालक सदा ।
कह बनादास खल बन अनल बार बार यहि बिधि बदा ।।६७।।

जयति रूप बल तेज बुद्धि गुन ज्ञान निधाना ।
सूर धीर बरबीर बृहद विद्या धनु बाना ।।
जयति जक्त आधार पार मन बुद्धि अजीता ।
जय नासक घननाद राम पद बन्दित सीता ।।
जयति ज्वाल माला बमन समन करन तिहुँलोक के ।
कह बनादास पालक बिरद जनमन करन बिसोक के ।।६८।।

जयति जतिन महँ रेख राज रिषि विस्व विरागी ।
इन्द्रीजीत पुनीत जयति रघुपति अनुरागी ।।
रामानुज रनधीर धर्मधुर भक्ति ज्ञान निधि ।
जयति देवप्रद सुखद वाक्य बिद कुसल सकल बिधि ।।
जयति परसुधर गर्व हर जै करुनाकर बिसद जस ।
कह बनादास जन दुखदरन जै प्रभु सेवक एकरस ।।६९।।

गे सुर अस्तुति भापि सुना सुत बध लंकेसा ।
पर्‌यो भूमि भहराय कहै को अमित कलेसा ।।

जिमि करि वर कर हीन दीन जलचर बिन पानी।
ज्यों मनि रहित भुजंग दसा नहिं जाति बखानी॥
रुदन करत धुनि माथ दसमय तनुजादिक निसिचरी।
कह बनादास पुरजन बदै रोय मृषा सीता हरी॥१००॥

सब खोये दस बदन देहिं गारी बिलखाई।
प्रानरहित जिमि देह भई रावन की नाई॥
अवसर सम करि क्रिया तिलांजलि सबकोउ दीन्हा।
हा सुत रत पितु वाक्य सोक दसमुख सुठि कीन्हा॥
सबहिं बुझावत धीर हित जिमि नभ घटा बिलात है।
कह बनादास तिय भ्रात सुत उपजत तिमि न सिजात है॥१॥

इत लछमन जू आय चरन रघुपति के बन्दे।
मेघनाद वध सुनत कीस अरु भालु अनन्दे॥
कृपादृष्टि प्रभु दीख दूरि भै सबकी पीरा।
पाये अति बिस्राम लषन आदिक सब बीरा॥
सुभट बोलि दसमौलि उत कहत प्रात कीजै कहा।
कह बनादास अब लखि परत भार आय निज सिर रहा॥२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे बिपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम षट्त्रिंसतितमोऽध्यायः॥३६॥

छप्पय

त्रिसिरा और प्रहस्त महोदर अति रनधीरा।
दुर्मुख प्रबल प्रताप चारि भट लीन्हें बीरा॥
होतै प्रातःकाल साजि सेना सब धाये।
मायाबिद बरिबंड भालु मर्कट इत आये॥
उत जय रावन करैं इतै जयति रघुबीर जू।
निज स्वामी जयकार ने ममता तजे सरीर जू॥३॥

भिरे प्रचारि प्रचारि सकल निज जोटत काई।
करहिं परस्पर मार कहाँ उपमा कवि पाई॥
जुरे महोदर कीस पतिअंगद और प्रहस्त है।
कह बनादास हनुमान अरु त्रिसिरा अति रन मस्त है॥४॥

भिन्दिपाल अरु गदा फरस भट करहिं प्रहारा।
तोमर मुद्गर परिघ सक्ति सूलन गहि मारा॥
करहिं सिंह धननाद निसाचर प्रबल प्रतापी।
कटकटाहिं अतिकोस अधर दसनन सो चापी॥
घनुपवान असिघात कृत एक एक नहिं पार ही।
कह बनानास दुर्मुख दनुज द्विविद नेक नहिं हारही।५।

सिला सृंगतरु तोरि बलीमुख अतिसय मारैं।
मुखते हनहिं निसान दसन नख उदर विदारैं॥
पर्बत करहिं प्रहार हजारन एकहिं बारा।
कहँ लगि संख्या करैं होहिं निसिचर खै कारा॥
तोरि हाथ पग महि पटकि मुड मुड ते फोरही।
कह बनादास कपि सबल सुठि सिन्धु माँहि गहि बोरही।६॥

त्रिसिरा अरु हनुमान लरहिं नभ मारग माही।
हटै न एकै एक करैं छल बल गहि बाही॥
हने मुष्टिका कीस दनुज तब भूतल आयो।
भो मुर्च्छित छन एक बहुरि सो गदा चलायो॥
कछुक क्षुब्यो मारुतसुवन पुनि प्रचारि दोऊ लरैं।
कह बनादास जयराम कहि जयति लषन कपि उच्चरैं॥७॥

अंगद और प्रहस्त समर महँ अवसि बिरुद्धे।
बालिसुवन दसकन्ध तनय नानाविधि क्रुद्धे॥
मार्‌यो परिघ प्रचंड बहुरि अंगद की छाती।
गयो अवनि मुर्च्छाय उठ्‌यो मर्कट उतपाती॥
अति बिसाल तरु तोरि कै मारे बालिकुमार है।
कह बनादास निसिचर गिर्‌यो रही न सुद्धि सँभार है॥८॥

करहिं युद्ध अतिक्रुद्ध द्विविद दुर्मुख बलवाना।
हटै न एकै एक मारु कीन्हे घमसाना॥
मारे सूल प्रचंड कीस मुर्च्छित महि परेऊ।
बहुरो चोट सँभारि सबल उठिकै सुठि भिरेऊ॥
हने एक पापन पुनि घुमि निसाचर महि परा।
कह बनादास गहि टाँग तेहि पटक्यो भट दारुन धरा॥९॥

लरहिं प्रचारि प्रचारि महोदर अरु सुग्रीवा।
प्रति भट समर जुझार दोऊ अति भुज बल सीवा॥

हारे हटैं न एक कटैं नाना भट मारे।
सुठि मुखिया दसकन्ध सबल घननाद समारे॥
हने सक्ति सुग्रीव पर पकरि लिये कपिराज है।
कह बनादास मारे बहुरि तेहि छाती जनु गाज है॥१०॥

मुर्च्छि महोदर पर्‌यो रही कुछ सुधि न सँभारा।
जागे पुनि उठि लर्‌यो परिघ छाती गहिमारा॥
लरखराय कपिराज नही भूतल में आयो।
मल्लजुद्ध दोउ भिरे एक एकहि न चलायो॥
हने एक मुष्टिका कपि बहुरि महोदर महि परा।
कह बनादास निसिचर सुभट लरहिं परस्पर बनचरा॥११॥

क्रुद्धे मर्कट भालु लरहिं जनु काल समाना।
अन्तावरि गर डारि उदर फारहिं बलवाना॥
भुज उपारि पग तोरि रुंड मय मेदिनि पाटे।
प्रबल राम परताप जातुधानन सुठि डाटे॥
महि पटकैं निसिचर अमित करत घोर चिक्कार है।
कह बनादास रघुबंसमनि जय बोलत बहुवार है॥१२॥

छोजैं निसिचर सदा भालु मर्कट भटगर्जहिं।
कहि रावन जय जयति जातुधानौ अति तर्जहिं॥
मल्लजुद्ध कोउ करैं पटकि महि गगन उड़ाहीं।
कज्जल कनक सुमेरु मनहुँ सोभा सरसाहीं॥
भयो अदृस्य महोदर सबल देखि कपि सैन जब।
कह बनादास दिन निसि किये सूझि परै नहिं नयन तब॥१३॥

करैं वृष्टि पापान रक्त मज्जा नस छाला।
गाज परै नभ गर्जि कोस भे भालु बेहाला॥
विष्ठा अरु नख केस अस्थि चहुँ दिसि झरि लाई।
त्राहि त्राहि कपि करैं सबल निसिचर समुदाई॥
भगे बलीमुख भर्भरिकै राम लिये धनु बान जू।
वह बनादास ब्याकुल लखे सहजहि कृपानिधान जू॥१४॥

नासे माया सकल एक ही बान खरारी।
पाय अमित अवकास सबल धाये बनचारी॥

अंगद हने प्रहस्त महोदर कपिपति मारा।
द्विबिद कुमुद करि घात जयति रघुबीर उचारा॥
पवनतनय त्रिसिरा हते अपर सैन सब बीर है।
कह बनादास दसमौलि सुनि उर आने अतिपीर है॥१५॥

सांझ समय रघुनाथ कीन्ह सबको स्रम नासा।
पाय कृपा परसाद अवसि तन तेज प्रकासा॥
रावन कहे प्रचारि अमित सेना सहारी।
अतिसय प्रबल प्रचंड क्रोध कीन्हे असुरारी॥
मारे मर्कट भालु जेहि को गनि है तेहि बीर महँ।
कह बनादास कीन्ह बयर निज भुज बल सन्देह कहँ॥१६॥

दण्डक

सुभट हकराय दसबदन बोलत भयो लोभ जेहि प्रान सद्यहि परावै।
किये भुजबल बयर उतर देहौं रिपुहि जौन रन भूमि में भागि जावै॥
सबल सुठि दैत्य गाजत गरूरे बचन रुंड मैं मुंड मेदिनि कराही।
काल सन्मुख लरें परें पाछे न पग छोडि रन अवनि नहिं सपन जाही॥
साजि स्यन्दन सुभग अस्व रबि हैं लजित किंकिनी कलित बर घंट बाजे।
ध्वजा फहरात घहरात चाका अमित हेरि उपमा अवसि सुकबि लाजे॥
चर्म असि कवच धनुबान धारन किये सूल अरु सक्ति फरसा सुधारे।
तून कटि कूंडि दस सिरन सो भाल सो जक्त बिजयी समर सूर सारे॥
परिघ परचंड तोमर धरे अस्त्र बहु सस्त्र विद्या सबल समर धीरा।
नाम लै लै सुभट सकल सन्मानि कै दसहु मुख बदत बानी गँभीरा॥
अस्व असवार कोटिन गजाधिप चले स्यन्दनारूढ सुम्भार नाही।
सुतुर के तार को पार जावै बरनि चढे खच्चरन रनभूमि जाही॥
बजी धनि दुन्दुभी ढोलन फेरि बहु पनव डिमिडिमी बाजा घनेरे।
तुरंही बीन सिंहा सबद मारु धरु मिलत उपमा नही कबिन हेरे॥
साजि चतुरंगिनी सैन सावन घटा चलो रावन कवन पार पावैं।
बनादास रनमत्त गाजे निकर बीर बर धीर धरु नाम कहँ लगि गनावैं॥१७॥

निकसि गढ गवन कृत निसा जनु दिनहिं भै गरद असमान दिन मनि दुराने।
सिंह धननाद गर्जहिं निसाचर प्रबल आव दसमौलि कपि भालु जाने॥
नील नल कुमुद अरु पनस कपि केसरी द्विबिद भट बिपुल अरु जाम्बवाना।
सबल सुग्रीव गवाच्छ सूझे न कपि अंगदादिक अमित हनोमाना॥

हनहिं नीसान मुखसिला गिरितरु गहे फोरि पर्वत करहिं बाट बीरा।
दसननख अस्त्र सर्वत्र कोपे सुभट चले दैहू हरन परम धीरा॥
साजि धनुबान कसि जटा कटि तूनीर बर अरुन अरविन्द मुख अवसिराते।
तेज नीधान बलवान रामा अनुज सूर सिरमौलि रस वीर माते॥
रेख भट प्रथम रिपिराज विजयी बरद जीत गो गन जतिन माहिं लेखा।
सकहिं सारद न गुन बरनि नारद अमित अगम कबि कुलहि अवतार सेखा॥
राम पदकंज रज माल भूषित तिलक सजुगह्व लखत कपि भालु मारी।
भिरे दल दोय जोड़ी जयाजोग लखि ललकि ललकारि नहिं लहत हारी॥
सूर सरसक्ति तोमर परिघघात कृत गदा असिपरस निसिचर बरुत्था।
बिटप पाषान गिरि सृंग मर्कट हनहिं गनहिं कालहिं नहीं जुत्य जुत्था॥
हाथ पग तोरि फारहिं उदर वीर वर पटकि महि मर्दि सामुद्र डारैं।
घोर चिक्कार कै घुमि निसिचर परहिं नखन कपि भालु आनन विदारैं॥
देखि दल खीन बल पीन रावन बृहद बान बर्षा किये बीस बाहीं।
वनादास भे बिकल अति भालु मर्कट सबल कहहिं जै राम जै लच्छन पाहीं॥१८॥

निलज कामारु कपि भालु मैं काल तब रहे खोजत मिले आजु आछे।
कोपि रघुपति अनुज बान बर्षा किये रिच्छ मर्कटन करि दीन पाछे॥
सरन से मारि रथ तोपि रावन लिये प्रान अवसेष दसकन्ध बीरा।
बीस भुज सीस उर सहित मारत भये एक ही बार में सहस तीरा॥
खंडि रथ सारथी अस्व मारे चहू मुच्छि दसमौलि पर्यो अवनि माहीं।
देह जर्जर भई दीप्ति हत ह्वै गई रह्यो उरमाहिं कछु होस नाहीं॥
अमित सरमारि जर्जर निसाचर किये रुधिर की धार पटतरन आवै।
असित गिरि सृंग ते गेरु पर वाह जनु बिटप किंनुक कछुक लच्छ पावै॥
विकल दल दैत्य घाले घनेरे सुभट रुधिर भरि गाड़ जहँ तहाँ पूरी।
परत उड़ि धूरि पट अरुन ऊपर मनहुँ सघन नीहार फूहार रूरी॥
उड़ि नभ गीध सिर भुजा पग लै भगै छीनि एकन ते लै एक खाहीं।
खाहिं हूहाहिं जम्बुक जहाँ तहँ घने चील्ह चंगुल गहे दनुज बाहीं॥
प्रबल संग्राम लछमन समय तेहि किये जागि दससीस रथ अपरराजे।
बीसहू बाहु धनुबान बर्षा किये पाय बल जहाँ तहँ दैत्य गाजे॥
लषन रिपु विसिख सब काटि रज सम किये क्रोध दसबदन तबहीं सँभारा।
वनादास बर बीर घातिनी लै सक्ति सो सोधि लछमन हृदै माँझ मारा॥१९॥

मुच्छि भूतल पार्यो भूमि धर समय तेहि आय दसबदन बल करि उठावा।
जक्त आधार महि भार सिर उठै किमि ताहि अवसर सुवन पवन आवा॥
लषन उठाय लै गयो रघुनाथ पहँ देखि दसकन्ध आस्चर्य खाये।
बन्धु अवलोकि रघुवीर अरविन्द दृग समय तेहि नीर गम्भीर आये॥

काल के काल बेहाल कैसे परै उठहु किन तात मम मानि बानी।
लषन बैठे सँभरि बचन सुनि राम के देखि आनन्द सारगपानी॥
जगो रस वीर धनु तीर लै पुनि चले बन्दि रघुपति चरन वीर बाँके।
सँग कपि भालु सेना भयंकर चली अमित उर कोप अरि अनी ताके॥
तोरि तरु सिला गिरि सृग पर्वत हनहि गर्महि नहिं कालहू समर धीरा।
जयति जै राम जै लछमन कहि गाज ते दिये दल दैत्य महँ अमित पीरा॥
सक्ति सरगदा परसा प्रहारहिं सुभट सूल असि परिघ मारत घनेरे।
जयति दसकन्ध कहि बीर बिरुझे रनहिं सूर बर दैत्य नहिं बदन फेरे॥
बान झरि बीस भुज करै रावन सबल इतै रघुपति अनुज कोप भारी।
लरहिं सुठि परस्पर प्रबल परताप अति एक ही एक नहिं लहत हारी॥
गगन बेमान चढ़ि देवरन निरख ते बदत बानी जयति राम बन्वो।
बिस्व उपकार अवतार रक्षक सुरन दीन उद्धार आनन्द सिन्धो॥
सूल परचड पुनि कोपि रावन हने लषन सो काटि रथ सरन पाटे।
सभरु भुज बीस अब अवसि मारो चहत लषन ललकारि जिमि सिंह डाटे॥
बान सत सत हने तुरय अरु सारथी सहस दस तीर दससीस मारे।
पर्यो महि मुर्च्छि तनु सकल जर्जर भयो सूत रथ राखि लका सिधारे॥
आय लछमन जहाँ रहे कोसल धनी कृपा दृग कोर सब ओर हेरे।
बनादास स्रम रहित भे भालु मर्कट सकल रही तन पीर नहिं काहु केरे॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम सप्तत्रिंसतितमोऽध्याय. ॥३७॥

दण्डक

जागि निसि अर्द्ध दसमौलि सोचन लगो बोलि बरबीर यह मत्र कीन्हा।
कुमुख मकराच्छ आदिक बृहद जे सुभट करहु रन काल्हि उपदेस दीन्हा॥
आपु गढ मध्य लाग्यो करन अजय मख रातिहि समय तहँ जाय बैसा।
कुड वर हवन रचि धरे सामग्रिहि करै आहुति रुधिर मास भैसा॥
होत ही प्रात चले भालु मर्कट सुभट सिला तरु तोरि गिरि सिखर लीन्हे।
कुमुख मकराच्छ लायक सुभट सकल जे सैन चतुरगिनी सजग कीन्हे॥
नील नल पवनसुत अगदादि सबल भिरे रन मध्य जय राम हेता।
हनहिं निसिचर अमित स्रमित घोखेहु नही पवननन्दन अवसि जुद्ध बेता॥
तोरि गज मुड हने झुड झुडन सुभट हाथ पग नोचि सामुद्र डारे।
गाल को फारि बहु उदर चीरत नखन अवनि मे पटकि ललकारि मारे॥

दैत्य दारुन हनत भालु मर्कट घने जयति रावन बदत समर घोरा।
राम जै लषन कहि वली मुख गाज ते वाज ते मुरुहिं नौसान बीरा॥
किये खै कार राच्छस अनो भाँति बहु तबै रिपु बन्धु कह राम पाहीं।
बनादास दसमौलि कृत अजय मख मध्य गढ़ भये पर नहिं जीति जाहीं॥२०॥

छप्पय

पठवहु सुभट सरोष करहिं सद्यहि मख खीसा।
तबही करि उर कोप समर आइहि दससीसा॥
अंगद अरु हनुमान तबहिं बोले रघुनाथा।
जाय करहु मख खीस कीस अगनित लै साथा॥
चल्यो बालिनन्दन तबै पवनतनय सिरनायकै।
कह बनादास गढ़लंक महँ बरबस पहुँचे जायकै॥२१॥

खोजत खोजत गये जहाँ बैठो दसकन्धर।
जज्ञथली विधिमली भ्रष्ट लागे करै बन्दर॥
आयो रनते भागि यहाँ बक ध्यान लगाया।
गयो सकल परिवार प्रान हित निलज बेहाया॥
मर्म बचन बहुबिधि कहैं करै एक नहिं कान जू।
कह बनादास स्वारथ निरत रावन परम सुजान जू॥२२॥

करहिं अनेकन जत्न उठै नहिं बोलै रावन।
कारज साधन हेत खोरि माने नहिं बावन॥
कार्यसिद्धि जो चहै अनत पुनि करै न दिष्टी।
होवै मृतक समान सकल दिसि देवै पिष्टी॥
करहिं मूत्र मल कीस बहु नखन बिदारैं गात हैं।
कह बनादास सुम्मेरु से अविचल नहिं अकुलात हैं॥२३॥

अगद अरु हनुमान हले तेहि मन्दिर माही।
मय तनुजा गहि केस चले लै रावन पाहीं॥
तेहि आगे करि कीस हार मुक्ताहल तोरे।
नोचहिं कंचुकि चीर लाज बस अतिसय सोरे॥
रुदन करत मन्दोदरी सुतन भयो घननाद है।
कह बनादास दसमुख अछत भई दसा बरबाद है॥२४॥

तबही अवसि सकोपि उठा दसकन्धर बीरा।
हने मुष्टिका एक हृदै मह सुवन समीरा॥

गिर्यो धरनि मुरझायन संभर न पायो सोई।
नष्ट भ्रष्ट करि जज्ञ कीस गवने सब कोई॥
कोप्यो लंकेस्वर तबै करिहौ रिपु की नास है।
कह बनादास उर मध्य मे रही न जीवनि आस है॥२५॥

सजी सेन चतुरंग नाम लै बीर हँकारे।
महारथी गज अधिप तुरयपति लहै को पारे॥
पदचर संख्या नास्ति लिये आयुध बहु बीरा।
सक्ति सूल असि चर्म गदा परसा धनु तीरा॥
भिंदिपाल मुद्गर गहे तोमर परिघ प्रचंड है।
कह बनादास रावन सदृस सुभट अमित बरिबंड है॥२६॥

रथ चाका घहरात विपुल फहरात पताके।
गज घंटा के सोर मेघ नहिं पटतर जाके॥
बाजे पन वन फीरि भेरि नाना सहनाई।
ढोल जुझाऊ सब्द सबल डिमिडिमी सोहाई॥
बाजत सिंहा तुरही कान दीन नहिं जात है।
कह बनादास कायर कँपत सुर हिये हरषात है॥२७॥

सुमिरि हृदय अज ईस चढ़ो रथ रावन जबहीं।
आयुध करते खसत अमित असगुन भे तबही॥
गनै नही वस काल मृत्यु सिर ऊपर आई।
चल्यो निसान बजाय कटक कछु बरनि न जाई॥
जनु कज्जल आँधी चली सावन घटा समान है।
कह बनादास बहुविधि करै बीर बाद बलवान. है॥२८॥

गीध चील्ह नभ उड़ै बैठि दससीसन जाही।
महासूर दसमौलि ताहि मानै कछु नाही॥
आय गयो रनखेत अतिहि उत्साह बढ़ाये।
कटकटाय मुठि कोपि भालु मर्कट बहु धाये॥
पादप सृंग पषान गिरि नख मुख आयुध अति सबल।
कह बनादास जै राम कहि जै लछमन कपिपति प्रबल॥२९॥

जोरी जोरी देखि भिरे दोऊ दिसि बीरा।
निसिचर मर्कट भालु सबल अतिसय रनधीरा॥

नखन बिदारैं उदर पटकि महि कर पग तोरहि ।
अन्तावरि गरमेलि मुंड मुंडन ते फोरहि ॥
घुमि घुमि निसिचर परहि करहि घोर चिक्कार है ।
कह बनादास पटतर कहाँ कबिन लहै कहि पार है ॥३०॥

मारहि परिघ प्रचंड भिदिपालन गहि जोघा ।
तोमर मुद्गर गदा हनहि नाना करि क्रोघा ॥
परसा सूल कृपान सक्ति अतिवानन मारैं ।
कहि दसकन्धर जयति खपहि निसिचर नहि हारैं ॥
कीस भालु अगनित हनहि गनहि न काल समान जू ।
कह बनादास वर्षा किये रावन बहु बिधि बान जू ॥३१॥

अति बिसाल गिरि एक आय हनुमान प्रहारे ।
रथ सारथी निपाति लात दसमुख उर मारे ॥
मुच्छि पर्यो दसमौलि बहुरि निज रूप सँभारा ।
हने सूल हनुमान पर्यो महि पौनकुमारा ॥
मारुतसुत पीछे किये आय जुरे सुग्रीव है ।
कह बनादास कपि दनुजपति दोऊ अति बलसींव है ॥३२॥

कहुँ भूतल कहुँ गगन एक एकै नहि पारे ।
कनक असित गिरि लरहि मनहुँ निज रूप सँभारैं ॥
करत मुष्टिका घात लात बहु गात बचावैं ।
नाना चोट चलाय एक एकन विच लावैं ॥
हन्यो मुष्टिका माँझ उर मुच्छि पर्यो दसग्रीव है ।
कह बनादास मारुत सुवन लायो भुजबल सींव है ॥३३॥

कृपादृष्टि प्रभु लखे भये हनुमान सुखारे ।
घायो काल समान कोपि बहु निसिचर मारे ॥
मूर्च्छागत दसमौलि सूत तबही रथ आना ।
तापर ह्वै आरूढ़ मूढ़ बरषे सुठि बाना ॥
मारे मर्कट भालु बहु जनु सावन की झरि किये ।
कह बनादास तेहि समय महँ कीस सबल हारे हिये ॥३४॥

बिच लाये सब सेन समर महँ रावन गाजा ।
अंगद अरु हनुमान कीसपति पाये लाजा ॥

फेरैं सुभट न टेरि नही कोउ सुनत प्रचारे।
सेन सहित दसमौलि सजुग रन भूमि मँझारे॥
सैल उपारे बालिसुत रथ सारथि चूरन करे।
कह बनादास उर मुष्टिका हनेउ दनुज भूतल परे॥३५॥

बहुरि उठो दसबदन भिरे दोऊ बर जोरा।
रावन औ सुत बालि कहै काको को थोरा॥
सेन हनै हनुमान मनहुँ नर हरि अवतारा।
बिचली मर्कट कटक अरे दुइ समर जुझारा॥
लातन दाँतन मुष्टिकन मारत अंगद बीर है।
कह बनादास दसमुखबली हटत न अति रनधीर है॥३६॥

चोखे चचल चारि भानु हैं निन्दक बाजी।
सारथि औ रथ दिव्य पुरन्दर भेजे साजी॥
आयो रघुपति पास देखि सब कोउ सुख माना।
कपिनायक लकेस रिच्छपति परम सुजाना॥
करि मुच्छित दसकन्ध को हनोमान बहु दैत्य दलि।
कह बनादास दोउ बीर तब आये रघुपति निकट चलि॥३७॥

जटाजूट सिर कसे तून कटि मुनि पट बाँधे।
रघुपति धरम धुरीन विप्र चरनहिं आराधे॥
भालु कीस दल मध्य अनूपम सोभा पाये।
अवलोकहिं चहुँ ओर भाग्य जेहि जन्म निकाये॥
स्यामगात पकज नयन अरुन अवसि भ्रूवक भो।
कह बनादास सुर साधु द्विज गो महि अवसि असक भो॥३८॥

राम रोप उर जयो दसौ द्विग्गज हिय हल्यो।
डग्यो मेरु हिमवान सातहू सिंधु उछल्यो॥
लोकपाल अहतक चहूँदिसि मेदिनि दलक्यो।
सर सरिता नद नार कूप वापी जल फलक्यो॥
चौंके सुरपति सम्भु बिधि कमठ पीठ अहि रद रह्यो।
कह बनादास को धीर धर जबही प्रभु कर धनु गह्यो॥३९॥

कीन्हे जबहिं टकोर बधिर रिपु दल चहुँओरा।
दसकन्धर हिय हृदय भयो सेना रिपु सोरा॥

सबल कीस औ भालु लिये गिरि तरु करि हूहा।
सिखर सिला गहि चले अंगदादिक कपि जूहा॥
चढ़े राम स्यन्दन जबै सिव गुरुपद .सिर नायऊ।
कह बनादास नभ देवगन अवसि हृदय सुख पायऊ॥४०॥

हाँकै रथ रिपु ओर तबहि उत्साह बढ़ाई।
उत दिमाक दसकन्ध सेन सह लियो दबाई॥
कुम्भकर्न घननाद महोदर आदिक बीरा।
अनी अकम्पन कुमुख कुलिस रद मारे धीरा॥
मैं रावन तिन में नहीं अहौं अवसि तव काल जू।
कह बनादास भागहु न जो कोपि कह्यो दसभाल जू॥४१॥

हते बिराघ कबन्ध अपर खरदूषन मारे।
पुनि ताड़ुका सुबाहु इन्हैं को बदै बिचारे॥
तेहि घोखे मति रह्यो परेहु दसकन्धर पाले।
सबको बैर निबाहि करौं हठि मृत्यु हवाले॥
आजु सूझि परिहै भले कहत अमित दुर्बाद है।
कह बनादास निज मुख सुजस नहि बरने कछु स्वाद है॥४२॥

सत्य सत्य तव वचन अवसि देखब मनुसाई।
लोकहु वेद प्रसिद्ध न कछु मुख आपु बड़ाई॥
पुरुषारथ नहि कहैं सुजन करि कै देखरावैं।
कायर करि जल्पना सुजस मुख आपु नसावैं॥
सहज कहे रघुबंसमनि अवसर सो अब निकट है।
कह बनादास सतबान तव राम हने अति .बिकट है॥४३॥

भंजे रथ सारथी तुरय हति भूतल डारे।
दसहु वदन भुज बीस बहे जनु गेरु पनारे॥
सायक आयो तून लक्ष सर बहुरि पवाँरा।
लागे कटन पिसाच गिरहि करि घोर चिकारा॥
मारे कोटिन तीर प्रभु जिमि किसान ससि काटते।
कह बनादास नाराच इमि दैत्य काटि महि पाटते॥४४॥

घनाक्षरी

खैंचत तूनीर एक तीर सत बान भयो धरत कोदंड पर सहस प्रमान भो।
चल्यो तब लाख घाव किये जाय कोटिन को यहि विधि कटत अमित जातुधान भो॥
बनादास ऐसे राम किये बान बुन्द वृष्टि उपमा न हेरे मारु महाघमसान भो।
रिपुदल खपत चपत बल चारि ओर सख्या कौन करै सुठि गीध कमसान भो॥४५॥

एक बान खींचे तून बाहेर सहस भयो धरे धनु लच्छ मग माहि सो करोरि है।
लागे तन अर्बि गिरे भूतल मे खर्बि खर्बि फेरि तीर हने दिये दूने सो दरोरि है॥
यहि बिधि हतत निसाचर की चमू भूरि राम से धनुर्धर न उपमा बहोरि है।
बनादास अंगदादि हनुमान कोप किये एकबार दिये बहु सागर मे बोरि है॥४६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम अष्टत्रिंसतितमोऽध्याय ॥३८॥

छप्पय

अंगद औ सुतपौन जहाँ तहँ बीर बिरुद्धे।
कपिपति औ नल नील पनस कुमुदादिक क्रुद्धे॥
द्विबिद मयन्द सुषेन केसरी सुठि बलवाना।
भये सकल रनमत्त निसाचर मर्दत नाना॥
तोरहिं कर पद फोरि सिर नख से उदर बिदारही।
कह बनादास गिरि तरु गहे एक हजारन मारही॥४७॥

रथ दूसर असवार भयो जबही दससीसा।
अतिही क्रोध सँभारि लिये धनुसर भुजबीसा॥
वर्षन लाग्यो बान भालु मर्कट बहु मारे।
तोमर मुद्‌गर गदा अमित राच्छसन प्रहारे॥
सूल सक्ति परसा परिघ भिंदिपाल भट मारते।
कह बनादास धनुबान असिचर्म लिये ललकारते॥४८॥

कटकटाहिं कपि कोपि भालु कृत घोर चिकारे।
सिंहनाद घननाद करहिं निसिचर भट मारे॥
बालू खनि खनि भालु ताहि मे राच्छस तोपे।
नखन बिदारे उदर रिच्छ दल अतिही कोपे॥
दुहूँ सेन रनमत्त अति जयति राम रावन कहैं।
कह बनादास जय हेत निज रोपि चरन सन्मुख रहैं॥४९॥

दस कर लीन्हे धनुष लिये दसहू भुज बाना।
रघुपति ऊपर कोपि किये सर वर्षा नाना॥
सक्तिसूल बहुभांति चलाये सो प्रभु काटे।
राम हृदय अतिकोपि सरन रावन रथ पाटे॥
मारे बान पचास सो रघुबर हय भूतल परे।
कह बनादास सारथि सहित पुनि उठाय कीन्हे खरे॥५०॥

मची जुद्ध घमसान राम रावन से भारी।
चोपि कोपि अति लरे कोऊ मानें नहि हारी॥
सिव ब्रह्मा इन्द्रादि सकल सुर चढ़े बिमाना।
रघुपति रावन समर सबै देखें बिधिनाना॥
बही भयंकर घोर सरि रुधिर धार अतिसय प्रबल।
कह बनादास कायर कँपैं सुखी सूर होवें सबल॥५१॥

बहे निसाचर लोथ जहाँ तहँ नाना भाँती।
सुतुर अस्वगज घने मकर झख जनु बहु जाती॥
बैठे तापर गीध मनहुँ नावरि बहु खेलें।
जम्बुक खीचहिं आँत मनहुँ गुइनी गहि पेलें॥
चर्म कमठ असि मीन सी बहु आयुध जलचर घने।
कह बनादास सेवार कच नहि सरूप बनंत बने॥५२॥

मज्जा फेन समान भ्रमर जहँ तहँ गम्भीरा।
बंसी लावहिं स्वान गहे अन्तावरि तीरा॥
मज्जहिं भूत पिसाच गीध गहि भुजा उड़ाहीं।
काक कंक खग बिपुल छीनि यक एकन खाहीं॥
खप्पर संचत जोगिनी राग कालिका गावहीं।
कह बनादास बैतालगन नाचत भय उपजावहीं॥५३॥

चामुंडा कृत पान रुधिर धावहिं चहु ओरा।
मारु काटु धरु डाटु मचावहिं बहु बिधि सोरा॥
साजहिं ब्याह बरात पाय अवसर सब भाँती।
डारे आँत जनेउ सोह सुठि सबल जमाती॥
मुंड फोरि गूदा भखें अतिसोनित सों सानि कै।
कह बनादास सेतुआ मनहुँ खात सबै सुख मानि कै॥५४॥

खाहिं अघाहिं भुखाहिं छीनि यक एकन पाहीं।
डाटहिं एकन एक अजहुँ दारिद्र न जाहीं॥

जम्बुक स्वानहु आहिं छुधा जानहुँ नहिं जाई।
कटकटाहिं बहु भाँति जहाँ तहँ करहिं लराई॥
घायल कहरैं जहाँ तहँ परे अर्द्ध जल दीन जनु।
यह समाज अनुपम अवसि पटतर लहत न कतहुँ मनु॥५५॥

घनाक्षरी

हाँक हनुमान सुनि लंक हालै पक सम हिय माहि गुनि दसकंठ सुठि राखे हैं।
पादप पपान गहि कोपो महाकाल सम हनै जातुधान बरिबड बीर माखे हैं॥
हाथपग तोरि तोरि मारे मुड फोरि फोरि डारे सिन्धु बोरि बोरि उर अभिलाखे हैं।
सिलासृंग जोरि जोरि देत घाव दौरि दौरि बनादास जहाँ तहाँ दैत्य परे काखे है॥५६॥

उदर बिदारे केते चीरि फारि डारे केते किये अधमारे ललकारे बार बारे हैं।
दैत्य सुठि कारे बहै सोनित कि धारे गिरि असित से भारे जनु गेरु के पनारे हैं॥
बाँको बलवान कबि कहाँ लौं बखान करें होत हलकम्प नैनजादि सिप सारे हैं।
बनादास भेंडि माहिं हलो सिंह सावक ज्यो हनो मान कला कहि पावै कौन पारे हैं॥५७॥

लूम को लँवाय कटकटाय कै फुलाय गाल दनुज बेहाल करि हनत हजार है।
कालिका लजात कालभैरव सिहात हिय रुद्र सकुचात जुद्ध देखे ते वहार है॥
कैधौं सिन्धु पावक प्रगटि दैत्य तूल दाहै बनादास कैधौं नरसिंह अवतार है।
कैधौ रघुनाथ जू को रोप रूपवान भयो रावन कटक कोपि करै जर छार है॥५८॥

कैधौं इन्द्र कोप कियो कृतिआ दसानन पै कैधौं सद्य फल देत रावन को पाप है।
कैधौं नरसिंह क्रोध सेप सों प्रगट भयो कैधौं सिद्धि भयो नाम जानकी को जाप है॥
बनादास कैधौ है बिभीषन की छमा भारी दस सिर जुन देत दैत्य न को ताप है।
जुद्ध हनुमान को बखान कबि कौन करै हेरि हेरि हिये मे हरष राम आप है॥५९॥

लिये तोरि गजमुड गहि सुड मारे झुड मुड भिन्न किये केते जातुधान जू।
पाटे महि लोथन से मारि मारि जुत्थन से लरत वरुत्थन से ऐसो बलवान जू॥
जहाँ कही हटै बीर तहाँ परै पर्वत से रिपु बन्धु कपिराज कहे जाम्बवान जू।
बनादास अंगदादि बदत परस्पर कीस भालु सारे धन्य धन्य हनुमान जू॥६०॥

देवता अकास से सुजस भनै पौनपूत रामदूत बाँको बीर बुद्धि को निधान जू।
सेन में सिरोमनि करत काम राम जू को करम वचन मन हेरे नाहि मान जू॥
बनादास कालहु को महाकाल जुद्ध माहि नाहि पटतर कोऊ सुठि ज्ञानवान जू।
बिरति त्रिलोक ते बिसोक एक नाम रुचि सुचि सर्वज्ञ हते केते जातुधान जू॥६१॥

सवैया

बालि को नन्दन बीर बड़ो बिरुझो बिर दैत्यन मानत हारी।
लातन दांतन मारि चपेटन चोट करै अतिही ललकारी॥
उदर बिदारिकै आनन फारत मारत निसिचर है सुठि भारी।
दासबना दबकै अति राच्छस आयो जबै हनुमान हँकारी॥६२॥

घनाक्षरी

लिये गजदन्त करै दैत्यन को अन्त बालिपूत बलवन्त मुड फोरि फोरि मारई।
काहू टांग तोरि भुजा काहू को मरोरि काहू अति झकझोरि चारि ओर ललकारई॥
करत चिकार घोर घुमि घुमि भुम्मि परैं लरैं उठि मरैं जातुधानहि अहारई।
बनादास दाबत दिमाक दसकन्धर को बन्दर जुगल बैह राच्छस बिदारई॥६३॥

करै लूम लीला लपकाय मुख बाय धावै लोचन कसाय लखि राच्छस परात हैं।
स्वर्नसैल के समान जातुधान काल मानो महा बलवान सत्त रामजू को खात हैं॥
बनादास घालत घनेरे दैत्य एकबार रुद्र अवतार सुठि बीर बात जात हैं।
जेते हनुमान अरु अंगद के मारे मरे लेखा के करै याहि यहा रि सकुचात हैं॥६४॥

रावन औ राम सो समर होत बार बार उभय रनमत्त कोऊ मानत न हारि है।
दोऊ दिसि होत बान दृष्टि को प्रमान करै देखें नभ देव जैसे लरत प्रचारि है॥
रावन औ राम जुद्ध उपमा त्रिकालहू न हारै मति सारद की और को सँभारि है।
बनादास बीस बाहु धनुष औ बान लिये काल के समान कोपि मारत सुरारि है॥६५॥

मारे सक्तिसूल ताहि काटि रज राम किये बहुरि हजार बान क्रोध करि डारे हैं।
दससीस बीस भुजा मानहुँ फनीस फोरे अतिहि प्रबल चलो रुधिर कि धारे हैं॥
बनादास मानों गिरि असित के सृंग माहि बहै चारि ओरहू से गेरु के पनारे हैं॥
मुच्छित सुरारि पर्यो जागि अतिकोप कर्यो कोटि कोटि बान एक बार में पवारे हैं॥६६॥

तोरन ते तोपे रथ कोपे चारि ओर मारैं सकल सयन तन जर जर किये हैं।
कपिराज लपन औ नील नल हनुमान द्विविद मयन्द अंगदादि घाव दिये हैं॥
कुमुद पनस न सुपेन बचे समय तेहि बनादास बीर धीर मुच्छित हिये हैं।
तब जाम्बवंत कोपि लैकै निज सेन धायो अवसि प्रबल बीर बार नाहि लिये हैं॥६७॥

किये उर लात घात मुष्टिका प्रहारे रिच्छ गिरो ह्वै अचेत बीसबाहु भालु लिये हैं।
सारथी तुरंग रथ अंग अंग चूर किये रिच्छराज महावीर कोपो अति हिये हैं॥
सकल सुभट रन मारि बिच लाय दिये बनादास सुठि पुरुषारथ सो किये हैं।
उभै दंड बादि रघुबीर रथ देखि पर्यो रहे सुर बिकल सो मानो मरे जिये हैं॥६८॥

साँझ समय जानि दैत्य लै गये दसानन को जागो तब अवसि रिसाय गारी दिये हैं।
रामकृपा दृष्टि अवलोके सब बीरन को बिगत सकल स्रम सुखी भयो हिये हैं।।
भालु कपि सयन सँहारि डारे भली भाँति करिकै बिचार दसमौलि माया किये हैं।
बनादास महाचमू रची सिह बाघन की ताहि मध्य ह्वै कै रन भूमि मग लिये हैं।।६९।।

स्यन्दन अरूढ रहे राच्छस सो संग लिये आय गयो जुद्ध मध्य महाबीर बाँको है।
करत गभीर नाद बाघ सिह कोटि कोटि भागे जीव छाँडि भालु बाँदरन ताको है।।
त्यागि दिये सब रघुनाथ अरु लषन को रहे गने बीर धीर मान मन जाको है।
बनादास रिच्छराज कपिराज रिपु बन्धु अगदादि पवनसुवन सुठि साको है।।७०।।

रहे जेते राच्छस भई है तेतो सिहसेन गर्जि रहे चारि ओर महा अहतक भो।
सीस जटा कटि तून कसि धनुबान लिये स्यन्दन अरूढ रघुबीर भ्रुव बक भो।।
कहे भयो स्रमित अमित द्वन्द्व जुद्ध देखो भालु अरु बाँदर को मानस निसक भो।
बनादास खींचि कै सरासन टकोर किये दैत्यन को कम्प उर मानो सुठि पक भो।।७१।।

सवैया

माया कि सेन हने यक बान मे ज्ञान भये जिमि मोह नसाही।
मर्कट भालु फिरे तबही जब सिह औ बाघ लखे कहुँ नाही।।
आयु जुरो रघुनाथ सो रावन सावन को बर्षा जनु आही।
दासबना तिमि बान कि बृष्टि न हेरे मिलै उपमा उर माही।।७२।।

राम से राम न दूजो कोऊ जग रावन के सम रावन जानो।
भानु समान कहै केहि को अरु सागर के सम सागर मानो।।
है नभ से नभ और न दूसर रावन राम को जुद्ध बखानो।
दासबना समता सब अगन जगन मे न कोई सरसानो।।७३।।

सोम बिना नहि सोभित जामिनी ता बिन चन्द नही छबि पावै।
जैसे सभा नृप सोह गुनी जन ताके बिना न सभा सरसावै।।
ज्यो बिन सन्तन सोभित तीरथ ताहि बिना सो समान कहावै।
ऐसहि राम और रावन की गति दासबना समुझे बनि आवै।।७४।

सक्ति औ सूल प्रचारिकै मारत बानन की बर्षा सुठि कीने।
काटि दिये दसरत्थ के बाँकुरे रावन साँग प्रचड सो लीने।।
मारेसि कोपि हिये रघुबीर के भूरि प्रताप बिरंचि जो दीने।
दासबना रथ मुच्छि पर्यो रन सोभा के हेत लखै परबीने।।७५।।

तौलै लिये हनुमान महागिरि रावन पै अति कोपि प्रहारे।
चोट बचाय गयो दसकन्धर स्यन्दन अस्व औ सारथी मारे।।

मुष्टिका एक हने हिय में महि मुच्छि पर्‌यो मुख रक्त पनारे ।
दासबना लिये लूम लपेटि तबै दसआनन क्रोध सँभारे ॥७६॥

दोऊ भिरे तबही ललकारि कै चोट चलावत बारहिं बारा ।
भूतल औ नभ मारग माहिं लरें जनु कज्जल हेम पहारा ॥
तौ पटके हनुमानहिं रावन आय पर्‌यो महि पौन कुमारा ।
दासबना लिये धायकै अंगद तौ नख से दसभाल बिदारा ॥७७॥

दंड के बादि उठे रघुबीर लिये धनुतीर सो क्रोध सँभारे ।
आय चढ़ो रथ ऊपर रावन लाग करै सर की बर्षा रे ॥
लच्छ नराच हने दसकन्ध पै सीस भुजा तन जर्जर सारे ।
सारथि अस्व समेत पर्‌यो महि दासबना बहे रक्त पनारे ॥७८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ।
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम नवत्रिसतितमोऽध्यायः ॥३६॥

सवैया

फेरि सँभारि उठो दसकन्धर राम तुरय चहुँ मारि गिराये ।
सारथी सूल हने हिय में मुरझाय कै सो पुनि भूतल आये ॥
बान सहसदस रामहिं मारेस काटि कै सारथि अस्व उठाये ।
दासबना चले तीर दोऊ दिसि एकहि एक सकै न चलाये ॥७६॥

बानन मारि किये तन जर्जर सारथि अस्वहि राम गिराये ।
धाय चढ़े नल नील ललाट पै नोचि दिये मुख स्रोनित आये ॥
कीस औ भालु हनै तरु पाहन वज्र सरीर कहा उपमाये ।
दासबना तरु टूटै लगे तन फूटै पषान बली सतिभाये ॥८०॥

मारु परी बहु मर्कट भालु को रावन तौ उर माहिं बिचारा ।
मारि गई सिगरो दल दैत्य करौ अब माया को कौतुक भारा ॥
अन्तर्द्धान भयो तेहि अवसर धूरि कि वृष्टि किये अँधियारा ।
दासबना बरषै बहु पाहन सूझि परै नहिं हाथ पसारा ॥८१॥

घनाक्षरी

मूत्र मल मज्जा पीव रक्त चर्म अस्ति वृष्टि केस नख बरषे अघोर नर्क भूरि है ।
भगे भालु बाँदर बिकल भये नाना भाँति जहाँ तहाँ जाहिं तहाँ तहाँ रह्यो पूरि है ॥
त्राहि त्राहि राम औ लषन कहैं बार बार बनादाम बयों हूँ 'दुख सकत न तूरि है ।
कोपि रघुबीर तबै कर धनु तीर लिये एक ही नराच माहिं किये सब दूरि है ॥८२॥

सवैया

होन लगो बहुरो जलवृष्टि परैं बहु पाहन बार्रहि बारा।
बर्षत ब्याल भयकर भूरि भगे बनचारी न होत सँभारा।
जाहि जहाँ तहँ आगि लगै सग माहि उपाधि न पावहिं पारा।
दासबना सर एक हने प्रभु दूरि किये हैं उपद्रव सारा ॥८३॥

घनाक्षरी

भूत औ बैताल लिये मनुज कपाल नाचैं जोगिनी कराल मुख बाय खाय धावही।
मुड को कमडल अन्तावरि जनेउ नाये रक्त सो नहाये दुख नाना उपजावही॥
भागैं भालु बाँदर हुआहि कटकटाहि भूरि दूरि तक खेदे जाहि ठवर न पावही।
बनादास कालिका कराल कोटि कोटि गावै अमित पिसाच जाति कहाँ लौं गनावही ॥८४॥

नाना बिधि माया करैं रामजू सो राति चर जाकी माया माहि लोक तीनिहूँ भुलान है।
सकर विरचि सेस सारद न पार पावैं नारद मुनीस बहु करत बखान है॥
उतपति पालन प्रलय थिति जाकी लीला तर किन पार लहै बडे बुद्धिमान है।
बनादास जैसे ज्ञान भये से बिनास मोह निसि को न लेस रहै ऊये जिमि भान है ॥८५॥

तैसे राम माया हरी रावन प्रत्यक्ष भयो लागो जुद्ध करै जनु काल के समान जू।
बानन सो मारि कै बिकल कपि भालु किये सुद्धि बुद्धि काम नहि करै बलवान जू॥
तब कपिराज उर अवसि सकोप भयो मारे तरु एक ताहि बज्र के समान जू।
बनादास भूतल मुरछि दससीस पर्यो लकहि उठाय लै कै गये जातुधान जू ॥८६॥

जागो अर्द्धरात्रि लागो खीझन अतीव खल छोडि रन भूमि बार बार इहाँ लावते।
होत प्रात माया करि चलो दसकन्ध बीर कोटि कोटि रावन सकल दिसि धावते॥
बनादास देखि कै बिकल कपि भालु भये देवता अतीव दुख छनँ छन पावते।
एक दससीस तिहूँ लोक की पराजय किये गये बहु रावन न बुद्धि कछु आवते ॥८७॥

कोपि कोपि रावन दसहु दिसि धावत भे चोपि चोपि मारैं अगदादि हनुमान हैं।
करैं सिंहनाद महाकाल के समान सारे काहू मे न हाल सब मृतक समान हैं॥
लाखन हजारन करोरिन को गर्द करैं ऐसे मर्द कपिराज और जाम्बवान हैं।
बनादास जैसे जैसे मारे तैसे तैसे बढैं गढैं कोटिन तदपि बलवान हैं ॥८८॥

बोले रघुबीर हँसि काहू की न इच्छा रहै कहै वो न मारे हम रावन से धीर जू।
चहूँदिसि पूरि रह्यो कोटिन दसानन से हनत प्रचार करि कीस भालु धीर जू॥
गर्जि गर्जि लरत अधिक महि परत कला से नट करत हैं सुवन समीर जू।
बनादास गायब सकल दससीस भये जबै रघुबसमनि मारे एक तीर जू ॥८९॥

देखे एक रावन सकल सुर सुखी भये तबहिं प्रगट किये लाखों हनुमान जू ।
सिला तरु सृंग लिये घेरे सब राम जाय चहुँ दिसि लंगूर मध्य करुनानिधान जू ।।
गाल को फुलाय लपकाय लूम लीला करें अतिहि अचर्य मायाबिद जातुघान जू ।
बनादास सबहि सभीत देखि रघुनाथ सारे हनुमान मारि डारे एक बान जू ।।९०।।

अमित कपीस लछमन रिच्छराज रचे लाखों नलनील कहाँ राम जू प्रचारहीं ।
मारो मारो धरो धरो ऊँचे सुर सब्द करें देवता अकास मध्य अति हिय हारहीं ।।
दूसरो बिरंचि ह्वै के मानों नाना सृष्टि करें अति अद्‌भुत खेल दीसै बार बार हीं ।
बनादास अवसि पराक्रम को करें जौन तौन रघुबीर एक तीर ही नेवारहीं ।।९१।।

हरे सब माया रथ आय दसमौलि चढ़ो बीसहू करन धनु बान कोपि लिये हैं ।
मारिकै नराच कीस भालु बिचलावत भो राम रथ ऊपर अवसि झरि किये हैं ।।
तब रघुबीर तीस तीर कोपि मारत भे बोस भुजा अरु दससीस काटि दिये हैं ।
बनादास बहुरि नबीन हाथ माथ भयो बर्षन बान लागो सुखो सुठि हिये हैं ।।९२।।

फेरि हरे राम सीस बाहु सो बहुरि भयो भालु कपि अचरज देव दुचितई है ।
सिर भुज बाढ़ि देखि मौल को सुराति गई अवसि सकोपि बान झरिझरि नई नई है ।।
भये तन जर्जर बिकल कपि भालु भागे बनादास पुनि राम भुंज सिरहई है ।
छाये नभ मारग बिपुल राहु केतु मानो प्रभु बान लिये फिरें गिरन न दई है ।।९३।।

जैसे विषय भोगत नितहि काम बृद्धि होत ताहीं बिधि रावन के बाढ़े भुज सीस हैं ।
देवता अकास में अनेक बिधि सोच करें अति हिय हारि हरे भालु अरु कीस हैं ।।
नित नव क्रुद्ध ह्वै के जुद्ध दसकन्ध करै बनादास राम भुज बाहु किये खीस है ।
तबहीं बिभीषन सकोपि सुठि गदा लिये देखतहि कोपि सक्ति मारे भुज बीस हैं ।।९४।।

पीछे कै बिभीषन को सहे रघुबीर सोई भूतल मुरछि परे करुनानिधान है ।
अरे पापी पोच जौन सिव को चढ़ाये सीस एक एक कर पाये कोटि कोटि दान है ।।
अब काल आय गयो माथ पै कहत बन्धु लरो ललकारि सो कृतांत के समान है ।
बनादास हने उर गदा अति कोप करि परयो सद्य भूतल में महा बलवान है ।।९५।।

किये घात मुष्टिका बहुरि उर लात मारे दसहू बदन बही सोनित की धार है ।
तेहि निसि रावन को तहँ रहे घेरि दैत्य अवसि अचेत परयो सुधि न सँभार है ।।
बनादास मुरछा ब्यतीत रघुनाथ जागे बूझत बिभीषन को प्रभु बार-बार है ।
इहाँ सिया पास आय त्रिजटा हवाल कहे जानकी कहत करै कैसो करतार है ।।९६।।

सवैया

रामहु बान लगे न मरै बिपरीत करै सब खेल अपारा ।
मोरि अभाग्य जिआवत ताहि किये जिन हेम कुरंग असारा ।।

देवर को कटु बैन कहाये सो रुठो अहै अजहूँ करतारा।
नाह बिछोह न त्याग भयो तन ताते सहै सकलो दुख भारा ।।९७।।

घनाक्षरी

राम गति अगम न कोऊ जग जाने जोग सिव बिधि बेदहू न पार जासु पाये हैं।
करै रन केलि पेलि मारैंगे कृपालु ताहि कारन अपर सुनौं मानौ सति भाये हैं।।
रावन हृदय तव ध्यान अबिचल सदा तव उर राम रूप चलै न चलाये हैं।
बनादास राम उर सकल कटाह अंड बान सबही को काल ऐसो बनि आये हैं ।।९८।।

बिना उर बान लागे मरै न सुरारि क्यो हूँ ताते ह्वै है बिकल तबहिं प्रभु मारि हैं।
तव ध्यान छूटै जब लूटै प्रान काल तब ऐसो कहि कथा सोऊ सदन सिधारि हैं।।
जागो प्रात रावन तुरित ललकारि उठो लागे भालु कीस एक ओर ते गोहारि हैं।
बनादास तरुगिरि सृग औ पषान धारि चढे रघुबीर रथ ऊपर प्रचारि हैं।।९९।।

कुम्भकर्न घननाद अनो अति काय बीर कुमुख कुलिसरद सुठि बलवान हैं।
दुर्मुख महोदर अकम्पन औ मकराच्छ धूम्रकेतु त्रिसिरा प्रहस्त जातुधान हैं।।
कूट मुख खर केतु द्विजघाती देवघाती गऊघाती नरघाती रावन समान है।
बनादास जूझे जेते बीर सो तयार किये सकल सयन धाई लिये धनुबान हैं।।१००।।

देखि दल अतुल अचर्य कपि भालु भये एते दिन माहिं मरे तेऊ सब जिये हैं।
आपुन मरत अस्त्र सस्त्र धारि चली सेन सकल भयाय भागे अब काह किये हैं।।
सिंहनाद घननाद करै जातुधान भूरि भारी दल देखि कीस भालु दुखी हिये हैं।
बनादास अब दसकन्ध न जीति जैहै करै का उपाय जब मरि मरि जिये हैं।।१।।

आपु दसकन्ध रथ रोप्यो उर कोप्यो अति बीस भुजा दस चाप वर्षत बान है।
कोटि कोटि तीर एक बार ही प्रहार करै मरै कपि भालु महाबली जातुधान है।।
मारे ज्ञान बिसिख बिनासे मोह माया दल हरषित भये बली मुख बलवान है।
बनादास खंडे भुज सीस सो नवीन भये सिय की कृपा प्रसाद देखि हर्षान है।।२।।

जैसे संक्राति पुण्य वृद्धि होत नयो नित्य तीरथ को पाप सत पात्रन को दान भो।
जैसे बान बिद्या करि बानन कि बढो होत त्योही सिर बाहु देखि अतिही गुमान भो।।
मारु मारु धरु धरु बोलत अकास मुड रुड ज्यो कुलाल चाक कबि उपमान भो।
बनादास समृद पात्र समसीस भुजा वृद्धि काटन को कारन अवसि राम बान भो।।३।।

मारैं कपि भालु घुमि घुमि गिरैं भूमितल लरत प्रचार करि अति दससीस हैं।
लातन ते मारैं अगदादि हनुमान नील नखन बिदारैं बपु भयो बलबीस हैं।।
बानन ते मारैं ललकारैं बार बार बीर गयो हिय हारि सब अंग अवनीस हैं।
बनादास बहुरि रिसाय राम तीर मारे काटि दिये माथ दस अरु भुज बीस हैं।।४।।

भयो पुनि नूतन प्रचंड अति पौन चल्यो रुधिर और धूरि बृष्टि होत सुठि घार है।
दिर्नहि उलूक परै भूमि दूमि दूमि उठै महा उत्पात असगुन चहुँ ओर है ॥
धीर न धरात हिय जिय कम्पमान होत धरकत धकाधकी मानौं बरजोर है।
बनादास राम तब हेरे रिपु बंधु ओर नाभी सो लखाय दिये नैनन के कोर है ॥५॥

मारे यक तीस बान मानहुँ फनीस चले नाभी मध्य एक लागो सब्द घोर किये हैं।
कहाँ राम मारौं रन मन दुचितई अति तौलौ सिर भुज काढ़ि महि नाय दिये हैं ॥
तेज गयो प्रभु मुख दसकन्ध पर्यो धसकत धरा कोस भालु दाबि लिये हैं।
बनादास देवन भजै जै ध्वनि बोलि उठे भयो महामोद मानौं मृतक से जिये हैं ॥६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम चत्वारिंसतितमोऽध्याय: ॥४०॥

सवैया

सीस जटा कटि तून कसे मुनि के पट राजित स्यामल अंगा।
सोनित के कनका तन पै उपमा नहिं खोजि मिलै सरबंगा ॥
मर्कत सैल पै मानौ लसी बहुबीर बहूटी लजात अनंगा।
दासबना जेहि आवत ध्यान न लागत बार भये भव भंगा ॥७॥

फेरत हैं करवान सरासन बाँदर भालु लखैं अनुरागे।
अस्तुति बारहि बार करैं नभ दुन्दुभी देव बजावन लागे ॥
प्रीति अतीव झरै कुसुमावलि मानहुँ मोह निसा सुठि जागे।
दासबना सुर स्वारथ वस्य भये निज काज भुलात अभागे ॥८॥

भानु तपै जेहि की डर राखि कै औ जम को निज बाँह बसाये।
इन्द्र कुवेर दसौ दिग्पालन लोकप औ नृपराह लगाये ॥
वेद पढ़ै चतुरानन द्वार महेस्वर नित्य पुजावन आये।
दासबना रघुबीर बिरोध ते रावन को सिर स्वान न खाये ॥९॥

पावक पाक करै जिनके घर झाड़ समीर करै गलि माहीं।
मृत्यु औ काल कि भीत रही नहिं लोकप भौंह बिलोकैं सदाही ॥
वाद रह्यो न कहूँ जेहि को बसवर्ति सबै उपमा नहिं ताही।
दासबना रघुबीर भजे बिन रावन के सिर जम्बुक खाही ॥१०॥

मयतनुजादिक रोवत नारि करैं उर ताड़न भाँति अनेका।
तेज प्रताप सराहत है बल लोग कहैं प्रति एकन एका ॥
मान्यो सिखा पन एको नहीं पिय राखे सदा अपनो नित टेका।
दासबना पर्यो औनि अनाथ से राम बिरोध कहा बनि बेका ॥११॥

आज्ञा बिभीषन को प्रभु दीन करौ तुम बन्धु क्रिया अब जाई।
राम रजाय चले सिर राखि गये जहँवाँ सब लोग लुगाई॥
औसर देस औ काल विचारि किये करनी बिधि बेद बनाई।
दासबना ततकालहि आय गयो पति लंक जहाँ रघुराई॥१२॥

मारुतनन्दन बोलि कृपालु कहे तुम जानकी पास सिधावो।
रावन को बध बेगि सुनाय कै सीय हवाल लिये इत आवो॥
सीस नवाय चले हनुमान गये गढ लंकहि वार न लावो।
दासबना बहु राच्छस राच्छसी पूजा किये जनु नवनिधि पावो॥१३॥

लै हनुमानहिं गे जहँ जानकी पौनतनय पद बन्दन कीन्हा।
रावन को बध बेगि कहे पहिचानि सिया सुभ आसिष दीन्हा॥
तात कहौ कुसलात कृपालु की बन्धु समेत भले सुधि लीन्हा।
दासबना सुत का तोहि देहुँ पदारथ तुल्य परै नहि चीन्हा॥१४।

घनाक्षरी

आनद को सिंधु जुत बन्धु प्रभु आनद है रावन कि बिजै तिहुँ लोक जस छायो है।
सुर साधु सुखी महि द्विज गऊ दुख गयो मातु ऐसे मोद माहि काहु नहि पायो है॥
करैं प्रभु कृपा तात बल बुद्धि धाम होहु सुनत बचन सुठि सुख उर छायो है।
बनादास करौ सोई जाते पदकंज देखौ बंदि हनुमान पद सचहो सिधायो है॥१५॥

आय रघुबीर पास सिया समाचार कहे लषन बुलाय कै रजाय राम दिये जू।
कपिपति जाम्बवान नील नल बीर सारे हनुमान अंगदादि सब संग किये जू॥
जाय बेगि लंकहि बिभीषन तिलक करौ चले पद माथ नाय सुखी सुठि हिये जू।
बनादास आय कै बिठाये सिंहासन पै प्रभु बन्धु भाल अभिषेक सींचि लिये जू॥१६॥

दिये दान सम्पदा लुटाये समय भाँति बहु सँगहि लषन के बिभीषन सिधाये जू।
रघुनाथ कमल चरन सब माथ नाये पवनसुवन तब बेग ही बुलाये जू॥
जाहु तात लंकहि लै आवो सद्य जानकी को हनुमान संग सब बीरन पठाये जू।
बनादास आय सब सीतहि प्रनाम किये जथाजोग सुठि सुभ आसिष को पाये जू॥१७॥

बोलि सेवकनिन बिभीषन रजाय दिये जनकसुतहि अस्नान को कराये हैं।
भूषन बसन दिब्य आनि कै समय तेहि सहित सनेह अंग अंग पहिराये हैं॥
माँगि कै रजाय तब मैथिली चढाये यान वेत पानि संग प्रभु निकट सिधाये हैं।
बनादास साथ लंक राच्छसी अनेक भाँति देखि राम कहे सिया पाँयें क्यो न लाये हैं॥१८॥

जननी समान अवलोकैं सब भालु कपि प्रभु के बचन सुनि बली मुख घाये हैं।
करत प्रनाम दंड जथाजोग रिच्छ कपि लषन ललकि कंज पायँ सीस नाये हैं॥

बनादास देखि राम कहे कटु बैन कछु सुनि कै निसाचरी परम दुख पाये हैं।
सत्य सीय पावक में प्रगट करन हेत पुनि जग मन मैलि चाहत जरावे हैं।।१६।।

जानकी निहोरि कहे लषन सों बार बार धरम सहाय सदा धर्मवान किये जू।
आनि काठ चिता रचि पावक प्रगट करो प्रभु रुख अवलोकि आज्ञा सीस लिये जू।।
बनादास समय तेहि रचना सकल किये देवता अकास मग देखें दुखी हिये जू।
कीस भालु सारे हैं सनेह बस भाँति बहु राच्छसी कहत राम कैसी आज्ञा दिये जू।।२०।।

करम बचन मन एक रघुबीर गति दूजी न सपन माँहि होय बिधि भली जू।
तौ तौ मोहिं पावक स्रीखंड सम होहु सद्य ऐसो कहि सिया मानो गंगधार हली जू।।
जानकी को प्रतिबिम्ब जगत कि मन मैलि बनादास अगिनि में अच्छी बिधि जली जू।
बिप्र रूप धरि कै कृसानु सत्य सीता लाये रामहिं समर्पे जनु कंचन की कली जू।।२१।।

जैसे सिंधु रमा को समपि दिये बिष्नु जू को हिमवान पार्वती संकर को दिये हैं।
मानहुँ बिदेह उभै आय दिये मैथिली को दुन्दुभी अकास बाजी फूल वृष्टि किये हैं।।
अनल अदृस्य भयो महामोद चारि ओर रघुबीर वाम भाग आसन को लिये हैं।
बनादास स्याम गौर जोरी जानि एक ठौर आये तब देवगन महामोद हिये हैं।।२२।।

स्वारथ निरत बानि जानि अये समय निज अस्तुति करत कर सम्पुट नमित जू।
जैति रघुबंसमनि रबिकुलकंज भानु भूमि भार हरे नाथ साधु सुर हित जू।।
बनादास निज अघ गयो दसकन्ध अन्ध बदत पुरान वेद आपु सम चित जू।
देवता कहावत न भावत भगति तव अवसि मलीन मन भूलि परे कित जू।।२३।।

पाहि पद सरन चरन रति राम देहु काम कोटि सुन्दर सकल उर वासी जू।
वाम भाग जानकी जगत जायमान करै पालत हरत परिपूरन कला सी जू।।
सेवत जोगीन्द्र मुनि गुनि गुनि गावैं गुन पावत न पार कोऊ प्रभु अविनासी जू।
बनादास तव पद बिमुख बिरंचि सन समुझि परत सब अंग दुख रासी जू।।२४।।

जब जब देव दुखी असुर सताये सुठि तब तब कृपा करि आपुही उबारे हैं।
कारज और कारन बिचारि अवतार लिये निज इच्छा लीला वपु अगनित धारे हैं।।
बनादास बिरद बिराज तहे तिहूँ काल चहूँ वेद गाय गाय पावत न पारे हैं।
महि रज सीकर सलिल गनि सकै कोऊ तव जस कहि सारदादि सेष हारे हैं।।२५।।

अगुन अगाध नेति निगम पुकार नित अचल अखंड रस एक परि पूर जू।
ब्यापक बिरुज निर्विकार निर्लेप नित्य अक्षय अनूप गति नेर नाहिं दूर जू।।
अकल अयोनी निरालम्ब निर्द्वन्द्व एक कोटिक प्रकास ससि पावक औ सूर जू।
बनादास आदिमध्य अन्तहीन एक रस लाखन में कोऊ जन लहत हजूर जू।।२६।।

सत चित आनंद अलख अद्भुत अति अमल अनोह बिस्व रूप निर्वान हो।
अरविन्द अच्छ स्यामगात सत मैन छबि कंज कर मुख पाय प्रानहूँ के प्रान हो।।

निर्गुन निरजन हरित सित असित नरात पीत रहित सुलभ वृष्टि ज्ञान हो।
बनादास राम वाम बन्धुजुत हिय बसौ येही बरदान मुनि दुलभ ध्यान हो ।।२७।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिपिन
खण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम एकचत्वारिंसतितमोऽध्यायः ।।४१।।

छप्पय

आये बहुरि बिरंचि जोरि कर अस्तुति भाये।
सजल नयन तन पुलक पेखि प्रभु उर अभिलाये ।।
जय जय दीन दयाल पतित पावन बडबाना।
जय आरत जन हरन गये हम बस अभिमाना ।।
जय रविकुल बनकज घन रघुनन्दन नित भान है।
कह बनादास कैवल्य प्रद अलख अगुन निर्वान है ।।२८।।

जयति हरन भुव भार सरन सुखप्रद सब काला।
जयति मनुज अवतार स्वबस सुठि कोसलपाला ।।
अवधन बिबर्ध मोद मगन लीला पुरबासी।
को पावै कहि पार सकल सुकृत की रासी ।।
जयति कोटि कन्दर्प छबि कबि कोविद वर्नत थकित।
कह बनादास ते धन्य मति रहत ध्यान यहि नित छकित ।।२९।।

कौसल्या दसरत्थ मोददायक सिसु लीला।
रिषि मख रच्छक दच्छ बधू मुनि तारन सीला ।।
भजि सम्भु कोदड सकल भूपन मदगजन।
हरन परसुधर मान जनकपुर जनमन रजन ।।
बिस्व बिजय ब्याहे सिया बधु सहित पुर आगमन।
कह बनादास पितु बाक्य रत मुनि ब्रत करि किये गवन बन ।।३०।।

मुनि जन करन कृतार्थ चित्रकूटादिक चारी।
कोल किरात सनाथ सक्रसुत लोचनहारी ।।
बधि बिराध बल बृहद सुगति दायक सरभंगा।
दडक बिपिन पुनीत चरित जग पावनि गगा ।।
पचवटी पर्नकुटी कृत रेवातट पावन परम।
कह बनादास रिषिराज वर बिरदावलि नासक भरम ।।३१।।

जयति गीध उद्धरन जयति सबरी गतिदायक।
जयति बालि बध करन बन्धु कीन्हे कपि नायक ।।

सूर्पनखा कुद्रूप त्रिसिर खरदूषन नासक।
जय माया मृग कदन सेत कृत सम्भु उपासक॥
जयति दलन दसमौलि भट कुम्भकरन घननाद दल।
कह बनादास रिपु बन्धु कृत भूप लंक सोना सबल॥३२॥

सिव हिय पंकज भृंग भुसुंडी मानसहंसा।
ध्यावत मुनि जोगीन्द्र अगम अरु निगम प्रसंसा॥
बाम भाग सिय सोह कनक बर लता समाना।
जनु तमाल तरु लसी बसी छबि अद्भुत नाना॥
जयति भालु मर्कट सखा सेवक भाग्य निधान है।
कह बनादास लहि देवतन तव पद विमुख अयान है॥३३॥

देहु नाथ निज भक्ति हरनि भवनिधि गंभीरा।
जाविन जन्म निवार्य काह विधि धरे सरीरा॥
तजि मन करम बिकार नितै तव पद अनुरागैं।
सिया सहित उर बसहु सदा याही बर माँगैं॥
करि बिनती ब्रह्मा गयो बहुरि इन्द्र आवत भये।
कह बनादास सुठि प्रीति जुत कृत अस्तुति चरनन नये॥३४॥

जयति सकल अवतार राम सिर मौर अनूपा।
जयति नृपति मनि मुकुट सुवन दसरथ बर भूपा॥
दुखित देव द्विज साधु धेनु महि सिर लखि भारा।
तब तब करत उबार धरत अगनित अवतारा॥
मत्स्य कूर्म बाराह बपु पुनि नर हरि बावन भये।
परसुराम रघुवंसमनि करत चरित नाना नये॥३५॥

बौध दलन पाखंड किये क्रमजालहि नासा।
केवल ब्रह्म बिचार एक दृढ ज्ञान प्रकासा॥
जदुकुलनायक कृष्ण किये नाना विधि लीला।
कल की परम कृपालु धर्म परवर्तक सीला॥
असुर मारि थापत सुरन प्रभु पालत स्रुति सेतु हैं।
कह बनादास माया प्रबल तव करि देत अचेतु हैं॥३६॥

जय दससिर करि मत्त महामृगराज विदारन।
कुम्भकर्न खल सवा बाज रघुबर संहारन॥

पन्नग सेन समूह राम खग केतु समाना।
निधन किये सर्वांग अगम बलधाम सुजाना॥
मेघनाद मूषक मलिन जयति लषन मजार तन।
कह बनादास प्रभु धूमध्वज नासे राच्छस सघन वन॥३७॥

जयति राज रिषि बेष जटा सिर मुकुट सुहाये।
जयति लसत द्युति अतुल तून कटि सुठि छबि छाये॥
जनकसुता दिसि बाम कोटि रति ब्याज समाना।
मदन कोटि लावन्य राम धारे धनु बाना॥
दीर्घ अच्छ अरबिन्द से तिलक भाल सोभा सदन।
कह बनादास उर भुज बृहद जानुपीन पद मन हरन॥३८॥

कम्बुग्रीव छबि सीव सरद ससि आनन निन्दै।
नील जलज घनस्याम भई मर्कत द्युति मन्दै॥
अधर अरुन घन दमन बाज दाडिमहिं लजावत।
नासाचारु कपोल कहाँ पटतर कवि पावत॥
चिनुक चोखि चोरत चितहि बृषभ सिंह वर कन्ध है।
कह बनादास नहिं ध्यान रत हृदय विलोचन अन्ध है॥३९॥

पीत जज्ञ छबि सीव रेख स्रीवत्स सोहाये।
लसत सुभग भृगुचर्न कजकर सुठि छबि छाये॥
त्रिवली उदर गँभीर नाभि जमुना अलि लाजै।
सिंह जुवा कटि लजित अवसि सोभा सिरताजै॥
स्यामपृष्ठ पद अरुनतल रेखा प्रद अभिराम है।
कह बनादास दर चक्रध्वज जलज सकल सुखधाम है॥४०॥

बिषय निरत मति छीन ताहि ते चित सकुचावै।
यह मूरति उर बसै सिया सह सुठि मन भावै॥
कृपा करो निज ओर नाथ सब साधन हीना।
जुग जुग बिरद बिराज कहाँ करुना नहिं कीना॥
सेवक सेवकाई लहै कछुक नाथ फरमाइये।
कह बनादास कवि भालु जे मरे सो बेगि जियाइये॥४१॥

सुधा बरषि सुरराज सद्य कपि भालु जियाये।
रघुपति कृपा प्रसाद बडाई सो बडि पाये॥

प्रभुपालक स्तुति सेतु जवन जाको अधिकारा।
तवन घटै तेहि काम राम को सदहि बिचारा।
सीस नाय सुरपति गये सुजस प्रीतिजुत भाषिकै।
कह बनादास आये तबै सिवजू अति अभिलाषिकै ॥४२॥

दण्डक

जयति जय राम सुखधाम करुना भवन दवन दुख ,रवन सिय सोकहर्ता।
गूढ़ गम्भीर घनज्ञानदायक भगति अगति निर्मूल कृत बिस्वभर्ता॥
कामक्रोधादि करिमत्त मृगराज हरिलोभ पन्नग सबल बिहँगराजू।
मोहमदमान मूषक मार जारब पुलवा अज्ञान हित ज्ञान बाजू॥
सर्पसंसय भरनि तरनि भवयामिनी भेक भयहेत सर्पेस रूपा।
बासना बृहद मर्दन बिवर्धन छमा आस मेढ़ुक हरन बृक अनूपा॥
राग द्वेषादि दारुन महिप कालिका कुसल कल्यान पथ कलुष हन्ता।
प्रनत जन काम धुक सरन सनकादि सुक कल्प पादप सदा हेत सन्ता॥
गूढ़ गंभीर बिज्ञान घन सर्बदा सच्चिदानन्द कैवल्य स्वामी।
बिष्नु बैकुंठनायक पराक्रम प्रबल ईस अवछिन्न बिहगेस गामी॥
बिस्व ब्याप कर मारवन करुना भवनदवन दनुजादि छीराब्धिबासी।
बनादास बिस्वेस बिरदावली बदत स्तुति कहत नित नीति जन बिपबिनासी ॥४३॥
पुरुष पुरान निर्बान दायक सदा समन सन्ताप सुख रासि मेकं।
अगमगति सन्तमुनिगान कृत सर्वदा पार नहिं तदपि मेकं अनेकं॥
बृहद अवतार बिस्तार भुव भार हर दलित दसमौलि अत्यंत पापी।
सदल सानुज ससुत सकल निर्मूल कृत तुच्छ से ,ताहि अगनित प्रतापी॥
बन्धु लंकेस कृत सहित हित बिसद जस भालु मर्कट अवसि परम भागी।
सिद्धि जोगीन्द्र मुनि ध्यान दुर्लभ जो प्रभु सुलभ अत्यन्त तिहुँ पुर बिरागी॥
कौसलामोद वर्धन बिवर्धन बिरद भूप दसरत्थ सुखप्रद अपारम्।
सकलकृत कृत्य पुरअवध वासी बिसद बन्धु चत्वारि महिमा मुदारम्॥
बाल लीला सुखद परम गंभीर रसमगन नर नारि पटतरन कोपी।
सुभग नख सिख परम सेप सारद थकित मदन सत कोटि लावन्य तोपी॥
मगन यहि ध्यान निर्बान पद गिनत नहिं लहहिं जे स्वपन ते धन्य प्रानी।
बनादास तन धरे को लाभ नीकं लहे भोग सुख अगम पर बुद्धि बानी ॥४४॥

राज रिषि वेप सिर जटा सोभा परम तून कटि जुवा हरि भुज बिसालं।
बृहद उर जज्ञ उपवीत भृगुचर्न बर अच्छ अरविन्द सुचितिलक भालं॥
सरद ससि बदन सुख सदन मर्कत बरन नासिका चारु सुक तुंड लाजै।
कंबुग्रीव अधर दिज अरुन मुसकानि मृदुकन्ध केहरि वृषभ अवसि छाजै॥

कम्बुकलग्रीव छबि सीव करकज बर नाभि गभीर त्रिबली निकाई।
जानु जुगपीन घन लसत रोमावली भाग निन्दत मृदन अधिक भाई ।।
कजजुगचर्न नख द्युति अनूप अवसि स्याम सुठि पृष्ठ तल अरुन नीके।
रेख अति चारु ध्वज कुलिस अकुस कमल ध्यान आनन्द रस सर्व फीके।।
बामदिसि जनक जापरम सोभा सदन सदन साति करुनानिधे अगमगाथा।
सकल सुर सिद्धि विधि इन्द्र आदिक नमित सूर समि राउगन लखि सनाथा ।।
जक्त उपजाय पालत हरत सहज मे राम रुख राखि बहु करत लीला।
बनादास जाको कृपा चहत जोगीन्द्र मुनि हेन बिस्राम जे मनन मीला ।४५।।

जयति आरत हरन सरन रघुबसमनि पील उद्धरन भवहरन नाम।
गीध सबरी स्वपच भील तारे जमन बमन कुनराज ऐस्वर्य राम ।।
रिपय मख रच्छ सुठि दच्छ प्रभु अनुज युत ताडुका सुभुज मद मम पापहर्ता।
जनकपुर माद वद्धन मथन भूपमद खडि कोदड भृगु गवनासा ।।
नृपति मिथिलस आनन्ददायक अवसि ब्याहि स्त्रीजानकी रूपरासी।
मुनिन आनन्दप्रद काकलाचन कदन सुगति सरभग मदन बिराधा ।।
दडकारन्य कृत नाथ पावन परम बहुरि निसिचरी करि रूप बाधा।
त्रिसिर खर दूपनादिक दनुज घात किये कनक मृग मर्दि मद मथन बाली ।।
राजसुग्रीव सघटबली मुख चमू पाय सुधि सीय दिमि लक चालो।
थापि गौरीस बाँधे जलधि सेतु सुठि लकगढ र्गसि दसमौलि हन्ता।
सुवन घननाद घटकर्न निर्मूलकृत सेन सजुक्त भे सद्य अन्ता ।।
धवल जस लोक तिहुँ सकल सुर गावते देहु पद कज रति सभु भाखे।
बनादास गदगद गिरा पुलक तन सजल दृग रामवस प्रेम रुख ईस राखे।४६।।

छप्पय

गये बिनय सिव भाषि बिभीषन तब कर जोरे।
कहत होत हिय सकुच नाथ ऐसी रुचि मोरे ।।
प्रभु धारियपुर पाँय कृतारथ जन को कीजै।
देखि खजाने भवन खिलति कसीन को दीजै ।।
तब बोले रघुबसमनि सकल सम्पदा मोरि है।
कह बनादास सूझन न कछु ताते तोहिं निहोरि है ।।४७।।

मोहिं भरत को सोच रह्यो दिन एक अधारा।
जियत न पावो बन्धु जाय जो टरि यह बारा ।।

सीस जटा कुस गात धरे मुनि वृत्ति अखंडा।
हारै मन बुधि खोजि नाहिं पटतर ब्रह्मंडा॥
निसि दिन सुमिरत मोहि सो जुग सम पलक सिरात है।
कह बनादास जातै मिलौ सद्य सो कीजै तात है॥४८॥

नाय सीस गृह गये बिभीषन किये उपाई।
भूषन मनि गन बसन धरे पुष्पक पर जाई॥
भारी भारी बस्तु जौन दसकन्धर जोरे।
सो लाये प्रभु पास देन हित कीसन कोरे॥
जाय गगन बर्षा करौ भै रघुबीर रजाय जू।
कह बनादास सोई किये अवलोकत दोउ भाय जू॥४९॥

मेलैं मानिक मुखन बहुरि सो भूतल डारैं।
पहिरैं कर को पायँ चरन को सीस सुधारैं॥
लूम लपेटैं बसन दसन ते नोचैं ताही।
देखि देखि दोउ बन्धु मुदित अतिसय मन माहीं॥
यहि विधि ते बख्सीस भै पहिरे मर्कट भालु हैं।
कह बनादास बोले तबै सब महँ राम कृपालु हैं॥५०॥

बोले बचन रसाल राम सहजे नैनागर।
नहि मुख जात बखानि काम जिमि किये उजागर॥
तुव बल जीते दनुज जनकतनया पुनि पाई।
लहे बिभीषन राज्य कहाँ लगि करिय बड़ाई॥
सकुचि कहत सब कीस गन भाषत इमि रघुराय जू।
कह बनादास किमि करि सकै केहरि ससा सहाय जू॥५१॥

कहाँ भानु को तेज कहाँ खद्योत प्रकासा।
हम केहि लायक नाथ सुनत सुठि लगत तमासा॥
सुनि करुनानिधि बचन गड़े हम सकुचन जाही।
परितोषे पुनि राम कथा बहु कहि तिन पाहीं॥
अब गवनहु आस्रमन सब सुमिरन मम सुठि सार है।
कह बनादास निसिदिन बिहेउ याही परम बिचार है॥५२॥

सुनत राम के बचन भये सब प्रेम अधीरा।
काल कर्म गुन बस्य अहै तन यह रघुबीरा॥

होवै जोग बियोग पाय देही सब काला।
जामे कछु बस नाहि निगम नित ही प्रतिपाला ।।
नाय नाय पद सिर चले हृदय राखि रघुनाथ है।
कहा बनादास बोलनि चलनि सुमिरत होत सनाथ है ।।५३।

लंकापति कपिराज रिच्छ अगद हनुमाना।
पुनि नल नील मयन्द द्विविद आदिक बलवाना ।।
अवलोकैं रुख राम प्रीति अतिही मन माही।
कहि न सकैं मुख कछू राम बोलै सब पाही ।।
बैठहु सब कोउ यान परम महामोद उर मे लहे।
कह बनादास आसीन भे जथाजोग जेहि जस चहे ।।५४।।

इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विपिन
खडे भवदापत्रयनापविभजनो नाम द्विचत्वारिंसोऽध्याय ।।४२।।

छप्पय

सिंहासन आसीन राम सिय बन्धु समेता।
सिव ब्रह्मादिक नमत भजत जेहि ऊर धरेता ।।
चोखो चलो बिमान कालाहल होत अपारा।
सियहि देखावत सकल इतै दसकन्धर मारा ।।
कहन कथा सब जुद्ध की जौनी जौनी बिधि भयो।
कह बनादास रावन प्रबल अपनी करनी ते गयो ।।५५।।

इहाँ हते घटकर्न लषन इत रिपु सुत मारे।
इहाँ अमित दल दैत्य कीस भालुन सहारे ।।
सेतु बाँधि सिय देखु करौ सकरहि प्रनामा।
बेगिहि चलत बिमान लखे किष्किन्धा रामा ।।
आये जहाँ अगस्त्य मुनि सब प्रसग रघुपति कहे।
कह बनादास तव कृपा प्रभु अजय दनुज ते जय लहे ।।५६।।

सच चले रघुबीर चित्रकूटहि पुनि आये।
बाल्मीकि ते मिले सकल परसग सुनाये ।।
आये तीरथराज अवध हनुमान पठावा।
कीन्हे प्रभु अस्नान भरद्वाजहि सिर नावा ।।
सक्षेपहि कहि कथा सब कोसलपुर बूझे कुसल।
कह बनादास बेगहि चले आये बहुरि निषादथल ।।५७।।

धायो केवट सुनत पर्‌यो महि लकुट समाना।
गै मनि पायो फनिक बिलग मीनहिं जल आना॥
बूझे प्रभु तब कुसल कहे पदपंकज पेखी।
तुम जीवन घन प्रान आजु मै कुसल बिसेखी॥
मिले लषन कपिराज तव लंकापति आदिक जबै।
कह बनादास रघुपति सखा किये भांति संयम सबै॥५८॥

सवैया

सीस जटा कृस गात कुसासन रामहिं नाम रहे लवलाई।
नैन सनीर हिये रघुबीर सरीर रही पुलकावलि छाई॥
दासबना उर सोचत हैं नहिं देखि परै रघुबीर अवाई।
औधि बिहाय रहैं तन प्रान कहा जग में यहि ते अघमाई॥५६॥

भूप समान तजों तृन से तन औधि में जो रघुनाथ न आये।
कूर कुसेवक जानि तजे मोहि राम रजाय नहीं लखि पाये॥
अन्तर्जामी लखें उर की गति तौ पुनि का बहु बात बनाये।
दासबना हनुमान हँसा लसि तौ उर में अतिहीं सुख पाये॥६०॥

घनाक्षरी

बिरह अनल करि तपत भरत हिय राम की कुसल कहि जल बृष्टि किये हैं।
हनूमान वारिद सदृम बर बैन कहे धान पान के समान हरे भये हिये हैं॥
सोक सरि डूबत मनहुँ जलयान भयो वचन सुखद जनु गहिबाँह लिये हैं।
बनादास उपमा न कवि उर अनुभवै पवनसुवन सुधा पाय जनु जिये हैं॥६१॥

सवैया

जा हित सोच करौ अभिअन्तर ते प्रभु लंक विजय करि आये।
बन्धु सियाजुत संग सखा बहु देव अनेक बिधा जस गाये॥
दासबना मन मोद कहै किमि गै मनि सो फनि मानहु पाये।
को तुम तात कहाँ सन आवत मोहिं महा प्रिय बैन सुनाये॥६२॥

राम गुलाम हों मारुतनन्दन नाम अहै हमरो हनुमाना।
ब्राह्मन रूप धरे अति सुन्दर धाय मिले प्रभु बन्धु सुजाना॥
भेंटत तृप्त नहीं उर मानत राम मिले ते बड़ो सुख जाना।
दासबना तोहिं देऊँ कहा तिहुँलोक में तुल्य न वस्तु पिछाना॥६३॥

राखु रितौ कपि म हिं निरन्तर अन्तर मानु नहीं निज ओरा।
देखो विचारि भले अपने उर सन्मुख होत नहीं मन मोरा॥
रामचरित्र सुनावहु मोहिं न तृप्त लहै चित ताते निहोरा।
दासबना हनुमान कहे सब बाढन प्रेम नये दुहूँ ओरा॥६४॥

घनाक्षरी

कबहुँ कृपालु मोहिं जानै निज किंकर से तब हनुमान जू सकल बिधि कहे हैं।
आपु से नरिस नाहिं कोऊ राम हिये माहिं लषन समीप सदा तेऊ जानि रहे हैं॥
कपिपति रिच्छराज लंकराज बूझे भले सुनत बचन कंज नैन जल बहे हैं।
वनादास चलन चहत रघुनाथ पास तब कर जोरि पदपंकज का गहे हैं॥६५॥

गयो कपि राम पास सकल प्रसंग कहे चले प्रभु यान चढ़ि बार नाहिं लाये जू।
करत मनोरथ अमित उर बार बार भरत अनन्द पुर कोसल को आयेजू॥
प्रथमहिं गुरु गृह जाय कै प्रनाम किये रामजू को आगमन तुरित सुनायेजू।
वनादास बहुरि महल माहिं बात कहे जननी सुनत रंक पारस ज्यों पाये जू॥६६॥

पाये पुर लोग सुधि धाये सब जहाँ तहाँ बालक औ वृद्ध दिसि भूलेहू न देखे हैं।
भई सोभा खानि पुर औध को बखानि सकै सरजू सलिल बनि आवै समै पेखे हैं॥
भूप देस देस के नेराय रहे ग्राम दिग चौदह बरष की अवधि किये लेखे हैं।
बनादास ह्वैहैं राज्यगद्दी राम आवत ही ताते उरमाहिं मोद बाढत बिसेखे हैं॥६७॥

नगर कोलाहल न समय बरनि जात तहाँ हेमथार आरतो सजत सुठि भामिनी।
दधि दुर्ब रोचन सुमन दल फूल नाना मंजरी औ लाजा साजि चली गजगामिनी॥
बिपुल अटारिन पै गगन बिमान देखै लाजै कलकंठ गावै मंगल को कामिनी।
बनादास रामाचार भये मन सबहीं के ताते नास भई सहजहिं भव जामिनी॥६८॥

बूझै एक एकन से देखैं रघुनाथ कहँ बिह्वल बचन सुधि बुधि न सँभारे हैं।
साजे सुभ आरती सुमित्रा न बरनि जाति लाजैं जाहि भारती हृदय मोद न्यारे हैं॥
नाना मंगलीक नाम कहाँ लौ गनावै कवि कंचन कलस भरि धरे सब द्वारे हैं।
वनादास राजे मनिदीप छबि भ्राजैं अति अवध अनन्द कहि सारदादि हारे हैं॥६९॥

चले साथ भरत क सुठि कृसगात लोग तपे राम बिरह न ताते धीर लहेजू।
लंकापति कपिराज रिच्छराज हनुमान अंगदादि बीरन ते रघुनाथ कहेजू॥
मेरी जन्मभूमि औध अति प्रिय मोहिं सदा उत्तर दिसा मे सरि सरजू से बहेजू।
बनादास मज्जन ते लहैं लोग चारि फल बसैं मम निकट न फेरि भव दहेजू॥७०॥

पावन परम रमनीक देस बिस्वाबीस अवध प्रभाव पुनि कोऊ जन जाने हैं।
बाद बकबाद तन स्वाद त्यागि नानाबिधि ताको मन फिरि कहूँ अनत न माने हैं॥

जन्मभूमि महिमा सुनत कपि महामोद जाको रघुनाथ निज मुख ते बखाने हैं।
वनादास अहोभाग्य मानि कृतकृत्य भये सोई अवध प्राप्ति नहिं मोमों कोउ आने हैं ॥७१॥

उतरो विमान भूमि धाय गुरु पाँय परे लकुट समान मुनिनाथ उर लाये हैं।
बूझत कुसल प्रभु कहे पदपंकज पेखि लपन समेत सब सखा सिरनाये हैं॥
मेरे कुल गुरु कहे कपिन ते बार बार इनके प्रताप जीति रावन से पाये हैं।
वनादास मुनिहिं सुनाये रघुवंसमनि समर समुद्र सेतु मोहिं पार लाये हैं ॥७२॥

वामदेव आदि बिप्र पाँय वन्दे रघुनाथ लपन सहित सब आसिष को दिये हैं।
लकुट समान परे भरत चरन प्रभु संकर विरंचि जाहि जोगी जन नये हैं॥
सजल नयन तन पुलक मगन मन बूझत कुसल तब प्रीतिजुत भये हैं।
वनादास बचन न आवत अतीव मोद लिये गोद राम दिसा दोऊ भानु गये हैं ॥७३॥

बाढे कंज नैन जल गाढ़े भेंटे लाय उर धीरज सँभारि कै भरत बैन कहे हैं।
भई आजु कुसल कृपालु करुनाजतन दीनजन जानि दिये दर्सन लहे हैं॥
बनादास लपन भरत भेंटे प्रीति अति रिपु दौन आये प्रभुकंज पाँय गहे हैं।
बहुरि लपन लघु भाई भेंटे लाय मन पटतर कौन प्रेम परवाह बहे हैं ॥७४॥

रामहिं बिलोकि मातु धरत न धीर उर धेनु लखि बत्सजनु प्रीति अतिभारी है।
घन पय स्रवत द्रवत लखि कुलिसादि सहज सनेह हरि भेंटी महतारी है॥
लिये उर लाय मनि मानहुँ फनिक लहे जैसे मीन बिलग सों आय जल डारी है।
वनादास बार बार देत हैं असीस बर पटतर कौन उर जरनि को जारी है ७५॥

भेंटे सब मातन लपन रघुनाथ पुनि मुनि सिरनाय सिय सासु पद लागी है।
हिय लाय लाय सब अवसि असीस देत समय बिचारे जड भये अनुरागी है॥
कपिराज रिच्छराज लंकपति अंगदादि वन्दे पद कौसला के सुठि बड़भागी है।
वनादास आरत अतीवपुर लोग देखे रघुवीर सबके बिरह आगि जागी है ॥७६॥

भये रूप अमित सबहिं छन माहिं मिले यह रघुवीर की न अधिक बड़ाई जू।
सब उरवासी सुखरासी घट कोटि माहिं एक भानु छाया जैसे स्तुति चारि गाई जू॥
पुष्पक सें कहे प्रभु जाइये कुबेर भौन हरप बिषाद तेहि अवसर में पाईजू।
बनादास बहुरि कहत रघुनाथ भये करे जब इच्छा तब आइये सदाईजू ॥७७॥

भयो तब सुखी राम प्रेरित गवन किये भवन चलत प्रभु अनुमान हिये हैं।
केकयी लजित जानि प्रथमहिं तहाँ गये सुठि सनमानि निज भौन मग लिये हैं॥
जानि सुभ घरी मुनि तबही बिचार किये अस्नान करन को राम आज्ञा दिये हैं।
वनादास सेवक हँकारे रघुवीर तब सखन अन्हवावन रजाय वेगि किये हैं ॥७८॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे।
विपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम त्रयस्चत्वारिसोऽध्यायः ॥४३॥

घनाक्षरी

भरत बुलाय कर कज अग्र राम खाल अन्हवाय भाई तीनि अम्नान किये जू ।
बहुरि वसिष्ठ सन बोले रघुबसमनि नृपराज निज ओर भरत का दिये जू ॥
परपरा सदा पितु राज्य देय पावै साई रुचि उत्पति भई जननी क हिये जू ।
बनादास बनगौन भयो याही हेत लागि काल गति बली खन सिया हरि लिये जू ॥७६॥

सक्ति लागि लषन के होहुँ ब्याल फाँसि बस कुभकर्न घननाद रावन को मारे हैं ।
भानु कपि सेन साजि उदधि म बाँध बाँधा हत बालि बाँदर निसाचर सँहारे है ॥
कारन सकल राज करत अकाज अति ईस न भजन माहि बीच सूठि डारे हैं ।
बनादास ज्ञान औ विराग भक्ति बाधक है साधन विषय कर अनरथ सारे हैं ॥८०॥

ताते विद्यमान जन सदा जाका त्याग किये राजन के रूप दुखदायक अतीव है ।
भूमि भोग हेत परे सकल विरोध अति जुद्ध भय सदा लोग जारे बहु जीव है ॥
द्रब्य पावै कारन नराज रहै सबै कोउ चिन्तावस बसुयाम औगुन के सीव है ।
बनादास जुद्ध माहि जूझे त्रिय दुष्टाचार जावै वन सकर वियाग भये पीव है ॥८१॥

तम रज त्यागि सतागुन मे प्रवृत्त होय पीछे गुनातीत परमारथ सो कह है ।
अमित प्रवाह रजागुन माहि देखि परै जाका चहो त्याग ताहि कौनी विधि गह है ॥
बिना टूटे वासना न कोऊ भवपार भया जौ लौ जग माहि तौ लौ सर्बअग दहे हैं ।
बनादास ब्यग्र चित्त रहै बसुयाम ही म राज करि काहू भाँति सुख नाहि लहे हैं ॥८२॥

जाके भुज सहस त्रिसकु सुरराज आदि काहि न कलक दिये राज्य मद नीचो है ।
तजै न दुर्गंधि लहसुन कोटि भाँतिन मे बनादास ताहि जा गुलाब नीर सीचा है ॥
साँपहि पियावै छीर विष न भुवग तजै काटि लेय घात पाय सद्य होत मीचो है ।
बनादास चौदह बरष को अभ्यास पर्‍या मनन निवृत्ति सन निकसत ईंचो हैं ॥८३॥

हिंसा बहुभाँति होत पापन के नाना अग आगे जम जानना टरत नाहि टारे हैं ।
सुख सर्बअग से निवृत्ति माहि देखि परै दोऊ लखि लिये ताते मनन सुखारे हैं ॥
याते महराज टीका भरत को देन जोग करन विचार उर बहु वार वारे हैं ।
बनादास मानहुँ जवास नीर पावस को परसत त्योही मुनि भरत दुखारे हैं ॥८४॥

बोले बामदेव औ वसिष्ठ आदि महामुनि राज्य दुर्लभ पद जग माहि जानिये ।
केते धर्मवान नृप गृहै माहि मुक्त भये अवही जनक आदि परत्यच्छ मानिये ॥
पालै परिवार प्रजा सदा राज्य नीति रत पाप ते विरनि तप जज्ञ आदि ठानिये ।
बनादास साधु गऊ द्विज गुरु देवज जै भजे वासुदेव ताहि मुक्त पहिचानिये ॥८५॥

छमा दया सत्य सील धीर औ विचार जुत समर में सूर देत रिपु उर पीर जू ।
पुन्यवान धर्म विष्नु भक्त औ अनघ नित सहज उदार महादानी मे सधीर जू ॥

सास्त्र औ पुरान बेद बिद उपकारी पर आलस रहित जित इन्द्रीधुर धीर जू।
बनादास ऐसो नृप दूषन को लाय सकै ताते मम बचन को मानौ रघुबीर जू ॥८६॥

तुव कुल माहि भये एक ते अधिक एक स्तुति औ पुरान जग जाको जस गाये हैं।
आपु सब लायक न उपमा त्रिलोक माहिं दसा देखि भरत की उर दुख पाये हैं॥
बनादास तात उठि सजहु सृंगार अंग कठिन ते राम गुरु पद सिर नाये हैं।
नखसिख सोभा खानि कोटि काम कानि हरै सोहै अंग भूषन को पार कहि पाये हैं ॥८७॥

मातु अन्हवाय सिया साजे नव सप्त अंग राम बाम दिसा पर आसन कराये हैं।
राजित सिंहासन पै देखि देव फून झरैं अति गह गही नभ दुन्दुभी बजाये हैं॥
नटैं कल किन्नरी अनन्द न अमात उर बनादास बार बार मंगल को गाये हैं।
बाजत निसान घमसान पुर सोभा खानि गावैं तिय सुठि कल कंठ को लजाये हैं ॥८८॥

प्रथम तिलक गुरु किये हैं कमल कर पुनि सब बिप्रन को आज्ञा हर्षि दये हैं।
नाना विधि द्विजन उचारे बेद मन्त्र किये भ्राजै अभिषेक भाल महामोद भये हैं॥
सकल असीस देहिं चिरंजीव राम सिय दान बहु जाचक न पार कौन लये हैं।
बनादास तिहूँ पुर सुख न बरनि जात भई राज्यगद्दी लंक जीति आय गये हैं। ८९॥

छप्पय

लंकापति कपिराज नील नल औ हनुमाना।
द्विविद मयन्द गवाच्छ पनस अरु कुमुद सयाना॥
दधिमुख और सुषेन रिच्छपति अंगद बीरा।
सुन्दर सोभा खानि धरे सब मनुज सरीरा॥
भरत लषन रिपु दौन जू आस पास सब कोउ खरे।
कह बनादास असि चर्म कोउ चमर छत्र कोउ कर धरे ॥९०॥

सूलसक्ति धनुबान बेजना कोउ कर ढारै।
कोउ खड़े बस प्रेम कृपानिधि नजरि निहारै॥
कनक छड़ी कोउ लिये कोऊ आसा कर धारे।
कोउ मोटा मुठि हाथ जहाँ तहँ फरक पुकारे॥
कौसल्यादिक मातु सब बार बार आरति करै।
कह बनादास लखि विधुवदन सो सनेह किमि कहि परै॥९१॥

निर्भर हर्ष अतीव मोद जललोचन कोना।
रोवत मंगल जानि मनहुँ दारिद को सोना॥

अतिही प्रेम अघोर रूप रघुवीर निहारी।
पुलकावली सरीर धीर धर पुनि महतारी॥
सुठि कोमल सुकुमार सिसु केहि विधि लकापति हते।
कह बनादास पुनि पुनि गुनत मुनि करुना आवत मत॥९२॥

पुरजन प्रजा समाज अवसि आनन्द भरे हैं।
सचिव सूर सरदार विविध बिधि दान करे है।
को कहि सकै अनन्द देस देसन के भूपा।
आय जाहारे राम नजरि लै भर अनपा॥
नेवछावरि बहुविन ि्य जननी अति मन लायकै।
कह बनादास भूसुर छकित जाचक लहे अघायकै॥९३॥

हय हीरा मनि कनक दान ब्राह्मन बहु पाये।
गो महिषी महि रजन कहाँ तक नाम गनाये॥
पट भूषन हथियार नाग रथ बहु बिधि याना।
पाय राम रुख दिये हर्षि बहु सचिव सयाना॥
अन्न असन बहुभाँति के पाटम्बर कम्बर घने।
कह बनादास जा कछु दिये नहिं कैमहु बर्नत बने॥९४।

पीछे चौदह बष अवधपुर रघुपति आये।
लका रावन जीति नहा सुख सकत समाये॥
सिंहासन आसीन भाल सुभ तिलक बिराजा।
यात आनँद अवध आजु रघुनन्दन राजा॥
सबै लुटावत वित्त को चित्त लाय रघुपति चरन।
कह बनादास लूटै हमैं बुद्धि चित्त औ अह मन।९५॥

आये चारिउ बेद भेष बरवन्दि बनाये।
पदपक्ज सिर नाय करत अस्तुति मन लाये॥
जय दिनकर कुल केतु जयति सुर सन्त उबारन।
जय गो द्विज प्रतिपाल भूमि को भार उतारन॥
जयति स्वबस अवतार बर रावनादि खल बन दहन।
कह बनादास जय अभय प्रद सरनागत सुठि कर गहन॥९६॥

जयति बालि मद मथन कीन्ह सुग्रीव कपीसा।
जय करुनाकर राम बन्धु रच्छक दससीसा॥

जय खर दूषन दलन कबन्ध बिराध बिभञ्जन।
जय दंडक बन सुद्ध करन मुनि गन मन रंजन॥
जयति गीध कैवल्य प्रद सबरी गतिदायक परम।
कह बनादास नत पद पद्म जय जय जन रच्छक सरल॥९७॥

जयति सच्चिदानन्द ब्रह्म व्यापक जग स्वामी।
आदि अन्त मधिहीन सकल उर अन्तर्जामी॥
जय जय अमल अखंड अगम अद्वैत अनामय।
अलख अगोचर अगम अयोनी सुचि करुनामय॥
जयति अन्त कैवल्य प्रद निरालम्ब निर्द्वन्द्व निति।
कह बनादास आभास चिद अति अगाध को लहै मिति॥९८॥

जयति सुद्ध निरबद्द सत्व सर्वज्ञ समाना।
परिपूरन चैतन्य जासु गति काहु न जाना॥
पुरषोत्तम परधाम सान्त निर्गुन अविनासी।
अज उत्कृष्ट अनादि ईस अतिहो सुखरासी॥
बिरुज बिलच्छन बिगत सब बृहद सूक्ष्म तारन तरन।
कह बनादास निर्बान बर बिरद सदा असरन सरन॥९९॥

प्रकृति पुरुष महतत्त्व सूत्र इन्द्री सुर सारे।
महि अपतेज अकास अनल जहँ लै बिस्तारे॥
पंच प्रान गुन तीनि बुद्धि मन चित्त हँकारा।
सब्द अस्परस रूप गन्ध जानो संसारा॥
एक तुमहिं दूजा नही सदा बिचारहिं तत्त्वविद।
कह बनादास सब ते बिलग रूप बिलच्छन अवसि चिद॥१०००॥

जाकर पग पाताल सीस चतुरानन धामा।
मन ससि लोचन भानु मेघ जाको कच स्यामा॥
अहंकार सिव बुद्धि जासु बिधि जाको गावै।
अस्थि सैल बन राम लोक बहु अंग कहावै॥
लोभ अधर जम जेहि दसन माया हास अनूपजू।
कह बनादास दिगपाल भुज सरनागत नृत भूपजू॥१॥

नाम तूल अघ दलन मूल साधन सिधि केरा।
अगुन सगुन दोउ बोध करत लागै नहिं देरा॥

विधि निषेध परिहरै सकल साधन न बिहावै।
करम बचन मन सदा एक नामहिं लव लावै॥
सो जन जीवन मुक्त है आस बासना जिन तजे।
कह बनादास सकल्प दृढ करि जो केवल हरि भजे॥२॥

तप तीरथ व्रत नेम जोग जज्ञादिक भटकै।
नाना नेम अचार पाठ पूजा मे अटकै॥
पुन्यदान कोउ फँसे स्वर्ग हित करै कमाई।
जबहिं छीन ह्वै जाय परै भूतल महराई॥
जान्यो सब सिद्धान्त तिन राम नाम लवलावते।
कह बनादास प्रभु पाहि पद सदा सरन गुन गावते॥३॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभजनोनाम चतुचत्वारिंसोऽध्याय ॥४४॥

छप्पय

वेद गये विधि धाम बहुरि आये सुर सर्बा।
विद्याधर किम्पुरुष और चारन गन्धर्बा॥
सिद्ध महोरग पितर साजि सम्मल सब भाँती।
गुह्यक किन्नर यच्छदेव अप्सर बहु जाती॥
नृत्यगान नाना करैं बाजा विविध बजावते।
कह बनादास अधिकार प्रति श्रीरघुबरहिं रिझावते॥४॥

को जानै केहि भेद मगन आनद सब काहा।
जथाजोग्य आदरहिं सबहिं पुनि पुनि सिय नाहा॥
जयति जयति रघुनाथ वाम दिसि सोभित सीता।
सिंहासन आसीन रूप की रासि विनीता॥
वारै कोटिक काम रति मति मानै तबहूँ नहीं।
कह बनादास स्तुति सारदा थकहि सेष चारैं कही॥५॥

भ्राजत भाल बिसाल तिलक सोभा की सींवाँ।
को कवि पटतर लहै जासु मनि लहै अतीवाँ॥
जनु दामिनि घन माहिं रही तजि चचल ताई।
पीत अल्पजुग रेख चारु चिन लेन चोराई॥
सीस मुकुट रबि बाल से वारु चन्द्र मन मोहई।
कह बनादास कुंडल कनक हलन स्रवन सुठि सोहई॥६॥

दीर्घ अच्छर अरबिन्द बंक भ्रुव पटतर को है।
जेहि दिसि परै स्वभाव होत हिय भय जुत सो है ।।
मन्द मन्द मुस्कात ताहि लगि राम सुजाना।
लेवै चितहि चोराय फेरि नहि कहु मन माना ।।
सील धाम रघुबंसमनि सब दिन सुर रच्छक हरे।
कह बनादास करुनाजतन कमल चरन सरनन परे ।।७।।

आनन सरद मयंक दसन दाड़िम द्युति लाजै।
अधर अमीरस भौन अरुन अति हो छवि छाजै ।।
मर्कत द्युति बरक्रान्ति नील जल दाभ लजावत।
कीर तुड नासिका कहे सुठि लघुता पावत ।।
कम्बुग्रीव सोभा सदन वदन कोटि सौंदर्य है।
कह बनादास चोरत चितहि राम रूप रस वर्य है ।।८।।

चिबुक चारु चित हरै कन्ध हरि अधिक मोहाये।
बृहद भुजा उर अवसि माल मुक्ता छबि छाये ।।
मर्कत गिरि ते धार किधौं गंगा की आई।
किधौं स्याम घन निकट रही बग पाँति उड़ाई ।।
बसन बिलच्छन क्रान्ति बर पीत तड़ित सकुचात है।
कह बनादास जामा लसत लखि लखि मन ललचात है ।।९।।

कर कंकन केयूर मुद्रिका करज बिराजै।
पीत जज्ञ स्रीवत्स चरन भृगु अति छबि छाजै ।।
त्रिवली उदर अनूप नाभि अतिहो गंभीरा।
जमुन भँवर छबि छीन लखे मन धरत न धीरा ।।
सोभित सुठि मृगराज कटि जानु पीन रोमावली।
कह बनादास लाजित जिन्हैं काम तून सुठि मन छली ।।१०।।

कमल चरन बर क्रान्ति नखन तारागन लाजैं।
ह्वै अलि मन जोगीन्द्र जहाँ निसि दिवस बिराजैं ।।
बामदच्छ दिसि धरे तून कोदंड सोहाये।
राखे असि औ चर्म समोपहि सोभा पाये ।।
तरु तमाल बेली कनक लसत सिया उपमा किते।
कह बनादास बामें दिसा जाने जिन यहि बिधि चिते ।।११।।

वारे रति औ काम कोटि तन सुन्दरताई।
हारे सारद सेस गनेसहु बरनि न पाई ।।

कवि कोविद का कहै काह सुर बरनै सारे।
जाके उर जस भाव सकल बिधि सो विस्तारे ।
बार बार माँगत हृदय बसहु जानकी रामजू।
कह बनादास करि विनय को गे सुर निज निज धामजू ॥१२॥

आये तब सुरराज हृदय अति मोद बढाये।
लखा न काहू मम करत अस्तुति मन लाये॥
जयति जयति अवधेस रमेस सुरेन्द्र इन्द्रवर।
जय दिनकर कुलकेतु हेतु को लह महि माकर॥
जय महेस मन मान सरब सत निरन्तर हँसहो।
कह बनादास रघुकुल कुमुद इन्दु अवसि अवतंस हो॥१३॥

जयति दलन दसमौलि औलि निसिचर सहारन।
जय माया मद मथन मोह ममता सरितारन ।
कामक्रोध पाखड दभ करि मान बरुत्था।
जयति राम मृगराज बाज बढई खल जुत्था।
जयति जयति दसरथ सुवन भर्त्ता त्रिभुवन गुन गहन।
कह बनादास दुख दीनता दूषन अघ दारिद दहन॥१४॥

जय महेस कोदड खड भुज चड अतुल बल।
जय भृगुपति मद कदन मान नासक भूपन दल॥
जय नासक नृप सोक जनकपुर आनददाता।
त्रिभुवन जय जानकी ब्याहि आये जुत भ्राता॥
जय जय पालक सेतु स्नुति सुर रजन भजन बिपति।
कह बनादास जन धन्य ते जाहि न सपनेहुँ आन गति॥१५॥

जयति कौसला गोद नृपति सुख सदन बिहारी।
जय स्वच्छन्द अवतार भूमि को भार उतारो॥
मुनि मख रच्छक दच्छ ताडुका सुभुज बिदारन।
जयति पाप सन्ताप साप मुनिवधू उधारन॥
कौसलपुरबासी सुखद निसिदिन बर्द्धन रामजू।
कह बनादास सियवाम दिसि सोभा सत रति कामजू॥१६।

फँसेमान मर्जाद भूलि सुरराज कहाये।
सदा बिषय लवलीन भक्ति मय हरनि भुलाये॥

कूकर सूकर करैं विषय को पाय सरीरा।
साधहिं ज्ञान विराग भजहिं प्रभु को मुनि धीरा॥
जोग जज्ञ जप तप करै साधन भाँति अनेक है।
कह बनादास इन्द्री दमन त्यागत भोग अनेक है॥१७॥

मृषा गई यह देह भजन सुमिरन ते हीना।
लोलुप इन्द्री स्वादु भये दिन ही दिन दीना॥
कृपा करौ निज ओर जानि खोटो जन देवा।
कछु लायक नहिं भये करैं जो तुम्हरो सेवा॥
अधम उधारन बिरद है अगनित पतित न गति दई।
कह बनादास रघुवंसमनि चरन सरन बातन लई॥१८॥

आये तबहिं बिरंचि जबहिं सुरराज सिधाये।
रघुपति चरन सरोज प्रीति जुत मस्तक नाये॥
जय जय दसरथ सुवन भुवन भर्त्ता पितु माता।
जयति कोसलाधीस ईस बिधि आदि विधाता॥
जयति स्ववस अवतार नर हरन हेत भुव भारजू।
कह बनादास गुन गाथ अकथ वेद न पावहिं पारजू॥१९॥

जयति मीन बाराह कमठ नर हरि जग स्वामी।
जय बावन बलि छल न परसु घर अन्तर्जामी॥
रघुकुल कमल दिनेस जयति जय मंगल कर्ता।
उत्पति पालनहार भार भूतल भवहर्ता॥
जयति बोध विज्ञान धन कृष्न कंस मर्दन करन।
कह बनादास कलकी कला परम बिसद असरन सरन॥२०॥

जयति नाभ जल दाभ जयति छीराब्धि निवासी।
जय नायक वैकुंठ रमापति घट घट बासी॥
पुरुषोत्तम परधाम परम उत्कृष्ट सरूपा।
वासुदेव बर देत चराचर रूप अनूपा॥
जयति सच्चिदानन्दघन परब्रह्म पावन परम।
कह बनादास कैवल्य प्रद रच्छक नित सन्तन सरम॥२१॥

जय जय बाल बिनोद मोद कौसला विवर्धन।
जय दसरथ आनन्द सगुन सुख परम अतर्धन॥

अवध निवासी प्रेम पीन पावस जिमि दादुर।
हरे भूमि को भार सुखी द्विज भये सन्तसुर॥
जयति जयति सीता रमन दया भवन दारिद दवन।
कह बनादास कामादि खल सोक मोह समय समन॥२२॥

हरन पाप परिताप महा भव दाप निवारन।
आस त्रास ईर्षादि बृहद वासना बिदारन॥
दम्भ कपट पाखड मान ममता मदगजन।
रागद्वेष विधि अविधि सन्तजन विपति बिभजन॥
जयति भक्त बैराग्यप्रद ज्ञान और विज्ञानघन।
कह बनादास जन कल्पतरु दानि सान्ति सुखमा सदन।२३।

जय इन्द्रीदुख दरन हरन मानसिक बिकारन।
बोध बिबर्द्धन राम जनन समता बिस्तारन॥
दानिसील सन्तोष धीर साधुता सुराई।
सहन सरल गतमान गरीबी कामद गाई॥
बिपुल कल्पना काल भय नासक परम सुजान हौ।
कह बनादास करुनाअतन कृपा के कृपानिधान हौ॥२४॥

ह्वै ब्रह्मा का किये नाथ तव भक्ति भुलानी।
निसिदिन रटे न नाम नीच मति पुनि अभिमानी॥
छमहु सकल अपराध करौ अपनी दिसि दाया।
बनी न कछु तन पाय डरत तव दुस्तर माया॥
बार बार पद सीस धरि चतुरानन धामहि गये।
कह बनादास अवसर निरखि तव महेस आवत भये॥२५॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिपिनखण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम पचचत्वारिंसोऽध्याय ॥४५॥

दण्डक

जयति ब्रह्मेन्द्र चन्दार्क सुर सिद्धिगन रुद्रदायक विभव बिस्वभर्ता।
जक्त कारन करन अखिल तारन तरन पील उद्धरन जन बिपतिहर्ता॥
स्वर्ग अपबर्ग पति बिरति विज्ञान प्रदमृत्यु जमकाल अज्ञानुवर्ती।
मत्स्य नरसिंह बपु कमठ मारन कठिन बृहद् बल अतुल उद्धरनधर्ता॥

सेष मरुदग्नि जलरासि भयजुक्त नित प्रबल बल परसुधर छत्रिहन्ता।
बाँधि बलि ब्यक्त वामन पराक्रम महा इन्द्र उपकार सुख भरन सन्ता॥
दलित दसमौलि दसरत्थ सुत बाँकुरे खंडित पाखंड बुध ज्ञान रूपा।
रसिक सिरताज स्रीकृष्न करुनाभवन दवन कलि कालकलि की अनूपा॥
पुरुष पुरान नाना चरित स्ववस कृतकार्य्य कारन निरखि सर्बकालं।
बनादास बिस्वेस्वर बिस्व बिग्रह बिरद बदत चहुँबेद हर जगत जालं॥२६॥

देवदास दुर्बेसन हरि बासना बिपुल हति आस निर्मूल कृत अभयदाता।
सोक सन्ताप भवदाप दलि सर्बदा पाप पर्वत कुलिस सदृस घाता॥
खेद भवन कदन हित कुसल करुनाजतन सन्त गति साधि चरनानुरागी।
सर्बबल त्यागि रहे लागि तव नाम नित भागि मतवाद निसि मोहजागी॥
जननि पितु सदृस रच्छक सकल काल प्रभु तिनहिं गति दूसरी नास्ति कोपी।
सदा आनन्द निर्भर मगन प्रेमरस दूसरी चाह नहिं स्वपन सोपी॥
बिमुख तव पाद बर्बाद लहि सुभग तन देव नर बपुप किल कार्य सारे।
कर्म मन वचन सर्बास परित्याग करि अहर्निस हृदय नहिं हरि सँभारे॥
विषय रस मूढ आरूढ भव सर्वदा जननि पादप जुवा सुठि कुठारं।
स्वान सूकर सदृस भये तत्पर सदा सिस्नु अरु उदर पर भूमि भारं॥
धन्य पितु मातु धरनी नगर ग्राम पुर जत्यत्र पद भक्त अवतरत आई।
बनादास कुल अमित उद्धारकृत सद्यहो तेपि कैवल्य तन याहि पाई।२७॥

जयति स्रीसच्चिदानन्द विग्रह सगुन अगुन सृंगार श्रीराम राया।
सर्ब अवतार सिरमौर दसरथसुवन भुवन नौकाय छन रचित माया॥
सिद्धजोगीन्द्र सुरबृन्द्र सेवित चरन हरन भवभार जन नाम मेकं।
तीर्थब्रत जोग तप नेम आचार मख स्रमित कुर्बन्ति साधन मनेकं॥
वहत श्रम पाथ गुनगाथ न च गान कृत सेत भवसिंधु कल्यान धामं।
कामधुक त्यागि अनुरागि हित आंक पै सर्ब साधन न फल दानि नामं॥
सियादिसि वाम रति काम कोटिन लजित सेष सारद थकित कहत सोभा।
भाल अभिषेक आसीन सिंहासनं ध्यान कल्यान भाजन न को भा॥
लसत प्रति अंग भूषन मनोहर मदन गौर स्याम चित हरन जोरी।
अरुन सुठि चूनरी पीन अनुपम असमि कनक तमाल जनु एक ठोरी॥
दाप लंकेस दलि बिजय पावन परम बिदित त्रैलोक सुर संत गावैं।
थकित स्रुति सारदा सेषगन अधिप अति नारदादिक किमपि पार पावैं॥
तेपि अति धन्य सपनेहुँ कदपि काल लहि राम सिय रूप निर्बानदाता।
बनादास सर्वांग फल लहे जग जन्म को वेद बिख्यात जग जनक माता॥२८॥

देव आदि मध्य अन्त नहिं वदत स्रुति सन्त तव सच्चिदानन्द परब्रह्ममेकं।
अजित अवच्छिन्न निर्वान निर्द्वन्द्व घन अनघ अद्वैत महिमा मनेकं॥

गूढ़ गंभीर गोतीत परधामप्रद पुरुष पुरान चर अचर बासी।
नित्य चैतन्य परिपूर्न पावन परम सर्व आधार गुन सकल रासी ।।
प्रकृति परपुर्ष परमातमा परमपद अकल कूटस्थ कैवल्य रूपा।
सान्त बिज्ञान घन ज्ञेय ज्ञानम्पृथक मेक महि माति अद्भुत अनूपा ।।
सुद्ध निर्बंध्य अज अलख आकामवत हरित नहि पीत नहि स्वेत स्यामा।
जुवा नहि बाल नहि बृद्ध नहि लघु ऊँच नहि नीच नहि पुरुष बामा ।।
दीनदुर्गति दरन साधु ससय हरन बोध गम्यन स्वरूप ज्ञेय ज्ञाता।
नित्य नरम दबिरद ब्रिदित बिरदावली बेद बिख्यात सुचि धेय ध्याता ।।
नेर नहि दूरि निर्गुन निरालम्ब अति ब्रिरुज बिस्येप स ुति नेति गावै।
बनादास सोई अवधपतिभुवन करुनाजतन देहु निज भक्ति भव हरनि भावै ।।२९।।

कुंडलिया

बरनि सम्भु रघुपति बिनय हर्षित गये निज धाम।
तब सब सखन देवायऊ बास अवसि अभिराम ।।
बास अवसि अभिराम राम सकल उर अन्तर्जामी।
जाकी जसि रुचि रही किये सो पूरन स्वामी ।।
बनादास जोगवत मनहि भरत लषन औ राम।
बरनि संभु रघुपति बिनय हर्षि गये निज धाम ।।३०।।

प्रभु नेवछावरि पायकै जाचक भये निहाल।
दान अघाने बिप्रजन काको कहै हवाल ।।
काको कहै हवाल सूर सेनप बहु तेरे।
जे रघुपति के सखा रहे सेवक हरि केरे ।।
बनादास दीन्हें सबहि बचे बृद्ध नहि बाल।
प्रभु नेवछावरि पाय कै जाचक भये निहाल ।।३१।।

हय हाथी हथियार रथ दीन्हे अगनित यान।
भूषन बसन बिचित्र सुठि को करि सकै बखान ।।
को करि सकै बखान तियन दीन्हे पहिरावा।
बूझि बूझि सुत सचिव हृदय जाके जस भावा ।।
बनादास निज निज हृदय पाये अतिसय मान।
हय हाथी हथियार रथ दीन्हे अगनित यान ।।३२।।

पुरबासिन की प्रीति लखि भायप भाइन केर।
लंकापति कपिपति भये दीपक भवन उजेर ।।

दीपक भवन उजेर रहे अचरज को खाई।
हुते आप ही आप अँधेरे को सुख पाई।।
बनादास आये अवध मिटो हृदय को फेर।
पुरबासिन की प्रीति लखि मायप भाइन केर।।३३।।

जात न जानहि दिवस निसि भूले परमानन्द।
सुर दुर्लभ भोजन करें लखि रघुपति मुखचन्द।।
लखि रघुपति मुखचन्द तियासुत भवन भुलाने।
गये मास षट बीति परे काहुहि नहि जाने।।
बनादास ऐसे प्रभुहि भजहिं न ते मतिमन्द।
जात न जानहि दिवस निसि भूले परमानन्द।।३४।।

प्रभु रुख अवलोकत रहैं पल से दिवस सिरात।
राम सगाई छोड़ि कै कहाँ मातु पितु भ्रात।।
कहाँ मातु पितु भ्रात सकल माया को जाला।
कोऊ न आवै काम गहै जौने दिन काला।।
बनादास तबहीं लखे उरबासी हिय बात।
प्रभु रुख अवलोकत रहैं पल ने दिवस सिरात।।३५।।

भूषन बसन विचित्र तव मँगवाये रघुबीर।
लंकापति कपिराज हैं जामवन्त मति धीर।।
जामवन्त मति धीर नील नल आदिक बीरा।
भरत लषन रिपुदवन हुकुम दिये सुवन समीरा।।
पहिरावत सबको भये भरे बिलोचन नीर।
भूषन बसन विचित्र तव मँगवाये रघुबीर।।३६।।

भर्यो कुम्भ जनु प्रेम जल अंगद दसा निहारि।
कछु न कहीं रघुबंसमनि राखे मनहिं सँभारि।।
राखे मनहि सँभारि कहे प्रभु तव मव पाहीं।
जो सुमिरै नित माँहि बिलग तिनते मैं नाहीं।।
ताते दृढ भक्ती कियो अतिसय हृदय हमारि।
भर्यो कुम्भ जनु प्रेम जल अंगद दसा निहारि।।३७।।

बिदा भये तव सब कोऊ राम चरन सिरनाय।
पुनि अंगद बोलत भयो जुत सनेह बिलखाय।।

सुत सनेह बिलखाय बालि सौंपे गहि बाही।
मो कहँ मरती बार ठौर ताते कहुँ नाही॥
वनादास घर जानहित मोहि न कहो रघुराग।
बिदा भये तब सब काऊ राम चरन सिरनाय॥३८॥

बालक बुद्धि अयान अति राखो सरन सुजान।
दीन जानि जनि त्यागिये करुनाकर भगवान॥
करुनाकर भगवान नीच कारज गृह करिहौं।
चरन कमल अवलोकि घोर भवसागर तरिहौं॥
वनादास कोमल अवसि भे प्रभु कुलिस समान।
बालक बुद्धि अयान अति राखो सरन सुजान॥३६॥

निज तन मनि भूषन बसन पहिराये प्रभु हाथ।
बहु प्रकार समुझाय कै बिदा किये रघुनाथ॥
बिदा किये रघुनाथ भरे जल पंकज नैना।
सजल नयन सुत बालि समय उपमा कहुँ हैना॥
बन्दि चरन अगद चल्यो हृदय राखि गुनगाथ।
निज तन मनि भूषन बसन पहिराये प्रभु हाथ॥४०॥

भरत लषन रिपुदवन जू पवनतनय जुत जाय।
बिदा किये सब कपिन को हनोमान बिलखाय॥
हनोमान बिलखाय वचन कपिपति सो भाषा।
प्रीति सहित कर जोरि रहो उर की अभिलाषा॥
वनादास कछु काल मे देखि हौं पुनि प्रभुनाय।
भरत लषन रिपुदवन जू पवनतनय जुत जाय॥४१॥

सुकृत सीव हनुमान तुम सेवहु प्रभु पद जाय।
साधन ते सिद्धी मिलै साधन अवसि नसाय॥
साधन अवसि नसाय हृदय सकोच निहाई।
अति प्रसन्नता मोरि रहो रघुपति लवलाई॥
वनादास सब कोउ चले हिये प्रेम सरसाय।
सुकृत सीव हनुमान तुम सेवहु प्रभुपद जाय॥४२॥

राम मिलनि बोलनि चलनि चितवनि लिय चित चोरि।
यम पीजरा खग जथा नहिं कछु काहुहि मारि॥

नहिं कछु काहुहि खोरि जीव परबस सब काला।
आये सबै पठाय जहाँ रघुबीर कृपाला॥
बनादास सबकी दसा कह हनुमान बहोरि।
राम मिलनि बोलनि चलनि चितवनि लिय चित चोरि॥४३॥

प्रेम बिबस रघुपति भये सुनत सखा अनुराग।
जाहि सगाई राम से ताकी पूरन भाग॥
ताकी पूरन भाग भये रघुपति समबन्धी।
को अवलोकन हार अहै ताकी मति अन्धी॥
काल कर्म गुन सब बिघन तब सिर पीटन लाग।
प्रेम बिबस रघुपति भये सुनत सखा अनुराग॥४४॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विपिन खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम षष्ठचत्वारिंसोऽध्यायः॥४६॥

कुंडलिया

लीन्हे बोलि निषाद पुनि दीन्हे बसन प्रसाद।
बिदा किये रघुपति तबै भो अति हृदय अवाद॥
भो अति हृदय अवाद भरत लछमन ज्यों भ्राता।
त्यों तुम मेरे तात रहेउ पुर आवत जाता॥
बनादास प्रभु कृपा दृग मेटे कोटि विषाद।
लीन्हे बोलि निषाद पुनि दीन्हे बसन प्रसाद॥४५॥

फिरी दोहाई बिस्व में भये भूप रघुनाथ।
तापर सुठि सोभा भई काटे रावन माथ॥
काटे रावन माथ किये सुर साधु सुखारी।
गो द्विज अवसि अनन्द भूमि को भार उतारी॥
बनादास तिहुँ पुर भयो सकलौ अंग सनाथ।
फिरी दोहाई बिस्व में भये भूप रघुनाथ॥४६॥

पुरजन प्रजा अनन्द अति अवधपुरी सुख खानि।
लखि लखि सील स्वभाव प्रभु सबहि प्रीति सरसानि॥
सबहि प्रीति सरसानि प्रानधन जीवन रामा।
नहीं अनत अस्नेह मगन हरि पूरन कामा॥
बनादास समुझे बनै दुख सब अंग हेरानि।
पुरजन प्रजा अनन्द अति अवधपुरी सुखखानि॥४७॥

सिया पिया अनुकूल अति को कहि पावै पार।
प्रीति परस्पर दोउ दिशा सकलौ गुन आगार।।
सकलौ गुन आगार राम सेवावस कीन्ही।
नाह नेह नित वृद्धि रहति प्रभु मानस लीन्ही।।
सेवत सामुन सर्बअंग देवर कृपा अगार।
सिया पिया अनुकूल अति को कहि पावै पार।।४८।।

मातु महा आनन्द मन निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह ते तृप्त नहि नीर धान ज्यों पान।।
नीरधान ज्यों पान सदा बिधु बदन बिलोकत।
रघुपति भाइन सहित न जरि जननिन अवलोकत।।
बनादास सुकृत अवध को करि सकै बखान।
मातु महा आनन्द मन निसिदिन जात न जान।।४९।।

भरत न देखे नजरि भरि कबहुँ केकई मात।
नहि मुख भरि बोले बचन छूटि गयो जनु नात।।
छूटि गयो जनु नात राम नितही रुचि पाली।
जाते सपनेहुँ माहि सुरति जनि करै कुचाली।।
जो कीन्हे रघुपति अहित सो अनलहु ते तात।
भरत न देखे नजरि भरि कबहुँ केकई मात ५०।।

अवलोकहि रघुपति नजरि तिहूँ बन्धु दिन रैन।
जाते फरमावैं कछू पावैं उर अति चैन।।
पावैं उर अति चैन राम भाइन रुचि पालै।
ऐसो करि जग कौन लहै पटतर जो कृपालै।।
बनादास रच्छा करै ज्यों पलकैं दोउ नैन।
अवलोकहि रघुपति नजरि तिहूँ बन्धु दिन रैन।।५१।।

कीन्हे प्रभु गुरु भक्ति बस ते जलते ज्यों मीन।
सचिव सखा सेवक सुभट राम स्वबस सब कीन।।
राम स्वबस सब कीन गये बिन दाम बिकाई।
सबके सर्ब सनाथ भूलि कहुँ चित्त न लाई।।
बनादास प्रभु मेय को द्वार दूसरे दीन।
कीन्हे प्रभु गुरुभक्ति बस ते जलते ज्यों मीन।।५२।।

बरनाश्रम निज निज धरम पालक मन बच काय।
काहुहि सपनेहुँ भूलि कै अधरम नहीं सोहाय।।

अधरम नहीं सोहाय एक पत्नीव्रत लोगा।
सकल नारि पतिव्रता भूलि निज भावन भोगा॥
बनादास पितुभक्ति सुत जग न दीख अन्याय।
बरनाश्रम निज निज धरम पालक मन बच काय॥५३॥

चलि सुधरम सब कोउ सुखी नहिं भय रोग न सोक।
नहि दरिद्र अज्ञानबस आनँदमय तिहुँ लोक॥
आनँदमय तिहुँ लोक भूप रघुबीर बिराजा।
प्रजापाल रत नीति कौन करि सकै अकाजा॥
बनादास नरनारि सुर संत दिवस ज्यो कोक।
चलि सुधरम सब कोउ सुखी नहिं भय रोग न सोक॥५४॥

करें परस्पर प्रीति सब बिषमाई बिसराय।
सर्ब जीव निर्बैर जग भेद नहीं दरसाय॥
भेद नहीं दरसाय देहिं बारिद जल माँगे।
मनभावत पय धेनु मोह निसि जोगी जागे॥
बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़ भक्ति हृदय सरसाय।
करहिं परस्पर प्रीति सब बिषमाई बिसराय॥५५॥

प्रगटी मनि गिरि आकरन सरितन जल गंभीर।
स्वाद सुहावन त्रिबिध बह नितही सुखद समीर॥
नितही सुखद समीर धीर छत्री रन सूरा।
को कवि बरनै जोग्य कृपा ते ब्राह्मन पूरा।
कुसुमित फलित सुपल्लवित बिटप राज रघुबीर।
प्रगटो मनि गिरि आकरन सरितन जल गंभीर॥५६॥

रघुपति सील स्वभावगुन सारद लहै न पार।
गननायक अतिही थकित जाके बदन हजार॥
जाके बदन हजार सुजस निसि वासर गावे।
चारि बेद कह नेति अमित कवि कोबिद ध्यावे॥
बनादास मुनि सिद्धि सुर बरनै बारम्बार।
रघुपति सील स्वभाव गुन सारद लहै न पार॥५७॥

कहत कहत सब कोउ थका देखि परत मंझधार।
कहा करत हौवा करत तिहूँ काल ब्यवहार॥

तिहूँ काल ब्यवहार राम को सहज सरूपा।
मन बुधि बानी पार अगम है अतिहि अनूपा॥
बनादास अवकाति को अति मतिमद गवाँर।
कहत कहत सब कोउ थका देखि परत मँझधार॥५८॥

छप्पय

मान प्रतिष्ठा भयो जासु अतिसय जग माही।
देखन के गज दसन ताहि मे ससय नाही॥
आसबासना त्यागि रहे नामहि लवलाई।
ते कचन के दाँत देह ममता बिसराई॥
निर्जन मे रुचि सर्बदा एक राम से काम है।
कह बनादास भूले भरम भले बिधाता बाम है॥५६॥

सवैया

ब्याध सो बाल कुरंग कहै मोहि मारि कै खाल पै बीन बजावैं।
मीन बिछोह भयो जल से तन त्यागत ने ग्हू बार न लावैं॥
चन्द्र सो डीठि चकोरन टारत चातक स्वाति सो नेह लगावैं।
दासबना जन राम को ह्वै दिसि और बिलोके कहा बनि आवैं॥६०॥

कज प्रफुल्लित देखि उदै रवि बारिद तेन मजोर अघावैं।
नाह सनेह सती तन त्यागत जुद्ध मे सूर कटे सुख पावैं॥
सूमहि दाम है प्रानहु ते प्रिय क्यो बिषयी तिय ते लव लावैं।
दासबना जन राम को ह्वै दिसि और बिलोके कहा बनि आवैं॥६१॥

कुडलिया

माँगे प्रथमहि ग्रन्थ मे दोऊ रूप को लाह।
सुनवाई अतिसय किये सो मुख कहिये काह॥
सो मुख कहिय काह मोहि गहि बाह उबारे।
सकल अग से हीन कौन निज आर झ्पारे॥
अब कछु इच्छा ना रहो बनादास गे दाह।
माँग प्रथमहि ग्रन्थ मे दोऊ रूप को लाह॥६२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथन उभयप्रबोधकरामायणे बिपिन खण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम सप्तचत्वारिसोऽध्याय॥४७॥

पंचम—विहार खण्ड

कवित्त घनाक्षरी

याको न बिलोकि परै पाप काहू जीवन के दफदर देखि जमराज भो बेहाल है।
जरो जात काल जाल ढरो जात देव विघ्न काहू भांति कलि कौन चलत कुचाल है ॥
कहत गो चित्र चित्र करै अब कौन काम खाली परे नर्क कुड अति बिकराल है।
बनादास फारि दे फरद रोज नामा कर नाम को प्रताप भो प्रगट कलिकाल है ॥१॥

कौन ऐसो नर तन धोख्यो न वहत राम ताको दिन राति अघ सहज जरतु है।
नामिन को सग दस पर्स भयो जाहि दिन ताहि दिन पाप कौन लेखा मे करतु है ॥
राम नाम ऐसो सब्द स्रवन परतु जाहि ताहि छन अनुपम सुकृत भरतु है।
बनादास अमी औ गरल सद्य फल देत जानै न प्रभाव खाय अमर मरतु है ॥२॥

अवध अनूप धाम पादप कलप छाया तासु तर रतन सिंहासन सोहाये जू।
बाम दच्छ भरत लषन रिपुसूदन है तासु मध्य रघुनाथ अति छवि छाये जू ॥
अग्रभाग हनुमान ज्ञान गुन महाधाम सबै बिधि पूर काम राम हिय भाये जू।
बनादास राजसी समाज है समूह अति हारे मेघवान मद पार कौन पाये जू ॥३॥

नानामनि जटित मुकुट हेमसीस सोहै भानु से प्रकास काक पक्ष छबि प्यारी है।
मेचक कुंचित नाग छौना ज्यो लटकि रहे लपटि लपटि लागी जो है अति प्यारी है ॥
कैधौं अलि अवलि न उपमा अनूठो मिलै झूठो किये कविजन जानो छवि वयारी है।
बनादास कुंडल कनक लोल राजैं स्रौन मीन छगा छाँटि डारे जानै जासु यारी है ॥४॥

बंक भ्रुव कजनैन मुख छबि ऐन मानो सैन किये जाहि दिसि स्वाद तिन पाये है।
तिलक बिसाल भाल तडित कि द्युति निंदै अल्प उभै रेख जनु अचल सुभाय हैं ॥
अधर दसन अति अरुन अनोखी आसै बिम्बाफल दाडिम न पटतर आये हैं।
गोले हैं कपोल मन मोल लेत बिना बिन बनादास नासा सुक तुडहि लजाये हैं ॥५॥

चन्द्र मुख मन्द मन्द हंसत हरत मन हरदम टरत नहीं से अति नारे हैं।
चोखो है चिबुक चित चोरि लेत बार बार बनादास द्युति मरकत मनि फीके हैं ॥
कम्बुग्रीव सोभा सीव लागति अतीव प्रिय हरिबन्ध जाह जिन रहे निति ठीके हैं।
उभै भुज भारो कर कंकन केयूर जुत करज ललित धनुबान अति ठीके हैं ॥६।

उर सुठि बृहद प्रसून मुक्त माल भ्राजै तुलसी सुदलजुत जज्ञ पीत भली है।
भृगु चर्न रमारेख त्रिबली बिसेप छवि नाभि है गंभीर जनु लाखों मन छलो है ॥
सिंह कटि तून पटपीत है कनक क्रांति तड़ित विनिंदित मुरति मुंठ सलो है।
बनादास जामा लाल ललित लगाये कोर वार छोर जाहे जाय जाको मति हलो है ॥७॥

जानु जुग काम भाथ केरा तरु तुच्छ लागै लागै जीव सोवत रोमावली जे जोहे हैं।
कोटिन मदन को कदन रूप अंग अंग भूप वर्षा को ऐसो कौन देखि मोहे हैं॥
गुल्फ छबि गूढ है अरूढ़ पैनि काय मुनि कमल चरन माहि नित जिन पांहे हैं।
बनादास मन है मतंग जोर जंग अति पंग होत तबै अंग अंग लेत काहे हैं ॥८॥

हेरे सों हेराय जाय और कछू न सोहाय मच्छऊ लगत तुच्छ और काहि माने हैं।
तमगुन सम्भु रजगुन में विरंचि रमे स्रीपति अतीव सतगुन माहि साने हैं॥
देव अपस्वारथी जरत पर भला देखि बासव विसेपि कर विषय बिकाने हैं।
बनादास राम भूप रूप जासु दृष्टि आयो ताहि न सरिष्ट कछु जांहे तिन जाने हैं ॥९॥

तन मन धन प्रान वारि वारि छन छन होत नेवछावरि न तद्यपि अघात है।
तीरथ बरत तप जप जज्ञ जानै नाहि नेम औ अचार पूजा पाठ बिललात है॥
जोग आठ अंग को सो रोग सम देखि परै दान को प्रमान तुच्छ कछु न सोहात है।
बनादास दसा कौन कहै रूप लाभ भये देसकाल कहा कहा निसि दिन जात है ॥१०॥

कनक भवन मिया रमन बिहार थल रचना न कहै जोग गिरा मूक लई है।
सखी सीय सग मे सिंगार सुभ अग अंग सची रति मान भंग माना करि दई है॥
तहाँ पै सिंहासन प्रकासन वरनि जात निरखि लजात भानु हेम मनि भई है।
जोड़ी स्याम गवर विराजमान ताहि पर बनादास नख सिख सोभा सरसई है ॥११॥

मानहुँ तमाल तरु निकट कनक बेलि लई है सकेलि छवि चौदह भुवन को।
जानकी सुअंग पै अनेक रति भंग होत कोटिन अनंग व्याजु नृपति सुवन को॥
बनादास ऐसे ध्यान सदा जे परायन हैं ताहि मुक्ति आस नहि रह त्रिभुवन को।
मन क्रम बचन निसोच भये सोई जन जाको है भरोस एक दारिद दुवन को ॥१२॥

रेखता

मुकुट सिर हेमका भ्राजै मनोद्युति भानु लाजे हैं।
छटा जुल फौंकि अति नोखी निरखि त्रैताप भाजे हैं॥
लसै घुंघुंवारि लटलोनी निरखि चित चोरि जाते हैं।
लटक उरजाहि के आवै नहीं फिरि कछु सोहाते हैं॥

स्रवन मे राजते मोती अनोखी पैनि प्यारी है।
जिगर के जुल्म को काटै छटा अतिही नियारी है।।
बक्र भ्रुव नैन रतनारे सुभग अवलोक्य भाई है।
तिलक सुचि भाल मे भ्राजी मनहुँ चित को चोराई है।।
अधर अरुनार सुभ नासा दसन की क्राति नीको है।
हँसनि मृदु भावती ही को छटा दाडिम कि फीकी है।।
चन्द्रमुख स्याम के जोहे लगै भयलोक हल्का है।
निरखि मन ताप नहि पावै नही तह मूल पल्का है।।
चिबुक चित चोरि अति लेवै गरे त्रय रेख प्यारे हैं।
कन्ध कहरि के सुठि लाजै वृषभ से भूरि भारे हैं।
गरे गजराग रुरे है बिपुल मनि के न मोहै को।
उभै भुज काम करि कर से तिन्हैं मूरख न जोहै को।।
बना इस ध्यान मे रमता तिन्हैं हरि से जुदाई क्या।
जो आसिक पाक हैं दिल के उन्हे जग म बडाई क्या।।१३।।

कमर केहरि से अति चोखी सुमन कर माल लीन्हे हैं।
छटा पटपीत की न्यारी कोऊ जन चित्त दीन्हे है।।
जबै जुग जानु को पेखै कहाँ कैवल्य बासा है।
कमल पद को न जोहे जे तिन्हैं जमलोक त्रासा है।।
दिसा वायें पै सिय राजें सबै उपमा टटोरी है।
न पटतर ताहि ले दीन्हो अधिक नृप की किसोरी है।।
बना कुर्बान चरनों पै कहनि ओ रहनि जब होवै।
बचन के ज्ञान की झलको पलटि ताही कि पति खोवै।।१४।।

छप्पय

जन्म भूमि अति बिसद महातम को कवि गावै।
राम लीन अवतार जहाँ पटतर कह पावै।।
सारद नारद बदै चारि स्नुति अति हिय हारे।
सेस गनेस महेस महतु को सदहि पुकारे।।
तिहुँपुर मे पन्तर नही सुर नर मुनि बन्दत सकल।
कह बनादास मन बचन क्रम भयो अवध ते मोर भल।।१५।।

घनाक्षरी

शत्रु जै बिदित नाम गज रघुनाथ जू को अंग अंग साजि सकै कवि को गनाई जू।
स्वेत दंत तीच्छन उतंग है बिसाल अति महाबल जाहि दिसिकुंजर लजाई जू।।
माथे सोन पत्र हौदा हेम के हरत मन नाना मनि जटित अनूप है निकाई जू।
बनादास बानी बुद्धि थहरात मेरी अति हेरत हजारौं और उपमा न पाई जू।।१६।।

कज्जल ते कारे स्वेत दीरघ दतारे बहै मदके पनारे भूमि सुंड फटकारे हैं।
हौदा हेम वारे जनु काम के सँवारें झूल झालरि उदारे अंग अंग मतवारे हैं।।
घंटा घहरात अररात आसमानै सब्द गाजत मतंग मानौ प्रलै मेघ भारे हैं।
बनादास दाबत दिमाक कछू पन्नग को जबही गज बैठत दसरत्थ के दुलारे हैं।।१७।।

वारे ऐरावत अनेक एक एकन पै दिसा गज लाज्जित न पटतर कोऊ पारे हैं।
कसे स्वेत रस्से घंटा मध्य हंस पाति मानौ रबि रथ लपेटो चहै धराधसकि डारे हैं।।
बनादास हलका हजारन गनावै कौन छाय रही बानी मुख चौघी चखमारे हैं।
भूम द्वीप द्वीपन के इन्द्र द्वीप जैसे ऐसे गजराज दसरत्थ भूप वारे हैं।।१८।।

स्याम स्वेत भूरे जनु धतूरे मन अमित खाये आसमान में अमारी न्यारी छबि निकेत हैं।
छुहे पंचरंगे अति उमंगे तन मौज जोहै सो है गज गरूर देवचित्त चोरि लेत हैं।।
बनादास पंक से पुहुमि हालै बार बार कच्छ कोल सेसहूँ ससकि कै मचेत हैं।
सोभा अंग अंग पै अनंग कोटि भंग होत हौदा हेम मध्य राम कैसे छबि देत हैं।।१६।।

कैधौं घटा सावन को घमंड किये आवतु है जरकसो जवाहिर जड़ित तड़ित सी उदोत है।
मेघनाद करत अवाद गज बार बार कैधौं आंधी कज्जल की देखिये निसोत है।।
कैधौ गिरि समूह स्याम वर्न से सपक्ष धायो सुरसरी लसत कैसी छबि होत है।
बनादास ये है हाथी हलकार रघुनाथजू के मूके मति फनीन्द्र गननाथ हू को बोत है।।२०।।

महा महामत्त दन्त सजे कोटि कोटि भाँति नखसिख सोभा जनु साजे मन मत्थ के।
मोती मनि मानिक जड़ाऊ ज्योति जगमगै भगै मेघवान मद कहै गुन गत्थ के।।
बनादास दसन अनूप मन मोल लेत सोहत सवार सखा सुत दसरत्थ के।
उपमा अनूप कबि कोबिद थकित मति जैसे पील खाने पील राम समरत्थ के।।२१।।

एक एक गज संग अमित तुरंग राजै नखसिख भूषन बनाये मानौं काम के।
उच्चैस्रवा लज्जित सुभग स्याम कर्नवर बैठे सरदार बाँके कहै रूप नाम के।।
पदचर पारन अपार महारथी संग पीनस औ तामदान यान है अराम के।
बनादास छीन मति स्वलप सवारी कहे सरजू समीप लखै कोऊ समै साम के।।२२।।

कामकोटि सुन्दर पुरंदर सो कोटि बल नखसिख छबि मन हरन हैं राम जू।
जाको नाम काम तरु कामधेनु कोटि गुन सुना साधु लोगन सो भजै बसुयाम जू।।

ताते जो बिमुख मुख देखे महा पाप चढ़ै त्यागिये समान रिपु ताहि बिधि बाम जू।
बनादास सोई है बिमुखता बिचारि पर्यो प्रभुहि सुमिर सिद्ध चाहै और कामजू ॥२३॥

छप्पय

रामोचिद घन मई मूर्ति सुठि बृहद अकासा।
आदि अन्त महि मध्य एक रस परम प्रकासा॥
अमन अप्रान अबुद्धि अहचित जेहि न अकामा।
अलख अयोनी अगम दूरि ताते अति स्यामा॥
इन्द्री थूल न सूक्ष्म है कारन ते सहजे रहित।
कह बनादास निर्गुन निते पुनि अगनित गुन के सहित॥२४॥

अरविंदाक्ष अनूप बक भ्रुव द्विभुज बृहद उर।
सर कराल कोदड धरे नृपतन कारन सुर॥
ससि आनन हरि कन्ध मुकुट सिर कम्बुग्रीवा।
भाल तिलक सुबिसाल मनहुँ त्रिभुवन छबि सीवा॥
काक पक्ष कुंचित कलित उर मुक्तामनि माल है।
कह बनादास कुंडल स्रवन सोभा परम बिसाल है॥२५॥

कीर तुंड नासिका अरुन द्विज अधर अनूपा।
मन्द मन्द मुसकात कपोलन पर ते कूपा॥
कर ककन कयूर मुद्रिका करज निकाये।
रमा रेख भृगु चिह्न जज्ञ उपवीत सोहाये॥
नील कज मरकत लजित जमुना जल लघु स्याम घन।
वह बनादास तन मन हरन हारहि सारद सहस फन॥२६॥

त्रिवली नाभि गँभीर सहज हो चितहि चोरावत।
सिंह जुवा कटि तून पीत चपला सो भावत॥
बाम भाथ जुग जानु जरी जूतो पग राजै।
जेहि आस्रित बिधि इन्द्र सकल सुर मनसिज लाजै॥
अंग अंग परकोटि सत तदपि नही पटतर नहै।
कह बनादास अति थोरि मति सो सरूप कैसे कहै॥२७॥

भरत लषन रिपु दवन पवनसुत अगनित बीरा।
खडे सुभग सरि तीर बिलोकत पावन नीरा॥

सुर सब चढ़े विमान गगन अवलोकहिं सोभा।
जहँ तहँ पुर नरनारि निरखि आनन्द न कोभा॥
रूप सिंधु चहु बन्धु में अतिही मन जाको लगो।
कह बनादास सुकृत अमित सहज मोह निसि में जगो॥२८॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिहार खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

छप्पय

एकबार रघुबीर बैठ निज सभा मझारा।
गहवर मन तन पुलक नैन आई जलधारा॥
कारन पर्‌यो न जानि रह्यो सब कोऊ निहारी।
जोरे तब कर भरत हेत प्रभु कही बिचारी॥
तबहिं कहे बहु काल गत खोज विभीषन नहिं मिल्यो।
कह बनादास अब यहि समय चाहत चित लंकहि चल्यो॥२९॥

भरत कहे प्रभु संग चलें हम अबकी बारा।
आयो पुहुपुक यान जबै उर सुरति सम्हारा॥
गने लोग संग लिये भरत आदिक हनुमाना।
राखि लषन रिपुदमन सद्य ही कीन्ह पयाना॥
सृंगबेरपुर को चले पहुँचत लागी बार नहिं।
कह बनादास सुनतहि गुहा धायो प्रीति न जाति कहि॥३०॥

पर्‌यो लकुट सम भूमि कमल पद वन्दन कीना।
पूछो कुसल कृपालु कहे प्रभु चरन अधीना॥
आजु कुसल कुल सहित जानि जन दर्सन दीन्हे।
परितोषे रघुबीर भरत पद बन्दन कीन्हे॥
बहुरि मिल्यो हनुमान प्रति जथाजोग बन्दे सबै।
कह बनादास रघुबंसमनि करि सुरसरि मज्जन सबै॥३१॥

सहित भरत हनुमान मोद पाये बहु भाँती।
दिये द्विजन प्रभु दान कनक मनि अगनित जाती॥
धाये सब पुर लोग सुनत रघुनन्दन आये।
पारस लूटन हेत मनहुँ बहुरंक सिधाये॥
करत दंडवति बिबिध बिध भाव हृदय जाके जथा।
कह बनादास प्रभु प्रेमबस रुचि सब की राखी जथा॥३२॥

चितवत मनहुँ चकोर चन्द मुख पलक न लावै ।
देखि देखि दोउ बन्धु दसा तन की बिसरावै ।।
तेहि दिन कीन निवास सखाहित राम कृपाला ।
सुर मुनि सबै सिहात भागि जाकी कसि माला ।।
जथाजोग सेवा किये प्रातहि नित्य निबाहिकै ।
कह बनादास केवट सहित चले प्राग चित लायकै ।।३३।।

देखि सितासित नीर भरत रघुबीर अनन्दे ।
करि मज्जन जुत सखा पवनसुत मुनि गन बन्दे ।।
प्राग निवासी द्विजन दिये प्रभु दान सोहाये ।
मनि मानिक अरु बसन कनक कहि पार को पाये ।।
भरद्वाज के आश्रमहिं गमन कीन्ह रघुपति तबै ।
कह बनादास परनाम किये मुनि असीष दीन्हे सबै ।।३४।।

भरद्वाज आनन्द कहै कबि कवनी भाँती ।
मनमानिक जनु लहे पपीहा नीर सेवाती ।।
अहो भागि मुनिराज कमलपद दर्सन पाये ।
सत समागम तबै फलै जब सुकृत साहाये ।।
कहे राम निज उर कथा पुनि पुनि मुनि पुलकित भये ।
कह बनादास रघुबसमनि को तुम बिन जन सुधि लये ।।३५।।

कीन्हे अति बड़ काज रही उर लाखन आसा ।
पुनि देखब रघुनाथ रहे सुठि प्रेम पियासा ।।
उरबासी बिन आन अवर को हिय की जानै ।
रामहिं प्रेम पियार पुरानो बेद बखानै ।।
एक बिभीषन आड़ ते पाले रुचि मन अनगनी ।
कह बनादास सुनि सब कहै धन्य धन्य कोसल धनी ।।३६।।

आये सुनि रघुनाथ प्रागवासी उठि दौरे ।
लालच दसन रूप प्रेमबस मानहुँ बौरे ।।
देखि देखि दोउ बन्धु तृपित मानत नहि कोई ।
मनहुँ रंक निधि रासि लहे ते तोष न होई ।।
अति सुकृत के सींव जनु ताते सुठि अभिमत लहे ।
कह बनादास पटतर महा राम रूप सूरति नहे ।।३७।।

रघुपति सागर सील समय सम रुचि को पालत ।
लै लै लोचन लाभ बात एकहू न षालत ।।

तब मुनिपद सिर नाय गमन रघुनन्दन कीन्हा।
प्रेम मगन सब लोग रिसय वर आसिष दीन्हा॥
अवलोकत सब कोउ खड़े तब विमान नभ पथ चल्यो।
कह बनादास बिछुरन व्यथा मानहुँ उर अति ही दल्यो॥३८॥

मगवासी सब लखैं यान नभ मारग जाता।
सिंहासन रघुनाथ काम अगनित छबि गाता॥
कहहिं परस्पर बात सखी सोइ राम बटोही।
जो तापस बर वेष बन्धु तिय संग में सोही॥
तब से लखे न आजु तक हिये हहर अति दै रही।
कह बनादास जोगौलगो तवो गगन भूतल नहीं॥३६॥

अवलोकहिं सब खड़े जहाँ लगि लखहिं के नाना।
नेक न फेरहिं नैन चकोरी चन्द समाना॥
ग्राम ग्राम यह दसा राम अन्तर गति जानै।
तबही चल्यो बिमान मनौ महितल नियराने॥
फैली वन मग बतकहीं जात चले सुखधाम हैं।
कह बनादास स्नेहवस धावत तजि तजि धाम हैं॥४०॥

बालमीकि पहँ आइ चरन बन्दे धरि सीसा।
महामोद मुनिराय बन्धुजुत दीन्ह असीसा॥
केवट अरु हनुमान मुनीसहि कीन्ह प्रनामा।
औरौ सुभट अनेक लहे आसिष अभिरामा॥
अहोभाग्य मुनिराज मम तव दर्सन भव रुज दरन।
कह बनादास तब तिन कहे वत्स न कहहु असरन सरन॥४१॥

लंक हेत कृत गमन तवन जानहु मुनि नाथा।
अस कहि सीस नवाय चले अगनित गुन गाथा॥
चित्रकूट प्रभु आय सुने सब कोल किराता।
आये काज बिसारि हरष नहिं हृदय समाता॥
कन्दमूल दोनन लिये नाना फल नामहिं कहे।
कह बनादास आनन्द अति जनु बांछित सब निज-लहे॥४२॥

परितोपे रघुनाथ अमित आनन्द अघाये।
आये जहँ मुनि अत्रि बन्धुजुत पद सिर नाये॥

धाय लीन उर लाय परम प्रिय आसिष दीन्हा ।
रघुपति दर्सन पाय भागि बड़ि आपनि चीन्हा ।।
कहि प्रसग बेगहि चले देह दही सरभंग यह ।
कह बनादास आये तहाँ बध बिराध कहे भरत पह ।।४३।।

जहँ अगस्त्य मुनि बसत तहाँ कौसलपति आये ।
कानन सुठि रमनीक सघन अति ही छिति छाये ।।
नाना बल्ली लता फले फूले तहँ सोहैं ।
कहे नाम तरु ख्याति जगत ऐसो कवि को है ।।
नाना खग कूजत सुभग स्रवन सुखद जे मन हरन ।
कह बनादास गत बयर सब सकल सुखी काहुहि डरन ।।४४।।

करि केहरि वृक ब्याघ्र मृगा कपि रिच्छ बराहा ।
खगहा महिष सृगाल ससा को नाम सराहा ।।
बिगत बैर बन चरहिं पियें घाटै इक नीरा ।
अवलोकत नहिं रहत महा धीरन की धीरा ।।
मुनि महिमा अवलोकि प्रभु हरषित भे अति सै हिये ।
कह बनादास आस्रम बिषे राम हरषि गमनहिं किये ।।४५।।

कहुँ बिरंचि अस्थान कतहुँ सिव आसन देखा ।
कतहुँ अस्थल इंद्र बिबिध रचना प्रभु पेखा ।।
कहुँ गोबर कहुँ समधि कतहुँ तृन को अम्बारा ।
कतहुँ मूल फल धरा कतहुँ साकल्य अपारा ।।
हवन कुंड कतहूँ बनो अग्नि कतहुँ बहु प्रज्वलित ।
बाघम्बर मृगचर्म कहुँ रचना अति देखा ललित ।।४६।।

परमरम्य अस्थान बिपुल रम्भा तरु लाये ।
फूले नाना सुमन बृक्ष तुलसी छबि छाये ।।
कतहुँ द्रुम धन कतहुँ कतहुँ भाजन जल देखा ।
जहँ तहँ मुनिवर निवर निकर ध्यान पूजा पर पेखा ।।
रचो सुभग बर बेदिका कबहूँ मुनि आसन करत ।
कह बनादास बट पाकरी अरु पीपर तरु चित हरत ।।४७।।

जाना प्रभु आगमन मुनीन्द्रन प्रथमहिं धायो ।
सजल नयन तन पुलक बेगि मुख बोलि न आयो ।।

भेटे मुनिहिं कृपाल जानि उर प्रीति बिसेषी।
नेह निवाह न हार काहि रघुपति समपेषी॥
भरत सहित मुनि निकट गे चरनकमल बन्दन किये।
कह बनादास आसीष दै मुनिहुँ राम लाये हिये॥४८॥

बोले रघुकुल तिलक आजु दर्सन बड़ पाये।
संत समागम मिलै उदय जब सुकृत सोहाये॥
तब कुंभज हँसि कहे राम यह सील तुम्हारा।
जनन बड़ाई देत तुमहि को जानन हारा॥
नेति नेति निगमहु कहत सिव चतुरानन अगमगति।
कह बनादास को कहि सकै सेस गनेसहु थकित मति॥४९॥

आदि अंत मधि हीन अचल आखंड सरूपा।
व्यापक बिस्व सरूप बिरुज निरुपाधि अनूपा॥
अद्वै एक अनीह अयोनी अजै अनामै।
गुनातीत गुन गूढ़ ज्ञान घन अति करुना मै॥
परब्रह्म आनन्द निति सतचिद परिपूरन सदा।
कह बनादास कैवल्य सुचि परमधाम चहुँ स्रुति बदा॥५०॥

बासदेव बरदेस बिगत बागीस अदृष्टा।
अकल कलानिधि कुसल सकल सृष्टिहु कर सृष्टा॥
मन बानी बुधि भिन्न निराস्रय सब उरबासी।
प्रेरक परम प्रकास द्वन्द गत सुठि सुखरासी॥
निर बिकार कूटस्थ घन सुद्ध एकरस अनघ अति।
कह बनादास बुध जानि इमि पुनि राखत सगुन मति॥५१॥

यहि बिधि प्रभुहि प्रसंसि सुभग फल मूल मँगाये।
राम भरत हनुमान गुहा सब लोगन पाये॥
मुनि सन आज्ञा माँगि चोख सुठि यान चलावा।
पंचबटी अवलोकि भरत सो कथा सुनावा॥
सूपनखा कुदरूप कृत बध मारीच सियाहरन।
कह बनादास खर त्रिसिर रुचि चितय गृद्ध कर भो मरन॥५२॥

सबरी आस्रम देखि राम दृग जल भरि आयो।
गाहक प्रेम न आन जाहि सम मुनि जन गायो॥

जहँ कबन्ध बध कीन्ह बहुरि पम्पासर देखा।
अति अनूप रमनीक राम सुख लहे बिसेखा॥
चम्पक बकुल तमाल तरु पनस रसाल कदम्ब घन।
कह बनादास को नाम कहु परम सोहावन बृक्ष बन॥५३॥

कोकिल कीर चकोर मोर नाचत सुठि सोहै।
नीलकंठ कलकंठ पपीहा धुनि मन मोहै॥
हारिल तीतिर सोर सारिका बहु खग बोलै।
बिटप सघन चहुँ पास लेत चित बित चित मोलै॥
नीर परम गभीर सुचि पुरइनि पटल न लखि परै।
कह बनादास फूले कमल नहि उपमा उर अनुहरै॥५४॥

रात पीत सित असित मनो बहु गुजत भृंगा।
जल खग करत कलोल मीन सुन्दर बहुरंगा॥
चक्रबाक बक हंस परेवा कुक्कुट नाना।
खजन अरु कलहंस टेर सारस मन माना॥
जला सिंह नाना जिनिसि कूलत मोद बढावते।
कहु बनादास नृप सभा जनु कवि जन गुन गन गावते॥५५॥

पान करत खग नीर जीव बन नाना जाती।
केहरि ब्याघ्र बराह मृगा बहु अगनित भाँती॥
मर्कट जाति अनेक भालु गैंड़ा अरु भैंसा।
लील गाह गो वृषभ ससा कहिसे को तैसा॥
जैसे दानी अति धनी द्वारे जाचक भीर है।
कह बनादास तिमि जीव बन पियत नीर चहुँ तीर है॥५६॥

सर के ढिग चहुँपास अमित मुनि मढ़ी बनाये।
जपतप साधत जोग जज्ञ ब्रत ध्यान लगाये॥
रामराज दुख गयो भयो महि राच्छस हीना।
ताते अतिसय अभय भये रिषि साधन पीना॥
देखराये प्रभु दूरि ते पम्पापुर भरतहि भले।
कह बनादास दृढ संकलप हर्षि हृदय लखहि चले॥५७॥

जहँ थापे गौरीस आय प्रभु कीन्ह प्रनामा।
महिमा कहै बिसेषि सेतु बाँधे जिमि रामा॥

इत जूझो घननाद कर्नघट यहि थल मारे।
इत राच्छस कपि जुद्ध इतै दससीस विदारे॥
कहत कथा प्रभु भरत सन यहि बिधि गढ़ गवर्नहि कियो।
कह बनादास सुनि लंकपति धाय लाय आगे लियो॥५८॥

पर्यो चरन अति प्रीति राम भेंटे उर लाई।
बूझे मंगल कुसल दोउ दिसि भले भलाई॥
मिले भरत हनुमान गुहा अनुराग समेता।
करि बिनती लै चल्यो भवन प्रभु कृपानिकेता॥
कनक सिंहासन मनिजटित धरे पानि निज हित सहित।
कह बनादास पूजे प्रभुहि षोडष बिधि सुधि लाय चित॥५९॥

पहुँचत लंकामध्य राम बहु बाजन बाजे।
दगत सतघ्नी अमित प्रलय घन जा वहँ लाजे॥
बहु विधि मंगल गान गन्धरब किन्नर गावें।
महामोद पुरमध्य कहा पटतर कबि पावें॥
भागि विभीषन भूरि अति सुरब्रह्मादि सिहात जेहि।
कह बनादास प्रभु कृपानिधि कहँ न बड़ाई दीन्ह केहि॥६०॥

चहुँजुग तीनिउ काल राम भावै के भूखे।
जानत सन्त सुजान अपर सकलहु रस रुखे॥
अतिही गरत गलानि बंधु भय आयो सरना।
दिये लंक को राज जासु सुख जाय न बरना॥
पुनि आयो ताके भवन जन अनन्य जिय जानिकै।
कह बनादास ऐसे प्रभुहि भजत न मन सुख मानि कै॥६१॥

कनक मई मनि जटित भवन सुचि आसन दीन्हा।
सुत सेवक जुत आपु रहत सेवा सब लीन्हा॥
निरखत राम निगाह कबहुँ कछु प्रभु फुरमावें।
अहोभागि निज मानि छनहि छन मोद बढ़ावें॥
कहत विभीषन जोरि कर आजु धन्य मैं धन्य अति।
कह बनादास दीन्हे दरस प्रभु जाने नहि आनगति॥६२॥

सम्भु कंज हिय भृंग भुसुंडी मानस हंसा।
अगम ध्यान जोगीस जाहि निति निगम प्रसंसा॥

नारद सारद सेस गाय गुन पार न पावै।
लम्बोदर मुख चारि हारि हिय अगम बतावै॥
सो प्रभुता तजि दास गृह आये प्रभु करुना भवन।
कह बनादास गदगद गिरा मो सम जग सुकृती क्वन॥६३॥

जे पद पूजे जनक जाहि मुनि ध्यान लगाये।
जासु पाँवरी सेय भरत दुख दुसह बिताये॥
जाहि सम्भु बिधि आदि नमित सब रिषि अरु देवा।
जे पद सुरसरि जनक लई लछमी जेहि सेवा॥
जेहि पद त्रिभुवन तीनि पग जेहि बन्दित सब जग हितै।
कह बनादास ते आजु मैं धोये अतिहित से चितै॥६४॥

जहँ लगि राच्छस लक आय प्रभु चरनन लागे।
बाल वृद्ध अरु तिया पुरुष सुठि उर अनुरागे॥
तामस तन पापिष्ट अधम राच्छस जिव घाती।
जाहि न सपनेहु दया धर्म बुधि मो केहि भाँती॥
कुल मध्ये जो साधु यक सबही को पावन करै।
कह बनादास किन देखिये लोहहिं लै नौका तरै।६५॥

राम हेत उत्साह अमित सम्पदा लुटाये।
भूषन वसन बिचित्र बिबिधि को सकै गनाये॥
रजत कनक मनि भूरि बिपुल जाचक कहि दीन्हे।
है हाथी हथियार जात नेवछावरि कीन्हे॥
सुभट सूर राच्छसन कहँ दीन्हे बहु बक्सीस बर।
कह बनादास सारद थकित कह उपमा आनन्दकर॥६६॥

गली बागली तक सकल सींचे सुगन्ध करि।
को कवि बरनै जोग रह्यो चहुँदिसि अनन्द भरि॥
कनक कोट अति दुर्ग दिसा चारिउ दरवाजे।
सेनप सूर जुझार टिके बहु बाजन बाजे॥
गृह नाना मनि ते खचित हेम मई को कहि सकै।
कह बनादास कलसा कलित लखि रचना मुनि मन थकै।६७॥

लागे कुलिस कपाट ठाट बहु पार को पावै।
तने चँदोवा चारु कहाँ ते उपमा आवै॥

राज पीत सित असित हरित बहु झाँप परे हैं।
देखत रचना लंक अतिहि सुर लोक तरे हैं।।
जहँ तहँ गाजत मत्त गज मल्लजुद्ध कृत वीर बर।
कह बनादास फेरत पटा सेल्ह सूल सेना निकर।।६८।।

सुतरसाल है साल विपुल गज साल सोहाये।
खच्चर अजया महिप मेढ़ सूरे बहु ज्याये।।
नाना खग मृग तहाँ बिपुल रथ केतु पताके।
है रथ गज रथ रथी घोर सुर अति बर बाँके।।
बाहर गिरि कानन विविध चहु दिसि छाईं उदधिवर।
कह बनादास संछेप ही रचना अद्भुत लंक कर।।६६।।

बनी बजार विचित्र अतिहि छवि बरनि न जाई।
मनिगन भूषन बसन बस्तु नाना विधि छाई।।
जहाँ तहाँ वर बाग सुमन फलजुत तरु सोहै।
परसत बल्ली अवनि कहै उपमा कवि को है।।
ठौर ठौर बर वाटिका मध्य सुभग सर सोहई।
कह बनादास मनि पानि सुचि देखत मुनि मन मोहई।।७०।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विहार खण्डे भवदापनयताप विभंजनोनाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

साजि आरती सुभग दिव्य कर कंचन थारी।
पूजा साज अनेक अतिहि जुत प्रीति सुधारी।।
मै तनुजा तब चली दर्स रघुनंदन लागी।
ज्ञानवान दृढ़ भक्ति राम पद सुठि अनुरागी।।
अर्घ पाद्य आचमन जुत स्तुति विधि ते पूजा करी।
कह बनादास षोड़स बिधा पुलक अंग चरनन परी।।७१।।

सजल नयन कर जोरि बेगि मुख आव न बानी।
अहोभाग्य निज जानि करत अस्तुति अनुमानी।।
जयति सच्चिदानंद ब्रह्म व्यापक वर देसा।
माया मोह मनोज सोक भव समन कलेसा।
अचल अखंड अनीह अज विस्वरूप कारन करन।
कह बनादास चैतन्य घन विस्वेस्वर असरन सरन।।७२।।

जयति आदि मधि अंत रहित निरुपाधि अनूपा।
सुद्ध नित्य निरबध्य नेति निति निगम निरूपा॥
अकल कलानिधि कुसल सकल गुनधाम अमाना।
निरालम्भ निर्द्वन्द्व अलख सब ठवर समाना॥
पुरुषोत्तम पावन परम बासुदेव बिज्ञान घन।
कह बनादास बागीस बिभु अगम बचन अरु बुद्धि मन॥७३॥

गुनातीत गुन गूढ़ अजय अवछिन्न अनेका।
परम धाम कैवल्य सनातन कह स्रुति एका॥
महि अप तेज अकास अनिल इद्री पुनि प्राना।
मनबुधि चित हंकार भिन्न तुम बिन नहि आना॥
निराकास निर्लेप सुचि सुठि स्वतत्र अव्यक्त वर।
कह बनादास महि भार के हरन हेत नृप बपुष नर॥७४॥

जै दिनकर कुलकेतु बाल नृप अजिरबिहारी।
कौसिल्या उर मोद अवधपुर आनदकारी॥
चतुरव्यूह अवतार भजत जेहि ऊरधरेता।
सकर मानसहस सदा पालक स्रुति सेता॥
बाल चरित कृत बिबिध बिध नृप रानिन परिजन सुखद।
कह बनादास जन कल्पतरु दिन प्रति जस गावत बिसद॥७५॥

मुनि मख रच्छक दक्ष ताडुका सुभुज बिदारन।
अमित सोक सताप पाप मुनिबधू उधारन॥
खडि ईस कोदड जनकपुर मोद बिवर्धन।
दलि भूपावलिमान ध्वस भृगु बस गमन बन॥
ब्याहि सिया जग बिसद जस आय अवध आनद अमित।
कह बनादास सुर भै हरन गमन बिपिन सीता सहित॥७६॥

कृत मुनि अमित सनाथ बास मदाकिनि तीरा।
चित्रकूट बहु चरित लहे सुरपति सुतपीरा॥
देह दहे सरभग बिराधहि बधि रघुबीरा।
दडक बिपिन पवित्र बसे पुनि रेवा तीरा॥
सूर्पनखा कुरूप कृत खर दूषन त्रिसिरा मरन।
कह बनादास मारीच बध पुनि माया सीता हरन॥७७॥

सबरी गीध सनाथ बालि बध नृप सुग्रीवा।
जोरि भालु कपि सैन गौन जहँ तहँ बल सीवा॥

लंक भमित उतपात पवनसुत सिय सुधि लीन्हा ।
सुनत सद्य ही गमन नेक प्रभु वेर न कीन्हा ॥
सेत सिंधु थापे सिवहि आय लंक रावन दले ।
कह बनादास दल बल सहित सुरन कीन्ह अस्तुति भले ॥७८॥

हरे सकल महि भार यान चढ़ि अवधि सिधाये ।
सीता लखन समेत भरत उर मोद बढ़ाये ॥
सुभग लाम वर तिलक देव मुनि अस्तुति कीन्हा ।
वंदि बेप स्तुति चारि सम्भु मन भावत लीन्हा ॥
बिबिधराज लीला करी बाज मेघ बरनै बदन ।
कह बनादास निज जानि जन पुनि लंका कीन्हे गमन ॥७६॥

जयति मीन बाराह कमठ नरहरि जय बावन ।
परसुराम स्री रामकृष्न जय कंस नसावन ॥
बौध कलंकी तुमहि तुमहि छीराब्धि निवासी ।
तुम नायक बैकुंठ सदा कमला पगदासी ॥
तुमही बृहद बिराट वपु रचना लंग बिचित्र वर ।
कह बनादास दूजा नहीं तुमहि राम सब चर अचर ॥८०॥

जय छबि कोटि अनंग स्याम सुंदर रघुबीरा ।
भक्त हेत सुरबिटप सदा सेवहि मुनि धीरा ॥
प्रभु उदार अवतार सिरोमनि बेदन गाये ।
सारद सेस गनेस कहत जस पार न पाये ॥
मन कृपनाई अगम मोहि देहु भक्ति निज चित चहे ।
कह बनादास करुना सहित एवमस्तु रघुपति कहे ॥८१॥

परितोपे रघुनाथ सुनहु भामिनि यह बाता ।
नवा नहीं है आजु जीव ईस्वर को नाता ॥
स्रुति पुरान सम्बन्ध मुनीसन बेदन गाये ।
भूलो काल असख्य ताहि ते बहु दुख पाये ॥
जबहीं सन्मुख होय मम सब प्रपंच छल त्यागई ।
कह बनादास तब देर कस है मेरा मोहि लागई ॥८२॥

साँझ समय अवलोकि बिविध बिधि वाहन साजे ।
मत्त दंत बहु बने जाहि दिसि कुंजर साजे ॥

तीपे दत उतग अमारी कलित सोहाई।
हौदा मनि गन जटित कनक के सुठि छबि छाई ।।
सुभग झूल जालरि लसत मुक्तामनि अति सोहई।
कह बनादास घनघटा जनु सोइ जाने जिन जोहई ।।८३।।

करत धार चिक्कार बिपुल घटा घहराते।
साजे सुभग तुरग अस्व रबि जाहि लजात ।।
करि नख सिख सृगार राम हित आये बाजी।
मनहुँ काम है बेष कहत भारतो लाजी ।।
सो मैं कौनी बिधि कहौं कहे बिना रहि जात नहि।
कह बनादास खग सब उडत छोट बडा नभ अत लहि ।।८४।।

परी जीन जगमगत जवाहिर जटित जरकसी।
मनिमय ललित लगाम काम जनु रची सरकसी ।।
गडागर बरलसं पूज पटटा मुख सोहै।
सिरकलगी सुठि कलित अमित मुक्तामनि पोहै ।
कसे तग है कलहलक जेरबद बर अति बने।
राजित उभै रकाब सुठि पेसबद सोभा सने ।। ५।।

कलकिकिनी हमे लपगन चवरासी बाजै।
गोडन कडे रसाल आल चोटी छबि छाजै ।।
बहुमानिक मनि लसी बसी दुमची द्युति न्यारी।
परे जाल पचरग अग जनु सोभा बयारी ।।
लदे सुभग गज गाह गति देखि बनै को कबि कहै।
कह बनादास प्रभु जाग है नहि ताते मति निरबहै ।।८६।।

सुभट सूर समरत्य भाँति बहु सैन सजाई।
नाना आयुध जान कुसल बरवेष बनाई ।।
भाँति भाँति के बीर आइ सब राम जाहारे।
हृदय बिभीषन हर्ष देखि सब लोग तयारे।
जोरि पानि प्रभु से कहे असवारी की बेर है।
कह बनादास रघुबसमनि हर्षि कह कस देर है ।।८७।।

भये अस्व असवार तबै रघुबीर गोसाई।
जो जेहि वाहन जोग चढ़े सब साज बनाई ।।

नखसिख सोभा धाम राम तन द्युति अति न्यारी।
सकै कवन कवि बरनि भरत वाहो अनुहारी॥
मनहुँ ठगोरी अंग अंग रहे सकल राच्छस चितै।
कह बनादास अति वालमति कहत जवन हिय हरि हितै॥८८।

मुकुट हेम मनिमयी भानु द्युति सीस बिराजै।
मेचक कुंचित केस अलक अवली अलि लाजै॥
कुंडल मकराकार लोल चित करत अडोला।
सोभित भाल बिसाल तिलक लेवै मन मोला॥
राते कंज बिसाल दृग चितवनि तिरछो है अमल।
कह बनादास गति मति थकित केहि पटतरि ये मुखकमल॥८९॥

मंद मंद मुसकानि हरत मन सहज सुभाये।
सोइ जानै सुठि स्वाद कवहुँ सपनेहुँ लखि पाये॥
मानहुँ सरद मयंक रंक मरकत द्युति फीको।
अधर दसन अति अरुन नासिका लागति नीको॥
कल कपोल चोरत चितहि चिबुक चारु रमनी कहै।
कह बनादास हरि कंध बर कम्बुग्रीव सुठि नीक है॥९०॥

भुज अजानु बल धाम काम करिको कर लाजै।
करकंकन केयूर मुद्रिका करज बिराजै॥
मुक्तमाल उर बृहद कहै कवि कवनि निकाई।
मरकत गिरि ते मनहुँ धार सुरसरि की आई॥
किधौ हंस को पाँति है निकट स्याम घन उड़ि रहो।
कह बनादास पटपीत द्युति कटि के हरि सोभा सहो॥९१॥

जानु पीन कल धौत कंजपद त्रान जरकसी।
नानामनि नग खचित जाहि द्युति अतिहि सरकसी॥
जाहि संभु बिधि नमित रहत जहँ मुनि मन छाये।
जाकी महिमा अमित पार कहि कवने पाये॥
चर्म पीठि कटि कसे असि कमल करन कोड़ा लिये।
कह बनादास दोउ बंधु बर अहो भागि आवहि हिये॥९२॥

वाजत वहु बाजने अमित फहरात पताके।
देव बिमानन चढ़े आय नभ मारग छाके॥

बोलत बिपुलन कीव सूर सुनि हिय हरषावै।
देखि देखि दोउ बन्धु बिभीषन सुठि सुख पावै।।
लकेस्वर गौरीस जहँ आय राम हर्षित हिये।
कह बनादास सह भरत प्रभु अति सप्रीति परमान किये।९३।।

सिव समीप सरसुभग बनाये सुठि दसग्रीवा।
रचना बिबिध प्रकार मनहुँ सोभा की सीवा।।
देखत कानन अवनि कतहुँ गिरि निकट नेराई।
नाना खग मृग लखत बिलोकत कहुँ अमराई।।
देवी जहाँ निकुम्भिला गमन किये रघुबसमनि।
कह बनादास प्रभु निरखते माने गौरी भागि धनि।।९४।।

कुम्भकर्न जहँ रहै तहाँ कौसलपति आये।
दूरि तलक चौगान चारुमन सहज लोभाये।।
एक तरफ तेहि हेत बनी रस्ता पुरमाही।
जहँ रावन की सभा जोहारन कबहूँ जाही।।
पुनि पलटै वाही मगहि अति बिसाल बलवान बर।
कह बनादास अवरी दिसा दसन देखा लक कर।।९५।।

आये पुनि तट सिंधु बिबिध जल जतु बिलोकत।
आस्रम चले कृपालु अस्व को अति ही रोकत।।
तरफरात है कान भूमि टापन ते फालै।
उझकि उझकि असमान तुरै चौखो सुठि चालै।।
जानु कसे जनु जात कढि फफकत फदत अनेक बिधि।
कह बनादास रबि बाजि लघु पीठि सजत सुठि सीलनिधि।।९६।।

जानि साँझ की समय बिभीषन अज्ञा भाखे।
बारे बिबिध मसाल जरे नाना फ्नासे।।
जहाँ तहाँ सब खडे लखत रघुबीर अवाई।
को कबि बरनय जोग रोसनी सुठि सरसाई।।
आये आस्रम निसि समय पुनि सध्या बदन किये।
कह बनादास बैठे सभा मोद बिभीषन अति हिये।।९७।।

किन्नर अरु गधर्व तान बहुगान सुनावै।
नृत्य करै अप्सरा सभा सुरपति लघु आवै।।

बिबिध बेद ध्वनि विदुप बिरद बंदी उच्चारे।
जहँ लगि राच्छस लंक आय रघुबीर जोहारे॥
जबही ब्रपासन दिये गये सकल निज निज भवन।
कह बनादास भोजन समय सद्य उठे संसृत दमन॥९८॥

अमित सखा गुह ज्ञाति भरत किये ब्यंजन नाना।
देवन दुर्लभ असन बसन कवि करै बखाना॥
करि भोजन अचवनहि कृपानिधि बीरा पाये।
पूरित बिपुल सुगंध मसाले स्वाद सोहाये॥
उत्तम मनि को चून सुचि अति सयान बन येहि तें।
कह बनादास तब सयन किय जुत सनेह सत्र तन नितें॥९९॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिहारखण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

जागे प्रातः काल प्रथम को क्रिया निवाहे।
पुनि कीन्हे अस्नान सुगन्धित नीर सुचाहे॥
लोगे पूजा करन बिभीपन लखे समय तब।
आये रघुपति पास पारषी निवहि गये जब॥
सीस नाय कर जोरि कै अति बिनीत बोले गिरा।
कह बनादास प्रभु काज तन जो चाहै भवनिधि तिरा॥१००॥

जबही ते जग पर्‌यो मर्‌यो पचि जीव अविनासी।
निसिदिन आठो याम भयो केवल दुखरासी॥
कामक्रोध मदलोभ मोह मत्सर अबिबेका।
आसा तृष्ना तीब्र बासना लागि अनेका॥
दम्भकपट पाखंड छल राग द्वेष भव मूल है।
संसय सूल अनेक भय बिधि निषेध अनुकूल है॥१॥

इन्द्री अर्थन लागि दिवस निसि अतिहि नचावै।
मन को दुसह दरेक रहै कहँ लगि बनि आवै॥
छुधा पिपासा सीत उप्न करि कबहीं ब्याकुल।
जरा ब्याधि बहु रोग रंक ह्वै कबहीं आकुल॥
कहूँमान अपमान बस बहु संकल्प बिकल्प है।
कह बनादास जन्मन मरन दुख प्रवाह बल अल्प है॥२॥

स्रुति औ सास्त्र पुरान जतन नाना विधि गावै।
निज निज बल सब चलै हलै कोउ अन्त न पावै॥
नहिं छूटत ससार ततस बाझे जस छोरै।
कोटिन कल्प व्यतीत लह्यो अब तक नहिं वोरै॥
यह तुम्हरो लीला सकल तुमहिं उबारन हारजू।
कह बनादास करि कै कृपा मोहिं करो भव पारजू॥३॥

सो कीजै उपदेस जाहि सद्यहि जग छूटै।
छनभगुर जड देह छनय छन माया लूटै॥
अस अवसर नहिं मिलिहि महूँ निज हृदय बिचारा।
तामस तन मनुजाद होत नहिं भजन तुम्हारा॥
निज दिसि देखि कृपा जतन करिये मोहिं सनाथ जू।
कह बनादास अब कसरि रहो ह्वै हौ बहुरि अनाथ जू॥४॥

हँसि बोले रघुनाथ सखा मत नीक बिचारे।
जैसे मेरे भरत तेही बिधि तुमहूँ पियारे॥
अब उत्तर को कहत प्रस्न जो कीन्हे ताता।
मन यकाग्र करि सुनो बनै जाते सब बाता॥
संतन को सिद्धान्त जो अरु स्रुति तत्त्व निचोरि कै।
कह बनादास बोले बचन मुक्ति अमीरस बोरिकै॥५॥

प्रथम चलै मग धर्म जाहि जो बेद बतावै।
बर्नास्रम को पालि बहुरि बैराग उठावै॥
सबसे होय असग रहै चाहै गृह माही।
चहै सर्ब करि त्याग अन्य दिसि कानन जाही॥
उर मे अति स्रद्धा वृहद तब सतगुरु दृढ़ कोजिये।
कह बनादास जो तत्त्वबिद तेहि मग मन सुठि दीजिये॥६॥

अति उपासना मोरि पुष्ट सतगुरु उपदेसिहि।
जब अनन्य ह्वै करिहि सकल अज्ञानहि गेसिहि॥
सब साधन मत त्यागि रहै नामहिं लवलाई।
प्रथमहिं रसना जाय हृदय अति प्रीति दृढ़ाई॥
निशि दिन दूसर काम नहिं आसा इन्द्री करि दमन।
कह बनादास आहार लघु बसिय मात आसग जन॥७॥

चित की वृत्ति निरोधि सदा मम रूप विचारै।
सब दिन सून्य उपाय कामना नहिं उर धारै॥

अल्प वारता करै टरै नाना ब्यवहारा।
मम इच्छा जो जुरै ताहि में करै गुजारा॥
बढ़िहै अति अनुराग उर सकल हृदय को मल दहै।
कह बनादास मत वाद तजि प्रेम भक्ति दृढ़ ह्वै रहै॥८॥

छन छन तन पुलकांग नैन छूटै जलधारा।
कंठ न आवै बोलि होत नहि देह सम्हारा॥
तून कासे तिहुँ लोक नोचि चाहै तन फेंका।
निसिदिन कछु न सोहाय मही लागौ प्रिय एका॥
तब प्रगटो हिय कंज में सकल सोक संसय हरो।
कह बनादास परकास अति ज्ञान दीप उर में धरो॥९॥

मैं परबस निज वोर वाहि वासना न दूजो।
कर्म बचन मन बुद्धि सकल मो माहिय सूजो॥
छनहु लहै नहि तृप्ति छुधा छन छन सरसावै।
मम प्रापति को स्वाद सोइ जानै जो पावै॥
वह जानै नहि और कछु हम सब जानन हार है।
कह बनादास जिमि वैद्य सिर रोगी को सब भार है॥१०॥

जब नामी उर मिलै जीभ आपै थकि जावै।
चित चंचलता नास स्वास सुमिरन तब आवै॥
होय हिये परकास तत्त्व सब परै लखाई।
निसिदिन रूप प्रकास तिमिर सारो नसि जाई॥
जब तत्त्वन करि बोध भोत वैज्ञान दृढ़ जानिये।
जानै तत्त्व अतत्त्व जब तब विज्ञानी मानिये॥११॥

तबलग मैं उर प्रगट नही जब लग विज्ञाना।
ब्रह्मरूप ह्वै मिलो करो जीवहि निरवाना॥
गई दृष्टि ना तत्त्व ब्रह्म यक निष्ठा आई।
अगम अगाध समुद्र थाह कोउ सकत न पाई॥
भयो सांति सर्वांग ते सकल मूल भव को दह्यो।
कह बनादास कृतकृत्य तब फिरि कछु करनो ना रह्यो॥१२॥

तिहूँ कांड ते पार जबहि होवै जग छूटै।
जब लगि नहि दृढ़ भजन विघन नाना सिर कूटै॥

एक दृष्टि बिन भये जाय नहिं दुख कोउ भाँती।
ताकी यही उपाय भजन करिये दिन राती।
सद्य तरन को रीति यह या सम कहुँ दूजी नही।
सखा परम प्रिय जानि अति गोप्यम तो ताते कही ।।१३।।

आवन जानन कहूँ मुक्ति को लोकन कोई।
याही तन मे होत मुक्त कानै जो होई ।।
ताते दृढ विस्वास मानि याही पर रहिये।
बार बार प्रभु कहे और मग भूलि न गहिये ।।
गुरु के बचन प्रतीति नहिं सपनेहु सुगति न साल है।
कह बनादास स्रुति सन्तमत कबि कोबिद सब कोउ कहै ।।१४।।

और बात दृढ एक सग सतन को राखै।
ज्ञान भक्ति बैराग बढे नित ही आभलाखै ।।
उनका सहज स्वभाव फेरि मम वोर लगावै।
ताकी समता कौन नित्य परहित मन लावै ।।
जो जग से छूटा चहै सत सग बेगहि करै।
कह बनादास सदेह नहिं भव सागर सद्यहि तरै ।।१५।।

त्यागो मन बिस्तार रहो ब्रह्महि ठहराई।
स्रुति पुरान षट शास्त्र लखो ससार को भाई ।।
नौका उतरन हेत हृदय निज करो बिचारा।
को सिर लादे फिरा उतरिगो जो वहि पारा ।।
ब्रह्म रूप उतकृष्ट मम याते परे न और है।
कह बनादास जानत कोऊ अति दृढ उर करि गौर है ।।१६।।

बिरति ज्ञान विज्ञान सकल मम भक्ति अधीना।
पराभक्ति जब लहै होय सब संसय खीना ।।
सनै सनै जन कोउ जाय पुनि साति समावै।
सम्मत वेद पुरान जान आइव नसि जावै ।।
सब सोढी डडा यहै वस्तु अवरि तेहि हेत जू।
कह बनादास जानत कोई भूलत लोग अचेत जू ।।१७।।

बेद वेद सब कहै बेद का भेद न जानै।
पढि पढि पडित मरै और सो ज्ञान बखानै ।।

आपु कर्म के कीच वीच फँसि मरै निदाना।
करै उपाय अनेक छुटै न आना जाना॥
चौंतिस अच्छर फेर में भूकि मरा संसार है।
कह बनादास दृढ़ जानिये भये सन्त कोउ पार है॥१८॥

राम नाम सब परे सकल अच्छर सिरताजा।
है सबही का मूल सकल के सीस बिराजा॥
है यह ऐसा सब्द असब्दहि बेगि मिलावै।
टूटै झगरा सकल फेरि संदेह न आवै॥
सुनत बिभीषन प्रभु बचन बार बार चरनन पर्‌यो।
कह बनादास उपदेस सुनि गुनि सारो उर में धर्‌यो॥१९॥

पुनि बोले कर जोरि एक संका उर आवै।
अन्तरजामी बिना कवन दूजा समुझावै॥
ब्रह्म जीव है एक किधौं द्वैका दृढ़ कीजै।
तब बोले रघुनाथ कहौ नीके सुनि लीजै॥
ब्रह्म जीव दोउ एक है बहुरि सखा सम जानिये।
कह बनादास कारन सुनौ जाते संसय मानिये॥२०॥

जिमि धारा जल बहै ताहि में परिगो रेता।
तिमि देही को मानि जीव ह्वै गयो अचेता॥
तन संगति को पाय विषय में अति मन लायो।
मोते पर्‌यो बिछोह ताहि ते बहु दुख पायो॥
तबो जलय जल एक है धारा छुटे असुद्ध भो।
कह बनादास सरिता मिले पुनि सोऊपर बुद्धि भो॥२१॥

मम सुमिरन आसरे जीति मानसिक बिकारा।
कामादिक को मारि दिवस निसि करै बिचारा॥
जब होवै निर बिषय बढ़ै उर मम अनुरागा।
छूटै तीनि सरीर होय तब ब्रह्म बिभागा॥
जिमि भोजन करते भये तुष्ट पुष्ट नासत छुधा।
कह बनादास तिमि भजन ते काज सरै सब कह बृथा॥२२॥

जबहीं रहित विकार रहै तब ब्रह्म समाई।
तब दोऊ जल एक कहा आनंद न जाई॥

रेता रहो सरीर भिन्न भय तासे बुद्धी।
बहुरि न लिपै बिकार लही अन्तर गत सुद्धी ॥
बिषय रहित सो ईस है बिषय सहित जानो जिवहि।
कह बनादास तब दुइ कहा जबै जाय भेटे पिवहि ॥२३॥

बिषय बासना तजो मोहि आपुहि यक ध्यावो।
यहि बिधि ब्रह्म समाय फेरि भव भूलि न आवो ॥
जलबोरा हिम एक बीच जल किन बिलगायो।
ककन नाम मिटाय फेरि कचन कहवायो ॥
भूपन है तवहूँ कना बिकै एक ही दाम जू।
कह बनादास दूजो कहा मिटत न कचन नाम जू ॥२४॥

पावक और मसाल दीप चिनगी सब एका।
महि औ अमित मकान कहाँ ते भया अनेका ॥
सूत बसन बपु नाम अनर्थ बानी तरु बीजा।
लाह खग मृद पात्र कवन यावो दुई कीजा ॥
उदधि जलै सरि भीज लै जवहिं नदी सिंधुहि गई।
कह बनादास दोऊ गयो नाम रूप एकै भई ॥२५॥

प्रकृति दिवाकरि बीच जथा असफटिक मे छाया।
ताते भासी देह बिपय भोगहि मन लाया ॥
आतम मेरो अस सुद्ध चेतन अविनासी।
सब दिन सुख को सिंधु जानिये स्वत प्रकासी ॥
जबहिं बिमुख मोते भयो तबही भूल्यो आपको।
कह बनादास माया ग्रसी करन लग्यो बहु पापको ॥२६॥

जथा भानु को अस अच्छ ताके बल देखै।
जबहिं अस्त रवि होत फेरि कछु कतहुँ न पेखै ॥
ताते मोते बिमुख सकल अन्धा करि जानो।
मेरे सन्मुख भयो सद्य मम रूप पिछानो ॥
पावै ब्रह्महि जीव जब आपहि मानै मुक्त करि।
कह बनादास आनन्द मम रहै सकल तर हृदय भरि ॥२७॥

मोते रहै अभेद प्रकृति गुन प्रकृतिहि देखै।
देही ते जो कर्म हाय सो देहहि पेखै ॥

ज्यों मय सब ते रहित सृष्टि सारी उपजावों।
मो में लगै न नेक प्रकृति मध्ये बरतावों ।।
त्यों मम जन मो में मिलै करै जवन व्यवहार तन।
कह बनादास मानै नहीं वचन कर्म औ बुद्धि मन ।।२८।।

मो में सब जग लखै मही हौं सब जग माही।
मो में निज में भेद हिये कछु आनय नाही ।।
ममता औ अहकार त्यागि रह मम आधीना।
मो बिन पलकल नाहि जया फनि मनि जल मीना ।।
ताते मेरे तेइ प्रिय पुनि तिनके मैं एक हौं।
कह बनादास रच्छक सदा टारन विघन अनेक हौं ।।२९।।

जिन त्यागे सुख भवन हरषि मम सरनहि आये।
आस वासना त्यागि मोहि में चित्त लगाये ।।
नहि दुख के दिसि ख्याल तनहुं मम अर्पन कीना।
नहि देखै दिसि आन भये दिन दिन धन पीना ।।
रोम रोम रच्छा करौ पलक पलक भूलो नहीं।
कह बनादास तेइ प्रानधन मोको और कहा चहो ।।३०।।

सब विधि ताहि सम्हारि बहुरि निज रूप मिलावो।
न पुनि जन्म संसार काल को त्रास मिटावो ।।
उनके उर आनन्द वोई जन जानन हारा।
और न पावै थाह करै कोइ कोटि बिचारा ।।
ताते सुख मेरे सरन अवर कतहुं सपन्यो नहीं।
कह बनादास तिहूं लोक में तिहूं काल प्रभु इमि कही ।।३१।।

सुनि रघुपति के वचन हृदय सुख नाहि समाई।
पुलक गात जल नैन बेगि मुख बोलि न जाई ।।
आपुहि माने धन्य तत्त्व प्रभु मुख ते पाये।
गयो सकल संदेह बोध सुठि हृदय दृढ़ाये ।।
जोरि पानि विनती विविध चरन कमल पर सीस धरि।
कह बनादास निस्चय हिये आपुहि माने मुक्त करि ।।३२।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विहार खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

पंचराति कृत बास नवा निति आनन्द भारी।
लंका मानहुँ अवध सबै कोउ हृदय बिचारी॥
सहस भाँति सतकार प्रीति दिन प्रति सरसानो।
सखा करम मन बचन भागि बडि आपनि मानी॥
अवधपुरी को गमन तब चहत कीन्ह रघुनाथ जू।
कह बनादास पुनि तिन कहे नाथ चलब मैं साथ जू॥३३॥

कहे चलहु रघुबीर भये पुष्पक आसीना।
करि बिनती लकेस पाँवरी प्रभु की लीना॥
सिंहासन पर थापि चल्यो सगे हरषाई।
पम्पापुर की वोर चोपि प्रभु यान चलाई॥
पहुँचत लागी देर नहिं रघुपति आवन जानि कै।
कह बनादास सुग्रीव तब चले हर्ष अति मानिकै॥३४॥

आगे लीन्हे आइ चरन प्रभु बन्दन कीना।
बालितनयजुत मोद मनहुँ निधि पाई दीना॥
भेंटे प्रभु उर लाय कुसल मगल दुहुँ आरा।
बूझे निज निज भाव हृदय आनन्द न थोरा॥
भरत चरन बन्दन किये अंगद औ सुग्रीव तब।
मिले बिभीषन केवटहिं हनोमान हिय हर्ष सब॥३५॥

लाये प्रभु निज भवन दिब्य सिंहासन आना।
बैठारे रघुबीर करै को प्रेम बखाना॥
सर्ब भाव सों पूजि सबहिं सुचि आसन दीन्हे।
सकल भाँति सनमानि बिबिध बिधि बिनती कीन्हे॥
तब बोले रघुनाथ दिस कपिपति कर सम्पुट किये।
कह बनादास भये आजु धनि जानि दास दरसन दिये॥३६॥

कपि कुरूप जड जाति लोक वेदहु ते न्यारा।
पसु पाँवर अति पोच भागि निज हृदय बिचारा॥
जे पद सिव अज पूज्य जाहि जोगी जन ध्यावै।
नाना साधन करैं ध्यान मुनि कोउ यक पावैं॥
कबि कोबिद आगम निगम नेति निरूपत जाहि निति।
सारद सेस गनेस सिव नहिं ब्रह्मादिक लहत मिति॥३७॥

ते करुना इमि कीन्ह दिसा निज वारे बिचारा।
मैं सब अंग से हीन कहाँ अस भाग हमारा॥

आजु तरे कुल कोटि छोटि मति किमि जस गावों।
मो सम आजु न कोय हृदय अस दृढ़ करि लावों॥
परितोषे रघुवीर बहु सखा सदा मम प्रान प्रिय।
कहु बनादास ऐसे प्रभुहि छोड़ि कपट सेवत न जिय॥३८॥

पम्पापुर आनन्द बढ़ो अतिही सब भाँती।
आये दर्सन हेत विविध विधि वन चर जाती॥
चरनकमलजुत प्रीति सबै कोउ माथ नवाये।
देखि देखि दोउ बन्धु महा सुख मर्कट पाये॥
सीलसिंधु रघुबंसमनि पालत रचि जेहि जथाविधि।
कह बनादास दूजा कवन त्रिभुवन ऐसो कृपानिधि॥३९॥

धूप दीप नैवेद्य सुमन बर कंचन थारी।
तारा दर्सन हेत आय उर सद्धा भारी॥
पूजे षोड़स भाँति वेद विधि जस व्यवहारा।
सजल नयन कर जोरि चरन प्रभु मस्तक डारा॥
बिनय करत गद्गद गिरा परम प्रेम रससानि कै।
कह बनादास बसि प्रीति के प्रभु स्तुति भाषत जानिकै॥४०॥

जयति राम सुख धाम स्वेत स्तुति पालनहारे।
जय दिनकर कूलकेतु सदा जेहि दीनपियारे॥
जब जब धर्म बिहीन धरनि सुर साधु दुखारी।
तब तब लय अवतार भुवन को भार उतारी॥
सबरी गीध सनाथ किय सीलसिंधु कोसल धनी।
कह बनादास रावन दले कवि कोविद कीरति भनी॥४१॥

पाले प्रन प्रह्लाद कोपि तेहि पितु बध कीन्हा।
गज उधारि हति ग्राह नाथ मुनि तिय गति दीन्हा॥
व्याध अजामिल अधम यमन तरु तारन हारे।
पाँवर कोल किरात स्वपच बहु पतित उधारे॥
अचल धामदीन्हे ध्रुवहि राज विभीषन लंक को।
कह बनादास सुग्रीव से व्याकुल करत असंक को॥४२॥

सीता नैन चकोर जयति सुन्दर ससि आनन।
कोटि काम कमनीय भुजा बलनिधि धनु बानन॥

सीसमुकुट वर अलक स्रवन कलकुंडल लोला।
भाल तिलक सुबिसाल करत मन सहज अडोला ।
मुक्तमाल उर बृहद सुठि बृषभकन्ध पंकजनयन।
कह बनादास भ्रू बंक अति कम्बुग्रीव सोभा अयन ।।४३।।

नासा चारु कपोल अधर द्विज सहज सोहाये।
कटितट पीत दुकूल तून मानहुँ छबि छाये ।।
त्रिबली उदर गम्भीर नाभि जमुना अति निंदै।
जानु पीन पद कंज देव ब्रह्मादिक बंदै ।।
संकर मानस हंस निति मान परायन सहसफन।
कह बनादास यहि ध्यान रत मुनि जन सतत प्रान धन ।।४४।।

प्रनतपाल तरुकल्प अमित सुरधेनु समाना।
जनहित कछु न अदेव भनत जस निगम पुराना ।।
दानि सिरोमनि राम सदा सतन गुन गाये।
निज कृपनाई मोहि अगम लागत सतिभाये ।।
प्रभु मूरति सीता सहित बसैं हृदय नित चित चहे।
कह बनादास सुठि कृपाजुत एवमस्तु रघुपति कहे ।।४५।।

भोजन बिबिध प्रकार सखा बनये रघुवंसी।
षटरस चारि प्रकार सकै को स्वाद प्रसंसी ।।
उठे राम सुखधाम अनुज जुत जेंवत भयऊ।
बडभागी हनुमान प्रसादी जो नित लयऊ ।।
अचैपान पाये बहुरि कीन्ह जाय बिस्राम सब।
कह बनादास आये समय जागत भे रघुनाथ तब ।।४६।।

एकबार जुत भरत राम सब सखन समेता।
परबर्वत गिरि गये हरषि उर कृपानिकेता ।।
जहाँ लषनजुत रहे तवन सुचि ठाँव देखाये।
कीन्ह बास रघुबीर मनहुँ ताते छबि छाये ।।
दुर्गसैल सम्पन्न अति सिला सृग बहु बन्दरे।
कह बनादास हरषित भरत देखि अमित झरना झरे ।।४७।।

अनुज प्रदच्छिन किये आस्रमहि सीस नवाये।
सब कोउ बन्दन किये हिये जाके जस भाये ।।

नाना तरुवर लगे भले फूले सुठि सोहै।
बहु खग कूजत मत्त स्रवन सुनि जो मन मोहै ।।
बोलत सुक पिक कोकिला अरु चकोर वर सारिका।
नीलकंठ चातक रटत हारिल तीतर सुठि निका ।।४८।।

जनु प्रभु अस्तुति करत बिबिध बिधि बेद बिधाना।
कैधौ बन्दी करत बिरद नाना बिधि गाना ।।
बसत रहे सुग्रीव तहाँ करुनानिधि गयऊ।
समुझि पाछिलो दसा हृदय कपि मोदन भयऊ ।।
को दुखिया सुग्रीव सम बालि त्रास व्याकुल महा।
कह बनादास प्रभु नृप किये अब अनन्द उपमा कहा ।।४९।।

जहँ बाँसा तो तार राम यक बानन साये।
भरत देखाये ताहि हर्षि महिमा सब गाये ।।
बालि पैठ जेहि गुहा सबै कोउ देखे जाई।
अतिहि गहन गंभीर तिमिर सुठि तहँ सरसाई ।।
जहाँ बालि को बध भयो देखराये प्रभु सो ठवर।
कह बनादास आस्रम चलै स्रम कन तन पटतरन वर ।।५०।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विहार खण्डे भवदापत्रयतापबिभंजनोनाम पंचमोऽध्यायः ।।५।।

सभा मध्य यक बार बैठ रघुबीर कृपाला।
भरत गुहा हनुमान अनुज राजित दसमाला ।।
सुभट सूर समरत्थ सचिव सुत अंगद कौसा।
नाना बाँदर बीर कौस पति नायउ सीसा ।।
स्मृति पुरान मुनि संत जन सेस महेसहु आदरै।
कह बनादास तुव भक्ति प्रभु ब्रह्मादिक इच्छा करै ।।५१।।

सो जानन की चाह सिद्धि साधन सब अंगा।
कृपादृष्टि करि कहो रँगौ कछु प्रभु के रंगा ।।
बोले राम दयालु सुनौ सादर चित लाई।
कहौ भक्ति को भेद तात सर्वांग बनाई ।।
प्रथमै सिवपद प्रीति कर करम बचन मन लाइकै।
कह बनादास चित के सहित अपर देव बिसराइकै ।।५२।।

पुनि सेवै द्विज देव बचन मन धन औ काया।
सब कामना बिहाय हृदय मे सब परदाया॥
सहज होय बैराग बहुरि सतसंगहि आवै।
बहुविधि करि सतसंग हिये सुठि मोद बढावै॥
करै सत्य गुरु तत्वबिद जाते सब ससय दहै।
कह बनादास मम सुद्ध मग पावै दृढ ह्वै कै रहै॥५३॥

सतगुरु मेरो रूप बुद्धि नर भूलि न आनै।
करम बचन मन सेय न अज्ञा कबही भानै॥
मम सेवा ते अधिक गुरू की सेवा लेखै।
सदा अमानी बुद्धि देह कृत कबहुं न हेखै॥
यहि विधि अन्तर मल दहै उपजै उर अनुराग अति।
मम गुन गावै ऊँच स्वर नहि आवै सकोच मति॥५४॥

लागै मन मम चरित सुनै उर अति अनुरागा।
कबही तृप्त न लहै रहै निसि बासर पागा॥
सुनि सुनि करै बिचार जाहि करि दृढता आवै।
बहु स्तुति कोमल बाद भूलहू चित्त न लावै॥
सकल देव दिल से तजै मेरी एक विसेष गति।
कह बनादास दिन प्रति बढ़ै मेरे चरनन माहि रति॥५५॥

अर्चन मेरा करै बचन कर्महु अरु बानी।
निसिदिन बन्दै मोहि देव दूसर नहि जानी॥
जेहि सिर बन्दै माहि अवर फिरि काहि नवावै।
मेरी जात्रा जहाँ तहाँ अति रुचि करि जावै।
जन्म कर्म मेरा करै बहु बिधि उर उत्साह जू।
कह बनादास ब्रत आचरै मम भक्तन की चाह जू॥५६॥

सुमिरै नाम अखंड सकल साधन को त्यागी।
तृप्त न मानै नेक लोक बेदहु बैरागी॥
छन छन नव अनुराग बढै मम चरनन माही।
तनहू की अस्नेह रहै मन मे फिरि नाही॥
नयन अखंडित धार जल पुलक गात गद्गद गिरा।
कह बनादास तब नहि रहै कछु सम्हार सुमिरन सिरा॥५७॥

काय निवेदन करै मरै को जानो रोती।
डरै नेकहू नाहि अधिक उत्साह सप्रीती॥

जहाँ न कोउ सम्बन्ध नही कोउ जानन हारा।
तहाँ बहावै देह सख्य रसकरै बिचारा॥
निज बल जग आसा तजै सजै प्रीति परतोति मग।
कह बनादास सर्बस तजै संचय कछु राखै न लग॥५८॥

तब अपार अनुराग नही कछु मिति मर्य्यादा।
जब प्रत्यच्छ उर होउ सोई जानै वह स्वादा॥
बाहर भीतर मही फेरि कोउ नजरि न आवै।
जगत दृष्टि भय दूरि सकल में मोहि ठहरावै॥
कहुँ नृत्यत गावत कहूँ कहूँ मूक से ह्वै रहै।
तन रोमांच जलधार दृग अभिअन्तर गति किमि कहै॥५९॥

ऐसा मम जन होय सकल जग तारन हारा।
करै लोक तिहुँ सुद्ध अवर का करै बिचारा॥
आगम निगम पुरान सबै ताको जस गावै।
ब्रह्मादिक सुर सकल तासु पद बन्दन लावै॥
जहँ लगि मम ऐस्वर्य्य है सब ताके आधीन भो।
कह बनादास नहि कछु लखै मोही ते जल मीन भो॥६०॥

सहजय इन्द्री दमन सहज विषयन को त्यागा।
सहजय मन वास भयो जहाँ यहि विधि अनुरागा॥
मेरा भया भरोस सहज सब आसा नासी।
मैं ही हौं प्रिय एक सकल बासना विनासी॥
बहु बिधि मैं चाहौं दिया कछू न लागै नीक तेहि।
कह बनादास जग ईस जो सोई भया अधीन जेहि॥६१॥

सकल जगत को राज कहौ सो भूलि न लेवै।
इन्द्रहु को पद कहौ ताहि पर चित्त न देवै॥
अनिमा आदिक सिद्धि तुच्छ लागै सब ताको।
सिव बिधि को पद बड़ा सोउ नहि भावत वाको॥
मैं ही प्रिय लागो सदा छाड़ैं पल एकौ नही।
कह बनादास फनि मनि दसा नीर मीन गति ह्वै रही॥६२॥

ऐसी मेरी भक्ति सकल साधन सिर ताजा।
ज्ञान विरति विज्ञान नरन में जैसे राजा॥

करै जहाँ लगि धर्म जोग अष्टांगहि साधै।
तन तप से अति दहै सकल इन्द्री मन बाधै॥
जम नियमादिक कै सकल जहँ लगि स्रुति अज्ञा करै।
कह बनादास जो प्रीति नहिं नहिं मोहिं प्रिय नहिं भव तरै॥६३॥

जाहि तृषा जल होय दही घृत दूध पियावै।
बहुरि इछु रस देय सस्त ताके मुख नावै॥
प्यास जाय नहिं कबहुँ करै किन कोटि उपाई।
जलै लहै सतुष्ट सबन के बुद्धि समाई॥
भूखा जो होवै कोऊ असन अनेकन बिधि करै।
कह बनादास बिन अन्न के पाये मन नाही भरै॥६४॥

सोन मलिन जो होय ताहि सुरसरि जल धावै।
दूध दही घृत तेल बस्तु लै अमित समोवै॥
नाना मलै सुगन्ध जतन पुनि कोटिन कीजै।
धोवै ओषध अमित तासु मल कबहुँ न छीजै॥
तृप्त करै सो अनल मे सहज दाग ताको दहै।
कह बनादास सदेह नहिं ऐसे सब काऊ कहै॥६५॥

तिमि आतमा न सुद्ध करै कोउ साधन नाना।
जप तप औ ब्रत दान करै मख जोग बिधाना॥
स्रुति औ सास्त्र पुरान पढ़ै बहु बिधि स्रम लाई।
पूजा पाठ अचार अमित तीरथ को धाई॥
जब लगि नहिं मम भक्ति दृढ अतर मल कैसे दहै।
कह बनादास उर सुद्ध नहिं मोर बास तहँ किमि रहै॥६६॥

जब लगि मैं उर नाहिं सकल परपच न टूटै।
नाना भै सदेह छनै छन माया लूटै॥
तात करि दृढ भजन हृदै अनुराग बढावै।
पावै मेरा रूप बहुरि संसार न आवै॥
प्रेम लच्छना जब प्रबल तब तनहू ते भिन्न है।
कह बनादास प्रारब्ध बसि है न लखै मति खिन्न है॥६७॥

जिमि कीन्हो मदपान ताहि नहिं देह सम्हारा।
बधन ते पट अग लगाइमि करै बिचारा॥

यह अद्भुत आनंद काल बहु होय बितीता।
छूटी तिरगुन गाँठि तिहूँ तनहूँ ते रीता॥
प्रापति निर्गुन ब्रह्म तब दोऊ एक में मिलि रहै।
कह बनादास श्रुति सन्त मत पराभक्ति ताको कहै॥६८॥

सब साधन ते रहित सिथिल भो तब अनुरागा।
आई तब उर सांति अगम है जासु बिभागा॥
अतिहि सुद्ध सब भाँति प्रसंसत बेद पुराना।
लहै कोटि में कोय सकै बिरला पहिचाना॥
जथा दारु जरि अनल भय धूम रहित पुनि राख है।
कह बनादास जोगीस मुनि सकल करत अभिलाख है॥६९॥

बार बार सुग्रीव धरे पदपंकज सीसा।
आपुहि माने धन्य हृदय सर्वांग कपीसा॥
तब निषाद कर जोरि कहै यक बिनती नाथा।
प्रभु से को समरत्थ धरे पदपंकज माथा॥
संतन ते ऊँचा न कोउ स्रुति पुरान स्रीमुख कही।
कह बनादास अभिलाष उर सो लच्छन जाना चही॥७०॥

बिगत काम मद क्रोध लोभ जाके नहि लेसा।
निसदिन औ दिसि बिदिसि जाहि नहि काल औ देसा॥
कोबिद कबि गुन रहित अगम सुठि सरिस सिंधु मति।
करम बचन मन सदा जाहि एकै मेरी गति॥
सीतल सरल सुसील सुचि समता अति सबंज्ञ है।
कह बनादास दिल दीनता देखत मानहुँ अज्ञ है॥७१॥

अनारम्भ अनिकेत अनघ अद्वैत अभेदा।
आलस रहित अनीह जाहि सम सुख अरु खेदा॥
बिगत मान अपमान हानि औ लाभ न जाके।
अस्तुति निंदा रहित राग औ द्वेष विवाके॥
बिधि निषेध जाके नही रचना बेष न बहु करै।
कह बनादास ससय रहित कालहुते नाही डरै॥७२॥

संतोषी सुठि सूर धीर पर जानन हारा।
धीरवान धनहीनयु कीती सुद्ध बिचारा॥

मानद सदा अमान अमायाहीन न माखै।
मन इंद्री स्वाधीन गूढ़ गति सोच न राखै॥
आस बासना से बिगत सत्य बचन तृष्णा रहित।
हर्ष सोक संसय न उर नहीं दोष अरु गुन गहित॥७३॥

बिरतिहुँ ते बैराग ज्ञान बिज्ञान को आकर।
साकर मे हिमवान साति परकास दिवाकर॥
ममगुन करते स्रवन मौन गति कछू न भावत।
पुलक गात दृग नीर कंठ ते बोलि न आवत॥
बर्नास्रम बन्धन रहित महित बिचार सदा रहै।
जो कोउ आवैं सरन मे भय संसय भव दुख दहै॥७४॥

बोध खानि निरबैर बिस्व उपकार धरे चित।
बेद दंड ते बिगत सदा मम नाम जाहि बित॥
सत संगति प्रिय सदा अधिक गुरु मोते मानै।
करै कोटि अपकार तासु उपकारहि ठानै॥
दीनन पर दाया सदा सुख पर मुख पर दुख दुखै।
कह बनादास उदबेग गति निज मति महिमा नहि निज मुखै॥७५॥

साधन सकल सिरान करम को बीज न बोवैं।
बोलैं बचन बिचारि काहु को मन नहि टोवैं॥
सब दिन सून्य उपाय मोह रजनी मे जागैं।
भोग करैं प्रारब्धि सकल मन बादते भागैं॥
स्वान स्वपच ब्राह्मण गऊ पापी पुन्यी पेखते।
कह बनादास ब्रह्मादि तृन अरु पपील सम लेखते॥७६॥

निस प्रेही निह संग निगम मारग प्रतिपालै।
अस्थित मति निरदम्भ दोष दूषन को घालै॥
जड चेतन को छानि छनक छन भगन लोभै।
काटे कपट पखंड सदा सुभ हीर पै सोभै॥
कोऊ बहु सेवा करै कोऊ करै अपराध अति।
कह बनादास तेहि नहि गहै ऐसो सन्तन केरि मति॥७७॥

फनिमनि ज्यो जल मीन रहै मोते तेहि भाँती।
मेरी चरचा छोड़ि भवरि नहि बात सोहाती॥

लै मेरा सम्बन्ध घोर ममता में बोलै।
सम दम नेम निबाह भूलि निज वृत्तिन डोलै॥
मृग तृष्ना सम जग लखै कंचन मृद तिय काठ सम।
कह बनादास संसार में संत भाँति यहि बहुत कम॥७८॥

वासुदेव मय सर्ब संकलप बिकलप नाही।
निसिदिन ब्रह्म बिचार सदा लै ताही माही॥
पुरइन कैसे पात रहै जग जल बसुयामा।
मर्म न पावै कोउ किये परधाम मुकामा॥
छमा सहन कोमल अतिहि पुरुषन बोलहि बैन जू।
कह बनादास निज मत हठी बहु उदार गुन ऐनजू॥७६॥

कर्म बचन अरु मनहि काहु को दुख नहि देवैं।
सर्ब संकलप रहित काहु लगि काहु न सेवैं॥
मोहूँ ते नहि चाह अवर फिरि याचै काही।
ऐसे लच्छन जाहि ताहि बस रहौं सदा ही॥
जिमि अगाध जल गज गिर्‌यो तेहि बिधि भोगत सांति सुख।
कह बनादास को कवि कहै सन्तन के गुन एक मुख॥८०॥

सहस बदन सारदा सन्त महिमा जो गावैं।
ब्रह्मा और महेस गनेसौ पार न पावैं॥
स्रुति पुरान षटशास्त्र कहैं कवि कोबिद सारे।
को ऐसा समरत्थ सत गुन पावै पारे॥
सन्तन की गति मति अगम सन्तै जानैं सन्त को।
कह बनादास प्रभु इमि कहे सन्त से अवर अनन्त को॥८१॥

सन्तन के गुन सुने गुहा सह सभा अनन्दे।
रघुपति पद पाथोज सबै कोउ हित करि बन्दे॥
पांच दिवस तहँ रहे चलन को बहुरि बिचारे।
बालि तनय करि भौन संग कपिराज सिधारे॥
यान चढ़े रघुबंसमनि मिथिलापुर गमनहि किये।
कह बनादास मन गति चल्यो सबै कोउ हर्षित हिये॥८२॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
बिहार खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम षष्ठमोऽध्यायः॥६॥

पुरढिग पहुँचत यान जानि मिथिलेस सिधाये।
भूसुर सचिव सयान सग जन थोरे आये।।
रघुपति कीन्ह प्रनाम भूप तब हृदय लगावा।
कबि कोबिद बहु थके हेरि पटतर नहिं पावा।।
अति सनेह को गति कहै मनहुँ गई मनि फनि लहे।
कह बनादास दाऊ दिसा कुसल छेम बूझे कहे।।८३।।

भरत किये परनाम मिले कपिराज बिभीषन।
भेटि गुहा हनुमान जानि स्री राम सखा जन।।
सील सिंधु रघुबीर सकल मुनि भूसुर बन्दे।
लाये भवन बिदेह हृदय बहु भांति अनन्दे।।
जथाजोग आसन दिये सुभग भवन भूपति तबै।
कह बनादास जेहि उचित जस कर्म बचन पूजे सबै।।८४।।

बोले दिसि रघुनाथ राउ निज भागि बखानी।
रामसरूप तुम्हार अगम बुधि मानस बानी।
निगम निरूपत नेति सभु बिधि सुर मुनि ध्यावें।
अगम ध्यान जोगीस कोउ एक अति स्रम पावे।।
नारद सारद सहस फन गननाथहु को अगम गति।
कह बनादास को कहि सकै सब कोउ सेवत जथामति।।८५।।

चिदानद परधाम ब्रह्मनिर्गुन अबिनासी।
अजय अकल निर्बान ज्ञान घन स्वत प्रकासी।।
अलख अनीह अभेद अचल अज जान न कोई।
आद अन्त मधि हीन सकल उरबासी सोई।।
ब्यापक परिपूरन सकल समता सुचि सर्बज्ञ हौ।
कह बनादास कारन सकल गुनमय परम कृतज्ञ हौ।।८६।।

अतिहि बृहद अनुरूप अजोनी अबिगति लीला।
सन्त बिवर्धन मोद दनुज उर मोह न सीला।।
बेद सिखा बागीस बिस्व बपु बिरद बिसाला।
बिस्वेस्वर बर देस राम कालहु के काला।।
सुद्ध नित्य निरबध्य हौ निराधार निरलेप्यबर।
बासुदेव उतकृष्ट अति पुरुषोत्तम हिय हस हर।।८७।।

हिय भुसुंडि परकास बास सन्तन उर माही।
जेहि लगि जोगी सिद्धि बिबिध बिधि जतन कराही।।

सो जानय कछु भेद जाहि निज ओर जनाये।
तुम्हरी कृपा प्रसाद कछू यक मैं हूँ पाये॥
जो सुख यहि सम्बन्ध मोहिं कोउ सपनेहु पाये नहीं।
कह बनादास ताते अमित भागि हृदय माने सही॥८८॥

सिंहासन आसीन राम सत काम लजाये।
रघुनन्दन आगमन सुनत पुरवासी धाये॥
आय जोहारत सकल रंक लूटैं जनु सोना।
निरखहिं यकटक रूप भागि जा सम नहिं होना॥
सनमानै सादर सबै सील खानि रघुवंसमनि।
कह बनादास नहिं तोष लह गै मनि पाई मनहुँ फनि॥८९॥

समय पाय जेवनार बनो षटरस बिधि नाना।
व्यंजन अमित अनूप चारिहू खानि प्रमाना॥
तब भोजन के हेत भूप रघुनाथ उठाये।
सखा अनुज जुत चले भवन भीतर सब आये॥
लछमी निधि धोये चरन जुत सनेह दोउ बन्धु कर।
कह बनादास पीढ़ा कनक मनिन जटित बैठे कुँवर॥९०॥

पुनि पनवारे परे सुभग देखत बनि आये।
परसत सार सुवार हृदय अति मोद बढ़ाये॥
फेरे ओदन दासि सरपि सद्यहि करनीका।
लागे भोजन करन हरषि हिय रबि कुल टीका॥
बहु व्यंजन पकवान लै पारी पारी परसते।
कह बनादास तिय गावता गारी आनँद बरसते॥९१॥

भोजन करते राम भरत अतिही रुचि भारी।
लंकापति कपिराज सखागन बैठे झारी॥
गुहा आदि हनुमान महा आनँद को लेवैं।
मिथिलापुर की नारि चतुर बरगारी देवैं॥
हेमथार झारी कलित कनक कटोरे बहु बने।
कह बनादास कहुँ लै कहुँ धरे पदारथ अनगने॥९२॥

दही दूध अति दिव्य बने मोदक बहु भाँती।
बरफी पेड़ा सेव जलेबी अतिही ताती॥

नाना भाँति अचार चरफरी चटनी न्यारी।
फुलका परम पियार कहे कहँ लै तरकारी॥
केला कटहर करयला परवर साग अनेक विधि।
कह बनादास जेरो घनो सहिदा अगनित स्वादनिधि॥९३॥

वेसन बहु पकवान मूंग बिबिध विधाना।
बरी कचौरी बरा स्वाद जनु सुधा समाना॥
पूरी पुवा पुनीत तसमई मोहन भोगा।
पोपरी पापर कढी मसाले बहु सजोगा॥
मालपुवा गोझा घने बरी गोबिंद अनूप है।
कह बनादास सछेप ही को बरनय कवि भूप है।९४॥

गोरे दसरथ भूप बदन गोरी सब रानी।
साँवर दूनो भाय सखी गति परै न जानी॥
इनके कुल की रीति कहे कछु बनि नहिं आई।
सृंगी ऋषि के संग सुना गे बहिनि सिधाई॥
पति देवता पुनीत तिय सौमित्रा गोरे सुवन।
कह बनादास कैसी भई सोभा सुठि सारे भुवन॥९५॥

तब बोली कोउ सखी बघु चहुँ पावक जाये।
भयो भूप को नाम अली मानौ सति भाये॥
स्यन्दन पैदा किये सोऊ दस मिलि निज ओरा।
दुइ साँवर दुइ गोर नृपति को कवन निहोरा॥
रघुबसी कुल रीति यह राजा तिय ह्वै घर बसैं।
कह बनादास इमि व्यग बहु गावैं रघुनन्दन हँसैं॥९६॥

बोला कोउ यक सखा रीति तुमरे कुल न्यारी।
महिते पैदा होत बाप नाही महतारी॥
लोको बेद बिदेह कहै तिन सुत किमि जाये।
लछमीनिधि है तिया पुरुष दुहु जानि न पाये॥
हमरे बैरागी नहीं नृप सुसील सरदार है।
कह बनादास बरनय कवन आनंद अतिहि अपार है॥९७॥

उठे जेयँ रघुनाथ बैठि चौकी सुचि जाई।
द्वारे अचवन कीन्ह पान सब काहू पाई॥

जाय किये बिस्राम याम दिन बाकी जागे।
सभा विराजे आय नृतकगन गावन लागे॥
जनक दान दीन्हे द्विजन अन्न वसन भूषन अवनि।
हाटक हीरा रजतमनि गऊ अमित उपमा कवनि॥९८॥

हय हाथी हथियार अमित सुभटन को दीन्हे।
न्योछावरि रघुनाथ अयाची जाचक कीन्हे॥
पुरबीथी अरु गली भली विधि गन्ध सिचाये।
बनये बिबिध बजार देखि मन सहज लुभाये॥
घर घर मंगल मोद अति रघुपति आये जनकपुर।
कह बनादास ज्यहि भाव जस नहिं उत्साह अमात उर॥९९॥

दगी सतघ्नी अमित जाहि घन सब्द लजाते।
बिबिध भुसुंडी ड्योढ़ लोग सुनि सुनि हरषाते॥
नृत्यगान बहु भाँति विरद बन्दी उच्चारे।
करत वेद ध्वनि विप्र भीर अति भू पदु वारे॥
सुभट सूर पुरलोग सब बहु आवत अरु जात हैं।
कह बनादास उपमा कहा रामहि लखि न अघात हैं॥१००॥

मिथिलापुर नर नारि प्रभुहिं अति लगत पियारे।
किमि दरसन सब लहैं कहैं नहिं हृदय बिचारे॥
लछमी निधि रूप जानि सकल साहनी बुलाये।
हयगय स्यन्दन यान सकल सब भाँति सजाये॥
बिबिध बर्न के तुरय वर स्यामकर्न मन वेगहय।
कह बनादास नखसिख सजे जाति औ खेत अनेग हय॥१॥

मत्त दन्त बहु सजे जाहि दिसि कुंजर लाजे।
करत सब्द बहु घोर मनहुँ घन सावन गाजे॥
तीखे दंत उतंग चतुर्दन्ता दुइ दन्ता।
एकदन्त बिन दन्त कवन कवि पावै अन्ता॥
स्याम स्वेत भूरे विपुल मनहुँ धतुरे असन करि।
कह बनादास मद बहत ज्यहि जनु पनार छवि रही भरि॥२॥

हौदा कंचन पीठि जटित मनि नाना जाती।
परी अँबारी ललित कलित अति झूल सुहाती॥

झालरि ज्यहि पचरंग आदि मुक्तामनि नाना।
मस्तक कंचन पत्र छुहे अंग सकल बिधाना॥
घोर सब्द घंटा करत हीरा माल बिसाल है।
कह बनादास रस से कसे को बरनै बर चाल है॥३॥

त्यहि गज ऊपर आय राम असवार भये हैं।
ऐस सजे अनेक जाहि रुचि जौन लहे हैं॥
कपिपति औ लंकेस भरत केवट हनुमाना।
रघुपति आज्ञा दिये चढ़ौ बाजी बिधि नाना॥
लछमीनिधि अरु सचिव सुतयऊ सुभग स्यन्दन चढ़े।
कह बनादास सख्या कहा सुभट सूर आगे बढ़े॥४॥

बाजे बिपुल निसान अमित फहरात पताके।
गज घटा घनघोर सब्द सुठि स्यन्दन चाके॥
सुतर अस्व गज गाज राजसी साज कहै को।
हारै मद मघवान अपर पटतरहि लहै को॥
उड़ी धूरि नभ भरि रही दिनहिं भानु नहिं लखि परत।
कह बनादास धसकत धरा नहिं उपमा उर अनुहरत॥५॥

चले जनकपुर गलिन अलिन प्रभु आवत जाने।
लगी झरोखन आय मोद उर अति अधिकाने॥
निरखि राम को रूप भई तन मन बुधि भोरी।
जाहि लजत बहु काम अंग प्रति मनहुँ ठगोरी॥
कनकमयो मनि मुकुट सिर मेचक कुंचित केस है।
कह बनादास कुंडल स्रवन लीनहु छटा बिसेष है॥६।

अतिही भाल बिसाल तिलक सोभा की खानी।
माराचारु कपोल हरन मन मृदु मुसकानी॥
सघन दसन की पाँति बीज दाड़िमहि लजावै।
अधर सधर बर अरुन कहा बिंबाफल गावै॥
भ्रू बिसाल सुठि बंक है कृपा कोर जापै परै।
चक बिलोकनि कंज दृग किमि तन मन धीरज धरै॥७।

मरकत द्युति मुख चंद्र सोऊ उपमा लघु लागै।
कम्बु कंठ हरि कन्ध ताप तिहुँ निरखत भागै॥

भुज अजानु केयूर करन कंकन छवि छाजे।
सरसिज से जुगपानि मुद्रिका करज बिराजे॥
बलनिधि करधनु सर धरे मुक्तमाल उर में लसी।
कह बनादास मरकत सिखर जनु धारा सुरसरि धसी॥८॥

लसत पीतपट तून कटिहि केहरि कटि लाजे।
जानु कामजुग भाथ रोमावलि सोभा साजे॥
राते पंकज पांय भृंग ह्वै मुनि मन छाये।
पदज नखन की क्रांति रहैं जोगीस लोभाये॥
नख सिख सोभा सीव सुठि बंधु दोऊ एकै बरन।
कह बनादास जाके सरन भये सकल संसय हरन॥९॥

जबही खिरकी निकट राम गज लागत आई।
धूपदीप तिय करत कोऊ कर बुक्क उड़ाई॥
नावत कोऊ अबीर कोऊ अरगजा बहावत।
कोउ चंदन घसि देत सखी मन भावत पावत॥
सुमन बृष्टि कोउ कोउ करत कोऊ यकटक जोहती।
कह बनादास रहि मुच्छि कोउ कोउ समीप सुठ सोहती॥१०॥

कहत परस्पर बैन आजु बड़भाग हमारे।
मन भावत सुख लहे निकट रघुवीर निहारे॥
आजु ईस अनुकूल सुकृत बहु जन्मन केरे।
फले आय यक बार परम प्रिय रामहि हेरे॥
नहिं गुरुजन की लाज है नहिं कुटुम्ब भय देखती।
कह बनादास अति प्रीति जुत यकटक रामहि पेखती॥११॥

कहत परस्पर सखी रही आसा उर माहीं।
कह देखब भरि नैन ईसगति जानि न जाही॥
दीन्हें बिधि करि पूर राम बस प्रेम कहत सब।
अंतरजामी अहै ताहि करि दिये दर्स अब॥
एक कहत मेरे हृदय निस्चय करि ऐसी ठनी।
कह बनादास नहिं सुकृत अस फिरि देखब कौसल धनी॥१२॥

एक कहत यक पाहि लाज सम पाप न कोई।
तामें स्त्री जाति सदा परबस रह जोई॥

मन को जो अभिलाष रहत मन ही मन आली ।
नही कही कछु जात कीन्ह विधि मनहुँ कुचाली ।।
हम खग से पिंजरा परे आगे से कढि जात है ।
कह बनादास मन तो गये प्रान परे पछितात है ।।१३।।

जो उरबासी कहै इनहि सब बेद पुराना ।
तो उर की अभिलाष सकल बिधि सबकी जाना ।।
याही सो है काज और का कीजै वामा ।
मुख से रटना नाम हृदय मे मूरति स्यामा ।।
गलिन गलिन बागत जहाँ अलिन मध्य आनद इमि ।
कह बनादास जानत वई अपर कोई सो कहै किमि ।।१४।।

युवा वृद्ध बहु बाल सग मे जातै लागे ।
देखत रूप अनूप हृदय बिच बहु अनुरागे ।।
जो देखत प्रभु रूप बीच कहुँ परत कलेसा ।
पावत अतिही लोग मनहुँ घन दुरेउ दिनेसा ।।
सोभापुर मिथिलेस की कवन पार कहिकै लहै ।
कह बनादास मति जाहि जसि सबकोऊ तैमे कहै ।।१५।।

अति बिसाल बर कोट नगर चहुँ पास सोहाये ।
तामधि कोट बिचित्र राजसी साज बनाये ।।
महल मनोहर दुर्ग धवल सुठि कलस अकासा ।
कनकमयी मनि खचित गूढ़ खाईं चहुँपासा ।।
लागे कुलिस कपाट बर बिद्रुम मनि मन मोहई ।
कह बनादास कासो कहै रचना अद्भुत सोहई ।।१६।।

रचे बिबिध चित्राम गुनीजन बरनि न जाई ।
तने चँदोवा चारु कहत कवि मति सकुचाई ।।
राज पीत सित असित हरित बहु झाप पडे हैं ।
कनकमयी सुठि पर्लंग जवाहिर बिपुल जडे हैं ।।
इसी सेज पय फेन से अगनित गृह भीतर परे ।
कोस खजाने हेम मनि सुचि सेवक जहँ तहँ अरे ।।१७।।

सुत रसाल रथ साल बिपुल गज साल बनाये ।
गोसाले बहु भाँति बृषभ महिषी हित भाये ।।

नाना खग मृग भवन मेष सूरे बहुपाले।
बकरे ब्याघ्र बिसाल जिनिसि बहु लाले काले॥
बने तोपखाने अमित सूर सांवतन के भवन।
गृह बहु दासी दास के बनादास बर्नय कवन॥१८॥

हारे मद मेघवान घनद सामान गमावै।
पुरबसगिति बर बनी घनी मुनि मनहिं चोरावै॥
रचना बिबिध बिचित्र द्वार सब कुलिस कपाटा।
को कबि असमति मान सराहै पुरबर ठाटा॥
कनकमयी मनि नग जटित बने बिपुल चित्राम है।
बने बरन चारिउ तहां सबकोउ सहित अराम है॥१९॥

बनी बजार बिचित्र चित्त चोरत सब भांती।
धर दुकान मन हरै बसे नर नाना जाती॥
बैठ बजाज सराफ मनहुँ सब घनद समाना।
लै लै बस्तु अनेक सकै को नाम बखाना॥
मनि मानिक हीरा रजत बिपुल जवाहिर लाल है।
हाटक भूषन मनिमयी जाके मोल बिसाल है॥२०॥

पट पाटम्बर धरे चीर अम्बर बहु जाती।
चीन और किमखाप दुसाले अगनित भांती॥
अतलस अमित अमोल जड़ाऊ ज्योति जगमगैं।
पट्टू अरु किजलक देखि मखमल मन ठगैं॥
पट्टा गोट अनेक बिध चमाचमी चहुँ दिसि भई।
कनक रजत भाजन घने ठठराही द्युति सरसई॥२१॥

बहु मेवा फल सुमन मिठाई नाना जाती।
तरकारी बहु तरह पोति द्युति सुठि सरसाती॥
हय हाथी हथियार बिकैं बहु खग मृग नाना।
अन्न अनेकन भांति नाम को करै बखाना॥
बहु प्रकार पकवान है हलुवा पूरी परम प्रिय।
मालपुवा खोवा दही लखि चिउरा ललचात जिय॥२२॥

देखि नगर चहुँपास आय पेखे बजार बर।
पुरबाहर पुनि गये अमित छबि आसपास कर॥

कहुँ उपवन वन कहूँ बाटिका कहुँ बरबागा।
जनु बसत सब काल रहत दस दिसि प्रिय लागा ।।
जहँ तहँ सर फूले कमल चारिबर्न पुरइनि पटल।
अति निर्म्मल गंभीर है देखि न परत बिसेषि जल ।।२३।।

गुंजत अलिगन मत्त चापि चाखत मकरंदहि।
कूजत जल खग भूरि जात बिरही उर सुनि दहि ।।
चक्रवाक वक हंस बरत कुक्कुट अरु खजन।
जलासिहू कलहंस परेवा सारस हर मन ।।
कोकिल कीर चकार रव हारिल तीतिर सोर है।
कोयल कूक पपीहरा धुनि नाचत कल मोर है ।।२४।।

पुर बाहर रम्यता अतिहि रघुपति मन भाई।
देखत सुनत सोहात समय सध्या तब आई ।।
चले नगर के ओर बरे बहुविधि पसाये।
नाना भाँति मसाल रोसनी मन अभिलाषे ।।
आये जब बिस्राम थल सकल लोग उतरे सही।
समय जानि दोउ बन्धु तब सध्या वन्दन निर्बही ।।२५।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विहार खण्डे भवदापत्रयताप विभजनोनाम सप्तमोऽध्याय. ।।७।

सभा मध्य पुनि बैठि आय रघुकुलमनि जबही।
गान तान अरु नृत्य होन लागे सुठि तबही ।।
बैठे सखा समेत सचिव सुत परम गँभीरा।
नाना सुभट सवत भई बहु लोगन भीरा ।।
पुनि प्रभु बर्पासन दिये वहुरि बियारी तर किये।
कह बनादास कीन्ह सयन बन्धु दोऊ हर्षित हिये ।।२६।

जागे प्रात काल नित्य निबहे दोउ भाई।
सभा बिराजे आय सबै कोउ सीस नवाई ।।
बोले चर वर चारि अवधपुर बगि पठाये।
कुसल छेम के हेत राम मिथिलापुर आये ।।
करि पुनि मग मे बास तिन अवधपुरी पहुँचत भये।
कह बनादास पद बन्दि कै पाती लछमन कर दिये ।।२७।।

रघुपति पाती बाँचि प्रथमही गुरुहि सुनाये।
पुनि घर बाहर बिदित सुनत सब आनँद पाये॥
दूतन दीन्हे वास प्रात उठि गमने सोई।
जाते पहुँचें वेगि डगर में गहर न होई॥
सिया मातु पुनि समय पर भेजे बन्धु बोलाय दोउ।
जाय सासु बन्दे चरन बैठे आसिष पाय सोउ॥२८॥

कुसल प्रस्न को बूझि भागि बड़ि आपु बखानी।
मनि गन भूषन बसन किये नेवछावरि रानी॥
तात मधुर कछु खाहु जवन सुठि भावत जीके।
फलमोदक घृत पक्वदिये जनु स्वाद अमीके॥
प्याये सुरभी छीर पुनि दीन्हे सुन्दर पान को।
कह बनादास जिमि मोद उर सिय जननी गति जानको॥२९॥

जनु पाये जल स्वाति पपीहा फनि मनि गयऊ।
पारस भेंटे रंक सूर जिमि रन जय लयऊ॥
जिमि रोगी लह मूरि मूक मुख बानी आई।
छुधित लहै रुचि असन कहा उपमा कवि पाई॥
बिछुरी जलते मीन जिमि पाई जननी जानकी।
कह बनादास प्रतिपलक जनु नेवछावरि कर प्रानकी॥३०॥

सिद्धि भवन तव गवन कीन्ह भरतहु रघुनाथा।
अति बर आसन दीन्ह आपु को जानि सनाथा॥
घान पान कुम्हिलात लहै मन मानिक पानी।
लहै चकोरी चन्द सिखी सुनि वारिद बानी॥
मृगी सुनै जिमि बीन धुनि बिलग मीन पुनि जलपरी।
कह बनादास कबि को कहै इनहूँ ते उर आनँद भरी॥३१॥

सुने अपर पुरनारि सिद्धि गृह राम गये हैं।
मृतक लहै जनु प्रान तेही बिधि मोद भये हैं॥
चली चैन चित चोपि मौन मौनहिं ते ललना।
राम दर्स की लोभ परै एको पल कलना॥
जिमि पावस पानी परे मीनउदंड न लखि परै।
कह बनादास जग बिदित सो चढ़ि ऊँचे झूरे मरै॥३२॥

तिमि धाई अति वेग भरी गुरुजन भय लाजा।
आय मिलीं रनिवास प्रभुहि लखि पूजे काजा॥

भरा भवन तेहि समय कौन कवि आनँद माखै।
करै विविध विधि प्रीति लाज तिनका सम नाखै॥
सब निरखहिं रघुबर बदन स्वत सकोच बिहाय कै।
कह वनादास स्नेहबस राम स्वबस सुख पायकै॥३३॥

हँसि बोली तब सिद्धि कौल तौ भले निबाहे।
भये निठुर यकबार आजु तक यहाँ न आये॥
अन्तरजामी कहत सन्त मुनि बेद पुराना।
हम कीन्हे अनुमान तुम्हें कछु परत न जाना॥
प्रेम बान मारे परखि हरखि रहे वाही दिसा।
कह बनादास सुधि ना लिये अब झूंठी देहौ निसा॥३४॥

मिथिलापुर की नारि बैर का तुमसे कीन्हा।
गये ठगोरी डारि भूलि फिरि सुधि नहिं लीन्हा॥
नाहक घर को त्यागि तुमहिं लगि होत फकीरा।
नहिं दाया उरमाहिं कहा जानौं पर पीरा॥
राजभोग को छाँडि जाय बनवासा करही।
नाना सकट सहैं सिंह बाघहि नहिं डरही॥
किन वौराये भाँति यहि चाल चलाये यह क्वन।
करत यकगी प्रीति को नाहक तन करते दमन॥३५॥

तुम स्वतन्त्र सर्वाग चलौ निज राह सदाही।
आपु सुखी जे अहैं और दुख जानै नाही।
भोग राग मर्जाद मान मे मगन सदा है।
लाखौं परे गरीब नृपति कछु तिनहिं न चाहै॥
भक्त जरत त्रय ताप मे भवबन्धन ब्याकुल सदा।
कह वनादास सुखसिंधु है ईस्वर सब वाहू वदा॥३६॥

दुइ दुइ गहे अनर्थ एक ही है अति भारी।
बूझिपरत तिहूँ काल रहा तुम से सबहारी॥
मडफ ऊपर गेंद जथा बहु भाँति बहावै।
टिकै छन कहू नाहिं सच भूतल मे आवै॥
इमि जो सुखिया आपु है नहिं गरीब को आदरै।
कह बनादास केनो कहै बचन नहीं उर म धरै॥३७॥

बोले राम सुजान बात सुनिये यह भामिनि ।
लखै चकोरी चंद नींद पुनि लहै न जामिनि ।।
सीस पूंछ मिलि रहै सहै दुख नैन न फेरे ।
चन्दन मानै कछू कौन सन्देह निवेरे ।।
मीन मरै बिछुरै पलक जल को कछू न ख्याल है ।
कमल प्रीति रबि सो करो पलटि उसी को काल है ।।३८।।

बीन सुनन के हेत मृगा निज प्रान गँवावै ।
नहि घन को स्नेह मोर अति ही ललचावै ।।
चातक रटि लटि मरै स्वाति को सुधि कछु नाही ।
नहि दीपक को चाह सलभ देखत जरि जाही ।।
प्रीति रीति इनकी प्रगट लोक बेदहू गावई ।
कह बनादास रघुबंसमनि मोको नेक न भावई ।।३९।।

तिहुँ पुर में स्नेह जहाँ तहँ स्वारथ हेता ।
देखो हृदय बिचारि बात हुँ सुनो सचेता ।।
वै सारे जड़ स्वबस प्रीति की रीति न जानें ।
जग मतलब के लिये बात सबको मन मानें ।।
मेरी ऐसी प्रीति नहि मैं जानो अरु मोर जन ।
कह बनादास गति बिदित है लोक बेदहू सुजस घन ।।४०।।

मैं स्वारथ नहि चहों करों जड़हू को चेतन ।
जो जन मोको भजै ताहि मैं भजौं लाय मन ।।
सारे औगुन हरों सकल बिधि पाप निवारों ।
मासकरो त्रयताप बिघ्न नाना बिधि टारों ।।
जो अत्यन्तक प्रीति कर ताके नित निकटहि रहै ।
कह बनादास जोइ भावना सोइ ताके संग निबंहै ।।४१।।

बर्नास्रम ते रहित नीच जोनिन जो जाये ।
करि दृढ़ उर मे प्रीति जोई मम सरनहिं आये ।।
सब कछु जे परिहरे रहे मो में लवलाई ।
नहि जानै स्रुति सास्त्र बिबिध बिद्या चतुराई ।।
मेरी एकै गति सदा और न दूजी चाह है ।
कह बनादास ताको सदा सब बिधि करौं निबाह है ।।४२।।

पुनि ताको इमि करौ बड़े जहँ लगि कोउ आही ।
बर्नास्रम अभिमान अहै पंडित जग माही ।।

तापद बदन करै चरन रज सीस चढावै।
ब्रह्मादिक सुर नमित प्रससा ताकी गावै॥
निज मे लेउं मिलाय तेहि लाक बेद तिहुं पुर विदित।
तुम ते दूजा कवन प्रिय मो मे राखत सदहि चित॥४३॥

जाकी जासो प्रीति रहै सो निकटहि ताके।
बिन देखे किमि जिये बचन सुनि स्वाद सुधा के॥
तृप्त लहत नहि कोय रूप रघुबीर निहारी।
नाना हास विलास स्वाद साउ जानहि नारी॥
भरत बचन बोले तबै सबको मोद बढायकै।
कह बनादास प्रभु लै चली सबहि बिमान चढायकै॥४४॥

तब बोली कोउ अली आपु तौ साधु कहावै।
सिद्धि कुवरि हँसि कहे सग फल कस नहि पावै॥
साधु कहावै साई जवन निज कारज साधै।
हमका साधे आय लगावत किमि अपराधै॥
प्रभु सब विधि समरत्थ है चहै जोई साधै अबै।
कह बनादास सुनि भरत के बचन मगन मन तिय सबै॥४५॥

ये नहि चढै बिमान यान मन हमै चढै हैं।
सबकोउ अहै सयानि पढे को कौन पढै है॥
चढने की रुचि मोहि चढावै जो मन यानहि।
नहि उतरौं कोउ काल अनत चित कतहुं न मानहि॥
यहि बिधि हास बिलास बहु सबल सुकृत को फल लहै।
कह बनादास आनद वह समुझे सुख कवि का कहै॥४६॥

चले हर्षि हिय द्वार सिद्ध पटपौल गहो जब।
राम सकोची बानि भाव लखि बैठि गये तब॥
लाई अतर गुलाब बिबिध बिधि चोवा चदन।
केसरि नीर उसीर अरगजा भरि आनदन॥
बुक्का और अबीर बर बीरा सुर सब नाय कै।
कह बनादास सब ठवर भरि अस उर मोद बढायकै॥४७॥

लै लै पकज पानि अंग रघुबीर लगाये।
सहित भरत के बदन हृदय मुठि चोप बढ़ाये॥

करते पात्र उठाय सीस प्रभु नाय दिये हैं।
भीजि गई तन मनहुँ मोद रह्यो छाय हिये हैं।।
तब बीरा दीन्हे हितै परम सनेह सम्हारि कै।
कह बनादास द्वारे चले फिरि फिरि रही निहारि कै।।४८।।

रही सकल छकि हिये हृदय मृदु मूरति राखे।
को कवि छाया लहै बचन मन परे सो भाखे।।
राम प्रीति आधीन कहत नित वेद पुराना।
जहाँ प्रेम परिपूरन से तह मुनि जन जाना।।
गईं सकल निज निज भवन दवन किये दुख द्वन्द्व को।
कह बनादास मिथिला मनहुँ उमग्यो उदधि अनंद को।।४६।।

साँझ समय भै भवन गौन संध्या हित कीन्हे।
भरत सहित प्रभु आय सभा महँ बैठक लीन्हे।।
राजित नृपति बिदेह लंकपति औ कपिराजा।
गुहा और हनुमान सचिव नृप तनय विराजा।।
सतानंद तब आयकै कहन लगे कछु कथा सुचि।
कह बनादास हरि जस बिसद बाढ़ी सबहिं बिसेषि रुचि।।५०।।

अर्धयाम पुनि याम जबै रजनी गै बीती।
तब बोले नृप जनक बचन मृदु अतिहि सप्रीती।।
लंकापति कपिराज अधिक मोहि आनंद दीन्हा।
कृपापात्र हनुमान गुहा बड़भागी कीन्हा।।
तब सब बोले नृपति दिसि सील सनेह बढ़ाय कै।
कह बनादास तुम पितु सरिस सुकृती दर्सन पायकै।।५१।।

ज्ञान वृद्ध वय बृद्ध बृद्ध ओहदा जग लोका।
करत ब्रह्म रस पान राज सुख सब विधि फीका।।
रघुपति कृपा प्रसाद आपुको दर्सन पाये।
भागि भूरि अति लखे बचन भाषत सतिभाये।।
तब बोले रघुबंसमनि जगत नृपति को जनक से।
आठयाम जिन मन कसे ज्ञान अग्नि में कनक से।।५२।।

सत्य महीपति नाम अपर सब नाम नकल है।
गोय रह्यो सो नाहिं बिदित भय जगत सकल है।।

भोग प्रयी परसिद्ध ब्रह्म सुख जोगवत नीके।
जड चेतन की गिरह छोरि डारी जिन नीके॥
को तिहूँ काल बिदेह सेतिहूँ लोक मे नहि फबै।
कह बनादास दोऊ दिसा जो मम है देखो अबै॥५३॥

एक इहाँ अति सुखो अत यमधाम सिधावै।
एक अहै अति दुखी वहाँ ऊँचा पद पावै॥
यक रीता दोउ ओर ताहि को सब कोउ निन्दै।
जनक लोक सम दोऊ ताहि करि सब जन बन्दै॥
सकल धर्म नयबेद बिद लोक कुसल सब काल मे।
कह बनादास अति गूढ गति छुइ न जात जग जाल मे॥५४॥

जनक वचन सुनि राम तोप अति हृदय लहे है।
सने सील सकोच वचन नहि जात कहे हैं॥
बोले रघुकुल केतु मोहि अब अज्ञा दीजै।
जाते प्रातःकाल गमन कोसलपुर कीजै॥
भूप गमन परधाम को आपु वने तो नृप वने।
कह बनादास सिसु जानि कै कृपा सदा यहि विधि भने॥५५॥

वस न कहहु रघुनाथ सदा पालक स्रुति सेता।
दिनमनि बस दिनेस भजत जेहि ऊरधरेता॥
तुमहि जान किमि कहौं बसौ सबके घट माही।
ताते जइये अवध अवधि बड़ियाते नाही॥
प्रेम पियासे लोग सब करुना जल सींचे अबै।
कह बनादास मिथिलेस जू बहुरि दर्स देवै सबै॥५६॥

जाय किये प्रभु सयन सबै कोउ सोवन लागे।
प्रात उठे रघुबीर भरत पहिले प्रभु जागे॥
नित्य निबाहे राम काम सतकोटि सुभग तन।
गमने भोतर भवन सासु पद कीन्हे वन्दन॥
पुर मे प्रगटी बात यह चलन चहत सीतारवन।
वह बनादास स्नेह बस लोग सबै उपमा कवन॥५७॥

राम जवाई जानि नगर तिय भीतर आई।
रघुबर दर्सन लोभ प्रीति अति हो उरछाई॥

सबको करि सनमान समय सम राम कृपाला।
बहुरी प्रीति समेत सासु पद नायउ भाला॥
सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलखाय तब।
मिथिलापुर जन प्रान तुम अवधौ दर्सन लहब कब॥५८॥

करि सबको परितोष भवन ते बाहर आये।
चलन साजु सबकीन रजायसु रघुपति पाये॥
बन्दे चरन बिदेह पुलक तन नयन सनीरा।
दीन्हे भूप असीष अतिहि उर धरि कै धीरा॥
करि प्रनाम मुनि जन द्विजन यान चढ़े तब रामजू।
भरत बिभीषन आदि सब जनकहि कीन्ह प्रनाम जू॥५६॥

सब कोउ चढ़े बिमान पाय आयसु रघुनाथा।
पहुँचावन के हेत चल्यो भूपति सुत साथा॥
चल्यो चोख अति यान गगन नर नारि निहारैं।
मानहुँ चन्दचकोर सकहि कोउ नैन न टारैं॥
अटा चढ़ी निरखत भली जब तक नहीं अदेख भो।
कह बनादास बस प्रीति के पीछे सोच बिसेख भो॥६०॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे विहार खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम अष्टमोऽध्यायः॥८॥

कीन्ह गमन रघुनाथ जनक तब सचिव बुलाये।
सेवक कुसल बिधान सकल तेहि अवसर आये॥
कंकन औ केयूर बिबिध रतनन की माला।
कुंडल मकराकार मुकुट बहु रंग दुसाला॥
धनुषवान अरु चर्म असि नाना मनि भूषन बसन।
हय हाथी रथ यान बहु बरनत कवि हारैं कसन॥६१॥

खग मृग महिषी वृषभ धेनु बहु भांति सोहाई।
नाना बस्तु अमोल अवधपुर दीन्ह पठाई॥
राम भरत कपि राज लंकपति गुह हनुमाना।
सुत सुमन्त के सहित भलो बिधि कीन्ह बिधाना॥
सब को भाग लगाय कै जथाजोग भेजे जनक।
मनि मानिक अगनित दिये रजत भूरि दीन्हे कनक॥६२॥

सकल भाँति से सोधि किये सुचि सेवक साथा।
सबको नाम लिखाय दई पत्री रघुनाथा॥
चले अवधपुर सकल बास बिच बिच मग माही।
उर मे सदा अधिक जात ताते हरषाही॥
कब देखब रघुबसमनि सबके अभिलाषा यहो।
कह बनादास को भागि हुत जो नहि रघुबीरहि चहो॥६३॥

दूरिहि ते प्रभु लखे जहाँ कौसिक मुनि बसहीं।
करहिं जज्ञ तप जोग बिबिध साधन तन कसही॥
निवर्तहि गगा बहुत कहत सोभा कबि लाजै।
तट सुर सरि बन सघन मनहुँ अति हो छवि छाजै॥
नाना तरुवर पल्लवित हरित फूलि फल महि नये।
कह बनादास घन बोप ते जिमि सज्जन मन नै गये॥६४॥

कूजहिं कोक्लि कीर पपीहा तीतिर नाना।
नीलकठ कलकठ सारिका बिबिध बिधाना॥
चक्रवाक बक हस करत सारस रव भारी।
कुक्कुट खजन अमित परेवा सोभा भ्यारी॥
नटत मोर चित चोद सुठि बन मृग बिपुल बिहार कर।
कह बनादास गत बिषमता मुनि महिमा सब भाँति वर॥६५॥

उतर्यो भूमि बिमान गुरुहि रघुनन्दन बन्दे।
भेटे हृदय लगाय रिपय उर अतिहि अनन्दे॥
सब कोउ किये प्रनाम सुभग आसिष को पाये।
आसन दिये बिचारि समय सम गग नहाये॥
मुनि समीप बैठे सबै रघुपति भरत सुजान है।
कह बनादास कौसिक कहो गमन वहोत बिहान है॥६६॥

गुरु अज्ञा सिर घरे गाधिसुत सुठि बिज्ञानो।
समय बिचारे हृदय कहे कछु कथा पुरानी॥
पुनि आयो फल मूल जहाँ तहँ ते बहुभारा।
दूध दही मिष्ठान्न कहै को बिबिध प्रकारा॥
रिषि महिमा जाने सबै अतिहीं अगम अपार है।
कह बनादास बिधि के सहित कटा सबहिं फरहार है॥६७॥

गये यामिनी याम सबै फरहार किये हैं।
पीछे बिस्वामित्र सोध सब भाँति लिये हैं।।
प्रभु आये मुनि पास चरन पंकज सिर नाये।
लंकापपि कपिराज गुहा भरतादिक आये।।
सबकोउ बन्दे मुनि चरन हरन सोक संदेह भ्रम।
कह बनादास सारद थकित महिमा संतन को अगम।।६८।।

बोले रघुकुल केतु बहुत दिन पर पद देखे।
कृपासिधु बड़ि भागि आजु सबविधि करि लेखे।।
लोक बेद तन बंध जहाँ तक देखी नाथा।
गुरु से बड़ा न कोय निगम गावत गुन गाथा।।
गुरु नेष्ठी ते धन्य जग मग बिन स्रमहिं सिरात है।
कह बनादास करचारि फल बड़ी नही कछु बात है।।६६।।

सत्य कहे तुम तात बात कछु महूँ बिचारा।
तुमहि हेत गुरु करै तुमहि लगि सकल पसारा।।
तप तीरथ व्रत नेम जज्ञ जप तुम्हरे लागी।
तुमहि लागि तजि राज भूप बहु होत बिरागी।।
भक्ति ज्ञान विज्ञान पुनि जहँ लगि स्रुति साधन कहै।
कह बनादास पुनि पुनि कहे राम तुम्हारे हित महै।।७०।।

सोम सूर बिधि बिष्नु सम्भु सुर अज्ञावर्ती।
अनल पवन जम काल सेष सिर लीन्हे धर्ती।।
मरन जन्म बय वृद्ध जरा अरु ब्याधि घनेरे।
मर्जादा नहिं मिटत तुमहि प्रेरक सब केरे।।
स्रवन नयन मुख नासिका कर पग उदर अनेक है।
कर्ता कारज कारनो जहँ लगि करै बिबेक है।।७१।।

मन बुधि चित हंकार तुम्ही सबही के स्वामी।
तुम बिन ये जड सकल सर्ब उर अंतरजामी।।
बेद पुकारत नेति मुनिहुँ मन ध्यान अगम अति।
सारद सेस गनेस नारदौ सदा थकित मति।।
तुम पालक स्रुति सेतु के भक्त हेतु नर तन धर्यो।
नीचा अनुसन्धान करि मानि गुरू अति आदर्यो।।७२।।

तुम से तुमहीं एक नहीं कोउ जानन हारा।
तुम्हरी लीला अगम कहाँ लगि करै बिचारा।।

सोइ जानै कछु तुम्है जाहि निज ओर जनाये।
तुममे रहै समाय फेरि भव कर्वाहि न आये ।।
तातें इमि करुना करौ जाते कबहुं न बिसरिये।
कह बनादास नाता गुरू मानौ हौं क्यों निर्दरिये ।।७३।।

सकुचि गये रघुनाथ कहे अब सोवहु ताता।
सयन कीन्ह तब जाय उठे होतहि परभाता ।।
नित्य निबह सब भाँनि चरन गुरु बदन कीन्हा।
भरत सहित सब सखा महामुनि आसिप दीन्हा ।।
बिदा माँगि रिषि चरन परि अभिमत आसिष पायकै।
कह बनादास कामी चले सहज सनेह बढायकै ।।७४।।

आये कासी राम बिमल जल गंग नहाये।
तब नाना विधि दान तीर्थ के ब्राह्मन पाये ।।
जाचक किये निहाल गरीबन बहु बित दीन्हा।
जो आये प्रभु पास बिमुख काहुहि नहिं कीन्हा ।।
पूजे सिवहि सनेह सुठि मुनि संतन बन्दे सबै।
कह बनादास जे दूत गे अवध दिये पाती तबै ।।७५।।

अवध कुसल प्रभु पूछि पत्रिका लछमन बाँची।
कासीपति आगमन जानि पायो प्रभु साँची ।।
धायो निर्भय प्रेम राम पद बन्दन कीन्हा।
भेंटे हृदय लगाय सखहि सुठि आदर दीन्हा ।।
मिले परस्पर सब कोऊ उर उत्साह बढायकै।
कह बनादास रघुनाथ को निज गृह गयो लिवायकै ।।७६।।

सकल भाँति सन्मान भवन सुचि आसन दीन्हे।
अहो भाग्य निज जानि विविध विधि बिनती कीन्हे ।।
नित गंगा स्नान करहि संकर की पूजा।
बार बार प्रभु कहे नहीं प्रिय सिव सम दूजा ।।
बैठ सभा रघुबसमनि कासिराज कर जोरि कै।
कह बनादास बोलत भये मनहुं प्रेम रस बोरिकै ।।७७।।

स्रुति साधन बहु भाँति जज्ञ जप तप ब्रत दाना।
पूजा नेम अचार अपर ज्ञानहु बिज्ञाना ।।

तारय अटन अनेक जोग अष्टांग कहावै।
धर्म कर्म बहु भांति कहां तक नाम गनावै॥
बिन उपासना सून्य सब कोउ कोउ जन ऐसा कहै।
कह धनादास करिकै कृपा बरनो जन इच्छा अहै॥७८॥

बोले राम सुजान जौन साधन सब भाखै।
ताको नहि कछु काम हृदय ऐसा दृढ़ राखै॥
पतिव्रता जिमि तीय पीय तजि गति नहि दूजो।
कर्म बचन मन रहै सदा पति प्रेम सपूजो॥
जहँ लगि जग सम्बन्ध है देव पितृ विधि बेद कह।
कह बनादास नहि कछु लखै मोही में आनन्द रह॥७९॥

केवल मेरा नाम जपै दिनहूँ औ राती।
मेरी लीला छांड़ि बात नहि अपर सुहाती॥
तिहूँ लोक ऐस्वर्य सकल तिनका सम देखै।
अनिमा आदिक सिद्धि भूलि तेहि ओर न पेखै॥
जग आसा बल आपनो बिरह अनल में लै हुनै।
कह धनादास मतवाद जे लोक बेद की नहि सुनै॥८०॥

स्वर्ग नर्क अपवर्ग काहु की सुधि नहि आवै।
मृत्यु और जमकाल भूलिहू भय नहि लावै॥
को छोटा को बड़ा कहा अस्तुति औ निन्दा।
मान बड़ाई खाक कौन मुरदा को जिन्दा॥
मन इन्द्री स्वाधीन करि मरि जीते जग में रहै।
तृष्ना आस न बासना काहू सों कछु ना चहै॥८१॥

कबहीं मेरे हेत प्रीति करि अतिसय रोवै।
कबहीं आरत बुद्धि दिसा दसहू में जोवै॥
जैसे जल ते बिलग मीन होते तनु त्यागै।
फनिमनि बिन नहि जिये पतंगा अति अनुरागै॥
बिना हेत प्रानहि तजै चातक टेक अनूठ है।
कह बनादास जेहि स्वाति बिन अपर सकल जल जूठ है॥८२॥

धीन सुनन के हेत मृगा जिमि प्रान गवांवै।
सूर न रन से फिरै सती जिमि जरि बरि जावै॥

कमल भानु गति बिदित जथा चुम्बक औ लोहै।
कहँ लै कहाँ बढ़ाय प्रीति ऐसी बिधि सोहै॥
लखै चकोरी चन्द ज्यो धीच पलटि पूंछहि मिलै।
कह बनादास घन घटा लखि ज्यो मयूर पग नहि हलै॥८३॥

देखा ये जड सकल लोक बेदहु जस गावै।
निज मग अतिहि अरूढ ताहि ते सोभा पावै॥
मानुष तन चैतन्य भवन मेरा सुठि जानो।
भयो भजन के हेत भला सब काहू मानो॥
भूला काल अनादि को जो कदापि सन्मुख भयो।
कह बनादास खोटी करी कस नहि जरि गर्भहि गयो॥८४॥

तनमन बुधि औ बैन सकल मोही मे लावै।
मो बिन औरो ठौर कहूँ पलकल नहि पावै॥
तृष्न न कबही लहै नाम औ रूप हमारे।
मेरे धाम न बसै टरै कबही नहि टारे॥
मेरी जहँ जहँ भई है जात्रा पुनि जावै तहा।
कह बनादास उत्साहजुत हारिल ज्यो लकडी गहा॥८५॥

यहि बिधि जब दृढ होय पलटि मैंही बस होवो।
फिरि चाहै तिमि रहै ताहि तजि अनत न जोवो॥
सर्ब बिघ्न को हरौं सकल अन्तरमल नासौं।
सोक मोह सन्देह दाहि उर ज्ञान प्रकासौं॥
ता बिन मो को चैन नहि निज मे लेउँ मिलाय तेहि।
कह बनादास अन्तर रह्यो भय उपासना सिद्धि नहि॥८६॥

बोध महा अद्वैत भाव मम प्रापति होवै।
को जानै गति तासु देह मे सबकोउ जोवै॥
जैसे पिंजर फारि सिंह बाहर ह्वै आयो।
तिमि तन में नहि रह्यो मुक्ति जीवत जिन पायो॥
सब साधन करि का करै काज सबै याते सरै।
कह बनादास मोते बिमुख बार बार जन्मै मरै॥८७॥

सुन्यो सखा प्रभु बचन हृदय अतिही सुख पायो।
नाना भूषन बसन सस्त्र बहु भाँति मँगायो॥

तब बोल्यो कर जोरि नाथ बिनती कछु मोरी ।
करि पोसाक नवीन भाँति बहु रह्यो निहोरी ॥
भय मरजी रघुबीर की देहु पुराने जाचकन ।
लावो मेरे हेत सो तुम्हरे मन मानै जवन ॥८८॥

निज कर किये सृंगार भरत रघुवर दोउ भ्राता ।
देखि देखि सर्वांग मोद नहिं हृदय समाता ॥
लंकेस्वर कपिराज गुहा हनुमान सचिव सुत ।
पहिराये सब काहु वसन भूषन अति अद्भुत ॥
दिये जाचकन वस्तु सब जो रघुपति अंग में रहो ।
कह बनादास सहित आपने लिये प्रसादी सो सहो ॥८९॥

साँझ समय प्रभु जाय गंग तट संध्या बन्दे ।
आय बिराजे सभा देखि सब राम अनन्दे ॥
गात तान बहु भाँति नृतक गन नृत्य करै हैं ।
बिप्र बेद धुनि करत बिरद बन्दी उचरै हैं ॥
समय पाय कीन्हें सयन पाँय पलोटन लव लगे ।
कह बनादास मारुतसुवन भरत प्रीति अतिही पगे ॥९०॥

सयन किये हनुमान भरत प्रभु प्रातहि जागे ।
करि सुरसरि अस्नान पूजि सिव सुठि अनुरागे ॥
दिये द्विजन को दान जाचकन बहु सनमाने ।
भूपति दासी दास वस्तु पाई मन माने ॥
लाये आस्रम कृपानिधि अवध गमन करते भये ।
कह बनादास दिन पंच रहि कासिराज संगहि लये ॥९१॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे विहार खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

सिंहासन आसीन राम सतकाम सुभग तन ।
मुकुट सीस द्युति भानु काक पच्छहि सोहत मन ॥
कुंडल मकर अकार भाल बर तिलक बिराजै ।
नासा चारु कपोल अधर दसनन छबि छाजै ॥
राते कंज बिसाल दृग भ्रू धनु कम्बुग्रीव है ।
कन्ध वृषभ उर सुठि वृहद उभय भुजा बल सींव है ॥९२॥

मुक्त माल उर लसै सुमन तुलसी दल सोहै।
दहिने कर यक तीर बाम कोदड बनो है॥
ककन अरु केयूर मुद्रिका करज लसी है।
त्रिबली नाभि गभीर सिंह कटि पीत कसी है॥
लसी तून सोभा बसी काम माथ जुग जानु है।
कह बनादास पकज चरन मुनि मन रहत लोभानु है॥६३॥

बैठे निज निज ठौर भरत कपिपति लकेसा।
लछमोनिधि हनुमान गुहा अरु कासि नरेसा॥
सुत सुमन्त बहु सुभट चहूँ दिसि सकल बिराजें।
मध्य राम सुखधाम कहत सोभा सब लाजें॥
धन्य ध्यान यहि निरत जे लहे जन्म कर सुकृत फल।
कह बनादास तब अवध दिसि चौखो चलो बिमान भल॥६४॥

चलत भई नहिं देर नगर के निकट निराने।
समाचार पुर लोग लषन रिपुसूदन जाने॥
धाये तजि गृह काज सकल प्रभु दर्सन लागी।
भूसुर जाचक ज्ञाति महाजन मन अनुरागी॥
लषन और रिपुसूदनौ मिल अग्र सुठि आयकै।
कह बनादास रघुपति उतरि भेंटे हृदय लगाय कै॥६५॥

बन्दे मुनि द्विज देव राम कौसल पुरबासी।
धाय धाय पग धरहिं प्रतोषे प्रभु सुख रासी॥
रिपुसूदन अरु लषन मिले भरतादिक सारे।
रघुनन्दन सब सहित मुदित तब पुर पगु धारे॥
प्रथम आय गुरुद्वार प्रभु चरनकमल बन्दन किये।
कह बनादास सुठि प्रेम जल मुनिहिं राम लाये हिये॥६६॥

बन्दे सब मुनि चरन रहे जो कोउ प्रभु साथा।
मुनिवर दीन असीस भवन गवने रघुनाथा॥
कीन्हे बिदा बिमान धनद के सदन सिधारा।
लछिमन अरु अरिदवन कीन्ह सबकेर सम्हारा॥
दीन्हे बास बिचित्र अति सब बिधि सुखप्रद जानि कै।
कह बनादास निवसे सकल राम सहित मुद मानि कै॥६७॥

भई बिबिध जेवनार स्वाद कछु बरनि न जाई।
षटरस चारि प्रकार सकै को नाम गनाई॥

उठे रामजुत बन्धु सखा सब साथ सिधारे।
कंचन पीढ़न बैठि परे सुन्दर पनवारे॥
परसत रिपुसूदन हरषि तिय रहि गारी गाइकै।
कह बनादास मिथिलेस सुत ताते मोद बढ़ाइकै॥९८॥

अचवन सबहि कराय सुभग कर पान दिये हैं।
सेवक चतुर अनेक लहे सुठि हर्षहिये हैं॥
निज निज आस्रम गये परम बिस्रामहि पाये।
बसहि अवध यहि भाँति कहाँ निसि औ दिन जाये॥
एक दिवस आज्ञा दिये रघुनन्दन हरषित हिये।
साजौ हय गय यान रथ सद्य बनाव सकल किये॥९९॥

साजे स्यन्दन सुभगन हेहय अगनित सोहैं।
भानुयान हय लजित देखि गति मनसिज मोहैं॥
सुचि पताक फहरात अधिक घंटा रव करहीं।
नाना आयुध धरे रथी उर आनंद भरहीं॥
मत्त दंत अगनित सजे लजे दिसा कुंजर जिनहि।
कह बनादास कवि को कहै करि सृंगार नख सिख तिनहि॥१००॥

सत्रुंजय गज नाम सुभग रघुनन्दन जी का।
सोन पत्रिका सोह तासु मस्तक में टीका॥
तामें हीरा जटित भानु से द्युति परकासै।
मनिमै हौदा हेम अमारी लागि अकासै॥
झूलजर कसी जगमगै ठगैं जाहि मन देखि कै।
कह बनादास बस्ती बसत बासव हिय रुचि पेखिकै॥१॥

अमित सिंधु जा अस्व बिपुल काबुल कन्धारी।
खुरासान मुल्तान काठियावार पहारी॥
कच्छी जंगल खेत मोर गीददरी केरे।
देखा नाना भाँति जाति बहुरंग बछेरे॥
टेटुवा टेढ़ो तीर के टाँगन मन मानो हरत।
कह बनादास सृंगार को सबहि साहनी सुठि करत॥२॥

स्यामकर्न कुम्मैतनो कराकुल्ला सोहै।
मुस्की अबलख चाल केहरी लखि मन मोहै॥

सिरगा समुद उदार बदामी गर्रा राजै।
खाकी औ सजाक बिबिध कच्छी छबि छाजै॥
पचकल्यान सुरग है लक्खो विपुल लखावरो।
मुर्खा सब्जा रग बहु सकल पीठि काठी परो॥३॥

परी जरकसी जीन चार जामे कसि आछे।
सोभित रूर रकाब तग अजमाई पाछे॥
कलँगी राजित सीस जड़े हीरा मनि नाना।
पग चौरासी कसी कड़े पग जोग बखाना॥
श्याल पूँछ मोती लसी दुमची कसी अनूप छबि।
पैसबन्द गडा गरे जेरबन्द किमि कहै कवि॥४॥

मुख पट्टा औ पूज हुवेल कहै किमि सोभा।
परे जाल पचरग अनगहु देखत लोभा॥
लादे पुनि गज गाहु गरूरे सोभा न्यारी।
जीन पोस कल कोस मनहुँ छबि की है क्यारी॥
नख सिख साजे तुरग बरजोर जग को कवि कहै।
निदरत रवि बाहन मनहुँ बनादास किमि निर्बहै॥५॥

सुतर सजे बहु भाँति पीठ पर काठी राजै।
तापर झूल अनूप अधिक रव घटा बाजै॥
कसे नकेल सकेल पेल गर गगन उठावै।
चलै चाल बगमेल पेल कहु कवि जन पावै॥
तामदान पीनस विपुल सजे सुभग सुखपाल हैं।
कह बनादास गज पीठि तब बैठ राम महिपाल हैं॥६॥

निज निज रुचि गज बाजि चढे स्यन्दन बहु नाना।
भरत लषन रिपु दौन पौनसुत परम सुजाना॥
गुहाराज कपिराज कासिपति सुत मिथिलेसा।
सुत सुमन्त सरदार बिपुल आदिक लकेसा॥
सूर बीर बाँके विविध सेनप सखा अपार हैं।
कह बनादास सख्या कहा अमित महीप कुमार हैं॥७॥

उपमा लहै न जोग देखि सारद मति होची।
अपर कौन कवि कहै सिंधु को सीप उलीचो॥

उड़ी धूरि नभ पूरि भानु अवलोकि न परहीं।
रथ चाका थहरात मते दन्ती चिक्करही॥
घंटा धुनि सुठि घोर अति सावन घन सकुचात जू।
कड़खा को तल जागरे बहु पताक फहरात जू॥८॥

तीपे तुरग उमंग भूमि टापन ते फालत।
उझकि उझकि असमान अस्व मन मौज सम्हारत॥
मनहुँ अनल पग परत घरत उर नेक न धीरा।
चाहत उड़न अकास बेग बर मनहुँ समीरा॥
ककदल कदल उतंग अति जमलजकंनत जात है।
कह बनादास कावा फिरत अंग अंग थहरात है॥६॥

मत्तदन्त पगधरत मनहुँ सुठि धरा दबावत।
दबत कच्छ अरु कोल सेष जनु कटि लचकावत॥
गगन उठावत सुड चहत रबि रथहि लपेटा।
ऐरावत को जनो मनो करि जगतन छेटा॥
सैना अग सुमेरु को सृंग मनहुँ चोपा चलत।
कह बनादास अति दसन बर मनहुँ अवनि बल ते हलत॥१०॥

तापर राजित राम स्याम छबि अंग नवीने।
पीछे हय हनुमान पान झोराकर लीने॥
नखसिख सोभा सीव मदन द्युति कोटि दबावत।
बरनै सारद सेष बेद उपमा नहिं पावत॥
भरत लषन रिपुदौनजू सुभग तुरंगन सोहते।
कह बनादास सोभा उदधि को नहि लखि मन मोहते॥११॥

पदचर वार न पार रह्यो दिन अर्द्ध याम जब।
चली सवारी सुभग गली बीथिन बागन तब॥
चढ़ी अटापुर नारि धाम प्रभु देखन हेता।
सिव मन मानसहंस ध्यान धर ऊरधरेता॥
लगी झरोखन झाँकती मनहुँ चकोरी चन्द मुख।
कह बनादास को कवि कहै जानै सोइ जिन लहे सुख॥१२॥

रजतमयी चहुँपास कोटि अति दुर्ग सोहाये।
मानहुँ गिरि हिमवान करन रच्छा पुर आये॥

बीच बीच वर बज्र लगी तापैं बहु तोपैं।
को जग सन्मुख होय कबहुँ कोसल नृप कोपे ॥
चारि दुवारे चहुँ दिसा सुभट सूर समरत्थ हैं।
बन्दी विरदावलि बदत बेद अगम गुन गत्थ हैं ॥१३॥

दस सहस्र गज अधिप रथो वर सहस पचीसा।
लच्छ तुरै असवार द्वार द्वारे अवनीसा ॥
पदचर सख्या नास्ति विविध बिधि बाजे बाजैं।
नहि उपमा उर फवै वलाहक जनु बहु गाजैं ॥
कोट मध्य पुनि कोट है कनक मयो मनि नग खचित।
कह बनादास तेहि मधि महल बीतराग ललचात चित ॥१४॥

बने धामसुठि धवल कलस असमान मिले जनु।
लागे कुलिस कपाट ठाट कहि पार न लह मनु ॥
तनी चाँदनी अमित झाप पचरग परे हैं।
बेदी मनि पै चारु भुवन सुरराज लरे हैं ॥
कनक मसी मनि ते जटित परे पलग पर्यंक है।
डसी सेज पय फेन से धनदहु लागत रंक हैं ॥१५॥

कोप खजाने अमित कनक मनि कौन गनावै।
साज राजसी अगम कहा कोउ पटतर पावै ॥
बाजिसाल गजसाल सुतर साले गोसाले।
तोसे खाने घने बने नाना रथसाले ॥
बने तोपखाने विपुल मृगसाले खगसाल हैं।
मेष सूर महिषी बृषभ अजया ब्याघ्र बिसाल हैं ॥१६॥

पुरबस्ती अति घनी बनी बरनै कवि कोहै।
धवल धाम सुबिसाल कलस देखत मन मोहै ॥
लागे कुलिस कपाट भवन मनि दीप धरे हैं।
बने चारु चित्राग अतिहि परकास करे हैं ॥
सुत बित परिपूरन सबै नहि सपनेहु त्रयतापजू।
रामराज जब से भये दूरि गये सब पापजू ॥१७॥

बनी बजार विचित्र चारु चित चोरनहारी।
दर दुकान द्युतिमयी दुर्ग अति अमित अटारी ॥

बस्तु अनूपम धरेउ ठौर ठौरहि पर सोहै।
नामरूप गुन भूरि कहै उपमा कवि कोहै॥
बैठे बजाज सराफ है जनु धनेस को मद हरे।
नाना मनि भूषन घने लेनहार जहँ तहँ खरे॥१८॥

चही बस्तु जेहि जौन तौन ठौरहि परपावै।
दाम बिना बहु काम सरै को नाम गनावै॥
गोटा पट्ठा टंगे घने किमखाब दुसाले।
पाटम्बर किंजल्क मखमले काले लाले॥
हीरा हाटक औ रजत बहु रतनन की खानि है।
ठठरा ही न्यारो बसो अमित छटा सरसानि है॥१९॥

पट्टू कम्मल चीन अमित अतलस के ढेरे।
नाना फल औ फूल गनै को नाम घनेरे॥
हलवाइनको वस्तु अमित पकवान धरे हैं।
दूध दही घृतपक्व मिठाई स्वाद परे हैं॥
पेड़ा बरफी सेव सुचि खाझा लेडुवा खाँड है।
केला मिसिरी अनगने बने बतासे चाँड़ है॥२०॥

कन्द जलेबी कलित ललित गट्टे बरसोले।
रेउरी मोहनभोग अँदरसे अधिक अमोले॥
मालपुवा औ पुवा स्वाद नाना विधि भावै।
पूरी प्यारी परम कचौरी चित ललचावै॥
धरे अचार अनेक विधि तरकारी स्वादित परम।
कह बनादास देखत बनै सद्य किये गरमागरम॥२१॥

कुंडल मुकुट रसाल अमित रतनन की माला।
कंकन अरु केयूर जराऊ स्रुति के बाला॥
कर मुद्रिका अनेक पैंजनी पग बहुतेरी।
कटि किंकिनी सुमुखर तियन के भूषन ढेरी॥
हय हाथी रथ नाल की तामदान पीनस घने।
खग मृग गो महिषो वृषभ अन्य बस्तु बहु अनगने॥२२॥

अस्त्र सस्त्र बहु धरे चर्म असि नाना भाँती।
सक्ति सूल अनगने कटारी छुरी सोहाती॥

वक्तर जिरह अनूप धरे बरछा बहु रूरे।
धनुष बान तरकून देखि लोभित रन सूरे॥
दस्ताने कूडी धनी जिरहटोप आयुध घने।
कह बनादास बरनै क्वन यह बहार देखत बनै॥२३॥

सडक चौमुखी चारु सुगन्धन सदा सिचाई।
लागी गुदरी सांझ समय छवि बरनि न जाई॥
विपुल नरन की भीर कोलाहल विधि बहुतेरे।
निज पर परै न जानि बात कोउ सुनत न टेरे॥
द्वार द्वार सुक सारिका राम राम रटि लगि रही।
कह बनादास रचना अवध लखि कबिजन मति ठगि रही॥२४॥

सब लच्छन सम्पन्न नारिनर परम सुसीला।
दुख दूषन नहिं लेस गानरत रघुपति लीला॥
सबके प्रभुपद प्रीति मातु पितु सुत न पढ़ावैं।
भजहु राम प्रनपाल जाहि करि सब बनि जावैं॥
अमराई जहं तहं लगी राम बाटिका मन हरै।
बापी कूप तडाग बहु जल स्वादित नहिं कहि परै॥२५॥

चम्पक बकुल तमाल पनस अरु कदम रसाला।
कुन्द और मन्दार आमलक बृच्छ रसाला॥
श्रीफल अरू जम्भीर जम्बु अजीर सोहाये।
नीब चिचिनी चारु तार खरजूरि निकाये॥
पारिजात पावन परम कल्प बिटप बर पाकरी।
बट पीपर अम्भार है रम्भा तरु सोभा भरी॥२६॥

सुक पिक चातक रटत नटत कल मोर सोहाये।
नीलकठ कोकिला सौर तीतिर मन भाये॥
सारस सुठि रव करत जाल जनु पथिक हँकारे।
किधौं देव धरि देह बिबिध प्रभु सुजस उचारे॥
परसत महि बल्ली बिटप सुमन सहित फल पल्लवित।
ननु निदरत सुरतरु सकल देखत लेत चुराइचित॥२७॥

सोभित तरु कचनार हार सृगार सुहाये।
फूले सुमन गुलाब केवडा सुठि मन भाये॥

कलगा सुरजमुखी दमक दुपहरिया न्यारी।
कँदइल करनाफलित सेवती गन्ध बिगारी॥
जुही बसन्ती मालती गुलाचीन बेला घने।
गुलरैरू गुलदावदी गुलमेंहदी सोभा तने॥२८॥

गुलसब्बो ससिमुखी चमेली चारु सुहाई।
गेंदा नाना भाँति फलित कुन्दी मनभाई॥
बिबिध भाँति दवना दमक नाद बोय भावत नीका।
कह बनादास बर तुलसि तरु देखे मन बिनु दिलबिका॥२९॥

करत पान मकरन्द मत्त गुञ्जत अलि भावे।
सरन नीर गंभीर पटल पुरइनि छबि छावे॥
रात पीत सित असित कमल फूले दुति सोहैं।
को उपमा कबि लहै जाहि लखि मुनि मन मोहैं॥
चक्रबाक बक हंस बहु बत्त परेवा खग घने।
बलासिह कलहंस कलकुक्कुट कूजत अनगने॥३०॥

बहु बिधि करत कलोल मनोहर मीन अनेका।
मनि से चहुँ दिसि पानि कहा पटतर कहिबे का॥
अभय रहत सब काल भरी अति नीर अगाधा।
जिमि आये हरि सरन काल धुन करम न बाधा॥
ब्याध बधिक को भय नहीं जिमि चौरासी मालमत।
कह बनादास प्रभु भवन ते जावे मोटो कौन मत॥३१॥

बनो तासु तट भवन धवल मनि खचित अनेका।
बने बिबिध बिमान करै कबि कौन बिबेका॥
तामें द्वारे चारि लागि पुनि बज्र कपाटा।
बीतराग मन हरै बनो अतिही बर ठाटा॥
तनो चाँदनी चारु दुति परे झाँप पचरंग हैं।
रात पीत अरु सित असित हरित लखत मन दंग हैं॥३२॥

परे गलीचे बिबिध मनहुँ दूबी फुलवारी।
प्रभु आवें केहि काल सदहि ताही से तयारी॥
चहुँ दिसि रजत दिवाल कनक बर बज्र सुहाये।
द्वारे चारि बिचित्र बिधि रच्छक रहे छाये॥
चहुँ द्वार नौबति बजत नृत्यगान होवै करे।
को जाने कौनी बखत आय कृपानिधि पग धरे॥३३॥

पुर चौहट चहुँपास अधिक लागत रमनीका।
कहुँ उपवन बन कहुँ बाग कतहूँ सुठि नीका॥
नाना खग मृग चरहिं सहज ही बैर बिहाई।
राम राज की रीति बरनि को पारहिं जाई॥
उत्तर दिसि सरजू बहत सुठि निर्मल गभीर जल।
दर्सन मज्जन पान ते दूरि होत सब हृदय मल॥३४॥

मनि से बाँधे पानि हरत मन बीतराग कर।
मन्दिर तीर उतग कलस लागे अकास बर॥
नाना देवल बने घने अतिहिं छबि न्यारा।
राजघाट पनिघाट गऊ को घाट सुधारा॥
तीर नरन की भीर अति चारि बरन मज्जन करत।
बग्न बाह्य मज्जन करत अनत घाट तिय अनुहरत॥३५॥

कहुँ कहुँ सरिता तीर बसत जोगी सन्यासी।
जप तप पूजा पाठ ध्यान मख जगत उदासी॥
बिबिध तरह जलजन्तु बिपुल खग करत बिहारा।
उठत नाद गभीर देत बीची छवि न्यारा॥
समय पाय सुरसिद्ध गन आय सबै मज्जन करत।
कह बनादास महिमा अमित मनबांछित सब की सरत॥३६॥

देख पुर चहुँपास नगर बाहिर पुनि आये।
लागो अति रमनीक फिरत चहूँ दिसि सुख पाये॥
आये सरजू तीर बिलोकत बिमल तरगा।
अवलोके ते जाहिं सहज दुख दारिद भगा॥
देव अमित यानन चढे नभ मारग तियजुत चितै।
नखसिख छबि रबिकुल तिलक लखत सवारी सुठि हितै॥३७॥

बहु नरनारी नगर हेत देखन प्रभु सोभा।
आये सरजू तीर ललकि अतिही मन लोभा॥
साँझ समय को जानि रोसनी भई अपारा।
पसाखे बहु बरे मसाल अनेक प्रकारा॥
नजर भेंट बहुलै खडे दधिदूर्वा रोचन घने।
नृपति अनेकन देस के तोफा भेजे अनगने॥३८॥

जथाजोग्य आदरत सीलनिधि द्वारे आये।
वाहन निज थल गये सभा बैठे सचु पाये॥
समय पाय नृत्यकी गान बहु नृत्य करे हैं।
तुम्मर लाजत जाहि सभा सुरराज तरे हैं॥
बैठे चारिउ भाय पुनि लंकेस्वर कपिराजजू।
कासि नृपति हनुमान गुह अरु सुत जनक बिराजजू॥३९॥

पुरजन प्रजा प्रबीन महाजन सुभट घनेरे।
बैठे सचिव सयान सकल रघुपति रुख हेरे॥
आये गुरु तेहि समय उठे रघुबीर कृपाला।
वामदेव के सहित कंजपद नाये भाला॥
बैठे निज आसन रिषय बर्नंत वेद वेदांत है।
कह बनादास सबकोउ सुनत मुनि मत सुठि रस सांत है॥४०॥

समय पाय बरखास जाय सब सैन किये हैं।
जागे प्रभु सुठि प्रात देखि सब मोद हिये हैं॥
सखा बन्धुजुत जाय किये सरजू अस्नाना।
सब कोउ बिप्र बुलाय दिये नाना विधि दाना॥
पुनि आये प्रभु सभा महँ बैठे निज निज ठौर तब।
हरि अन्तर्जामी लखे चाहत निज गृह चलन सब॥४१॥

माँगे कुंडल मुकुट बिपुल रतनन के माला।
कंकन अरु केयूर भाँति बहुरंग दुसाला॥
अस्वनाग असि चर्मबान धनुतून मँगाये।
नाना भूषन बसन कनक मनि नाम निकाये॥
हय रथ गज रथ बृषभ रथ बहु बिधि वाहन यान जू।
जथाजोग्य सबको दिये बिदा किये भगवान जू॥४२॥

जोरि पानि पद बन्दि राम मूरति उर राखी।
गवने निज निज भवन सुरति चरनन अभिलाखी॥
पहुँचावन के हेत लषन रिपुहन हनुमाना।
बाहर नगर पठाय किये आस्रमहि पयाना॥
एक मास करि बास सब गमने निज निज धाम को।
कहत परस्पर रामजस प्रभुसे पूरन काम को॥४३॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
बिहार खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम दसमोऽध्यायः॥१०॥

कुडलिया

अस्वमेघ अगनित किये को कहि पावै पार।
रह्यो नही रिपु रच जग सुबस किये ससार ।।
सुबस किये ससार खड नौ सातहु द्वीपा।
उदय अस्त मे रह्यो एक रघुबीर महीपा।।
बनादास जो कोउ कहै सहज रूप निरधार।
अस्वमेघ अगनित किये को कहि पावै पार ।।४४।।

रोम रोम प्रति जाहि के लगे अमित ब्रह्म ड।
ताकी अति कगालता भये राज नौ खड।।
भये राज नौ खड सगुन रस मे जे पागे।
ताको वह रस रूप रहै हरदम अनुरागे।।
बनादास को कहि सकै अतिहि प्रताप प्रचड।
रोम रोम प्रति जाहि के लगे अमित ब्रह्म ड ।।४५।।

दुइ सुत जाये जानकी जगत बिदित बलवान।
तेज प्रताप को कहि सकै लव कुस बेद बखान।।
लव कुस बेद बखान राम जनु उभय सरूपा।
को कबि बरनै जोग रूप सर्वा ग अनूपा।।
बनादास दुइ दुइ सुवन सब भाइन के जान।
दुइ सुत जाये जानकी जगत बिदित बलवान ।।४६।।

चित्रकेतु अंगद भये लछमन के दुइ बाल।
तच्छक पुहकल भरत सुत सोभा रूप बिसाल।।
सोभा रूप बिसाल उभय रिपुसूदन केरे।
भे सुबाहु स्रुति सेन रूप बलतेज घनेरे।।
बनादास अति नीति रत पिता भक्ति प्रतिपाल।
चित्रकेतु अंगद भये लछमन के दुइ बाल ।।४७।।

छप्पय

तबै सिद्धि सृगार जबै अद्वैत फुरै उर।
नहिं दूसर हम राम बचन मानिहैं सन्त फुर।।
स्वाँग बनाई और प्राप्ति जानौ कछु औरा।
यह उपासना कौनि बिपय को चाटत कौरा।।
लाखन मध्ये को कहै कोटिन मध्ये एक है।
कह बनादास मानै न कछु गहे एकागी टेक है ।।४८।।

कुंडलिया

केवल हरि की कृपा है सबसे होय यकन्त।
निरजन में रुचि रहन की यही मतो है सन्त ॥
यही मतो है संत संग काहुहि नहि राखै।
हरदम भजनानंद हिये अतिही अभिलाखै ॥
बनादास ब्यवहार जग सो करि डारे अंत।
केवल हरि की कृपा है सबसे होय यकंत ॥४९॥

उर अभिलाप सदा रहै आवै बहु सब लोग।
द्रब्यादिक भोजन बसन लावै इन्द्री भोग ॥
लावै इन्द्री भोग रोग सम जानो ताही।
यह ईस्वर का कोप मुक्तिपथ से गिरि जाही ॥
बनादास सत छोड़ि के होत असत मे जोग।
उर अभिलाप सदा रहै आवै बहु जग लोग ॥५०॥

लूटि गये मैदान में लगी पुजावन आस।
मान बड़ाई कामना कहैं राम के दास ॥
कहैं राम के दास घास खोदव भल ताते।
लगै न सन्तन नीक भक्त वंचक भे जाते ॥
बनादास भूले नही जावै वाके पास।
लूटि गये मैदान में लगी पुजावन आस ॥५१॥

बिन सेवकाई के बने साहिब है सुठि दूरि।
पलक झलक मिलती नही रहा सकल भरिपूरि ॥
रहा सकल भरिपूरि ताहि बिन और न दूजा।
सकै कौनि बिधि देखि आस बासना पसूजा ॥
बनादास कोटिन बिपे बुद्धि फन्द गे तूरि।
बिन सेवकाई के बने साहेब है अति दूरि ॥५२॥

रचना एक बिराट की एक देह में जानु।
निज उर घुसि के देखिये ताहि न थोरा मानु ॥
ताहि न थोरा मानु अनत निरखै गुन दोखा।
मृपा बिगारै बुद्धि त्यागि सुख जीवन मोखा ॥
बनादास यक आतमा तामें दृढ़ता आनु।
रचना एक बिराट की एक देह में जानु ॥५३॥

सवैया

अच्छर अर्थ को भिन्न सनातन बातन ते नहिं कारज होई।
नाम न रूप अनूप अगोचर जानि सके कौनो बिधि कोई ॥
जाहि जनावत सो जन पावत नामहिं रूप ते जानिये सोई।
दासबना गति गूढ गभीर है रोटी अकास अनेकन पोई ॥५४॥

छप्पय

निराकार मे अचल हृदय कछु फुरै न तबही।
बासुदेव मय बिस्व सांति जानो बिधि सबही ॥
जब देखै ससार बात तब फुरै अनेका।
तबही चित्त निरोध करन को चाही एका ॥
फुरै ज्ञान बिज्ञान जब हरि जश मे अनुराग है।
कह बनादास आनन्द घन अतिसय पूरन भाग है ॥५५॥

रामरूप मे लीन फुरै तब बिबिध बिलासा।
मन बुधि बानी पार सकल ससय की नासा ॥
सोइ जानै आनन्द जाहि उर परगट रूपा।
अपर कौन कहि सकै काहि की बुधि अनुरूपा ॥
यही लेस ससार तहँ मोच्छौ लागत तुच्छ है।
कह बनादास जनिहैं सुजन जाकी मति अति स्वच्छ है ॥५६॥

जब पागै रस सगुन अगुन की बुद्धि नहि आवै।
स्याम गौर सिय राम रूप लखि कौन अघावै ॥
छन छन छाकै छटा नयन परि हरै निमेखा।
प्रान करै कुर्बान पलक जो परै न देखा ॥
तोष न माने काल कोउ प्रेम प्यास दिन प्रति नई।
कह बनादास तरुनी सुभग सुठि कामी की गति भई ॥५७॥

परब्रह्म मे लीन पीन रस होवै जबही।
सुरति सगुन की हिये फेरि आवै नहि कबही ॥
जहाँ द्वैत नहि लेस एक रस तीनिउँ काला।
सचचिद आनँद सिधु नही तहँ जग को जाला ॥
मन बुधि चित हंकार नहि तहाँ बचन की गति कहा।
कह बनादास स्रुति नेति कह अपर पार केहि बिधि लहा ॥५८॥

सवैया

ह्वै कै अचित्य चैतन्य में अस्थिर सास्त्र पुरान औ बेद को सारा ।
सुन्नि में सांति की सेज बिछाइकै सोइ रहा सो सदा भवपारा ।।
दासबना यह होय तबै जब जानो परा नित नाम उचारा ।
टीका करौरिन ग्रन्थ को जानु मिलै प्रथमै दसरत्थ दुलारा ।।५६।।

जो कछु देखै सो ब्रह्म समस्त कहाँ यहि ते मन बाहेर जैहै ।
जाय बस्यो जल मध्य बिषे तब लीन खिलौना से आपु बिलैहै ।।
साधन साधन को यह सिद्ध बिना सद्ज्ञान कोऊ जन ऐहै ।
दासबना गुरु देव कृपा करि भागि बड़ी तेहि के उर ऐहै ।।६०।।

दृष्टि जहाँ जहँ ब्रह्म तहाँ तहँ देखै सदा सो भया भव पारा ।
ब्रह्म से भिन्न नहीं कोउ काल अभेद मय बुद्धि न जीतन हारा ।।
दासबना कह बन्धन मुक्ति न उक्तिन जुक्ति गयो भ्रम सारा ।
बाद बिबाद में स्वाद नहीं कछु छानि लियो घृत छाँह को डारा ।।६१।।

सोखै न पौन न भोगि सकै जल सस्त्र न खंड न ताहि करै जू ।
जाग्रत स्वप्न सुषोपति भिन्न है ताहि के जाने ते काज सरै जू ।।
ब्यापत कालन ताहि कदापि सदा रस एक प्रमान करै जू ।
दासबना स्रुति संत पुरान में आतम ज्ञानी न काहू डरै जू ।।६२।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे बिहार खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम एकादसोऽध्यायः ।।११।।

षष्ठ—ज्ञान खण्ड

छप्पय

एकबार निज सभा बैठि रघुपति सुखधामा।
पुरजन प्रजा सुमन्त आय सब किये प्रनामा।।
मन्त्री मीत पुनीत सखागन तीनिउँ भाई।
प्रभु बोले मुसकाय बचन जनहेत सहाई।।
अति दुर्लभ तन मनुज को करत प्रसंसा देव जेहि।
कह बनादास चर अचर सब हृदय मनोरथ लागि तेहि।।१।।

तेहि पाये कर धर्म भजन मम जानहुँ एका।
मेरी भक्ति बिहाय अवर सारो अबिबेका।।
स्रुति पुरान इमि कहै बहुरि मम जन गोहराई।
करै न हरि को भजन हानि याते नहिं भाई।।
गर्भ बास मे अति दुखित ईस्वर दीन्हो ज्ञान जब।
अमित जन्म की सुधि भई लाग्यो अस्तुति करन तब।।२।।

जयति सच्चिदानन्द ब्रह्म चिन्मय अबिनासी।
ब्यापक अचल अखड सकल जल थल नभ बासी।।
जै ईस्वर अब्यक्त अगम गति जान न कोई।
रहित आदि मधि अन्त स्वबस करुना मय सोई।।
महा बिपति मे मति दई अब याते बाहर करो।
कह बनादास निसि दिन भजो जाते भवनिधि नहिं परो।।३।।

तुम जननी गुरु जनक सकल सुर के सिरताजा।
तुम अनाथ के नाथ तुमहिं तजि सकल अकाजा।।
नाहक तुमहिं बिसारि जीव अवरी दिसि ध्यावै।
तुम ते हितू न कोय सन्त स्रुति कबि जन गावै।।
आप छोड़ि अवरी दिसा अब सपन्यो देखिहौं नही।
कह बनादास हरि कृपा ते ऐसी उज्ज्वल मति लही।।४।।

को तहँ थैली कसा रक्त मल मूत्र भरा है।
पीब महा दुर्गंध जाति कृमि अमित परा है।।
काटहिं कोमल देह नेक नहिं जात सहो है।
ताता तीता खार खात जननिहिं रुचि जो है।।
अधिक जरावै गात सो बात वहाँ बूझै कवन।
कह बनादास तेहि समय महँ कृपा किये सुठि दुख दवन।।५।।

प्रसव पवन अति प्रबल प्रेरि तब बाहर कीन्हा।
स्वर्नकार जिमि तार खींचि जंता में लीन्हा॥
बिकल भयो अति बिथा होस नहिं रही ठेकाने।
इहां बधाई बजत बिबिध बिध करते गाने॥
प्रथम छींकि पुनि रोय दिये मनहुं मौत नेवता दई।
कह बनादास बिसर्‌यो सबै अब इतही को सुधि भई॥६॥

बाल दसा अति दुःख किये नाना विधि भोगा।
बहु बिधि रोग बलाय कवन के बर्नन जोगा॥
जननी बैरी भई देय दुख जाको सेवै।
तापै नहिं संतोष विषम अति घूंटी देवै॥
प्रथमहिं पैदा छोर करि जन्म दिये पीछे जिवहिं।
एको कृत समुझै नहीं भूलि गयो ऐसे पिवहिं॥७॥

आयो जबहिं कुमार अनेकन पाप कमाने।
जुवा भये मति हरी जुवति के हाथ बिकाने॥
धनहित मर्‌यो ललाय तीसरे पन तजि लाजा।
मान बड़ाई लागि तिया सुत तन के काजा॥
चौथ व्याधि बाधा अमित अतिहि जरा जर्जर कियो।
कह बनादास खोये जनम जेहि लगि तेइ आरत हियो॥८॥

करहिं निरादर मूढ़ जरनि सो सही न जाई।
इन्द्रिय भईं असक्त कंठ कफ लेत दबाई॥
आये तब जमदूत कूटि सिर प्रान निकारे।
कीन्हे पाप अनेक ताहि करि नरक हि डारे॥
जो कदापि छुट्टी मिली तौ पुनि चौरासी परे।
जाते भूले ईस कृत बार बार जन्मे मरे॥९॥

जो कछु कहो अनीति भूलि कै राज बड़ाई।
तौ सब उत्तर देहु सील संकोच बिहाई॥
स्रुति पुरान मत संत ईस करुना जब कीन्हा।
नर तन साधन धाम देवदुर्लभ सो दीन्हा॥
भव सागर नौका लहे करनधार गुरु जानिये।
मरुत कृपा मेरो भई पाल बेद बल मानिये॥१०॥

ऐसा सम्मत पाय तरा नहिं जो संसारा।
निज कर काटे पावँ कौल कीन्हें सोहारा॥

आतमहन गति जाय न संसय यामहँ कोई।
स्मृति पुरान इमि कहै सन्त गुरु भाषत सोई॥
मैं हूँ निज मुख ते कहे जो सोहाय सो कीजिये।
अति दुर्लभ तन पाय कै अयश जक्त जनि लीजिये॥११॥

सकल सभा कृतकृत्य सुनत प्रभु मुख की बानी।
नहिं आनंद अमात भागि अति आपनि जानी॥
को ऐसा सिप देय आप बिन दीनदयाला।
मात पिता सुत मीत तिया स्वारथ के जाला॥
बोले तब सब जोरि कर प्रभु बिराग बिन भजन नहिं।
होवै तासु सरूप जस कृपासिन्धु सोउ देउ कहिं॥१२॥

बर्नाश्रम को धर्म जाहि बिधि बेद बतावै।
तापै अति दृढ होय सहित स्रद्धा मन लावै॥
जिमि सराय में आय पथिक लेते हैं बासा।
सुत बित इस्त्री घरनि धाम तिमि करै निवासा॥
सकल कर्म हरि हित करै फल से रहै असंग अति।
आवै बहुबिधि आपदा तबहूँ नाही हलै मति॥१३॥

पंचतत्त्व की देह ताहि मिथ्या करि देखै।
परम रतन पुनि मानि ब्रह्म दानो करि पेखै॥
स्रुति पुरान बिधि लिये करै यावत ब्यवहारा।
सब माया में लखै रहै मम भजन अधारा॥
महि नभ तेज समीर अप पंच रचित तन जानिये।
सो वै सारे जड़ अहैं हैं चेतन इमि मानिये॥१४॥

तिहूँ लोक को आस सकल बासना बिहाई।
निसि दिन मेरा भजन करै अति प्रीति लगाई॥
राग द्वेप परिहरै कर्म कबहूँ नहिं तजई।
सकल भरोसा त्यागि नाम मेरा नित भजई॥
सुभ कर्मन हरि को दियो पाप जवन कछु करैगो।
ताको करि कै न्याय पुनि ईस्वर सबको हरैगो॥१५॥

मन को कारन सर्ब तवन मन मोहि लगावै।
फिरि को बाँधै ताहि यही तन छुट्टी पावै॥

सन्त गुरू स्रुति वचन ताहि में निष्ठा राखै।
दया धर्मजुत चलै बचन अन्यथा न भाखै॥
काम क्रोध मद लोभ पुनि ममता मत्सर परिहरै।
सोक मोह संदेह नहि उर बिसेषि समता धरै॥१६॥

मृग जल सम जग लखै सकल में चेतन ध्यावै।
सम्बन्धी निज देह समष्टी दृष्टिहि लावै॥
जैसे लहरी अमित बिचारे जल यक सारा।
जैसे मृतिका माहि पात्र बहु रचे कुम्हारा॥
सो गृहस्थ नित मुक्त है यामें कछु संसय नहीं।
कह बनादास गृह त्याग करि सोऊ संछेपहि कही॥१७॥

प्रथम गृहास्रम तजै एक मम सरनहि आवै।
स्रुति पुरान औ सास्त्र सन्त गुरु जा बिघ गावै॥
ब्रह्मचर्ज वानस्थ चौथ संन्यासहि कहिये।
परमहंस पद पाँच बेद मारग यो गहिये॥
जाहि प्रबल बैराग भो जाको यह अघिकार नहि।
भजन राह कैसे मिलै लेवै सत गुरु सरन गहि॥१८॥

तामें चारि प्रकार कहत सोऊ समुझाई।
उत्तम मध्यम नीच तीनि बिघ परै लखाई॥
अतिही एक निकृष्ट लोक बेदहु करि निंदित।
करिये सोई काज होय सबही को वन्दित॥
सुनहु सबै चित लाय कै राखौ हृदय बिचार करि।
कह बनादास डिठिआर जो अटपट पाव न सकत परि॥१९॥

जब आवै उर त्याग देह लै करै किनारा।
एक पालि मर्जाद जहाँ लगि कछु ब्यवहारा॥
बिघि माफिक बर ताय तवै मम सरनहि आवै।
पास न राखै काहु को संग न लावै॥
जो कछु लेने जोग्य है सो सब लै साथै चलै।
कह बनादास हित गुजर के ताहू पर अति मति हलै॥२०॥

एक भयो गृह रंक कवनि बिघि करै गुजारा।
त्यागि लिये हरि वेप मिलै जेहि भाँति अहारा॥

आस बासना छोडि तिहूँ पुर सुधि बिसरावै।
तीनिउँ गुन ते रहित बेद मर्जाद न भावै॥
करि बैराग सरीर ते अर्पन मेरे हित करै।
तिनुका माफिक तूरि कै नहि ससय नहिं उर डरै॥२१॥

करै भजन यहि भाँति बचन क्रम औ मन लाई।
आस बासना राग द्वेष गुन तीन बिहाई॥
सनै सनै ह्वै सान्त बहुरि उर करै बिचारा।
कालै आये साथ सग को जाने हारा॥
पंचतत्त्व को तन मृषा रूप हमारा और है।
अहकार ताको तजै जो त्यागे करि गौर है॥२२॥

तजै बडाई मान स्वाद सृगार न भावै।
अनिमा आदिक सिद्धि भूलिहु सुधि नहिं लावै॥
जीतै इन्द्री सकल करै मन अपने हाथा।
खोजै भूलेहु नाहिं काहु को करिये साथा॥
राखै सुठि सतोष उर नहिं आवै उदवेग चित।
कह बनादास मुक्तिउ तृषा गई सिद्धि बैराग बित॥२३॥

यहि बिधि सुनि प्रभु बचन सभा सब लोग अनदे।
बार बार चित लाय चरन रघुनन्दन बदे॥
गे सब निज निज सदन करत रघुबीर बडाई।
अहोभाग्य निज मानि आजु श्रीमुख सिष पाई॥
का करिहै भवरोग मम प्रभु एसी करुना करी।
कह बनादास रति राम पद करत भजन पल छन घरी॥२४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभजनोनाम प्रथमोऽध्याय ॥१॥

एक बार प्रभु बैठ सग म तीनिउँ भाई।
बड भागी हनुमान रहे सेवा मन लाई॥
मारुतसुत कर जोरि चरन रघुपति सिर नाये।
बोले बचन बिनीत कृपा रघुपति लखि पाये॥
स्रुति पुरान मुनि सन्त कह नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान सम।
कह बनादास इच्छा हृदय प्रभु मुख चाहत सुना हम॥२५॥

बोले रघुकुलकेतु बचन तव संसय नाहीं।
ज्ञान रतन बिन जीव लोक तिहुँ कंगले आहीं ॥
नहिं छूटै बासना बिना सुठि ज्ञान बिचारे।
चाह जहाँ लै बनी जगत भय टरै न टारे ॥
जब लगि नहिं निर्भय भयो तब लगि दुःख सरूप है।
कह बनादास बहुबिधि परै बार बार भवकूप है ॥२६॥

वायु महि अप तेज गगन करि थूल सरीरा।
दस इन्द्री तेहि माहिं जोति कोउ सकत न धीरा ॥
पंच इन्द्रिरी कर्म पंच पुनि ज्ञान कहाये।
ताकर करत बिभाग सुनौ पुनि चित्त लगाये ॥
लिंग गुदा कर पाद मुख कर्म इन्द्रिरी जानिये।
स्रवन त्वचा दृग नासिका रसना ज्ञानहिं मानिये ॥२७॥

पंच प्रान पुनि अहै कीजिये तासु बिचारा।
पान अपानौ ब्यान उदान समान असारा ॥
मनु बुधि चित हंकार मिले दस नौ परमाना।
सो सून्छम तन अहै नहो सब कोऊ जाना ॥
कारन केवल वासना अतिहि प्रबल सब ते अहै।
कह बनादास प्रभु कृपा बिन पार कोऊ कैसे लहै ॥२८॥

ये चौबिस जड़ अहैं बहुरि इन्द्रिन के देवा।
ताको कहौं बुझाय सुनौ जैसन है भेवा ॥
स्रवन दिसा त्वक पवन नेत्र के भानु कहाये।
बाक अग्नि कर इन्द्र बरुन रसना के गाये ॥
बुद्धि बिधाता चित्त हरि नासा अस्विनी देव है।
कह बनादास मन चन्द्रमा अहंकार सिव भेव है ॥२९॥

जोई बुद्धि सोइ लिंग चित्त सोइ चरन को देवा।
पंचीकृत बिस्तार भाँति बहु जानहुँ भेवा ॥
बहुमाया के अंग बिबिध साखा उपसाखा।
पार न पावत जोग मुनीसन बहु बिधि भाखा ॥
साखि बिचारै अवसि करि छूटन को पैहो यही।
कह बनादास स्मृति बिदित है बार बार सन्तन कही ॥३०॥

सब्द अस्परस गध रूप रस जानहु पाँचा।
ज्ञानिन्द्रो की बिषय इनहिं करि मानहु साँचा ॥
यह सारा परपच सोई पुनि छेत्र कहावै।
जीव अहै छेत्रज्ञ ताहि करि सब बरतावै ॥
सो ईस्वर को अस है सुद्ध सदा चैतन्य घन।
ऐसे छेत्रहि पाय कै विषय भोग मे दिये मन ॥३१॥

ताही करि भो जीव जगत कृत सदा बिहारा।
जिमि पच्छी तरु भिन्न मिल्यो अस नाहिं बिचारा ॥
तन तरु ऊपर अहै जीव परमातम दाऊ।
जीव बिषय आसक्त ताहि नहिं लागत कोऊ ॥
होय सुद्ध बैराग जब मेरी दृढ भक्ती करै।
मिथ्या मानै छेत्र को मैं चेतन इमि उर धरै ॥३२॥

सोइ कहा बैज्ञान ज्ञेय परमातम जानो।
ज्ञान ज्ञेय जब एक सिंधु आनन्द समानो ॥
विषय वासना रहित जीव जब भयो सचेता।
पायो मेरा ज्ञान तबै अद्वै को वेता ॥
दोऊ भये अभेद जब फेरि कहा ससार है।
कह बनादास हनुमान सो रघुपति ज्ञान बिचार है ॥३३॥

और एक दृष्टान्त कहौं सुनिये मन लाई।
जागत का ब्यवहार सत्य सब कोउ लखि पाई ॥
खान पान अरु अटन धरनि धन धाम अपारा।
मात पिता सुत बन्धु तनय तिय आदिक सारा ॥
जब सपना प्रापति भयो यह झूठा वह साँच है।
कह बनादास नाना चरित नाचि रहा बहु नाच है ॥३४॥

जागे पर वह झूठ यही पुनि सत्य लखावै।
दुइ तन के आधीन झूठ दोऊ दरसावै ॥
जबहि सुखोपति प्राप्ति भयो तब मृतक समाना।
आपौ दोउ सरीर रहा तब कछू न भाना ॥
रहै ब्रह्म तब एक रस सो सरूप निस्चय करै।
कह बनादास ताके लहै फिरि नाहीं जन्मै मरै ॥३५॥

जिमि आकास में पवन भरा कोउ काल न खालो।
तिमि पूरन सर्बत्र ब्रह्म लखि परै न हालो॥
सब विधि साधन बनै सन्त गुरु करुना करहीं।
ईस अनुग्रह अतिहि जीव तब भवनिधि तरहीं॥
सीस नाय कर जोरि कै बन्दे पद हनुमान है।
कह बनादास दूजो कवन प्रभु सो कृपानिधान है॥३६॥

तब बोले रिपुदमन चरनपंकज सिर नाई।
अहै काह बिज्ञान नाथ मोहि कहौ बुझाई॥
जवही तत्त्व अतत्त्व सुद्ध ब्रह्महिं ठहराई।
सोई है बिज्ञान वेद मत जानहुँ भाई॥
बहुरि कहे सत्रुघ्न तब ताके लक्षन भाषिये।
कह बनादास सो समुझि कै हृदय पुष्ट करि राखिये॥३७॥

स्तुति निंदा हानि लाभ में सदा एकरस।
बिधिनिषेध सुख दुःख राग देखहु अलेख अस॥
कोउ तन सेवा करै बस्त्र भोजन औ छाया।
कोऊ आय दुख देय ताहि कछु क्रोध न दाया॥
राति दिवस औ दिसि बिदिसि देस काल नहिं भान है।
कह बनादास साधन रहित अति अभेद निर्वान है॥३८॥

बर्न और आकार दृष्टि से सदा निकारै।
निराकार यक ब्रह्म चित्त को तामें धारै॥
नहिं ममता हंकार भूलि गुन हृदय न आवै।
काहू को अपकार नाहिं उपकारहि धावै॥
पापपुन्य निस प्रिय सदा लोक वेद की भय नहीं।
आस न तृष्ना बासना काहू को कछु ना चहीं॥३९॥

सूर धीर भय रहित सरल समता के आकर।
नहिं निज मग ते डगहि परै जो कोटिन साँकर॥
पापी पुन्नी एक भेद नहिं साधु असाधू।
कोऊ थाह न लहै अचल सब भाँति अगाधू॥
सुरभी स्वान स्वपाक द्विज ब्रह्मा तृन पर्यन्त लै।
देखै पोल पपोल सम धोखे दृष्टि नहीं चलै॥४०॥

सोमसूरि औ सम्भु असुर सुर इन्द्र घनेरे।
किन्नर और गन्धर्व नाग नर पसु खग जेरे ॥
थावर जगम माहि सदा चेतन इक देखें।
भूले कौनेहु काल दृष्टि ना अनतहि पेखै ॥
भोगकरै प्रारब्ध को सून्य उपाय सदा रहै।
कह बनादास मतवाद तजि काहू की कछु ना कहै ॥४१॥

ब्रह्म तिया अरु पुरुष मुरुख पुनि पडित मानो।
ब्रह्म हस वक काग ब्रह्म ज्ञानी बिज्ञानी ॥
मात पिता सुत बन्धु नारि सब ब्रह्म बिलोकै।
सावधान सब काल नही कबही भै साकै ॥
दूध दही पुनि तेल घृत जिमि मुख ते सब खात है।
कह बनादास रसना बिषे नेक नहिं छुइ जात है ॥४२॥

जलमधि पक्ज पात नीर परसै नहिं ताही।
जो पावक मे परै जरै सब ससय नाही ॥
जल आतप हिम वात धूरि नभ नेक न परसै।
ब्रह्मज्ञान जहं उदै ताहि पुनि कोउ न गरसै ॥
जिमि रबि धन आडे भये ताहि छपा मुरख कहै।
कह बनादास दिनमनि परे बरे सकल बारिद रहै ॥४३॥

जो सडसी मुख परै ताहि काटत नहिं वारा।
इमि ज्ञानी मम रूप कौन जग जानन हारा ॥
ताको प्रिय यक मही मोहिं अति प्रिय बिज्ञानी।
नित्य युक्त यक भक्ति सक्ल आसक्तहि मानो ॥
तप तीरथ ब्रत नेम नहिं जज्ञ जोग जप को करै।
सध्या पूजा पाठ नहिं बिधि निषेध सारे मरै ॥४४॥

सदा रूप मम लीन ताहि सब अनरस माना।
देह बुद्धि नहिं जाहि कहाँ तिहुँ पुर को भाना ॥
सदा ब्रह्म रस मत्त ताहि तृनका सम सारा।
देखे जाही ओर ताहि मे आवै हारा ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन तन तीनिउँ तजि पोन भो।
कह बनादास जानै क्वन तुरिया पद अति लीन भो ॥४५॥

जथा भस्म मे हुनै कोऊ हबि लै अति प्रीतो।
देखनहारेहि लगै भाँति बहु सोइ अनीतो ॥

विज्ञानी के हेत सकल साधन इमि जानो।
निज इच्छा सो करै जौन मन वाको मानो॥
जा विधि मोहि को भय नहीं सबै करो कछु ना करो।
तिमि विज्ञानी जानि कै हृदय माहि ऐसो धरो॥४६॥

नाये प्रभु पद सीस सत्रुहन अतिसय प्रीती।
कृपा किये जन जानि त्रास याते भव बीती॥
कह लछमन कर जोरि बेद कैवल्य बखाना।
पुनि पुनि सास्त्र पुरान प्रसंसत संत सयाना॥
ताको कहो सरूप कछु करि करुना रघुबंसमनि।
कह बनादास तन पुलक मन माने अतिहो भाग्य धनि॥४७॥

बोले राम सुजान सुनहु कैवल्य सरूपा।
सबकोउ दुर्लभ बदै अहै पुनि रूप अनूपा॥
जाके प्रापति भये बहुरि भव आवै नाही।
जथा खाक खर होत नहीं कोउ बिधि हरि आही॥
साधन सुठि ताको कठिन बिघ्न रहित जो निर्बहै।
कह बनादास मन बुद्धि अगम सो मुख कौनी बिधि कहै॥४८॥

स्रुति पुरान षटसास्त्र जहाँ लगि कछु विस्तारा।
लोक अवर परलोक करै मन बुद्धि बिचारा॥
तप तीरथ व्रत नेम दान मख साधन नाना।
अपर जोग अष्टांग निषेधौ बिधि परमाना॥
बिरति ज्ञान बिज्ञान पुनि तिहूँ गुनन को भान नहिं।
कह बनादास जोवत जगत एक ब्रह्म तब गयो रहि॥४९॥

सुद्ध नित्य निरवघ्य सदा रस एक प्रमाना।
आदि मध्य अवसान रहित ब्यापक निर्बाना॥
अचल अखंड अनीह अलख पूरन अबिनासी।
निराधार निरलेप्य अकल सुठि स्वतः प्रकासी॥
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन चेतन अमल अनूप है।
कह बनादास कूटस्थ सुचि अकथ अगाध अरूप है॥५०॥

गुनातीत अतिगूढ़ अजय गुनमयी धाम पर।
पुरषोत्तम अवछिन्न अयोनी सर्व अचर चर॥

बासुदेव निर्वान द्वन्द्वगत अतिहि अभेदा।
सुठि सूछम सर्बज्ञ नेति भाषत चहुँ बेदा॥
बृहद बिलच्छन बिरुज वर अति उतकृष्ट सबै कहै।
कह बनादास साधन अमित करत कोटि मे कोउ लहै॥५१॥

रात पीत सित असित हरित नहि दूरि न नेरा।
थूल सूछम नहि बाल बृद्ध नहि स्वामि न चेरा॥
नही दिवस नहि राति नही सध्या परभाता।
नही ऊँच नहि नीच नही मोरा नहि ताता॥
नही गुरू नहि सिष्य है नहि बूढा नाही तरा।
नही सृष्टि नहि थिति प्रलय कार गोर झूरा हरा॥५२॥

नही पाप नहि पुन्य जीव ईस्वर नहि माया।
मम मतान्त नहि कोय द्वैत करि यहि सब गाया॥
नहि इन्द्रिन की बिषय वचन मे नाहि समाई।
मन बुधि चित हकार ताहि कोइ सकत न पाई॥
अन्य बात आस्चर्यवत ताहि कोऊ कैसे कहै।
कह बनादास आपै लखत आपहि को दूजा अहै॥५३॥

मम सरूप कैवल्य बाह्य अन्तर तहँ नाहीं।
पूरन है सब काल फुरत इमि तहाँ सदाहीं॥
हम ईस्वर परधाम राम केवल सुखरासी।
ब्रह्म सच्चिदानन्द अलख हौ स्वत प्रकासी॥
हौ अखड अज नित्य पर सदा द्वन्द्व गत एक रस।
कह बनादास कोउ काल मे तहाँ फुरव जीवत्य कस॥५४॥

ब्रह्म सिधु मे रहे सकल जलचर आकारा।
सोऊ गलि जल भये करै अब पवन विचारा॥
द्रष्टा दृष्टि अदृष्ट दृष्टि याही ठहराती।
पूरब पर कछु नाहि सकल दिसि पानी पानी॥
धारा माहि तरग लै प्रकृति पवन जबही पर्‌यो।
कह बनादास नहि लखि परत को बूडा को है तर्‌यो॥५५॥

नाये प्रभु पद प्रीति सहित लछमन तब माथा।
कृपासिन्धु तब बचन स्रवन करि अतिहि सनाथा॥

कहे भरत कर जोरि पराभक्ती अति पावनि ।
कह स्रुति सास्त्र पुरान सन्त मन अतिहि भावनि ।।
ताके कही सरूप कछु सुना नाथ सबके परे ।
कह बनादास बोले हरषि नहि रघुपति देरी करे ।।५६।।

बिरति ज्ञान बिज्ञान सकल मम भक्ति अधीना ।
भेद न जानै कोऊ जान बुधि मान प्रवीना ।।
ये सारे उतकर्ष सन्तजन किये बिचारा ।
पराभक्ति सब परे सुद्ध सुठि जानहु सारा ।।
बिरति दूध गो भक्ति है ज्ञान दही को जानिये ।
माखन पुनि बिज्ञान है परासुद्ध घृत मानिये ।।५७।।

परा सकल के परे भेद बिरला कोउ जानै ।
सबसे सुठि उतकृष्ट जहाँ लगि भक्ति बखानै ।।
बासुदेव सब जक्त हृदय उदवेग न कोई ।
आस बासना रहित सकल स्रम डारत खोई ।।
जेहि बिधि गज सागर परयो अति अनन्द नहि जात कहि ।
कह बनादास इमि ब्रह्म निधि माहि मग न पटतर न लहि ।।५८।।

बर्नास्रिम भय नाहि रही नहि जग की लाजा ।
साधन सकल सिरात परत लखि पूरन काजा ।।
देह भई जनु भार रहो प्रारब्ध सों अटकी ।
कहा मृत्यु जमकाल काहु की भय नहि खटकी ।।
संसय सोक संदेह सकल हानि गलानि न आवई ।
बिधि निषेध जानै नहीं राग द्वेष नहि भावई ।।५६।।

स्वर्ग नरक अपवर्ग कहाँ नहि तिहूँ पुर भाना ।
मनबुधि बानी परे रहै निसिदिन गर काना ।।
कहँ निवृत्ति परवृत्ति कहाँ निसि औ दिन जावै ।
कहाँ देस औ काल काह दिसि बिदिसि कहावै ।।
जथापंख ते रहित खग उड़िबे की आसा गई ।
तिमि तन मनहूँ ते अचल अब न कछू उर भावई ।।६०।।

लोक बेद बिस्तार रह्यो अभिअन्तर नाहीं ।
मनोराज भे नास प्रकृति परपंच बिलाहीं ।।

हम तुम हेरे नाहिं अह ब्रह्मो जहँ ताई।
तहँ लैहै हकार परा मे जात सिराई।।
परा भक्ति पाये बिना काज नही पूरा परै।
अहकार सब मे मिला इहा आय नीके मरै।।६१।।

अबही गई जिवत्य ब्रह्म हम बहुविधि भाखै।
अति ऊँचा पद लह्यो कवन विधि उर मे राखै।।
परापाय सोउ सिथिल जथा घृत सीतल जानो।
जाको जौन सरूप कौन मुख आपु बखानो।।
बादसाह हम भूप हैं ऐसा को कह उच्चरै।
हम ब्राह्मन छत्री बइस कहा कवन निसि दिन करै।।६२।।

निर्धन सो जब धनी थोरे ही वित बौराई।
बार बार हम ब्रह्म तेहो विधि जानहु भाई।।
ब्रह्म पूर सर्वत्र कहत कहुँ नही ब्रह्म हम।
होत अवस्था पाय परै पोछे सोऊ कम।।
ब्रह्म भूत ह्वै जात जब भाव परा पीछे मिलै।
कह बनादास अति सुद्ध भो फेरि नही कोउ दिसिहि लै।।६३।।

ज्ञान को साधन जोग ज्ञान साधन विज्ञाना।
सिद्ध होत कैवल्य भाव उतकर्ष प्रमाना।।
भक्ति उते विज्ञान ज्ञान होवै स्तुति गावै।
भई परा जब प्राप्ति ज्ञान विज्ञान दबावै।।
तहाँ सिद्धि मो सांति पद जामे कछु कारन नही।
यह बनादास सुठि सन्तमत या विधि रघुनन्दन कही।।६४।।

परा परम प्रिय मोहिं भक्ति उतकृष्ट हमारी।
सब साधन सिरताज जान नहिं सकल अनारी।।
परा न परचै भई लहै सुख कौनो भाँती।
ज्ञानी जोगी जाहि करैं इच्छा दिन राती।।
बिरति ज्ञान विज्ञान पुनि श्रेष्ठ परा को मानिये।
कहु बनादास रघुपति कृपा मिलै अवसि करि जानिये।।६५।।

मन बुद्धि चित हकार करैं व्यापार न कोई।
मगर पर्‌यो जिमि कुंड कबहुँ उपराम न होई।।

पै पयोधि में सैन जथा भगवान किये हैं।
तिमि सोवत निधि ब्रह्म नहीं भव भान हिये हैं॥
परमतत्त्व नहिं परा ते यामें कछु संसय नहीं।
मो ते सदा अभेद मति भरत दिसा ऐसी कही॥६६॥

भरत कहे कर जोरि सुने प्रभु मुख की बानी।
तृप्ति लहे मन नाहिं अमित सुख सारंग पानी॥
माने अति कृतकृत्य कछुक इच्छा मन माहीं।
कहो प्रगट कर बेगि लाभ याते कछु नाहीं॥
सूछ्म सूछ्म साधन कहो सिद्धि लिये रघुवंसमनि।
कह बनादास रघुपति कृपा अवलोकत निज भागि घनि॥६७॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

जैसे सूकर एक ताहि कूकर दस नोचै।
तथा जीव दुख लहै कवनि बिधि बिपति बिमोचै॥
त्वचा चहै अस्पर्स स्रवन हित सब्दहि धावै।
नासा हेत सुगन्ध नैन रूपहिं ललचावै॥
इन्द्री स्त्री को गमन रस अनेक रसना चहै।
कह बनादास कर पाद मुख अपनी अपनी दिस बहै॥६८॥

बुद्धि वासना भरी तरंग अनेक उठावै।
अति चंचल चित रहै तनिक अवकास न पावै॥
मन ममता नहि तजै भोग में रुचि अति भारी।
अहंकार उर दहै मिले चौदह वट पारी॥
छुधा तृषा निद्रा दुखद उष्न सीत करै दौन है।
कह बनादास बसि राग औ देख जीव दुख भौन है॥६९॥

काम क्रोध औ लोभ मोह बहु मान बड़ाई।
दम्भ कपट पाखंड संग परि गयो नसाई॥
करै सकामो कर्म अतिहि जावै अरझाता।
तिहूँ लोक सुख चाहति हूँ गुन अतिही माता॥
सर्व त्यागि मम सरन ह्वै भजन करै निष्कामजू।
कह बनादास अवरी तरह लहै कहाँ बिस्रामजू॥७०॥

कुंडलिया

राम नाम मे रति नही मति चाहै परधाम।
बनादास हमरे मते भले बिधाता बाम॥
भले बिधाता बाम दाम औ चाम न छूटै।
वाक्य ज्ञान बहु निपुन छनय छन माया लूटै॥
बिगरे दोऊ ओर से रहो न कौडी काम।
रामनाम में रति नही मति चाहै परधाम॥७१॥

सवैया

अन्तःकरन को सगत जे नहिं बाहर सगति त्यागे न त्यागा।
इन्द्रिन को न गयो व्यवपार बनो तन मे अतिही अनुरागा॥
दासबना बनो कौनो फकीरी भयो जड़ चेनन को न बिभागा।
आस औ बासना नास भई नहिं भोगन में रुचि जीवन जागा॥७२॥

काल असख्य भयो सुठि सोवत चेत करै अजहूँ न अभागा।
नाम जपै सब काम बिहाय बढै अभिअन्तर मे अनुरागा॥
राम सरूप अनूप लहै तब टूटै जबै गुन तीनि को तागा।
दासबना किन द्वैत दबै रहै आपही आप निसा भव त्यागा॥७३॥

छप्पय

रामोचिद घनमयो मूर्ति सुठि बृहद अकासा।
आदि मध्य नहिं अन्त एकरस परम प्रकासा॥
अमन अबुद्धिय प्रान अहं चित बिनहिं अकामा।
अलख अजोनी अगम दूरि अति ताते स्यामा॥
इन्द्री थूल न सूछ्म है कारन ते अतिसय रहित।
यह बनादास त्रय गुन बिगत पुनि अनेक गुन के सहित॥७४॥

रेखता

हृदय सुचि अवध नीकी है। सदन सुठि सीय पीकी है।
कमल उर भवन राजे है। गवर औ स्याम भ्राजे हैं॥
बरनि छबि कौन कवि पावै। न पटतर काम रति आवै।
सुभग जोडी अनोखी है। महा आनन्द पोखी है॥

कमलपद मन लोभाये है। न कबि हो तोष पाये हैं।
चरन वर चारु है चारो। चतुर्मुख सम्भु बलिहारो॥
सन्तमुनि जोगिजन ध्यावें। ध्यान उर कठिन ले आवें।
चन्दमुख मन्द मुसकाते। कहे कवि कौन पै जाते॥

तिलक सुठि भाल सोही है। को ऐसा जो न मोही है।
ज़ुलफ को जोहि जिय जूझें। नहो फिरि और कछु सूझें।
बना जीवत्व त्यागा है। मिला सोना सोहागा है॥७५॥

सोनहुली सब्ज है टोपी। मदन सत कोटि छवि तोपी।
स्रवन वाला सु बांके हैं। वही जानें जो ताके हैं॥
अधर औ दसन अरुनारे। लहै कबि कौन कहि पारे।
नैन रतनार तिरछोहै। परी चितवनि सो केहि जो है॥

कमनियो काम की लाजै। वंक भ्रुव अमित छवि छाजै।
चिबुक चित चोरि लेती है। बना बिकि जात सेती है॥७६॥

भुजा आजानु मन मोहै। धनुष औ बान कर सोहै।
कमल ते अधिक राते हैं। करज अतिहो सोहाते हैं॥
जड़ित मनि मुद्रिका राजै। निरखते ताप त्रय भाजै।
परी जेहि सीस पै छाया। अभय पद बेगि सो पाया॥

करन कंकन कनक भ्राजै। भुजा केयूर छवि छाजै।
वृपम हरि कन्ध से कन्धा। बिमुख हिय नैन सो अन्धा॥
गरे त्रय रेख प्यारी है। जरनि हिय की जो जारी है।
बनी सीतल सुभाये हैं। कमलपद मन लुभाये हैं॥७७॥

मुक्तमनि माल उर भ्राजै कही उपमान पाई है।
सिखर मरकत से वरधारा मनो सुरसरि की आई है॥
घटा जनु स्याम के मध्ये उड़ी वगपांति नगिचाई।
को ऐसा नैनवाला है निरखि नहि फकर ह्वै जाई॥
उदर त्रय रेख सुठि सोहै जमुन अलि नाभि सकुचावें।
कमर कटि सिंह लाजै है पीत पट तून मन भावें॥
जानु जुग पीन जिन जोहे मदन को भाय अति निन्दै।
जहाँ मुनि मन लोभाये हैं बना पदकंज नित बन्दै॥७८॥

घनाक्षरी

ज्ञान बिना मुक्ति नाहि होति कोऊ काल माहि बिना हरि भक्ति ज्ञान रहि ना सकतु है।
ताते जामे खंडन औ मंडन करत जौन मेरे मत सब आव बाव को बकतु है॥

मुख बिन भोजन करत नहिं कहूँ देखा बिना किये भोजन के कोऊ ना छकतु है।
बनादास पेटही न भोजन औ भूख कहा ज्ञान औ बिराग भक्ति तिहूँ को अकतु है ॥७९॥

सवैया

तीनो बिना नहिं काम सरै जेहि भावत जौन करै किन सोई।
मैं कृतकृत्य कृपालु कृपा निज भाव को नेक न राखत गोई॥
जैसे निहाय बिना सडसी घन लोह को काज कछू नहिं होई।
दासबना निरपच्छ है बात सोहात नही सबका मन टोई॥८०॥

भक्ति स्वतंत्र है सन्त कोसम्मत तासु अधीन है ज्ञान बिज्ञाना।
ज्ञान बिराग तहाँ पुनि भक्ति तजै सुत को किमि मातु निदाना॥
दासबना जहँ बोध बिसाल करै नहिं खडन मडन काना।
मोच्छ के साधन अग सबै तेहि भंग किये अपनो नकसाना॥८१॥

भक्ति बिना को हृदय मल नासि है राम को रूहै मिलै केहि भाँती।
ज्ञान बिना न प्रकास लहै कोऊ तेल बिहीन बरै किमि बार्ता॥
तृष्ना तरग उडाइहै कौन बिराग बिना किन आस निपाती।
दासबना जो बिज्ञान न प्रापति तौ समता सपने न सुहाती॥८२॥

जो समता नहिं साँति लहै किमि साँति बिना न सुखी भयो कोई।
साँतिहि मुक्ति अहै सब ते पर दासबना नहिं राखत गोई॥
साँनि सरूप कहै कौनी बिधि गूँग को स्वाद बिलच्छन सोई।
ब्यजन भेद जो खात सो जानत औ रस राहि सकै नहिं कोई॥८३॥

छप्पय

एकै बन्दन ज्ञान भक्ति को करत निरादर।
करि खडन यक ज्ञान सराहत भक्तिहि सादर॥
भगवत बिमुखो कहै दुःख मनिहै तब ज्ञानी।
भक्त हृदै जरि मरै कहै सब कोउ अज्ञानी॥
कछुक बुद्धि मे फेर है ताहि भले समुझै नही।
कह बनादास ठौरै ठवर मानत सबै मही मही॥८४॥

तासु ज्ञान किमि सुद्ध करै ईस्वर पद खंडन।
भक्ति सुद्ध नहिं तासु ज्ञान तजि हरि पद मडन॥
सो ज्ञानी भगवत बिमुख भक्त कौन अज्ञान भो।
चहँजुग चहुँ स्रुति लोक तिहुँ तिहूँ काल नहिं मान भो॥८५॥

जो जानै बिज्ञान ज्ञान ईस्वर सोइ मानै।
जो मानै सोइ भक्त कहा तामें भ्रम आनै॥
संत मतो सब काल दूरि मतबाद सो रहिये।
जो प्रभु दिसि ते मिलै मोद ताहो में लहिये॥
कही सदा निरपच्छ मत स्रुति पुरान सम्मत लिये।
कह बनादास का राखिहै उतरि जाय रघुपति हिये॥८६॥

पढ़ि पढि मरै बेदान्त ब्रह्म को पता न पावै।
कथि कथि ज्ञान बिराग जक्त को बहु डहकावै॥
महा इन्द्रि आराम दाम चामहु क चेरे।
घर घर बागत फिरैं सांति कहुँ मिलै न हेरे॥
खंडयभक्ति रामकी ऐसे ज्ञानो लोग हैं।
कह बनादास हमरे मते नहि सम्भाषन जोग हैं॥८७॥

कहै राम के सरन वहै परिपंच न माही।
कर्मकांड मे पचै भजन की चर्चा नाही॥
रहित ज्ञान बैराग्य भक्ति को भेद न जानैं।
राम रूप क्यो लहै बड़ा सब आपुहि मानैं॥
सदा दूरि तिनसे रहै नहि सत्संगति जोग हैं।
कह बनादास यहि काल में घने उपासक लोग हैं॥८८॥

होय राम के सरन मरन की करै तयारी।
त्यागै आस उपाय नामकी सुरति सँभारी॥
तिहूँ गुनन को भागि रहै प्रभुपद अनुरागी।
सब से होय यकान्त मोह रजनी मे जागी॥
अगुन सगुन दोउ रूप लहि जीवन मुक्त कहावई।
कह बनादास संसय नही बहुरि न यहि जग आवई॥८९॥

पाये अगुन न सगुन मिटै संसय केहि भाँता।
सुन्दर राग न बजै कबहूँ गाड़रि को तांती॥
एक एक मत पकरि करत यक एक बिरोधा।
हेरा भाँति अनेक दसा यह जहँ तहँ सोधा॥
अन्धा सम लकड़ी गहे और कोहू के हाथ है।
कह बनादास वह देखता तू तो अतिहि अनाथ है॥९०॥

कुंडलिया

याही ते झगरा मचा टूटै नहि कोउ भांति।
सब कोउ सिद्ध कहावते जतन करै दिन राति।।
जतन करै दिन राति माति मति तिहुँ गुन माही।
यहाँ न गुन को लेस कौनि बिधि छुइ है छाही।।
घनादास तापै नही बुद्धि नेक सकुचाति।
याही ते झगरा मचा टूटै नहि कोउ भांति।।६१।।

छप्पय

भै रोचक सिद्धान्त विपर्य्य चानक बानी।
खंडन मंडन बिबिध कहाँ लगि नाम बखानी।।
पुहुपित करिये त्याग सिद्धि पल ही को गहिये।
ऐसा मिलै बिचार तत्त्व की आसय लहिये।।
कर्म वचन मन लाय कै ताही पर इस्थित रहै।
कह बनादास सज्जन सोई कस न परम पद को लहै।।६२।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ज्ञान
खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम तृतीयोऽध्यायः।।३।।

सवैया

घोर विचार न तोष लहै जिन आस न वासना जोति लिये हैं।
इन्द्री नही वसि भै सब अंग से चित्त निरोधन चित्त दिये हैं।।
प्रीति प्रतीत नही उर पुष्ट सो जाय यकांत मे काह किये हैं।
दासबना न बनाविधि एकहू फेरि बिपय रस जागि हिये हैं।।६३।।

राग औ द्वेष बढ़ै बहु संग मे बाद बिबाद अनेक भये है।
आस न वासना छूटि सकै पुनि जैसन संग सुरंग दये हैं।।
चिंता चबाइनि चूर करै कबहूँ अपमान औ मान जये हैं।
संसय गई नहि दासबना दससंग रहै महँ काल लये हैं।।६४।।

छप्पय

जाको पग पाताल सीस विधि लोक प्रमाना।
घ्रान अस्विनी भुवन जासु लोचन है भाना।।

भ्रू विलास जेहि काल दिवस निसि निमिष कहाये।
सरिता न सकच जलह भुजह दृग पालहि गाये॥
लोभ अधर जम दसन पुनि स्वास समीरहि जानिये।
कह बनादास पावक बदन रसना वरुनहि मानिये॥९५॥

अहै विधाता बुद्धि सम्भु हंकार कहाये।
मन ससि गावत स्रुती स्रवन दस दिसा सुहाये॥
उदर सातवही सिन्धु पाय जाको गो दंडा।
अपर लोक अंग माहि अहै आकार सो अंडा॥
बनस्पती रोमावली माया हास्य अनूप है।
कह बनादास बस चराचर ताते बिस्व सरूप है॥९६॥

यह कारन वपु कही सूछ्म सब हृदय मुकामा।
कहिये पुनि अस्यूल नृपति दसरथ सुत रामा॥
तिहूँ परे पर ब्रह्म सच्चिदानन्द कहाये।
नेति निरुपत वेद अपर कहि पार को पाये॥
चहुँ जुग तीनो काल में सब कारज सबको सरै।
कह बनादास अस्थूल से बार बार तेहि पद परै॥९७॥

रामनाम के जपे होत चहुँ रूप को बोधा।
कलिमंहि अवर उपाय भले सब विघ को सोधा॥
सब साधन भे सिथिल बीज ऊसर जिमि बोये।
जैसे लगै न हाथ सरपि कहुँ वारि बिलोये॥
सर्व अंग चतुरा सोई सब मतवाद बिहायकै।
कह बनादास मन क्रम वचन रहै नाम लवलायकै॥९८॥

घनाक्षरी

अमन अचित्य प्रान रहित न इन्द्री देव महि अप तेज वायु गगन अभूल हैं।
बुद्धि अहंकार भिन्न सब्द स्पर्स रस गंध रूपहू ते सर्व काल प्रतिकूल है॥
सतचिद आनंद सघन बनादास बदै ऐसो रघुनायजी को तन अस्यूल है।
अलख अजोनि अद्भुत गति जानौ कौन ऐसो न विचारैं ताके दृष्टि माहि भूल है॥९९॥

राम राम रटत उठत उर में ही राम ताको कौन काम करै राम की रजायजू।
अनुभव ब्रह्म सुख रूप नामहू ते भिन्न अकथ अनूप सब साधन सिरायजू॥
नरक स्वरग ब्रह्म भावन हमारे हाथ माथ दिये सूरन में जानै रघुनाय जू।
बनादास जासु रूप चिंतन करत जोय होय सो सदेह नाहि सदा चलि आयजू॥१००॥

देह पाप रूप मे सरूप ज्ञान खोय दिये ताहो ते फिरत चवरासी मे भुलान है।
विना राम सरन जन्म मर्न मिटै नाहि उर अनुराग सुद्ध आवै रूप ध्यान है॥
विरति त्रिलोक ते विलोकन न देर लागै अग अग पर काम कोटि सकुचान है।
वनादास कृपा को प्रसाद निज रूप लहै जात न जगत बिन भये दृढ ज्ञान है॥१॥

कुडलिया

आसा तृष्ना वासना राग द्वेष भय मोह।
चिता हानि गलानि पुनि लोभ काम अरु कोह॥
लोभ काम अरु कोह निषेधो बिध गुन तीनो।
संसय पुन्य औ पाप प्रान की गति अति झीनो॥
हर्ष सोक बूड़ब तरब वनादास परद्रोह।
आसा तृष्ना बासना राग द्वेष भय मोह॥२॥

मन इन्द्रिय को दुसह दुख मान अवर अपमान।
चौरासी भय ताप त्रय निबहब कवनि बिधान॥
निबहब कवनि विधान भान इनको करि दूरी।
मौत काल जम त्रास सकल विधि डारै तूरी॥
तबौ देह बाधा करै सहज रूप के ज्ञान।
मन इन्द्री को दुसह दुख मान अवर अपमान॥३॥

जो तन म ममता करै ताते अन्ध न कोय।
याते दुख दाता न कोउ हिय आंखिन ते जोय॥
हिय आंखिन ते जोय चीव ईस्वर सो कीन्हा।
नहि मो मे तिहुँ काल बिचारै या बिध झीना॥
वनादास हो आतमा स्रुति पुरान मत सोय।
जो तन मे ममता करै ताते अन्ध न कोय॥४॥

देह बुद्धि को त्यागना याही परम विवेक।
प्रेरक के आधीन सो स्रद्धा करै अनेक॥
स्रद्धा करै अनेक ब्याधि रोगादि सतावै।
आय जरा जब ग्रसै तनिक अववास न पावै॥
धीर बिचार औ सूरता राखै पोढ़ो टेक।
देह बुद्धि को त्यागना याही परम बिवेक॥५॥

संसय चिन्ता सोक पुनि आवै उर न गलानि।
फुरै हृदय हम ब्रह्म है देह बुद्धि भय हानि ॥
देह बुद्धि भय हानि रहै चेतन जब ताईं।
तब लगि दुख सुख भान रीति चलि आपस दाईं ॥
बनादास हम आतमा याही पोढ़ो बानि।
संसय चिन्ता सोक पुनि आवै उर न गलानि ॥६॥

दुख मो में नहिं देह में याही उत्तम ज्ञान।
जिमि घन आड़े भानु भे निसा नहीं परमान ॥
निसा नहीं परमान होत है कछुक अँधेरा।
जब लै तन को संग करै बाधा बहुतेरा ॥
बर्षा बात निहार जल गगन लिप्त नहिं जान।
दुख मोमें नहिं देह में याही उत्तम ज्ञान ॥७॥

तिमि ज्ञानी को देह दुख देखत है सब कोय।
मैं दुखिया सुखिया नहीं मुखिया ज्ञानी सोय ॥
मुखिया ज्ञानी सोय प्रकृति ते परे सदाईं।
दुख सुख दोउ अतीत ब्रह्म रस जानहु भाईं ॥
मेरु सिन्धु गत मुकुर जिमि भार न भीगव सोय।
तिमिज्ञानी को देह दुख देखत है सब कोय ॥८॥

दुख सुख जाननहार है मन बुधि कह सब कोय।
तासु परे परब्रह्म है अमल अद्वैत है सोय ॥
अमल अद्वैत है सोय रहै चारिहु के पारा।
तब लखि ब्रह्मानन्द परे चित औ हंकारा ॥
दृष्टादृष्ट अदृष्ट में द्वन्द्व जात सब खोय।
दुख सुख जाननहार है मनबुधि कह सब कोय ॥९॥

घनाक्षरी

निज जन जानि राम राज देत बार बार करै अंगीकार न धरत भव भार है।
बाद बकवाद तन स्वाद में भुलाय जात धरम करम नींद सोवत सकार है ॥
प्रकृति प्रवाह में बहत न गहत तट खोवत जनम मानि हम औ हमार है।
बनादास तब लै कुसल कोऊ काल नाहिं जबलै न होत तिहूं गुनन ते पार है ॥१०॥

मान अपमान निन्दा अस्तुति औ हानि लाभ हम औ हमार नहिं देखे कोऊ काल है।
सुख दुख दोऊ माहिं सदा सम मति रहै इन्द्री मन बुद्धि व्योपार तजै जाल है।।
विधि औ निषेध लोक बेद को प्रपच सब तिहुँ पुर कामना अनेकन विसाल है।
बनादास ज्ञान आगि माहिं सब दाहि डारै सोई जन होत ब्रह्मानद म बहाल है।।११।।

या पै होब कायम सो कृपा परिपूर राम होय ऐसी मति सुद्धि लियें बसुयाम है।
तीरथ बरत तप जज्ञ जोग जप त्यागि नेम औ अचार छोड़ि रटै एकनाम है।
याही सार सब्द सब सब्दन को सिरमौर करत असब्द प्राप्ति महा सुखधाम है।
बनादास अबूझ बुझाय बूझै नाथ ही के असुझ सुझाइब सदहि प्रभु काम है।।१२।।

राम की कृपालुता न कृपा विनु जानि परै करै कोटि विधि उर मिटै न खँभार है।
नाव कैसो फेरै कर तुरिति किनार लहै निज बल किये डूबि मरै मझधार है।।
ताते दुख सुख सब अग से सुनावै ताहि दूसर भरोस आस त्यागि बार बार है।
बनादास कस न सँभार करै कृपासिन्धु दीनबधु विरद विराजै स्रुति सार है।।१०।।

सवैया

मन बुद्धि ते होत उपासना काड औ कर्म सरीर से बेद बदा है।
बीति गयो जुग कोटिन जात सो दासबना अति दु ख लदा है।।
अन्त करन परे अहै ज्ञान सो ईस्वर एक अनन्त सदा है।
कर्म उपासना ज्ञान के भीतर चारिउ लोक त्रिलोक कदा है।।१४।।

घनाक्षरी

देह मात्र करम करत कर्मकाड गयो मनबुद्धि पार बृत्ति टूटी है उपासना।
ज्ञानी एक आतम रमित निज रूप माहिं सोई ज्ञान लहे नाहिं रहै भव सासना।।
बनादास जापै जो रहत अभिमानी ताको बिना उर आये ज्ञान काहू को प्रकासना।
ताते मतवाद त्यागि स्रेय करैं सतजन हिया आँखिही न सोई होत बेगि दासना।।१५।।

ताते निज निज बृत्ति देखि अभिमानी होत जौनी समय माहिं जहाँ ताको सो धरम है।
अधरम करत विकर्म सो कहावत है करैं सतकर्म सोई जानिये करम है।।
फल हेत करत सो बन्धन परत जाय निसि काम किये भव परत नरम है।
बनादास सत औ असत दोऊ त्याग करैं सोई अकरम नहिं परत भरम है।।१६।।

मन बुद्धि करि करैं भावना भजन जौन मुक्तिहू की चाह न उपासना सो ठीक है।
कामना सहित करैं पूर सो करत राम करिकै कमाई लिये दाम रस फीक है।।
बनादास तिनुका समान तीनिलोक सुख दुख से दुखायन सो ज्ञानिन की लीक है।
लहै न सरूप वाको ज्ञान मे कुसल सुठि दोऊ ओर हानि भव दाह उर ठीक है।।१७।।

सवैया

होत महीपति को सुत भूपति औ तिय है पिय की अरधंगी।
चेला महन्त सदेह नहीं कछु जीव सनातन ईस को संगी ॥
भेद सरूप में ना कछु दीसत दासबना करै भक्ति यकंगी।
आतम ज्ञान लहै सो भली बिधि ताही को संत कही सतसंगी ॥१८॥

कर्म उपासना ज्ञान सबै महँ होत ब्यतीत करै अनुमाना।
जाकी टिकान बिसेषि जहाँ अहै ताही को है तेहि को अभिमाना ॥
मध्य उपासना अन्त में ज्ञान औ कर्म अहै प्रथमै सब जाना।
दासबना मतवाद न टूटत बूझि कै भिन्न सो सन्त सयाना ॥१९॥

नाम औ बर्न अकार मिटायकै चेतन एक अखंडित ध्यावै।
आदि न मध्य न अन्त कहूँ जेहि रूप न रेख न वृद्धि समावै ॥
नेति निरूपत बेद निरन्तर अन्तर बाहर पूर बतावै।
ताही के जाने ते होत कृतारथ दासबना भव फेरि न आवै ॥२०॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

घनाक्षरी

दृष्टादृष्ट भिन्न दृष्टि किये ते सुलभ होत अन्तःकरन परे ताकर मुकाम है।
तहाँ आपै आप आसपास में न दूजा कोई देसकाल रहित औ नाही सुबूसाम है ॥
अकथ अगाघ अद्भुत को बरनि सकै सतचिदघन सुठि गूढ़ परधाम है।
बनादास बचन अतीत भिन्न अक्षर सो सोई अवतार अवध धाम राजा राम है ॥२१॥

राजन को राज तीनि देव सिरताज विषय मूषक को बाज खल दल को अकाज है।
साधु सुररंजन अखिल अघगंजन जगत ज्वर भंजन निसम्मल को सोज है ॥
सत्यसिंधु सीलधाम छबि अंग कोटि काम अग अभिराम राखै सदा जन लाज है।
सुठि समरत्थ कहै कौन गुन गत्थ बनादास दसरत्थ सुत मेरो महराज है ॥२२॥

अचल अखंड उतकृष्ट निरद्वन्द गूढ़ गुनातीत निरपेच्छ अद्भुत अति है।
निहिसंग निराधार निरलेप्य अनुरूप वृहद बिलच्छन न आइ सकै मति है ॥
अकथ अगोचर अलख आदि मध्य हीन अवसान रहित अजोनो अविगति है।
बनादास सारद गनेस सेस नारदादि सुक सनकादि सिव कहैं सीयपति है ॥२३॥

ईस अवच्छिन्न पुरषोतम परमधाम वासुदेव बाल वृद्ध जुवा न अरुन है।
निर्गुन निरजन निरीह नाम रूपहीन जीरन नवीन नाहि अकथ अनूप है ॥
स्रुति औ पुरान सास्त्र सुर जसगान करैं पावत न पार जीव परे भवकूप है।
बनादास दीनबन्धु दुख दौन दयासिंघु भवनिधि तारन को सगुन सरूप है ॥२४॥

सवैया

सर्गुन ह्वै सब काज करै जन लाज सम्हारत दीनदयाला।
निर्गुन गच्छति तिष्टति हीन सनातन सो अपनो प्रन पाला ॥
आपनो रूप को आपु जनावत ताही ते जीव तरै भव जाला।
दासबना दोउ रूप को बोध लहै जब कोसल नाथ कृपाला ॥२५॥

कुडलिया

करम बचन मन लाय कै किय उपासना राम।
नहि दूसर साधन लखे सुमिरे केवल नाम ॥
सुमिरे केवल नाम रूप कल्पना न राखी।
कीन्हे आसा पूर तासु पुनि रघुपति साखी ॥
बनादास उर मे फुरै अह ब्रह्म परिनाम।
करम बचन मन लाय कै किय उपासना राम ॥२६॥

ज्ञान सिद्ध अन्ते भया गै उपासना दूरि।
यामे मेरा बसि कहा करै उपासक कूरि ॥
करै उपासक कूरि मोहिं कछु ख्याल न आवै।
सब प्रकार मन माफ कहै जाको जो भावै ॥
बनादास अवरो तरह को भव बन्धन छूटि।
ज्ञान सिद्ध अन्ते भया गै उपासना टूटि ॥२७॥

घनाक्षरी

पग बिन गमन स्रवन बिन सुनै सब कर बिन करम करत अधिकार है।
मुख बिन भोगी बानी बिन वाक्य जोगी पुनि जोगन बियोगी मूंघै घ्रान बिन सार है ॥
तन बिन परस नयन बिन देखै अति मति न सकति कहि महा गुनागार है।
बनादास ऐसो सुखरासी उरवसी सदा जीव दुखखानि बिना भजन बिचार है ॥२८॥

सर्वत्र पानि पाद सर्वत्र स्रवन घ्रान आनन औ अच्छ सर्वत्र परिपूर है।
सर्वत्र उदर औ सीस सर्वत्र माहि भीतर औ बाहर में आँखिन हजूर है ॥

घनादास दीनबन्धु दयासिंधु नामजाहि अधम उधारन विमुख जीव कूर है।
पावन पतित जाको बिरद बखानै बेद ताते सहै खेद अति कादर न सूर है।।२९।।

प्रीति औ प्रतीति करि जपै नाम लवलाय साधन बिहाय सारे पूजै तासु आस जू।
सिया के समेत होत प्रगटहि आनि केत तब सुख कहै को छकित अति दास जू।।
बिबिध प्रकार रूप सुख दै कृपाल राम अति सुखधाम ब्रह्म होतहि अकास जू।
घनादास जन के सहित सिंधु आनंद में करत निवास भेदवुद्धि करिनास जू।।३०।।

स्थूल राजपुत्र उरवासी सूछ्म है प्रेरक सकल हिय कहत पुरान है।
कारन बिराट रूप अतिहो वृहद भाव तिहूँ परे ब्रह्म चहूँ वेद में प्रमान है।।
एकनाम जपे रूप चारिहु को बोध होत जाके गति दूसरी न जानत सुजान है।
घनादास परम कृपाल कोसलेस सदा यहि भाँति जन को हरत भवभान है।।३१।।

रामनाम मातुपितु बन्धु सुठि रामनाम रामनाम गुरु सखा स्वामी रामनाम है।
रामनाम विद्या बेद धनधाम रामनाम राम राम कुटुंब सुजन सुबूसाम है।।
रामनाम संध्या पूजा जाप जज्ञ रामनाम रामनाम पाठ तप जोग बसुयाम है।
रामनाम तीरथ वरत दान रामनाम बनादास रामनाम छोड़ि नाँहि काम है।।३२।।

रामनाम जोगछेम प्रेम नेम रामनाम रामनाम आस औ भरोस सब ठाम है।
रामनाम करता करम एक रामनाम रामनाम परम धरम निस काम है।।
रामनाम भगति बिराग ज्ञान रामनाम रामनाम ध्यान औ समाधि रामनाम है।
रामनाम रिद्धि सिद्धि साधन है रामनाम रामनाम सारो बिधि मेरे वसुयाम है।।३३।।

रामनाम देव पित्र रामनाम हृदय चित्र रामनाम मूरति सुरति रामनाम है।
रामनाम ही की गति रामनाम ही से पति रामनाम ही सो मति अति अभिराम है।।
रामनाम कल्पतरु कामधेनु रामनाम रामनाम मंत्र जंत्र तंत्र सुबूसाम है।
बनादास धीर औ विवेक तोष राम नाम निपट न काम को करत सब काम है।।३४।।

सवैया

सचितन सूत्र नहीं मह तत्त्व पृथी अप तेज न पौन अकासा।
सब्द स्पर्स नहीं रसगन्ध न रूप न इन्द्रिय देव प्रकासा।।
बुद्धि औ चित्त नहीं हंकारन पाँचहु प्रान कहै को तमासा।
दासबना यह जानु सबै भ्रम केवल ब्रह्म लखे जगनासा।।३५।।

कैवल ब्रह्म कि इष्ट भई तब दृष्टि बिलच्छन जानहु नीके।
तीनिहुँ लोक लगैं तिनका सम इन्द्रिय स्वाद भयो सब फीके।।

बाद विवाद न भावत भूलेहु भेद रह्यो नहिं ईस्वर जीके ।
दासबना यह होत तबै जब नेक निगाह भई सिय पीके ।।३६।।

जाइ सकै न गरीब के भौन मे जो मरजी नहिं पावत वाको ।
ब्रह्म मे गौन करै केहि भाँति पुरान औ बेद इतै सब थाको ।।
साधन सर्व अहै तेहि कारन ध्यावत है बल जैसन जाको ।
दासबना लहै रामकृपा करि काल तिहूँ जस जागत जाको ।।३७।।

घनाक्षरी

भव खेद छेदन को दच्छ एक राम जानो जाके पच्छनाम को सनातन प्रमान है ।
सर्व अगहीन सब साधन विहीन पदकज प्रेम पीन सोई लहत न आन है ।।
ऐसे कला कुसल न उपमा त्रिलोकहूँ मे जौनी भाँति जन को हरत भव भान है ।
बनादास सकल सुझाप कै अनेक भाँति अतिही प्रकास करि देत दृढ ज्ञान है ।।३८।।

सवैया

जानै न कोऊ जनाये बिना बल साधन के नहिं लागै ठेकाना ।
तीरथ बर्त करै मख दान अचार बिचार अनेक बिधाना ।।
जोग करै वसु अग भलो विधि जात नही उरते अभिमाना ।
दासबना बिन प्रेम न भावत लोन बिना जस ब्यजन नाना ।।३६।।

घनाक्षरी

पुलक सरीर नैन नीर गदगद कठ कहूँ गान करत नृतत धरि मौन है ।
महामोद उर मे अमात नाहि बार बार हृदय निकेत माहि लिये सिया रौन है ।।
तृन सम लागत त्रिलोक सुख समै तेहि जम कालहू कि डर गयो आवागौन है ।
बनादास बहुरि बिसुद्ध ह्वै कै आप भूलै भूलै मिटै ससम को द्वैत भयो दौन है ।।४०।।

रेखता

बढ़ी जब चाह मिलने को नही पल कौ सम्हारा है ।
नही धन धाम तन भावै कहाँ परिवार सारा है ।।
तिया औ पूत पितु माता सखा अरु वन्धु भाई है ।
लगै जमदूत से सारे फिकिर हरि से जुदाई है ।।
दिनो दिन सोच सरसावै करो कैसा बिचारा है ।
चहै तन नोचि कै फेंका मिलै दसरत्य बारा है ।।
कहै नहिं यात याहू से सुनै नहिं याहु को टेरी ।
उरै उर औटि कै रहना करै दिलदार कब फेरी ।।

दिवाना दर्द है हरदम कहै को बात न्यारी है।
बिरह की चोट उर सालै सदा मरना तयारी है॥
पलो नहिं चैन चित पावै उसी में स्वाद सारा है।
विरह की बार अति गाढ़ो बना मासूक मारा है॥४१॥

नहो निसि नीद दिन खाना नहीं आना न जाना है।
तड़फता याम आठो में मिलै कैसे ठेकाना है॥
कोई सिवकंज हिय कहता कोई साकेत गाया है।
कोई कह अवध में रहता कोई सब घट बताया है॥
कोई कह जोग में मिलता कोई व्रत नेम राखा है।
कोई स्रुति सास्त्र में कहता कोई तप जज्ञ भाखा है॥
कोई वैराग में बरनय गरीबो कोउ बताई है।
कोऊ कह हाथ नहिं आवै बना अनुराग पाई है॥४२॥

भया आसक्त चरनों में गया चित चोरि नीके हैं।
कमल की क्रांति सकुचावै लगे जग स्वाद फीके हैं॥
नखों द्युति लाजती मोती न तारा तुल्य को पावैं।
स्याम पद पृष्ठघन मध्ये मनो दामिनी दमकि जावैं॥
पीन अति जानु मन हरनी कमर हरि तून राजे है।
कहाँ पटपीत की सोभा कनक दामिनि भि लाजे हैं॥
भँवर गंभीर जमुना को नाभि सोभा अनोखी है।
कहाँ त्रिबली किहै उपमा महा आनन्द पोखी है॥
गरे गज रागरूरे हैं नागमनि नीक सुठि लागे।
जनेऊ पीत द्युति न्यारी निरख ते ताप त्रय भागे॥
भुजा केयूर करकंकन कमल कुल को लजाये हैं।
मुद्रिका बिच अँगुरनो सोहै जड़ित मनि नग निकाये हैं॥
कमनियाँ तौर पुनि तामें कहै कवि कौन सोभा है।
कन्ध हरि ग्रीव त्रय रेखा लसे अस कोन लोभा है॥
चन्द मुख मन्द मुसकाते दसन की दमक जोहो जो।
अधर अरुनार सुभ नासा कों ऐसा लखि न मोही जो॥
हरे मनि नील को आभा नयन अरविन्द राते हैं।
वंक भ्रू काम धनु लाजै लखे मद प्रेम माते हैं॥
छटा जेहि मीन की वारै कनक कुंडल सुहाये हैं।
सोई जन स्वाद को जानै सपनहू देखि पाये हैं॥

तिलक वर भाल में राजी न उपमा खोजि कवि पावैं।
मुकुट सिर हेम का नीका जुलुफ केहि भाँति कहि आवैं॥
जानकी वाम दिसि जाके कोटि रति काम सकुचाये।
कहै स्रु ति सेष औ बानी बना नहिं पार तौ पाये॥४३॥

बिना यहि रूप के देखे सच्चिदानन्द नहिं जानैं।
न आवै बुद्धि बानी मन नहीं मधि आदि अवसानैं॥
नही रंग रूप नहिं रेखा न अच्छर माहिं आवैगा।
गई सुर तान इत लौटैं नही कछु और भावैगा॥

नही है दूरि नहिं नेरे तिलौ भरि नाहिं खाली है।
न अन्तर बाह्य है तामें अनोखो तासु चालो है॥
सदा रस एक स्रु ति गावैं नितै नेती पुकारा है।
नही जनमैं नही मरता नही वृद्धा न बारा है॥

अचल उतकृष्ट अति गूढा सदा एकै न दूजा है।
नही सो दृष्टि में आवैं उसी में जग पसूजा है॥
कनक कंकन खंग लोहा पात्र मृद एक है जैसे।
सूत औ वसन जल बीचो खलक औ अलख है तैसे॥

जथा हिम नीर औ बोरा अर्थ बानी समानी है।
वृच्छ औ बीच नहिं दूजा कोटि मे एक जानी है॥
अगुन से सगुन सोइ होवैं सगुन से अगुन होता है।
बना यहि भाँति दर्सावैं नही सब खात गोता है॥४४॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयतापविभंजनोनाम पंचमोऽध्यायः॥५॥

जिगर से जख्म भारी है। दसा बिरही की न्यारी है॥
खरे नैना उदासे हैं। लेत गहिरो उसासे हैं॥
अधर सूखे बदन जरदी। रँगे अंग रंग ज्यों हरदी॥
न आवै नींद दिन रातो। स्वास ही स्वास है पाती॥

स्वाद सृंगार नहिं भावैं। खान औ पान बिसरावैं॥
गई दिल से गरूरी है। नही पल को सबूरी है॥
स्वास जनु आगिसे आवैं। नैन दोउ नीर झरि लावैं॥
नहीं परवाह पल टूटैं। धनय सन देह कब छूटै॥

भले अंदर जलाया है। बाह्य सो रंग छापा है॥
दमैं दम हाय होती है। बना मरना निसोती है॥४५॥

बिना मासूक सब फीका तिहूँ पुर चाह खोई है।
दसा कबि कौन गावैगा दिवस औ राति रोई है॥
चहै तन नोचि कै फेंका नहीं फल धाह चारी है।
जला मल कोटि जन्मो का लखै कैसे अनारी है॥
कही झलकी झलकि आवै बहुरि ह्वै जात न्यारा है।
कहो आनंद नहि जावै बना बिन मौत मारा है॥४६॥

बिरह का वेग जब टूटा हिये कछु सांति आई है।
कहै में नाहि आवैगा रह्यो हरिरंग छाई है॥
लगैतिहुँ लोक सुख हल्का दुरासा दाह टूटो है।
नहीं तनहूँ से कछु होवै जगत् की आस छूटी है॥
सदा आनन्द सरसावै रतन ज्यों रंक लूटी है।
न साधन और उर आवै पिये हरिनाम बूटी है॥
हृदय की कौन लखि पावै मोहब्बत जात बढ़ती है।
बना मासूक जब राजी दसा निसि दिवस चढ़ती है॥४७॥

जोई जोइ रूप सुख चाहै सोई सोइ पूरकर्ता है।
नही पल एक को न्यारा हिये में मौज भर्ता है॥
सुरति प्रति अंग की सोभा छनय छन पान कर्ता है।
ललकि ललचात है हरदम नहीं उर तोष धर्ता है॥
कहाँ दिन जात औ राती कहाँ संसार सारा है।
कहाँ स्रुति सास्त्र का झगड़ा गया भव भूरि भारा है॥
कहो भैलोक में कोई नहीं औ यार मेरा है।
भया अतिपुष्ट अभ्यंतर नही मेरा औ तेरा है॥
नही मन बुद्धि में आवै बचन कैसे बखानैगा।
करै अनुमान बहु तेरे गया सो स्वाद जानैगा॥
किया मन आस को पूरी मिला कैसा ठेकाना है।
बना प्रतिअंग को ध्यावै रहै आनन लोभाना है॥४८॥

प्रतिअंग सोभा को कहै हारै सकल हिय माहि जू।
स्रुति सेष नारद सारदागन राउ पार न जाहि जू॥
सर्वांग नखसिख मन हरन मुख पै निवासा नोक है।
इस लोक में क्या देखिये इन्द्रादि का सुख फोक है॥
रहिसुरति अविचल ह्वै तहाँ मन बुद्धि बानी पार है।
तहँ बनादास न दूसरा कोउ हम हमारा यार है॥४९॥

सवैया

एकै करैं अति सर्गुन खडन निर्गुन मे नित ही चित दीना।
एकै भली विधि निर्गुन खडि कै सर्गुन पुष्ट करैं ते प्रवीना ॥
दासबना यह देखि दसा तब मुख्य उपासना नाम कि कीना।
दोनो करौं सिधि तौ विधि बैठ तहै अब तौ पति तासु अधीना ॥५०॥

औषधी चीन्है बिना हनुमान उखारि लिये गिरि याही मे सारा।
आनि धरे रघुबीर के अग्र लिये तब मूरि को बैद्य बिचारा॥
निर्गुन सर्गुन ते न परे कछु ताही ते दोऊ किये अगिकारा।
नेक निगाह तौ बात नही कछु ना तो बडो मम ऊपर भारा ॥५१॥

नौधा परे जब प्रेम मे प्रापति राम को रूप लहै तब प्रानी।
सो सुख बुद्धि नही मन आवत कौनि प्रकार कहै सो बखानी॥
भक्ति परा पुनि ताके परे अहै निर्गुन ब्रह्म परै पहिचानी।
दासबना जिमि सिंधु मिली सरि साति भयो सब साघन मानी ॥५२॥

जोग ते ज्ञान विज्ञान भो ज्ञान ते ताके परे कैवल्य बखानै।
जाको कहै अति दुर्लभ बेद घनाच्छर से कोउ एक पिछानै ॥
ज्ञान से सिद्धि कैवल्य कहावत भक्ति से साति सबै नहि जानै।
भक्तिउ ते लहै ज्ञान विज्ञान सो दासबना बहु भाँति प्रमानै ॥५३॥

भक्ति औ ज्ञान के जे अधिकारी हैं एकै मुकाम अहै सब केरा।
ज्ञानी दसा उतकर्ष अहै कछु भक्ति जहाँ तहँ साति बसेरा॥
चौतिस अच्छर माहि मरै लडि होत नही कोउ भाँति निबेरा।
दासबना भये सन्त परे तेहि जो मतवाद के जात न नेरा ॥५४॥

हारि की राह लिये प्रथमै अब जीतन की रुचि बाढ़त काहे।
सत सरूप परे मतवाद ते हारि मे जीति सबै कोउ चाहे॥
जौलो जरै अहकार कि आगि नही रघुनाथ सो प्रीति निबाहे।
दासबना सब त्यागि भजै हरि ना तो नितै तिहुँ ताप न दाहे ॥५५॥

एक को खडन एक को मडन सडन सो सब भाँति बचाई।
है पट को खटका जिनके उर प्रीति नही हरि सो सरसाई॥
है दस अष्ट पुरान अपार औ चारिउ बेदन पार को जाई।
दासबना मत मुख्य यही यक राम को नाम रहै लवलाई ॥५६॥

काहे को भार धरै अपने सिर जाको भजै सोइ पार करैगो।
पूतरी को पट जैसे रखावत कौनिहु ओर न फेर परैगो ॥
आदि सो अन्त लौ सर्व सम्हारि है ज्यों नव अंकन नेक टरैगो।
दासबना जस चाहो जहाँ तहँ तैसई भाँति से काज सरैगो ॥५७॥

है सब के उर प्रेरक जोय निहोरि कै ताहि पै काहि निहोरै।
ताको कहाय करै नर आस तो पाछिली पूजी को पानी में बोरै॥
जो बिधि को पलटै पल में मति जे रत राम ते नात न जोरै।
दासबना यक आस सदा न बनाय कहौ लिखि कागद कोरै ॥५८॥

घनाक्षरी

लोक परलोक को बिसोक एक राम बल छल राखि कहै ताके मुख मसि लागि है।
मन बुद्धि हाय जाके रोम रोम माहि रमा अन्तर निवासी कासी सबै काहे लागि है॥
बनादास ऐसो स्वामि पायन अघाय सुखी दुखी दिन राति रहै कैसी बाकी भागि है।
करम वचन मन जपै एक रामनाम भक्ति औ विराग ज्ञान वेगि उर जागि है ॥५९॥

सबैया

सास्त्र औ वेद पुरान पढ़े बहु नाम कि चोट नहीं उर सालो।
तीरथ वर्त किये तप औ मख नेम अचार करे जप मालो॥
दासबना वसु अंग को जोग भयो मन की नहि छूटि कुचालो।
पूजा औ पाठ अनेकन साधन प्रीति प्रतीति बिना सब खाली ॥६०॥

दान दया बहु संत कि संगति आप किये तजि कै पितु मैया।
जाति जमाति तजे घरनी घर वेप विचित्र औ ज्ञान कयैया॥
त्यागि निषेध करै नित ही विध धोखे नहीं पथ बाम चलैया।
दासबना चतुराबहु अंग से प्रीति प्रतीत बिना सब पैया ॥६१॥

रूप अनूप सुसील सुलच्छन पच्छ न पात सबै। बिध नीका।
धाम धरा गुरु आई बढ़ी जग ग्रन्थ अनेकन पै करै टीका॥
संग जमाति अमाति न वस्तु दिनो दिन पुंज भये सब हीका।
दासबना बकता बहु अंग से प्रीति प्रतीति बिना सब फीका ॥६२॥

घनाक्षरी

मूड़ को मुड़ाये कोऊ जटा को रखाये कोऊ बाँह को उठाये त्याग किये सब भोग है।
कोऊ जल सैन कोऊ अग्नि के तापे चैन कोऊ सून्य बैठि वृष्टि सहै उर सोग है॥

कोऊ महि ठाडे उर्ध्व पाँव मूड गाडे कोऊ झूलै बहु बाढे देखि रीझै जग लोग है।
बनादास कलई खुलत सब अगन से प्रीति औ प्रतीति बिना मानौ सब रोग है।।६३।।

सवैया

भेप बिरागी नही कछु पास मे जाय घरै घर पातरी चाटी।
पद्धति और प्रमान पढे सम्प्रदाई बडे सब ही कह डाटी।।
चेला औ सेवक द्वार खडे बहु सम्पति भौन अनेकन पाटी।
दासबना दीर्घजीवी अहै जग प्रीति प्रतीति बिना सब माटी।।६४।।

घनाक्षरी

दड औ कमडल फिरत महि मडल मे पहिरि कषाय वस्त्र मानौ ज्ञान रूप है।
सूत्र नहि सिखा मुख बोलै न बचावै लिखा तन के अराम लागि परै तमकूप है।।
बेद औ बेदान्त पढि खंडन करत सब निज उर जरनि बिलोकै न अनूप है।
बनादास भजन तजन हेत जानौ जतौ प्रीति औ प्रतीति बिन देखा दुखरूप है।।६५।।

नाना पथ कलपि चलावै जग जोई जोई स्रुति औ पुरान नाखे दस अवतार है।
दसावादी भये ताको दसा न बिचारै कोऊ सीढी लिये धावत अनेकन प्रचार है।।
बाप साहूकार पूत माँगत अनेक भीख ताते अवकाति निज कीजिये विचार है।
बनादास बिधि तजि करत निषेध बहु प्रीति औ प्रतीति हो न हिये दुख भार है।।६६।।

करम बचन मन दूसरी न गति जाके प्रीति औ प्रतीति से अनन्य ह्वै कै भजे हैं।
बासना बिहाय आम खास दास राम जू के स्वाद औ सृगार दाम चामहू को तजे हैं।।
बनादास काल छेप करत सरीर मात्र मुक्तिहू कि चाह न अनूप साज सजे हैं।
परम प्रकास उर भास कर सम सच कृपा को प्रसाद कलि माया मोह लजे हैं।।६७।।

सवैया

सम्यक बोध सरूप की प्रापति कल्पना नास भई तेहि बेरी।
सो सुख बुद्धि नही मन आवत कौनि प्रकार सो वाक्य निवेरी।।
दासबना नहि साँचे जो राम से हैं धृग जीवन आस की चेरी।
राजी नही पिय पाजी सो नारि भई पतिवचक पाप कि ढेरी।।६८।।

आनदसिंधु भरो अभिअन्तर डूबि रहे तेहि मे दिन राती।
निंदत को अरु को बहु वन्दत काहूकि जाति न काहू की पाती।।

दासवना पछिलो घर पाय सोहाय नहीं कछु कौनिहुँ भाँती ।
सर्गुन निर्गुन बोध भलो बिधि ब्रह्म औ जीव अतीव सँघाती ।।६६।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

सवैया

पाहन सेत बँधो जल पै अरु सोने कि लंक जरी छन माहीं ।
रक्षा किये तेहि काल कृपाल बिभीषन को गृह तामधि माहीं ।।
खम्भहि ते प्रगटे नरसिंह हते जन हेत महाबल जाही ।
दासवना द्रुपदी पति राखे भरोस करै तेहि को कस नाहीं ।।७०।।

ग्राह संघारि उबारि गयन्द दियो गति गृद्धहि बेद कहाहीं ।
बालि बिदारि सुकंठ किये नृप से बरी मान दिये मुनि माहीं ।।
लंक से राज बिभीषन को दिये जासु बिभव लखि देव सिहाहीं ।
दासवना सिय हेत हते खल तासु भरोस करै कस नाहीं ।।७१।।

धीर धरै न धरा जेहि अवसर देव पुकार किये प्रभु पाहीं ।
आरत बैन किये अंगीकार धरे नर देह सकोच न ताहीं ।।
भूमि को भार हरे करुना कर राम रिनी हनुमान सदाहीं ।
दासवना किये पाहन ते तिय तासु भरोस करै कस नाहीं ।।७२।।

इन्द्र के हेत भये बटु बावन माँगत भीख न नेक लजाहीं ।
सोई किये ब्रज ऊपर कोप गोबर्धन राखि लिये नख पाहीं ।।
पारथ सारथ कृष्न कहावत गोपिका ग्वाल अधीन सदा हीं ।
दासवना धर्‌यो अंड पै घंट भरोस करै तेहि को कस नाही ।।७३।।

रच्छा किये जिन गर्भ के वास में क्षीर भयो प्रथमै थन माहीं ।
हाथ औ पावँ दिये मुख नासिका आँखि औ कान लखै सुनै जाहीं ।।
बुद्धि बिबेक भलो सतसंग पुरान औ बेद सहाय सदाहीं ।
दासवना पितु मातु में प्रेरक तासु भरोस करै कस नाहीं ।।७४।।

पील करै मन एक अहार पिपील मरै निसि बासर धाई ।
अजगर ठौर परा सब काल में मोटो रहै सब से अधिकाई ।।
खेती न उद्यम जीविका ताहि जियै भरि जन्म कहौ किमि खाई ।
दासवना कुसियारी के कीट को कौन अहार दिये पहुँचाई ।।७५।।

घनाक्षरी

पानी पौन आगि महि तेरे हेत रचे सब होनो ना अकास सावकास कैस पावतो।
सोम भानु सुरसरि रूप ह्वै अनेक रच्छ अन्न ऊप ओषघी से केतो मुद पावतो ॥
दूध दही घृत तेल फूल फल नाना भाँति रुचि करै प्राप्ति कैसो सुख सरसावतो।
बनादास नींद निसा तेरे सुख हेत किये नातौ बसुयाम तुम धन्धा हेत धावतो ॥७६॥

गुरुरूप ह्वै कै परमारथ को सोधे मग चेला उर प्रेरि प्रेरि सेवा को करावतो।
हित मीत द्वार ते अनेक उपकार करै रोम रोम पल स्वास स्वास मोर खावतो॥
देखि उपकारन दरार होत हिये बीच राम ऐसो हितू उर कैसो बिसरावतो।
बनादास तेरी अवकाति काह करै जोग परै न वियोग सदा सुजस को गावतो ॥७७॥

सुखहू को सुख राम तामे सुख मानै नाहि जौन सुख दुख रूप ताके हेत धावतो।
स्रुति औ पुरान सन्त गुरु उपदेसै सदा काहे न करत कान जन्म नसावतो॥
राम राम भजुब सुयाम दाम काम नाही वाम को गुलाम होत सरम न आवतो।
बनादास ऐसे पर कैसे गुनगावै नाहि भावै जौन आन सबही के हिय भावतो ॥७८॥

सवैया

आठहु याम लटी रसना तन सूखि गये औ उमग हिये हैं।
पाहुन ते भयो पख न काम अराम के वोर न चित्त दिये हैं॥
सातहु सिन्धु निरादार कै अरु गगहु को जल नाहि पिये हैं।
दासबना हठ चातक को गहु जो जगमे जस आइ लिये हैं ॥७९॥

घनाक्षरी

अतिही अनोखी ऍंड देखिये पपीहा कर टोट फेरि कबहूँ न टेढ बूँद लेत है।
सुतन सिखावत हमारे कुल रीति यही घटे नेह घटै कानि करत सचेत है॥
जैसे पतिदेव तिय एक पिय गति सदा ऐसे सर्व जल त्यागि स्वाति ही सोहेत है।
बनादास सो तो जड केतो बड काज करै तूतो है चैतन्य काहे जानि कै अचेत है ॥८०॥

टेक कही चातक विवेक बडो हंसकर प्रीति मीन ही की अति लागत निसोत है।
प्रान से न प्रिय कछु तृन से करत त्याग लोक वेद सुजस बिलग छन होत है॥
काटि धोवै जल ते करत जल ही मे पाक खाय जलै जल गति सब को उदोत है।
बनादास बारि जड नेकहू न ख्याल परै लावै नेह राम से जो करै वोतपोत है ॥८१॥

भानु पोखै कमल को सोखै सोई समै पाय सो न रोखै नेक नहिं तोपत सनेह ते।
मीन देत प्रान जल नेकन करत कान चन्द को न चाह औ चकोर टूटै देह ते ॥
बीन स्रवन करै मृगा प्रान जात डरै नाहि परत पतंग दीप तुहू आयगे हते।
बनादास जड़ों के समान न सनेह करै डरै प्रानहेत वाही वोर देखै वेहते ॥८२॥

ऐसी रीति राम की न प्रीति है परस्पर लोक बेद विदित अनेक इतिहास है।
जन गुन सरूप सुमेरुहू ते मानै गरूर औ गुन कों ढेर रज सम देखे दास है ॥
गुरु उपदेस साधु सम्मत सकल भाँति ताके सुमिरन हेत नाहीं सावकास है।
बनादास प्रभु कृत मानै कृत निन्दक न बार बार ताही करि परै भवपास है ॥८३॥

सवैया

जल बुन्दु ते पिंड विचित्र रचे नख से सिख लौं दिये सुन्दरि देही।
रच्छा करै सब काल कृपाल अनेकन बात विचारिये मेही ॥
गर्भ के वास मे कौल किये अब कैसे बिसारत राम सनेही।
दासबना बिषबेलि को बोवत रोवत जन्म बितै विधि येही ॥८४॥

पावक पौन पृथ्वी ससि सूर समुद्र न सोवा से बाहर जाही।
इन्द्र कुबेर दसौ दिगपाल बिरंचि औ संकर आयसु माही ॥
कच्छप कोल औ सेष धरे महि जाहि सदा जमकाल डेराही।
दासबना मुनि ताहि भजै तेहि को बपुरा नर मानत नाही ॥८५॥

घनाक्षरी

भूलि सींग पूँछ नरखाल को वोढाय दिये विधि न बिचारे कैसे करनी के लोग हैं।
मानै कृत राम को न जानै साधु बेद मग सूकर सृंगाल सम रमाहि बिषै भोग है ॥
बनादास मानो तीत तोमी चढ़ो नीम पर ऐसे कलिकाल आय लागो महारोग है।
तीरथ बरत तप ज्ञान औ विराग भक्ति जाके हेत मुनिजन करै जप जोग है ॥८६॥

बालपन बाल माहिं खेलत बिताय दिये तरुनाई खोय तरुनी में भरिपूरि है।
खेती ब्यवपार धन हेत अर्ध बैस गई कोसहू हजार को न गने करि दूरि है ॥
तीसरे में आय ब्याधि रोगन सहाय किये राग औ बिसेषि देख बाढ़ी उर कूरि है।
बनादास चौथ जरा जर्जर सरीर भई तदपि न पिये सठ नाम महामूरि है ॥८७॥

दसन दलित सुठि सुख कहूँ पावै नाहिं आवै ऊर्ध्व स्वास नासा आँखि मुख बहे है।
छुधा तृषा बिकल न सहो सीत उष्न जात अति अकुलात हाथ मीजि मीजि रहे है ॥

जाहि लगि खोय परलोक ते न बात सुनै आँखि को देखाय मुख बैन कटु कहे है।
बनादास ताहू पै सम्हारत न सठ राम रोइ रोइ कहै किये करम सो सह है ॥८८॥

पूतनाति परिवार कोऊ न उबार करै नाना दुःख सहै फल राम बिसराय को।
आय जमदूत गाँसि लिये दसौ द्वार जब रूप विकराल ऐसो देखिन डेराय को॥
दिसा औ पेशाब ज्वाब देखिकै अनेक बार सासति अमित अस कहि पार पाय को।
बनादास मारिकूटि करत करेर अति राम सो न हेत अब करत सहाय को ॥८९॥

कंठ कफ डासि लिये प्रबल समीर परो अति उतपात आय तत्वन को भई है।
रोम रोम प्रान पीडा जैसे बेनु गाँठि फूटै छूटै तन नाहि अति माया मोह भई है॥
तृष्ना आस बासना अनेक परयो बन्धन म कूटि कूटि काढै प्रान पीर नई नई है।
बनादास फाँसी कसि लै चले नटैया तब हाथ औ पसारे साथ एकहू न गई है ॥९०॥

नाना नर्ककुंड जम जातना अनेक सहै कहै को हवाल अति महा विकराल है।
राई राई लेखा तहाँ करत गोपित्र चित्र सोम भानु साखि पाप किये जो बिसाल है॥
तिल तिल भोगत तनिक बल परै नाहि आपन को वहाँ बूझै कोऊ न हवाल है।
बनादास अमित बरष सहै सासति कौ जाही से बिसारे कौसलेस जू कृपाल है ॥९१॥

आय जग माहि थावरादिक को जन्म होत तमोगुन जोनि मे सहत दुख भूरि है।
पाप को कमाय फल ताको कष्ट पाय कोऊ भये पुन्यवान देवलोक बसे दूरि है॥
छिन्न भै कमाई फेरि भूतल मे आई पुनि किये अधमाई नहि दिये फन्द तूरि है।
बनादास यहि बिधि सासति सहत अति आवत औ जात जे न पिये नाम मूरि है ॥९२॥

कोऊ बूड़ि मरै कोऊ आगि माहि जरै कोऊ बाघ सिंह खात काहू बीछी साँप घरे है।
कोऊ जुवा कोऊ बाल कोऊ तिसरे मे काल कोऊ आपघात करि आपही से मरे है॥
नाना ब्याधि रोग बसि सुठि अल्पमृत्यु होति काके है सहसमुख लेखा जौन करे है।
बनादास बृद्ध भये काहू का सरीर छूटै लूटै पाप मोट ताते बीच ही मे हरे है ॥९३॥

कोऊ बड़भागी लेत सन्तगुरु बैन मानि जानि निज हानि सब त्याग करि दिये है।
करम बचन मन दृढ़ ह्वै कै राम भजे तजे सब आस ताहि मोद अति हिये है॥
बनादास लोक बेद माहि सीवा सुकृत को अन्त समय जाय राम धाम बास किये है।
धन्य पितु मातु गुरु सुरउ बड़ाई करै साधु मोद भरै सुनि जन्म लाभ लिये है ॥९४॥

सवैया

मन बुद्धि से भावना भक्ति करै तब होत उपासना रूप है वाको।
जो अस्थूल से कर्म करै कर मिस्ट से नाम कहै बुध ताको॥

दासबना मन बुद्धि से भिन्न सोज्ञानी कही निज रूप में छाको ।
आपनी वृत्ति को आपही जानत अन्तरजामी से नेक न ढाको ।।६५।।

जो बनिहै विधिपूर्वक कर्म तो ह्वै है उपासक संसय न याको ।
ह्वै है उपासना सिद्धि जबै तबही वह ज्ञानी भयो परिपाको ।।
ज्ञानी ते होत बिज्ञानी न संसय पाय परा पुनि सान्ति में थाको ।
दासबना नहि पच्छ न पात तृकांडी है बेद प्रमान सदा को । ६६।।

होय सुखी जबही सपनो मन काह परी तोहि आय पराई ।
आतम स्तुति जोग सदा औ सरोर है निन्द्या को पात्र सदाई ।।
निन्द्य न वन्दन को न लखै बसुयाम सरूप में जाय समाई ।
राम की सृष्टि अनेक प्रकार कि जाय करै जेहि को जो सोहाई ।।६७।।

तू तजि देय पुरानो स्वभाव तो कोऊ कहूँ परिहै न देखाई ।
सत्रु औ मित्र किये बहु काल से जानिये सो मन की बरिआई ।।
आतम नित्य अनित्य अहै जग बर्न अकार बिलोकि बिहाई ।
दासबना सब काल सुखी रहु ताते करै इतनी चतुराई ।।६८।।

घनाक्षरी

देह पंचतत्त्व कियो अन्तस करन चारि प्रकृति निगाह ते न दूसरो दिखाई जू ।
देखो दृष्टि पुरुष तो मूरख न ज्ञानी कोऊ सदा आपै आप काहू बाप औ न माई जू ।।
लखि मृग नीर धन्य मरत अनेक जन्म झूठ तिहु काल एक आतमा सदाई जू ।
बनादास बिगरी सुधारिये सचेत ह्वै कै सन्त गुरु देव सदा राम है सहाई जू ।।६६।।

छप्पय

सनकादिक जड़भरत कपिल सुकदेव महामुनि ।
लोमस दत्तात्रेय ऋषभ जोगेस्वर नव पुनि ।।
ये सब में सिरमौर पुरानन बेदो माहीं ।
चहुँजुग तीनिउ काल प्रसंसत सबकोउ ताहीं ।।
पद्धति और प्रमान कछु इनको कहूँ न पाइये ।
कह बनादास स्थान कह काहि गुरू ठहराइये ।।१००।।

सन्तन की गति अगम राम मग रीति अनोखी ।
हृदय न बाधा कोहूँ प्रीति चाहो अति चोखी ।।

जो हेरैं हरि ओर पलटि औरे नहिं देखा।
सदा एकंगी राह पार को लह करि लेखा।।
जाम्बवान हनुमान पुनि कपिपति औ लका नृपति।
अरु गोपी सोरह सहस इनकी देखो कवनि गति ।।१।।

नृपति कीन तन त्याग लषन सिय सग सिधाये।
पिता दीन्ह पुरराज भरत अति तप तन ताये।।
त्यागेउ गृद्ध सरीर सेवरी गति न छिपानी।
ध्वन्स मुनिन को मान कथा सदग्रन्थ बखानी।।
पदुम अठारह कोस दल बिना दाम घेरे भये।
कह बनादास प्रभु काज हित प्रान पात पर जिन लये ।।२।।

पसु सरीर यह ज्ञान भयो नर तन केहि लागी।
बिषय करत दिन जात हृदय हरि भक्ति न जागी।।
जमपुर के बहु दड पलटि चवरासी भोगा।
को कबि बरनय जोग लगे जेहि भाँति कुरोगा।।
करि बिचार देखै भले कूकर सूकर नीक है।
कह बनादास जे हरि बिमुख इनहूँ से वे ठीक है।।३।।

नारद ध्रुव प्रह्लाद आदिकबि अरु हनुमाना।
द्रुपद सुता पुनि बिदुर पांडु सुत सब कोउ जाना।।
काग भुसुंडी गरुड़ भक्ति सिरमौर सदाई।
सहस अठासी रिषय भक्तिपथ अति लवलाई।।
वैष्नव कोटि अनन्त है अग्रनीय संकर तहाँ।
सूर कबीर बिचारिये तुलसिदास मग मे गहा।।४।।

काहू की नहिं जाति पाँति काहू की नाही।
राग द्वेष पर भेख रेख हरि भक्ति सदाही।।
एकनाम की टेक राम के नाते नाता।
मानत आये सदा संग जो दूनहिं जाता।।
बहुबिधि कोउ खंडन करै कोउ मंडन बहु भाँति से।
कह बनादास करिये भजन काज कहा दिन राति से।।५।।

बहु मारग आचार्य राह चहु बेदन गाये।
मानहु मेरे हेत अवर पथ बिधिन बनाये।।

संसकार अति सबल बुद्धि मन हठ करि राखा ।
करै दाख का त्याग कवन निमकौरी चाखा ॥
तुलसी बानो बेद मोहि लिखि कागज कोरे कहौ ।
कह बनादास धोखे कहूँ सपन अवर मग नहिं गहौ ॥६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप त्रिभंजनोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

देव बिघ्न कलिकाल ब्याल माया को जाला ।
जाति परत सब जर्‌यो कृपा रघुबीर कृपाला ॥
निति मन बुधि आनन्द सोच संसय कछु नाही ।
आस बासना नास नही तृष्ना उर माही ॥
रघुपति जस गावत नितै जैति जैति संकट समन ।
कह बनादास मन बचन क्रम रामनाम मम परम धन ॥७॥

पाये फल परिपूर्न सरन आये को सारा ।
क्यों राखो कृत गोय जरो मानसिक बिकारा ॥
नई प्रीति नित चही चरन की अवर न मोको ।
जन रुचि राखन हार अगम नाहीं कछु तोको ॥
जैसी रच्छा कीन्ह प्रभु बात सकल समुझे बनै ।
कह बनादास तुम से तुही नहिं करोरि मुख क्यों भनै ॥८॥

राम रोम में रमें जमें घट घट में सारे ।
सारद सेस गनेस महेसौ लहत न पारे ॥
नेति नेति स्रुति कहै अवर को जाननहारा ।
जाको देहु जनाय होय तुमसे नहिं न्यारा ॥
तुव उपकार बिचार करि नेवछावरि तन कोटि कर ।
कह बनादास तबहु न उरिन बार बार सिर चरन पर ॥९॥

सवैया

तृप्ति नही मन बुद्धि लहै कहै रूप को स्वाद कहाँ तक कोई ।
कोटि उपाय करै किन कोय न गोय सकै अभिअन्तर सोई ॥
है नेवछावरि सो छण ही छण रोमहि रोम रहो सो समोई ।
स्वासहि स्वास उठै हरिनाम न काम कछू फिरि तास न होई ॥१०॥

सो रस जानु भुसुण्डि महेस गनेसहु सेस लहे हनुमाना।
लोमस नीके किये पहिचान बिभीषन औ प्रह्लाद प्रमाना।।
सन्त अनन्त को पार लहै गनिका सेवरी गति गृद्ध पिछाना।
दासबना तुलसी लिये लूनि दिये परसाद न जात बखाना।।११।।

घनाक्षरी

सन्तन को नाखैं कानि कुल की न राखैं है घन की अभिलाखैं नत निनहो अराम के।
कही दीन भाखैं नहि मानै स्तुति साखैं अहै अतिहो अपाखैं बसि परे जाते बाम के।।
बोध तेत लाखैं राम प्रीति धरी ताखैं बनादास विषै चाखैं पचे मरै सगधाम के।
मौत जबै माखैं मरे खाट ही पै कांखैं जब मूंदि गई आंखें तब लाखैं केहि काम के।।१२।।

रूप है अनूप भूप सगन म बैठत्तु है ऐठतु है सब ते अति भरे इत मामके।
कौडी को जोरै लाज तिनका सम थोरै बित्त घर मे करोरै प्रीति नही राम नामके।।
बिद्या बेद बादै ज्ञान भक्तिन अबादै बनादास कौन स्वादै सुधि भूले जमधाम के।
छोडे हठि दाखैं निमकौरी को चाखे जब मूंदि गईं आँखें तब लाखैं केहि काम के।।१३।।

सवैया

हरि रूप अनूप से छूटि गये तबही बिष बेलि को बीज बये।
धनधाम धरातिय तात तनै सुठि मोह निसा महँ नीद लये।।
गुनसागर नागर आगर है नहि दासबना प्रभु पाय नये।
प्रकृती परवाह परे नितही अति आनंदकन्द सो मन्द भये।।१४।।

सुठि बूझि विचारि करै गुरुदेव भले दृढ ह्वै उपदेस गहै।
सब त्यागि अखडित नाम जपै बिरहानल मे गुन तीनि दहै।।
कह दासबना जग आस तजै नहि भूलि बिषै परिपच बहै।
मन बुधि औ इन्द्रिय सुद्ध करै यहि भाँति से जीव सरूप लहै।।१५।।

प्रथमै सत्कर्म करै मन लायकै फेरि उपासना माहि रहै।
सम मानि निरादर आदर ह्वै हिमि आतप बात अनेक सहै।।
अनुराग बिराग सो ज्ञान जगै तब दासबना भव ताप दहै।
पुनि आइकै साति प्रकास करै यहि भाँति से जीव सरूप लहै।।१६।।

सतोष बिचार औ सूरता सार उतारि कै भार भले निबहै।
उरपौर नई अति नैन सनीर मिलै कब राम न भूलि कहै।।

हिय पंकज माहिं जवै प्रगटै तब सूरति मूरति माहिं नहै।
कह बनादास स्तुति सन्त कहै यहि भाँति से जीव सरूप लहै ।।१७।।

घनाक्षरी

सास्त्र औ पुरान बेद मुनि मतबाद नाना बुद्धि को बिलास तामें चित्त मति दीजिये।
आस औ उपाय त्यागि भागि कर्म जालन सो रामनाम सुधा रस वसुयाम पीजिये ।।
ब्रह्म को विचार सार करि उर बार बार चेतन अमल में मुकाम दृढ़ कीजिये।
कोटिन में एक बात बनादास कहे जात जगपार होन होत याहो मग लीजिये ।।१८।।

कुंडलिया

रामनाम के जपे से जो कछु तेरे लागि।
सो सब आपुहि प्रकटि है ताते रहु अनुरागि ।।
ताते रहु अनुरागि यही बड़िभागि तिहारी।
नामहिं लखै असब्द जासु महिमा अतिभारी।।
बनादास ह्वँ साधु अब नाहक बोवै आगि।
राम नाम के जपे से जो कछु तेरे लागि ।।१९।।

कृपापात्र को रुज मिलै निरधनता अपमान।
कुल कुटुम्ब को नास भय अति करुना भगवान ।।
अति करुना भगवान बंस को छेदन कीना।
ममता रही न कहूँ सिथिल मन तन सुठि खीना ।।
बनादास पीछे दिये दृढ़ता आतम ज्ञान।
कृपापात्र को रुज मिलै निरधनता अपमान ।।२०।।

हरि बिमुखन को मिलत है तन सुख औ धन धाम।
मान बड़ाई बहु कुटुम माया केर गुलाम ।।
माया केर गुलाम राम को भूलि न जाने।
खान पान अभिमान जगत में दृढ़ लपटाने ।।
बनादास दिन मृषा गे अहनिसि भोगत काम।
हरि बिमुखन को मिलत है तनसुख औ धनधाम ।।२१।।

बनादास उलटा सदा साधु न केर बिवेक।
पलटि आपने घर गये गहे यकंगी टेक ।।

गहे यकंगी टेक जोक नहि पाहन लागै।
बहु लावै निज रग उलटि कै आपुहि भागै।।
यातो फिरि नांधै नहीं करै उपाय अनेक।
बनादास उलटा सदा साधुन केर बिवेक।।२२।।

पटका द्वारे राम के खटका सकलो जानि।
भटका ताते खात नहि तिन डारा भव भानि।।
तिन डारा भव भानि वानि ऐसी प्रभु केरा।
जो कोउ होवै सरन सद्य सब सोक निवेरी।।
बनादास अटका नही अब कछु परा पिछानि।
पटका द्वारे राम के खटका सकलो जानि।२३।।

मैं सेवक हौं जाहि को सोई सेवक मोर।
आये जब ते सरन म दावा नहि कोउ वोर।।
दावा नहि कोउ वोर याम बसु करै सभारा।
पलक पूतरी सरिस कवन अस जोगवनहारा।।
बनादास देखै सदा प्रभु की करुना कोर।
मैं सेवक हौं जाहि को सोई सेवक मोर।।२४।।

यह परतिज्ञा ठवर से देखिहौं नजरि न आन।
हैं रूसे की खुसी हैं सुर नर सकल जहान।।
सुर नर सकल जहान कवन उर की गति जानै।
अन्तर्जामी विना पुरानों बेद बखानै।।
बनादास पूरी किये अब लगि कृपानिधान।
यह परतिज्ञा ठवर ते देखिहौं नजरि न आन।।२५।।

चेतन परिपूरन अहै जड नहि चलबे जोग।
यह विभाग जाको भयो अबिचल भे ते लोग।।
अबिचल भे ते लोग उठे सकल्प त जावै।
बद्ध अहै पुनि तहाँ पलटि कै ताते आवै।।
बनादास गुन ते रहित ताहि न जोग बियाग।
चेतन परिपूरन अहै जड नहि चलबे जोग।।२६।।

काल कर्म प्रारब्ध से बली जे जीवन मुक्त।
यो उठाय लै जाहि क्यो अतिसय बात अयुक्त।।

अतिसय बात अयुक्त जाहि ईस्वर भय नाहीं।
इनकी भय किमि रहै साम्छि सदग्रन्थन माहीं ॥
ब्रह्म अचल तिहुँ काल में बनादास वेदुक्त।
काल कर्म प्रारब्ध से बलो जे जोवन मुक्त ॥२७॥

सवैया

जे दिन बीति गये ते गये कछु हर्ष औ सोक न ताहित ठानै।
आवनहार सो भार है राम पै ताहित सोच नहो उर आनै ॥
जो व्रत मानन ताहू को ज्ञान सरूप में इस्थिर सों भव भानै।
दासबना ते सुखी सब काल में और सबै दुखरूप निदानै ॥२८॥

छप्पय

बाढ़ी सद्धा हिये बालपन ते अतिभारी।
यहि तन नांघौ जक्त फिरौं नहिं अवकी पारी ॥
विघन विपति जो परै सहौं सो सुठि हरषाई।
याही दृढ़ संकल्प जाहि ते फिरि नहिं आई ॥
अब लगि नहिं बिकलप भयो उर प्रेरक प्रेरा करै।
कह बनादास आधीन तेहि जो चाहै सो किमि टरै ॥२९॥

कुंडलिया

राजी सदा रजाय में दाय उपायन एक।
टरै नही मग सरन से आवै विघन अनेक ॥
आवै विघन अनेक स्वाति बुन्दहि की आसा।
खबरि लेय तो लेय नही तो मरै पिआसा ॥
बनादास हरदम रहै चातक हो की टेक।
राजी सदा रजाय में दाय उपायन एक ॥३०॥

राम कृपा ज्ञानहि लहै वही ज्ञान है ठीक।
निज रुचि से ज्ञानी भये तामें तनिक न नीक ॥
तामें तनिक न नीक कबहुँ जोवत्व न छूटै।
गिरै मुहुँबले धाय दाँत आगे को टूटै ॥
बनादास ईस्वर बनै अपने मन सों फीक।
राम कृपा ज्ञानहि लहै वहीं ज्ञान है ठीक ॥३१॥

भजत भजत ज्ञानै लहै भई भक्ति जब सिद्धि।
मालिक मन राजी भया याही उत्तम बिद्धि ॥
याही उत्तम बिद्धि चहै सर्बस दै डारै।
राम अपनपौ देत पुरानौ बेद पुकारै।
बनादास जानै सोई लहै रक जिमि निद्धि।
भजत भजत ज्ञानहि लहै भई भक्ति जब सिद्धि॥-२॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

छप्पय

करम दड नहि मटै हटै नहि बिघन अनेका।
भक्ति ज्ञान बैराग्य होय नहि सुद्ध बिवेका॥
दियो काहू फल भजन गई नहि त्रास बासना।
सुद्ध नही सर्वांग रही भव जम सासना॥
ठकुरसोहाती बहु कहैं जानि मानि उर मे डरैं।
कह बनादास अति सुबस है राम चहैं तैसी करैं॥३३॥

कुडलिया

बहु साखा जेहि बुद्धि मे जगत सत्य करि जान।
बनादास ताको अहै करमकाड परमान॥
करमकाड परमान गहै बिधि त्यागि निपेदा।
अहर्निसि स्रद्धा बढै धर्म जो भाषत बेदा॥
ताको है सब भाँति ने याही मग कल्यान।
बहु साखा जेहि बुद्धि म जगत सत्य करि जान॥३४॥

जे देखैं जग दुखमई छूटन हेत उपाय।
हरिजस लागै अतिहि प्रिय पुनि सतसग सोहाय॥
पुनि सतसग सोहाय नारि मत औ धन धामा।
ये कोउ अपने नाहि बिगारैं सब मिलि कामा॥
ताके हेत उपासना बनादास मवलाय।
जो देखै जग दुख मई छूटन हेत उपाय॥३५॥

तिहूँ लोक नस्वर लखै बोध बिरति ठहराय।
तन अनित्य दुखरूप जड ममता उर ते जाय॥

ममता उर ते जाय ताहि को ज्ञान प्रमाना।
जथा भसम को होम धरम सब ताको नाना ॥
बनादास यक आतमा ताही में लव लाय।
तिहूँ लोक नस्वर लखै बोध बिरति ठहराय ॥३६॥

सवैया

ज्ञान बिना नहि मुक्ति लहै कहुँ कोटि उपाय करै किन कोई।
द्वैत दवै सर वंग न जो लगि तौलौ नहीं दुख मूल बिगोई ॥
रामहु कृष्न कहे बहु बार पुकारत हैं सुक आदिक सोई।
दासबना जेहि बुद्धि समाय न लूनि है बीज जथा जिन बोई ॥३७॥

कुंडलिया

प्रथम बिरति है देह ते बहुरि बासना त्याग।
जब बिराग बैराग्य से दासबना बड़भाग ॥
दासबना बडभाग रहै नहिं तिरगुन लेसा।
को सुख बरनै जोग दूरि भे सकल कलेसा ॥
तबहीं दृढ़ अनुराग भो सहज रूप में लाग।
प्रथम बिरति है देह ते बहुरि बासना त्याग ॥३८॥

छप्पय

कुल कुटुम्ब धनधाम तनय तिय आदिक त्यागा।
कछु विशेषता नाहि मोह निसि अवहिं न जागा ॥
तनहूँ ते बैराग करै मन बुद्धि सँभारी।
बहुरि बासना त्याग अहै ताकी गति न्यारी ॥
तिहूँ गुनन का भाव नहिं बैरागहु बैराग है।
कह बनादास सुख सिन्धु तब प्रगटे पूरन भाग है ॥३९॥

घनाक्षरी

दम्भ दोप कपट पखंड बरिबंड बड़े कटक प्रचंड माया अतिही बिसाल है।
कलि बिकराल की कुचाल कोटि कोटि करु अमित अथाह कहै कौन जग जाल है ॥
मन बचकरम सपन में न आन गति सकल प्रपंच तजि नाम में बहाल है।
बनादास इन्द्रोसुख विपुल उपाधि लै के दलत दिमाक सारो माभो महाकाल है ॥४०॥

ज्ञान औ विराग अनुराग सुख सरसाय दुख को दबाय उर करत प्रकासजू ।
नाना बोध सोध दै कै ससय बिनास करै राम रूप लहे जगनास स्वास स्वासजू ॥
बनादास बहुरि देखाय सर्बत्र ब्रह्म जीवन मुकुत करि हरै भवत्रास जू ।
ऐसे रामनाम को प्रभाव कौन पार जाय हिय आँखि हीन जो न होय बेगि दास जू ॥४१॥

जनम मरन बिन सरन भये न जाय तरन चहत बहु राह ते अनेक है ।
धाय धाय मरै ज्यो कुरग मृग बारि लखि त्यो ही बहु मारग न तजै बिवेक है ॥
जाकौ माया जाल सारो ताहि न कगाल भजै सजै भवसाज परी ऐसन कुटेक है ।
बनादास मेरे मतनाम छोडि और गति होय बिधिहू से बडा माना बकै भेक है ।

सवैया

हूँ कै अनन्य भजै भगवान तजै सब कामना आस जलावै ।
काय निवेदन कै मनहूँ क्रम वाक्य न धोखेहु चित्त चलावै ॥
बेगहि राम मिलै अनुराग मय सो उपमान हिये बिच आवै ।
दासबना लहि ब्रह्म अनुपम देह दिये फिरि देह न पावै ॥४३॥

बारहि बार फुरै अभिअन्तर मैंही हौ ब्रह्म न दूसर कोई ।
जौ लौं उपासक रूप उपास्य न तौ लौ उपासना सिद्धि न जोई ॥
भृंगी बनावत रूप जथा निज त्योही भजे हरि द्वैत गो खोई ।
दासबना जिमि सम्भर खेत परै सोई सम्भर बात न गोई ॥४४॥

झूलना

बेद पुरान मतबाद मे मति परै कठिन षटसास्त्र भरमाय मारै ।
कहूँ कछु कहूँ कछु कहूँ कछु कहत है लहत मन सान्ति नहि अधिक हारै ॥
कृपा गुरुदेव को सन्तमत मुख्य है हटकि ससार हिय हरि सभारै ।
बनादास बिस्वास करि एक हो द्वार पर परा रहु प्रीति अति आपु तारै ।४५॥

भक्ति बैराग अरु ज्ञान बिज्ञान लहि सान्ति पद पाय कृत कृत्य होवै ।
बुद्धिमन पुष्ट करि तुष्ट उपदेस पर ठहरु तौ बेगि भवरोग खोवै ॥
तिरथ ब्रत दान मख जोग साधन अमित नेम आचार दिसि नाहि जोवै ।
बनादास यक नाम ते काम पूरा सबै न तरु जग जनमि बहु बार रोवै ॥४६॥

राम रटु राम रटु दिवस निसि हटु न ससार से समिटु हालो ।
राम के नाम से काम पूरा सकल नकल को त्यागि गहु असिल चालो ॥
नतरु जमराज के दूत धरि मारि हैं रोम हो रोम अति चोट सालो ।
बनादास सनकादि सुक सभु भजु पार जेहि मोह निसि सबल को किरिनि मालो ॥४७॥

सबल इन्द्रिय नदरि पवन सग गमन करि ब्रह्म में भवन करि अचल होवै।
आदि मध्य अन्त विन बरन आकार नहि ताहि मिलि रूप सोइ जगत खोवै॥
भरम तेजो इनि वहु जीव संसार के कठिन गति करम धुनि सीस रोवै।
वनादास कोटिन बिषे गया तेहि देस कोउ नीद बिज्ञान सुख सेज सोवै॥४८॥

सगुन औ अगुन बिवेक जाने नही निन्दते एक यक वितहि बोधा।
स्रवन वहु ग्रन्थ सुनि पच्छपाती ठगे किये नहि आपनोचित निरोधा॥
बस्तु तो एक अबिवेक ते दुइ लखै सन्त मत माहि आवत विरोधा।
बनादास दोउ रूपको लाभ जाको भयो ताहि उरनाहि संदेह बोधा॥४९॥

धन्य ते संत संसार तारन तरन चरन रघुबीर अनुराग भारी।
गूढ गति जानि आरूढ़ ह्वै दसा परसपनहूं नाहि मति टरत टारी॥
सरन जो सांच सदेह ताको हरत हृदै में दीप बिज्ञान बारी।
बनादास सकुचात उर सेष औ सारदा सन्त महिमा कहत सबै हारी॥५०॥

सकल अंगहीन पुनि पाप ते पीन गुन ज्ञानवो हीन तन छीन दीना।
घरनि धनधाम सब भांति न काम हित बन्धु जगबाम अतिमति मलीना॥
सुजस सुनि राम को गमन किये धाम को हेत आराम को दामहीना।
बनादास राखे सरन मोहि रघुबंसमनि दिसा निज देखि बकहंस कीना॥५१॥

सवैया

सिह सृगाल से कौन कृपानिधि कोटि न आनन जो कृत गावो।
तौनहि पार लहो जुग कोटि कहां उपमा रघुबीर को पावो॥
नीचन काम न कौड़िहु काम को नाम ने चाम को दाम चलावो।
दासबना खर को असवार सरूप को ज्ञान गयन्द चढ़ावो॥५२॥

घनाक्षरी

आपु से अभेद करि दिये वरबस राम कियो कैसो काम कछु कहो नहीं जात है।
कालहू को काल महाकाल भयन आवै उर कलि विकराल कौन एकहू पोसात है॥
बनादास उगतन भक्ति मग केहूं भांति प्रभु की कृपालता सुमिरि हर्ष गात है॥५३॥

कलि की कुचाल माया ख्याल और काल जाल देव को बिघन पुनि जग उतपात है।
तेहो तक दौर कर्म हेत दुख दानि जेते अहै मन कारन समुझ यों ममात है॥
आतम अखंड द्वन्द कोउ न परसि सकै ताहि ते अनन्द कहा निसि दिन जात है।
बनादास है तो अबिनासी ब्रह्म परिपूर स्वना सकल मेरो याही ठीक बात है॥५४॥

सवैया

ब्रह्म ब्रह्म कहै अभिअन्तर और न दूसर बोलत हारो।
ताही की प्रेरना होय सबै कछु दूजो समर्थ को बूझि विचारो।।
जीवन ता गति ब्रह्म कहै किमि कांपत गात न होत सँभारो।
दासबना परबोध को जानत जे मुनि ते पुनि न्यारो इ न्यारो ।।५५।

परबस ब्रह्म फुरै अभिअन्तर प्रेरक प्रेरना कौन चलावै।
तीनिउँ लोक म नाहिं सुना कहुँ राम रजाय मो सीस चढावै ।।
बिस्व बिलच्छन रीति सनातन जाय कहै जेहि को जस भावै।
द्वैत सबै मन ही कर कारन दासबना सो कहूँ स्तुति गावै ।।५६।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयतापविभजनोनाम नवमाऽध्याय ।।९।।

घनाक्षरी

राम सुखधाम अंग अंग कोटि काम छबि रबि कुल कमल दिनेस दीन दानि जू।
सन्तघन प्रान ज्ञान रूप सबही के उर जग पितु मातु प्रिय खिन्न सील खानिजू ।।
जब जब धरनि धरम करि हीन होत बाढत असुर गन सुठि दुख दानि जू।
बनादास देव सन्त धेनु द्विज दुखी देखि लेन अवतार जाकी सदा ऐसी बानि जू ।।५७।।

अति भूरि भागी अनुरागी जे सरन होत सकल भरोस तजि जपै एक नाम है।
आस ओ उपाय त्यागि बासना बिहाय सब पल पल प्रेम ते छकित बसुयाम है ।।
पुलक सरीर नैन नीर गद्गद कठ बोलत वचन लटपटे सुखधाम है।
बनादास नृत्यत मधुर स्वर गावै कहूँ ताके हिय कमल प्रगट होत राम है ।।५८।।

कमल चरन नख मोती द्युति तारागन पाद पृष्ठनभ सम सोभा सरसात है।
पीन जानु सिंह कटि पीत पट तून कसे नाभी अलि जमुन न उपमा अमात है ।।
त्रिवली उदर उर बृहद जनेऊ पीत मुक्तन की माल लखि मन ललचात है।
बनादास भृगु चर्न तुलसी प्रसूनजुत रमा रेख राजित सो कापे कहे जात है ।।५९।।

जुग भुज भारी कर कंकन केयूरजुत मुद्रिका करज कर कमल सोहायेजू।
कठिन कोदंड बाम कर दहिने मतीर एक अति सोभा जानें जाके उर भाये जू ।।
हरिकंध कम्बुग्रीव अनन सरद ससि द्युति मरकत जाकी उपमा न पायेजू।
बनादास मन्द मन्द हँसत हरत हिय अधर दसन लाल लाखों ललचाये जू ।।६०।।

नाना मन हरनि हरति सुक तुंड छवि बंक भ्रुव कमलनयन अति नीके जू।
तिलक बिसाल भाल भ्राजै जुग रेख बर मानो घन माहि द्युति दामिनी के फीके जू॥
मुख छवि निरखि चपलताई त्याग किये कुंडल कनक लोल भाये अतिही के जू।
बनादास काकपच्छ काको न हरत मन मुकुट दिनेस दीप्ति लखि मन बिके जू॥६१॥

बामभाग जानकी जगत मातु सोभा खानि सकुचानि सारदा सराहि छवि अंग को।
नखसिख रूप सो अनूप कवि कहै कौन मथे मान जोर सुचि रति औ अनंग को॥
बनादास जासु उर प्रगट सो अहो भागि लखि अंग अंग मन होवै नाहि पंग को।
सभु सनकादि मुनि बिधि इन्द्र देवगन चाहै कौन रूप जोगा गहत असंग को॥६२॥

बहु काल तक यह सुख दै कृपाल राम ब्रह्म रूप लाभ होत जन बोध हेत है।
जाकी आदि मध्य अवसान न बदत वेद नेति नेति कहैं कोऊ जानत सचेत है॥
नाना भेद भानि मुक्त जीवन करत ताहि ऐसम दयाल जन हृदय निकेत है।
बनादास पल छन सकल सँभार करै जैसे मातु रच्छै देखि बालक अचेत है॥६३॥

अचल अखंड नित्य व्यापक अकास जैसे चेतन अधिक गुन ब्रह्म में अनूप जू।
तव परमातम औ आतम जुगल एक फिरि कोऊ भाँति नाहि भूलत सरूप जू॥
ज्यो ही सूतो जागै त्योंही भव निसि भोर भयो गई है जीवत्व कौन परै मोह कूप जू।
बनादास सकल कला में सुठि कुसल है राम ऐसो नाम जाको औधपुर भूपजू॥६४॥

सवैया

खर खच्चर औ नर नाग चराचर देव दानव जहाँ लगि सिष्टी।
आतम एक लखै सब में अब धोखेहु आवति दिष्टि न बिष्टी॥
सुद्ध भयो अभिअन्तर उत्तम दूरि भई है निगाह न किष्टी।
दासबना दृढ़ भक्ति न प्रेम मलीन भई अति ताही ते दिष्टी॥६५॥

घनाक्षरी

अच्छर सो भिन्न मन बुद्धिहू न जानि सकै इन्द्री ग्राह जरहि तन पार कोउ पाये हैं।
सास्त्र औ पुरान बेद कहि याही ओर रहे उतकौन जानै आपु काहि को बताये हैं॥
बनादास कृपागुरु देव दिव्य दृष्टि होत दृढ उपदेस गहि नाम लवलाये हैं।
साधन अमित करि पचै मरै कोटि कोटि मेरे मत जानै जाहि आपही जनाये हैं॥६६॥

जो जो मन भावत सकल रघुनाथ दिये कहीं कहीं भूल को सँभारे भलो भाँति जू।
देहँ के निवाह हेत रोटी औ लँगोटी देत अपर प्रपंच नहि राखे जाति पाँति जू॥
कारन सकल काटि राखै निज चोर मन ताहि करि मुदित रहत दिन राति जू।
बनादास बासी उर तातै न कहत कछु स्वान करै चोरी खोरि स्वामी अवकाति जू॥६७॥

चाहना चवाइन को किये चर चूर भले कुर को निवारि सग रग मे लगाये हैं।
बाहर औ भीतर सँभार सब राह करि वाकी दिन जौन ताहि सोच न जनाये हैं।।
मान अपमान सब साहेब को मेरो नाहि आपु सो अभेद बोध कृपा कोर पाये हैं।
बनादास ताकर निबाह जो प्रसाद दिया सुमिरि सुमिरि उर मोद अधिकाये हैं।।६८।।

देहँ देखे दास जीव अस ईस मातनहै आत्मा अखड एक नही भेद ज्ञान जू।
साघु स्रुति सम्मत कहत सदग्रन्थ सब तहाँ तदाकार कौन धरै कासु ध्यान जू।।
बनादास बदत न बात पच्छपात यामे अन्त माहि पद सिद्धि होत निर्बान जू।
तहाँ बिनु गये सान्ति लहत न क्यो ही भाँति बहु मतबाद सन्त करत न कान जू।।६९।।

सवैया

जाहि उपासना को बल नाहि रहै केहि भाँति अकास मे जाई।
दाहत माया छनै छन पै पद कैसेहु नाहि तहाँ ठहराई।।
पाँव उठै नहि भूमिहि ते जेहि को बल भक्ति न होत सहाई।
दासबना मतमुख्य है मेरो मरे केतने मृग नीर को धाई।।७०।।

जल औ हिमि पाहन भिन्न नही मति खिन्न है जासु नही उर आवै।
रामकि सृष्टि अनन्त अहै करै जायकै जा कहुँ जो मन भावै।।
मैं कृतकृत्य कृपाल कृपा सपने नहि सोक सँदेह जनावै।
दासबना लहि पूरन बोघ उभै पद को प्रभु को कृत गावै।।७१।।

एक न मानत ब्रह्म सनातन कैसन बुद्धि भई तेहि केरी।
पाये नही गुरुदेव भले केहि भाँति लहै भवसिन्धु निबेरो।।
केवल राजकुमार जो जानत तो केहि ईस को होई है चेरो।
दासबना जे बिसारि है रामहि बारहि बार करै भवफेरी।।७२।।

घनाक्षरी

सकल देखाय औ कराय बेद नानाबिधि अन्त ब्रह्मबदत न और कछु सत्ति है।
अचल अखड एक चेतन न जौ लौ भाव तौ लौ स्रुति किंकर न पावै कथा गत्ति है।।
बनादास ब्रह्म बेद दूनौ को न मानै जौन समुझि परत उर मानौ तासे अत्ति है।
ईस्वर अनन्त वाकी लीला वाके जानै जोग आवै सबही के उर जाकी जैसी मत्ति है।।७३।।

महि अप तेज औ अकास वायु अस्थूल इन्द्री दस पच प्रान अन्तसकरन है।
सूछम सरीर पुनि ताहि को मुनीस कहै कारन है ईस इच्छा वासना सघन है।।
पुनि परमातम औ आतम बिराजै तहाँ सखा रूप तुल्य दोउ जानै कोउ जन है।
तन बृच्छ सुख फल भोगी जीव आतम सो ताही करि परि गयो महामोह बन है।।७४।।

सवैया

साच्छी सरूप सदा परमातम ताते स्वतंत्र अहै सुख रूपा।
जीव भयो बिषयाबस बावरो ताही ते नित्य पराभव कूपा॥
बेगि बिराग करै तनहूँ दिसि नित्य भजै हरिनाम अनूपा।
दासबना उपजै अति प्रीति कटै मल सर्ब मिलै सुख भूपा॥७५॥

होय प्रकास महा अभिअन्तर तत्त्व को भेद लहे तब प्रानी।
सम्यक् ज्ञान कृपाल कृपा करि तत्त्व अतत्त्व लखै भ्रम जानी॥
रोग समान तजै सब भोग नई नित प्रेम छुधा अधिकानी।
दासबना चहै नीचो सरीर रहे तब एको न चाह निसानी॥७६॥

घनाक्षरी

[illegible] कै बिनास होय कंचन समान सुद्ध ज्ञान औ बिराग अनुराग मल दहे हैं।
देह बुद्धि भिन्न रह्यो बासना को लेस नाहि तब फिरि आप कै समाय ब्रह्म रहे हैं॥
ताते परमातम औ आतम को भेद गयो याही भाँति स्रुति औ पुरान सन्त कहे हैं।
[illegible] देह पाय बिषय अति मीठ लगै कोटिन में कोई एक हरि मग गहे हैं॥७७॥

सवैया

[illegible] रहे निसिबासर भोग करै प्रारब्ध सरीरा।
[illegible] कौ बासना जाके नही सोई राम को रूप महामति धीरा।
इन्द्री अनुद्विन चित्त चलै परे बिघ्न अनेक गिनै नहि पीरा।
दासबना सोइ सन्त सिरोमनि जीवन मुक्त कहीं भव भीरा॥७८॥

घनाक्षरी

सुख दुख सम जानि त्यागै कोटि मध्य कोई राग द्वेषरहित अनूप तासु मति है।
[illegible] जीवन सकल एकराम जाके जागत सपन माँहि दूसरो न गति है॥
बिधि न निषेध जानै बद्ध मुक्त भ्रम मानै काहू सों न काम कछु बिरति बिरति है।
दासबना बहुभान आतम अराम करै मरै जियै कौन भान सुद्ध भयो अति है॥७९॥

कुंडलिया

इच्छा नहीं निवृत्ति की नहिं प्रवृत्ति से द्वेष।
रहिये रामै राम जब तबही सुद्ध बिसेस॥

तवही सुद्ध बिसेख दोऊ को नहिं अभिमानी।
आतम सब ते भिन्न प्रौढ कहि ऐसो ज्ञानी।।
बनादास मारे भले राग द्वेष पर मेख।
इच्छा नही प्रवृत्ति की नहिं प्रवृत्ति से देख।।८०।।

घनाक्षरी

आलस प्रमाद नीद अमित विषाद चित्तहिं सारत हीन पुरुषारथ मलीन जू।
हानि औ गलानि सोक मोह परद्रोह रत असुचि अदायावस आसपाय पीन जू।।
चोरी आदि पिसुन करम मे सरम नाहिं काम लोभ क्रोध नित बढत नवीनजू।
बनादास तमगुन वृत्ति यह जीवन कि अतिदुखरूप जानो तिहूँ माहिं हीन जू।।८१।।

पावक परत घृत त्यो ही त्यो सबल होत ताही भाँति काम भोग पर रुचि नई है।
तिहूँ पुर कामना भरी है भूरि मानस मे तृष्ना को तरग दिन दूनी अति भई है।।
अमित अरम्भ ताके सिद्धि हेत करै सदा जज्ञ तप बेद सेवा यन्त्र मत्र नई है।
बनादास वासना बिसाल कौन पार जाय उद्यम अतीव रजगुन दुख दई है।।८२।।

त्यागि कै निषेध बिधि गहत अनेक भाँति दिनराति पथ पर लोक मति पगी है।
तीरथ वरत तप जज्ञ नेम दान जोग हरि हित करत जगत रुचि पगी है।।
सौच पूजा पाठ औ अचार कै बिचार करै स्रवनादि नव हरि भक्ति उर जगी है।
बनादास स्रद्धा औ सील तोष धीरवान छमा दया दीनता सतोगुन सो रँगी है।।८३।।

ज्ञान औ बिराग परा प्रेमा मे निरत चित हित मानि अतिहि विज्ञान धाम किये हैं।
निज सुख मगन न जानै देसकाल कहाँ रहा दरकार नाहिं कछू एक हिये हैं।।
आस औ उपाय त्यागि बिधि औ निषेध भागि साधन न उरजागि आप साति लिये हैं।
बनादास गुनातीत जीवन मुकुत जग सन्त सरदार सोई सोभा राम दिये हैं।।८४।।

।। इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभजनोनाम दसमोऽध्याय.।।१०।।

सवैया

त्यागि तिहूँ गुन सान्त भयो जब है उपमान तिहूँ पुर माहीं।
भूत भविष्य वहा व्रत मान चहूँ जुग भान सो आवत नाहीं।।
सृष्टि प्रलै थिति को नहिं ज्ञान पुरान औ बेद बिहान सदाहीं।
दासबना खटको खटका गयो तुष्ट भयो निज आतम माहीं।।८५।

रंक से राव जो होत कोऊ जग जानत सो सुख और न कोई।
नाहीं अमात हिये बिच आनंद कौन प्रकार सकै तेहि गोई।।
भानु उदय निसि नासत सबहि भूरि प्रकास सबै कोउ जोई।
दासबना तेहि संत पहिचानत औ सुख मानत है उर सोई।।८६।।

घनाक्षरी

मृग उद्धरत मृग मिलन विचार करि महि को वराह खनै सब जग जान है।
उदधि अनन्त परिपूरन बिलोकि चन्द साधु तौ स्वच्छन्द पर सुख सुखीवान है।।
बनादास उर उतसाह न बन निज मेरे मत पसु विन पूंछि औ बिखान है।
जानकी के हेत लंक खाक किये कृपासिंधु समदृष्टि कहै स्रुतिसास्त्र औ पुरान है।।८७।।

समता अंग बहु कछुक प्रसंग कहौं सन्त जन भूपन सनातन प्रमान है।
सुख दुख हानि लाभ अस्तुति औ निंदा माहि रहै सम सदा पुनि मान अपमान है।।
राग द्वेष पाप पुन्य जीवन मरन माहि वृद्ध मुक्ति पुनि ऊँच नीचऊ समान है।
बनादास विधि कीट एकही निगाह जाके ताके उर भलीभांति समता अमान है।।८८।।

सत्त्व को विभाग करि छानै जड़ चेतन को त्यागि कै अनित्य नित्य ब्रह्म ताहि गहे हैं।
हिये में प्रकास अति वासना विनास भई साधन सकल त्यागि निष्कर्म रहे हैं।।
सरब असंग जोर अंग को न लेस जामें मानते बिगत गुन दोष नाहि कहे हैं।
बनादास राग द्वेष नाही अभ्यन्तर में ज्ञान को सरूप कही कोऊ एक लहे हैं।।८९।।

तत्त्व औ तत्त्व जानि वृद्ध मुक्त भ्रम मानि ब्रह्म माहि ठहरानि लीन सबकालजू।
कोऊ तन सेवा करै भोजन बसन धरै आरती औ धूप स्रुति रीति प्रतिपालजू।।
कोऊ ताहि छीन लेत तनहू को दुःख देत लेत कछु मानि नाहि जैसे बुद्धि बालजू।
सुरभी सुपच स्वान ब्राह्मन समान सदा पापी पुन्य भेद न बिज्ञान में बहाल जू।।९०।।

तीनि गुन त्याग तृन सम सिद्ध अनिमादिक चाही कछु जाहि न त्रिलोक सुख फीके हैं।
भास त्रास तृष्ना नाहि सपन दिखाई देत लेत सुख मानि अति निर्जन मनि के हैं।।
सास्त्र औ पुरान बेद मानो सुधि भये खेदमान औ बड़ाई ताहि जारन से जोके हैं।
बनादास जाके तनहूँ में अनुराग नाहि सोई है बिराग राग रहित जोहिके हैं।।९१।।

कीर्तन स्रवन सुमिरन पद सेवा दास्य अर्चन औ बन्दन सखत्तु सो कहाये है।
करम बचन मन आतम निवेदन भो नवधा भगति को पुरान स्रुति गाये हैं।।
साधन सकल सिर मारै प्रेम लच्छना है बनादास कृपा को प्रसाद कोऊ पाये है।
पुनि पराकही जीव ईस को अभेद बोध जनम मरन जाते बेग ही नसाये हैं।।९२।।

जम औ नियम दृढ आसन सो प्रत्याहार प्रानायाम औ ध्यान धारना कहतु है।
साधन औ सात अग अठयें समाधि कही सतोगुन मारग निवृति सो गहतु है।।
रामनाम मे प्रतीति प्रति जाके हिये दृढ कर्मबचन मन कछु न चहतु है।
बनादास एकै साधे सिद्धि सारी हाथ आवै काहे को थहावै सिंधु सहज लहतु है।।९३।।

स्रवन मनन औ निघ्यासन सो तदाकार चारि विधि मानत बेदान्त वाले लोग है।
सहित समाधि जम नियमादि कहे जौन जानत सुजान वह आठ अग जाग है।।
चाचरी औ भूचरी औ खेचरी अगोचरी है उनमुनी सहित सास्त्र आदिक नियाग है।
बनादास मुद्रा पाँच साधन कहाँ लै कहे रामनाम ही मे देखा सबहिक भोग है।।९४।।

नाम के सहित और साधन मे सिद्धि लहै ताके तेज पुनि हानि मुरि म करतु है।
नाम के प्रसाद करि सगुन सरूप लहै राम नाम के प्रसाद ब्रह्म मे चरतु है।।
नाम के प्रसाद रिद्धि सिद्धिउ अनेक सबै नाम के प्रसाद दुख दारिद दरतु है।
बनादास नाम के प्रसाद लहै चारि फल छल सारी कामना सो बन्धन करतु है।।९५।।

साधन अपर अहै बिघन सहित सारे कलि मे बिसपि करि फोकट फरनि है।
कोटिन बिघन को दबाइ देत राम नाम स्रुति औ पुरान बदै तारन तरनि है।।
सारो काज एक राम नामही ते पूर परै रच्छा पितु मातु सम नित ही करन है।
बनादास मेरे छठी माहिं और परो नाहिं काहे ताहि छोडि होत और के सरन है।।९६।।

छप्पय

बसै अयोध्या धाम कहीं नहिं आना जाना।
एक राम की आस और नहिं जान जहाना।।
कबहुँ ब्रह्मरस मत्त कबहुँ कृत सर्गुन ध्यानै।
कबहुँ नाम असमरन कबहुँ बर लीला गानै।।
याते अपर मुकाम नहि निज सम्मत साँचो अहै।
कह बनादास प्रभु निज दिसा देहि जाहि सो निर्बहै।।९७।

बडे मर्द को काम कोटि मद्धे कोउ पावै।
दाँत पसीना होय सहज नहिं जगत नसावै।।
भजै दाम औ चाम विषय इन्द्री अनुरागी।
छिनहुँ न छुट्टी मिलै प्रीति प्रभु से किमि लागी।।
कृत निन्दक पापी बडे निज आतम घातहि कर्यो।
कह बनादास पटतर कवन।मानहुँ जनमत ही मर्यो।।९८।।

उदर भरन को ज्ञान जीव सारे जग जाना।
विषय करन में कुसल हारि काहू नहिं माना।।
सोई नर तन पाय किये अतिहो लबलाई।
नाखे कृत रघुबीर भई फिरि कवनि बड़ाई।।
करम बचन मन भजन करि निज आतम तारे नहीं।
कह बनादास नर खाल है उनसे पसु नोके सही।।९९।।

खोवें आपन काज सन्त स्तुति दूषन देही।
ताको दूषन यही बिसारै राम सनेही।।
हरि बिमुखी में हिये कोऊ सुख मानन नाही।
कसो कुसासे रहै ठौर नहि नरकहु माही।।
सब जग तातो तरनि से तन मन तेहि बैरी भयो।
कह बनादास जायो मृषा जे रहि कस नहिं जरि गयो।।१००।।

लोक काज मे कुसल करहि पुरुषारथ नाना।
त्रिया तनय तन लागि राति दिन मनहुँ दिवाना।।
धाम धरनि धन हेत परम प्रिय प्रान गँवावें।
करै बिबिध ब्यवहार तनिक अवकास न पावें।।
भजन हेत जो कोउ कहै कह मेरा काबू कहाँ।
कह बनादास नहि भाग्य मम होवें तब जब हरि चहा।।१।।

खंडै बेद पुरान सन्त गुरु बचन न मानै।
तिय के भये गुलाम कहै हम सब कछु जानै।।
ब्रह्म ज्ञान अति कथै वथै अवरेन को सोसा।
करनी हेरे नाहि बचन ते बहुती नीसा।।
मुख देखे पातक लगै कलि अस मनुष निकाय।
कह बनादास मानहुँ करत जुग की अधिक सहाय।।२।।

देखे अपनो काज तोहि का परो पराई।
रामकाम हित कहत रीति सब दिन चलि आई।।
कहनेवाले बिना बात बिगरै बहुतेरी।
सुनि सुनि लाखों लोग काटि गे मोह अँधेरी।।
उर प्रेरक मापै सकल और कहन को जोग है।
अपनै बोझा नहि चलै को लादे पररोग है।।३।।

सर्बो ब्रह्म सरूप स्त्रुति भाषत गोहराई।
बासुदेव मय लखत सन्त सब दिन चलि आई।।
ताही पर दृढ चही कहावै सो सब कहिये।
सेवक आछत काज करै मालिक किमि सहिये।।
देह धरे ते जानिये सोभा ऐसो भाव है।
कह बनादास बिन एकता जगत पार किमि पाव है।।४।।

पंच तत्त्व अस्थूल देह इन्द्री औ प्राना।
मन बुधि चित हकार बहुरि सूरति परमाना।।
इन्द्री सुरन मिलाय करै नाना बिधि कर्मा।
पच विषय बर जोर सबै को जानत मर्मा।।
आतम सब से बिलग है कुम्भ गगन सम मानिये।
कह बनादास नहिं लिप्त कहुँ पदुम पत्र जल जानिये।।५।

घनाक्षरी

आपु डुबे गोपद मे सिखा नहिं देखि परै जग उपदेस करि करै भव पारजू।
रोम रोम रोगी पुनि औरन के रोग हेरै महामूढ काम करै पडित प्रचारजू।।
हिये कोटि कामना न पूर होन जोग कोई औरन को चारि फल सिद्धि देन हारजू।
बनादास बात बिपरीत यह देखि देखि कहे कछु बनत न कैसे जग कारजू।।६।।

सद्यहो परम हँस होत भेष माहँ आय साधन को काम नाहि सबै सिद्धि जोग है।
बूझे पै न आवै बात नित हो सुखावै गात करै उत्पात बहु याही तप जोग है।।
रोटिन के हेत नित धावैं दस पाँच कोस तबौं सिद्ध मानै उर ऐसन कुरोग है।
बनादास बेद औ पुरान सन्तबानी बदै कोटिन मे कोई काटै माया मोह सोग है।।७।।

देवी देव दैत्य भवानी भूत भजै कोऊ मन्त्र जन्त्र तन्त्र माहि कोऊ मन लाये है।
कोऊ रिद्धि सिद्धि हेत अमित उपाय करै कोमि याके हेत कोऊ मन ललचाये हैं।।
कोऊ तप तीरथ बरत जज्ञ जोग करै कोऊ पचि पढ़ै विद्या जाते धन पाये हैं।
बनादास मेरे मत नाम छोडि और गति कलि कोपि उर मे उपाधि को मचाये हैं।।८।।

कुडलिया

निगुरा औ गुरु लखि परै चेला को नहिं लेस।
निज निज मन को सब चलै कहन मात्र उपदेस।।

कहन मात्र उपदेस भली बिधि कीन्ह बिचारा।
लीन्ह चहै फल चारि बूड़ ताते मझधारा॥
बनादास कारज कहाँ पावै अमित कलेस।
निगुरा औ गुरु लखि परै चेला को नहि लेस॥९॥

गुरु हित जो अर्पन करै निज धन औ मनसीस।
सुठि स्रद्धा अनुराग जुत चेला बिस्वाबीस॥
चेला बिस्वाबीस उसी की पूरि कमाई।
लोक माहँ रह सुखी होय परलोक सफाई॥
बनादास बदला कहा गुरू देत है ईस।
गुरहित जो अर्पन करै तन मन धन औ सीस॥१०॥

जो अपनी करनी कहौं बाढ़ै कथा अपार।
प्रभु अन्तर्जामी अहै है सब को सरदार॥
है सबको सरदार सराहै सारद सेखा।
बेदौ पार न लहै करौं मैं केहि बिधि लेखा॥
बनादास कटि है सही रामै सिरजन हार।
जो अपनी करनी कहौं बाढ़ै कथा अपार॥११॥

रेखता

बिना गुरु देव जग भूला सुना यह बात साँची है।
नही दुख कोटि बिधि जावै भरमि भव नाच नाची है॥
मिला मुरसिद जिन्हैं पूरा रोग बहु जन्म को खोया।
टिकाया तत्त्व में ताको नही संसार फिरि बोया॥
कहै स्रुति बात बहु तेरी सबै भरमाय डारा है।
नही बिवेक उर आवै लहै कैसे किनारा है॥
बिना सत्संग में आये बोध केहि भाँति पावैगा।
करम के जाल अरु झाना जोनि बहु जाय आवैगा॥
भागि अति भूरि ताही की पिया हरि नाम की घूटी।
छके बसुयाम सुख सोवै नही कलि काल ने लूटी॥
बना बहु रोग भारी था सरन रघुनाथ के आये।
गया जरि भूरि से सारा एक हरिनाम लौ लाये॥१२॥

गरूरी त्यागि दे मन से सहज सुख सेज सोवैगा।
नहीं यह दाग जो छूटा अन्त धुनि सीस रोवैगा॥

गरीबी साधु की सोभा अह बिष बेलि क्यो बोवै।
किया सौदा सफय्यत का मूरि भी आनि कै खोवै॥
लाभ औ हानि नहिं सूझै राम का नाम बिसराया।
परा तिनही के फिरि फन्दे जिन्होंने लूटि जग खाया॥
बुद्धि इन्द्री औ मन मारै बासना आस कै दूरी।
बना आलम सो यारो का फकीरी जानु है पूरी॥१३॥

पिया जिन प्रेम का प्याला। छका बसुयाम मतवाला।
चढी चसमी खुमारी है। नही मिलती सुमारी है।
पहिरि खिरका सबूरी का। दिलासा है मजूरी का।
नई नित रोज रोजी है। किसी ने द्वार खोजी है॥
दूसरा द्वार नहिं ऐसा। जानि है जाय सो पैसा।
मिलै टुकरा अचाही का। बना फुकरा निबाही का॥१४॥

होय गुरु ज्ञान को मोटा। लगै तिहुँ लोक तब छोटा।
लहा सतोष धन भारी। गई मिटि मोह अँधियारी॥
भई गो गन सदा राजी। बड़े बट पार हैं पाजी।
दोहाई नाम की फिरती। पलटि गै ताहि ते बिरती॥
महल मे मौज हरदम है। दिनौ दिन परत खल कम है।
बना बिगरी सुधारै को। बिना हरिनाम तारै को॥१५॥

भरा चैतन्य का पारा नही कछु वार पारा है।
चढा हरिनाम का चस्मां कहां पल एक न्यारा है॥
नही मन बुद्धि मे आवै दिनौदिन इस्क भारी है।
सयाने सन्त कोउ जानै लखै कैसे अनारी है॥
चित्त विस्तार जब टूटा सुखी दिन और राती है।
बिना यक दृष्टि के आये जरै मरि जन्म छाती है॥
बना यह भेद कोउ जानै द्वैत भव मूल नीके हैं।
लहा निज रूप जब साँचा सबै सुख ताहि फीके हैं॥
लगै हरिनाम से चिस्का नही फिरि और सूझैगा।
बिरह उर आगि जब जागै जियत हो बेगि जूझैगा॥
जबै मासूक उर आवै महा आनन्द कूजा है।
दसा फिरि कौन बिधि ताकी मनहुँ जारे पै मूजा है॥
तृप्त निसि दिवस नहिं मानै लहै कामिनी नवीनी है।
महा बिषयी न ज्यो तुष्टै प्रीति की पैढ झीनी है॥

जबै मासूक आसिक है वहा कछु नाहि जावैगा।
बना निज भूलि कै बैठा वही वह फेरि गावैगा ॥१६॥

छप्पय

निराकार यक वृच्छ आदि मधि नहिं अवसाना।
तामें अमित अकार पात औ सुमन समाना॥
सुमन पात नित होत गोत खावै तेहि माही।
पहिचानैं तरु नाहि पात पुनि फूल बिलाही॥
नही कुम्हारे को लखत हँडिया गगरी फँसि गये।
बढ़ई की पहिचान नहिं जड़ पुतरी मन बसि गये॥१७॥

विना तजे ना वस्त्व सत्व कैसे लखि पावै।
नाना साधन करै वाकि पुहुपित वहि जावै॥
बाल बुद्धि के हेत कहै स्तुति पुहपित बचना।
नट संगीनहि भ्रमैं देखि बाजीगर रचना॥
स्वर्गादिक दिखराय फल नाना लोभ बढ़ावतो।
विविध कर्म करवाय कै ज्ञान माहि ठहरावतो॥१८॥

स्तुति आसै नहिं लखै फँसत सठ कर्मन माहीं।
गयो जबै बढ़ि असत ताहि करि नरक न जाहीं॥
अति सूछम गति धर्म कर्म ते विकर्म होई।
जेहि लालच लगि किये सोई फल डारै खोई॥
ताते बुधि तजि कर्म को राम नाम लव लावते।
कह बनादास तन के अच्छत आवागमन नसावते॥१६॥

वोध सुराई धीर छमा अरु दया दृढ़ावै।
अवगुन सारो नासि सील गुन अमित बढ़ावै॥
नाम ते वृद्धि विराग नाम ते बढ़ अनुरागा।
राम ते जागै ज्ञान जाहि करि ब्रह्म विभागा॥
नामै ते बिज्ञान है पराभक्ति पावन परम।
कह बनादास सुठि सांति लहु जामें रहै न कछु सरम॥२०॥

प्रथम हुकुम स्तुति सीस करै विधि त्यागि निपेदा।
निसिदिन स्रद्धा बढ़ै धर्म जो भाषत बेदा॥

आई जब उर बूझ भयो जग रस बैरागा।
प्रिय लागी हरिकथा राम पद दृढ़ अनुरागा।।
बिधि निषेद नसि जात तब झरत समय तरु पात जिमि।
कह बनादास अवसर बिना तरु पाता टूटि है किमि ।।२१।।

पायो सहज सरूप बोध दृढ़ निस्चय आयो।
आस बासना नाम सहज भवसिन्धु सुखायो।।
तृन सम त्यागै बेद स्तुती आपै गोहरावै।
पदरज से तजि मोहि नेक सकोच न लावै।।
मस्त रहै नित ब्रह्म सुख कहाँ देस अरु काल है।
कह निसिदिन कह दिसि बिदिस जब रस एक बहाल है।।२२।।

मन से सब जग भरा पाय अवसर प्रगटावै।
स्वर्ग नरक चर अचर अनेकन जोनिन जावै।।
जिमि बरषा रितु पाय जीव महि सकुल होही।
लोकहु बेद प्रसिद्ध सरद रितु नासत वोही।।
तिमि रघुपति की भक्ति जब हृदय आय प्रगटत भई।
सब प्रपंच जरि जाय तब जब अनुभव उर सरसई।।२३।।

जथा सरद रितु पाय गगन अति निर्मल होई।
नही गरद को लेस कही घन लखत न कोई।।
यहि बिधि मानस अमल कहा कछु जावै नाही।
ज्ञान और बिज्ञान भये सगम यक माही।।
तुरिया ताही को कहत भई एक रस वृत्ति जब।
कह बनादास कासो कहै हेरे मिलत न जगत अब।।२४।।

भई अद्वैत बुद्धि परा सो नाम कहावै।
रहिगो ब्रह्म ब्रह्म कहाँ सो दुतिया आवै।।
नही जगत नहि आपु चराचर रहा न कोई।
नही स्वर्ग नहि नर्क एक आतम सब जोई।।
भून्यो भव को बीज तब जब ऐसी आई दसा।
कह बनादास जीवन मुकुत को बन्दत कह को हँसा।।२५।।

।।इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
ज्ञानखण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम एकादसोऽध्याय।। ११।।

सतजुग जोगी सबै प्रान ब्रह्मांड चढ़ावैं।
नाना संकट सहै ताहि करि सुभ गति पावै ॥
त्रेता में कृत जज्ञ दाम लागे अति भारी।
द्वापर पूजा रह्यो प्रेम स्रद्धा अधिकारी ॥
धन्य धन्य कलिकाल जुग एक नाम ते मुक्ति है।
कह बनादास लघु काल मे त्यागि और सब्र जुक्ति है ॥२६॥

सतजुग त्रेता माहि और द्वापर के प्रानी।
चहैं जन्म कलिकाल अतिहि निज मुखन बखानी ॥
जाते थोरै काल माहि भवनिधि तरि जावैं।
और न कछु कर्तव्य रामनामहि लवलावैं ॥
साधन उन जुग के कठिन सिद्ध होत चिरकाल महि।
तब स्रद्धा सबके हिये अब रुचि कम लखि परत कहि ॥२७॥

पूर्व कमाई विना काज कछु पूर न होई।
राखी में नहि आगि कहाँ ते लावैं कोई ॥
बेनु वृच्छ जरि जाय आपु से अनल प्रकासै।
कोउ न फूकनहार सहज में जरिवरि नासै ॥
घर घर चेला होत बहु काज कोहू को नहि सरै।
सत्संगहि दिन बीति गे बहु तन नहि कछु लखि परै ॥२८॥

सतिहि सत्त को देइ आपु ते परगट होई।
को उपदेसैं सूर खेत चढ़ि जूझै सोई ॥
मिरगा सीस विखान ऐंठि कै कौन जमायो।
एक स्वाति जल पियैं कौन चातक समुझायो ॥
मीन बिलग जल ते भई प्रान तजै ताही छनै।
जीव देत मृग बीन हित काह कहे समुझे बनै ॥२९॥

आसिक चन्द्र चकोर मोर बारिद से प्रीती।
कमल खिलै रवि पेखि पलटि जारै यह नीती ॥
चुम्बक लोहा मिलै लपटि सब कोऊ जानै।
देखत परै पतंग दीप तबही मन मानै ॥
इन सबके आचार्य को परम्परा आवत चली।
लोक बेद मे बिसद जस समुझै कैसी सुख गली ॥३०॥

को उपदेसैं कृपिन उदारहि को सुख दीन्हा।
दोऊ प्रबल निज ओर राम गति परै न चीन्हा ॥

त्याग समय जब आय के चुरी तब अहि त्यागै।
मनि बिछुरत तन तजै कौन गुरु स्रवनन लागै॥
गुरु उपदेसै नित्य सिषहि करते विपुल न कान है।
पाये दुर्लभ मनु जतन सुनते बेद पुरान है॥३१॥

ब्रज जुवती हरि पगी लगी काके उपदेसा।
लोक बेद मर्जाद रही नहि ता कहुँ लेसा॥
स्रुतिपुरान जस गाव भाव सो कोउ न पावा।
भईं सकल हरि रूप आपु को तिन्ह बिसरावा॥
प्रीति आपु ते होत है बहु जन्मन की लगन है।
कह बनादास जानै कोऊ समुझे ते मन मगन है॥३२॥

ऐसहि ज्ञान बिराग एक तन साधन नाही।
बहु जन्मन मे प्रौढ सन्त समुझत मन माही॥
अतिसय प्रबल प्रताप जगत को सद्य नसावै।
किमि एक तन मे होय जन्म कोटिन रुज जावै॥
परम्परा है नहि नई ईस जीव नाता प्रबल।
कह बनादास जड पाल ते अति अभाग होती अबल॥३३॥

विषय लागि उपदेस कौन सब जीवन करई।
जन्म अमित अभ्यास आपु ते पचि पचि मरई॥
राम हेत उपदेस करन को कारज कौन है।
लगत स्वतह नहि जीव बडो आचरज तौन है॥
बहु प्रकार सिच्छा करव अतिहि मलिन के हेत है।
कह बनादास मेरे समुझ यह तौ आपु सचेत है॥३४॥

ईस अस चैतन्य सुद्ध सहजै सुख रासी।
अमल अनीह अनूप प्रभुहि प्रिय पुनि अविनासी॥
ताके हित उपदेस बँधा सबदिन मर्जादा।
ताहू पर नहि लगा कौन पुनि तामे स्वादा॥
निन्दत अति दोउ ओर ते लोक वेदहू अज सघन।
कृत निन्दक अतिहो भयो नर तन दीन्हेउ विषय मन॥३५॥

तन मन धन दै देइ भूलि कामना न भाखै।
जो वह चाहै प्रान तनिक नहि तन में राखै॥

आवै कोटिन विघ्न हृदय उत्साह सदाई।
कोटि आपदा परै सहै सो हर्ष न जाई॥
तृप्त लहै कोउ काल नहिं जासे लागी प्रीति है।
स्वर्ग नर्क अपवर्ग क्या यही प्रीति की रीति है॥३६॥

मैं हों मेरा यार द्वार दूसर नहिं जानै।
एकै आस भरोस भूलि कोउ और न मानै॥
छन छन लागै छाक वाक मुख बोलि न आवै।
अभ्यन्तर आनन्द थाह कोऊ कैसे पावै॥
पल पल पर कुर्बान है बिना वितै हरदम बिकै।
कह बनादास तन धरे को स्वाद लहै यहि मग टिकै॥३७॥

ज्ञान और वैराग्य परे सब परबस पाछे।
ता दिन की दरकार बुरा नहिं जानै आछे॥
कहाँ दिवस निसि जाय देस का काल कहावै।
कहाँ लोक औ बेद ताहि कछु भूलि न भावै॥
लगी लगन ऐसी ललकि पलक नहीं कल लेत है।
जैसे सूरा आय कै मुरत नही रन खेत है॥३८॥

जैसे जल से मीन फनिक मनि हीन न जीवै।
जिमि चातक की टेक आन जल भूलि न पीवै॥
लखै चकोरी चन्द मृगी ज्यों बीन लुभानो।
दीपक परै पतंग हृदय अति आनन्द मानो॥
लागी जब ऐसी लगन मगन भाल अति भाग है।
कह बनादास ऐसा नहीं आसिक कुल में दाग है॥३९॥

लोभिहि जिमि धन लगै गरीबहि घाम सीत को।
कामिहि नारि नवीन तथा आनन्द मीत को॥
जय पावै रनसूर मूक मुख बानी आई।
रोगी जीवनि मूरि पाय जिमि मोद बढ़ाई।
नाम रूप रघुनाथ के ऐसा आनन्द नहिं हिये।
लानति है वह आसि की मनहुँ भाँड़ को स्वाँग किये॥४०॥

निज बस किये न पीय तीय पतिव्रता कहावै।
स्वाद लहे फिरि कौन फकीरी फीकी आवै॥

अपनो दै सर्वाङ्ग तासु सर्वस नहिं लीन्हा।
गनती वाकी कौनि प्रीति की रीति न चीन्हा॥
रामहिं कीन्हे जीव नहिं आपु ब्रह्म नाही भयो।
कह बनादास हमरे मते वाहियात मे दिन गयो॥४१॥

टूटै सोई हृदय द्रवै नहिं हरि हित लागी।
फूटै सोई नैन धार जल की नहिं जागी॥
रोम रोम जरि जाय पुलक जो तन नहिं होई।
सो रसना सरि गिरै राम सुमिरै नहिं जोई॥
स्रवन पियावै सीस तेहि रघुपति जस नाही सुनै।
मन बुधि भूजै भार मे प्रभुहि छोडि दूसर गुनै॥४२॥

कोऊ कहै बैकुंठ कोऊ गोलोक गनावै।
स्वेत द्वीप कोउ कहै छीर निधि कोउ ठहरावै॥
मुख्य मुख्य हरिधाम पुरानन बहु बिधि गाये।
तहां वास के हेत कौन नहिं मन ललचाये॥
बनादास मेरे मते अवध छोडि दूसर नहीं।
जहँवां पूजी आस सब चाह दूसरो नहिं रही॥४३॥

कोउ कासी कोउ प्राग कोउ कुरुछेत्रहिं जावैं।
कोउ मथुरा हरद्वार कोऊ पुष्कर को धावैं॥
कोउ बद्री केदार द्वारिका कोऊ जाई।
जगन्नाथ रामनाथ नीमषारहिं लवलाई॥
मुक्तनाथ कोउ जाय कै पृथ्वी प्रदछिन कोउ करै।
कह बनादास सेवै अवध सकल कामना जरि मरै॥४४॥

कासी मरनामुक्ति पुरानो औ स्रुति गावैं।
भैरो पेरैं कोन्हू पाप तब छुट्टी पावैं॥
पहिले भारी दड भोगि तब पावै मुक्ती।
बिन पेरे नहिं बचै करै जो कोटिन जुक्ती॥
दृढ होइ कै सेवैं अवध पावैं जीवन मुक्ति सो।
कह बनादास नामहिं रटै त्यागि अनेकन जुक्ति सो॥४५॥

बड भागी को काम सहज नहिं होय प्रतीती।
हृदय बिराजै राम लगै तब अवध मे प्रीती॥

अनेकों जीव का भोजन सरैया खाक होती है।
रहै चैतन्य जबताई बरै परकास जोती है॥
आपु को भूलिकै बैठा देह करि सांचु है माना।
परादिन राति तेहि फन्दे किसी ने भेद है जाना॥
किया तिस्कार दिल भीतर परी अनयास जोती है।
रहै नित रूप अपने मे यही सब भाँति नीती है॥
लखै वह सील औ चाली विनय बित कौन बिकि जावै।
भरी रग रोम सारे म तवौ मन खूब ललचावै॥
किसी की ओर मति देखै नही कहि रहि रेखा है।
यक झूठि तो सब झूटी बना हिय नैन पेखा है॥५०॥

दण्डक

सर्व उर वास नहि और परकास अज्ञान निसि नास आनन्द भारी।
जरत वहु सलभ सकुल मनोरथ मृषा जबहि विज्ञान का दीप बारी॥
आस तृष्णा तमी चर तरुन पेखि रवि दुरत उलूक से बिन प्रयासा।
काम मद क्रोध लोभादि दानव दबे बिनहि परिस्रम निसि मोह नासा॥
कपट पाखड दुर्जन न कहुँ लखि परै ज्ञान बिज्ञान पकज विकासे।
मान मत्सर दर्प सकल दुर्वासना कुमुद कायर सर्व विधि विनासे॥
सोक सका विपिन निविड हित घूम ध्वज पाप नागेन्द्र मृगराज भारी।
हानि गिल्लानि अहि बिहग नायक प्रबल तरुन चिन्ता तिमिर हित तमारी॥
राग द्वेषादि मूषक मारजार हरि असुभ सुभ कर्म पकज तुषारं।
सतहित काम तरु सदा करुनायतन हरत सर्वाङ्ग भव भूरि भारं॥५१॥

सिद्धजोगेन्द्र विधि सम्भु सेवित चरन हरन अज्ञान बिज्ञान धाम।
सील सामुद्रमति छुद्र आये सरन किये तेहि साधु छबि कोटि काम॥
प्रबल भुजदड निधि विपुल डूबे दनुज बेद विद्या बिहित धर्मसीला।
सेष सनकादि सुक नारदादिक थे सारदहु पार नहि बृहद् लीला॥
दीन गाहक साखि कपि बिभीषन सेवरी गीध आदिक परम धाम पाये।
भक्त वत्सल धनिक पवनसुत रिनो प्रभु जान सुरपति सुवन बल निकाये॥
नेति रति निपुन साखीजतो स्वानगति सूद्र हति बिप्र बालक जिआये।
पच्छ पालक सकल अवध बासी तरे कीट पर्यंत सगहि सिधाये॥
कोय गति त्रिसिर खर रावनादिक लखे प्रीति पहिचान सिय हेत गाये।
धर्मपितु वाक्य रत राज तजि गवन बन पतित पावन बनादास भाये॥५२॥

पद्म अंकुस गदा चक्र पद रेख वर ध्वजा आदिक सुभग ठांव भ्राजे।
नखन द्युति कमल दल मनहुँ मोती खिली अरुन बर कांति अरबिन्द लाजे॥
स्यामपद पृष्ठ सो नील पाथोज द्युति काम को भाय जुग जानु पीनी।
सिंहकटि पीतपट अरुन जामा लसत कोर किंजल्क दिन प्रति नवीनी॥
नाभि गंभीर त्रिबली मनोहर उदर बृहद उरबाहु भूषन घनेरे।
कनक केयूर कंकन करज मुद्रिका कांति सकुचाति सुठि कमल केरे॥
मुक्तमाला लसी घसी जनु सुरसरी सिखर मरकत लखत मनन सीला।
स्याम घनद्युति लजित गात अति कांति वर कम्बुकल ग्रीव सुठि कंध पीला॥
सरद ससि वदन मृदु बरन मकंत कलित चिबुक रद अधर नासा निकाई।
बंक अवलोक्य धनु काम भ्रू निन्द कृत भाल सुविसाल बरतिलक छाई॥
स्याम धन बीच जुग रेख जनु तड़ित द्युति अल्प रहि अचल कवि कौन गावै।
कनक कुंडल लोल मोल बिन मन बिकै मीन आकार उर अतिहि भावै॥
असित कुंचित अलक अवलि अलि लाजती अहि निके बाल जनु लर्पाट लटके।
छुघित अति क्रसित जानै सोई लखे जिन बार बहु दिवस निसि हिये खटके॥
मुकुट सिरराज रवि बाल द्युति कनकमय जटित मनि विपुल सुठि भूरि सोभा।
नाम दिसि जानकी सिंधु छबि अगमगति ध्यान कल्यान भाजन न कोभा॥
मनहुँ तामाल तरु निकट बेली कनक अंग प्रतिकोटि रीत काम लाजै।
बनादास बल ताहि नहिं डरत जमकालहूँ मालका करम निति अभय गाजै॥५३॥

मीन वाराह वपु कूर्म नरहरि भये परसुधर प्रबल वावन कृपालं।
भानुकुल कमल रवि राम अवतार वर बौद्ध घन ज्ञान वसुदेव लालं॥
बहुरि कल्की नास हेतु कल्मष सकल प्रबिस कृत सत्व जुग पुन्य रासी।
चतुर्भुज विष्नु वैकुंठ नायक बृहद सेस पर्यंक छीराब्धिवासी॥
बास बद्रिकास्रम बन्धुजुत तप निरत जक्त कल्यानहित निगम गाये।
ईस अवतार भूभार के हरन हित अमित कहि सेस नहिं पार पाये॥
ब्रह्मव्यापक विरुज अचल उत्कृष्ट अज अलख निर्वान घन ज्ञान रासी।
अकल कैवल्य परधाम प्रद वेद बद सच्चिदानन्द उर सकल बासी॥
पुरुष पुनि प्रकृति महतत्त्व सूत्रादि जे पृथ्वी अप तेज नभ अनिल गाये।
इन्द्रियाँ चारि पट देवता के बिपुल पंच विषयादि को पार पाये॥
प्रान पुनि पंच अन्तष्करन चारि जे एक चैतन्य लख ब्रह्मवादी।
बनादास यह दृष्ट तव इष्ट सिद्धि मानिये न तरु भरमत जगत जिउ अनादी॥५४॥

॥ इतिश्रीमद्राम चरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम द्वादसोऽध्यायः॥१२॥

कुण्डलिया

बँधुवा बाँधै छूट को बनै बिचारे बात।
वाके पग बेरी परी वह स्वतन्त्र अति गात॥
वह स्वतन्त्र अति गात कौन बल बाँधै ताही।
छूट पाँव दै देइ बँधा फिरि ससय नाही॥
यक यक पग बेरी यकै ऐंचि ऐंचि अकुलात।
बँधुवा बाँधै छूट को बनै बिचारे बात॥५५॥

जब लगि बरत मसाल है दुख सुख भी बिलगाय।
परा अँधेरा भवन जब चार मूसि लै जाय॥
चोर मूसि लै जाय भई तब कौन सयानी।
आये छब्बे बनै भई चौबे म हानी॥
छब्बे की इच्छा करै सो दूबे ह्वै जाय।
जब लगि बरत मसाल है दुख सुख भी बिलगाय॥५६॥

एक से जो दूजा भया तहँवाँ लगि बनि जाय।
दूजा से तीजा भया ईजा होय बनाय॥
ईजा होय बनाय फायदा कौन बिचारा।
मान बड़ाई चाह परै काहे न मँझधारा॥
जबही सुख इच्छा करै तबही दुख अधिकाय।
एक से जो दूजा भया तहँवाँ लगि बनि जाय॥५७॥

आपु दुखाय नही कबहूँ और न पावै दुक्ख।
तबै साधुता सुक्ख है लखै राम का रुक्ख॥
लखै राम का रुक्ख मुक्ख फिरि कौन देखै है।
किये एक से प्रीति दूसरा कहाँ समै है॥
पैरै कोल्हू नाय कै तजै स्वभावन उक्ख।
आपु दुखाय नही कबहूँ और न पावै दुख॥५८॥

भूले केवल राम को और करै सबकार।
विषयमाहि पचि पचि मरै तेहि युग बारहि बार॥
तेहि युग बारहि बार हजारो लाख करोरी।
अर्बुद लानति लगी पदुम लै सिर पर खोरी॥
बनादास करि कै कौल बदलि गये बिबिचार।
भूले केवल राम को और करै सबकार॥५९॥

ऐसे हित पै चित नही कित धारे नर देह।
कृत भूले भगवान को भरमि नारि सुत गेह॥
भरमि नारि सुत गेह छनक में राख कि ढेरी।
जग में जौलै जियें गई नहि मेरी मेरी॥
निज आतम तारे नही नित देखे परदेह।
ऐसे हित पर चित नही कित धारे नरदेह॥६०॥

विष सम विषय चबात हैं त्यागि सुधा हरिनाम।
स्वारथ परमारथ सधैं लगै न कौड़ी दाम॥
लगै न कौड़ी दाम वाम विधि जानहुँ नीके।
करम बचन मन लाय नही विन दामहि बीके॥
औसर चूके नहि बनै होत चहत है साम।
विष सम विषय चबात हैं त्यागि सुधा हरिनाम॥६१॥

नर तन पाये केर फल कीजै पर उपकार।
करम बचन मन लायके दया दान सत्कार॥
दया दान सत्कार बरत तीरथ को ध्यावै।
करै जज्ञ जपजोग पाठ पूजा मन लावै॥
सुर गुरु सेवा साधु को और गरीब उबार।
नर तन पाये केर फल कीजै पर उपकार॥६२॥

सत्य बचन पापै डरै दुःख न काहुहि देय।
करम बचन मन लाय कै परमारथ मग लेय॥
परमारथ मग लेय देह निज सम पर देही।
त्यागै सदा निषेध गहै बिधि ह्वै निरवेही॥
सुकृत को संचय करै सकल धर्म तप सेय।
सत्य बचन पापै डरै दुक्ख न काहुहि देय॥६३॥

पर धन पर तिय परिहरै करै न इर्षा क्रोध।
चोरी आदिक पिसुनता राखै चित्त निरोध॥
राखै चित्त निरोध भूलि निंदा नहि करई।
मद मत्सर अभिमान लोभ आदिक परिहरई॥
दम्भ कपट पाखंड छल तजिये सकल विरोध।
पर धन पर तिय परिहरै करै न इर्षा क्रोध॥६४॥

होय धर्म की बृद्धि जब तब उपजै बैराग।
ताके पीछे होत है रामचरन अनुराग॥
रामचरन अनुराग भयो तब कछु न सोहाई।
लागै सक्लो सीठ रहै नामहि लवलाई॥
बिना सुकृत के बढे ते नही विपय का त्याग।
होय धरम की बृद्धि जब तब उपजै बैराग।६५॥

बड प्रभाव अनुराग को राम मिलावनहार।
आस बासना नास कै सहज छुटै ससार।
सहज छुटै ससार ज्ञान बिज्ञान प्रकासै।
जबही बिद्या बृद्धि अविद्या तबही नासै॥
बनादास होवै सुखी सकल जरनि जर छार।
बड प्रभाव अनुराग को राम मिलावन हार॥६६॥

ईस्वर जेहि बांधा चहै तहाँ अबिद्या बृद्धि।
अरु जाको छोरा चहै तहँवां बिद्या सिद्धि॥
तहँवां विद्या सिद्धि सकल पापन को नासै।
भक्ति ज्ञान बैराग्य हृदय बिज्ञान प्रकासै॥
तब छूटत देरी कहाँ पावै ऐसी सिद्धि।
ईस्वर जेहि बांधा चहै जहाँ अबिद्या बृद्धि॥६७॥

माया बाँधै जाहि को जगत प्रतिष्ठा होय।
धन परिवार अरोग तन चाह करै सब कोय॥
चाह करै सब कोय भोग इन्द्री लपटाने।
पूतनाति मे पगे परम पद ता कहँ माने॥
किमि छूटै ससार ते बन्धन परै न जोय।
माया बाँधै जाहि को जगत प्रतिष्ठा होय॥६८॥

ईस्वर छोरै जाहि को ताहि पुत्र धन लेय।
अरु डारै अपमान करि रोग बृद्धि कै देय॥
रोग बृद्धि कै देय रहै नहि कोई आसा।
सबै निरादर करै हृदय मे होय प्रकासा॥
यदि बिधि लावै सरन निज रहै कमल पद सेय।
ईस्वर छोरै जाहि को ताहि पुत्र धन लेय॥६६॥

तिहुँपुर कीन्हें दान बलि सो चलि गये पताल।
कृमि होय नृग कूपहि परे ऐसेन की यह हाल॥
ऐसेन की यह हाल करम अति जाल कराला।
एक नाम निर्विघ्न भजै नित दसरथ लाला॥
कितौ साधु सेवा करै तासु करै का काल।
तिहुँपुर कीन्हें दान बलि सो चलि गये पताल॥७०॥

सकलौ साधन सून्य है काहू में नहिं सार।
ताते कलिजुग में रहेउ एकनाम आधार॥
एकनाम आधार पार काको नहिं कीन्हा।
जुग जुग जागत बिरद दिनौ दिन होत नवीना॥
रामरूप पायो सोई निर्गुन का निरधार।
सकलौ साधन सून्य है काहू में नहिं सार॥७१॥

एक भरोसा एक बल एक आस विस्वास।
एकै गति सबकाल में सकल कामना नास॥
सकल कामना नास दास की याही रीती।
काम क्रोध मद रहित अनत सपनेहुँ नहिं प्रीती॥
बनादास तब फिरि कहाँ मृत्यु काल जम त्रास॥
एक भरोसा एक बल एक आस बिस्वास॥७२॥

ज्ञान दीप बैराग गृह अरु अनुराग निगाह।
सुभग सांति पर्यंक पर निज सरूप को लाह॥
निज सरूप को लाह चाह फिरि लहै न दूजा।
को सेवक को सेव्य करै को केहि को पूजा॥
बनादास आनन्द घनो द्वार बिवेक निबाह।
ज्ञान दीप बैराग गृह अरु अनुराग निगाह॥७३॥

बिरलै लोटे जाय तहँ चोटे खाय अनेक।
अब खटका कोई नही रही न साधन टेक॥
रही न साधन टेक गया स्रम सकल सिराई।
ताते आई बोत बचन मन नहीं समाई॥
बनादास पटतर कहाँ रही न कछु कहिबेक।
बिरलै लोटे जाय तहँ चोटे खाय अनेक॥७४॥

कुतिया मिलिगै चोर को सोर करै फिरि कौन।
भोर साम नाही तहाँ रहा न आवागौन॥

रहा न आवागौन पौन की नहिं पैठारो।
ऐसी झीनी गैल सैल नहिं बूझ अनारी॥
लोक बेद झगरा मिटा सब प्रपच भे दौन।
कुतिया मिलिगै चार को सोर करै फिरि कौन॥७५॥

पोवै रोटी गगन की मगन रहै सब लोग।
पूजा पाठ अचार मख तप तीरथ व्रत जोग॥
तप तीरथ व्रत जोग रोग नहिं परत लखाई।
करम काड मे फँसे दिनौदिन बाझत जाई॥
बनादास उपमा कहाँ ब्रह्म मिलन का भोग।
पोवै रोटी गगन की मगन रहै सब लोग॥७६॥

जो मदिरा का पान करि रहै न कोई भान।
ऐसे मोह निसा परे सारा जग हैरान॥
सारा जग हैरान ज्ञान सो परचै नाही।
जब लै उदय न भानु निसा कौनो विधि जाही॥
जब पावै निज रूप को बेगहि जगत विलान।
जो मदिरा को पान करि रहै न कोई भान॥७७॥

हरिगुरु सत कृपा करै पाछिल सुकृत सहाय।
स्रद्धा उपजै हृदय मे मारग सुद्ध लखाय॥
मारग सुद्ध लखाय एक नामहिं लौ लावै।
करि दृढ प्रीति प्रतीति सद्य भवसिंधु सुखावै॥
बनादास बेदहु विदित चारिउ जुग चलि आय।
हरिगुरु सत कृपा करै पाछिल सुकृत सहाय॥७८॥

दीप सिखा निरबात मे जथा अचचल जोय।
ऐसे चित निस्चल रहै लाभ आतमा होय॥
लाभ आतमा होय हानि तब सारा देखै।
लोक वेद परपच काहु मे सार न लेखै॥
बनादास तब ताहि पुनि नीक न लागै कोय।
दीप सिखा निरबात मे जथा अचचल होय॥७९॥

इन्द्री सूछम देह ते पुनि ताते मन जानु।
मन ते सूछम बुद्धि है सदग्रन्थन परमानु॥

सदग्रन्थन परमानु बुद्धि परब्रह्म सदाई।
जो इनते पर होय ब्रह्म आनन्द सो पाई॥
बनादास करनो कठिन कहनो में नुकसानु।
इन्द्रो सूछम देह ते पुनि ताते मन जानु॥८०॥

याते लाभ न दूसरो लखै तीनिहूँ लोक।
सब सुख साने दोष गुन वृद्धि होय भय सोक॥
वृद्धि होय भय सोक सकल माइक कहलावै।
बिनसि जाय छिन माहि बहुरि चौरासी पावै॥
बनादास मिस्रित अहै जथा जलज जल जोंक।
याते लाभ न दूसरो लखै तीनिहूँ लोक॥८१॥

लाभ आतमा जान भो कछू न करनो ताहि।
सर्व काम ताको सर्यो नहि संसय या माहि॥
नहि संसय या माहि करै जो पान अमी को॥
लावै स्वाद अनेक वाहि सब लागत फीको।
करै राख मे होम जिमि सकल धरम इमि आहि।
लाभ आतमा ज्ञान भो कछू न करनो ताहि॥८२॥

लिखना पढ़ना पटकि कै कहन सुनन ते दूरि।
कौन घास खोदत फिरै पाये जीवन मूरि॥
पाये जीवन मूरि जाहि लगि मतलब सारा।
कामधेनु जेहि भवन अनत किमि हाथ पसारा॥
बनादास कजियार फाँदिया फंद भवतूरि।
लिखना पढना पटकि कै कहन सुनन ते दूरि॥८३॥

एक नाम ते जानिये सकलौ साधन सिद्धि।
करम बचन मन सपन हूँ और न जानै व्रिद्धि॥
और न जानै विद्धि स्वाति के बुंद समाना।
ज्यों चातक के मते और जल नाहिं जहाना॥
बनादास मोको सदा रामै है नवनिद्धि।
एक नाम ते जानिये सकलौ साधन सिद्धि॥८४॥

रामनाम विस्राम को धाम सांच करि जान।
और मुकाम अनेक हैं ऐसा नहि मन मान॥

ऐसा नहि मन मान ज्ञान बिज्ञान घनेरे।
बिरति भक्ति के अग जोग अष्टागन हेरे।।
तीरथ व्रत तप मख विपुल समदायक नहि आन।
रामनाम बिस्राम को धाम साँच करि जान।।८५।।

भक्ति ज्ञान बिज्ञान का नामै साधन जान।
बिरति जोग सब कछु सधै सिद्धि न नाम समान।।
सिद्धि न नाम समान ध्यान ऊँचे चढि जावै।
बिचले नही ठिकान फेरि नामै मे आवै।।
नामै पुनि पहुँचावता बनादास घन प्रान।
भक्ति ज्ञान बिज्ञान का नामै साधन जान।।८६।।

आदि अन्त औ मध्य मे एक साहिबी नाम।
और सबन को जानिये यक यक नाम मुकाम।।
यक यक नाम मुकाम राम रूपउ यक देसी।
निरगुन अपने ठौर कहै का को कमबेसी।।
बनादास जल नाम है जिमि मीनन का धाम।
आदि अत औ मध्य मे एक साहिबी नाम।।८७।।

ए सब नाम अघीन हैं नाम सुतत्र सरूप।
आपै साधन सिद्धि है सबसे पृथक अनूप।।
सबसे पृथक अनूप दृष्टि नामै जब देवै।
तबही लखै सरुप पुष्ट नामै बल लेवै।।
बनादास फिरि का कहै दृढता राखै खूप।
ए सब नाम अधीन है नाम सुतत्र सरूप।।८८।।

ज्ञानी कर्म उपासना सत्य झूँठ नहि कोय।
कर्म सत्य होतो नही दुख सुख काहेक होय।।
दुख सुख काहेक होय देह काहे को होती।
जाके कारन सहै विपति निसि दिवस निसोती।।
लोक बेदहू विदित है बनादास नहि गोय।
ज्ञानी कर्म उपासना सत्य झूँठ नहि कोय।।८९।।

गर्भ माहि रच्छा किये महा दुख औ गाह।
आदि मध्य औ अन्तहू हरि के हाथ निबाह।।

हरि के हाथ निबाह कर्म जिन जीव बनाये।
छोरन हारन और पुरानन वेदहु गाये॥
ताते सत्य उपासना सद्य देय भव थाह।
गर्भ माहि रच्छा किये महादुःख औगाह॥९०॥

ज्ञानै नासक जगत को और उपाय न जाय।
विधि निषेध नासै भले राग द्वेष बिसराय॥
राग द्वेष बिसराय करम को रेख न राखै।
हरि से करै अभेद प्रबल अद्वै मत राखै॥
बनादास जब सांति भै सकल प्रपंच बिलाय।
ज्ञानै नासक जगत को और उपाय न जाय॥९१॥

नाम नसावै कर्म को कै उपासना बृद्धि।
रामनाम ते होत है ज्ञान कांड भो सिद्धि॥
ज्ञानकांड भी सिद्धि परा की करै सफाई।
महिमा अतिहि अनन्त सांति नामहि जपि आई॥
बनादास दृढ नाम गहु नहि कोउ ऐसी निद्धि।
नाम नसावै कर्म को कै उपासना बृद्धि॥९२॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम त्रयोदसोऽध्यायः॥१३॥

अपनी देही झूठ जब जोरै कासों नात।
तासो होना भिन्न है अनत मृषा लपटात॥
अनत मृषा लपटात जात स्वासा दिन राती।
भजि ले सीताराम आदि मधि अन्त सँघाती॥
चेला सेवक मानि कै मृषा जरावै गात।
अपनो देही झूठ जब जोरै कासो नात॥९३॥

देही के दाहक सबै नाहक करै अकाज।
परै बीच रघुनाथ से तापर नाही लाज॥
तापर नाहीं लाज काज अपनो सब साधै।
मीठी मीठी बात बोलि कै ताको बाँधै॥
बनादास उपदेस कहुँ करै बुद्धि मन राज।
देही के दाहक सबै नाहक करै अकाज॥९४॥

अपना मन मानै जोई सोइ गहै उपदेस।
जामे चित मानै नही तामे महा क्लेस।
तामे महाक्लेस पटकि सिर गुरु मरि जावै।
काऊ करै न कान आपको गुरु ठहरावै॥
बनादास अहमक बडे किये साधु को वेस।
अपना मन मानै जोई सोइ गहै उपदेस॥६५॥

भव दुख अति आरत जाई लिये हाथ मे सीस।
ताहि लगत उपदेस है करिये बिस्वाबीस॥
करिये बिस्वाबीस सोई जग पारहि जावै।
और सकल दुख दानि नकल की कोट उठावै॥
फेरि फेरि को चहि बिषे नीच होत है खीस।
भव दुख अति आरत जोई लिये हाथ मे सीस॥६६॥

देखा या ससार मे स्वारथ ही लगि नात।
जाते कछु मतलब नही कोउ न बूझै बात॥
कोउ न बूझै बात जात सारा जग देखा।
जाको स्वारथ कहै नाहि कछु तासे सेखा।
बनादास कासो कहै समुझि समुझि रहि जात।
देखा या ससार मे स्वारथ ही लगि नात॥६७॥

केवल कलई कपट की लपटि जात सब कोय।
आस वासना काल है लेत साधुता धोय॥
लेत साधुता धोय जानि कै तजै न जोई।
जरे जन्म पर्यन्त अत मे रहि है रोई॥
सर्व त्यागि रामहि भजै परम चतुर है सोय।
केवल कलई कपट की लपटि जात सब कोय॥६८॥

सब तत्त्वन का मूल है रामनाम स्रुति सार।
सकल पदारथ जानिये नामहि के आधार॥
नामहि के आधार पार नहि पावै कोई।
याते सकलो हाथ नाम विन सर्बस साई॥
परमतत्त्व नामै अहै मम मत बारै बार।
सब तत्त्वन का मूल है राम नाम स्रुति सार॥६९॥

कहत कहत सबकोउ थका चहुँजुग तीनिउँ काल।
बनादास नाही चुकी महिमा नाम बिसाल॥

महिमा नाम बिसाल चुकैगी कबहीं नाही।
सेप गनेस महेस कहैं कहुं वेद सदाही ॥
नारद सारद चतुरमुख कबि कोविद प्रतिपाल।
कहत कहत सब काउ थका चहुँजुग तोनिउं काल ॥१००॥

सुर नर मुनि स्तुति सास्त्र पुनि उड़ते विहंग समान।
नाम गगन मे मगन जे नहिं करि सकै बखान ॥
नहिं करि सकै बखान भूमि रज तृनगनि जावै।
जल सीकर गनि लेय नाम गुन गनि न सिरावै।
बना बिचारा का करै एक वदन ते गान।
सुर नर मुनि स्तुति सास्त्र पुनि उड़ते विहंग समान ॥१०१॥

एक नाम भरिपूर है दूजा नाही कोय।
आदि मध्य अवसान बिन पार कौन विधि होय ॥
पार कौन विधि होय सगुन निर्गुन है नामहिं।
काहू को गति नाहि साऊ बसवर्ती तामहि ॥
बनादास मैं हूं सोई हिय आंखिन से जोय।
एकनाम भरिपूर है दूजा नाही कोय ॥१०२॥

परमहंस ताको कही जाहि वासना नास।
नगा बस्त्र कि बात नहि राम दुवारे वास ॥
राम दुवारे वास गई सब विधि जग आसा।
राग द्वेष से रहित भजन है स्वासा स्वासा ॥
बद्ध मुक्त दोऊ भरम अतिसय हृदय प्रकास।
परमहंस ताको कहो जाहि वासना नास ॥१०३॥

कछू न लागै नोक जब तबै फोक संसार।
मैं मेरो मरि जाय जब तबही सुद्ध विचार ॥
तबही सुद्ध बिचार भार सम लागै देही।
स्वाद और शृङ्गार स्वाद निसि दिवस निवेही ॥
बनादास उपमा कहाँ पावै सुख अधिकार।
कछू न लागै नोक जब तजै फीक संसार॥१०४॥

तोतरि बोली तनय की सुनत स्रवन सुख देय।
जब तिय किये कटाच्छ कहुँ मनहुँ प्रान हरि लेय ॥

मनहुँ प्रान हरि ले चलत अवलोकै छाहीं।
कृमि बिष्ठा अरु भस्म अन्त सो समुझै नाही।।
बनादास तजि राम पद रहे बिषय सठ सेय।
तोतरि बोली तनय की सुनत स्रवन सुख देय।।१०५।।

नित लागो घन धाम प्रिय भजन की चरचा नाहिं।
धरमराज की सुधि गई भूले तन सुख माहिं।।
भूले तन सुख माहिं सार जामे नहिं कोई।
जड असुद्ध दुख रूप ताहि मे निस्चय होई।।
बनादास सतसग तजि बिष सम बिषय चबाहिं।
नित लागो घन धाम प्रिय भजन कि चरचा नाहिं।।१०६।।

घर से त्यागि फकीर भे सत सगति को भागि।
भइ फायदा कौन जो इहाँ सौगुनी लागि।।
इहाँ सौगुनी लागि सँभारत सेवक चेला।
जाति पाँति धन धाम सधानन रहत अकेला।।
बनादास जाई कहाँ दोउ दिसि लागी आगि।
घर से त्यागि फकीर भे सत सगति को भागि।।१०७।।

राग द्वेष छूटी नही बिधि निषेव भरिपूरि।
आस बासना मे मगन राम तहाँ अति दूरि।।
राम तहाँ अति दूरि धाम धन चाहत ऊँचा।
याही है ससार नही परमारथ कूचा।।
बनादास सो साधुता देय फद भवसूरि।
राग द्वेष छूटी नही बिधि निषेध भरिपूरि।।१०८।।

लानति लागी साधुता लई न जीवन मुक्ति।
खान पान धन धाम सुख करै जियै की जुक्ति।।
करै जियै की जुक्ति भले ताते ससारी।
रहै आपनी ठौर आप नहिं बने बिगारी।।
बनादास सर्वाङ्ग से भै कलिजुग की भुक्ति।
लानति लागी साधुता लई न जीवन मुक्ति।।१०९।।

मरि जावै सब अग से तनै भग ससार।
नालो मोटे दिनौदिन फुटै हजारो डार।।

फूटै हजारो डार कहाँ लगि काटै कोई।
जो तूरै दुइवारि सँकरों हरिअर होई॥
बनादास सब विधि सुखी धरै राम सिर भार।
मरि जावै सब अंग ते तबै भंग संसार॥११०॥

रंगै राम के रंग में जंग जुरै कलिकाल।
विघ्न अनेकन विधि करै ऐसन बड़ो न माल॥
ऐसन बड़ो न माल नही दाया उर आवै।
साधु भये हरि सरन ताहि कछु ख्याल न आवै॥
बनादास का करि सकै रच्छक दसरथ लाल।
रंगै राम के रंग में जंग जुरै कलिकाल॥१११॥

बड़े बली मन बुद्धि हैं चित्त और हंकार।
कारन सकल प्रपंच के आवत यही बिचार॥
आवत यही बिचार रहैं नुर खुंद मचाये।
सुद्ध आतमा सांति उठावैं लहरि सुभाये॥
बनादास हारेउ अतिहि ताते करत पुकार।
बड़े बली मन बुद्धि हैं चित्त और हंकार॥११२॥

जन रुचि राखत राम है सुना अनेकों बार।
अंतर्जामी सो कहब याहू अति अविचार॥
याहू अति अविचार लिखत हारे बहु भाती।
ताते चाहत यही सांति रहिये दिन राती॥
वस्तु परत अलगै परखि किये ग्रन्थ अधिकार।
जन रुचि राखत राम है सुना अनेकों बार॥११३॥

निज सरूप को ज्ञान तेहि देत कृपा करि राम।
देहे अछत सोई लहै जग में अति बिस्राम॥
जग में अति बिस्राम काम पूरन भै ताको।
उतरि गये भव पार जन्म फल लै बसुधा को॥
बनादास वाको मिलै ऐसा ऊँच मुकाम।
निज सरूप को ज्ञान जेहि देत कृपा करि राम॥११४॥

नाम बरन आकार से भिन्न करै मन बुद्धि।
परिपूरन चेतन लखै तबहीं अंतर सुद्धि॥

तबही अतर सुद्धि आदि मधि नहिं औसाना।
ईस्वर जीव अभेद भयो अतिही दृढ ज्ञाना॥
बनादास सपनेहुँ नही फिर भव भट से जुद्धि।
नाम बरन आकार से भिन्न करै मन बुद्धि॥११५॥

हेरत हेरत आपु ही सहजै गयो हेराय।
लोन खिलौना जल परै जैसे गो भिहिलाय।
जैसे गो भिहिलाय कहै किमि जेहि बिधि भासा।
नहिं अकास को भानु भयो जब ब्रह्म प्रकासा।
बनादास नहिं और बिधि आवागमन नसाय।
हेरत हेरत आपु ही सहजै गयो हेराय॥११६॥

मन गूगन को सग तजे भोगन ते रुचि नाहिं।
जोगन मे राजी रहै ब्रह्मानन्द समाहिं॥
ब्रह्मानद समाहिं जथा दिनकर की जोतो।
ठहर्यो चाका माहिं सदा आनद निसोतो॥
बनादास जिमि मध्य दिन तरु छाया तरु माहिं।
मन गूंगन को सग तजे भागन मे रुचि नाहिं॥११७॥

पराबुद्धि प्रापति भई नहिं बिकल्प सकल्प।
झवँत झवँत झीना भई रहिगै अतिही अल्प॥
रहिगै अतिही अल्प काहु जोरन से होवै।
भय आतम जलमीन और दिसि भूलि न जोवै॥
बनादास पलको टरे मानो वीतत कल्प।
पराबुद्धि प्रापति भई नहिं बिकल्प सकल्प॥११८॥

भयो अचचल चित जवै कित आवै भवभान।
दसो दिसा मे सात नहिं लोको बेद हेरान॥
लाको बेद हेरान रहा ब्यापक सब माही।
गई दृष्टि ना नतु ब्रह्म तजि दूसर नही॥
बनादास विकल्प परहित लह्यो आतमा ज्ञान।
भयो अचचल चित जवै कित आवै भवभान॥११९॥

हम हम हरे नामि लै तुम तुम सकलो काल।
बनादास तव जानिये ब्रह्मानद बहाल॥

ब्रह्मानंद बहाल जाल जग भूलि न जोवै।
देखै रामाकार द्वैत को दम दम खोवै॥
राग द्वेष विधि भोगई नहिं निषेध की चाल।
हम हम हेरे ना मिलै तुम तुम सकलौ काल॥१२०॥

सूरति मछरी ब्रह्म जल ओरा से गलि नीर।
वनादास कजिया रफा दूरि भई भवपीर॥
दूरि भई भवपीर नीर हिमि दूसर नाही।
सोवै सांति सुषोप्ति नही निसिदिन बिलगाहीं॥
काल जाल का करि सकै अतिसय सिन्धु गम्भीर।
सुरति मछरी ब्रह्म जल ओरा से गलि नीर॥१२१॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे ज्ञान खण्डे भवदापत्रयताप विभंजनोनाम चतुर्दसोऽध्यायः॥१४॥

सप्तम–सान्ति खण्ड

छप्पय

भरत लषन रिपुदमन पवनसुत जुग कर जोरी।
बोले बचन बिनीत मनहुँ रस अमृत बोरी॥
सब साधन को सिद्धि मुक्ति नहि जाहि समाना।
निज बिचार सिद्धान्त कहो सो कृपा निधाना॥
सुनि सनेह साने बचन हृदय हर्ष भव भेद मन।
स्रुति पुरान मुनि मत कहत जाते सब ससय समन॥१॥

निज सिद्धान्त बिसेषि सनातन सन्तन गाये।
सांति परे कछु नाहि कोऊ कोटिन मे पाये॥
जिमि नर मे नरपाल फलन मे जानु रसाला।
ऐसेहि सदा प्रमान सुमेरु जथा मनि ताला॥
आये बन मृगराज जिमि सकल जीव भागव भभरि।
कह बनादास ताही बिधा सतो असत जाते निकरि॥२॥

भक्ति मूल तरु ज्ञान बिरति है त्वचा समाना।
सुमन जानु बिज्ञान परा फल करत प्रमाना॥
नामबीज रस सान्ति सन्त बिरला कोउ जानै।
नहि आवै मन बुद्धि कवनि बिधि बचन बखानै॥
निगम दूध उपनिषद दधि गीता माखन जानिये।
कह बनादास घृत सान्ति है कोउ बिरला पहिचानिये॥३॥

साधन सारे नखत साति जानिये भास्कर।
उदय भयो रबि जबहि मिलत नहि कोउ हेरे पर॥
जिमि दुलहिन घर आय जाय चहुँ ओर बराता।
ऐसे पाये सान्ति नही साधन से नाता॥
बेद पयोनिधि ज्ञान गिरि मथन हार सुरसन्त हैं।
सांति अमृत का देस ही उपमा कोउ न लहत हैं॥४॥

लगै काठ मे अगिनि परै लखि तीनि सरूपा।
जानो समधि सरीर धूम वासना अनूपा॥

साधन सारे अनल धूम गत परा कहावै।
सब साधन सिर मौर आगि केवल रहि जावै।।
जबहीं जरिहोवै भसम दारु धूम पावक नहीं।
कह बनादास सो सान्ति है यहि बिधि सब सन्तन कही।।५।।

सवैया

सातहु स्वर्ग औ सात पताल है चक्र चलै सिसु मार सदाही।
अस्ति उदय अरु सप्त समुद्र सुमेरु चराचर जो जग माहीं।।
है सकलो भ्रम उद्र बिषे पुनि ब्यापक हो सबमें न कहाही।
दासबना अहो यार बिराट से ऐसन रूप लहे जग जाहीं।।६।।

छप्पय

सांति साधु सृङ्गार सान्ति बिन सन्त न होई।
जिमि भृगुपद की रेख बिना कह ईस न कोई।।
दीप बिना जिमि भवन लोन बिन ब्यंजन जैसे।
बिना पुरुष की नारि पील बिन दल है तैसे।।
चन्द बिना जिमि जामिनी भानु बिना जिमि दिन कहै।
जैसे सरिता नीर बिन सांति बिना साधू अहै।।७।।

ज्यों मारै सर कोपि मर्म अस्थान बिचारी।
तिमि दुर्जन को वचन पोर ताते अति भारी।।
नहिं कोउ सहने जोग तिहूँ पुर माहिं बिचारा।
सांति होय ते सहै क्रोध उर लेस न जारा।।
को बपुरा सुर नर सहै एक संत पद जानिये।
जिमि चकोर पावक भखै कह पटतर उर आनिये।।८।।

सांति सरोवर परै जरै फिरि ताप न कोई।
जल में लरौ न आगि बिदित गति देखो सोई।।
कह पुरान अरु बेद सास्त्र पट परै न जाना।
कह तीनिउ तन गये भये का साधन नाना।।
कहा मुक्ति इच्छा गई स्वर्ग नरक बैकुंठ कहूँ।
कह बनादास हम तुम कहाँ आय सांति टिकि रही जहूँ।।९।।

छूटो सब बिस्तार प्रकृति परपंच न कोई।
जिमि जल बीचो रहित कहाँ पटतर कोउ जोई।।

भूषन कंचन भयो नदी जिमि सिन्धु समानी।
हिमि ओरा गलि नीर मीन जिमि होय गो पानी॥
लोन खेलौना जल परेउ फेरि आय कैसे सकै।
कह बनादास मतवाद कस चाहै जो जैसे वकै॥१०॥

जैसे भरि गो कुंभ नही जल फेरि अमाईं।
जो पाये भरि पेट फेरि कछु सकत न खाईं॥
गंगोदक लहि गग सुद्ध सरवगि भयो है।
भानु किरनि गत भानु छाह तरु तरुहि गयो है॥
पानी पावक होत नहिं नही खाक ते तृन भई।
कह बनादास जे साति भे फिरि असाति किमि उर ठई॥११॥

गिरिन मध्य सुम्मेरु सरन मे सागर जैसे।
जिमि ग्रह माहिं दिनेस सरिन मे सुरसरि तैसे॥
रुद्रन मे जिमि संभु खगन मे गरुड कहाये।
रवि बाहन हय माहिं गजन ऐरावत गाये॥
सुरपति सब देवन विषे जिमि सरीर मे क्रान्ति है।
मृगन माहिं मृगराज जिमि तिमि मुक्तिन मे सान्ति है॥१२॥

जग हेरे नहिं मिलै निगम आगमन पुराना।
बरनास्रम गुन तीनि एक दुइ तीन न जाना॥
मुक्तिउ की सुधि नाहिं काल की भय नहिं आनै।
पायो सुद्ध सरूप प्रकृति को पुरुष बखानै॥
बसन सूत से तूल भो कहा कछू नहिं जात है।
मन बुधि चित हकार चहूँ आतम माहिं समात है॥१३॥

कासे बोलै बैन कौन से रहै चुपाई।
देखैं काको कौन कौन केहि समुझै भाई॥
सुनै कौन को कहै बस्तु को केहि ठहरावै।
को उपदेसै काहि राह काको मग ध्यावै॥
मुक्ता को भोजन अहै भोग लगावै कौन केहि।
करै दडवत काहि को देता को लेति तेहि॥१४॥

कौन ब्रह्म को जीव साति को को असाति अब।
कहाँ प्रलय कहँ सृष्टि भई थिति अहै समै कब॥

कौन बड़ा को छोट कौन केहि निन्दै बन्दै।
को पालै को हरै काह सुख का दुख द्वन्दै॥
को बूड़ा को है तरा कहाँ धरम अधरम अहै।
को बांधै छोरै कवन का अनुभव का भरम है॥१५॥

यदि बिधि सांति सरूप कहत पुनि पुनि रघुनाथ।
भरत लषन रिपु दमन पवनसुत होत सनाथा॥
रह्यो न उत्तर प्रश्न कहत नहि सुनत अघाहो।
बूझि बूझि अति मगन बार बारहि पुलकाही॥
सब साधन की महा सिधि नही साति ते मुक्ति है।
कह बनादास पटतर कहां कहत अमित करिजुक्ति है॥१६॥

॥ इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे सान्ति खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

कुंडलिया

ज्ञान अगिनि में जरि गया देखा तीनिउँ गाँउ।
करम बचन मन बुद्धि करि नहि कतहूँ अटकाउ॥
नहि कतहूँ अटकाउ भया राखी सब लेखा।
राखी गई बिलाय रहा कहूँ रूप न रेखा॥
बनादास भूल्यो नही अब कहुँ आवउँ जाउँ।
ज्ञान अगिनि में जरि गया देखा तीनिउँ गाउँ॥१७॥

बहिया आई भक्ति की बहिगा तीनिउँ लोक।
बनादास नाही रहा अब कतहूँ भय सोक॥
अब कतहूँ भय सोक जोक यहिन नहि लागै।
चोरन के घर काल राति काहे को जागै॥
काल मृत्यु नहि लखि परै कहाँ अहै जमथोक।
बहिया आई भक्ति की बहिगा तीनिउँ लोक॥१८॥

आँधी आय बिराग की उड़िगा सब संसार।
चौरासी चौपट भई नहि प्रकृत्ति पैठार॥
नहि प्रकृत्ति पैठार तिहूँ गुण वृत्ति नसाई।
जाग्रत सपन सुषोप्ति देह मन ताप सदाई॥
तुरिया कुरिया में परा को कढ़ि सकै बहार।
आँधी आय बिराग की उड़िगा सब संसार॥१९॥

घनाक्षरी

जग सुख फीको तब मूक ही सैनी को कौन जानै भाव ही को कछु काहु से न काम है ।
द्वैत कहूँ नाहिं मनही को भर्म आहि ठहराग्यो निज माहिं तब कहा सुबूसाम है ।।
दिसि औ विदिस देस कालहू को भान गयो भयो महामोद नहिं कोऊ सूध बाम हैं ।
बनादास मगन सहज सुख सिन्धु माहिं आस त्रास नास भव रोग रह्यो राम है ।।२०।।

सवैया

इन्द्री अबुद्धि सरीर औ प्रान करै सब चेतन सक्ति से भोगा ।
पावक तेज ते लोह तपै जिमि जानि सकै नहिं मूरख लोगा ।।
पै जडताहि कोऊ नहिं जानत होन करै बहु जोग बियोगा ।
दासबना नित आतम सुद्ध लहै सोइ ज्ञान मिटै भवरोगा ।।२१।।

त्याग करै नहिं स्वाद सृङ्गार औ आतम ज्ञान कहै सो पखंडी ।
बासना आस बिनास करै अरु भाँति अनेकन इन्द्रिन दंडी ।।
साति लहै तन औ मन बुद्धि मिल्यो जब ब्रह्म प्रकास प्रचंडी ।
दासबना जगमाहिं बिलच्छन भिन्न सरीर सो ज्ञान अखंडी ।।२२।।

पारस पास मे माँगत भीख नहीं पतियात है ताकहुँ कोई ।
पायस मोहन भोग जा पावत सो फिरि नाहिं खरी दिसि जोई ।।
दासबना गज अस्व है द्वार पै क्यो गदहा चढि कै पति खोई ।
तीनिउँ लोक को है सुख बुन्द से सिंधु मिले सो कृतारथ होई ।।२३।।

इन्द्री बुद्धि अधीन भयो मनताहि ते जीव पराभव कूपा ।
नीच भयो नृप को सुत जैसे संभार करै नहिं सुद्ध सरूपा ।।
पार प्रकृत्ति से होय जबै तबही फिरि जानिये ब्रह्म अनूपा ।
दासबना भ्रम बद्ध औ मुक्त सोय प्रकास लह्यो पद भूपा ।।२४।।

घनाक्षरी

जौनी समय जाय निराकार मे समाय गयो मन बुद्धि चित्त अहंकार न रहतु है ।
जैसे भानु किरनि समिटि जात मंडल मे आदिमध्य अवसान जाकी न लहतु है ।।
जैसे तरु छाया मध्यदिन वृच्छ लीन होत प्रकृति प्रपंच सरि फिरि न बहतु है ।
बनादास नेति नेति बेदउ बदत जाहि ब्रह्मानन्द कोऊ कौनिउँ भाँति सो कहतु है ।।२५।।

अन्तप्करन परे बानी माहिं आवै नाहिं इन्द्रिन को ग्राह्य नास्ति उपमान पाई है ।
अचल अखंड साति एकरस कहै कौन बीचो ते बिहीने जल ताही भाँति गाई है ।।

जीवनमुक्त न होय वर्ण चौंतिस जब छूटै।
अन्त रँगावहि रंग सकल भाँतिन ते टूटै॥
अवसि अनूप अगाध है सुरति न मुरति समोय।
जाय कहै अजपा कहै न जपा कहै न कोय॥३३॥

निसि दिन रहौ असब्द मे सब्द सृष्टि का रूप।
तजो बरन आकार को निराकार है खूप॥
निराकार है खूप ताहि मे रहौ समाई।
अफुर होय हिय जबै तबै घर आपन पाई।
बनादास बिस्तार गो पायो रूप अनूप।
निसि दिन रहौ असब्द मे सब्द सृष्टि का रूप॥३४॥

सब्दै मे बकि बकि मरा देखौ सकल जहान।
सब्द पिछाना जो कोई सो फिर पलटि समान॥
सो फिरि पलटि समान जहाँ का मर्म अपारा।
जो कोऊ जन गये बहुरि नहिं आवन हारा॥
बनादास कासो कहै सुनै न कोउ पतियान।
सब्दै मे बकि बकि मरा देखौ सकल जहान॥३५॥

सब्दै गुरु चेला सबद सब्दै है उपदेस।
सब्दै गया असब्द में लावै कौन सदेस॥
लावै कौन सँदेस रहा दूजा नहिं कोई।
सेवक सेविन तहाँ उदधि सम दीखै सोई॥
धारा मिल्यो तरंग जब रहा न दुतिया लेस।
सब्दै गुरु चेला सबद सब्दै है उपदेस॥३६॥

सब्दै सुनि बहिरा भया सब्दै सुनि के अंध।
सब्दै सुनि डिठियार भौ अमित जगत परबंध॥
अमित जगत परबंध मूक सुनि सब्दै होवैं।
अबरे हृदय जलाय सब्द बहु बातै खोवैं॥
बनादास पँगुला चढ़ा डिठियारे ते कंध।
सब्दै सुनि बहिरा भया सब्दै सुनि के अंध॥३७॥

आँखैं झपकी जीभ जम सब्द नही फुरि आय।
पायें पगु कर कटे से बस न सुखी ह्वै जाय॥

कस न सुखी ह्वै जाय जथा निज देह में ज्ञाना।
निराकार तेहि भाँति भली बिधि परै पिछाना॥
बनादास कैसे कहै खाट परा मुसकाय।
आँखें झपकी जीभ जम सब्द नहीं फुरि आय॥३८॥

शब्द बिवेकी साधु जे सहसौ मद्धे एक।
भेष धरे लाखों फिरे भटकत ठाँव अनेक॥
भटकत ठाँव अनेक लागि जेहि भया फकीरा।
गैल परो नहि सूझि बनी चौरासी पीरा॥
बनादास पाया सोई गहा गुरू की टेक।
सब्द बिवेकी साधु जे सहसौ मद्धे एक॥३९॥

जनमै मरै न आतमा तन अनित्य जड़ जान।
स्मृति औ अबिबेक को जनम न मरन प्रमान॥
जनम न मरन प्रमान भये भूपित दोउ जाते।
पकरि लिये बासना बिपे नहि छोड़ै ताते॥
बनादास बल नहि चलै मिलै ब्रह्म निर्बान।
जनमै मरै न आतमा तन अनित्य जड़ जान॥४०॥

निराकार में जब टिका रहै न कोई मान।
निस्चय होइ न बासना जग मिथ्या ब्रतमान॥
जग मिथ्या ब्रत मान मुक्त जीवन भी सोई।
हरदम ब्रह्मानन्द कल्पना रही न कोई॥
बनादास दृढ़ ह्वै करै चेतन में अस्थान।
निराकार मे जब टिकै रहै न कोई मान॥४१॥

यही मुक्ति पैंड़ा अहै बेदौ देय प्रमान।
एक ब्रह्म निश्चय भयो तबही जगत हेरान॥
तबही जगत हेरान ज्ञान बिन मुक्ति न होई।
साधन करै अनेक बहुरि भव भरमै सोई॥
बनादास तातै रहै हरदम ब्रह्म समान।
यही मुक्ति पैंड़ा अहै बेदौ देय प्रमान॥४२॥

तिहू लोक नस्वर अहै माया को बिस्तार।
आदि रहा नहि मध्य है अंतहु करै बिचार॥

अंतहु करै विचार जथा बालक लुकुवाई।
मनहुँ चक्र चहुँ पास किये निस्चय यक आई॥
वनादास दूजा कहाँ ज्यों प्रवाह जलधार।
तिहूँ लोक नस्वर अहै माया को बिस्तार॥४३॥

जिमि अकास मे नीलता दूरि पाय दरसाय।
उहाँ कछू नाही अहै तिमि यह जगत लखाय॥
तिमि यह जगत लखाय सर्प निस्चय रजु माही।
रजत न सीपी माँहि झूठ मृग बारि सदाही॥
बनादास सतसग लहि हरि की कृपा बिलाय।
जिमि अकास मे नीलता दूरि पाय दरसाय॥४४॥

घनाक्षरी

धीरज बिचार औ धुराई तोष पावा चारि मुक्ति पर्यंक को भवन निष्काम है।
तृष्ना आस आलस असग दम इन्द्रि पुनि लहै सोई ठाम नाम जपै वसुयाम है॥
ज्ञान को उसीसी औ बिज्ञान को चँदोवा चारु साति नीद सोवै बनादास अभिराम है।
महाबोध मोदक अदम्भ सो अतर सुचि बीरा है बिरति सुठि साधु को मुकाम है॥४५॥

गाँव बसा नही कोऊ देस मे मुकुति कर याही तन माँहि लहै अति बड भागी है।
बिधि औ निषेध राग द्वेष को न रेख तहाँ देह बुद्धि नास निज रूप अनुरागी है॥
विषय रहित निर उद्यम सकल काल परारब्धि भोग मोह निसा माँहि जागी है।
वनादास जीवन मुकुत के हैं याही चिह्न समता मुकाम पियै पानिहूँ न माँगी है॥४६॥

सग्रह औ त्याग से बिराग सब काल माँहि हर्ष न सोक मति अस्थिर रहतु है।
परै कोटि बिघ्न टरै पगन काहू भाँति निर ब्यवहारगुन दोष न गहतु है॥
आतम तृप्ति सुख अनत न देखे कहूँ बनादास हरिहाथ सदा निबहतु है।
ऐसे ऐसे लच्छन अनेकन अनूप तामे पच्छपात रहित न सोचत चहतु है॥४७॥

अगम अथाह गूढ गति गुनातीत सदान जन बसत निहि किंचन सदाई जू।
सुभगुन आकर हि मच लसे साकर मे देखत अजान मान लेसहू न पाई जू॥
छमा दया दीरघ परमसाति काल सब रहित उपाय आसवासना नसाई जू।
बनादास तृष्ना को तरग सर्व अंग भग बाद बकवाद नेक चढ़ै न बढाई जू॥४८॥

सवैया

केवल बोध के हेत किये स्नम प्रीति कि रीति न जे कछु जानै।
पैरिकै पार लहै किमि सागर डूबि मरै मझधार अयानै॥

चाहै चढा नभ बारि के बुन्द से पंख बिहीन न बुद्धि ठेकाने।
दासवना बिन भक्ति को ज्ञान ते लूटि गये दिन ही मयदाने ॥४९॥

व्यंजन औ स्वर सृष्टि प्रपंच है याके परे परब्रह्म सरूपा।
सब्दहि को सब साधत हैं नहिं जानत भेद असब्द अनूपा॥
नाम औ बर्न अकार सबै भ्रम नाघै सो पार भयो भवकूपा।
दासबना पचि हारे करोरिन राजित संत सिरोमनि भूपा ॥५०॥

आवै असब्द से सब्द सबै जिमि सागर ते लहरी परमाना।
कारन ताके है पौन प्रकृत्ति सों सांति करै बिन राम को आना॥
ह्वै कृतकृत्य लहै पछिलो घर भूलै नहीं परपंच सो नाना।
दासवना रहै स्थिर रूप में जानौ सबै बिधि संत सयाना ॥५१॥

स्वर व्यंजन अंजन हैं सकलौ करै गंजन आतम ज्ञान को सारे।
भंजन कै निज रूप मे मंजन नित्य किये सोइ संत सुखारे॥
गुरु सब्द असब्द को प्राप्ति करै मन रंजन भो कहि जाय को पारे।
दासवना उठै प्रश्न पै उत्तर सो कोउ भांति टरै नहिं टारे ॥५२॥

घनाक्षरी

सांति करै सब्द को असब्द सुख पावै सोई बाहर औ भीतर अनेकन प्रकार है।
स्थूल मानि कै अकास ज्ञान दृढ़ होत ताते भ्रम तजै सब बरन अकार है॥
बाहर औ अंतर कहन मात्र जानो एक परा भरिपूरि होय तदाकार है।
बनादास दसो दिसा सूरति न चलै जब तब जानौ ठोस पोल अति अविकार है ॥५३॥

मनो राज परम अकाज काल रूप जानौ बहु बात नाहक फुरब नकसान है।
दोऊ परे सांति नही भ्रांति को है लेस तहां फुरै ज्ञान आतम सो चेतन प्रमान है॥
सोऊ सान्ति होव महासान्ति सिंधु आनंद को सोई है असब्द भोग जानत सुजान है।
बनादास प्रलय सृष्टि थिति न देखाई देत अन्तष्करन परे कहै केहि ज्ञान है ॥५४॥

कुंडलिया

प्रकृति पार परधाम है जहां सुबू नहिं साम।
सोम भानु पावक नही यक रस आठो याम॥
यक रस आठो याम नाम नहिं रूप लखावै।
भरा मोद का सिंधु जाय सो फिरि नहिं आवै॥
बनादास कासों कहै अतिही गूढ़ मुकाम।
प्रकृति पार परधाम है जहां सुबू नहि साम ॥५५॥

लागै नहिं मतवाद उर अब काहू को ताहि।
नाना साधन भजन करि परा नयन लखि जाहि ।।
परा नयन लखि जाहिं लोक वेदौ विस्तारा।
छोड़ै मन क्रम बचन प्रकृति से पावै पारा ।।
बनादास हरदम रहै मगन सहज सुख माहिं।
लागै नहिं मतबाद उर अब काहू को ताहि ।।५६।।

घनाक्षरी

बिधि औ निषेध भ्रम भाव तन राग द्वेष तृन सम तीनि गुन वासना बिनास है।
स्थूल सूछ्म औ कारन को मान गयो जाग्रत औ सपन सुषोपति न वास है ।।
बरन अकार नाम नेकहू न लेस रह्यो बनादास गुरु सिष्य साहब न दास है।
अतष्करन पार बैखरी थकित अति एक ब्रह्म भास यही तुरिया नेवास है ।।५७।।

आस्रम वरन चारि बेद वाक्य भिन्न होय चारि फल त्याग चहुँजुग को न ज्ञान है।
तीनिकाल लोक तीनि देव जानें नाहि तिहूँ काङ तरक न आवै उर मान है ।।
तिहूँ गुनत्याग भयो ब्रह्म को बिभाग सुठि मन बुधि बचन के परे जासु ध्यान है।
बनादास साधन बिटप फल ज्ञान भक्ति लह्यो रस सान्ति सुठि को खजान है ।।५८।।

सवैया

अवलोकत है जित ही तित ब्रह्म अकार भयो निराकार समाना।
मानो अकार भयो निराकार टरै नहिं दृष्टि ते सुद्ध ठेकाना ।।
दासवना जग हेरै मिलै न गयो सहजै मिटि आना औ जाना।
स्वासहि स्वास उठै हरिनाम फुरै उर मे हम राम न आना ।।५९।।

जाय गयो अजपाहु गयो नहिं आदि न मध्य नहीं अवसाना।
रूप न रेख विसेष अनन्द न अन्तष्कर्न बरै को बखाना ।।
वाक्य अतीत न आवत अर्थ समर्थ से कोऊ सकै नहिं जाना।
दासबना सुख ब्रह्म अनूपम है अनुभव महँ तासु ठेकाना ।।६०।।

कौन कहै को सुनै को पढ़ै अब कौन लिखै केहि हेत विचारो।
कौन हलै को चलै को दलै केहि बाद बिबाद न जीत न हारो ।।
पूरि रह्यो परब्रह्म चहूँ दिसि बाहर भीतर होत न न्यारो।
दासबना बिन बीच पयोनिधि आनद अवधि न तेरा हमारो ।।६१।।

घनाक्षरी

तत्व आवै तत्व ते मिलत तत्व तत्व जाय जानै मरै कौन सब झूठ जग जाल है ।
तत्वउ सकल छीन लीन होत आतम में आतमा अखंड होत नाहीं वृद्ध बाल है ।।
ताते भर्म सारो भयो अंजन निरंजन में दृष्टि हो को फेर कौन करता औ काल है ।
बनादास स्याम स्वेत बरन अकार मृषा हरित न पीत एक ब्रह्मई ब्रहाल है ।।६२।।

स्याम स्वेत बरन अकार निराकार ब्रह्म चेतन औ ब्रह्म जड़ छोड़ि नहि आन है ।
इन्द्री मन बुद्धि ब्रह्म चित्त अहंकार ब्रह्म तत्व प्रान ब्रह्म कहा भव भान है ।।
स्थूल औ सूछ्म औ कारन सकल जग ब्रह्म सब्द सरर सरस रूप गन्धवान है ।
बनादास भूत औ भविष्य ब्रतमान ब्रह्म आदि ब्रह्म मध्य ब्रह्म ब्रह्म अवसान है ।।६३।।

सवैया

द्वैत नही मन बुद्धि को कारन आदि न अन्त न मध्यहु माहो ।
एकइ ब्रह्म सनातन पूरन अन्तर बाहर भेद कहाहीं ।।
जाग्रत सपन सुषोपति सो परताहि मिले सुखसिन्धु समाहीं ।
दासबना त्रिगुनात्मक जक्त गई गुन वृत्ति तिन्हैं भव नाही ।।६४।।

घनाक्षरी

जैसे भानु किरन बढ़त ही प्रकास बढ़ै आदि अंत मंडल न दिन हो न राति है ।
तरु छाया तरु ही में मध्य दिना आवै जब जौन ते बीचो न तो जल को स्वाति है ।।
कारन मिले ते सो न भूपन खड़ग लोह मृतिका ते पात्र वृच्छ बीज सरसाति है ।
बनादास अन्तष्करन जग हेतु त्याही लीन निज रूप सृष्टि सकल बिलाति है ।।६५।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे सान्ति खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

अन्तष्करन बल छीन होत क्योंही नाहि जौ लगि न राम पद दृढ़ अनुराग जू ।
बिनाप्रेम रूप न मिलत कोटि साधन ते जाके उर प्रगट सो अति भूरि भाग जू ।।
रामरूप पावै न सरूप ज्ञान कैसे लहै जनम अनेकन को नाना मल लाग जू ।
बनादास ताते राम रूप औ सरूप ज्ञान प्रेम हू को हेत नाम जगत बिरागजू ।।६६।।

सवैया

लीन भयो परब्रह्म विषय मन नीर अगाध पर्यो गज जैसे ।
कौनिहुँ ताप उठै नहि ये बिच आगि भुनो बिय जामत कैसे ।।

धन्य है सन्त तिहूँ पुर भूपन दूपन हीन है सोभित ऐसे ।
दासबना नभ ज्यों दिन बारिद औ सरदा ससि तेउ न तैसे ।।६७।।

धन्य है सन्त की सगति या जग जा सम मुक्ति न को अस जानै ।
अर्थ औ धर्म की कौन कहै बिधि लोकहु बास नहीं मन मानै ।।
हेरे मिलै न कहूँ उपमा स्रुति सारद सेष गनेस बखानै ।
दासबना न महेसहु पार सो मैं केहि भाँति करौं पहिचानै ।।६८।।

घनाक्षरी

पावै उर चैन तब पलक न लागैं नैन बोलत न बैन सैन जानै कोऊ साधु जू ।
कहाँ दिन रैनि लख्यो आनद को ऐन पटतर कोऊ है न ब्रह्म सागर अगाधजू ।।
रह्यो मै न तैं न पौन प्रकृति जो गौ न अब कहै जौन कोऊ नहीं लेस भय बाधजू ।
कैन आवैं साधन चितै न आवैं राग द्वेष है न आवैं दूपन रितैं न पल आध जू ।।६६।।

सवैया

नाम और वर्ण अकार है अजन ब्रह्म निरजन रूप न रेखा ।
इन्द्रिय औ मन बुद्धि से भिन्न है ताहि मिले नहिं लाग निमेखा ।।
जाग्रत सपन सुषोप्ति सो है पर नेति कहै स्रुति कै बहु लेखा ।
दासबना नहिं आवै न जाय हे राय सो आपु जो ता कहुँ देखा ।।७०।।

चक्षु बिलक्षण ज्ञान सो लछ है पक्ष औ पात बहे बहुतेरे ।
सास्त्रन को मतबाद न टूटत कूटत है मुख मुरख केरे ।।
आपु प्रकास ते आपु लखावत ज्यों रबि हीन है आँखि अँधेरे ।
दासबना तिमि भक्ति बिना भव भर्मत है अति जीव घनेरे ।।७१।।

घनाक्षरी

जैसे ब्रह्म अचल अचल त्यों ही दृष्टि माहिं मन क्रम बचन न स्वाद कहि जात है ।
मूक ह्वै सो नाद है अवाद बसुयाम तहाँ कहा देस काल कहै काहू सो न बात है ।।
हरप न सोक तीनिलोक माहिं दसा भिन्न खिन्न प्रिय लागत न उपमा अमात है ।
बनादास आस श्रास बासना बिनास भई गई देह बुद्धि अब कछू न सुहात है ।।७२।।

अचल अखड परिपूर नेर दूरि नाहिं स्वेत पीत असित हरित औ न लाल है ।
सूछ्म सुतन्त्र सर्वज्ञ आवरन बिन दिन है न राति होत नाही बृद्ध बाल है ।।
अगम अगोचर गोतीत ज्ञान गम्य गुरु एक है न दोय तीनि कालहू को काल है ।
बनादास बास सबहि ये मे प्रकास अति आनद को सिन्धु सन्तताहि मे बहाल है ।।७३।।

जोई भानु मासक प्रकास कसकल लोक रूप रेख बिन अति अगम अपार है।
अमल अगोचर अलख गति जानैं कौन नेति नेति बदै बेद चारि बार बार है ॥
सोई सर्बज्ञ सुखसागर भगत हेत स्रुति सेत पालक महीप को कुमार है।
बनादास दानखंग सूर छबि कोटि काम राम ऐसो नाम अवतार सरदार है ॥७४॥

घट मठ भेद भानि जानि दृढ़ एक ब्रह्म परम प्रकास निराकास औ सघन है।
आदि मध्य अन्त हीन जीरन नवीन नाहि सूछ्म स्वतन्त्र परोचित्त बुद्धि मन है ॥
फालगो में नीर जैसे जौहर कृपान मारि छीर मध्य घृत त्यों हो पूरित गगन है।
बनादास बरन अकारनाम भिन्न होय हेरै न गगन फिरि ब्रह्म में मगन है ॥७५॥

सवैया

सूरति गौन करै न दिसा दस जानी तबै अति ठोस कसा है।
ठौर रही मिलि पानी से पानी से जानै सोई कहै कौन दसा है ॥
भारू सरीर भई जनु भार से या जड़ बीच करै यों बसा है।
दासबना परवाह नहीं कछु वन्दत को अरु कौन हंसा है ।७६॥

घनाक्षरी

हानि लाभ सोक मोह काम कोह द्रोह जाय बासना विनास आस तृष्ना कौन लेस है।
इन्द्री मन सांति बुद्धि सुद्ध भाव प्राप्ति होय अहंकार नास चित्त चंचल न देस है ॥
संसय बिनास अभय आलस अतीत अति नींद भूख स्वच्छ मन बारता विसेष है।
बनादास राग द्वेष दीरघ विकार त्यागि भागि मतबाद मुक्त जीवन हमेस है ॥७७॥

झूलना

हिये परकास तब मोह निसि नास फिरि कहां भवपास अभ्यास भारी।
प्रलय नहिं सृष्टि एक दृष्टि नित ब्रह्ममय जबै बिज्ञान का दीप बारी ॥
काम मद क्रोधगत बोध बिबेक मय जरो जंजाल जग सलभ झारी।
बनादास बाहाल निज रूप में रैनि दिन देस नहीं कालगति तासु न्यारी ॥७८॥

बोध आगाघ फिरि सोध का को करै चित्त नीरोध सुठि सहज माती।
पौन बिन गौन जल बीचि को उठै प्रकृति भै थकित पुनि दिवस राती ॥
कुम्भ परिपूर्न फिरि सब्द करता नहीं उड़ै क्यों पंख बिनु बिहँग जाती।
बनादास अन्तर बहिर अचल त्यों सन्तजन ब्रह्म रस चाखि रहि सुरति माती ॥७९॥

सवैया

आतम तृप्त अनित्य लखै जग ताहि कछू करनो नरहा है।
आठो याम छके अभिअन्तर कालहु को मति नाहिं तहां है ॥

जानि सकै कोउ भेद नही कछु मारग झीन अतीव गहा है।
दासबना गति नाही पिपील की टाडो लदाय को जाय तहाँ है ॥८०॥

घनाक्षरी

भूत औ भविष्य वर्तमान ब्रह्म सत्य एक माया को प्रपच सब बीच ही को बीच है।
केरा तरु सारन बिचार करै बार बार जेवरी मे साँप माने नर महा नीच है॥
जनम अनेक को अभ्यास परो मोटो सुठि ताहि करि फेरि फेरि परै मोह कीच है।
बनादास बाटिका अकास फली फूली देखि बिबिध प्रकार करि मृगवारि सीच है ॥८१॥

सेमर को सुमन सयानो मानि सेवै निति धुवाँ को धवल धाम रचे बार बार जू।
कमठ के रोम करि रोम रोम बाँधि गयो लावत गोहार बूडो मृगजल धारजू॥
ससा सीग सालत हिये मे चोट भाँति बहु बाँझिन को नाति बनि बैठत गँवार जू।
बनादास फटत अकास सियै मन्द मूढ होत न अरूढ सीस धरै भव भार जू ॥८२॥

सवैया

ज्यो नभ मे परिपूरन पौन तेही बिधि ब्रह्म भरा सब ठौरहि।
जैस अकास मे नीलता पेखिये ऐसहि जक्त नही बिधि औरहि॥
काच के मन्दिर मे गृह पाल मर्यो नित भूँकि न पावत कौरहि।
दासबना करि कै करुना रघुनाथ सुझावत आपने बौरहि ॥८३॥

ब्रह्म सरोवर मे जग बुद बुद उद्यम लीन भयोनिज ठौरहि।
को जलबीची को भिन्न सकै करि भूलि दिसा भ्रम मानत औरहि॥
छूटै नही जड चेतन गाँठि अनेकन साधन में नित दौरहि।
भानु बिना निसि कौन हरै पहिचाने न नाम सबै सिर मौरहि ॥८४॥

छप्पय

दृष्टादृष्ट अदृष्ट रहै निसि बासर जबही।
नही बासना लेस ब्रह्म सुख पावै तबही॥
नहि सकल्प बिकल्प बुद्धि देही जब छूटै।
रागद्वेष परिहरै निषेदो बिधि जब टूटै॥
मन को सब आसा तजै हरदम जोवत हा मरै।
कह बनादास बलराम उर भवसागर तबही तरै ॥८५॥

पायो सहज सरूप बोध दृढ निस्चय आयो।
आस बासना नास सहज भवसिन्धु सुखायो॥

तृन सम त्यागै वेद स्तुती आवै गुहरावै।
पदरज से तजि मोहि नेक संकोच न लावै॥
मत्त रहै नित ब्रह्म सुख कहाँ देस औ काल है।
कह निसि दिन कह दिसि विदिस जब रस एक बहाल है॥८६॥

नहि ईस्वर भय ताहि अपर को डर का आवै।
कहाँ काल कहँ मृत्यु स्वर्ग का नरक कहावै॥
को बूड़ा को तरा भर्म सम सारो रचना।
कहा सास्त्र मतबाद सिरान्यो बहु विधि पचना॥
ताको सुख जानत सोई और न बूझनहार है।
कह बनादास अति अगम गति भयो तिहूँ पुर पार है॥८७॥

स्वर्ग नरक अपवर्ग सकल मन कारन जानो।
मृत्यु लोक पाताल सास्त्र अरु वेद पुरानो॥
प्रलय सृष्टि थित अहै सर्व मन भीतर माहीं।
चौरासी लछ जोनि सकल मन को भ्रम आही॥
जथा बीज सब माहि बिथ मास एकादस नही जमै।
कह बनादास उपजत तबहि अब आवत पावस समै॥८८॥

रेखता

गया जो होय सो जानै नही तहँ आगि पानी है।
नही महि पौन नभ तहँवां कहाँ दीजै निसानी है॥
हरित नहि पीत सित असि तौ नही राता दिखाता है।
नही बारा नहीं बिरधा जुवा नहि जात आता है॥
नही कारा नही गोरा नही पीना न खीना है।
नही दाता नही मँगता धनी सो नाहि दीना है॥
सुबू नहि साम है तहँवां नही ससि सूर परकासा।
नही मघि आदि औसाना नही स्वामी न दासा है॥
नही मतबाद सास्त्रों का नहीं तहँ वेद रीचा है।
नही गुनतीन वैठारी नही ऊँचा न नीचा है॥
नही सो दूरि नहि नेरे खुला औ नाहि घेरा है।
नही लाँबा नही चौड़ा नही सरिता न बेरा है॥
भटकते लोग बहुतेरे पटकते सीस हैं लाखों।
करै कोइ जत्न बहुतेरो परै नहि पेखि इन आँखों॥
भरारस एक परिपूरन महा आनन्द है कूजा।
बना जो बूझ में आवै सदा एकै नही दूजा॥८६॥

दंडक

अचर चर रूप हरि चतुर दस भुवन लखि दृष्टि इक नींद बसुयाम सोवै।
साति पर्यंक बीबेक अस्थान मे मोहनिसि बिगत भव दुख खोवै॥
सोक सन्ताप चिन्ता अमित चूर भे तीव्र तृष्ना भई नास आसा।
बासना बृन्द सुठि बीज ससार को कपट पाखड दल दम्भ नासा॥
कामक्रोधादि मद लोम वैरी मरैं मान मत्सर मनोरथ बिगोये।
सकल सन्देह परवेह निरख व कहाँ अभय आनन्द बहु प्रकृति खोवे॥
तिरथ ब्रत जोग जप जज्ञ आचार तप पाठ पूजा पटकि भये न्यारे।
पाप अरु पून्य भे सुन्नि दोऊ बीज अति विधि उनोपेद सम सकन हारे॥
राग नहिं द्वेष पुनि हानि गिल्यानि कह कहाँ जमकाल कह मौत भोडी।
स्वर्ग अरु नक अपवर्ग को भान नहिं कहाँ मृत्यु लोक केहि हाथ बोडी॥
प्रलय नहिं सृष्टि एक दृष्टि अति इष्ट भो निष्ट बिज्ञान नहिं दिवस राती।
देस अवकाल दिसि बिदिसि को ख्याल नहिं ब्रह्म रस एक रहि सुरति माती॥
मोर औ तोर झकझोर को वोर भो एव आतम परम तत्त्व पाये।
सच्चिदानन्द परब्रह्म नहिं दूसरा महो हो यहो कैवल्य गाये॥
सदा रस एक अन्त.करन बोध जब बहुरि नहिं जीव करि कबहुँ माने।
यही परधाम नहिं ठाम कोई बसा नसा अति चढो फिरि काह जाने॥
सांति कैवल्य अरु ज्ञान बिज्ञान वैराग्य औ भक्ति तुरिया कहावैं।
क्रमै क्रम चढत ऊँचेक सब जाना जिमि चलत मग जथा मुकाम पावैं॥
चला सत कोस को जौन बीचे बसा मिलैगो सकल निज समय पाही।
पूर्ब पर भेद जहँ तहाँ ग्रन्थन विषे जान हारा लखै और नाही॥
बनादास ठेकान एक जासु उर नही रहै तहँ ठहरि सो साति होवै।
बचन मन बुद्धि पर कहै सो कौन विधि गूँग आसैं अहै नाहिं गोवै॥६०॥

सवैया

ब्रह्म मिलै कर साधन हैं सब साति कैवल्य सरूप कहे हैं।
ज्यो घृत सुद्ध न ससय है या महँ ऊष्न औ सीतल भेद लहे हैं॥
भक्ति स साति कैवल्य भो ज्ञान ते दोऊ भले भवताप दहे हैं।
दासबना जिमि इगला पिंगला चन्द दिवाकर नाम रहे हैं॥६१॥

घनाक्षरी

तत्त्व को बिभाग करि छानि जड़ चेतन को एक ब्रह्म दृष्टि ज्ञान ताही को बखाने हैं।
नवधा कही साधन को दसधा प्रवाह प्रेम नेम न अचार स्याम रूप उर आने हैं॥

परा है एकादस मिलत निराकार ब्रह्म ज्ञानहूँ से ऊँची दसा कोऊ जन जाने हैं।
तीनि गुन रहित त्रिलोक सुख तृन तुल्य बनादास ताहि को बिराग सन्त माने हैं ।।६२।।

ज्ञान ते विज्ञान अन्त सिद्धि कैवल्य होत परा तेहैं सांति मन बचन ते पार है।
पच्छपात रहित निषेध बिधि नाही तहाँ तीनिउ मुकाम सन्त जानै निराधार है ।।
अच्छ भानु अंस है बिलोकै पुनि ताहि बल दिनमनि हीन सोई देखै अँधियार है।
बनादास देखे राम कृपा के प्रकास करै आवै भली भांति सरासार को बिचार है ।।६३।।

छीन पुरुषारथ मलीन सोक मोह बुद्धि चिन्ता उत्साह गतहिंसा माहि प्रीति है।
असुचि अदृस्य नीद आलस औ दीन उर पाय मे निरत यह तम गुन रीति है ।।
नाना बिधि भोग रुचि उद्यम बिस्तार बडो हाथी घोड़ा राज चाह सब ही सो जीति है।
उर अभिमान तोष पाये न त्रिलोक सुख बनादास रजोगुन बहु प्रीति नीति है ।।६४।।

त्यागि कै निषेध विधि निग्त सदहि चित्त साधु सुर गुरु सेवा तीरथ बरत जू।
आस्रम बरन धर्म विहित मय उत्साह भक्ति औ बिराग ज्ञान साधन करत जू ।।
लज्जा नीच करम में कबहूँ न झूंठ भाषै अन्तर और ब्रह्म सुद्ध पाप को डरत जू।
हृदय उदार उपकार पर प्रिय सदा बनादास सतोगुन समुझि परत जू ।।६५।।

तिहूँ गुन वृत्ति बिषे अभ्यन्तर में ब्रह्म से अभेद ज्ञान नित दृढ़ गहे हैं।
सुखी निज आतम में सदा सुखी समाधिस्थ चित्त सुख दुख सम नहि कर्मकांड बहे है ।।
जो कछु सरीर पाय गुन व्रत मान होत इन्द्री गुन गुन ही में बरताय रहे हैं।
बनादास मुक्तिउ की चाह ना कदापि काल ताही को पुराण बेद गुणातीत कहे हैं ।।६६।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे
सान्ति खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

कुंडलिया

निज सरूप पाये नही तो साधन ;का कौन।
पैया कूटे भांति बहु पलटि न भे जल मौन ।।
पलटि न भे जल मौन छीन दिन दिन जिंदगानी।
देखी देखा गई समय परमौत तुलानी ।।
बनादास बसि कामना भये घरै घर दौन।
निज सरूप पाया नही तो साधन का कौन ।।६७।।

किये उपाय अनेक बिधि देह बुद्धि नहिं टूटि।
मारे मन ठौरै नहीं इन्द्रिन लीने लूटि ।।

इन्द्रिन लीने लूटि चित्त चूरन नहि कीना।
रहे न रामे राम भयो हङ्कार न छीना॥
जड़ चेतन की गाँठि जो बनादास नहि छूटि।
किमि उपाय अनेक बिधि देह बुद्धि नहिं टूटि।९८॥

नाना दृष्टि ना गई जहँ लैहै सब सृष्टि।
स्रुति पुरान मत सन्त को सिद्ध भया नहि इष्टि॥
सिद्ध भयो नहि इष्ट कृपा रघुनाथ न कीना।
रामनाम औ रूप भयो नाही जल मीना॥
बनादास तबही भला होय समष्टी दृष्टि।
नाना दृष्टी ना गई जहँ लैहै सब सृष्टि॥९९॥

नाम जपे को यही फल उर आवै सुत भूप।
आवै सम्यक् बोध को निस्चय सुद्ध सरूप॥
निस्चय सुद्ध सरूप नही ससय उर माही।
आसा तृष्ना नास सकल बासना बिलाही॥
बनादास धोखे नही फेरि परै भवकूप।
नाम जपे को यही फल उर आवै सुत भूप।१००॥

जो चेला नाही भया पलटि गुरू का रूप।
कसरि परी प्रारब्ध मे भजन किया नहि खूप॥
भजन किया नहि खूप खेल मे जावै चूका।
तीर गयो जब छूटि मिटै नहि मन की हूका॥
बनादास नृप को तनय जैसे होवै भूप।
जो चेला नाही भया पलटि गुरू का रूप॥१॥

गुरु चेला रघुनाथजू आतम एक समानि।
अब दूजा नहि रहि गया जहाँ कि ऐसी बानि॥
जहाँ कि ऐसी बानि कौनि बिधि मुख कोउ गावै।
बचन बुद्धि मन पार लखै जो जाय समावै॥
बनादास निज निज ठौर बने कछू नहि हानि।
गुरु चेला रघुनाथ जू आतम एक समानि॥२॥

कृपा अद्वैत होत नहि बूझै बूझनहार।
स्रुति पुरान मत सन्त को ऐसा चहो बिचार॥

ऐसा चही बिचार सिष्य गुरु एक समीपा।
चहे आतमा एक बरत ही बुझिगो दीपा॥
रहै चरन की धूरि ह्वै जुरै न एकोबार।
कृपा अद्वैत होत नहि ऐसा चहो बिचार॥३॥

जो ईस्वर मानै नहीं नास्तीक सो होय।
को साधू ऐसा अहै ईस्वर देइ बिगोय॥
ईस्वर देइ बिगोय ताहि के मुख मसि लागै।
करै भजन उपदेस मोह रजनी में जागै।
प्रीति प्रतीति दृढाइये हरि की हरि दिसि जोय।
जो ईस्वर मानै नही नास्तीक सो होय॥४॥

गाँव ठाँव तीनिउँ बने देखै भले विचारि।
जहाँ अद्वैत भेद है जहाँ द्वैत में हारि॥
तहाँ द्वैत में हारि भरा है सागर एका।
उपमा नहि कहि मिलै सन्त का धन्य विवेका॥
कला कुसल सो जानि है और न सकै सँभारि।
ठाँव ठाँव तीनिउँ बने देखो भले विचारि॥५॥

स्रुति पुरान मत सन्त को भाषत तत्त्व निचोरि।
पच्छपात की बात नहि कौन हकीकति मोरि॥
कौन हकीकति मोरि सकल उर प्रेरक गावै।
लेय मानि जो आपु बहै कहुँ थाह न पावै॥
बनादास जो कछु बनै सो प्रभु की मम खोरि।
स्रुति पुरान मत सन्त को भाषत तत्त्व निचोरि॥६॥

स्रुति पुरान सम्मत कहै प्रीति सदा निवहन्त।
पच्छपात की बात नहि यही मतो है सन्त॥
यही मतो है सन्त तिहूँ एकै मे साना।
जहँवाँ जैसेन होय कहै तहँ तैस ठिकाना॥
कर्म उपासना ज्ञान है आदि मध्य औ अंत।
स्रुति पुरान सम्मत कहै प्रीति सदा निवहन्त॥७॥

बीते दिन सोचै नही आवन की नहि आस।
वर्तमान सोचै नही राम दुवारे बास॥

रामदुवारे बास नास सहजे जग आसा।
नही वासना लेस भजन है स्वासा स्वासा॥
बनादास संसय नही कटै काल का पास।
बीते दिन सोचै नही आवन की नहिं आस॥८॥

सुद्ध सरन जा दिन भयो जीवत मरन मुकाम।
बनादास वाही घरी लहै परम बिस्राम॥
लहै परम विस्राम काम सारा सिधि होवै।
बाकी रहै न कोय तुरत भव रोग बिगोवै॥
कोरे कागज लिखि कह्यो सद्य लेय परधाम।
सुद्ध सरन जा दिन भयो जीवत मरन मुकाम॥९॥

जे जन भूले राम को उनकी कौन हवाल।
जो आवै सत्संग मे उलटि बजावै गाल॥
उलटि बजावै गाल जगत जालै अरुझाने।
नफा कि कौन हवाल हानि मूरहि मे आने॥
बनादास अजहूँ भजै सुधरि जाय तत्काल।
जे जन भूले राम को उनकी कौन हवाल॥१०॥

देखै नही सरीर दिसि जग से आतम भिन्न।
ज्ञान चच्छु लखि परत है क्यों जानै मति खिन्न॥
क्यो जानै मति खिन्न नैन हिय रोग घनेरा।
नहिं आये गुरु सरन भये नहिं हरि के चेरा॥
पावै सहज सरूप को बनादास भवछिन्न।
देखै नही सरीर दिसि जग से आतम भिन्न॥११॥

मही ब्रह्म परधाम हो ब्रह्म हमारा रूप।
अज अनीह अवछिन्न है यहाँ कहाँ भवकूप॥
यहाँ कहाँ भव कूप रूप अपनो जिन पाया।
वहाँ काल का जाल तहाँ नहिं तिरगुन माया॥
बनादास मन बुद्धि बचन आवै नही अनूप।
मही ब्रह्म परधाम हो ब्रह्म हमारा रूप॥१२॥

नारी मन ते दूरि भै गै चौरासी नाँच।
यामे कछु ससय नही मानो मन करि साँच॥

मानो मन करि सांच पांच के फन्द न परिये।
तिन्हें कहां संसार कबहुं जमकाल न डरिये॥
बनादास विषयहि अहै जीव ईस बिच कांव।
नारी मन ते दूरि भै गे चौरासी नांव॥१३॥

विषय रहित सोई रहै विषय सहित सो जीव।
जबहि विषय रहि जाय नहि कौन जीव को सीव॥
कौन जीव को सीव प्रकृति कारन को सारा।
भक्ति ज्ञान बैराग्य सांति कह प्रकृति गुजारा॥
बनादास तिय गोत सोइ जबही पायो पीव।
विषय रहित सोई रहै विषय सहित सो जीव॥१४॥

छूठा बरन अकार है ब्रह्म भरा चहुं पास।
दसो दिसा रस एक है इक रितु बारहमास॥
इक रितु बारहमास मिलै ससार न हेरे।
लह्यो सकल फल सुकृत भेद साहब नहि चेरे॥
बनादास जिमि नभ पवन जल पै सुमनहि बास।
छूठा बरन अकार है ब्रह्म भरा चहुं पास॥१५॥

सांति भया सब अंग से आयो जाके दृष्टि।
जैसे पच्छी पंख बिन एक ठौर पै तिष्ट॥
एक ठौर पै तिष्ट कर्म ज्यों अंग समेटे।
बारह प्रगटै अवसि भरा होवै जो पेटे॥
बनादास तब का कहै भयी आतमा निष्ट।
सांति भया सब अंग से आयो जाके दृष्टि॥१६॥

जबै सांति सर्बाङ्ग भो मतमतांत नहि कोय।
सांति सुखोपति सोवते कछू भान नहि होय॥
कछू भान नहि होय तुहिन बोरागलि पानी।
मीन भई जब नीर द्वैत कैसे पहिचानो॥
मनबुधि बानो परे है बनादास लखि सोय।
जबै सांति सर्बाङ्ग भो मतमतांत नहि कोय॥१७॥

द्वैता द्वैत अनूप मत आदि अंत निर्बाह।
मध्यहु में सन्देह नहि हरि के हाथ निर्बाह॥

हरि के हाथ निबाह हिये को ज्ञान प्रकासै।
जो पालन करि कृपा करत नहिं ताकी नासै॥
बनादास बाँको बिरद कोउ न पावत थाह।
द्वैताद्वैत अनूप मत आदि अंत निर्बाह॥१८॥

जल बोरा हिम उभय नहिं भूषन कनक समान।
बारि बीच बानी अरथ लोह खड्ग नहिं आन।
लोह खड्ग नहिं आन नृपति नृप को सुत होई।
तिय पिय को अर्धंग सखा मे भेद न कोई॥
बनादास चेलै गुरू चारिउ जुग परमान।
जल बोरा हिम उभय नहिं भूषन कनक समान॥१९॥

जीव ईस का अंस है निस्चय एक न कीन।
कौन भेद यामे पडा निज निज मत लवलीन॥
निज निज मत लवलीन जीव ईस्वर दुइ नाही।
एक जाति यक भाव रूप यक सर्ग माही॥
विषय गहे छुतिहा भया महा करम का होन।
जीव ईस का अंस है निस्चय एक न कीन॥२०॥

सोई इच्छा ईस की यामे ससय नाहिं।
प्रथम करम याके कहाँ कहा विषय रस माहिं॥
कहा विषय रस माहिं बिलग जब जीवहि कीना
जबहिं गया घर छूटि होन चाहै तब दीना॥
बनादास ईस्वर कृपा जैसे ईस्वर याहि।
सोऊ इच्छा ईस को याम ससय नाहिं॥२१॥

चिनगी दीप मसाल पुनि अगिनि एक ही रूप।
बोत पोत तरु बीज है न्यारे नहिं रवि धूप॥
न्यारे नहिं रवि धूप ऊख रस होति मिठाई।
जबही गारै घोरि पलटि कै रसै कहाई॥
महि मकान दूजा कहा द्वैताद्वैतै खूप।
चिनगी दीप मसाल पुनि अगिनि एक ही रूप॥२२॥

चतुर ब्यूह अवतार भो राम भरत रिपु दौन।
लछमन हूँ जुत एक है यामे ससय कौन॥

यामें संसय कौन पिता सबही को एका।
बाँटे हीसा चारि सुवन दुइ दुइ न अनेका॥
जन्मी जात्र एक संग चारिउ आनन्द भौन।
चतुर्व्यूह अवतार भो राम भरत रिपु दौन॥२३॥

कृष्न और बलराम भे याही भाँति न भेद।
अनिरुद्धो परद्युम्न पुनि ऐसहि बरनत वेद॥
ऐसहि बरनत बेद खेद मानत नहिं कोई।
चहूँ एक पुनि चारि लेउ हिय नैनन जोई॥
कारा छे परत्यच्छ का धोखे विधि न निषेध।
कृष्न और बलराम भे याही भाँति न भेद॥२४॥

सीता औ रघुनाथ को कहौ उभय किन कौन।
जल बीची बानी अरथ उपमा ताको दीन॥
उपमा ताको दीन कृष्न राधा सम गाये।
गोलो कौनहिं भिन्न एकही रूप कहाये॥
उपजै साँची प्रीति जब ह्वं जावै जलमीन।
सीता औ रघुनाथ को कहौ उभय कौन किन॥२५॥

देह धरे में रीति यह निराकार बिन देह।
ईस्वर जीव सरूप यक निस्चय जानौ एह॥
निस्चय जानौ एह भाव रस भेद अपारा।
हरि जैसे को तैस पुरानौ बेद पुकारा॥
निस्चय द्वैताद्वैत मत को देखैं परवेह।
देह धरे में रीति यह निराकार बिन देह॥२६॥

देही माया मय सदा जड़ असुद्ध दुख रूप।
बिष्टा वह कृमि भस्म है अन्ते जासु सरूप॥
अन्ते जासु सरूप बीज रज आदि बखाना।
मध्य उपद्रव खानि कोई बिरला पहिचाना।
बनादास आतम सदा तन ते पृथक् अनूप।
देही माया मय सदा जड़ असुद्ध दुख रूप॥२७॥

जबही आयो मान उर तबही ज्ञान नसान।
मान दीजिये आन को जो तेहि लागि भुखान॥

जो तेहि लागि भुखान दान दीनहिं को नीका।
घर मे दाम करोरि पान कोउ दिया सो फीका॥
बनादास सोभा अहै ज्ञानी सदा अमान।
जबही आयो मान उर तबही ज्ञान नसान॥२८॥

थूल मान ते होत है जड अकास का ज्ञान।
जब अस्थूल अभाव भो गगन ब्रह्म निर्बान॥
गगन ब्रह्म निर्बान भरा चेतन यक धारा।
आदि मध्य नहिं अन्त साम नाहीं भिनुसारा॥
बनादास निसि दिन कहा दिसिउ बिदिसि नहिं जान।
थूल मान ते होत है जड अकास का ज्ञान॥२९॥

अपनी देही झूठ जब झूठा सब संसार।
पार कहा सो पार है वार कहा सो वार॥
वार कहा सो वार नेक संसा नहिं आनै।
वृद्ध मुक्त की हाल आप तजि और न जानै॥
ताही को मुख मीठ जो मीठा खानेहार।
अपनी देही झूठ जब झूठा सब संसार॥३०॥

भवन भरी वहु द्रब्य है कंगला कहै जो कोय।
बनादास सो बचन सुनि अतिही आनद होय॥
अतिही आनद होय अधिक जो होय भुखाना।
लाखों कहै अघान तासु मन नेक न माना॥
दुलहिनि दुलहा संग सुखी जग देखत दिये रोय।
भवन भरी वहु द्रब्य है कंगला कहै जो कोय॥३१॥

चाल चलै गज मत्त जिमि कुतिया भुकै अनेक।
वाको कछु न भान है निज सुख नहिं वहबेक॥
निज सुख नहिं कहिबेक मूक के स्वाद समाना।
कहै न गोवै सोइ गौर करि लोगन जाना॥
बनादास चातक सुखी सदा स्वाति की टेक।
चाल चलै गज मत्त निज कुतिया भुकै अनेक॥३२॥

भक्ति गरीबी राह बहु भला बुरा कहि जाय।
पुरवाई पछिपाव सम हिये न बेधै आय॥

हिये न बेधे आय मरे को मारै कोई।
वाके कछू न भान हाथ दूखै गोसाई॥
बनादास ज्यो दूब को गदहा भी चरि खाय।
भक्ति गरीबो राह बहु भला बुरा कहि जाय॥३३॥

जो कछु परै सो सब सहै ताको साधू नाम।
मान सुखो अपमान दुख यह दुनियाँ को काम॥
यह दुनियाँ को काम करै जो कोटि बड़ाई।
रहै आपनी ठौर नही उर सकै जनाई॥
जो कोऊ अपमान कर बनादास वसुयाम।
मान सुखो अपमान दुख यह दुनियाँ को काम॥३४॥

जो कोटिक अनहित करै तासु विचारै नीक।
चारिउ जुग चलि आय है यह साधुन की लीक॥
यह साधुन की लीक चन्द नहि काटि कुठारी।
निज दिसि देत सुगन्ध तासु कैसी महिमा री॥
ऊख कोल्हू में पेरते सो रस देवै ठीक॥
जो कोटिक अनहित करै तासु बिचारै नीक॥३५॥

मलो मूत्र महि पर करै सो लागै ह्यो खादि।
सुन्दर अतिहो भूमि थल खोदि करै बरबादि॥
खोदि करै बरवादि पृथ्वी रस देत घनेरा।
ताते भारो सुजस लोक वेदो सब टेरा॥
छमा नाम ताते परेउ करनी अकथ अनादि।
मलो मूत्र महि पर परै सो लागै ह्यो खादि॥३६॥

सन्मुख विमुख न काहु दिसि सत्रु मित्र नहि बुद्धि।
बनादास महिमा अमित ऐसी पाये सुद्धि॥
ऐसो पाये सुद्धि काम घृक जिमि तरु कामा।
सब को सम फल देत बड़ो बरदायक नामा॥
समता लहै न सन्त की नित मनही से युद्धि।
सन्मुख बिमुख न काहु दिसि सत्रु मित्र नहि बुद्धि॥३७॥

रसना दसन को रीति है साधू औ संसार।
जीभ भलाई भल करै तेहि काटत नहि बार॥

तेहि काटत नहिं बार घात पाये नहिं चूकै।
हसा मोती चुनै दिवस नहिं लखत उलूकै।।
दांत उखारे आपु दुख ऐसा साधु बिचार।
रसना दसन की रीति है साधु औ ससार।।३८।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधकरामायणे
सान्ति खण्डे भवदापत्रयताप बिभजनोनाम चतुर्थोऽध्याय ।।४।।

मिला रहै सब भाँति से सब दिन निरखै बेह।
जो लखि पावै छिद्र कहुँ तुरित उड़ावै खेह।।
तुरित उड़ावै खेह देह भरि याही रीती।
लीन चहै फल चारि तेही लगि सारी प्रीती।।
साधु सँभारै रूप निज तिनही मे निन गेह।
मिला रहै सब भाँति से सब दिन निरखै बेह।।३९।।

देव बिरोधी साधु को बैरी देखै मूढ।
मोते ऊँचे जात है सदा अकाज अरूढ।।
सदा अकाज अरूढ बास इन्द्रिन के द्वारा।
देखैं विषय बयारि कपाट न खोलत बारा।।
बनादास का करि सकै जो जाना पद गूढ।
देव बिरोधी साधु को बैरी देखै मूढ।।४०।।

माया की गति बिदित है छन छन तकै अकाज।
परी निगाडी बानि कसि तनिक न आवै लाज।।
तनिक न आवै लाज काज कीनो निज चाहै।
ज्ञान विराग सहाय भक्ति सब काल निबाहै।।
बनादास तेहि का करै बसै राम के राज।
माया की गति बिदित है छन छन तकै अकाज।।४१।।

कलि कराल को का कहै कमर कसे रिसि आय।
जो कोऊ हरि मग चलै ताको करै उपाय।।
ताको करै उपाय विघ्न नाना बिस्तारै।
जाते परै न पूर कूर नित यही विचारै।।
बनादास मुख सुई के नहीं सुमेरु समाय।
कलि कराल को को कहै कमर कसे रिसि आय।।४२।।

तन रिपु मन रिपु वचन रिपु वैरी घर न घोर।
बुद्धि चित्त हंकार रिपु दुसमन पंच समीर॥
दुसमन पंच समीर दसौ इन्द्री रिपु भारी।
पंच बिषय बरियार काल की जनु महतारी॥
आस बासना महा रिपु तृष्ना को तुठि पोर।
तन रिपु मन रिपु बचन रिपु बैरी घरै न घोरि॥४३॥

तीनि लोक रिपु साधु को बेदौ करै खँभार।
बिधि निषेध नाना रचे कर्मकांड बिस्तार॥
कर्मकांड विस्तार नही यक निस्चय भाखै।
भै रोचक सिद्धान्त ब्यंग को संख्या राखै॥
सबहि किये संकोच वस जीव परे मँझधार।
तीनि लोक रिपु साधु को बेदौ करै सँभार॥४४॥

सन्त गुरू रघुनाथजू सदा सहायक तीनि।
तिहूँ पुर बैरी का करै इनकी गति अति झीनि॥
इनकी गति अति झीनि छोह सब दिन करि आये।
परै बिघ्न बहु आय तेही में ठावें दिखाये।
साधु सान्ति भे ताहि ते लिये तिहूं बल बीनि।
सन्त गुरू रघुनाथ जू सदा सहायक तीनि॥४५॥

सब बिधि परदा राखते राम गरीब नेवाज।
देखि बड़ाई आपनी जोगवत जन की लाज॥
जोगवत जन की लाज जगत में हँसी न होई।
आवै मेरे सरन बहुरि निन्दा कर सोई॥
बनादास बूझे बनै बरने होय अकाज।
सब बिधि परदा राखते राम गरीब नेवाज॥४६॥

लोक और परलोक को पल छन करै सँभार।
पलक पूतरी ते अधिक मंजारी ज्यों वार॥
मंजारी ज्यों वार समुझि कृत जाय बिकाई।
रोम रोम रह रिनी कहाँ बदला वनि आई॥
बनादास बलहीन को रामै एक अधार।
लोक और परलोक को पल छन करै सँभार॥४७॥

बिना हेत कल्यान कर सन्त एक जग माहि ।
उपमा हेरे लोक तिहुँ कहूँ दूसरो नाहि ।
कहूँ दूसरो नाहि करै बैरिहु को नीका ।
जाके सत्रु न मित्र अगम अति तासु बिबेका ॥
बनादास देखे भले लेहै मोहि निबाहि ।
बिना हेत कल्यान कर सन्त एक जग माहि ॥४८॥

गुरु से दाता कौन जग जिन काटै भव फन्द ।
ताको कृत मानै नही ताते को मति मन्द ॥
ताते को मति मन्द ईस भव जाल मे डारा ।
ताके बल को तोरि बेगि गुरुदेव उबारा ॥
बनादास नासे भले कालहु का दुख द्वन्द ।
गुरु से दाता कौन जग जिन काटे भव फन्द ॥४९॥

कहन सुनन को तीनि है सन्त गुरू औ राम ।
तिहूँ काल एकै अहै समुझि देखु परिनाम ॥
समुझि देखु परिनाम काम तीनिउ को एका ।
कहु लै बरनै कौन स्वाद जब मिलै बिबेका ॥
बनादास साधै यही परमारथ बसुयाम ।
कहन सुनन को तीनि हैं सन्त गुरू औ राम ॥५०॥

जे सुधरे सतसंग मे दूजो नही उपाय ।
चारिउ जुग तिहूँ काल मे चहूँ बेद इमि गाय ॥
चहूँ बेद इमि गाय बुद्धि बल और बिबेका ।
कीरति मति गति भुक्ति ठाँव जानी सो एका ॥
छमा दया औ सूरता धीरज धर्म निकाय ।
जे सुधरे सतसंग मे दूजो नही उपाय ॥५१॥

पूरन हरि की कृपा है सत संगति को लाहु ।
स्रुति पुरान सास्त्रौ अगम सतसगहि मे थाहु ॥
सतसंगहि मे थाहु बहुरि सब जात हेराई ।
तपतीरथ ब्रत नेम जोग जप मख न सुहाई ॥
बनादास पायो जबै निज सरूप अवगाहु ।
पूरन हरि की कृपा है सतसगति को लाहु ॥५२॥

ज्ञानभक्ति बैराग्य पुनि विज्ञानहुँ का बोध।
निर्गुन सगुन का मिलै सकल भाँति से सोध ।।
सकल भाँति से सोध रहै संदेह न कोई।
भवसागर अति अगम छनक में सोखै सोई ।।
बनादास बिन स्रम हिते होवै चित्त निरोध।
ज्ञानभक्ति बैराग्य पुनि विज्ञानहुँ का बोध ।।५३।।

रागद्वेष राखै नही बिधि निषेध को हानि।
आस बासना नास कै तृष्ना तीव्र बिलानि ।।
तृष्ना तीव्र बिलानि मोह का मूल उखारै।
काम क्रोध मद लोभ मान को खनि खनि मारै ।।
दंभ कपट पाखंड छल छन हो माँहि नसानि।
राग द्वेष राखै नही बिधि निषेध को हानि ।।५४।।

सतसंगति के महतु को सेष कहत सकुचाय।
स्रुति पुरान औ सारदा कोऊ पार न पाय ।।
कोऊ पार न पाय चारि मुख सकै न गाई।
नारद और गनेस महेसौ करत बड़ाई ।।
बनादास स्रीमुख कहैं कोहूँ ते अधिकाय।
सतसंगति के महतु को सेष कहत सकुचाय ।।५५।।

पारस लोहा कनक कर सतसंगति कर सन्त।
अतिही अगम सरूप है कोऊ लहै न अन्त ।।
कोऊ लहै न न अन्त सन्त सम सन्तन आना।
सन्तै पाये मरम अपर कोऊ तन जाना ।।
निज महिमा ते ऊँच जेहि भाषत स्रीभगवन्त।
पारस लोहा कनक कर सतसंगति कर सन्त ।।५६।।

बनादास नामै भयो बिगरा सकलो अंग।
सो पायो सत्संग जब बेगि भयो भवभंग ।।
बेगि भयो भवभंग जंग कलिजुग भी हारा।
तंग भई भय काल गंग की मानहुँ धारा ।।
सुद्ध भया सर्वांग ते लगो राम का रँग।
बनादास नामै भयो बिगरा सकलो अंग ।।५७।।

बनादास को बस कहाँ मानहुँ बन की घास।
बनै भई बनही गई कोऊ गया नहि पास॥
कोऊ गया नहि पास दास पद दुर्लभ ताको।
इच्छा सुर नर सबै करत ब्रह्मादिक जाको॥
सो पाये सत्सग के सवहि पूजो आस।
बनादास को बस कहाँ मानहुँ बन की घास।५८॥

राम भलाई आपनी काको भना न कीन।
करनी करतब कछु नही सर्व अग से हीन॥
सर्व अग से हीन दीन अतिही बहु भाँती।
भापत साँची बात बदत नहि ठकुरसुहाती॥
बनादास बड काम किय मोहि सत्सगति दीन।
राम भलाई आपनी काको भला न कीन॥५९॥

कृत समुझे रघुनाथ को रोम रोम बिकि जाय।
कोटि कलप लय उरिन नहि करै निवेदन काय॥
करै निवेदन काय एक नहि कोटि सरीरा।
तबहुँ किये कछु नाहिं रिनी सब दिन रघुबीरा॥
सरन सरन भापा करै पाहि पाहि प्रभु पाय।
कृत समुझे रघुनाथ को रोम रोम बिकि जाय॥६०॥

पटतर सीतानाथ को हेरै मन बच काय।
तीनि लोक तिहुँ काल मे चारिउ जुग चलि जाय॥
चारिउ जुग चलि जाय चारिहू बेद बहावै।
खोजे सास्त्र पुरान कहूँ उपमा नहि पावै॥
सारद सेस गनेसहू सिव ब्रह्मा थकि धाय।
पटतर सीतानाथ को हेरै मन बच काय॥६१॥

एको अग न मिलि सकै सकल लै आवै कौन।
कहँ घुँघुची सुम्मेरु कहँ रहै मनै मन मौन॥
रहै मनै मन मौन कौन अस बुद्धि बिसाला।
बरनै सील सनेह रूप गुन दसरथ लाला॥
छमा दया औ तेज बल करै दीन दुख द्रौन।
एको अग न मिलि सकै सकल लै आवै कौन॥६२॥

सकलो अंग अथाह है रघुपति कह सब कोय।
ताते मम अवगुन अधिक पार कहे किमि होय।।
पार कहे किमि होय गोय राखो केहि लागी।
बनो नये को काम राम माफिक हत भागी।।
बनादास निज ओर से बहुरि बनावो सोय।
सकलो अंग अथाह है रघुपति कह सब कोय।।६३।।

अवगुन गुन की बिधि मिली तौहूँ नाता लाग।
याहूँ मिमु करुना करै तो भी पूरन भाग।।
तो भी पूरन भाग पलक में सकल नसावै।
सूल कोटि सुम्मेरु आगि लागति दहि जावै।।
बनादास निसिदिन चहै राम चरन अनुराग।
अवगुन गुन की बिधि मिली तो भी नाता लाग।।६४।।

करम बचन मन बुद्धिकरि भापत हों सति भाय।
कोरे कागज लिखि कहों कहूँ न मन ठहराय।।
कहूँ न मन ठहराय सपन में आन ठिकाना।
रामनाम अवलम्ब कमल चरनन को ध्याना।।
बनादास निज रूप को ज्ञान कृपा रघुनाथ।
करम बचन मन बुद्धि करि भापत हो सति भाय।।६५।।

तन मन इन्द्री रुचि सदा पालै अति हित जानि।
बेप बनाये साधु को रघुपति राखत कानि।।
रघुपति राखत कानि लखत अपनी सिद्धाई।
भूलि जात छन माँहि समुझि निज मान बड़ाई।।
अन्तर्यामी जानि सब लेत कछू नहि मानि।
तन मन इन्द्री रुचि सदा पालै अतिहित जानि।।६६।।

जन्म जन्म भक्ति करो इनहीं को हित मानि।
ताते अजहूँ छुटत नहि परिगो पोढ़ो बानि।।
परिगो पोढ़ो बानि जतन आनत बहु तेरो।
परेउ पोढ अभ्यास नेक नहि होत निबेरो।।
तुम्हरै सब रचना अहै किये तुम्हारे हानि।
जन्म जन्म भक्तो करो इनही को हित मानि।।६७।।

महिमा बूझै सन्त की का मानै कोउ साधु।
होन जोग नहिं लखि परै अतिही अगम अगाधु॥
अतिही अगम अगाधु कोऊ अग होय न कीना।
हुँमड हुँमड मचा रोग कोउ लखै न छीना॥
बनादास मन बचन क्रम राम नाम आराधु।
महिमा बूझै सन्त की का मानै कोउ साधु।६८॥

उर प्रेरक सीतारमन भापे सम्यक् बोध।
अपनी दसा न लखि परै ताते परत बिरोध॥
ताते परत बिरोध कहै सो दसा न होई।
सब कोउ झूठा बदै सास्त्र का सम्मत सोई॥
सन्तन को पीछा लिये हरि जस चित्त निरोध।
उर प्रेरक सीतारमन भापे सम्यक् बोध॥६९॥

साधु मानिये जानि का रही कसरि जो लागि।
अब जैए काक सरन तुम्हरे पद से भागि॥
तुम्हरे पद से भागि नहीं तिहुँ लोक ठिकाना।
काल कर्म गुन बली तजत नहिं बाँधे बाना॥
असमजस लागत अतिहि जरे न नामहुँ आगि।
साधु मानिये जानि का रही कसरि जो लागि॥७०॥

सब प्रपच झूठा अहै यही परत है जानि।
साँचे तुमही एक हो और सकल जड मानि॥
और सकल जड मानि झूठ मे झूठै खेलै।
मतमतात बहु भये ताहि कर मिलत न मेलै॥
हो तूँ एकै काल तिहुँ भले परयो पहिचानि।
सब परपंच झूठा अहै यही परत है जानि॥७१॥

सुख झूठे दुख झूठ है झूठे तन मन जान।
गुन स्वभाव झूठे अहैं झूठे इन्द्री प्रान॥
झूठे इन्द्री प्रान बुद्धि चित औ हकारा।
झूठा सब परपच झूठ अनिही संसारा॥
झूठे मह जो सुनन है सत्य ब्रह्म निर्बान।
सुख झूठे दुख झूठ है झूठे तन मन जान॥७२॥

तिहुँ लोक झूठे अहैं झूठे मन का ख्याल।
पुष्पित बानी बेद की सुनि भूलै बुधि बाल॥

मुनि भूलै बुधि बाल काल गति जानि न जाई।
झूठे माया जाल मरै सब झूठे धाई॥
छोरन वाला और नहिं केवल दसरथ लाल।
तिहूँ लोक झूठे अहैं झूठे मन का ख्याल॥७३॥

निराकार ईस्वर सदा जीव विना आकार।
जो वह सगुन सरूप है इहँऊ तन व्यवहार॥
इहँऊ तन व्यवहार अमल सुखरासि कहावै।
चेतन आतम नाम सोई ब्रह्मौ ठहरावै॥
भेद कौन विधि मानिये विषय गहे मँझधार।
निराकार ईस्वर सदा जीव विना आकार॥७४॥

तीनिउँ गुन लय विषय है जीव ईस का भेद।
गुनातीत जबही भयो भेद रहित कह वेद॥
भेदरहित कह वेद अहै त्रिगुनात्मक देही।
तासे बुद्धौ भिन्न लखै आतम विधि येही॥
बनादास नाही तहाँ फिरि विधि और निषेध।
तीनिउँ गुन लय विषय है जीव ईस का भेद॥७५॥

निर व्यवहार सरूप है द्वैत रहित सब काल।
जाको नाम विरक्त है तहाँ कहाँ जग जाल॥
तहाँ कहाँ जग जाल काल सम लागत ताहीं।
देही की प्रारब्धि लगी सो संगै माहीं॥
बनादास बूझे विना स्वारथ वसि व्यवहार।
निर व्यवहार सरूप है द्वैत रहित सब काल॥७६॥

दुख की आसा जतन नहिं बरबस भोगत सोय।
सुख की आसा अरु जतन मृषा करै सब कोय॥
मृषा करै सब कोय दुख ज्यों बरबस आवै।
सुख ऐहै तेहि भाँति लिखा सो कौन चलावै॥
बनादास दोऊ भ्रमैं हिय आँखिन ते जोय।
दुख की आसा जतन नहिं बरबस भोगत सोय॥७७॥

दुख सुख औसत असत से माँति भये जन संत।
भोगत आतम मोद को पटतर कोउ न लहंत॥

पटतर कोउ न लहंत बुद्धि मन आव न बानी।
गूंगे कैसा स्वाद कौन बिधि देय निसानी॥
बनादास कृतकृत्य भे भव भ्रम कीने अन्त।
दुख सुख औसत असत से सांति भये जन सन्त॥७८॥

पराबुद्धि परचै भई तरा तबै संसार।
नहिं बिकल्प संकल्प है सूछम जासु बिचार॥
सूछम जासु बिचार छानि जड़ चेतन डारै।
आपो ब्रह्म समाय जाय को ताहि निकारै॥
बनादास यक दृष्टि है सांति बढ़ाव निहार।
पराबुद्धि परचै भई तरा तबै ससार॥७९॥

है नाही के बीच मे ब्रह्म छिपा सब काल।
पराबुद्धि लै करति हैं ब्रह्मानन्द बहाल॥
ब्रह्मानन्द बहाल ब्रह्म लखि ब्रह्म हावै।
ज्यो मदिरा घट कोटि परै सब सुरसरि जोवै॥
बनादास नहिं और बिधि जरै जगत जजाल।
है नाही के बीच मे ब्रह्म छिपा सब काल॥८०॥

॥ इति श्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे सांति खण्डे भवदापत्रयताप बिभंजनोनाम पंचमोऽध्यायः॥५॥

चेतन हस बिहार कर सुन्नि सरोवर माहिं।
बनादास मन बचन पर चित्त समावै नाहिं॥
चित्त समावै नाहिं कहै उपमा किमि ताको।
फिरि कछु नाहिं सुहात ताहि रस में जो छाको॥
बिना तहाँ प्रापति भये सांति दिखावै काहि।
चेतन हंस बिहार कर सुन्नि सरोवर माहिं॥८१॥

एक दृष्टि आये बिना सांति कौनि बिधि होय।
एक आप जग रूप बहु ईस्वर माया दोय॥
ईस्वर माया दोय निगाह न जावै खोटी।
परमारथ पथ छोड़ि गगन की पोवै रोटी॥
बनादास यक आतमा निस्चय करै न कोय।
एक दृष्टि आये बिना सांति कौनि बिधि होय॥८२॥

रेखता

करै प्रारब्ध का तोंबा ज्ञान गुदरी अनोखी है।
सांति पर्यंक ज्यों अजगर भांति महि देह पोखी है॥
जो इच्छा राम के आवै तेही में नित्य राजी है।
परा तुरिया के कुरिया में सन्त संग में समाजी है॥
सुखी सुख में न दुख दुख मे करम का भोग सारा है।
किया धरि देह सो भोगै मुझे जीता न हारा है॥
बिरागौ त्याग का सोंटा प्रेम पद कंज मोटा है।
लँगोटा पैज का पोढ़ा बना सन्तों में छोटा है॥८३॥

सवैया

प्रथमै सतकर्म करै हरि हेत भलो विधि मे फल आस बिहावै।
त्यागि गृहाश्रम होय उपासक तो उर मोद कहा नहिं जावै॥
बरबस ज्ञान दबाय लियो रघुनाथ कृपा तब द्योत नसावै।
दासबना लहि सांति अनूपम सो सब अंग से साधु कहावै॥८४॥

तीनिउँ कांड भये बिनु पूर कहो किमि आवा ओ गौन नसावै।
एक सरीर में एकउ दुर्लभ तीनिउँ सिद्धि कृपा प्रभु गावै॥
जन्म अनेक को साधन भूरि भये बिन मुक्ति कहाँ सन आवै।
दासबना स्रुति सन्त को सम्मत और प्रकार न भव रुज जावै॥८५॥

कुंडलिया

परिपूरन सर्वत्र हौं आनंद सिन्धु समान।
आदि मध्य अवसान बिनु हमैं छोड़ि नहिं आन॥
हमैं छोड़ि नहिं आन रहे नहिं अन्तष्करना।
अब को करै बिचार बचन ते केहि विधि बरना॥
बनादास आवै नहीं लोक बेद तन मान।
परिपूरन सर्वत्र हौ आनंद सिन्धु समान॥८६॥

घनाक्षरी

सांति सिन्धु सुवनन राखै सत असत को जैसे बन माहि आये साउज परात है।
प्रबल पवन जैसे बारिद उड़ाय देत खग कुल केतु करै उरग को घात है।
ऐसे आस बासना उपाय गुन बृत्ति नासै समय के आये ज्यों झरत तरुपात है।
बनादास बेद विधि साधन औ सिद्धि बहु बिना आये सांति भवसिन्धु न सुखात है॥८७॥

सवैया

साति सिरोमनि है सबको जेहि आये कछू नहि और सुहाई ।
कचन ज्यो सब धातुन मे पुनि भोजन मे जिमि पाय सगाई ।।
ज्यो नर मे नर नाहक हावत औ खग मे खगराज बडाई ।
दासबना चहुँ मुक्तिन मे तिमि वेद पुरान प्रमान सदाई ।।८८।।

घनाक्षरी

साधन नखत सारे भानु से प्रकास साति मुक्तिन मे मुख्य मुक्ति जानत सुजान है ।
बेद पै पयोधि औ उपनिषद दधि सम माखन है गीता करे श्रीमुख प्रमान है ।।
साति घृत बिषद परै न जाते और कछु सन्त जन सब दिन करत बखान है ।
बनादास खाय स्वाद जानै सोई भली भाँति षटरस व्यजन न आवै अनुमान है ।।८६।।

सवैया

वेद पयोधि औ मन्दर ज्ञान बिराग अहै रजु जानु सुजाना ।
सन्त है देव मथे स्रद्धाजुत काढे है साधन माखन नाना ।।
भक्ति कृसानु मे ताय भली बिधि भै घृत साति सुधा के समाना ।
पान किये हरकाल को नासिनि दासबना नहि आना न जाना ।।६०।।

साति के आये अमात न दूसर पूरन कुम्भ न तोय समाना ।
पेट भरे जिमि फेरि न पावत भोजन होय सुधा सम नाना ।।
लोकहु वेद प्रपच को नासत राखत नाहि तिहूँ पुर माना ।
दासबना को कहे पतियाय है जाय बसै सो भली बिधि जाना ।।६१।।

घनाक्षरी

करम ते भक्ति पुनि भक्ति ते विराग ज्ञान ज्ञान ते बिज्ञान पुनि ताते परा भक्ति जू ।
सोचऊ न चाह जहाँ अगम अथाह गति ब्रह्म भाव भये पर परा अनुरक्ति जू ।।
ज्ञान हूँ बिराग औ बिज्ञान को उदड भाव ताते परे परा इन तिहूँ ते बिरक्त जू ।
बनादास ताहू ते बिसद कछु सातिपद मन बुधि बचन न आवै अति सक्ति जू ।।६२।।

बेद वृच्छ साखा उपसाखा बहु साधन है मूल सतसग ताको सुमन बिराग है ।
ताको फल राम भक्ति अमल अनूप अति पुनि ज्ञान बीज कवि करत बिभाग है ।।
सोई फल रस साति सन्तजन भोगी ताके जाके खाये फेरि न कतहूँ अनुराग है ।
बनादास एक एक दुर्लभ को पार जाय सकल सुलभ प्रभु कृपा अहो भाग है ।।६३।।

सवैया

सांत सरोवर जाहि मिलै जनु तीर अगाघ परो गज भारी।
तीनिउं तापन ब्यापत है गृह में जिमि बैठि रहै नरनारी॥
आतप बात नही हिम बेघत बर्षत है बहु ऊपर वारी।
दासबना जिमि कौंच के आड़ ते लागत अंग नही तरवारी॥६४॥

कै बहु उक्ति औ जुक्ति सराहत आनंद कैसे कहै बुधिभारी।
अच्छर माहि सो आवत नाहि बकै बहु ताहि ते जानु गँवारी॥
आसय मिलै कछु याही के द्वार असब्दहु को बहु बार बिचारी।
दासबना पहिलो दरजा पराबुद्धि है सांति मिलावन हारी॥६५॥

हीन अजुक्त अहै बुधि ते बिनु बुधि बनै नहि भावना भारी।
भाव बिना नहि आवत सांति न सांति बिना बिधि कोटि सुखारी॥
जौन सुखी नर देह मृषा भई कौन वे नाहक मूरि में हारी।
दासबना यह गीता प्रमान कहे करुना करिकै गिरिधारी॥६६॥

आसा नदी पुनि बासना नीर मनोरथ बीची अनेक बिधाना।
राग है ग्राह कुतर्क सो कूरम चिंता औ सोक करार समाना॥
भौंर गँभीर है मोह महा तरु धीर बिबेक को काटत नाना।
दासबना सरि घोर भयंकर सांति लहे तेइ पार न आना॥६७॥

मोह निसा जग सोवनहार बिचार ते जागत सन्त सयाना।
त्याग किये गुन तीनि तिलोक से ज्ञान बिरागउ को नहि भाना॥
पाप न पुन्य न जानत वेद नही डर कालहु की उर आना।
ईस्वर जीव को भेद गयो तब जाय कै सांति समुद्र समाना॥६८॥

घनाक्षरी

सरद अकास में न बारिद निवास रहै ऐसे उर अम्बर में पाइये प्रकास है।
बासना औ आस राग द्वेष औ निषेध बिधि तिहूँ गुन वृत्ति नास ऐसन उजास है॥
कलई रहित जैसे सीसा वारपार एक ऐसे एकताई ईस जीवहूँ को भास है।
बनादास कहत सुनत समुझत गूढ़ जानै कोई कोटिन में सोई सांति बास है॥६६॥

जैसे जैसे बढ़त समाधि त्यों उपाधि नास तैसे तैसे सांति वृद्धि एक हौन वार है।
जैसे एक बार कोऊ पेट भरि खत नाहि ग्रासै ग्रास लोग सब करत अहार है॥
त्यों ही त्यों ही तुष्ट पुष्ट छुधा को बिनास होत पूरन भये ते नहि कछु दरकार है।
बनादास जैसे बूंद बूंद ही भरत ताल ऐसे क्रम क्रम ही कटत भवपार है॥१००॥

सवैया

रोमहि रोम रमै रस भक्ति जपै पुनि ज्ञान बिराग हिये जू ।
प्रेमापरा लहि पुष्ट भयो अति तुष्ट न साधन जात किये जू ॥
स्वासहि स्वास उठै हरिनाम न दूसर काम है नेम लिये जू ।
आय कै साति दबाय लिये कहु दासबना सुख सेज सिये जू ॥१॥

घनाक्षरी

भक्ति दूध ज्ञान दधि माखन बिज्ञान जानो साति सुद्ध सरपि सुखद सब काल है ।
सकल सिरान्यो स्रम दमदम दूरि दुख मुखन कहत कछु जरो जग जाल है ॥
दारू माहि आगि लगै त्योही सब साधन है जरि भयो पावक त्यो ब्रह्म मे बहाल है ।
बनादास दोऊ एक नाहि उभय मान रह्यो बासना रहित राख कहै को हवाल है ॥२॥

फूल मे कमल जैसे फल मे रसाल ऊँचो मनि माहि चिन्तामनि गिरि मे सुमेर है ।
सागर मे सिन्धु औ नवग्रह मे भास्कर बाहन मे गरुड धनिन मे कुबेर है ॥
देव मे पुरन्दर औ सुन्दर मे काम जैसे जल मे मकर पुनि कानन मे सेर है ।
बनादास मेरे मत मुक्तिन मे महामुक्ति जानिये अनूप साति मिलै न सबेर है ॥३॥

रुद्रन मे संकर समुद्रन मे छीरनिधि सरिन मे सरसरि सदहि प्रमान है ।
कामधेनु धेनुन मे कल्पतरु तरुमाहि मुनिन मे सनकादि जैसे वृद्ध ज्ञान है ॥
उच्चै.स्रवा अस्व ऐरावत गयन्दन मे सर्पन मे सेष सब करत बखान है ।
बनादास जैसे राम नाम सब नामन में याही भाँति मुक्तिन मे साति मेरे जान है ॥४॥

बुद्धि मे बिनायक औ युद्धि मे समीर जुत सत्य मे युधिष्ठिर औ सोम सीलवान है ।
दानन मे अन्नदान जज्ञन मे अस्वमेध गुरुन मे बृहस्पति औ पातन मे पान है ॥
महि से न छमावान ज्ञान मे बिदेह जैसे राम अवतार मे समीर बलवान है ।
तेज मे कृसानु औ गुमान मे न रावन से बनादास सुख नहि साति के समान है ॥५॥

भक्तिन मे प्रेम अरु बेदन मे सामबेद देहन मे नाहि कोउ नर के समानजू ।
बरन मे ब्राह्मनन आस्रम सन्यास सम गुनन मे सतोगुन करत बखानजू ॥
धरम अहिंसा पुनि तारथ मे प्रागराज पट मे पटम्बर औ साधु दयावानजू ।
जुग सतजुग से न बेलन मे ब्रह्मबेला बनादास ऐसे सुख साति से न आनजू ॥६॥

भरत से भाई नाहि मातु न सुमित्रा सम पितु दसरथ से न दिये जिन प्रान है ।
सचिव सुमन्त सेन प्रोहित बसिष्ठ सम धामन मे नाहि कोउ अवध समान है ॥
घाटन मे रामघाट भूमि जन्मभूमि से न सारद महेस सेस करत बखान है ।
साहब न राम से न काम बनादास से न ऐसे साति सम कोऊ सिद्धि न प्रमान है ॥७॥

युद्धनहि भारथ से घनोनहि पारथ से सारथो न कृष्न सम जानत सुजानजू।
जोगी नहि नारद से चतुर न सारद से बेद में बिसारद न सुक्र सम आनजू।।
गुह्य नाहि मौन से न ध्यान सियारो न से औ स्रोता नाहि स्रौन से पुरान में प्रमाजू।
पाप मोट मो सम न आस तोप तो सम न बनादास सांति राम रूप निर्वान जू।।८।।

सवैया

भक्ति औ जोग बिराग औ ज्ञान विज्ञानहु साधन सांति को जानो।
ताते नही कछु सांति समान सो जानत है कोउ सन्त सयानो।
सांति बिना नहि जीवन मुक्त भली विधि बेद पुरान पिचानो।
दासबना लहै कोटि में कोय रहै नहि साधन सिद्ध को भानो।।९।।

सास्त्र औ वेद पुरान पढे वहु भांति अनेकन कर्म कमाये।
तीरथ बर्त्त औ दान किये मख औ बरनास्रम में मन लाये।।
बापी औ कूप रचे बहु देवल ताल खनाय कै बाग लगाये।
दासबना जो न सांति लहे सकलौ स्रम को फल तौ नहि पाये।।१०।।

जप औ नियमादि किये बहुजोग अचार विचार औ स्वास चढ़ाये।
मूड़ मुड़ाय जटा को रखाय दहे तन आगि औ बाँह उठाये।।
सैन किये जल ठाढ़ रहे महि बांधि कै पेड़ में पांव झुलाये।
दासबना जो न साति लहे सकलौ स्रम को फल तो नहि पाये।।११।।

मूड़ फेकारि औ गोड़ उघारि कै आतुर धाम अनेकन धाये।
पूजा औ पाठ जपे बहु मंत्र औ जंत्र अनेकन जुक्ति बनाये।।
सन्त कि संगति सेवा किये बहु सत्य निबाहि कै औ तप ताये।
दासबना जो न सांत लहे सकलौ स्रम को फल तौ नहि पाये।।१२।।

सून्य मे आसन कै बरषा रितु जाय कै पर्बत खोह समाये।
साग अहार किये सहि कै दुख मूल अनेकन को खनि खाये।।
धीरज धर्म औ तोष किये बहु ज्ञान बिराग बिबेक बढ़ाये।
दासबना जो न सांति लहे सकलौ स्रम को फल तौ नहि पाये।।१३।।

साधन कोई अहै नहि निष्फल काहू की खाली न जात कमाई।
जो लगि मालिक देत मंजूरी न भांति अनेक रहै सो ललाई।।
साधन सारे किहै सिधि सांति लहे परमोद कहा किमि जाई।
दासबना जसि पूंजी न फातरि नाम जपै तस आस बिहाई।।१४।।

साति सिंहासन ऊपर राजित भाँति अनेक जरो जग जाला।
चर्म बिराग औ ज्ञान कृपान है भक्ति सनाह न बेधत साला।।
सोम बिज्ञान को छत्र अनूपम मोह सरोज परेउ जनु पाला।
दासबना दिल दीनता चाँदनी राज अकामना बोध को माला।।१५।।

घनाक्षरी

ज्ञानी जन भूपन हरन सब दूपन प्रताप ससि पूपन करत निष्काम है।
राम मे रमावत बढावत विराग ज्ञान ध्यान सरसावत औ देत अभिराम है।।
साति उर आवत लगावत न नेह कहूँ जगत नसावत बिबेक सुठि धाम है।
बुद्धि बलहीन औ मलीन बनादास बदै उभयप्रबोधक रमायन सो नाम है।।१६।।

सन्त सरदार भवभार के हरनहार कृपा के अगार ताते बिनय बार बारजू।
बिद्या बेदहीन काब्य कोस कछु जानो नाहि बचन करम मन अवगुन अगारजू।।
सूत्रधर सबल सो भापै उर प्रेरिप्रेरि मेरो कृत बुद्धि मे न आवत बिचारजू।
बनादास जो न बनाता को सुधारै कौन ताते निज दिसि देखि को जिये सँभारजू।।१७।।

।। इतिश्रीमद्रामचरित्रे कलिमलमथने उभयप्रबोधक रामायणे सप्तम
सान्ति खण्डे भवदापत्रयताप बिमजनोनाम षष्ठोऽध्याय ।।६।।

• • •